युगऋषि के संदेश

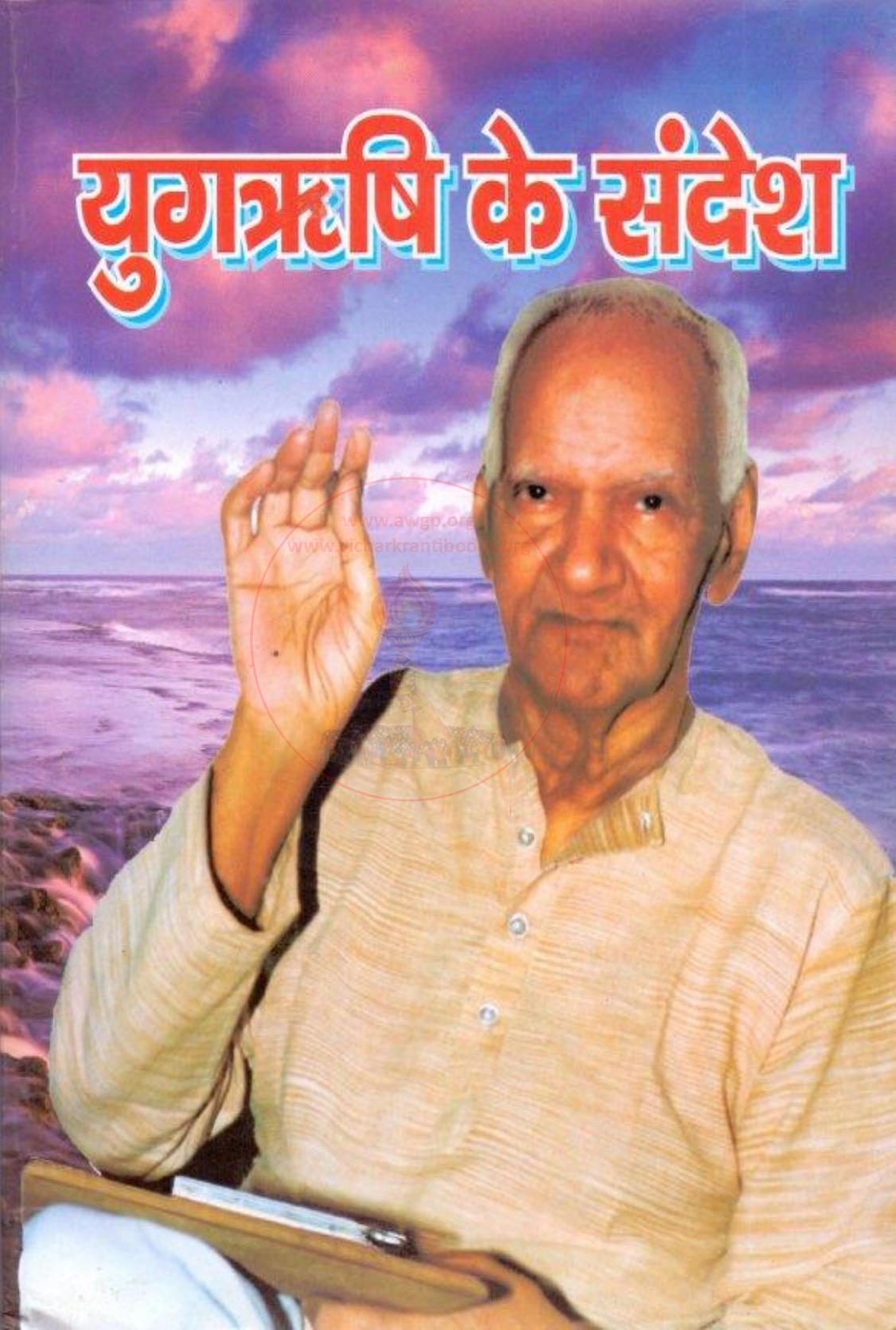

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

युगऋषि के संदेश

संपादन-संकलन : युग निर्माण योजना, मथुरा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003
फोन : (0565) 2530128, 2530399
मो. 09927086287, 09927086289
फैक्स नं०-2530200, E-Mail : yugnirman@awgp.org

प्रथम संस्करण : 2013

मूल्य : ₹ 125.00

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ० प्र०)

संपादन-संकलन : **युग निर्माण योजना, मथुरा**

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रथम संस्करण : 2013

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राक्कथन

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि, संस्कृति पुरुष, परमपूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी की क्रांतिकारी लेखनी ने नर को नारायण, मानव को महामानव बनाने वाली जीवन साधना का विश्वकोष रचकर रख दिया। जीवन की सभी व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओं पर उन्होंने अपनी कलम चलाई। पूज्य गुरुदेव कहते रहे हैं कि यह साहित्य मैंने रोते हुए हृदय से आँसुओं की स्याही से लिखा है। जो इसका स्वाध्याय करता है उसके जीवन में कोई परिवर्तन न आया हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। जो मेरा साहित्य पढ़ता है, वही मेरा शिष्य है। मेरे विचार बड़े पैने हैं। दुनिया को बदल देने का जो संकल्प हमने लिया है, वह सिद्धियों के बल पर नहीं अपने क्रांतिकारी विचारों के बल पर लिया है।

पूज्यवर आचार्यश्री द्वारा भाष्य वेदों को पढ़कर आचार्य विनोबाभावे ने वेदों को मस्तक से लगाकर भाष्यकार गुरुदेव का कोटि-कोटि वंदन किया और वेदमूर्ति संबोधन दिया। उपनिषद् का भाष्य पढ़कर भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन ने लिखा कि काश! यह साहित्य मुझे जवानी में मिल गया होता तो मैं राजनीति में न जाकर आचार्यश्री के चरणों में बैठा अध्यात्म का ज्ञान ले रहा होता। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा ने अपनी पुस्तक 'देशमणि' में लिखा कि आचार्यश्री के लिखे साहित्य को युगों-युगों तक याद किया जाएगा। पूज्यवर ने अपने जीवन में साहित्य का विशाल सागर रचकर रख दिया है। सारे साहित्य को पढ़ पाना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं हो पाता। इसी समस्या का समाधान करने की दृष्टि से पूज्यवर की जन्म शताब्दी पर उनके श्रीचरणों में साहित्य श्रद्धांजलि के रूप में एक ऐसा ग्रंथ समर्पित करने की प्रेरणा-भावना जाग्रत हुई जिसमें विभिन्न विषयों पर उनके चिंतन का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया जा सके। इन्हीं प्रयासों का प्रतिफल है यह ग्रंथ, जिसे पूज्यवर के श्रीचरणों में समर्पित करते हुए अपना जीवन धन्य हुआ अनुभव कर रहे हैं। यह ग्रंथ लोकसेवा में रुचि रखने वाले प्रबुद्ध भाई-बहनों को अवश्य पढ़ना चाहिए और हर व्यक्ति तक पढ़ने हेतु उपलब्ध कराने का प्रयास करना चाहिए।

व्यवस्थापक

युग निर्माण योजना, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहाँ क्या है ?

अध्याय-1 पृष्ठ-13 से 26 तक

युगऋषि की भविष्यवाणियाँ 13-26

अध्याय-2, पृष्ठ-27 से 111 तक

वैज्ञानिकों को संदेश 27-29
धनवानों को संदेश 29-42
साहित्यकारों को संदेश -42
धर्माचार्यों को संदेश 43-49
राजनेताओं को संदेश 49-50
लोकसेवियों को संदेश 51-53
प्रज्ञापुत्रों को संदेश 53-57
बुद्धिजीवियों को संदेश 57-60
शासकीय सेवकों को संदेश 60-61
प्रवासी भारतीयों को संदेश -61
साधु-ब्राह्मणों को संदेश 62-65
युवावों एवं छात्रों को संदेश 65-67
साधकों को संदेश 67-111

अध्याय-3, पृष्ठ-112 से 138 तक

बालनिर्माण 112-117
महिला एवं नारी जागरण 117-122
गृहस्थ जीवन 122-130
वरिष्ठ नागरिक वानप्रस्थी 130-138

अध्याय-4, पृष्ठ-139 से 178

शिक्षा का उद्देश्य-गुरुकुल पद्धति 139-143
स्वास्थ्य 143-147
पर्यावरण 147-153
सामाजिक कुरीतियाँ 153-158
दुष्प्रवृत्तियाँ-सत्प्रवृत्तियाँ 158-178

अध्याय-5, पृष्ठ-179 से 249

व्यक्ति निर्माण एवं मानवता के गुण 179-220
परिवार निर्माण 220-229
समाज निर्माण 229-249

अध्याय-6, पृष्ठ-250 से 277

मानव धर्म 250-254
समाजसेवी संगठन 254-256
प्रजातंत्र की रक्षा 256-260
राष्ट्र धर्म 260-277

अध्याय-7, पृष्ठ 278 से 309 तक

विश्वशांति 278-279
भारतीय संस्कृति 279-285
सर्वधर्म समन्वय 286-289
विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय 289-293
तीर्थ परंपरा का जागरण -293
धर्म का सच्चा स्वरूप 294-309

अध्याय-8, पृष्ठ-310 से 332 तक

स्वाध्याय 310-316
ज्ञानयज्ञ 316-332

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माताजी की जीवनयात्रा

> जन्म आश्विन कृष्ण त्रयोदशी संवत् 1968 (20 सितंबर, 1911) ग्राम-आँवलखेड़ा, जनपद-आगरा (उत्तर प्रदेश) में एक जमींदार ब्राह्मण परिवार में। बाल्यकाल से ही अध्यात्म साधना व चर्चा में गहरी रुचि।

> दस वर्ष की आयु में बनारस में महामना पं० मदनमोहन मालवीय जी द्वारा गायत्री मंत्र की दीक्षा व यज्ञोपवीत।

> पंद्रह वर्ष की आयु में सन् 1926 में वसंत पर्व के दिन गुरुसत्ता से साक्षात्कार, उनके निर्देश पर अखंड दीपक के सान्निध्य में चौबीस वर्ष तक चलने वाले 24-24 लक्ष के चौबीस महापुरश्चरणों की शृंखला आरंभ। साधनाकाल में गाय को जौ खिलाए गए और गोबर से छानकर निकाले गए संस्कारित जौ की रोटी व छाछ पर रहे। कुंडलिनी तथा पंचाग्नि विद्या की सिद्ध साधना इस बीच पूरी हुई।

> आश्विन कृष्ण चतुर्थी 20 सितंबर, 1926 को परम वंदनीया माताजी का जन्म।

> किशोरावस्था से ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में सक्रिय, तीन बार जेलयात्रा। मालवीय जी, रफी अहमद किदवई, श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू (जवाहरलाल जी की माता), देवदास गांधी के साथ आसनसोल जेल में। सविनय अवज्ञा आंदोलन में सरकार के उत्पीड़न के बावजूद, घर की कुर्की होने पर भी आजादी की लगन। राजनीतिक गुरु—महात्मा गांधी से मार्गदर्शन लेने साबरमती आश्रम की कई बार यात्रा। रवींद्रनाथ ठाकुर, आचार्य विनोबा भावे, महर्षि अरविंद, श्री बालकृष्ण 'नवीन', बाबू गुलाब राय एम.ए., श्री बी.वी. केसकर, श्री कृष्णदत्त पालीवाल आदि मूर्द्धन्य व्यक्तियों का भी सान्निध्य रहा।

> शासन द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आचार्य जी को दिनांक 29 जनवरी, 1988 को ताम्रपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्हें सरकार द्वारा पेंशन दी गई, उसे उन्होंने यह कहकर लौटा दिया कि इस राशि को हरिजन सहायता कोष या मुख्यमंत्री राहत कोष को दिया जाए।

> सन् 1937 से 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का पहले फ्रीगंज, आगरा, फिर 'अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा' से प्रकाशन। अध्यात्म तत्त्वदर्शन का शास्त्रोक्त एवं विज्ञानसम्मत प्रतिपादन 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका 74 वर्ष पूरे कर चुकी है, जिसकी लाखों प्रतियाँ प्रतिमाह प्रकाशित होती हैं।

> वंदनीया माताजी भगवती देवी का सन् 1943 में उनके जीवन में प्रवेश। पति की उग्र तपश्चर्या में उनका पूर्ण योगदान। नारी-जागरण कार्यक्रम का वंदनीया माताजी द्वारा सफल संचालन।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

> चार बार अपने गुरु सर्वेश्वरानंद जी के निर्देश पर हिमालय की यात्रा। 6 माह से लेकर एक वर्ष तक अज्ञातवास में कठोर तप-साधना।

> चौबीस महापुरश्चरणों की समाप्ति पर सन् 1953 में महर्षि दुर्वासा की तपस्थली में मथुरा-वृंदावन मार्ग पर गायत्री तपोभूमि की स्थापना-अखंड अग्नि प्रज्वलित। युगशक्ति गायत्री की प्राण-प्रतिष्ठा, 2400 तीर्थों की जल-रज तथा 2400 करोड़ हस्तलिखित गायत्री मंत्रों की स्थापना।

> सन् 1956 में नरमेध यज्ञ, जिसमें पूज्य गुरुदेव एवं माताजी ने गायत्री परिवार का बीजारोपण किया।

> सन् 1958 में विशाल सहस्रकुंडीय गायत्री यज्ञ मथुरा में संपन्न, बीस लाख साधक पधारे।

> सन् 1959 से 1961 तक वंदनीया माताजी ने पत्रिका के संपादन का कार्य सँभाला।

> वृहद विश्वकोश स्तर का तीन खंडों में गायत्री महाविज्ञान प्रकाशित।

> अज्ञातवास से लौटकर सन् 1960 में चारों वेदों का सरल-सुबोध भाष्य, 108 उपनिषदों की भाष्यटीका, 20 स्मृतियों का हिंदी रूपांतर, 18 पुराणों का पुनरुद्धार किया हुआ संस्करण तथा षड्दर्शन का भाष्य प्रकाशित।

> धर्म-अध्यात्म, गायत्री महाविद्या, जीवन जीने की कला, समग्र आरोग्य, व्यक्ति, परिवार व समाज निर्माण तथा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर 3200 पुस्तकों का लेखन व प्रकाशन।

> अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना एवं युगशक्ति गायत्री का असमिया, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, उड़िया, अँगरेजी में निरंतर प्रकाशन।

> क्रांतिधर्मी साहित्य का जीवन के उत्तरार्द्ध में लेखन तथा 'इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य' की घोषणा। भविष्य संबंधी कथन अब तक सत्य प्रमाणित हुए। परिजनों के मार्गदर्शन हेतु 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका की सामग्री तैयार करके छोड़ गए।

> युग निर्माण योजना का उद्घोष, सन् 1963 में शतसूत्री योजना की घोषणा एवं राष्ट्रव्यापी समाज निर्माण के कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन। गायत्री यज्ञों की शृंखला का संचालन, सारे देश में मंत्रलेखन साधना का प्रसार।

> वर्ष 1964 में लुधियाना की सर्वधर्म सभा में उन्हें ' लाइट ऑफ इंडिया' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

> 60 वर्ष की आयु में 20 जून, 1971 को मथुरा छोड़कर एक वर्ष हिमालय में उग्र तपश्चर्या हेतु प्रस्थान। वंदनीया माताजी द्वारा शांतिकुंज, हरिद्वार में नए शक्तिकेंद्र का संचालन।

> सन् 1972 की गायत्री जयंती के बाद से शांतिकुंज, हरिद्वार में दुर्गम हिमालय में कार्यरत ऋषियों की परंपरा का बीजारोपण कर उसे एक सिद्धपीठ के रूप में विकसित किया।

> जाग्रत आत्माओं के लिए प्राण-प्रत्यावर्तन, चांद्रायण कल्प, संजीवनी साधना, जीवन साधना के सत्रों का आयोजन। विशाल शांतिकुंज परिवार के अंतर्गत हजारों पूर्ण समयदानी कार्यकर्त्ताओं का उनके आह्वान पर आगमन एवं उनके पदचिह्नों पर चलने का संकल्प।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

> हजारों शक्तिपीठों-प्रज्ञापीठों की स्थापना, शिलान्यास व प्राण-प्रतिष्ठा हेतु स्वयं पूरे भारत का दौरा। सभी शक्तिपीठ जाग्रत-जीवंत तीर्थ के रूप में सक्रिय।

> विज्ञान व अध्यात्म के समन्वय एवं गायत्री महाशक्ति व यज्ञविद्या पर अनुसंधान हेतु सुविज्ञ चिकित्सकों, वैज्ञानिकों का स्वयं मार्गदर्शन कर ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान का गठन। एक परिपूर्ण सुसज्जित आधुनिकतम प्रयोगशाला की सन् 1979 में स्थापना।

> सन् 1984 में सूक्ष्मीकरण पंचकोशी साधना में प्रवेश। हीरक जयंती पर 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञों व राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों की शृंखला। क्रांतिकारी दीपयज्ञों का निर्धारण व राष्ट्र तथा विश्वव्यापी शृंखला का आरंभ।

> सन् 1984 से अब तक प्राय: 50 से अधिक शोध प्रबंध पूज्यवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से प्रस्तुत किए जा चुके हैं।

> सन् 1988 से यज्ञविद्या के व्यापक प्रचार हेतु दीपयज्ञों की शृंखला चलाई। कम साधन तथा कम समय में संपन्न होने वाली यह यज्ञविद्या सरलता से विश्वव्यापी बनती चली गई।

> वसंत पर्व सन् 1990 पर महाकाल के संदेश के रूप में भविष्य की रीति-नीति एवं महाप्रयाण की घोषणा। 2 जून, 1990 गायत्री जयंती के दिन गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए महाप्रयाण।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

> 27 जून, 1991 को भारत सरकार द्वारा 1.00 रुपए की रंगीन डाक टिकट जारी की गई, जिसका विमोचन तत्कालीन उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा जी द्वारा किया गया।

> सन् 1992 में 6 से 8 जून के बीच शांतिकुंज हरिद्वार में विराट शपथ समारोह का आयोजन कर देव संस्कृति का विस्तार करने के लिए वंदनीया माताजी ने लाखों लोगों को संकल्प दिलाया।

> पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद वंदनीया माताजी ने मिशन को कई गुना बढ़ाया। सन् 1992 में ही माताजी द्वारा 27 अश्वमेध यज्ञों की शृंखला की घोषणा की गई।

> पूज्यवर जिस समाज-यज्ञ में समिधा की तरह जले, उसमें अपनी अंतिम हविष्य की आहुति देती हुईं परम वंदनीया माताजी भाद्रपद पूर्णिमा 19 सितंबर, सन् 1994 को महालय श्राद्धारंभ की वेला में महाप्रयाण कर, उस विराट ज्योति से एकाकार हो गईं।

युग निर्माण योजना मिशन का इतिहास

'युग निर्माण योजना' नवनिर्माण की अभिनव महत्त्वपूर्ण योजना है, जिसकी संकल्पना परमपूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी के द्वारा मथुरा में आयोजित सन् 1958 के सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ के समय की गई थी।

व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण का लक्ष्य लेकर यह अभियान वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सन् 1962 में गायत्री तपोभूमि, मथुरा से आरंभ किया। स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन एवं सभ्य समाज की अभिनव रचना का लक्ष्य पूरा करने के लिए विगत कई दशकों से संचालित यह आंदोलन पूरे संसार में चलाया जा रहा है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नवनिर्माण का यह अभियान समय की एक अत्यंत आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण पुकार है। प्रत्येक विचारशील व्यक्ति के लिए यह योजना अपनाए जाने योग्य है। व्यक्ति के परिवर्तन से ही समाज, विश्व एवं युग का परिवर्तन संभव है। इस धरती पर स्वर्गीय वातावरण का सृजन करने के लिए हमें जनमानस का स्तर बदलना होगा।

युग निर्माण का उद्देश्य व्यक्ति, परिवार एवं समाज की ऐसी अभिनव रचना करना है, जिसमें मानवीय आदर्शों का अनुकरण करते हुए सब लोग प्रगति, समृद्धि और शांति की ओर अग्रसर हों। इसी को दूसरे शब्दों में **'मनुष्य में देवत्व का उदय'** एवं **'धरती पर स्वर्ग का अवतरण'** कह सकते हैं। इसे क्रियान्वित करने हेतु विशिष्ट वैचारिक, आध्यात्मिक सूत्रों की रचना की गई है, जिसे **युग निर्माण सत्संकल्प** के रूप में सन् 1963 में अभिव्यक्त किया गया। विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, आचार्य जी ने स्वयं छोटे-बड़े जनसम्मेलनों के द्वारा विचारक्रांति की पृष्ठभूमि बनाई।

इस युग में नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्रांति द्वारा सतयुगी वातावरण उत्पन्न करने का प्रबल प्रयास इस आंदोलन द्वारा किया जा रहा है। 'हम बदलेंगे—युग बदलेगा' 'हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा' यह इस आंदोलन की ध्रुव मान्यता है। युग-परिवर्तन का आधार व्यक्ति-परिवर्तन है। वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक जीवन में उत्कृष्टता लाने का प्रचंड पुरुषार्थ युग निर्माण योजना के 'शतसूत्री' कार्यक्रमों द्वारा किया जा रहा है।

जनमानस के परिष्कार एवं वैचारिक उत्कर्ष हेतु समस्त चारों वेद, 108 उपनिषद्, षट्दर्शन, स्मृति, पुराण के सरल हिंदी अनुवाद की प्रस्तुति के साथ हजारों ग्रंथों का प्रकाशन किया गया है। आंदोलन की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने हेतु कई भाषाओं में नियमित प्रकाशन तथा प्रकाशित सामग्री को लोगों तक पहुँचाने हेतु पत्रिका सदस्यता क्रम, झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, स्टीकर आंदोलन, विद्या-विस्तार, पुस्तक मेला, बिक्री केंद्र आदि अनेक तरह के उपाय किए जा रहे हैं। हमारा लक्ष्य है कि पूज्य आचार्य जी द्वारा रचित सभी पुस्तकें देश-विदेश के पाठकों को उनकी भाषा में प्रकाशित कर उपलब्ध कराई जाएँ। पुस्तक मेलों ने इस साहित्य के प्रति जो भूख जगाई है, उसकी आपूर्ति के लिए स्थानीय बिरला मंदिर के बगल में एक नया प्रेस खोला गया है।

युग निर्माण योजना से जुड़े लाखों परिजन नियमित रूप से एक घंटा समयदान एवं दो रुपया प्रतिदिन अंशदान करते हुए संस्था के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। समयदानी, जीवनदानी प्राणवान परिजन ही इस योजना के आधार-स्तंभ हैं तथा प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रमों को सफल बनाने में लगे हैं। देश, धर्म, समाज, संस्कृति, राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान एवं कल्याण के लिए सप्त आंदोलन (साधना, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, नारी जागरण, पर्यावरण, दुर्व्यसन-कुरीति उन्मूलन) जैसे अनेक कार्यक्रमों का सफल संचालन हो रहा है। घीयामंडी, मथुरा में अखण्ड ज्योति पारमार्थिक औषधालय खोला गया है, जिससे यहाँ के नागरिक लाभ ले रहे हैं। गायत्री तपोभूमि स्थित पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय द्वारा हजारों रोगियों की नि:शुल्क चिकित्सा की जाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना के प्रमुख संस्थानों, प्रतिष्ठानों (**पूज्यवर की जन्मस्थली आँवलखेड़ा आगरा, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, गायत्री तपोभूमि मथुरा, शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार**) आदि के अतिरिक्त देश एवं विदेशों में फैले हजारों केंद्र ऐसे हैं जिन्हें शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, ज्ञानमंदिर, ज्ञानकेंद्र, प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल आदि के रूप में जाना जाता है। जहाँ से लोक-कल्याण की दिशा में अनगिनत कार्य संपन्न होते हैं। संसार में एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा, एक शासन की स्थापना को महत्त्वपूर्ण मानकर कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना, युग निर्माण योजना ने अपना ध्येय रखा है। योजना के संस्थापक वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने '**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः**' के लक्ष्य को अपना जीवन-लक्ष्य माना तथा उन्होंने '**आत्मवत् सर्वभूतेषु**' एवं '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' के लिए ही अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया। उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने का सत्प्रयास उनके अनुयायी सदैव करते रहते हैं।

धर्मतंत्र को लोक-शिक्षण का माध्यम बनाते हुए गायत्री-उपासना, यज्ञ, संस्कार, पर्व-त्योहार आदि के द्वारा विवेकपूर्ण विचारधारा जनमानस के लिए प्रस्तुत की जाती रहती है। अध्यात्म के विज्ञानसम्मत स्वरूप को ही हाँ मान्यता मिली है तथा संस्कृति, सभ्यता के उत्कृष्ट स्वरूप को जीवन जीने की कला के रूप में अपनाया गया है।

समाज में फैली दुष्प्रवृत्तियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों, मूढ़ मान्यताओं, कुप्रचलनों एवं दुर्व्यसनों को मिटाने में बड़ी सफलता मिली है। सत्प्रवृत्तियों की स्थापना, परिष्कृत धर्मधारणा, आस्तिकता, कर्त्तव्यपरायणता की प्रतिष्ठापना में भी यह आंदोलन सफल रहा है। आशा है कि विचारशील जनसमुदाय इससे जुड़ता हुआ इसे लक्ष्यप्राप्ति तक अग्रसर करने में सफल होगा। ईश्वर की इच्छा और जनसमुदाय की आकांक्षा अवश्य ही युग निर्माण योजना के माध्यम से पूर्ण होगी।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

गायत्री तपोभूमि परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गई स्थापना है, जिसे गायत्री परिवाररूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व **चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज** को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया।

एक छोटी किंतु भव्य यज्ञशाला में हिमालय के महान सिद्धयोगी की धूनी से 700 वर्ष पुरानी **अखंड अग्नि** स्थापित की गई तथा गायत्री महाशक्ति का मंदिर विनिर्मित किया गया। **चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन,** जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है।

पूज्य गुरुदेव की साधनास्थली व प्रातःकाल की लेखन की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी, तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्मभूमि

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री तपोभूमि थी। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अब वह **साधना कक्ष** में परिवर्तित कर दिया गया है।

तपोभूमि में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में जून, 1953 में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर सन् 1956 में नरमेध यज्ञ तथा 1958 में विराट सहस्रकुंडीय यज्ञायोजन संपन्न हुए। श्रेष्ठ नर-रत्नों का चयन कर, व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा गायत्री परिवार का सूत्रपात हुआ।

मंदिरों एवं आश्रमों को दैवी प्रवृत्तियों के प्रसारण केंद्र के नाते महत्त्व दिया जाता रहा है। गायत्री तपोभूमि की स्थापना इसी पुण्यपंरपरा को पुनर्जीवित तथा व्यावहारिक बनाने के महान उद्देश्य से की गई है। प्राण-ऊर्जा को दिव्य वातावरण में उभारने के लिए पूज्यवर ने 24 वर्ष कठोर तप किया। श्यामा गाय को जौ खिलाकर उसके गोबर से निकले हुए जौ को साफ किया जाता, उसकी रोटी बनाकर छाछ के साथ सेवन किया करते थे, इस प्रकार चौबीस-चौबीस लक्ष जप के चौबीस गायत्री महापुरश्चरण किए हैं। वेदमूर्मि तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने 30-05-1953 से 22-06-1953 तक उपवास (मात्र गंगाजल लेकर) किया तथा वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता गायत्री की स्थापना एवं प्राण-प्रतिष्ठा गायत्री तपोभूमि में की।

इस महान अभियान को गति देने हेतु उनके गुरुदेव ने दो अमूल्य रत्न (वस्तु) उन्हें प्रदान किए, जिसमें अखंड दीप तथा अखंड अग्नि का प्रमुख स्थान है। जब तक पूज्यवर मथुरा में रहे, यह अखंड दीप घीयामंडी में जलता रहा। अब शांतिकुंज में प्रज्वलित है।

वसंत पंचमी सन् 1955 से 15 माह तक निरंतर इस यज्ञशाला में गायत्री महायज्ञ के साथ-साथ विशेष सरस्वती यज्ञ, रुद्र यज्ञ, महामृत्युंजय यज्ञ, विष्णु यज्ञ, शतचंडी यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, चारों वेदों के मंत्र यज्ञ, ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम आदि यज्ञ एक-एक माह तक होते रहे। इन यज्ञों की पूर्णाहुति 20-04-1956 से 24-04-1956 तक नवरात्र के समय चल रहे 108 कुंडीय (नरमेध यज्ञ) महायज्ञ से हुई। इसमें 5-6 हजार व्यक्तियों द्वारा 125 लाख आहुतियाँ दी गईं तथा पूर्णरूप से लोक-मंगल के लिए जीवनदानियों की शृंखला इसी महायज्ञ से आरंभ हुई। इसी अवसर पर गुरुदेव-माताजी द्वारा जेवर, पुस्तक, प्रेस, जमीन आदि भौतिक पदार्थ गायत्री माता को दान किए गए।

13-11-1958 से 26-11-1958 तक इस युग के महानतम सहस्रकुंडीय गायत्री यज्ञ का संपादन हुआ, जिसमें 4 लाख व्यक्तियों ने भाग लिया। 24 लाख गायत्री मंत्र की आहुतियाँ दी गईं, सवा लाख गायत्री मंत्र लेखन, 24 करोड़ गायत्री मंत्र जप एवं सवा लाख गायत्री चालीसा पाठ किए गए।

हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा **युग निर्माण विद्यालय** के एक स्वावलंबनप्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। यह विधिवत सन् 1967 से आरंभ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन् 1971 में पूरे भारतवर्ष में पाँच सहस्रकुंडीय यज्ञ संपन्न हुए, जिनका संचालन इसी सिद्धपीठ के द्वारा किया गया। बहराइच (उ० प्र०), महासमुंद (म० प्र०), पोरबंदर (गुजरात), भीलवाड़ा (राजस्थान), टाटानगर (बिहार) में यज्ञ संपन्न हुए। इसके बाद ही यहाँ से भारतीय संस्कृति के उत्थान एवं धर्मप्रचार के लिए साधकों को प्रशिक्षण देकर देश के कोने-कोने में भेजा गया।

गायत्री तपोभूमि के प्रांगण में निम्नलिखित प्रकल्प एवं विभाग कार्यरत हैं—

(1) गायत्री माता का मंदिर एवं महाकाल का मंदिर—सिद्धपीठ में गायत्री माता के मंदिर की स्थापना की गई है तथा अगल-बगल के कक्ष में क्रमशः पूज्यवर गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी की प्रतिमाओं एवं चरण पादुकाओं की स्थापना की गई है। पूज्य गुरुदेव के कमरे में **2400 तीर्थों का जल-रज** तथा **अस्थिकलश** भी रखा गया है। इसके साथ ही वंदनीया माताजी के कमरे में **2400 करोड़ मंत्रलेखन** की स्थापना है। मंदिर के प्रांगण में प्रातः आरती, ध्यान एवं यज्ञशाला में यज्ञ, सायं आरती, नादयोग, अमृतवाणी आदि कार्यक्रम नियमित चलते रहते हैं। प्रज्ञा नगर में महाकालेश्वर जी का भव्य मंदिर भी है।

(2) निःशुल्क संस्कारों की व्यवस्था—धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण के अनेकानेक कार्यक्रम यहाँ से चलते हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति के अंतर्गत पुरुष को पुरुषोत्तम की भूमिका में प्रतिष्ठापित करने वाले संस्कार बहुत प्रभावशाली ढंग से कराने की सुगम व्यवस्था आश्रम में है। दूर-दूर से लोग दिव्य वातावरण में संस्कार कराने बहुधा पहुँचा करते हैं।

(3) शिविरों का आयोजन—गायत्री तपोभूमि प्राचीनकाल से ऋषियों की तपस्थली रही है। अतः यहाँ के दिव्य वातावरण में साधना करने का लाभ अधिक मिलता है। यहाँ निरंतर प्रतिमाह 9 दिवसीय साधना शिविर 5 से 13 और 20 से 28 तक लगते रहते हैं, जिनमें साधकों को प्रतिदिन सत्संग एवं मिशन की योजनाओं पर प्रवचन सुनने का लाभ मिलता है। आश्रम के अनुशासन में साधना करने वाले पात्र साधकों का इन शिविरों में स्वागत है। विद्यालयों के ग्रीष्मावकाश में छात्र-छात्राओं एवं युवक-युवतियों के 9 दिवसीय माता सरस्वती शिविर भी आयोजित किए जाते हैं।

(4) निःशुल्क आवास—गायत्री तपोभूमि में युग निर्माण मिशन के परिजन, कार्यकर्त्ता, विद्यार्थी एवं अतिथियों के लिए निःशुल्क व्यवस्था हेतु गायत्री, दुर्वासा, भगवती, सरस्वती, हिमालय, प्रज्ञा साधक निवास आदि भवन हैं।

(5) वंदनीया माताजी का भोजनालय—गायत्री तपोभूमि में वंदनीया माताजी के चौके में सभी के लिए निःशुल्क भोजन की व्यवस्था होती है। शुद्ध सात्त्विक भोजन प्रातः 11 बजे से तथा सायं 6.30 बजे से आरंभ होता है। अतिथि, शिविरों में आने वाले परिजन एवं युग निर्माण विद्यालय के छात्र भोजनालय में भोजन ग्रहण करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(6) दातव्य चिकित्सालय—आश्रम में आश्रमवासियों, गरीबों, असहायों के लिए पं० श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय है, जहाँ आयुर्वेद, होम्योपैथी, एलोपैथी, नेत्र रोग एवं नेत्र ऑपरेशन, स्त्री रोग, बाल रोग, दंत रोग, योग-प्राणायाम, प्राकृतिक चिकित्सा, फिजियोथेरेपी तथा पैथोलॉजी का कार्यकुशल एवं योग्य चिकित्सकों तथा सहायकों के द्वारा किया जाता है। प्रतिमाह निःशुल्क हृदयरोग एवं अन्य रोगों का परामर्श शिविर विशेषज्ञों द्वारा आयोजित किया जाता है।

(7) ठंढे जल की प्याऊ—आश्रम में अनेक ठंढे जल के कूलर लगे हैं, जहाँ यात्रियों के लिए ठंढा जल पीने हेतु उपलब्ध है।

(8) युग निर्माण विद्यालय—युग निर्माण विद्यालय में 16 से 20 वर्ष के कक्षा 10 उत्तीर्ण छात्र 10 माह के प्रशिक्षण में यज्ञ, कर्मकांड, संस्कार, संगीत, कंप्यूटर, ऑफसेट, प्रिंटिंग, बाइंडिंग, लेमीनेशन एवं स्क्रीन प्रिंटिंग उद्योग, बिजली के उपकरण बनाना, रेडियो, ट्रांजिस्टर और टेलीविजन बनाना, खाद्य संरक्षण, गीत-संगीत-नाट्य प्रतियोगिता, कथा-प्रवचन आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर क्षेत्र में समाजसेवी के रूप में कार्य कर रहे हैं।

(9) युग साहित्य का प्रकाशन—परमपूज्य गुरुदेव ने युग व्यास, वसिष्ठ तथा विश्वामित्र की तरह कार्य किया है एवं समाज को ऊँचा उठाया है। उन्होंने गायत्री विद्या, उपासना, साधना, आराधना, अध्यात्म विज्ञान, बाल-निर्माण, स्वास्थ्य-संवर्द्धन, आत्मचिंतन, परिवार निर्माण, विचारक्रांति, कथा, कर्मकांड, धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण, नैतिक शिक्षा, नारी जागरण, प्रज्ञापुराण, आर्षग्रंथ आदि का लेखन किया है, जिसे यहाँ हर समय मानवमात्र के कल्याण के लिए उपलब्ध कराया गया है। शुद्ध जड़ी बूटियों द्वारा हवन सामग्री का भी निर्माण यहा होता है।

(10) युग निर्माण योजना प्रेस—गायत्री तपोभूमि की अपनी प्रिंटिंग प्रेस है। युग निर्माण योजना द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ तथा पुस्तकों की कंपोजिंग कंप्यूटर कक्ष में तथा छपाई का कार्य प्रेस में होता है। आधुनिक तकनीक की स्वचालित, फोर कलर ऑफसेट प्रिंटिंग मशीनें, वेव ऑफसेट मशीनें, बाइंडिंग मशीनें आदि लागाई गई हैं। स्वचालित बाइंडिंग मशीनें भी हैं, जिनमें तीव्रगति से पुस्तकों की बाइंडिंग हो जाती है।

(11) पत्रिका प्रकाशन—गायत्री तपोभूमि से दो मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। 'युग निर्माण योजना' मासिक हिंदी में तथा 'युग शक्ति गायत्री' गुजराती में प्रकाशित होती है। इनके माध्यम से क्षेत्रों में परिजनों को युग निर्माण योजना के अंतर्गत किए जाने वाले प्रचारात्मक, सुधारात्मक एवं रचनात्मक कार्यों का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

(12) आश्रम में इंडियन ओवरसीज बैंक की शाखा एवं डाकघर भी हैं।

(13) सप्तसूत्री आंदोलन—युग निर्माण योजना से सात आंदोलनों का सूत्रपात किया गया है—(1) साधना, (2) शिक्षा, (3) स्वावलंबन, (4) पर्यावरण, (5) नारी जागरण, (6) स्वास्थ्य, (7) कुरीति उन्मूलन एवं व्यसन मुक्ति।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-1

युगऋषि की भविष्यवाणियाँ

धर्म जीतेगा, अधर्म हारेगा

दीपक बुझने को होता है तो एक बार वह बड़े जोर से जलता है, प्राणी जब मरता है तो एक बार बड़े जोर से हिचकी लेता है। चींटी को मरते समय पंख उगते हैं, पाप भी अपने अंतिम समय में बड़ा विकराल रूप धारण कर लेता है। युग परिवर्तन की संधिवेला में पाप का इतना प्रचंड, उग्र और भयंकर रूप दिखाई देगा जैसा कि सदियों से देखा क्या, सुना भी न गया था। दुष्टता हद दर्जे को पहुँच जाएगी। एक बार ऐसा प्रतीत होगा कि अधर्म की अखंड विजयदुंदुभि बज गई और धर्म बेचारा दुम दबाकर भाग गया, किंतु ऐसे समय भयभीत होने का कोई कारण नहीं। यह अधर्म की भयंकरता अस्थायी होगी, उसकी मृत्यु की पूर्व सूचना मात्र होगी। अवतार प्रेरित धर्म-भावना पूरे वेग के साथ उठेगी और अनीति को नष्ट करने के लिए विकट संग्राम करेगी। रावण के सिर कट जाने पर भी फिर नए उग आते थे, फिर भी अंततः रावण मर ही गया।

अधर्म से धर्म का, असत्य से सत्य का, दुर्गंध से मलयानिल का, सड़े हुए कुविचारों से नवयुग निर्माण की दिव्य भावना का घोर युद्ध होगा। इस धर्मयुद्ध में ईश्वरीय सहायता न्यायी पक्ष को मिलेगी। पांडवों की थोड़ी-सी सेना कौरवों के मुकाबले में, राम का छोटा-सा वानर दल विशाल असुर सेना के मुकाबले में विजयी हुआ था। अधर्म-अनीति की विश्वव्यापी महाशक्ति के मुकाबले में सतयुग निर्माताओं का दल छोटा-सा मालूम पड़ेगा, परंतु भली प्रकार नोट कर लीजिए, हम भविष्यवाणी करते हैं कि निकट भविष्य में, सारे पाप-प्रपंच ईश्वरीय कोप की अग्नि में जलकर भस्म हो जाएँगे और संसार में सर्वत्र सद्भावों की विजयपताका फहराएगी।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1943, पृष्ठ-16

हमारी सुनिश्चित भविष्यवाणी

भले ही लोग सफल नहीं हो पा रहे हैं, पर सोच और कर यही रहे हैं कि वे किसी प्रकार अपनी वर्तमान संपत्ति को जितना अधिक बढ़ा सकें, दिखा सकें उसकी उधेड़-बुन में जुटे रहें। यह मार्ग निरर्थक है। आज की सबसे बड़ी बुद्धिमानी यह है कि किसी प्रकार गुजारे की बात सोची जाए। परिवार के भरण-पोषण भर के साधन जुटाए जाएँ और जो जमा पूँजी पास है, उसे लोकोपयोगी कार्य में लगा दिया जाए। जिनके पास नहीं है, वे इस तरह की निरर्थक मूर्खता में अपनी शक्ति नष्ट न करें। जिनके पास गुजारे भर के लिए पैतृक साधन मौजूद हैं, जो उसी पूँजी के बल पर अपने वर्तमान परिवार को जीवित रख सकते हैं। वे वैसी ही व्यवस्था बनाकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निश्चिंत हो जाएँ और अपना मस्तिष्क तथा समय उस कार्य में लगाएँ, जिसमें संलग्न होना परमात्मा को सबसे अधिक प्रिय लग सकता है।

समय ही मनुष्य की व्यक्तिगत पूँजी है, श्रम ही उसका सच्चा धर्म है। इसी धन को परमार्थ में लगाने से मनुष्य के अंत:करण में उत्कृष्टता के संस्कार परिपक्व होते हैं। धन वस्तुत: समाज एवं राष्ट्र की संपत्ति है। उसे व्यक्तिगत समझना एक पाप एवं अपराध है। मनुष्य को अपरिग्रही होना चाहिए। इधर कमाता और उधर अच्छे कामों में खरच करता रहे; यही भलमनसाहत का तरीका है। जिसने जमा कर लिया, उसने बच्चों को दुर्गुणी बनाने का पथ प्रशस्त किया और अपने को लोभ-मोह के माया बंधनों में बाँधा। इस भूल का जो जितना प्रायश्चित्त कर लें, जमा पूँजी को सत्कार्य में लगा दें, उतना ही उत्तम है। प्रायश्चित्त से पाप का कुछ तो भार हलका होता ही है। पुण्य-परमार्थ तो निजी पूँजी से होता है। वह निजी पूँजी है, समय और श्रम, जिसका व्यक्तिगत श्रम और समय परमार्थ कार्यों में लगा समझना चाहिए कि उसने उतनी ही अपनी अंतरात्मा को निर्मल एवं सशक्त बनाने का लाभ ले लिया।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1967, पृष्ठ-34, 35

www.awgp.org

हमारी चेतावनी को अनदेखा न करें

अगले दिन बहुत ही उलट-पुलट से भरे हैं। उनमें ऐसी घटनाएँ घटेंगी, ऐसे परिवर्तन होंगे जो हमें विचित्र, भयावह एवं कष्टकर भले ही लगें, पर नए संसार की अभिनव रचना के लिए आवश्यक हैं। हमें इस भवितव्यता का स्वागत करने के लिए, उसके अनुरूप ढलने के लिए तैयार होना चाहिए। यह तैयारी जितनी अधिक रहे, उतना ही भावी कठिन समय अपने लिए सरल सिद्ध होगा।

भावी नर-संहार में आसुरी प्रवृत्ति के लोगों को अधिक पिसना पड़ेगा क्योंकि महाकाल का कुठाराघात सीधा उन्हीं पर होना है। **'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्'** की प्रतिज्ञानुसार भगवान को युग-परिवर्तन के अवसर पर दुष्कृतों का ही संहार करना पड़ता है। हमें दुष्ट, दुष्कृतियों की मरणासन्न कौरवी सेना में नहीं, धर्मराज की धर्म संस्थापक सेना में सम्मिलित रहना चाहिए। अपनी स्वार्थपरता, तृष्णा एवं वासना को तीव्रगति से घटाना चाहिए और उस रीति-नीति को अपनाना चाहिए जो विवेकशील परमार्थी एवं उदारचेता सज्जनों को अपनानी चाहिए।

संकीर्णताओं और रूढ़ियों की अंध कोठरी से हमें बाहर निकलना चाहिए। अगले दिनों विश्व-संस्कृति, विश्व-धर्म, विश्व-भाषा, विश्व-राष्ट्र का जो भावी मानव समाज बनेगा, उसमें अपनी-अपनी महिमा गाने वालों और अपनी ढपली अपना राग गाने वालों के लिए कोई स्थान न रहेगा। पृथकतावादी की सभी दीवारें टूट जाएँगी और समस्त मानव समाज को न्याय एवं समता के आधार पर एक परिवार का सदस्य बनकर रहना होगा। जाति, लिंग या संपन्नता के आधार पर किसी को वर्चस्व नहीं मिलेगा। इस समता के अनुरूप हमें अभी से ढलना आरंभ कर देना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन-संचय और अभिवर्द्धन की मूर्खता हमें छोड़ देना ही उचित है, बेटे-पोतों के लिए लंबे-चौड़े उत्तराधिकार छोड़ने की उपहासास्पद प्रवृत्ति को तिलांजलि देनी चाहिए क्योंकि अगले दिनों धन का स्वामित्व व्यक्ति के हाथ से निकलकर समाज, सरकार के हाथ में चला जाएगा। केवल शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार एवं सद्गुणों की संपत्ति ही उत्तराधिकार में दे सकने योग्य रह जाएगी। इसलिए जिनके पास आर्थिक सुविधाएँ हैं, वे उन्हें लोकोपयोगी कार्यों में समय रहते खरच कर दें ताकि उन्हें यश एवं आत्मसंतोष का लाभ मिल सके, अन्यथा वह संकीर्णता मधुमक्खी के छत्ते पर पड़ी डकैती की तरह उनके लिए बहुत ही कष्टकारक सिद्ध होगी।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1967, पृष्ठ-53

भविष्यवाणियाँ जो पूरी होकर रहेंगी

धर्म अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट होगा। उसके प्रसार प्रतिपादन का ठेका किसी वेश या वंश विशेष पर न रह जाएगा। संप्रदायवादियों के डेरे उखड़ जाएँगे, उन्हें मुफ्त के गुलछर्रे उड़ाने की सुविधा छिनती दीखेगी तो कोई उपयोगी धंधा अपनाकर भलेमानसों की तरह आजीविका उपार्जित करेंगे। तब उत्कृष्ट चरित्र, परिष्कृत ज्ञान एवं लोकमंगल के लिए प्रस्तुत किया गया अनुदान ही किसी को सम्मानित या श्रद्धास्पद बना सकेगा। पाखंड पूजा के बल पर जीने वाले उलूक, उस दिवा प्रकाश से भौंचक्के होकर देखेंगे और किसी कोटर में बैठे दिन गुजारेंगे। अज्ञानांधकार में जो पौ बारह रहती थी, उन अतीत की स्मृतियों को वे ललचाई दृष्टि से सोचते-चाहते तो रहेंगे, पर फिर समय लौटकर कभी आ न सकेगा।

अगले दिनों ज्ञानतंत्र ही धर्मतंत्र होगा। चरित्र-निर्माण और लोकमंगल की गतिविधियाँ धार्मिक कर्मकांडों का स्थान ग्रहण करेंगी। तब लोग प्रतिमापूजक देवमंदिर बनाने की तुलना में पुस्तकालय, विद्यालय जैसे ज्ञान मंदिर बनाने को महत्त्व देंगे। तीर्थयात्राओं और ब्रह्मभोजों में लगने वाला धन लोकशिक्षण की भावभरी सत्प्रवृत्तियों के लिए अर्पित किया जाएगा। कथा-पुराणों की कहानियाँ तब उतनी आवश्यक न मानी जाएँगी, जितनी जीवन समस्याओं को सुलझाने वाली प्रेरणाप्रद अभिव्यंजनाएँ। धर्म अपने असली स्वरूप में निखरकर आएगा और उसके ऊपर चढ़ी हुई सड़ी गली केंचुली उतरकर कूड़े-करकट के ढेर में जा गिरेगी।

ज्ञानतंत्र वाणी और लेखनी तक ही सीमित न रहेगा, वरन उसे प्रचारात्मक, रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यक्रमों के साथ बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक क्रांति के लिए प्रयुक्त किया जाएगा। साहित्य, संगीत, कला के विभिन्न पक्ष विविध प्रकार से लोकशिक्षण का उच्चस्तरीय प्रयोजन पूरा करेंगे। जिनके पास प्रतिभा है, जिनके पास संपदा है; वे उससे स्वयं लाभान्वित होने के स्थान पर समस्त समाज को समुन्नत करने के लिए समर्पित करेंगे।

एक विश्व, एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक आचार और एक संस्कृति के आधार पर समस्त मानव प्राणी एकता के सूत्र में बँधेंगे। विश्व-बंधुत्व की भावना उभरेगी और वसुधैव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुटुंबकम् का आदर्श सामने रहेगा। तब देश, धर्म, भाषा, वर्ण आदि के नाम पर मनुष्य-मनुष्य के बीच दीवारें खड़ी न की जा सकेंगी। अपने वर्ग के लिए नहीं, समस्त विश्व के हितसाधन की दृष्टि से ही समस्याओं पर विचार किया जाएगा।

जाति या लिंग के कारण किसी को ऊँचा या किसी को नीचा न ठहरा सकेंगे; छूत-अछूत का प्रश्न न रहेगा। गोरी चमड़ी वाले काले लोगों से श्रेष्ठ होने का दावा न करेंगे और ब्राह्मण हरिजन से ऊँचा न कहलाएगा। गुण, कर्म, स्वभाव, सेवा एवं बलिदान ही किसी को सम्मानित होने के आधार बनेंगे, जाति या वंश नहीं। इसी प्रकार नारी से नर श्रेष्ठ है, उसे अधिक अधिकार प्राप्त हैं; ऐसी मान्यता हट जाएगी। दोनों के कर्त्तव्य और अधिकार एक होंगे। प्रतिबंध या मर्यादाएँ दोनों पर समान स्तर की लागू होंगी। प्राकृतिक संपदाओं पर सबका अधिकार होगा। पूँजी समाज की होगी। व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार उसमें से प्राप्त करेंगे और सामर्थ्यानुसार काम करेंगे। न कोई धनपति होगा और न निर्धन, मृतक उत्तराधिकार में केवल परिवार के असमर्थ सदस्य ही गुजारा प्राप्त कर सकेंगे। हट्टे-कट्टे और कमाऊ बेटे बाप के उपार्जन के दावेदार न बन सकेंगे, वह बचत राष्ट्र की संपदा होगी। इस प्रकार धनी और निर्धन के बीच का भेद समाप्त करने वाली समाजवादी व्यवस्था समस्त विश्व में लागू होगी। हरामखोरी करते रहने पर भी गुलछर्रे उड़ाने की सुविधा किसी को न मिलेगी। व्यापार सहकारी समितियों के हाथ में होगा, ममता केवल कुटुंब तक सीमित न रहेगी वरन वह मानवमात्र की परिधि लाँघते हुए, प्राणिमात्र तक विकसित होगी। अपना और दूसरों का दुःख-सुख एक जैसा अनुभव होगा। तब न तो मांसाहार की छूट रहेगी और न पशु-पक्षियों के साथ निर्दयता बरतने की। ममता और आत्मीयता के बंधनों में बँधे हुए सब लोग एकदूसरे को प्यार और सहयोग प्रदान करेंगे।

—अखण्ड ज्योति मई 1972, पृष्ठ-35, 36

परिवर्तन जो होकर रहेगा

अगले दिनों महान परिवर्तन की प्रक्रिया प्रचंड होगी। उसे दैवी निर्धारण, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, विचारक्रांति आदि भी कहा जा सकता है, पर वह होगी वस्तुतः समाजक्रांति ही। समाज, जनसमुदाय को एकसूत्र में बाँधे रहने वाली व्यवस्था को कहते हैं। यह व्यवस्था बदलेगी, तो प्रचलन और स्वभावों में समान रूप से एक साथ परिवर्तन प्रस्तुत होंगे।

व्यक्ति सादगी सीखेगा, सरल बनेगा और संतोषी रहेगा। श्रमशीलता गौरवास्पद बनेगी। हिल-मिलकर रहने की सहकारिता और मिल-बाँटकर खाने की उदारता बदले हुए स्वभाव की विशेषता होगी। महत्त्वाकांक्षाएँ उद्विग्न न करेंगी। उद्धत प्रदर्शन का अहंकार तब बड़प्पन का नहीं, पिछड़ेपन का चिन्ह समझा जाएगा। विलासी और संग्रही भी अपराधियों की पंक्ति में खड़े किए जाएँगे और उन्हें सराहा नहीं, दबाया जाएगा। कुटिलता अपनाने की गुंजाइश जाग्रत एवं परिवर्तित समाज में रहेगी ही नहीं। छद्म आवरणों को उघाड़ने में ऐसा ही उत्साह उभरेगा जैसा कि इन दिनों विनोद मंचों के निमित्त पाया जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन दिनों अधिक कमाने, अधिक उड़ाने और ठाठ-बाट दिखाने की जिस दुष्प्रवृत्ति का बोलबाला है उसे भविष्य में अमान्य ही नहीं, हेय भी ठहरा दिया जाएगा। थोड़े में निर्वाह होने से कम समय में उपार्जन के साधन जुट जाएँगे। बचा हुआ समय तब आलस्य-प्रमाद में नहीं वरन सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन में लगा करेगा। सार्वजनिक सुव्यवस्था और मानवी गरिमा को बढ़ाने वाले तब ऐसे अनेकानेक कार्य सामने होंगे, जिनमें व्यस्त रहते हुए व्यक्ति हर घड़ी प्रसन्नता, प्रगति और सुसंपन्नता का अनुभव करता रहे।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1984, पृष्ठ-57

परिवर्तन की घड़ियाँ आ रही हैं

प्रजातंत्र के नाम पर चलने वाली धाँधली में कटौती होगी। वोट उपयुक्त व्यक्ति ही दे सकेंगे। अफसरों के स्थान पर पंचायतें शासन सँभालेंगी और जन सहयोग से ऐसे प्रयास चल पड़ेंगे, जिनकी कि इन दिनों सरकार पर निर्भरता रहती है। नया नेतृत्व उभरेगा। इन दिनों धर्मक्षेत्र के और राजनीति के लोग ही समाज का नेतृत्व करते हैं। अगले दिनों मनीषियों की एक नई बिरादरी का उदय होगा जो देश, जाति, वर्ग आदि के नाम पर विभाजित वर्तमान समुदाय को विश्व नागरिक स्तर की मान्यता अपनाने, विश्व परिवार बनाकर रहने के लिए सहमत करेंगे। तब विग्रह नहीं, हर किसी पर सृजन और सहकार सवार होगा।

विश्व परिवार की भावना दिन-दिन जोर पकड़ेगी और एक दिन वह समय आएगा, जब विश्वराष्ट्र आबद्ध विश्व नागरिक बिना आपस में टकराए प्रेमपूर्वक रहेंगे। मिल-जुलकर आगे बढ़ेंगे और वे परिस्थितियाँ उत्पन्न करेंगे जिन्हें पुरातन सतयुग के समतुल्य कहा जा सके।

इसके लिए नवसृजन का उत्साह उभरेगा। नए लोग नए परिवेश में आगे आएँगे। ऐसे लोग जिनकी पिछले दिनों कोई चर्चा तक न थी, वे इस तत्परता से बागडोर सँभालेंगे मानों वे इसी प्रयोजन के लिए कहीं ऊपर आसमान से उतरे हों या धरती फोड़कर निकले हों।

दूसरों को विनाश दीखता है, सो ठीक है। परिस्थितियों का जायजा लेकर निष्कर्ष निकालने वाली बुद्धि को भी झुठलाया नहीं जा सकता। विनाश की भविष्यवाणियों में सत्य भी है और तथ्य भी। पर हम आभास और विश्वास को क्या कहें, जो कहता है कि समय बदलेगा। घटाटोप की तरह घुमड़ने वाले काले मेघ किसी प्रचंड तूफान की चपेट में आकर उड़ते हुए कहीं से कहीं चले जाएँगे।

सघन तमिस्रा का अंत होगा। ऊषाकाल के साथ उभरता हुआ अरुणोदय अपनी प्रखरता का परिचय देगा। जिन्हें तमिस्रा चिरस्थायी लगती हो, वे अपने ढंग से सोचें, पर हमारा दिव्य दर्शन, उज्ज्वल भविष्य की झाँकी करता है। लगता है इस पुण्य-प्रयास में सृजन की पक्षधर देवशक्तियाँ प्राणपण से जुट गईं हैं। इसी सृजन प्रयास के एक अकिंचन घटक के रूप में हमें भी कुछ कारगर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुदान प्रस्तुत करने का अवसर मिल रहा है। इस सुयोग्य सौभाग्य पर हमें अतीव संतोष है और असाधारण आनंद।

—अखण्ड ज्योति जून 1984, पृष्ठ-18

विनाश नहीं सृजन होने जा रहा है

वैज्ञानिक, राजनेता, भविष्यवक्ता, अन्वेषक अपने-अपने तर्क और तथ्य आगे रखकर यह प्रमाणित करने का प्रयत्न कर रहे हैं कि महाविनाश में अब उँगलियों पर गिनने जितने समय की देर है, किसी सीमा तक उठे हुए कदम अब वापस नहीं लौटेंगे। इन प्रवक्ताओं के कथन, अनुमान, विश्लेषण पर कोई आक्षेप न करते हुए हमें यह पूरी हिम्मत के साथ कहने की छूट मिली है कि आतंक के समय रहते शांत होने की भविष्यवाणी करें और जन साधारण से कहें कि विनाश की अपेक्षा सृजन की बात सोचें। दुनिया यह नहीं रहेगी जो आज है। उसकी मान्यताएँ, भावनाएँ, विचारणाएँ, आकांक्षाएँ ही नहीं गतिविधियाँ भी इस तरह बदलेंगी कि सब कुछ नया-नया प्रतीत होने लगेगा।

आज से पाँच सौ वर्ष पुराना कोई मनुष्य कहीं जीवित हो और आकर अबकी भौतिक प्रगति के दृश्य देखे तो उसे आश्चर्यचकित होकर रह जाना पड़ेगा और कहना पड़ेगा कि यह उसके जमाने वाली दुनिया नहीं रही। यह तो भूतों की बस्ती जैसी बन गई है। सचमुच पिछले दिनों बुद्धिवाद और भौतिकवाद की सम्मिलित संरचना हुई भी ऐसी ही है जिसे असाधारण, अद्‌भुत, अनुपम और आश्चर्यजनक परिवर्तन कहा जा सके।

ठीक इसी के समतुल्य दूसरा परिवर्तन होने जा रहा है। उसके लिए पाँच सौ वर्ष प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। इस नए परिवर्तन के लिए एक शताब्दी पर्याप्त है। आज की चकाचौंध जैसी परिस्थितियाँ और आसुरी मायाचार जैसी समस्याएँ अब इन दिनों भयावह लगती है। उनके चलते प्रवाह को देखकर लगता है कि सूर्य अस्त हो चला और निविड़ निशा से भरा अंधकार अति समीप आ पहुँचा। पर ऐसा होगा नहीं। यह ग्रहण की युति है। बदली की छाया है, जिसे हटा देने वाले प्रचंड आधार विद्यमान भी हैं और गतिशील भी। लंकाकांड की नृशंसता के उपरांत रामराज्य का सतयुग वापस आया था। वैसी ही पुनरावृत्ति की हम अपेक्षा कर सकते हैं।

विनाश की सोचते और चेष्टा करते हुए मनुष्य का बुद्धि-संसार थक जाएगा और वैभव के साधन-स्रोत सूख जाएँगे। उन्हें नए सिरे से नई बात सोचनी पड़ेगी कि प्रवाह की इस दिशा को उलट दिया जाए और उपलब्ध साधनों को सृजन के लिए लगाया जाए। ऊपर से पड़ने वाले दबाव ऐसी ही उलट-फेर संभव करेंगे। उनने उलटे को उलटकर सीधा करने का निश्चय कर लिया है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1986, पृष्ठ-19, 20

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारत अग्रिम पंक्ति में खड़ा होगा

इन दिनों दुनिया का विस्तार सिमटकर राजनीति के इर्द-गिर्द जमा हो गया है। जिसके पास जितनी प्रचंड मारक शक्ति है, वह अपने को उतना ही बलिष्ठ समझता है। जो जितना संपन्न और धूर्त है, वह अपनी शेखी उसी अनुपात से बघारता है और अपने को सर्वसमर्थ घोषित करता है। इसी बलबूते वह छोटे देशों को डराता और फुसलाता भी है। यही क्रम इन दिनों चलता रहा है, किंतु अगले दिनों यह सिलसिला न चल सकेगा। परिस्थितियाँ इस प्रकार करवट लेंगी कि जो पिछले दिनों होता रहा है, अगले दिनों उसके ठीक विपरीत घटित होगा। भविष्य में नैतिक शक्ति ही सबसे भारी पड़ेगी। आत्मबल और देवबल जनसमुदाय को आकर्षित, प्रभावित एवं परिवर्तित करेगा। इस नई शक्ति का उदय होते लोग पहली बार प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे। यों प्राचीनकाल में भी इसी क्षमता का मूर्द्धन्य प्रभाव रहा है।

बुद्ध, गांधी ने कुछ ही समय पूर्व न केवल अपने देश को बदला था, वरन विशाल भूभाग को नवचेतना से प्रभावित किया था। विवेकानंद विचार परिवर्तन की महती पृष्ठभूमि बनाकर गए थे। कौडिन्य और कुमारजीव एशिया के पूर्वांचल को झकझोर चुके थे। विश्वामित्र, भगीरथ, दधीचि, परशुराम, अगस्त्य, व्यास, वसिष्ठ जैसी प्रतिभाओं का तो कहना ही क्या, जिनने धरातल को चौंकाने वाले कृत्य प्रस्तुत किए थे। चाणक्य की राजनीति ने भारत को विश्व का मुकुटमणि बनाया था। देश को सँभालने में तो अनेक प्रतापी सत्ताधीश और प्रतिभा के धनी मनीषी बहुत कुछ कर गुजरे हैं।

समय आ गया है कि भारत अपनी भीतरी समस्याओं को हल करके रहेगा। अभी कितनी ही ऐसी समस्याएँ दीखती हैं जिनसे आशंका होती है कि कहीं अगले दिन विपत्ति से भरे हुए तो न होंगे। चिनगारियाँ दावानल बनकर तो न फूट पड़ेंगी। बाढ़ का पानी सिर से ऊपर होकर तो न निकल जाएगा। ऐसी आशंकाएँ करने वाले सभी लोगों को हम आश्वस्त करना चाहते हैं कि विनाश को विकास पर हावी न होने दिया जाएगा। मार्ग में रोड़े भले ही अड़चनें उत्पन्न करते रहें, पर काफिला रुकेगा नहीं। वह उस लक्ष्य तक पहुँचेगा, जिससे विश्व को शांति से रहने और चैन की साँस लेने का अवसर मिल सके। वह दिन दूर नहीं जब भारत अग्रिम पंक्ति में खड़ा होगा और वह एक-एक करके विश्व उलझनों के निराकरण में अपनी दैवी विलक्षणता का चमत्कारी सत्परिणाम प्रस्तुत कर रहा होगा।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1987, पृष्ठ-58

भविष्य का सतयुगी समाज

आरंभिक दिनों में सर्वधर्म, समभाव, सहिष्णुता बिना टकराए अपनी-अपनी मरजी पर चलने की स्वतंत्रता अपनाए रहना ठीक है, काम चलाऊ नीति है। अंततः विश्वमानव का एक ही

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव धर्म होगा। उसके सिद्धांत, चरित्र और व्यवहार के साथ जुड़ने वाली आदर्शवादिता पर अवलंबित होंगे। मान्यताओं और परंपराओं में से प्रत्येक को तर्क, तथ्य, प्रमाण, परीक्षण एवं अनुभव की कसौटियों पर कसने के उपरांत ही विश्वधर्म की मान्यता मिलेगी। संक्षेप में उसे आदर्शवादी व्यक्तित्व और न्यायोचित निष्ठा पर अवलंबित माना जाएगा। विश्वधर्म की बात आज भले ही सघन तमिस्रा में कठिन मालूम पड़ती हो पर वह समय दूर नहीं, जब एकता का सूर्य उगेगा और इस समय जो अदृश्य है, असंभव प्रतीत होता है, वह उस वेला में प्रत्यक्ष एवं प्रकाशवान होकर रहेगा। यही हैं आने वाली सतयुगी समाज व्यवस्था की कुछ झलकियाँ जो हर आस्तिक को भविष्य के प्रति आशावान बनाती हैं।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1988, पृष्ठ-54

युगऋषि का आश्वासन

कालक्षेत्र के नियमों का भी सीमा बंधन नहीं रहेगा। इसलिए जो काम अभी हाथ में हैं, वे अन्य शरीरों के माध्यम से चलते रहेंगे। लेखन हमारा बड़ा काम है, वह अनवरत रूप से चलेगा। यह दूसरी बात है कि कलम जो हाथ में जिन उँगलियों द्वारा पकड़ी हुई है, वे ही कागज काला करेंगी या दूसरी। वाणी हमारी रुकेगी नहीं। यह प्रश्न अलग है जो जीभ इन दिनों बोलती है, वही बोलेगी या किन्हीं अन्यों को माध्यम बनाकर काम करने लगेगी। अभी हमारा कार्यक्षेत्र मथुरा, हरिद्वार रहा है और हिंदू धर्म के क्षेत्र में कार्य चलता रहा है। आगे वैसा देश, जाति, लिंग, धर्म, भाषा आदि का कोई बंधन न रहेगा, जहाँ जब जैसी उपयोगिता, आवश्यकता प्रतीत होगी, वहाँ इन इंद्रियों की क्षमताओं से समयानुकूल कार्य लिया जाता रहेगा।

सहकार और अनुदार क्रम भी चलता रहेगा। हमारे मार्गदर्शक की आयु 600 वर्ष से ऊपर है। उनका सूक्ष्मशरीर ही हमारी रूह में है। हर घड़ी पीछे और सिर पर उनकी छाया विद्यमान है। कोई कारण नहीं कि ठीक इसी प्रकार हम अपनी उपलब्ध सामर्थ्य का सत्पात्रों के लिए सत्प्रयोजनों में लगाने हेतु वैसा ही उत्साह भरा उपयोग न करते रहें। पाठकों-आत्मीय परिजनों को सतत हमारे विचार ब्रह्मवर्चस नाम से पत्रिकाओं, पुस्तिकाओं, फोल्डरों के माध्यम से मिलते रहेंगे।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-02

बेकाबू स्थिति में भगवान का हस्तक्षेप

दैवी शक्तियों का हस्तक्षेप तभी चलता है, जब जन सामान्य की अपनी क्षमताएँ चुक जाती हैं। आशा यही की जाती है कि जब मनुष्य बिगाड़ कर सकता है, तो उसी को बनाना या सुधारना भी चाहिए। बनाने, सुधारने के उपाय पिछले दिनों मनुष्य करता रहा है। इन दिनों भी कर रहा है, पर वे इस स्तर के नहीं जितने कि होने चाहिए। ऐसी दशा में जब स्थिति हर दृष्टि से बेकाबू हो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाती है तभी भगवान हस्तक्षेप करते हैं। अन्यथा यही आशा करते हैं कि बिगाड़ने वाले सुधारें भी। सुधारने की प्रक्रिया इन दिनों परोक्ष जगत में चल रही है। समय आने पर सामान्य जन उसका प्रत्यक्ष रूप भी देखेंगे।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-09

प्रतिभाओं का नया वर्ग उठेगा

लेखकों, दार्शनिकों का अब एक नया वर्ग उठेगा। वह अपनी प्रतिभा के बलबूते एकाकी सोचने और एकाकी लिखने का प्रयत्न करेगा। उन्हें उद्देश्य में सहायता मिलेगी। मस्तिष्क के कपाट खुलते जाएँगे और उन्हें सूझ पड़ेगा कि इन्हीं दिनों क्या लिखने योग्य है और मात्र वही लिखा जाना है।

क्या बिना संपन्न लोगों की सहायता लिए, बिना वर्तमान पुस्तक विक्रेताओं की मोटे मुनाफे की माँग पूरी किए, ऐसा हो सकता है कि जनसाधारण का उपयोगी लोकसाहित्य लागत मूल्य पर छपने लगे और घर-घर तक पहुँचने लगे। हमारा विश्वास है कि यह असंभव नहीं है। समय अपनी आवश्यकता पूरी कराने के लिए रास्ता निकालेगा और छाये हुए अँधेरे में किसी चमकने वाले सितारे का प्रकाश दृष्टिगोचर होगा।

दार्शनिक और वैज्ञानिक दोनों ही मुड़ेंगे। इन दोनों खदानों में से ऐसे नर-रत्न निकलेंगे जो उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने में आश्चर्यजनक योगदान दे सकें। ऐसी परिस्थितियाँ विनिर्मित करने में हमारा योगदान होगा, भले ही परोक्ष होने के कारण लोग उसे अभी देख या समझ न सकें।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-19

युगमनीषा करेगी समस्याओं का समाधान

साहित्य की आज कहीं कमी है? जितनी पत्र-पत्रिकाएँ आज प्रकाशित होती हैं, जितना साहित्य नित्य विश्वभर में छपता है, उस पहाड़ के समान सामग्री को देखते हुए लगता है कि वास्तव में मनीषी बढ़े हैं, पढ़ने वाले भी बढ़े हैं। लेकिन इन सबका प्रभाव क्यों नहीं पड़ता? क्यों एक लेखक की कलम कुत्सा भड़काने में ही निरत रहती है एवं क्यों उस साहित्य को पढ़कर तुष्टि न पाने वालों की संख्या बढ़ती चली जाती है, इसके कारण ढूँढ़े जाएँ तो वहीं आना होगा, जहाँ कहा गया था **''पावनानि न भवन्ति''**। यदि इतनी मात्रा में उच्चस्तरीय, चिंतन को उत्कृष्ट बनाने वाला साहित्य रचा गया होता एवं उसकी भूख बढ़ाने का माद्दा जन-समुदाय के मन में पैदा किया गया होता तो क्या ये विकृतियाँ नजर आतीं जो आज समाज में विद्यमान हैं। दैनंदिन जीवन की समस्याओं का समाधान यदि संभव हो सकता है तो वह युगमनीषा के हाथों ही होगा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-20-21

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारों से बदलेगी दुनिया

नवयुग यदि आएगा तो विचार-शोधन द्वारा ही क्रांति होगी तो वह लहू और लोहे से नहीं विचारों की विचारों से काट द्वारा होगी, समाज का नवनिर्माण होगा तो वह सद्‌चिारों की प्रतिष्ठपना द्वारा ही संभव होगा। अभी तक जितनी मलिनता समाज में प्रविष्ट हुई है, वह बुद्धिमानों के माध्यम से ही हुई है। द्वेष-कलह, नस्लवाद-जातिवाद, व्यापक नर-संहार जैसे कार्यों में बुद्धिमानों ने ही अग्रणी भूमिका निभाई है। यदि वे सन्मार्गगामी होते, उनके अंत:करण पवित्र होते, तप ऊर्जा का संबल उन्हें मिला होता तो उन्होंने विधेयात्मक चिंतन-प्रवाह को जन्म दिया होता, सत्साहित्य रचा होता, ऐसे आंदोलन चलाए होते।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-21

अध्यात्म की शक्ति विज्ञान से बड़ी

परिस्थितियाँ आज भी विषम हैं। वैभव और विनाश के झूले में झूल रही मानव जाति को उबारने के लिए आस्थाओं के मर्मस्थल तक पहुँचना होगा और मानवी गरिमा को उभारने, दूरदर्शी विवेकशीलता को जगाने वाला प्रचंड पुरुषार्थ करना होगा। साधन इस कार्य में कोई योगदान दे सकते हैं, यह सोचना भ्रांतिपूर्ण है। दुर्बल आस्था अंतराल को तत्त्वदर्शन और साधना प्रयोग के उर्वरक की आवश्यकता है। अध्यात्मवेत्ता इस मरुस्थल की देख-भाल करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते व समय-समय पर संव्याप्त भ्रांतियों से मानवता को उबारते हैं। अध्यात्म की शक्ति विज्ञान से भी बड़ी है। अध्यात्म ही व्यक्ति के अंतराल में विकृतियों के माहौल से लड़ सकने, निरस्त कर पाने में सक्षम तत्त्वों की प्रतिष्ठापना कर पाता है। हमने व्यक्तित्वों में पवित्रता व प्रखरता का समावेश करने के लिए मनीषा को ही अपना माध्यम बनाया एवं उज्ज्वल भविष्य का सपना देखा है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-21, 22

कुरीतियों के विरुद्ध पुरुषार्थ की आवश्यकता

बुराइयों में कितनी ही ऐसी हैं जिन्हें एक दिन भी सहन नहीं किया जाना चाहिए। नशेबाजी इनमें प्रमुख है। स्वास्थ्य, पैसा, इज्जत और अक्ल ये चारों ही वस्तुएँ इस कारण बरबाद होती हैं। पीढ़ियाँ खराब होती हैं और रुग्णता बढ़ती है। नशा न कोई उगाए, न कोई पिए इसके लिए प्राय: गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन जैसा ही रोकथाम कर सकने वाला मोर्चा खड़ा करना होगा।

विवाह-शादियों में होने वाला अपव्यय-दहेज अपने देश में एक बुरी किस्म का अभिशाप है। उसी से मिलती-जुलती मृतकभोज जैसी अन्य कुरीतियाँ प्रचलित हैं। इन सबको एकबारगी एकसाथ उखाड़ फेंकने की आवश्यकता है। भिक्षा-व्यवसाय भी एक ऐसी ही लानत है जिसके

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण समर्थ व्यक्ति भी स्वाभिमान खोकर साधु के वेश की आड़ में भिखारियों की पंक्ति में जा बैठता है। तलाश करने पर हर क्षेत्र में अपने-अपने ढंग की चित्र-विचित्र कुरीतियों का प्रचलन है। आलस्य और प्रमाद ऐसा दुर्गुण है, जिसके कारण अच्छे-खासे प्रगतिशील मनुष्य भी अपंग, असमर्थों की स्थिति में जा पहुँचते हैं और दरिद्रता का पिछड़ेपन का अभिशाप भुगतते हैं। इन मुद्दतों से जन-जीवन में घुसी हुईं बुराइयों की जड़ उखाड़ फेंकना एक व्यक्ति का काम नहीं है। इसके लिए मोर्चाबंदी करनी होगी और देखना होगा कि इस कुचक्र में फँसे हुए जन-जीवन को किस तरह मुक्त कराया जाए?

सृजन से संबंधित हजारों काम हैं और उससे भी अधिक उन्मूलन स्तर के। इन्हें कर सकना मात्र जीभ चलाने या विरोध व्यक्त करने भर से नहीं हो सकता। कितने लोगों द्वारा व्यवहार में लाए जाने पर ये कुरीतियाँ, प्रथा बन चुकी है। इन्हें स्थानांतरित करने के लिए उससे कम नहीं वरन अधिक ही पुरुषार्थ की अपेक्षा होगी।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-26

दुष्प्रवृत्तियाँ आँधी-तूफान में उड़ जाएँगी

अपने भारत की तरह ही हर देश की, हर क्षेत्र की अपने-अपने ढंग की अनगिनत समस्याएँ हैं। उनके समाधान में आगे-आगे कदम बढ़ा सकने वाले शूरवीरों की पग-पग पर आवश्यकता पड़ेगी। यह कहाँ से आएँ? आज तो उनका अभाव दीखता है। रात्रि के सन्नाटे को चीरती हुई प्रात:काल में जिस प्रकार चिड़ियों की चहचहाट सुनाई पड़ती है वैसा ही कुछ अगले दिनों सर्वत्र माहौल बनेगा। जन-जन को इसका पाठ कौन पढ़ाएगा? हर किसी को स्वार्थ में कटौती करके परमार्थ में हाथ डालने के लिए कौन विवश करेगा? इसका उत्तर आज तो नहीं दिया जा सकता। किंतु कल-परसों ऐसा समय अवश्य ही आएगा जिसमें सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन की आँधी-तूफान जैसी हवा चलेगी। आँधी चलती है तो तिनके, पत्ते और धूल कण तक आकाश चूमने लगते हैं। अगले ही दिनों ऐसी बासंती बयार चलेगी जिससे ठूँठ कोपलें फोड़ने लगें और कोपलों पर फूल आने लगें।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-26

दूरदर्शी विवेकशीलता का युग आ रहा है

हमने भविष्य की झाँकी देखी है एवं बड़े शानदार युग के रूप में देखी है। हमारी कल्पना है कि आने वाला युग प्रज्ञा युग होगा। 'प्रज्ञा' अर्थात दूरदर्शी विवेकशीलता के पक्षधर व्यक्तियों का समुदाय। अभी जो परस्पर आपा-धापी, लोभ-मोहवश संचय एवं परस्पर विलगाव की प्रवृत्ति नजर आती है, उसको आने वाले समय में अतीत की कडुवी स्मृति कहा जाता रहेगा। हर व्यक्ति स्वयं में एक आदर्श इकाई होगा एवं हर परिवार उससे मिलकर बना समाज का एक अवयव।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभी का चिंतन उच्चस्तरीय होगा। कोई अपनी अकेले की ही न सोचकर सारे समूह के हित की बात को प्रधानता देगा।

प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति अपने आप को समाज का एक छोटा-सा घटक किंतु अविच्छिन्न अंग मानकर चलेगा। निजी लाभ-हानि का विचार न करके विश्वहित में अपना हित जुड़ा रहने की बात सोचेगा। सबकी महत्त्वाकांक्षाएँ एवं गतिविधियाँ लोकहित पर केंद्रित रहेंगी न कि संकीर्ण स्वार्थपरता पर। अहंता को परब्रह्म में समर्पित कर आध्यात्मिक जीवन-मुक्ति का लक्ष्य अगले दिनों इस प्रकार क्रियान्वित होगा कि किसी को अपनी चिंता में डूबे रहने की—अपनी ही इच्छापूर्ति की—अपने परिवारीजनों की प्रगति की न तो आवश्यकता अनुभव होगी और न चेष्टा चलेगी। एक कुटुंब के सब लोग जिस प्रकार मिल-बाँटकर खाते और एक स्तर का जीवन जीते हैं, वही मान्यता व दिशाधारा अपनाए जाने का औचित्य समझा जाएगा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-27

ऋषिकल्प से मिलेगी दिशाधारा

प्रज्ञायुग के नागरिक बड़े आदमी बनने की नहीं महामानव बनने की महत्त्वाकांक्षा रखेंगे। सच्ची प्रगति इसी में समझी जाएगी कि गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से किसने अपने आप को कितना श्रेष्ठ समुन्नत बनाया? कोई किसी के विलास-वैभव की प्रतिस्पर्द्धा नहीं करेगा वरन होड़ इस बात की रहेगी कि किसने अपने आप को कितना श्रेष्ठ सज्जन एवं श्रद्धास्पद बनाया। वैभव इस बात में गिना जाएगा कि दूसरे को अनुकरण करने के लिए कितनी कृतियाँ और परंपराएँ विनिर्मित की। आज के प्रचलन में संपदा को सफलता का चिह्न माना जाता है। अगले दिनों यह मापदंड सर्वथा बदल जाएगा और यह जाना जाएगा कि किसने मानवी और गौरव-गरिमा को किस प्रकार और कितना बढ़ाया?

शरीर यात्रा के निर्वाह साधनों के अतिरिक्त प्रज्ञायुग का मनुष्य दूसरी आवश्यकता अनुभव करेगा—सद्ज्ञान की। इसके लिए आजीविका उपार्जन एवं लौकिक जानकारियाँ देने वाली स्कूली शिक्षा पर्याप्त न मानी जाएगी वरन यह खोजा जाएगा कि दृष्टिकोण के परिष्कृत करने, सद्गुणों की परंपरा बढ़ाने एवं व्यक्तित्व के प्रखर प्रामाणिक बनाने के रीति-नीति सीखने-अपनाने का अवसर कहाँ से किस प्रकार मिल सकता है? इस प्रयोजन के लिए स्वाध्याय-सत्संग, चिंतन-मनन की उच्चस्तरीय दिशाधारा कहाँ से मिल सकती है? इसे खोजने, पाने का प्रयास निरंतर जारी रखा जाएगा। यह कार्य ईश्वर उपासना, जीवन साधना एवं तपश्चर्या की सहायता से भी हो सकता है। ऋषिकल्प महामानवों का सान्निध्य, सद्भाव और अनुदान तो इस प्रयोजन के लिए सर्वोपरि रहेगा ही।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-27

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रज्ञायुग में दुनिया का कायाकल्प

प्रज्ञायुग में चिंतन, आचरण एवं व्यवहार के सभी पक्षों में कायाकल्प जैसा हेर-फेर होगा। यही युग परिवर्तन है। इस परिवर्तन का आधार दूरदर्शी विवेकशीलता की कसौटी पर कसकर अपनाया गया औचित्य ही होगा। पिछले दिनों का क्या सोचा, माना या किया जाता रहा है। इसे भावी रीति-नीति का आधार नहीं माना जाएगा वरन तर्क, तथ्य, प्रमाण, न्याय एवं लोकहित की हर कसौटी पर कसने के उपरांत जो खरा पाया जाएगा उसी को अपनाया जाएगा। न किसी को भूत का आग्रह होगा और न कोई भविष्य की अवज्ञा करेगा। वर्तमान का निर्धारण करते समय आज की आवश्यकता और उज्ज्वल भविष्य की संभावना को ही महत्त्व दिया जाएगा। यह निर्धारण पूर्वाग्रहों से मुक्ति पाए हुए अंत:करण ही कर सकेंगे। अगले दिनों उन्हीं को युगऋषि माना जाएगा और उन्हीं का निर्धारण लोकमानस द्वारा श्रद्धापूर्वक अपनाया जाएगा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-28

प्रज्ञायुग में मानवी गरिमा बढ़ेगी

प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति सामाजिक नीति, मर्यादाओं को महत्त्व देगा। कोई ऐसा काम न करेगा जिससे मानवी गरिमा एवं समाज व्यवस्था को आँच आती हो। शिष्टाचार, सौजन्य, सहयोग, ईमानदारी वचन का पालन, निश्छलता जैसी कसौटियों पर पारस्परिक व्यवहार खरा उतरना चाहिए। अनीति का न तो सहयोग किया जाए और न प्रत्यक्ष-परोक्ष समर्थन। सामाजिक सुव्यवस्था के लिए यह आवश्यक है कि मूढ़ मान्यताओं का, अवांछनीय प्रचलनों का, हानिकारक कुरीतियों का विरोध किया जाए। इस प्रकार छल, शोषण, उत्पीड़न जैसे अनाचारों से भी असहयोग, प्रतिरोध एवं संघर्ष का रुख अपनाया जाए। अनीति आचरण एवं अनुपयुक्त प्रचलनों को समान रूप से अहितकर माना जाएगा और उन्हें अपनाना तो दूर कोई उनका समर्थन तक करने को सहमत न होगा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-29

प्रज्ञायुग में परिवार की जिम्मेदारी समझी जाएगी

प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति परिवार बसाने से पहले हजार बार विचार करेगा कि क्या उसमें साथी की प्रगति तथा सुविधा के लिए समुचित साधन जुटाने की सामर्थ्य है? क्या उसमें नये बालकों को सुसंस्कारी, संभ्रांत एवं स्वावलंबी नागरिक बना सकने की योग्यता है? यदि है तो समय एवं धन की कितनी मात्रा साथी तथा नई पीढ़ी के लिए लगा सकने की स्थिति बन सकती है। इन सभी बातों का गंभीरतापूर्वक पर्यवेक्षण करने के उपरांत ही विवाह का साहस किया जाया करेगा और संतान उत्पन्न करने से पूर्व हजार बार विचार किया जाया करेगा कि इस नई जिम्मेदारी को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वहन करने के लिए पत्नी का स्वास्थ्य, पति का उपार्जन, घर का वातावरण उपयुक्त स्तर का है या नहीं। जितनी निश्चित स्थिति होगी उससे अधिक बड़ा कदम बढ़ाने का कोई दुस्साहस न करेगा। समुचित परिपालन की क्षमता न रहने पर भी बच्चे उत्पन्न करना अपना, पत्नी का, बच्चों का तथा समूचे राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय बनाने वाला अभिशाप गिना जाएगा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-30

युग को बदलना ही है

अभी भारत में हिंदू धर्म में धर्म मंच से, युग निर्माण परिवार में यह मानव जाति का भाग्य निर्माण करने वाला अभियान केंद्रित दिखाई पड़ता है। पर अगले दिनों उसकी वर्तमान सीमाएँ अत्यंत विस्तृत होकर असीम हो जाएँगी। तब किसी एक संस्था संगठन का नियंत्रण-निर्देश नहीं चलेगा वरन कोटि-कोटि घटकों से विभिन्न स्तर के ऐसे ज्योतिपुंज फूटते दिखाई पड़ेंगे जिनकी अकूत शक्ति द्वारा संपन्न होने वाले कार्य अनुपम और अद्‌भुत ही कहे-समझे जाएँगे। महाकाल ही इस महान परितर्वन का सूत्रधार है और वही समयानुसार अपनी आज की मंगलाचरण थिरकन को क्रमशः तीव्र से तीव्रतर, तीव्रतम करता चला जाएगा। तांडव नृत्य से उत्पन्न गगनचुंबी जाज्वल्यमान आग्नेय लपटों द्वारा पुरातन को नूतन में परिवर्तित करने की भूमिका किस प्रकार, किस रूप में अगले दिनों संपन्न होने जा रही है? आज उस सबको सोच सकना, कल्पना-परिधि में ला सकना सामान्य बुद्धि के लिए प्रायः असंभव ही है। फिर भी जो भवितव्यता है वह होकर रहेगी। युग को बदलना ही है, आज की निविड़ निशा का कल के प्रभातकालीन अरुणोदय में परिर्वतन होकर ही रहेगा।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1973, पृष्ठ-59, 60

विचार शक्ति का विज्ञान

जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है। मनुष्य का विकास और भविष्य उसके विचारों पर निर्भर है। जैसा बीज होगा, वैसा ही पौधा उगेगा। जैसे विचार होंगे, वैसे कर्म बनेंगे और जैसे कर्म करेंगे, वैसी परिस्थितियाँ बन जाएँगी। इसीलिए तो कहा गया है कि मनुष्य अपनी परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियंत्रणकर्त्ता और स्वामी है। वास्तविक शक्ति साधनों में नहीं, विचारों में सन्निहित है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-2

वैज्ञानिकों को संदेश

विज्ञान का अतिवाद रोका जाएगा

उपार्जन सरल है, उसे तो लुटेरे भी बड़ी मात्रा में कर लेते हैं। पर सदुपयोग के लिए बढ़ी-चढ़ी विवेकशीलता और दूरदर्शिता चाहिए। इसके बिना खतरा ही खतरा बना रहेगा। किसी उद्दंड के हाथ में पहुँची माचिस की एक तीली सारे गाँव को भी देखते-देखते जलाकर भस्म कर सकती है। फिर महाविनाशकारी अस्त्रों के ढेर में किसी पागल द्वारा एक चिनगारी फेंक देने पर इस सुंदर पृथ्वी का—प्राणि जगत का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। बात उस स्थिति तक न पहुँचे तो भी सामान्य जीवन में शक्ति का दुरुपयोग कितना भयंकर हो सकता है, इसका अनुमान उन आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कुचक्रों को देखते हुए लगाया जा सकता है, जिसके कारण मानवी कुटिलता ने हर दिशा में अनाचारों के आडंबर खड़े कर दिए हैं।

आश्चर्य इस बात का है कि सुविधा-साधनों की इतनी अभिवृद्धि होते हुए भी मनुष्य विलास, अनाचार और आक्रमण पर इस कदर क्यों उतारू है और यह ढीठता दिन-दिन क्यों अधिक बढ़ती जा रही है? कानून कचहरी क्यों काम नहीं आ रही हैं? धर्मोपदेश और नीति नियमन के लिए किए जा रहे अनेक प्रस्तुतीकरण क्यों अप्रभावी सिद्ध हो रहे हैं? साहित्य, संगीत कला का परंपरागत रुझान अपना परंपरागत राजमार्ग छोड़कर किस कारण पतन और पराभव का वातावरण बनाने को जुट गया है? ये सभी प्रश्न जितने अनसुलझे हैं, उतने ही कष्टकारक भी हैं। साथ ही यह सोचा जा सकता है कि जब अगले दिनों मानव अधिक चतुर और समर्थ होगा तो वह सार्वजनिक शांति के लिए कितना खतरनाक सिद्ध होगा? ऐसी दशा में अगले दिनों जिस प्रगति की आशा की जाती और संभावना देखी जाती है उसका लाभ मनुष्य को मिलेगा या वह और भी अधिक गहरे दलदल में फँस जाएगा, यह एक प्रश्न चिह्न है।

मनीषियों का मत है कि आज की समस्याएँ बुद्धिवाद की उपज हैं। बुद्धि ने ही अविज्ञात के अंतराल को खोजा, टटोला एवं फिर उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गई। प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन इसी दुर्गति की परिणति है। अब जब चारों ओर उनके अकाल का हाहाकार मचने लगा है तो विज्ञान की सभी विधाएँ एकदूसरे को, सत्ताधीशों को, संपन्नों को दोष देती देखी जाती हैं। क्या इसका कोई समाधान नही हैं। यह सब इसी प्रकार चलता रहेगा, जब तक कि महाविनाश सामने न आ पहुँचे?

अध्यात्मवेत्ता कहते हैं कि परोक्ष सत्ता इन समस्याओं से अनभिज्ञ नहीं हैं। अध्यात्मतंत्र इन विभीषिकाओं से जूझने हेतु अपनी तैयारी कर रहा है। वे चाहे दिखाई पड़ें अथवा न दिखाई पड़ें

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किंतु दृश्य समस्याओं के प्रतिरोध में अगले ही दिनों ऐसे बुद्धिपरक समाधान प्रस्तुत किए जाएँगे जिन्हें देखकर स्वयं इन्हें जन्म देने वाले वैज्ञानिक भी हतप्रभ होकर रह जाएँगे। जिन स्रोतों से ये समस्याएँ चालू हुईं हैं, वहीं से उनका उपचार होगा, ऐसा दिव्यदर्शी मनीषियों का कहना है।

विज्ञान ने साधन-संवर्द्धन के लिए जो अधिक परिश्रम किया है, उसकी सराहना ही की जाएगी। समूची मनुष्य जाति उसके सुई, माचिस जैसे छोटे साधनों से लेकर माइक्रोचिप्स कंप्यूटरों से विविधता से लाभान्वित हुई है। शल्य चिकित्सा ने वरदान की भूमिका निभाई है। द्रुतगति वाहनों और संचार साधनों से असाधारण सुविधा हाथ लगी है। ऐसे-ऐसे अनेक कारण गिनाए जा सकते हैं, जिनके आधार पर विज्ञान की मुक्तकंठ से सराहना की जा सकती है। पर बात एक ही जगह अटक जाती है कि उसने मानवी आदर्शवादिता के तत्त्वदर्शन को अमान्य ठहराकर पशु और पिशाच की श्रेणी तक बढ़ चलने की छूट दे दी है। पशु के लिए कोई मर्यादा नहीं। पिशाच के लिए कोई कुकृत्य नहीं। मांसाहार और पशु-शरीरों की परीक्षण के नाम पर चीर-फाड़, फैशन के लिए प्राणियों की चमड़ी उखाड़ना, वैज्ञानिक दृष्टि से अनुचित नहीं ठहरता। जब भावनात्मक करुणा का बोध टूटा तो फिर वह आगे ही बढ़ेगा। आज नहीं तो कल वैसा ही व्यवहार मनुष्य-मनुष्य के साथ करने में भी कोई संकोच न करेगा?

औद्योगीकरण के विस्तार का श्रेय विज्ञान को है। साथ ही पर्यावरण को प्रदूषण से भर देने का दोष भी उसे देना होगा। द्रुतगामी वाहनों और विशालकाय कारखानों के लिए जो ईंधन प्रयुक्त होता है उससे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, आकाश के तापमान की अभिवृद्धि, ईंधन के लिए लकड़ी का अतिशय प्रयोग होने से तापमान की अभिवृद्धि और वनों का विनाश जैसे अनेक संकट खड़े होते हैं। उसकी प्रतिक्रिया जब प्रौढ़ता के स्तर तक पहुँचेगी तो उसका प्रतिफल समुद्रों के उफनने, हिम-भंडारों के गलने के रूप में अपनी भयंकरता प्रकट किए बिना न रहेगा। अणु-ईंधन के प्रयोग से फैलने वाला विकिरण प्राणियों की जीवनीशक्ति को भारी आघात पहुँचाए बिना नहीं रह सकता। ओजोन परत फटने से ब्रह्मांड किरणें सौर लपटें धरती पर बरसने लगने और जो उपयोगी हैं, उसे जला डालने की चेतावनी अभी से मिल रही है।

जैसे शरीर में घुसे जीवाणु-विषाणु से जूझने के लिए शरीर तुरंत एंटीबाडीज तैयार करता है, उसी प्रकार प्रकृति की व्यवस्था में हस्तक्षेप करने वाले इस तंत्र में भी विज्ञान के अतिवाद से जूझने के लिए अपनी एंटीवाडीज तैयार कर रखी है। ये दुर्बुद्धि से लड़ेंगी एवं जिस प्रकार 'स्टारवार' का कार्यक्रम बनाने वाले वैज्ञानिकों का मानस बदलकर रचनात्मक चिंतन हेतु विवश करने में समर्थ हुई, अगले दिनों सारे बुद्धिजगत से मोर्चा लेगी।

सर्प विष का इलाज सर्प विष द्वारा उत्पन्न वैक्सीन से ही होता है। अगले दिनों विज्ञान में छाए अराजकतावाद से जूझने के लिए मानवतावादी, उज्ज्वल भविष्य में विश्वास रखने वाले मनीषीगण ऐसा मोर्चा खड़ा करेंगे कि विज्ञान अपनी अतिवादी बलात्कारी प्रवृत्ति से मानवता का और बिगाड़ न करे। विज्ञानवादियों के मन में घुसे विकारों का उपचार अब अध्यात्मवेत्ता करेंगे एवं असंतुलन को संतुलन में बदलेंगे। यह स्रष्टा का मानव जाति के लिए आश्वासन जो है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1990, पृष्ठ-19-21

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विज्ञान और अध्यात्म विरोधी न रहेंगे

विज्ञान दुधारी तलवार है उसे पैशाचिकता के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है और समर्थ संरक्षण के लिए भी। अगले दिनों विज्ञान के सिद्धांत अध्यात्म विरोधी न रहकर समर्थक-सहयोगी होंगे। साथ ही नये आविष्कारों का उदय और पुरानों का परिमार्जन इस प्रकार होगा कि वैज्ञानिकों की श्रम-साधना मानव कल्याण के विविध पक्षों में अभिनव उपलब्धियों का प्रयोग कर सके। आज संकीर्णतावादी राजसत्ताओं ने विज्ञान को—वैज्ञानिकों को अपने फौलादी पंजों में जकड़ रखा है और उससे करने न करने योग्य कार्य करा रहे हैं। कल ऐसा न हो सकेगा। विज्ञान को भी मुक्ति मिलेगी और वह युगांतरकारी भूमिकाएँ संपन्न करेगा।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1973, पृष्ठ-64

धनवानों को संदेश

धनवानों को हमारी नेक सलाह

जिनके पास अन्यान्योपार्जित धन है, वे उसे शुभ कार्य में लगा दें अन्यथा तेजाब की शीशी की तरह आघात पड़ने पर वह स्वयं तो नष्ट होगा ही, साथ में उसे भी ले बैठेगा जिसके पास रखा हुआ है। जीवनयापन की साधारण आवश्यकताओं के अतिरिक्त जिनके पास अत्यधिक धन है, उनको यह संदेश हृदयंगम कर लेना चाहिए कि उनके धन की सुरक्षा इसी में है कि अपने पड़ोसियों को संकट से बचाने में उसका सदुपयोग करें। इस प्रकार उनका पैसा नष्ट होने से बच जाएगा। पवित्र भावनाओं के साथ संकट के समय सहायता में जो धन लगाया जाएगा, वह ज्यों का त्यों लौट आएगा। इस लोक में और परलोक में उसका भुगतान पाई-पाई से मिलेगा। सृष्टि के नियम इस बात के साक्षी हैं कि पवित्र भावनाओं के साथ जो त्याग किया जाता है, उसका बीज सौ गुना होकर लौटता है।

संकट के क्षणों में पग-पग पर सहायता की पुकार होगी। धनियों को चाहिए कि इस अवसर पर धन को जमीन में न गाड़ें, वरन अपने भाइयों की सहायता के लिए थैलियों के मुँह खोल दें। हम जानते हैं कि जो धनिक इन पंक्तियों को पढ़ रहे होंगे, उन्हें यह सलाह उपहासास्पद, उपेक्षणीय, व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण प्रतीत होगी। किंतु हम कहे देते हैं कि एक दिन उन्हें पछताते हुए इन पंक्तियों की गंभीरता स्वीकार करनी पड़ेगी, तब उनके हाथ से स्वर्ण अवसर निकल गया होगा। संपन्न व्यक्ति त्यागी, उदार, पड़ोसियों के प्रति सेवाभावी बनकर अपने को और अपने पड़ोसियों को सुरक्षित रख सकते हैं अन्यथा लोभियों को महात्मा गांधी के शब्दों में अपने चौकीदारों को ही जान का ग्राहक' होता हुआ देखने का अवसर आ सकता है। हमारी धनियों के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए बार-बार यह सलाह है कि आपका हित इसमें है कि अनावश्यक धन को गाड़-गाड़कर न रखें, वरन उसका उपयोग लोक-कल्याण के निमित्त करें। फिर वे उन खतरों से सर्वथा सुरक्षित रह सकते हैं जो धन के कारण उनके सिर के ऊपर हर घड़ी मँडराते रहते हैं। जगत् अखंड है। संसार की भौतिक वस्तुएँ हमारे साथ चिपक नहीं सकतीं। बंदर जब मुट्ठी को छोड़ देगा तो उसका सारा क्लेश कट जाएगा।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1943, पृष्ठ-42, 43

पैसा नहीं, श्रेष्ठ आचरण ही बड़प्पन की कसौटी है

'पैसा' आपको पैसा चाहिए, यह हम मानते हैं, पैसे की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं। पैसा कमाना चाहिए इस तथ्य को हम मानते हैं, परंतु इस बात से इनकार करते हैं कि उसे अनावश्यक महत्त्व दिया जाए, सर्वोपरि स्थान दिया जाए। भोजन, वस्त्र, अध्ययन, अतिथि-सत्कार, विपत्ति-निवारण के लिए जितने पैसे की जरूरत है, उतना कमाना चाहिए और बिना कंजूसी किए आत्मोन्नति के कार्यों में उसे विवेकपूर्वक खरच करना चाहिए। जीवनयापन में पैसा एक साधन की तरह प्रयोग होना चाहिए, वह परम लक्ष्य नहीं बन जाना चाहिए। यदि ईश्वर की कृपा से आपके व्यवसाय द्वारा आवश्यकताओं को पूर्ण करने लायक आय हो जाती है तो कोई कारण नहीं कि अध्ययन, आत्मोन्नति, सत्संग, स्वाध्याय, परमार्थ, परोपकार जैसे अमूल्य तथ्यों की अवहेलना करें और पागल की तरह पैसे की रट लगाते रहें। अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखिए, निर्वाह और उन्नति के मार्ग पर चलते हुए जितने के बिना काम नहीं चल सकता उतना ही संचय कीजिए, जिंदगी भर के लिए आज ही जमा कर लेने की योजना मत बनाइए, ईश्वर के राज्य में ऐसी समुचित व्यवस्था है कि आपको यथासमय सब कुछ मिलता रहेगा, प्रभु पर विश्वास कीजिए और सीमित मात्रा में संग्रह कीजिए। अपनी बढ़ी हुई अनावश्यक जरूरतों को घटा डालिए ताकि धन की प्यास कम हो जाए। नियत व्यवसाय द्वारा जीविका कमा लेने के उपरांत अपने मस्तिष्क को दूसरी तरफ लगाइए, ज्ञान का संचय कीजिए, आत्मा को ऊँचा उठाने की साधना कीजिए, परमार्थ में प्रवृत्त होइए।

मनुष्य की महत्ता उसकी आत्मिक संपत्ति के अनुसार, ज्ञान के अनुसार, विचार और कार्यों के अनुसार नापिए, रुपयों की गड्डी से और अधिक सताने की शक्ति के अनुसार नहीं। कोई व्यक्ति अधिक सताने की शक्ति रखता है या अधिक पैसे वाला है, केवल इसी कारण उसे महत्त्व मत दीजिए, इसी कारण उसके प्रशंसक एवं सहायक मत बनिए। निर्धन गुणवानों की सतयुग में मान्यता थी, पैसा न होना कोई अयोग्यता नहीं समझी जाती थी वरन गुण, ज्ञान और सदाचरण का अभाव, तिरष्कार और लघुता का कारण होता था। अब हमें उसी प्राचीन राजमार्ग की ओर लौट चलना होगा, पैसे की अपेक्षा श्रेष्ठ आचरण को बड़प्पन की कसौटी बनाना होगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप कलियुग से घृणा कीजिए, उसके प्रमुख निवास स्थान को सर्वोपरि स्थान देने से इनकार कर दीजिए, पैसे के बाँटों से मनुष्यता की महत्ता को मत तोलिए, अब तक धन में सुख की खोज कर चुके, अब ज्ञान और आचरण में उसे तलाश कीजिए, धन संग्रह की लिप्सा छोड़िए, अनावश्यक खरचों को हटाकर सादगी का जीवन व्यतीत कीजिए, संतुष्ट रहिए, संपदा जमा हो तो उसे सत्कर्मों के लिए धरोहर समझिए। अब हम सतयुग की ओर, धर्म की ओर, ईश्वर की ओर कदम बढ़ाते हैं, इसलिए निश्चय करते हैं कि कलियुग, पाप के निवास स्थान से सावधान रहेंगे, परीक्षित की तरह उसके चंगुल में फँसकर अपना सर्वनाश न होने देंगे। पैसे को सर्वोपरि स्थान देकर कलियुग को हमने सर्वव्यापी बनाया है, अब उसको पद्च्युत करेंगे, असत्य को हटाकर सत्य की स्थापना करेंगे।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1943, पृष्ठ-185

जीवन की बहुमुखी उन्नति में रस लें

धन कमाना भी आवश्यक है, पर स्मरण रखना चाहिए कि धन कमाना ही आवश्यक नहीं है। जीवन अनेकमुखी है, उसका सभी दिशाओं में विकास होना चाहिए। जो व्यक्ति दिन-रात धन उपार्जन के लिए ही सोचते-विचारते, कार्य करते एवं मरते-जीते हैं वे भारी भूल में हैं। उन्हें पता नहीं कि इस कमाई की धुन में कितनी महत्त्वपूर्ण चीजें गँवाई जा रही हैं। आज पैसे की महिमा को जो इतना ऊँचा स्थान दिया जा रहा है, यह जीवन कला के सिद्धांतों के विपरीत है। इस मार्ग पर चलने वाले, दिन-रात पैसे की चिंता में घुलने वाले व्यक्ति एक निरर्थक अशांति का बोझ सिर पर लादते हैं, आवश्यकता से अधिक जमा हुआ पैसा आनंद नहीं देता, वरन नाना प्रकार के अनिष्ट, खतरे, पाप एवं कुविचारों को उत्पन्न करता है। अध्यात्म मार्ग के पथिकों को मध्यम श्रेणी का सद्गृहस्थ बनने का लक्ष्य सामने रखकर धन उपार्जन करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह लक्ष्य आसानी से पूरा भी हो जाता है। अमर्यादित धनी बनने की लालसा कभी पूरी होने वाली नहीं है, क्योंकि संपत्ति वृद्धि के साथ-साथ तृष्णा भी बढ़ती जाती है। फिर यह बात भी है कि ईमानदारी के साथ कोई व्यक्ति बहुत बड़ा धनी आसानी से हो भी नहीं सकता। धन-लालसा से अंधे होकर अनर्थ करने वाले व्यक्ति ही अधिकांश में धनी पाए जाते हैं।

सुख-शांति का संतुष्ट जीवन जीने की इच्छा करने वाले पाठको! जीवन की चतुर्मुखी उन्नति करो, उन रसों का भी आस्वादन करो जो अमीर-गरीब सभी के लिए समान रूप से इस सृष्टि में मौजूद हैं। अपनी शक्तियों और प्रवृत्तियों को उनकी ओर भी लगाओ, पैसे की अति लोलुपता, तृष्णा और चिंता कम करो। अर्थोपार्जन के लिए मर्यादित शक्तियाँ व्यय करो, सीमित समय लगाओ। बचा हुआ समय उन कामों में लगाओ जो आंतरिक उल्लास को प्रोत्साहन देते हैं, जो लोक और परलोक को आशामय, उज्ज्वल एवं सुख-शांति से परिपूर्ण बनाते हैं।

—अखण्ड ज्योति मई 1946, पृष्ठ-4

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वांगीण सुख-शांति का मार्ग

हमारा व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन बुरी दशा में है। उसमें अगणित दोषों का समावेश हो गया है। इसे सुधारने और सँभालने के लिए हमारी अधिक-से-अधिक शक्तियाँ लगने की आवश्यकता है। यदि इस ओर ध्यान न दिया गया तो हम सब निकट भविष्य में ऐसे गहरे गड्ढे में गिरेंगे कि उठना कठिन हो जाएगा। चारों ओर से विपत्ति के बादल आ रहे हैं। यदि आत्मरक्षा का प्रयत्न न किया गया तो यह धन, जिसकी तृष्णा से सिर उठाने के लिए फुरसत नहीं, यही एक भारी विपत्ति बन जाएगा। हमें बेतरह लुटना पड़ेगा।

खुदगर्जियों को छोड़िए, अपने मतलब से मतलब रखने की नीति से मुँह मोड़िए, धनी बनने की नहीं—महान बनने की महत्त्वाकांक्षाएँ कीजिए, आवश्यकताएँ घटाइए, जोड़ने के लिए नहीं जरूरत पूरी करने के लिए कमाइए, शेष समय और शक्ति को सर्वांगीण उन्नति के पथ पर लगने दीजिए। संचय का भौतिक आदर्श, पश्चिमी सभ्यता का है, भारतीय आदर्श त्याग प्रधान है, इसमें अपरिग्रह का महत्त्व है, जो जितना संयमी है, जितना संतोषी है वह उतना ही महान बताया गया है, क्योंकि जो निजी आवश्यकताओं से शक्ति को बचा लेगा, वही तो परमार्थ में लगा सकेगा। हम मानते हैं कि जीवन विकास के लिए पर्याप्त साधन-सामग्री मनुष्य के पास होनी चाहिए, पर वह तो योग्यता और शक्ति की वृद्धि के साथ-साथ प्राप्त होती है। आज लोग योग्यताओं को, शक्तियों को बढ़ाने की दिशा में प्रयत्न नहीं करते, वरन जो कुछ लँगड़ी-लूली शक्ति है, उसको धन की मृगतृष्णा पर स्वाहा किए दे रहे हैं। नगण्य, लँगड़ी-लूली शक्तियों से अधिक धन कमाया जाना असंभव है। ऐसे लोगों के लिए तो बेईमानी ही अधिक धन कमाने का एकमात्र साधन होता है।

आइए, मनुष्य जीवन का वास्तविक आनंद उठाने की दिशा में प्रगति करें। धन-लालसा के संकीर्ण दायरे से ऊपर उठें, अपनी आवश्यकताओं को कम करें और जो शक्ति बचे उसे शारीरिक, सामाजिक एवं आत्मिक संपदाओं की वृद्धि में लगाएँ, उसके द्वारा ही सर्वांगीण सुख-शांति का आस्वादन किया जा सकेगा।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1948, पृष्ठ-04

सच्चा धन—दैवी संपत्तियाँ

धन उतना ही आवश्यक है, जितने से शारीरिक, मानसिक और पारिवारिक उत्तरदायित्व सुविधापूर्वक पूरे होते रहें। इस मर्यादा से अधिक मात्रा में धन-उपार्जन करने एवं जोड़ने की तृष्णा सुखदायक नहीं वरन अनेक कलह-क्लेश, पाप-तापों को उपस्थित करने वाली होती है। इसलिए अनावश्यक धन के संचय को पाप माना गया है और परिग्रह (अनावश्यक धन जोड़ने) को प्रधान पाँच पापों में से एक गिना गया है। जोड़ने योग्य, जमा करने योग्य, कभी संतुष्ट न होने योग्य संपत्ति तो सद्गुणों की दैवी संपत्ति ही है। शिक्षा, शिल्प, संगीत, गायन, कला आदि की योग्यताएँ एक सोना भरी तिजोरी से अधिक मूल्यवान है। जो धन से विमुख होकर योग्यताएँ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमाता है, शक्तियाँ उपार्जित करता है, वह घाटे का नहीं, नफे का व्यापार कर रहा है। जिसने गुणों की शक्तियों की उपेक्षा करके धन कमाने का ही कार्यक्रम बनाया हुआ है, वह आत्मिक दृष्टि से मूर्ख ही ठहराया जाएगा।

धन से योग्यताओं का मूल्य अधिक है और योग्यताओं से स्वभावों का महत्त्व विशेष है। किसी व्यक्ति के पास धन और सांसारिक विशेषताएँ न होने पर भी यदि उसने स्वयं को उच्च दृष्टिकोण, सद्विचार, स्वच्छ विवेक, सात्विक वृत्ति, मधुर व्यवहार एवं अपने श्रेष्ठ स्वभाव से परिपूर्ण कर लिया है, तो निश्चय समझिए कि वह किसी भी बड़े-से-बड़े धन कुबेर और गुणवान से कम संपत्तिशाली नहीं है। अपनी उच्च आंतरिक स्थिति के कारण वह स्वल्प साधनों में भी इतना आनंदित रहेगा, जिसकी कल्पना भी असंस्कृत मस्तिष्क वाले नहीं कर सकते। जिसकी पाचनशक्ति प्रबल है, वह मोटी रोटी में भी ऐसा आनंद अनुभव करेगा जो उदर रोगी को षट्रस व्यंजनों में भी नसीब नहीं हो सकता। मनोभूमि की शुद्धता को प्रबल पाचनशक्ति ही समझना चाहिए, जिसके होने पर गरीबी में भी स्वर्गीय जीवन का रस लिया जा सकता है।

गायत्री के '**धीमहि**' शब्द का संदेश है कि वस्तुएँ मत जोड़ो, गुणों को धारण करो। कचरे की गठरी मत बाँधो, सोने का टुकड़ा रख लो। जीवन में सर्वोपरि आनंद देने की कुंजी सात्विक वृत्तियाँ ही हैं, उनका महत्त्व समझो, उन्हें ढूँढ़ो, उनका संचय करो और उनको अधिकाधिक मात्रा में अपने अंत:करण में धारण करते जाओ। जिसके पास दैवी संपत्तियाँ हैं, वास्तव में वही सच्चा धनी है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1950, पृष्ठ-05, 06

सर्वांगीण उन्नति ही हमारा लक्ष्य हो

मथुरा में एक कोढ़ी की मृत्यु हुई थी, उसके पास 64 गिन्नी निकली थीं। वह कोढ़ी दिनभर भीख माँगता था और आधे पेट खाकर अपनी भिक्षा के पैसों को जोड़ता जाता था। उसकी जीवन भर की कमाई उसके किसी काम न आई। उसने गिन्नियाँ जोड़ने की अपेक्षा यदि उन पैसों से जीवन का स्वस्थ विकास किया होता तो निश्चय ही वह अधिक सुखी जीवन व्यतीत कर सका होता।

आज अधिकांश व्यक्तियों की मनोदशा उस कोढ़ी जैसी ही है। जेवर बनवाने, जायदाद खरीदने, नफा कमाने, दौलत बढ़ाने की तृष्णा में क्या गरीब, क्या अमीर सभी अपनी-अपनी सामर्थ्य और स्थिति के अनुसार लगे हुए हैं। वे यह नहीं सोचते कि जीवन को समुन्नत और शांतिमय बनाने के लिए धन की कितनी आवश्यकता है। उसके विपरीत वे उन्नति और शक्ति को नष्ट करके भी धन का स्वामित्व बढ़ाने में संलग्न रहते हैं। यह स्थिति सर्वथा अनावश्यक एवं अनुपयुक्त है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन को कमाने में कोई दोष नहीं, उसे जितना अधिक कमाया जा सके अच्छा है। परंतु दो कसौटियों पर उस धन को सदैव कसते रहना चाहिए—(1) अनुचित रीति से तो नहीं कमाया गया है, (2) उसका दुरुपयोग तो नहीं हो रहा है ? इन दो कसौटियों पर कसते हुए धनोपार्जन का जो प्रयत्न किया जाएगा, वह आत्मा की एक शक्ति ही बनेगा, उससे जीवन की एक महत्त्वपूर्ण दिशा में उन्नति ही होगी। हमारा लक्ष्य जीवन की सर्वांगीण उन्नति है। उसके लिए स्वास्थ्य, विद्या, धन, कुशलता, मित्र समुदाय, यश, मनोबल आदि सभी बलों की आवश्यकता है। जीवन को हँसी-खुशी का बनाने को, उसे आनंद और उल्लासमय बिताने को, उपरोक्त सातों शक्तियों का बढ़ाना और उपयोग करना आवश्यक है। इन सातों पर ही समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। अन्यों की उपेक्षा करके केवल एक को ही बढ़ाना और उसको भी अवरुद्ध एवं अनुपयुक्त रखना किसी भी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता। आज अमीर और गरीब सभी इस अनौचित्य के शिकार हो रहे हैं।

धन को जीवनकेंद्र न मानकर उसे अमुक सीमा तक शक्ति रखने वाला एक साधन जब मान लिया जाए, तभी यह संभव है कि मनुष्य अपने जीवन का, अन्य दिशाओं का विकास करने की ओर ध्यान दे और स्वस्थ शरीर, परिमार्जित मस्तिष्क, व्यवस्थित व्यवहार, हेल-मेल भरी मधुर सामाजिकता, उचित मनोरंजन, परमार्थ और लोकसेवा, आत्मिक उन्नति आदि के लिए समुचित प्रयत्न करें। सच्चा धनी उसे ही कहा जा सकता जिसकी सभी जीवन दिशाएँ परिपुष्ट हैं। जो जोड़ने के चक्कर में कोल्हू के बैल की तरह लगा हुआ है, जिसे अन्य कार्यों के लिए फुरसत नहीं, उसकी विचारधारा को बीमार ही कहा जाएगा, ऐसे बीमारों को अस्पताल की चारपाई पर भले ही न पड़ा रहना पड़े पर वे वस्तुतः सदा उतने ही दुखी रहते हैं, जितने कि अन्य रोगों के रोगी।

—अखण्ड ज्योति मई 1952, पृष्ठ-06

दान देकर पिछड़ों को ऊँचा उठाएँ

यदि अपनी कमाई अच्छी होने लगी है, सुख-साधन आवश्यकता भर के लिए उपलब्ध हैं तो मनुष्य का कर्त्तव्य है कि अपने से पिछड़े हुए लोगों को अपने समान स्थिति में लाने के लिए उनकी मदद करें। यह सामाजिक दान है। दान की धर्मग्रंथों में बहुत प्रशंसा है। उसे पुण्य और स्वर्गदायक बताया गया है। विवेकपूर्वक दिया हुआ दान, जिससे सत्पात्रों को उचित उन्नति के अवसर मिलने में सहायता मिलती है, निश्चित ही पुण्य है। हर कमाने वाले को अपनी कमाई में से कुछ दान इसके लिए करना चाहिए कि अपने से पिछड़े हुए लोग अधिक ऊँचे न सही तो कम से कम अपनी जैसी स्थिति तक तो आ जाएँ।

दान के अतिरिक्त धन का उपयोग भोग में भी है। भोग का अर्थ अपने तथा अपने परिवार का स्वस्थ विकास ही है। इसके अतिरिक्त जो फालतू धन बचता है, अनावश्यक मात्रा में जोड़ा या

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जमा किया जाता है, वह किसी को सुख नहीं पहुँचा सकता, वरन सभी के लिए विपत्ति का कारण बनता है।

सुखप्राप्ति की इच्छा स्वाभाविक है। उसे उचित रीति से प्राप्त करना उचित भी है, परंतु इस मार्ग पर चलते हुए उन विभीषिकाओं का भी ध्यान रखना चाहिए जो सुख-संपत्ति के स्थान पर उलटे दु:ख-दरिद्रता में फँसा देती हैं।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1960, पृष्ठ-08

धनवान भी सामान्य स्तर का जीवन जिएँ

जो अधिक उपार्जन कर सकते हैं, उनका उत्तरदायित्व है कि सामान्य सामाजिक स्तर से बढ़-चढ़कर आडंबर न बनाएँ, सादगी से रहें और उसी प्रकार का जीवनयापन करें जैसा कि उस देश के सामान्य नागरिकों को बिताना पड़ता है। थोड़ा अंतर रह सकता है पर वह उतना ही होना चाहिए जितना हाथ की पाँचों उँगलियों की लंबाई में रहता है। राजा और रंक जैसा बहुत भारी अंतर सामाजिक रहन-सहन में रहना, केवल विद्वेष की आग ही भड़का सकता है और उससे अनाचार ही उत्पन्न हो सकता है।

अधिक उपार्जन की क्षमता की सार्थकता एवं प्रशंसा इस बात में है कि उसका उपयोग अपने से पिछड़े हुए लोगों को ऊँचा उठाने में किया जाए। दान उन लोगों का एक नैतिक कर्त्तव्य है जो अपने आवश्यक खरचों के अतिरिक्त कुछ अधिक कमा या बचा सकते हैं। अपरिग्रह एक धर्म कर्त्तव्य माना गया है। जितनी अनिवार्य आवश्यकता है, उतने से अधिक का संचय परिग्रह रूपी पाप की श्रेणी में गिना जाना चाहिए। किसे कितनी आवश्यकता है, उसका निर्णय उस समाज की मध्यम श्रेणी के स्तर के आधार पर किया जाना चाहिए, अन्यथा कोई व्यक्ति अपनी फजूलखरची एवं विलासिता को भी 'आवश्यकता' सिद्ध करने लगेगा।

आर्थिक उपार्जन की क्षमता का होना प्रशंसनीय है, पर उस प्रशंसा की सार्थकता तभी है, जब वह व्यक्तिगत विलासिता बढ़ाने की अपेक्षा लोक-कल्याण के काम आए। धन को शक्ति का प्रतीक माना गया है, उसकी लक्ष्मी के रूप में पूजा भी की जाती है। मान्यताएँ तभी सत्य मानी जा सकती हैं, जब उसके उपार्जन एवं व्यय पर धर्मबुद्धि का समुचित नियंत्रण बना रहे। अनियंत्रित उपार्जन एवं खरच दोनों ही पतन का कारण बनते हैं, उसके कारण व्यक्ति का नाश और समाज का पतन होता है। धन विधायक शक्ति अवश्य है पर उसकी विनाशक शक्ति और भी प्रचंड है। धन का अनियंत्रित उपयोग किसी भी समाज का सर्वनाश करने के लिए एक भयंकर संहारक अस्त्र सिद्ध हो सकता है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1964, पृष्ठ-18

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन का सार्थक और कल्याणकारी उपयोग

हमको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि धन किसी का नहीं है। जो उसे अपना समझकर, पकड़कर रखना चाहता है, वह बड़ा मूर्ख है। हमारे शास्त्रों में लक्ष्मी को 'चंचला' बतलाया गया है और कहा है कि जो उसे अपनी समझता है, वह अज्ञानी है। सच तो यह है कि यह उसी जगह ठहरती और वृद्धि को प्राप्त होती है, जहाँ उसका सदुपयोग किया जाता है। वेदों में उच्च स्वर से यह घोषणा की गई है—''सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों से खरच करो।'' इसका आशय यही है कि धनोपार्जन में कोई बुराई नहीं है, मनुष्य को अवश्य ही उद्योगी और कर्मशील बनकर उसका उपार्जन करना चाहिए, पर उसे कंजूस के समान पकड़कर बैठ जाने के बजाए उचित और आवश्यक कामों में खरच करते रहना चाहिए। इस प्रकार का गतिशील धन बहती हुई नदी के जल के समान गंदगी से बचा रहता है और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक बनता है। इस प्रकार के व्यवहार से धन को कमाने वाला और उसका संचालन करने वाला भी सर्वसाधारण की प्रतिष्ठा का पात्र बनते हुए आत्मसुख और संतोष प्राप्त करता है। ऐसे धनी की संपत्ति ही सार्थक और लोक-परलोक में कल्याणकारी मानी जाती है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1965, पृष्ठ-40

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धन का सदुपयोग लोक-कल्याण में

ईमानदारी और परिश्रम द्वारा उपार्जित धन से मनुष्य सादगी से रहता हुआ सुख-शांति का जीवनयापन कर सकता है। ऐसा कहा जाता है कि बिना शोषण का मार्ग अपनाए तथा बिना अनैतिक कमाई किए कोई व्यक्ति अमीर या पूँजीपति नहीं बन सकता। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने एक स्थान पर लिखा है—

''जब मैं किसी व्यक्ति को धन संपन्न देखता हूँ तो उसके सारे गुण मेरी दृष्टि से तिरोहित हो जाते हैं, वह मेरी नजरों से गिर जाता है, क्योंकि उसने एक ऐसी समाज व्यवस्था को अपना रखा है जो शोषण पर आधारित है।''

महात्मा ईसा ने भी एक स्थान पर कहा है—

''सुई के छेद से ऊँट निकल सकता है, किंतु धनवान व्यक्ति को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं मिल सकता।''

इसमें दो राय नहीं हो सकतीं—धन और ऐश्वर्य की लालसा में निमग्न व्यक्तियों को अनीति का मार्ग अपनाना ही पड़ता है। धनप्राप्ति की इस अंधी घुड़दौड़ में हमारा नैतिक स्तर चकनाचूर हो रहा है। धन का संग्रह लोगों में असंतोष पैदा कर रहा है। साम्यवाद और समाजवाद का प्रभाव विश्व में बढ़ता जा रहा है। पूँजीपतियों ने अपने धन का उपयोग समय रहते लोक-कल्याण के लिए न किया तो अंत में धन के साथ-साथ उनका विनाश भी सुनिश्चित है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पापी का धन पाप कर्म में ही लगता है। पवित्र कार्यों में उसका उपयोग होना कठिन है। अपने नाम के लिए, यश-प्रशंसा के लिए, धर्म का आडंबर करते हुए तथा धर्म-कार्यों में पैसा खरच करते हुए कुछ अमीरों को अवश्य देखा जा सकता है। किंतु इस धर्मनिष्ठा के पीछे उनका कुत्सित स्वार्थ ही होता है।

हम स्वयं अनीति द्वारा धन उपार्जित न करें, साथ ही साथ दूसरों द्वारा अन्यान्योपार्जित धन के उपभोग से भी बचें। लोभवश किसी की अनीति में सम्मिलित न हों।

सच्ची और स्थायी समृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि नीतिपूर्ण ईमानदारी के श्रम से अपनी जीविका उपार्जित करें। उसका भी पूरा-पूरा उपयोग अपने व अपने परिवार के स्वार्थ में ही न कर डालें, बल्कि उसका एक अंश लोक-कल्याण के कार्यों में भी अवश्य व्यय करते रहें। बिना दान के अर्जित संपत्ति का उपभोग करना भी पाप माना गया है। साधारण नागरिक की तरह सादगी से जीवनयापन करते हुए, शेष धन को परोपकार में व्यय करना धर्म है।

धन में पवित्रता का समावेश आवश्यक है। विष्णु भगवान की पत्नी देवी लक्ष्मी धनशक्ति का प्रतीक मानी गई हैं। '**रमन्तां पुण्या लक्ष्मीः**' पवित्रता से अर्जित संपत्ति ही स्थिर रहती है।

अनीति की कमाई, अनावश्यक व्यय मनुष्य के घृणित एवं पतित होने के सबसे बड़े प्रमाण हैं। धर्मात्मा की परीक्षा यह है कि वह परिश्रम की कमाई पर संतोष करे, एक-एक पाई का सदुपयोग करते हुए शेष धन को लोक-कल्याण के हेतु अर्पित करता रहे।

—अखण्ड ज्योति जून 1976, पृष्ठ-60

धनवान नहीं चरित्रवान बनें

ईमानदार और सदाचारी व्यक्ति संसार में सुखी न रहें ऐसा संभव नहीं। निश्चय ही वे सुखी रहे हैं, आज भी होंगे और आगे भी सुखी होते रहेंगे। ऐसे सत्पुरुषों के लिए दुःख-दारिद्र्य अथवा कष्ट-क्लेशों का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। दुःख-दारिद्र्य एवं कष्ट-क्लेश तो कुमार्गगामियों एवं मिथ्याचारियों के लिए हैं।

जो किसी का अहित नहीं करता, किसी को प्रवंचित अथवा प्रताड़ित नहीं करता, अनुचित उपार्जन से दूर रहता है, धर्माचरण द्वारा धन कमाकर उसी में संतुष्ट रहता है, स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ को महत्त्व देता है; प्रसन्नता, सुख-शांति, स्थिरता एवं संतुलन उसे ही प्राप्त होता है। ऐसा ईमानदार व्यक्ति आत्माह्लाद के अतिरिक्त दूसरे व्यक्तियों के सम्मान एवं प्रतिष्ठा का भी पात्र बन जाता है।

अपने सदाचरण से जिसने दूसरों के हृदय में अपने लिए सम्मान, सद्भाव एवं आदर उत्पन्न किया है तो दूसरों की वे भावनाएँ अदृश्य रूप में ऐसी सुशीतल, शांतिदायक तथा आनंदमयी विद्युत तरंगों को उत्पन्न करेंगी जो मानसिक स्वास्थ्य बनकर उस तक उसी प्रकार पहुँचती रहेंगी जिस प्रकार चंदनवन के निकट खड़े व्यक्ति के पास शीतल-मंद-सुगंध समीर आता रहता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस स्वास्थ्यप्रद वातावरण में सदाचारी को जो सुख-शांति एवं आह्लाद प्राप्त होगा, वह किसी स्वर्गीय आनंद से कम न होगा। पृथ्वी का परम आनंद पाने के लिए मनुष्य को ईमानदार, सन्मार्गगामी तथा सदाचारी बनना ही चाहिए।

मनुष्य की शोभा तुच्छ, तिरस्कृत अथवा अपमानित होने में नहीं है। उसकी शोभा है उच्च, सदाशयी, प्रतिष्ठित एवं भावनापूर्ण बनने में। यदि आप मनुष्यता के गौरव की रक्षा करना चाहते हैं, मनुष्यों के योग्य आदर पाना चाहते हैं तो उसके लिए सर्वमान्य, सरल तथा समुचित उपाय है ईमानदार एवं सदाचारी बनना। समाज में सच्चा व्यवहार करिए, उचित लाभ उठाइए, वचन देकर भंग न करिए, जो कुछ मुँह से कहिए उसे पूरा करने का प्रयत्न कीजिए, विश्वास देकर घात न करिए। देखिए आप समाज की श्रद्धा एवं आदर के पात्र बनते हैं या नहीं, फिर भले ही आप धन से अभावग्रस्त ही क्यों न हों! धन का न्यूनाधिक्य किसी को आदर-अनादर का पात्र नहीं बनाता, यह मनुष्य का सद्-असद् आचरण-व्यवहार है जो उसे उठाता-गिराता है। चरित्र-धन की तुलना में अन्य सारे धन धूल के समान ही माने गए हैं। विद्वानों का कहना है—"जिसका धन चला गया, कुछ गया, किंतु यदि चरित्र चला गया, साख मिट गई तो मानो सर्वस्व चला गया।"

जीवन को सम्माननीय स्थिति में रखना सबसे अधिक सुखद अवस्था है। जिस प्रकार तिरस्कार अपयश अथवा अनादर को विष बतलाया गया है उसी प्रकार विज्ञों ने सच्चे सम्मान को अमृतवत कहा है। लांछित व्यक्ति जीता हुआ भी मृतक के समान होता है। तेजहीन एवं तिरस्कृत जीवन भी कोई जीवन है? इस प्रकार की लांछना एवं घृणापूर्ण जिंदगी किसी निकृष्ट पशु को ही सहन हो सकती है, किसी आत्मसम्मान के धनी मनुष्य को नहीं।

जो व्यक्ति मन, वचन, कर्म से सचाई का व्यवहार करता है। नम्रता, उदारता, सज्जनता एवं सत्य जिसके स्वभाव की शोभा है, वह व्यक्ति स्वयं भी अपनी दृष्टि में सम्मानित रहता है। जो अपनी दृष्टि में स्वयं सम्मानित है, उठा हुआ है उसका दूसरों की दृष्टि में उठा रहना स्वाभाविक है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि मनुष्य का जो मूल्यांकन अपनी खुद की दृष्टि में होता है, वही मूल्य उसका दूसरों की दृष्टि में हुआ करता है। अपनी दृष्टि में स्वयं सम्मानित व्यक्ति केवल वही हो सकता है जो कभी किसी को धोखा नहीं देता है। किसी के धन पर दृष्टि डालना पाप समझता है। जो लोभ, लालच तथा स्वार्थ की भावना से पीड़ित नहीं है, उसे अपने प्रति यह विश्वास ही आत्मसम्मान का आधार होता है, वह समाज में यथोचित सत्य एवं ईमानदारी का व्यवहार करता है।

आत्मसम्मान में एक अनिर्वचनीय सुख-संतोष एवं गौरव ही रहता हो ऐसी बात नहीं। यह अमृत आत्मा के लिए एक आध्यात्मिक आहार है। जिसे पाकर आत्मा पुष्ट, संतुष्ट, प्रसन्न एवं स्फुरित होती है, जिससे मनुष्य कल्याण के मार्ग पर वेग से बढ़ता चला जाता है।

यह धन-पूजा का ही कुपरिणाम है कि आज अध्यात्मवादी भारतवासी लोग देश, राष्ट्र, समाज, मनुष्यता एवं आत्मा तक को भूलकर धन के पीछे भाग रहा है। उसे मात्र यह विचार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने की फुरसत नहीं दीखती कि कुधन-धान्य का संचय एवं प्रयोग करने वाले की आत्मा का पतन हो जाता है और उसके लोक-परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं। धन के नशे ने जिन्हें उन्मत्त बना दिया है, वे भला इस आर्ष सिद्धांत के महत्त्व को क्यों समझने लगे कि धन देकर परिवार और परिवार देकर आत्मा की रक्षा करनी चाहिए। आत्मा संसार में सर्वोपरि तत्त्व है, जिसका यह तत्त्व नष्ट हो गया समझना चाहिए कि उसकी जीवित ही मृत्यु हो गई।

जिस भारत का सत्य, ईमानदारी और सदाचरण विश्वविख्यात था और जिसे देखने, समझने और सीखने के लिए संसार के कोने-कोने से लोग आते थे और प्रसाद पाकर कृतार्थ हो जाते थे। संसार ने जिन भारतवासियों से सभ्यता, संस्कृति एवं सुशीलता का पाठ सीखा, सत्य एवं सदाचार का स्वरूप समझा उन्हीं भारतवासियों की यह दशा हो गई है कि वे भ्रष्टाचार, मिथ्याचार, चोर बाजारी, काला बाजारी, तस्कर व्यापार, मिलावट तथा नकलीपन में आकंठ निमग्न हो गए हैं। आज के अर्थ-पिशाचों को पैसे के सिवाय और कुछ नहीं दीखता।

इस आर्थिक व्यभिचार को प्रोत्साहन देने में न केवल अर्थ-लिप्सुओं का ही हाथ है, उन अज्ञानियों का भी हाथ समझना चाहिए जो गुणों के स्थान पर धन को आदर देने की भूल करते हैं। आज जिसके पास अधिक धन-संपत्ति है, समाज के लोग उसको ही आदर-प्रतिष्ठा देने लगते हैं। वे यह देखना नहीं चाहते हैं कि इस धनवान ने जो प्रचुर मात्रा में धन-संपत्ति एकत्र की है, वह किस मार्ग और उपायों से की है। बेईमानीपूर्वक धन कमा लेने पर जब अवमानना के स्थान पर सम्मान ही होता है तो कोई वैसा करने में संकोच ही क्यों करें? इस आर्थिक व्यभिचार को कम करने का एक उपाय यह भी है कि धन के स्थान पर गुणों का आदर किया जाए। ऐसे आदमियों का अभिनंदन एवं सार्वजनिक सम्मान किया जाए जिन्होंने अपनी ईमानदारी तथा सदाचरण का प्रमाण दिया हो फिर चाहे वह धन के संबंध में दरिद्री ही क्यों न हो! उस धन कुबेर से, जिसने कि भ्रष्टाचार से धन कमाया है, उसका वह दरबान अधिक सम्मान्य है जो अपनी छोटी-सी तनखाह में संतोषपूर्वक गुजर करता है और धन की लिप्सा में न तो किसी को धोखा देता है और न झूठ बोलता है। यदि धनधारियों के स्थान पर चरित्रधारियों की पूजा-प्रतिष्ठा होने लगे तो निश्चय ही धन का महत्त्व घट जाए और लोग प्रतिष्ठा के लिए धन के स्थान पर सदाचरण सिद्ध करने का ही प्रयत्न करने लगें। न जाने अध्यात्मवादी भारतीय समाज में कब इस प्रकार की बुद्धि आएगी और ये ऋषियों की संतानें कब समझ पाएँगी कि अधोपाप से उपार्जित धन कुल को कलंकित तथा आत्मा को विनष्ट कर देता है। किंतु यह सत्य है कि जिस क्षण से भारतवासियों में यह सद्बुद्धि आ जाएगी उसी क्षण से देश, राष्ट्र एवं समाज के शुभ दिन फिरने लगेंगे।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1966, पृष्ठ-16-18

अगले दिनों धन का दुरुपयोग रुकेगा

इन दिनों अर्थतंत्र अधिक लाभदायक उत्पादन करने के लिए स्वच्छंद है। जो रोकथाम है, वह नाममात्र की है। लोगों की कुरुचि को भड़काने और पैसा बनाने में उसे न जनता रोक पाती है

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और न शासन। जनमानस को प्रभावित करने वाले साहित्य, चित्र, फिल्म आदि में कुरुचि वाले उत्पादन की भरमार है। अगले दिनों इस प्रकार के उपार्जन पर रोक लगेगी। नशा उत्पन्न करने की बात कोई मानवी मौलिक अधिकार की दुहाई देकर न कह सकेगा। जो भी उत्पादन हो उसकी उपयोगिता जनहित में सिद्ध करने के पश्चात ही उसके निर्माण की छूट मिला करेगी।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-14

दौलत का व्यर्थ अहंकार

धन—चांदी, ताँबे और कागज के टुकड़े नोटों की अपनी एक निराली दुनिया है। वे एक हाथ से दूसरे में और दूसरे से तीसरे में मस्ती के साथ घूमते रहते हैं। देर तक वे कहीं भी नहीं ठहर सकते। फिर भी लोग सोचते रहते हैं कि हमारे पास इतना धन जमा है, इतने धन के स्वामी हैं। तिजोरी में, बैंक में धन रखा हो या सरकारी खजाने में जमा हो या अपने बाद उस पर किसी और का कब्जा हो जाए, इसमें अपना क्या बनता-बिगड़ता है? सिक्के हमारे मरने-जीने की परवाह किए बिना अपनी व्यवस्था के अनुसार घूमते-फिरते रहते हैं पर लोग उनके साथ न जाने क्या-क्या अरमान सँजोए बैठे रहते हैं। जमीन-जायदाद, सोना-चाँदी तथा अत्यावश्यक वस्तुएँ एक की मालिकी में से दूसरे के हाथ जाती रहती हैं। वे वस्तुएँ ज्यों की त्यों रहती हैं। स्वामित्व जताने वाले एक के बाद दूसरे, तीसरे आते हैं और मरते-खपते चले जाते हैं। जाने वालों में से हर एक खाली हाथ प्रयाण करता है फिर भी जिसे मरने वाले का उत्तराधिकार मिला है, वह सोचता है कि मुझे दौलत मिल गई। दौलत हँसती है कि बेवकूफ, तू जितना सदुपयोग कर ले उतना तेरा लाभ है, जमा हुई संपदा तो तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठवें को उसी क्रम से हस्तांतरित होती रहेगी जैसी तुझे हुई है। दौलत मुस्कराती है पर बेचारा भोला दर्शक यह सब समझ नहीं पाता और अपने धनी होने के अभिमान में इतराता फिरता है। जादू की नगरी में लोग व्यर्थ ही बावले बने फिरते हैं। काम और लोभ के वशीभूत होकर वासना और तृष्णा से ग्रसित होकर हम क्या-क्या अनर्थ नहीं करते?

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1962, पृष्ठ-18

धनवानों ने न्याय और औचित्य की मर्यादाएँ तोड़ी

धनाधीश समय को न तो समझ ही पा रहे हैं और न उसके साथ बदलने को तैयार हैं। अधिकाधिक संग्रह, अधिकाधिक अपव्यय और अधिकाधिक अहंकार की पूर्ति में यह क्षेत्र इतने गहरे दलदल में फँस गया है कि वापस लौटना कठिन ही दीखता है। कोई धनी अपने आप को निर्धन बनाने के लिए तैयार नहीं। परमार्थ के नाम पर आत्मविज्ञापन के लिए बदले में परलोकगत विपुल सुख-सुविधा खरीदने के लिए ही कोई कुछ पैसे-कोड़ी फैंक सकता है। इससे आगे की आशा नहीं की जा सकती। आज न कोई भी भामाशाह, अशोक, मांधाता,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाजिश्रवा, जनक, भरत, हरिश्चंद्र दिखाई देता है। उपार्जन क्षमता का लाभ इंद्रिय-लिप्सा की अहंता की तृप्ति से आगे अन्य किसी काम में करने के लिए कोई तैयार नहीं। स्त्री-पुत्रों से आगे के क्षेत्र में उदारता बरतने और अनुदान देने के लिए किसी को साहस नहीं हो रहा है। उपार्जन की, न्याय की और औचित्य की मर्यादाएँ टूट चुकीं। जिससे जैसे बन पड़ रहा है, वह उचित-अनुचित का भेदभाव किए बिना दोनों हाथों से कमाने में लगा है। कौशल के अभाव में कोई अशांत रहता है, कोई पिछड़ता है। यह घुड़दौड़ में होता रहता है पर दिशा सभी घोड़ों की एक है। उनकी चेतना इतनी परिपक्व हो गई है कि उस पर उपदेशों की बूँदें चिकने घड़े पर पड़ने के बाद इधर-उधर ढुलककर रह जाती हैं। प्रभाव कुछ नहीं होता।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1973, पृष्ठ-64, 65

धन परमार्थ में भी लगे

अब किसी को भी धन का लालच नहीं करना चाहिए और बेटे-पोतों को दौलत छोड़ मरने की विडंबना में नहीं उलझना चाहिए। ये दोनों ही प्रयत्न निरर्थक सिद्ध होंगे। अगला जमाना जिस तेजी से बदल रहा है, उससे इन दोनों विडंबनाओं से कोई-कुछ लाभान्वित न हो सकेगा वरन लोभ और मोह की इस दुष्प्रवृत्ति के कारण सर्वत्र धिक्कारा भर जाएगा। दौलत छिन जाने का दुःख और पश्चात्ताप सताएगा सो अलग। इसलिए यह परामर्श हर दृष्टि से सही ही सिद्ध होगा कि मानव जीवन जैसी महान उपलब्धि का उतना ही अंश खरच करना चाहिए, जितना निर्वाह के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हो। इस मान्यता को हृदयंगम किए बिना आज की युग पुकार के लिए किसी के लिए कुछ ठोस कार्य कर सकना संभव न होगा। एक ओर से दिशा मुड़े बिना दूसरी दिशा में चल सकना संभव ही न होगा। लोभ-मोह में जो जितना डूबा हुआ होगा उसे लोकमंगल के लिए न समय मिलेगा और न सुविधा। सो परमार्थ पक्ष पर चलने वालों को सबसे प्रथम अपने इन दो शत्रुओं को—रावण-कुंभकरण को—कंस-दुर्योधन को निरस्त करना होगा। ये दो आंतरिक शत्रु ही जीवन-विभूति को नष्ट करने के सबसे बड़े कारण हैं। सो इनसे निपटने का अंतिम महाभारत हमें सबसे पहले आरंभ करना चाहिए। देश के सामान्य नागरिक जैसे स्तर का सादगी और मितव्ययतापूर्ण जीवन स्तर बनाकर स्वल्प व्यय में गुजारे की व्यवस्था बनानी चाहिए और परिवार को स्वावलंबी बनाने की योग्यता उत्पन्न करने और हाथ-पाँव से कमाने में समर्थ बनाकर उन्हें अपना वजन आप उठा सकने की सड़क पर चला देना चाहिए। बेटे-पोतों के लिए अपनी कमाई की दौलत छोड़ मरना भारत की असंख्य कुरीतियों और दुष्ट परंपराओं में से एक है। संसार में अन्यत्र ऐसा नहीं होता। लोग अपनी बची हुई कमाई को जहाँ उचित समझते हैं वसीयत कर जाते हैं। इसमें न लड़कों की शिकायत होती है और न बाप को कंजूस-कृपण की गालियाँ पड़ती है। सो हम लोगों में से जो विचारशील हैं, उन्हें तो ऐसा साहस इकट्ठा करना चाहिए। जिनके पास इस प्रकार का ब्रह्मवर्चस न होगा, वे माला सटककर, पूजा-पत्री उलट-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पलट कर मिथ्या आत्मप्रवंचना भले ही करते रहें। वस्तुत: परमार्थ-पथ पर एक कदम भी न बढ़ सकेंगे। समय, श्रम, मन और धन का अधिकाधिक समर्पण विश्व-मानव की सेवा को समर्पण कर सकने की स्थिति तभी बनेगी, जब लोभ और मोह के खर-दूषण कुछ अवसर मिलने दें। लोभ और मोह ग्रस्त को 'आपापूती' से ही फुरसत नहीं, बेचारा लोकमंगल के लिए कहाँ से कुछ निकाल सकेगा और इसके बिना जीवन साधना का स्वरूप ही क्या बन पड़ेगा? जिनके पास गुजारे भर के लिए पैतृक संपत्ति मौजूद है, उनके लिए यही उचित है कि आगे के लिए उपार्जन बिलकुल बंद कर दें और सारा समय परमार्थ के लिए लगाएँ। प्रयत्न यह भी होना चाहिए कि सुयोग्य स्त्री-पुरुषों में से एक कमाये, घरखरच चलाए और दूसरे को लोकमंगल में प्रवृत्त होने की छूट दे दे। संयुक्त परिवारों में से एक व्यक्ति विश्व सेवा के लिए निकाला जाए और उसका खरच परिवार वहन करे। जिनके पास संग्रहीत पूँजी नहीं है। रोज कमाते रोज खाते हैं उन्हें भी परिवार का एक अतिरिक्त सदस्य बेटा 'लोकमंगल' को मान लेना चाहिए और उसके लिए जितना श्रम, समय और धन अन्य परिवारियों पर खरच होता है उतना तो करना ही चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1971, पृष्ठ-56, 57

साहित्यकारों को संदेश

साहित्यकार नवनिर्माण की भूमिका में आगे आएँगे

साहित्यकार अगले दिनों लोकरंजन के लिए नहीं लिखेंगे। उन्हें माता सरस्वती से वेश्यावृत्ति कराने में ग्लानि अनुभव होगी और कलम का उपयोग जनमानस को पाप-पंक में धकेलते हुए उनकी आत्मा रोएगी। आत्मग्लानि से प्रताड़ित साहित्यकार अब दिनोंदिन लोकमंगल की दिशा में बढ़ेगा। कलाकार, कवि, गायक, वादक, चित्रकार, मूर्तिकार, अभिनेता की आजीविका अब पशुता को भड़काकर अबोध लोकमानस के साथ व्यभिचार करने की प्रवंचना नहीं रचेगी वरन वे अपनी प्रतिभा को उसी दिशा में मोड़ेंगे जिधर मोड़ने के लिए मानवता उन्हें करुण-क्रंदन भरे स्वरों में पुकारती है। कला और साहित्य की भूमिका अगले दिनों नवनिर्माण की होगी। पिछले दिनों इस क्षेत्र में जिस प्रवंचना ने जड़ें जमा लीं थीं उनका अहं लोकधिक्कार की भर्त्सना में जल-जलकर विनष्ट ही हो जाएगा।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1973, पृष्ठ-63, 64

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्माचार्यों को संदेश

धर्मतंत्र चेते अन्यथा दुत्कारा जाएगा

हम प्रत्येक धर्मप्रेमी से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि धर्म के वर्तमान विकृत रूप में संशोधन करें और उसको सुव्यवस्थित करके पुनरुद्धार करें। धर्माचार्यों और अध्यात्मशास्त्र के तत्त्वज्ञानियों पर इस समय बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। देश को मृत से जीवित करने का, पतन के गहरे गर्त में से उठाकर समुन्नत करने की शक्ति उनके हाथ में है। क्योंकि जिस वस्तु से, समय और धन से, कौमों का उत्थान होता है, वह धर्म के निमित्त लगी हुई है। जनता की श्रद्धा धर्म में है। उसका प्रचुर द्रव्य धर्म में लगता है, धर्म के लिए छप्पन लाख साधु-संत तथा उतने ही अन्य धर्मजीवियों की सेना पूरा समय लगाए हुए है। करीब एक करोड़ मनुष्यों की धर्म सेना अरबों रुपया प्रतिवर्ष की आय, कोटि-कोटि जनता की आंतरिक श्रद्धा, इन सबका समन्वय धर्म में है। इतनी बड़ी शक्ति यदि चाहे तो एक वर्ष के अंदर-अंदर अपने देश में रामराज्य उपस्थित कर सकती है और मोतियों के चौक पुरने, घर-घर में सोने के कलश रखे होने तथा दूध-दही की नदियाँ बहने के दृश्य कल ही दिखाई दे सकते हैं। आज के पद्दलित भारतवासियों की संतान अपने प्रातः स्मरणीय पूर्वजों की भाँति पुनः गौरव प्राप्त कर सकती है।

'अखण्ड ज्योति' धर्माचार्यों को सचेत करती है कि वे राष्ट्र की पंचमांश शक्ति के साथ खिलवाड़ न करें। टन-टन, पों-पों में, ताता-थइया में, खीर-खाँड़ के भोजनों में, पोथी-पत्रों में घुला-घुलाकर जाति को और अधिक नष्ट न करें, वरन इस ओर से हाथ रोककर इस शक्ति को देश की शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक शक्तियों की उन्नति में नियोजित कर दें अन्यथा भावी पीढ़ी इसका बड़ा भयंकर प्रतिशोध लेगी। आज के धर्माचार्य कल गली-गली में दुत्कारे जाएँगे और भारतभूमि की अंतरात्मा उन पर घृणा के साथ थूकेगी कि मेरी घोर दुर्दशा में भी यह ब्रह्मराक्षस कुत्तों की तरह अपने पेट पालने में देश की सर्वोच्च शक्ति को नष्ट करते रहे थे। साथ ही 'अखण्ड ज्योति' सर्वसाधारण से निवेदन करती है कि वे धर्म के नाम पर जो भी काम करें, उसे इस कसौटी पर कस लें कि सद्भावनाओं से प्रेरित होकर आत्मोद्धार के लिए लोकोपकारी कार्य होता है या नहीं। जो भी ऐसे कार्य हों, वे धर्म ठहराए जाएँ, इनके शेष को अधर्म मानकर परित्याग कर दिया जाए।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1942, पृष्ठ-06

ज्ञान और धन का सम्मिलन होना चाहिए

जो शरीर और बुद्धि द्वारा जनता-जनार्दन की, देश जाति की सेवा कर सकते हैं, वे उसके द्वारा करें। जो धनोपार्जन करते हैं, वे अपने धन को उन सेवाभावियों के द्वारा सत्कार्यों के लिए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगाएँ। जिस प्रकार सिर और धड़ के सहयोग से जीवन कायम रहता है, उसी प्रकार ज्ञान और धन के संयुक्त सम्मिलन द्वारा एक ब्रह्मशक्ति का आविर्भाव होता है जो अचूक, अमोघ और आश्चर्यजनक फल को उत्पन्न करती है और कर सकती है। ज्ञान और कर्म अलग-अलग रहकर अकेले हैं, निर्बल हैं, सूने हैं, निरर्थक हैं। शरीर और जीवन अलग-अलग रहें तो उनका कुछ अस्तित्व नहीं। रज और वीर्य की पृथकता में कुछ विचित्रता नहीं, किंतु जब दो प्रचंड सत्ताओं का सम्मिलन होता है तो एक अद्‌भुत तत्त्व बनता है। धन और ज्ञान जब तक अलग-अलग हैं, तब तक दोनों ही निरर्थक हैं परंतु जब दोनों मिलते हैं और उनका सम्मिलित प्रयत्न सत्य के, धर्म के, बल के उत्थान में लगता है तो उसके द्वारा उस भूमि की, उस क्षेत्र की कायापलट हो जाती है; उस भूमि पर स्वर्ग उतर आता है।

धनियो! आप ऋषियों का सहयोग करो, इससे आपका धन असंख्य गुना पुण्य लेकर चक्रवृद्धि ब्याज के रूप में वापस लौटेगा। ऋषियो! आप धनियों का सहयोग करो, इससे आपकी शक्ति अनेक गुनी बढ़ जाएगी और इससे आपकी परमार्थी भावनाओं को सफल बनाने का स्वर्णिम सुयोग प्राप्त होगा। दोनों के सहयोग से आप दोनों के हिस्से में जितना पुण्य और यश आएगा, वह अलग-अलग कार्य करने की अपेक्षा बहुत अधिक होगा। जड़ वस्तुएँ एक और एक मिलकर ग्यारह हो जाती हैं। ऋषि और धनी दोनों मिलकर काम करें तो थोड़े ही परिश्रम से नर-नारायण की सच्ची पूजा का बहुत बड़ा अनुष्ठान होता है और हो सकता है। 'अखण्ड ज्योति' इस एकता के लिए हर एक विवेकशील अंत:करण से प्रार्थना करती है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1944, पृष्ठ-169

विद्या के प्रसार हेतु ऋषि आत्माओं का आह्वान

हमारे देश में शिक्षा के प्रचार के लिए संतोषजनक प्रयत्न हो रहा है, किंतु विद्या की ओर सर्वथा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जा रहा है। मनुष्योचित सद्‌गुणों और सद्‌विचारों को अर्थात विद्या को फैलाने के लिए शिक्षा से भी अधिक प्रयत्न की आवश्यकता है क्योंकि हमारी उन्नति और समृद्धि का मूलभूत आधार वही है। जड़ की उपेक्षा करके पत्तों को सींचने से काम न चलेगा। शिक्षा क्लर्कों को जन्म दे सकती है, किंतु विद्या के गर्भ से महापुरुष पैदा होते हैं, जिनकी वृद्धि ही देश की सच्ची समृद्धि है।

शिक्षा की व्यवस्था सरकारी, अर्द्ध-सरकारी तथा धनी-मानी व्यक्तियों की सहायता से हो सकती है। किंतु विद्या प्रचार की जिम्मेदारी कर्मनिष्ठ, तपस्वी, सदाचारी और ऋषिकल्प ब्रह्मवेत्ता लोग ही अपने ऊपर उठा सकते हैं। आज युग निर्माण की घड़ी है। इस महत्त्वपूर्ण घड़ी में अखण्ड ज्योति अपने परिवार की समस्त ऋषिकल्प आत्माओं का आह्वान करती है और उनके सामने अपनी संपूर्ण आग्रह शक्ति के साथ अनुरोध करती है कि मनुष्यों में मनुष्यता का प्रचार करने के लिए, मानव जाति में विद्या का विस्तार करने के लिए आगे बढ़ें और अपने तुच्छ स्वार्थों

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को छोड़कर देश, जाति और समस्त विश्व का सच्चा कल्याण करने वाले कार्यक्रम में जुट जाएँ। यदि हमारे परिवार की महत्त्वपूर्ण आत्माएँ अपनी संपूर्ण शक्ति के साथ विद्या प्रचार में प्रवृत्त हों तो बहुत थोड़े समय में ऐसे असंख्य बहुमूल्य नर-रत्नों का निर्माण किया जा सकता है, जिनको अपने आँचल में भरकर भारत माता निहाल हो जाए और अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त कर सके। क्या हमारे आह्वान का प्रबुद्ध आत्माएँ समुचित प्रकार से उत्तर देंगी ?

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1944, पृष्ठ-193

अच्छाई-बुराई का देवासुर संग्राम छिड़ ही जाए

आज समय की आवश्यकता है कि सज्जन एवं सत्पुरुष आगे आएँ, मैदान में उतरें और पतनोन्मुख धावमान मनुष्यता की रक्षा विकृतियों, दुष्प्रवृत्तियों एवं दुष्टताओं से करें। आज अच्छाई-बुराई का देवासुर संग्राम छिड़ ही जाना चाहिए। देवपुरुष सज्जनों को अपने-अपने क्षेत्रों में अपने योग्य मोर्चा सँभाल लेना चाहिए। अपने सत्कार्यों, सदाचरण एवं सद्वृत्तियों की मशालें लेकर निकलें और जहाँ-जहाँ अंधकार देखें, उसे दूर करें। समाज की विकृतियाँ अब उस सीमा तक पहुँच चुकी हैं, जहाँ पर यदि उन्हें आगे बढ़ने से न रोका गया तो निश्चित ही भारत, भारत न रह जाएगा।

मनुष्यता बहुत अधिक मूल्यवान है, उसकी रक्षा करना प्रत्येक जागरूक व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है। परमात्मा ने मनुष्य का निर्माण सज्जनता के ही उपकरणों से इसलिए किया है कि वह स्वयं तो दिव्य एवं अदीन जीवन जिए ही, साथ ही अन्य प्राणियों को भी सुख-शांतिपूर्ण जीवन जीने में सहायता करे। उस निर्माता ने प्रत्येक मनुष्य से यह आशा की थी कि वह सृष्टि में सज्जनता, सद्भावना, सहयोग तथा सौहार्द्र का वातावरण उपस्थित कर उसे स्वर्ग बना देगा। किंतु काल विक्षेप अथवा मानवता के दुर्भाग्य से आज मानव समाज ईश्वरीय आशा के विरुद्ध आचरण करने लगा है। जिन सौभाग्यवानों को अज्ञान, अंधकार अथवा अनाचरण नहीं घेर पाया वे ईश्वरीय आशा को चरितार्थ करें। मानव समाज के सुधार में तत्पर होकर श्रेय के भागी बनें। जिनका पतन हो गया है या हो रहा है, उनसे तो किसी बात की आशा की नहीं जा सकती। आशा केवल उनसे ही की जा सकती है, जो प्रभुकृपा से पतन से बचे हैं, जिन्हें अपने चरित्र एवं सद्वृत्तियों पर विश्वास है और जो यह समझते हैं कि अपेक्षाकृत उन पर दूसरों से अधिक ईश्वरीय अनुकंपा है, जिससे उनके हृदयों में सद्भावनाओं का शेषांश विद्यमान है, वे ही देवपुरुष पतनोन्मुख समाज का उद्धार कर सकते हैं।

विकृतियों में अपनी न तो कोई शक्ति होती है और न कोई धैर्य। उनका अस्तित्व ठीक उसी प्रकार अस्वाभाविक है जैसे प्रकाश के अभाव में अंधकार का। जिस समय समाज के सामने सत्प्रवृत्तियाँ आने लगेंगी, विकृतियाँ स्वयं ही भागने लगेंगी। विकृतियों का अस्तित्व निश्चय ही सत्प्रवृतियों के गोपन के कारण है। अच्छाई को सामने आने दिया जाए, भलमनसाहत को आगे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ाया जाए, देखते ही देखते समाज का सुधार प्रारंभ हो जाएगा। जनसाधारण तभी तक बुराई को अपनाए हुए है, जब तक बुराई उनके सामने है और अच्छाई के दर्शन नहीं होते। अच्छाई का दर्शन तो साधु, संत तथा सज्जन पुरुष ही करा सकते हैं। वे किसी जगह किसी साधना में क्यों न लगे हों, समाज-कल्याण के कर्त्तव्य का ध्यान रखें और अपने सुझावों, कार्यक्रमों एवं आदर्श चरित्रों से जनसाधारण को प्रकाश दें तथा राह दिखलाएँ। भारतीय समाज का नेतृत्व सदैव से धार्मिक पुरुषों ने किया है। जिस दिन से वे अपने इस दायित्व से उदासीन हो गए, समाज का विकास एवं सुधार बंद हो गया। वे सावधान होकर अपने दायित्व को कर्त्तव्य समझकर सँभालें, बस समाज का कल्याण हो गया।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1967, पृष्ठ-30

उपदेशक पहले अपना आचरण सुधारें

आदर्शों के उपदेशकों के लिए एक कड़ी परीक्षा यह है कि वह जिस स्तर पर लोगों को उठाना चाहता है, जैसा परिवर्तन औरों में कर दिखाना चाहता है, उसका नमूना अपने को बनाकर दिखाए। अन्यथा लोग यही मानते रहे हैं कि वह कथन निभा रहा होता तो उसे उपदेष्टा ने अपने जीवन में ही चरितार्थ करके क्यों न दिखाया होता! जब इतने जोर-शोर से अन्यान्यों में बदलाव लाने की बात करता है और उसका माहात्म्य फलितार्थ भी उच्चकोटि का बताता है तो उसे अपने आचरण में क्यों नहीं लाता? इस प्रश्न के उत्तर में दो ही बातें उभरकर आती हैं। एक तो यह कि कथन व्यावहारिक नहीं है; सुधार संभव नहीं है। आम लोग जो रीति-नीति अपनाए हुए हैं, वही ठीक है। यदि सुधारवादी कथन ठीक है और उसका मार्गदर्शन करने वाला उपदेष्टा उसे स्वयं करने से कतराता है तो यह समझा जा सकता है कि कहने वाला ठग है। दूसरों को फुसलाकर अपना सम्मान कराना चाहता है और स्वयं घटियापन अपनाकर उन लाभों को उठाना चाहता है जिन्हें स्वार्थपरायण लोग अपने ढंग से अपनाते और लाभ उठाते रहे हैं। यही वे संदेह हैं, जिनके कारण आदर्शवाद के उपदेशकों पर से जनसाधारण की निष्ठा उठती जाती है। उनकी वाणी का सम्मोहन ही पसंद किया जाता है और मात्र उत्सव की शोभा के लिए उन्हें बुलाते हैं। मदारी और दर्शक दोनों ही अपने-अपने ढंग से प्रसन्न हो लेते हैं पर उस शक्ति का उदय होता ही नहीं जो जनजीवन में उल्लास उत्पन्न करती है, अपने में बदलाव लाने पर साथियों का विरोध सहती है और अन्य आदर्शवादियों की तरह लौकिक रूप से घाटे में भी रहती है। सिद्धांतवादिता अपनाने पर तो उसकी वास्तविकता-अवास्तविकता को हर पैमाने से नापा जाता है। यह गृहस्थियों, तपस्वियों, संत-ब्राह्मणों और महामानवों का कार्य है। इस पर चलने वाले को निष्ठावान बनना पड़ता है, फिर उसका नेतृत्व-मार्गदर्शन जो लोग करते हैं उनका निजी स्तर तो और भी ऊँचा होना चाहिए। वह न बन पड़े तो वेल पेड़ पर कैसे चढ़े? उपदेश गले कैसे उतरे? उस कथन पर कोई ध्यान कैसे दे? उसे अपनाने पर ढर्रा बदलने वालों को जो अड़चनें उठानी पड़ती हैं उन्हें क्यों और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसलिए उठाएँ? साँचे में खिलौने और पुरजे ढाले जाते हैं। जहाँ साँचा ही टेढ़ा हो तो उसमें ढलने वाली वस्तु किस प्रकार सही बने? क्योंकर सही उतरे?

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1989, पृष्ठ-49

प्रभावशाली मार्गदर्शन वाणी से नहीं, आचरण से

युग साधना के लिए अवकाश पाने के लिए लोभ, मोह और अहंकार को जितना अधिक घटाया जा सकेगा उतना ही स्तर इस योग्य बनता जाएगा कि लोग सच्चे मन से आदरभाव रखें और उनके द्वारा दिए गए परामर्श में अपना हितसाधन समझें तथा स्वीकार करें।

इस समूचे प्रतिपादन का तात्पर्य एक ही है कि लोकसेवा के क्षेत्र में पदार्पण करने वालों को उपयुक्त बनाने से पूर्व अपने को उन दोष-दुर्गुणों से निवृत्त कर लेना चाहिए जो सर्वसाधारण तक के लिए अहितकर हैं। फिर जो पुरोहित स्तर का देवमानव बनना चाहता है उसके लिए तो यह एक प्रकार से अनिवार्य ही है कि मार्गदर्शक कहलाने से पूर्व उस मार्ग का स्वयं तो अभ्यास कर ही ले जिस पर चलने वाला अपेक्षाकृत अधिक ऊँचा उठता है।

इन दिनों सेवाक्षेत्र में करने योग्य तो अनेकानेक क्रिया-कलाप हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा, संपन्नता के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है। सुविधा-संवर्द्धन के साधन जुटाना भी आवश्यक है। पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि व्यक्ति उत्कृष्ट चिंतन का अभ्यासी बनने के साथ-साथ अपनी समस्याओं का अपने बलबूते स्वयमेव हल खोज सके। अपने बलबूते स्वावलंबी बन सके। स्थायित्व इसमें है। अन्यथा दूसरों के साधन अनुदानों का आसरा तकते-तकते आंतरिक दृष्टि से भी दीन-हीन बन बैठेगा और देवताओं से लेकर श्रीमंतों शक्तिशालियों के सामने गिड़गिड़ाकर कुछ प्राप्त कर लेने की तरकीबें ढूँढ़ता रहेगा, दीनता-हीनता की स्थिति अपना लेगा। स्वाभिमान और स्वावलंबन की दृष्टि से यह अनुपयुक्त ही है।

गुण, कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता ही वास्तविक सशक्तता है। जिसके द्वारा व्यक्ति प्रामाणिक, विश्वस्त एवं कर्त्तव्यपरायण समझा जाता है। जहाँ भी जाता है, वहीं सम्मान पाता है और समर्थन-सहयोग का वातावरण सहज ही बनता दीख पड़ता है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1989, पृष्ठ-51, 52

बाह्य कलेवर ही नहीं आंतरिक उत्कृष्टता भी चाहिए

लगता है कि कहीं बहुत बड़ी गड़बड़ हो गई है। कुछ को कुछ समझ लिया गया है। मात्र कलेवर को सब कुछ समझा गया है और यह आवश्यकता अनुभव नहीं की गई है कि उपासक को प्राणवान भी होना चाहिए। पूजा-कृत्यों के साथ अध्यात्मवादी की जीवनचर्या भी उच्चस्तरीय होनी चाहिए। उसके व्यक्तित्व में प्रामाणिकता एवं उत्कृष्टता का भी गहरा पुट होना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मात्र बहिरंग कलेवर का गठन कर लेना पर्याप्त नहीं होता। मिट्टी के खिलौने जैसी गाय से बच्चे का मन तो बहल सकता है, पर उससे दूध देने और बछड़े जनते रहने की आशा नहीं की जा सकती। काठ से बड़े हाथी की आकृति तो बन सकती है, पर उस पर सवारी करके लंबी मंजिल पूरी करने की आशा नहीं की जा सकती। खोटे सिक्के देखने में असली जैसे लगते तो हैं, पर दुकानदार के हाथ तक पहुँचते-पहुँचते उपहासास्पद बनने लगते हैं। नकली तो आखिर नकली ही रहेगा। उससे मन बहलाया जा सकता है पर वह प्रयोजन पूरा नहीं कराया जा सकता जो असली के माध्यम से संपन्न हो सकता है।

नकली अध्यात्म के खिलौने से एक बड़ी भारी हानि यह हो सकती है कि आध्यात्मिकता और आस्तिकता के तत्त्वज्ञान को ही लोग अविश्वस्त और अप्रामाणिक मानने लगें। उसे छद्म समझने और इस प्रपंच से दूर रहने की बात सोचने लगें। यदि ऐसा हुआ तो आप्तवचनों को, संसार के उच्चस्तरीय प्रतिपादनों को भारी क्षति पहुँचेगी और उस नास्तिकता का बोलबाला होने लगेगा, जिसकी आड़ में अनैतिकता, असामाजिकता, अराजकता, अवांछनीयता का बोलबाला होने लगे, उत्कृष्टता आदर्शवादिता को अनावश्यक समझा जाने लगे। महावत का अंकुश न रहने पर उन्मत्त हाथी किसी भी दिशा में चल सकता है और कुछ भी अनर्थ कर सकता है। आत्मिक तत्त्व के साथ जुड़े हुए उत्कृष्टता के, मर्यादाओं के, पुण्य-परमार्थों के विचार यदि बाँध तोड़कर उच्छृंखलता की दिशा में चल पड़ें तो मनुष्य-मनुष्य नहीं रह जाएगा, उसे प्रेत-पिशाचों जैसे उद्दंड कोलाहल खड़े करते चारों ओर देखा जाएगा।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1990, पृष्ठ-24

आचरण से दिया गया उपदेश ही सार्थक

आदर्शों के उपदेशक के लिए एक कड़ी परीक्षा यह है कि वह जिस स्तर पर लोगों को उठाना चाहता है, जैसा परिवर्तन औरों में कर दिखाना चाहता है, उसका नमूना अपने को बनाकर दिखाए, अन्यथा लोग यही मानते रहेंगे कि वह कथन निभाने होता तो उसे उपदेष्टा ने अपने जीवन में ही चरितार्थ करके क्यों न दिखाया होता। जब इतने जोर-शोर से अन्यान्यों में बदलाव लाने की बात करता है और उसका माहात्म्य फलितार्थ भी उच्चकोटि का बताता है तो उसे अपने आचरण में क्यों नहीं लाता? इस प्रश्न के उत्तर में दो ही बातें उभरकर आती हैं। एक तो यह कि कथन व्यावहारिक नहीं है। सुधार संभव नहीं है। आम लोग जो रीति-नीति अपनाए हुए हैं वही ठीक है। यदि सुधारवादी कथन ठीक है और उसका मार्गदर्शन करने वाले उपदेष्टा उसे स्वयं करने से कतराता है तो यह समझा जा सकता है कि कहने वाला ठग है। दूसरों को फुसलाकर अपना सम्मान कराना चाहता है और स्वयं घटियापन अपनाकर उन लाभों को उठाना चाहता है जिन्हें स्वार्थपरायण लोग अपने ढंग से अपनाते और लाभ उठाते रहे हैं। यही वे संदेह हैं जिनके कारण आदर्शवाद के उपदेशकों पर से जनसाधारण की निष्ठा उठती जाती है। उनकी वाणी का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्मोहन ही पसंद किया जाता है और मात्र उत्सव की शोभा के लिए उन्हें बुलाते हैं। मदारी और दर्शक दोनों ही अपने-अपने ढंग से प्रसन्न हो लेते हैं पर उस शक्ति का उदय होता ही नहीं जो जन-जीवन में उल्लास उत्पन्न करती है। अपने में बदलाव लाने पर साथियों का विरोध सहती है और अन्य आदर्शवादियों की तरह लौकिक रूप से घाटे में भी रहती है। सिद्धांतवादिता अपनाने पर तो उसकी वास्तविकता-अवास्तविकता को हर पैमाने से नापा जाता है। यह गृहस्थियों, तपस्वियों, संत, ब्राह्मणों और महामानवों का कार्य है। इस पर चलने वाले तक को निष्ठावान बनना पड़ता है, फिर उसका नेतृत्व मार्गदर्शन जो लोग करते हैं उनका निजी स्तर तो और भी ऊँचा होना चाहिए। वह न बन पड़े तो बेल पेड़ पर कैसे चढ़े? उपदेश गले कैसे उतरे? उस कथन पर कोई ध्यान कैसे दे? उसे अपनाने पर ढर्रा बदलने वालों को जो अड़चनें उठानी पड़ती हैं उन्हें क्यों और किसलिए उठाए? साँचे में खिलौने और पुरजे ढाले जाते हैं। जहाँ साँचा ही टेढ़ा हो तो उसमें ढलने वाली वस्तु किस प्रकार सही बने? क्योंकर सही उतरे?

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1989, पृष्ठ-49

राजनेताओं को संदेश

राजशक्ति ही नहीं दर्शन भी आवश्यक

आज हमारे देश और जाति में जो निर्बलताएँ हैं, उन्हें दूर करने के लिए राजनीति प्रयत्नशील है, पर साथ ही दार्शनिक प्रयत्न भी होने चाहिए। अकेली राजनीति से क्षणिक एवं आंशिक सफलता मिल सकती है। प्रजा को जैसा बनाना है, उसके अनुरूप उसके अंत:करण का निर्माण करना होगा, तभी राजनीति के प्रयत्न सफल होंगे। पुलिस और सेना चोरी, व्यभिचार तथा अनैतिकता को नहीं रोक सकती। धर्मपरायणता, कर्मफल का निश्चय एवं ईश्वर की सर्वव्यापकता का विश्वास ही उसका अंत कर सकता है। टैक्स लगाकर अथवा बाध्य करके लोगों का धन और समय लोकहित के लिए नहीं लिया जा सकता। यह तो दान, त्याग, सेवा, परमार्थ, परोपकार और स्वर्ग-मुक्ति की श्रद्धा के आधार पर ही हो सकता है। आर्डिनेन्सों के बल पर नहीं, देशभक्ति और कर्त्तव्य की भावना के आधार पर प्रजा राज्य की इच्छानुवर्ती बनती है। इन तत्त्वों को विकसित, उन्नत, उत्साहित एवं सुदृढ़ करना—यह कार्य 'दर्शन' की शक्ति से ही हो सकता है।

हमारे देश के कर्मठ कार्यकर्त्ता, सुयोग्य विचारक, देशभक्त, लोकसेवी, धर्मप्रेमी एकमात्र राजनीति की ही महत्ता अनुभव कर रहे हैं और राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने, अपनी माँगें मनवाने, इच्छित कानून बनवाने के लिए ही अत्यधिक आकृष्ट हैं। वे यह भूल जाते हैं कि राजशक्ति ही एकमात्र शक्ति नहीं है, लोक-कल्याण के लिए एक दूसरी शक्ति भी है जो उससे भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महत्त्वपूर्ण है, वह है—'दर्शन'। इसके द्वारा वह कार्य हो सकता है जो सुदीर्घकाल तक ठहरता है और जिसके आश्रय पर राजनीति का भी उत्थान-पतन निर्भर रहता है। दशरथ का संचालन वसिष्ठ करते थे। दशों दिशाओं के जिसके रथ हैं, ऐसी मानव सभ्यता का पथ प्रदर्शन शिष्ट, वसिष्ठ के 'दर्शन' का आधार लिए बिना न हो सकेगा, इसलिए जो लोग राजनीति के योग्य हैं, वे उसे हाथ में लें और शेष दर्शन के निर्माण में लग जाएँ। भगवान का अस्त्र सुदर्शन है, दैवी शक्तियों, संसार की सुख-शांति का रक्षक भी सुदर्शन ही है।

आइए, प्राचीन दर्शन का, प्राचीन संस्कृति का पुनः प्रसार करें; जिससे समस्त संसार में सुख-शांति की स्थापना हो और इस भूतल पर ही स्वर्ग के दृश्य दिखाई पड़ें।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1947, पृष्ठ-11,12

राजनैतिक परिस्थितियाँ बदलेंगी

राजनीतिज्ञों के सामने यह चुनौती है कि वे क्षेत्रवाद को समेटें। देशभक्ति की दुहाई न दें। एक राष्ट्र-एक विश्व बनाने की बात सोचें। हमारा अपना मुल्क उसमें कहाँ होगा, इसका विचार न करें। अब यह सोचना जरूरी है कि शासन कितने व किसके हाथों में हो? इसके संबंध में कसौटियाँ निर्धारित हों। जो इसके योग्य हों, उन्हीं को वह जिम्मेदारी सौंपी जाए। आज की खरचीली और प्रोपगेंडा पर अवलंबित चुनाव पद्धति में ऐसा परिवर्तन आवश्यक है, जिसमें समझदार और जिम्मेदार लोग ही संचालक तंत्र बना सकें। सर्वसाधारण को स्थानीय पंचायत स्तर की समितियाँ बनाने का हक हो। बड़ी जिम्मेदारियाँ उठाने वालों को वोट देने की योग्यता अनुबंधित हो। बहुमत आवश्यक नहीं। अल्पमत में भी जो विचारशील लोगों के वोट प्राप्त कर सकें, वे भी शासनतंत्र में पहुँचें। चुनाव लड़ने के लिए राशि खरचने की आवश्यकता न पड़े। सरकार ही उसका प्रबंध कर दे अथवा जनता वह खरच वहन करे। पार्टियाँ चुनाव लड़ें, इसकी अपेक्षा यह अच्छा है कि बिना पार्टी देश में एक ही प्रजा पार्टी रहे और उसके द्वारा चुने हुए संभ्रांत लोग शासनतंत्र चलाएँ। महत्त्वपूर्ण पदों पर भरती करने के लिए परीक्षाएँ उत्तीर्ण करना ही पर्याप्त नहीं वरन उसकी प्रतिभा, योग्यता और ईमानदारी की कसौटियों पर कसी जाने के उपरांत ही महत्त्वपूर्ण स्थानों की पूर्ति हो सकती है।

वर्तमान स्थिति में राजनीतिक क्षेत्र में उपरोक्त तीन प्रकार के परिवर्तनों की हवा चलेगी। दैवी सत्ता इसके लिए अनुकूलता उत्पन्न करेगी, लोगों के विचार इन संभावनाओं की ओर स्वयमेव मुड़ते दिखाई पड़ेंगे। इसमें राजनीतिक क्षेत्र को प्रभावित करने वाले मनीषी, अर्थशास्त्री दोनों ही नये और प्रौढ़ विचार देंगे।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1984, पृष्ठ-14

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोकसेवियों को संदेश

जनसेवा जीवन का महत्त्वपूर्ण नियम

सेवा साधना में मनुष्य को अपने बड़प्पन, पद-प्रतिष्ठा की भावना का त्याग करना आवश्यक है। स्मरण रहे कि सेवक का पद संसार में सबसे नीचा होता है। उसका स्थान जनता-जनार्दन के पैरों के नीचे होता है, तभी तो वह विराट मानव की सेवा कर सकता है। जनसेवी को पद-प्रतिष्ठा, बड़प्पन के सभी अलंकारों का त्याग करना आवश्यक है। महात्मा गांधी के पास एक संन्यासी आए, बापू ने पूछा—आप किसलिए आए हैं? जनता की सेवा करने के लिए? बापू ने कहा कि सेवा करनी है तो गेरुए वस्त्रों को उतारो क्योंकि महात्मा समझकर लोग उलटी आपकी सेवा करने लगेंगे। सेवा के समय हमें अपनी वैयक्तिक विशेषताओं, अलंकारों का त्याग करना आवश्यक है। अन्यथा सेवा एक तरह का प्रदर्शन, रस्म बन जाती है, जैसे कि आज के लोग या अफसर श्रमदान करते हुए फोटो खिंचाते और छपाते हैं।

लोकसेवक का हृदय जितना संवेदनशील होगा, उतना ही वह दूसरे की सेवा के अवसर प्राप्त कर सकेगा। संवेदना, परदु:खकातरता ही दूसरों की पीड़ा को समझने की सामर्थ्य प्रदान करती है। पत्थर दिल क्या जानेगा किसी के दु:खदरद को। हमें हृदय की सहज कोमलता का भी विकास करना चाहिए। दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझना, दूसरों की पीड़ा अपनी पीड़ा समझने पर ही उनकी सेवा-सहायता की प्रेरणा पैदा होती है।

आत्मविकास के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व, मानवीय कर्त्तव्य के नाते हमें जनसेवा को जीवन का महत्त्वपूर्ण नियम बना लेना चाहिए। नित्य किसी-न-किसी रूप में कम-से-कम एक व्यक्ति की सेवा का व्रत तो हम अत्यंत व्यस्त होकर भी निभा ही सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1964, पृष्ठ-32

सार्वजनिक जीवन का सत्यानाश

पदाधिकारी बनने की हविस में प्राय: सभी महत्त्वपूर्ण जन-संगठन, ईर्ष्या और कलह के अखाड़े बने हुए हैं। हर कोई बड़प्पन और पदवी चाहता है, जिसे मिल जाती है, वह फिर उसे सदा के लिए छाती से चिपकाए बैठा रहना चाहता है। जिसे नहीं मिलती वह सत्ता प्राप्त को पद्च्युत करने के लिए ही नहीं उस संस्था की प्रगति को ही नष्ट करने पर तुल जाता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी संस्थाएँ इस बीमारी की शिकार हो रही हैं और इसी पारस्परिक कलह में अपनी उपयोगिता एवं शक्ति गँवाती चली जा रही हैं। व्यक्तियों का पतन भी इसी कुचक्र में हो रहा है। एक व्यक्ति स्वयं सत्ता हथियाने और अपने प्रतिद्वंदी को गिराने के लिए जितने हथकंडे प्रयोग करता है; जितने कुचक्र और षड्यंत्र बनाने में अपनी शक्ति खरच करता है उतनी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही यदि वह सच्चे मन से सच्ची सेवा करने में लगा दे तो लोक-परलोक भी सुधरे, आत्मा को शांति भी मिले और जनता-जनार्दन की कुछ ठोस सेवा भी बन पड़े।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1962, पृष्ठ-34

युग परिवर्तन के लिए लोकनायकों की आवश्यकता

युग परिवर्तन की इस पावन वेला में अभीष्ट प्रयोजनों की पूर्ति के लिए ऐसी आत्मबलसंपन्न विभूतियों की आवश्यकता पड़ेगी जो भौतिक साधनों से नहीं अपने आत्मबल से जनमानस के विपन्न प्रवाह को उलट सकने का साहस कर सकें। यह कार्य न तो व्यायामशालाएँ—पाठशालाएँ पूरा कर सकती हैं और न शस्त्र-सज्जा और अर्थ-साधनों से पूरा हो सकता है। इसके लिए ऐसे अग्रगामी लोकनायकों की आवश्यकता पड़ेगी जो मनस्वी और तपस्वी बनने में अपना गर्व-गौरव अनुभव करें और जिनकी महत्त्वाकांक्षाएँ भौतिक बड़प्पन से हटकर आत्मिक महत्ता पर केंद्रीभूत हो सकें। भौतिक लाभों के लिए लालायित, लोभ-मोह के बंधनों में आबद्ध व्यक्ति इस स्तर के लाभ से लाभान्वित कदाचित ही हो सकें।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1973, पृष्ठ-61

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थ परंपरा को सजीव बनाना आवश्यक

लोकसेवकों की आवश्यकता वेतनभोगी लोगों से पूरी नहीं की जा सकती। सरकारी महकमों में लाखों कर्मचारी तथाकथित लोकसेवा के लिए नियुक्त हैं। उनका दृष्टिकोण वेतन ही रहने से जो कुछ वे करते हैं, वह उसकी अपेक्षा बहुत कम होता है जितना कि वह कर सकते थे। फिर भौतिक कामों में उनका कुछ उपयोग हो भी सकता है। आत्मिक स्तर ऊँचा उठाने में तो ऐसे लोग चाहिए जो स्वयं सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों से ओत-प्रोत जीवन जी रहे हों। उपदेश से नहीं लोग आदर्श को प्रत्यक्ष देखकर प्रभावित होते हैं। वानप्रस्थ लोगों की निष्ठा, सच्चरित्रता, अनुभवशीलता और निस्स्वार्थता ही जनजीवन को अनुप्राणित करने में समर्थ हो सकती है। ऐसे लोग वेतन से नहीं खरीदे जा सकते; जो खरीदे जाते हैं, वे वेतन भर के लिए काम करते हैं। उतनी स्वल्प चेष्टाओं से लोक-निर्माण जैसे महान उद्देश्यों की पूर्ति संभव नहीं हो सकती। भारतीय धर्म को सजीव एवं सशक्त रखा जाना हो तो उसके लिए वानप्रस्थ परंपरा को पुनः सजीव करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।

—अखण्ड ज्योति मई 1964, पृष्ठ-56

अपने परिजनों को बदलने के लिए तैयार करें

स्वयं तो हम बदलें ही, दूसरे उन सबको भी बदलने की प्रेरणा दें, जिनको वस्तुतः प्यार करते हैं और हित चाहते हैं। स्त्री, पुत्र, भाई, भतीजे, कुटुंबी, संबंधी, मित्र, परिजन सभी को इस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार की प्रेरणा करें कि सभी अपनी रीति-नीति बदलें, सुधारें। यह कर्त्तव्य हमें इन दिनों अधिक तत्परतापूर्वक पालन करना चाहिए क्योंकि महाकाल की भावी दंड व्यवस्था अंधाधुंध नहीं, सप्रयोजन है। यदि लोग बदल जाते हैं, सुधर जाते हैं तो उस क्रूर कर्म की विशेष आवश्यकता न रह जाएगी। हमारा परिवर्तन भावी आपत्तियों को टाल सकने या घटा सकने में समर्थ हो सकता है। विश्वमानव की आज सबसे बड़ी सेवा यही हो सकती कि हम जन-साधारण को दुर्बुद्धि त्यागने और सन्मार्ग पर चलने के लिए रजामंद करने का प्रयत्न करें। युग निर्माण योजना एक ऐसा ही व्यापक कार्यक्रम है। महाकाल की इच्छा भी पूरी हो जाए और हम कालदंड के प्रहारों से बच भी जाएँ। इसका यदि कोई उपाय हो सकता है तो वह युग निर्माण योजना के क्रिया-कलापों के माध्यम से जनमानस में अभीष्ट परिवर्तन प्रस्तुत कर देना ही होगा। यही आज का सबसे बड़ा परमार्थ है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1967, पृष्ठ-36

प्रज्ञापुत्रों को संदेश

यह मशाल हमारे उत्तराधिकारी सँभालें

अपना भावनात्मक परिवर्तन लक्ष्य, उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य का स्मरण दिलाएगा और कुछ ऐसा करने की प्रेरणा देगा जो अब तक नहीं किया गया है। अब परिवर्तन की वेला आ पहुँची। युग परिवर्तन का महान प्रयोजन प्रबुद्ध आत्माओं के आत्मपरिवर्तन से आरंभ होगा। हम बदलेंगें तो जमाना बदलेगा। प्रकाश अपने भीतर पैदा होगा और फिर वह सर्वत्र फैल जाएगा। अज्ञानांधकार की विभीषिका इसी क्रम से समाप्त होगी।

जिस मशाल को हम अब तक जला रहे हैं, अब उसे दूसरे उत्तरदायी उत्तराधिकारियों के हाथ में सौंपना होगा। इसलिए उनका आह्वान किया जा रहा है, जिनमें जीवन है। उन्हें जानना चाहिए कि यह सामान्य समय नहीं है, इसमें प्रबुद्ध आत्माओं को सामान्य स्तर का जीवन नहीं जीना है। कुछ अतिरिक्त कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व उनके कंधे पर हैं, जिनकी यदि उपेक्षा की जाती रही तो आत्मप्रताड़ना की इतनी बड़ी वेदना उनके अंतरंग में उठती रहेगी कि आत्मग्लानि का कष्ट, शारीरिक विषम वेदनाओं से भी अधिक भारी पड़ेगा और उसे सहन करना कठिन हो जाएगा। धन, स्वास्थ्य, यश, पद आदि की क्षति आसानी से पूरी हो सकती है, पर कर्त्तव्य की उपेक्षा करते हुए जीवन का अमूल्य अवसर गँवा बैठने पर, जब समय निकल जाता है, तब अपनी चूक पर ऐसा पश्चात्ताप होता है, जिसकी व्यथा सहन कर सकना कठिन हो जाता है।

अपने परिवार में किसी को वेदना सहन नहीं करनी पड़े, यही उत्तम है। हम जाग्रत संस्कारों और विशेष लक्ष्य के लिए भेजे हुए अवतरित हुए नये युग के अग्रदूत हैं। हमें अपना स्वरूप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझना चाहिए, मार्ग समझना चाहिए और समय रहते वह करना चाहिए जो करना उचित और आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

इस संध्या वेला में हमें आलस्य और प्रमाद में अपनी चेतना को मूर्च्छित नहीं पड़े रहने देना चाहिए। शरीर, परिवार, अर्थोपार्जन आदि के उत्तरदायित्वों का निर्वाह जिस प्रकार करते हैं, उनके लिए जिस प्रकार सोचते और करते हैं, उसी प्रकार हमें अपने चिरस्थायी और सामयिक आध्यात्मिक कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिए भी कुछ करते और सोचते रहना चाहिए। उस ओर से सर्वथा मुख मोड़ लेना, नितांत उपेक्षा बरतना उचित नहीं।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1968, पृष्ठ-64

ऋषिरक्त के उत्तराधिकारी, कर्त्तव्य निभाएँ

मानव जाति आज जीवन-मरण के झूले में झूल रही है उसे अगले ही दिनों या तो डूबना है या पार होना है। अधर में देर तक लटकी नहीं रह सकती। हम ऋषिरक्त के उत्तराधिकारी, मानवी गरिमा के प्रहरी, यदि इन घड़ियों में अपने पवित्रतम कर्त्तव्य का, उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकें तो यह मात्र हमारे लिए निकृष्टतम भर्त्सना का ही प्रसंग न होगा वरन अपने देश और समाज सहित समस्त मानव जाति के, विश्ववसुधा के विनाश का कलंक भी अपने ही सिर लगेगा।

हमें उत्तराधिकार में वे विभूतियाँ उपलब्ध हैं जो विश्व-शांति की भूमिका का निर्वाह करने में सदैव खरी सिद्ध होती रही हैं। यह सब होते हुए भी यदि हम नर-कीटकों की तरह पेट और प्रजनन के हेय प्रयोजनों में ही खपते-मरते रहे और सुविस्तृत कर्त्तव्यों की ओर से विमुख ही बने रहे तो इसे इस युग की महती दुर्घटना कहा जाएगा। इस संकीर्णता को आदर्शों का, देवत्व का पराभव ही माना जाएगा।

हमें उन उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए तत्पर होना ही चाहिए जो इस आपत्तिकाल में आपत्ति धर्म की तरह अनायास ही आकर हमारे कंधों पर लद गए हैं। इसके बिना कोई गति नहीं। सामान्यकाल में सुविधासंपन्न जीवन जीने की बात समझ में आती है, पर आपत्ति में तो बड़ी से बड़ी व्यक्तिगत असुविधा को सहन करते हुए, उस सामूहिक सुरक्षा में संलग्न होना चाहिए, जिस पर कि अपना और अपने परिवार का अस्तित्व-संरक्षण भी निर्भर है। समय की—युग की पुकार यही है। इसे अनसुना नहीं किया जाना चाहिए।

आज कर्तृत्व निर्धारण की वेला में हमें आवश्यक प्रकाश और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। यह प्रयोजन इतिहास के पृष्ठ पलटने से सहज ही पूरा हो सकता है। हमारी अविच्छिन्न परंपरा एक ही रही है कि स्वयं को उन विभूतियों से सुसंपन्न करना जो मनुष्य को देव स्तर तक ऊँचा उठाकर ले जाती हैं। साथ ही उन दिव्य संपदाओं को अपनी पहुँच, पकड़ में आ सकने वाले सुदूर क्षेत्रों तक उदारतापूर्वक बखेरना ताकि कहीं भी अज्ञान, अशक्ति और अभाव का अस्तित्व रहने न पाए।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1975, पृष्ठ-47

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अग्रिम पंक्ति में आने का यही वक्त

युग परिवर्तन की घड़ियों में भगवान अपने विशेष पार्षदों को महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ संपादित करने के लिए भेजता है। युग निर्माण परिवार के परिजन निश्चित रूप से उसी शृंखला की अविच्छिन्न कड़ी हैं। उस देव ने उन्हें अत्यंत पैनी सूक्ष्म दृष्टि से ढूँढ़ा और स्नेह-सूत्र में पिरोया है। यह अकारण नहीं है। यों सभी आत्माएँ ईश्वर की संतान हैं पर जिनने अपने को तपाया, निखारा है उन्हें ईश्वर का विशेष प्यार-अनुग्रह उपलब्ध रहता है। यह उपलब्धि भौतिक सुख-सुविधाओं के रूप में नहीं है। यह लाभ की प्रवीणता और कर्मपरायणता के आधार पर कोई भी आस्तिक-नास्तिक प्राप्त कर सकता है। भगवान जिसे प्यार करते हैं उसे परमार्थ-प्रयोजनों की पूर्ति के लिए स्फुरणा एवं साहसिकता प्रदान करते हैं। रिजर्व फोर्स की पुलिस एवं सेना आड़े वक्त पर विशेष प्रयोजनों की पूर्ति के लिए भेजी जाती है। युग निर्माण परिवार के सदस्य अपने को इसी स्तर का समझें और अनुभव करें कि युगांतर के अति महत्त्वपूर्ण अवसर पर उन्हें हनुमान, अंगद जैसी विशेष भूमिका संपादित करने को यह जन्म मिला है। इस देवसंघ में इसीलिए प्रवेश हुआ है। युग परिवर्तन के क्रिया-कलाप में असाधारण आकर्षण और कुछ कर गुजरने के लिए सतत अंतःस्फुरणा का और कुछ कारण हो ही नहीं सकता। हमें तथ्य को समझना चाहिए। अपने स्वरूप और लक्ष्य को पहचानना चाहिए तथा आलस्य-प्रमाद में बिना एक क्षण गँवाए अपने अवतरण का प्रयोजन पूरा करने के लिए अविलंब कटिबद्ध हो जाना चाहिए। इससे कम में युग निर्माण परिवार के किसी सदस्य को शांति नहीं मिल सकती। अंतरात्मा की अवज्ञा-उपेक्षा करके जो लोभ-मोह के दलदल में घुसकर कुछ लाभोपार्जन करना चाहेंगे तो भी अंतर्द्वंद उन्हें उस दिशा में कोई बड़ी सफलता मिलने न देगा। माया मिली न राम, वाली दुविधा में पड़े रहने की अपेक्षा यही उचित है कि दुनियादारी के जाल-जंजाल में घुसते चले जाने वाले अंधानुयायियों में से अलग छिटककर अपना पथ स्वयं निर्धारित किया जाए। अग्रगामी पंक्ति में आने वालों को ही श्रेय भाजन बनने का अवसर मिलता है। महान प्रयोजनों के लिए भीड़ें तो पीछे भी आती रहती हैं और अनुगामियों से कम नहीं कुछ अधिक ही काम करती हैं पर तब श्रेय-सौभाग्य का अवसर बीत गया होता है। महाकाल चाहते हैं कि युग निर्माण परिवार की आत्मबलसंपन्न आत्माएँ इन्हीं दिनों आगे आएँ और अग्रिम पंक्ति में खड़े होने वाले युगनिर्माताओं की ऐतिहासिक भूमिकाएँ निभाएँ। इन पंक्तियों का प्रत्येक अक्षर इसी संदर्भ से ओत-प्रोत समझा जाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1973, पृष्ठ-61, 62

हमारे प्रज्ञापुत्र महामानवों की भूमिका निभाएँ

धागे में पिरोये हुए मोतियों की तरह हमने इतना परिवार अपने साथ प्रेम-बंधनों में जकड़कर बाँध रखा है। उसकी प्रगति-अवनति हमारी अपनी समस्या है। यदि युग निर्माण परिवार के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सदस्य ऐसे ही लोभ-मोह में ग्रस्त, पेट और प्रजनन में व्यस्त, वासना और तृष्णा से भरे पशु जीवन जीकर मर जाते हैं तो यह हमारे के लिए भी कलंक की बात है और इस परिवार के लिए लज्जा की भी। हाथी के बच्चे बकरों की शक्ल में दीखें तो इसमें उपहास हाथी का भी है और बच्चों का भी। परिवार यदि बन ही गया तो शोभा इसी में है कि उसका स्तर भी कुलपति के अनुरूप हो। हर अभिभावक को अपनी संतान के प्रति ऐसी ही इच्छा रहती है। उनकी भी है। युग निर्माण परिवार का प्रत्येक सदस्य महामानवों की ऐतिहासिक भूमिका निभा सके—इसी उधेड़-बुन में हम लगे रहते हैं। अपना तप-पुण्य देकर आरंभिक लालच भी इसीलिए पूरा करते हैं कि आगे चलकर ये बालक हमारे आदेशों को अपनाने का साहस करेंगे।

—अखण्ड ज्योति मई 1972, पृष्ठ-4

प्रज्ञापुत्र अपना प्रयोजन समझें

प्रज्ञापुत्रों को इस आपत्ति काल में लालसा, लिप्सा, तृष्णा, वासना और अहंता की महत्त्वाकांक्षाएँ पूरी करने की छूट नहीं है। उन्हें दूसरा प्रयोजन देकर भेजा गया है, उसी को तत्परतापूर्वक करना है—सफलता-असफलता और लाभ-हानि का विचार किए बिना, क्योंकि महाभारत विजय की तरह पांडवों की जीत निश्चित है। इससे पीछे हटकर अपयश ही कमाया जा सकता है, अपना लोक-परलोक ही बिगाड़ा जा सकता है। अच्छा हो कि ऐसा अवसर न आए। अच्छा हो कि यह सुनने के लिए, यह देखने के लिए कान व नेत्र, सक्रिय न रहें कि जिनके ऊपर आदर्शवादिता और उत्कृष्टता को जीवंत रखने का दायित्व था, वे परीक्षा की घड़ी आने पर खोटे सिक्के की तरह काले पड़ गए और कूड़े के ढेर में छिप गए।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1986, पृष्ठ-54

प्रज्ञापुत्र पात्रता विकसित करें

ठोस काम वह किया जाना चाहिए जिसे करने का दायित्व महाकाल ने वरिष्ठ प्रज्ञापुत्रों के कंधों पर सौंपा है। वह कार्य एक ही है—जनमानस में महाप्रज्ञा का आलोक भर देना। इसके लिए किस स्थिति में किन्हें क्या करना चाहिए, इसका उल्लेख बार-बार होता रहा है। उस पर एक बार फिर दृष्टिपात किया जा सकता है कि जो सौंपा गया था, वह बन पड़ा या नहीं। बन पड़ा तो इतना कम तो नहीं है जो तपती धरती को मूसलाधार जल बरसने वाले महामेघ की गरिमा से कम पड़े। समय की माँग बढ़ी है, उसके लिए उथली पूजा से काम नहीं चल सकता। जलते तवे पर पानी की कुछ बूदें पड़ने से क्या काम चलता है। इसके लिए इन दिनों समर्थों का ऐसा पुरुषार्थ होना चाहिए जो उलटे को उलटकर सीधा कर सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके लिए प्रत्येक वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र सर्वथा समर्थ है। यदि परिस्थितियाँ बाधक हैं तो उन्हें ठोकर मारकर रास्ता रोकने से हटाया जा सकता है। स्रष्टा का राजकुमार मनुष्य केवल इसलिए दुर्बल पड़ता है कि उसे लोभ, मोह और अहंकार की बेड़ियाँ बेतरह जकड़कर असहाय बना देती हैं। यदि औसत भारतीय का निर्वाह अपनाया जाए, परिवार को छोटा, सभ्य, सुसंस्कृत, स्वावलंबी रखा जा सके तो युगधर्म के उच्चस्तरीय निर्वाह की सुविधा हर किसी को सहज ही मिल सकती है। संकीर्ण स्वार्थपरता और अहंकारी साज-सज्जा जुटाने में तनिक कटौती की जा सके तो हर विचारशील को इतना अवकाश मिल सकता है, जिसमें वह आत्मकल्याण और युग निर्माण की महती आवश्यकताओं को पूरा कर सके। प्रकारांतर से यही कोयले को बहुमूल्य हीरा बनाने वाला कायाकल्प है। इसे स्वेच्छापूर्वक किया जा सकता है। सहयोग की कमी हो तो सत्पात्र की सुगंध सूँघकर खिले पुष्प पर मँडराने वाले भ्रमरों की तरह समूचा देव परिकर दौड़ पड़ता है। हमने मात्र अपनी पात्रता बढ़ाने में अथक प्रयास किया है और वह पाया है जो सच्चे अध्यात्म का सच्चा अवलंबन करने पर मिलना चाहिए। इसी के अनुकरण की आवश्यकता है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1985, पृष्ठ-64

www.awgp.org

बुद्धिजीवियों को संदेश

धर्म के पालन से ही शांति और सुव्यवस्था

हे नवीन सभ्यता के अभिमानियो! अपने तर्कों पर पुनः विचार करो, वस्तुस्थिति को पुनः सोचो, अपने कार्यक्रम में पुनः संशोधन करो। यह मार्ग कल्याण का नहीं है, जिस पर तुम प्रवृत्त हो रहे हो। आर्थिक उन्नति, बौद्धिक विकास, संगठन तीनों ही बड़ी सुंदर वस्तुएँ हैं, परंतु इनके मूल में धर्म होना चाहिए अन्यथा यह उन्नति, विनाश की तीक्ष्ण तलवारें ही सिद्ध होंगी। धार्मिक रीति-रिवाजें वास्तविक धर्म नहीं हैं; यह तो इसके बाह्य चिह्न हैं, जो समय-समय पर बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे। इनमें जो विकृतियाँ आ गई हों, जो अंग सड़ गए हों, उनमें परिवर्तन कर लो क्योंकि परिवर्तन ही जीवन है। परंतु थोड़े से विकार के कारण सत्य तत्त्व की ही अवहेलना मत करो। खटमलों के डर से चारपाई का ही परित्याग कर देना बुद्धिमानी नहीं है।

कई बार यह भी सुनने में आता है कि सामाजिक अव्यवस्था अच्छे राज प्रबंध से रोकी जा सकती है। उन्हें जानना चाहिए कि व्यवस्था केवल दंड से कायम नहीं रह सकती। हर आदमी के पीछे एक-एक दरोगा लगा दिया जाए तो भी उससे पूरी तरह कानून का पालन नहीं कराया जा सकता। वह कुछ-न-कुछ तरकीब निकाल ही लेगा, फिर वे दरोगा भी तो उसी समाज में से होंगे। इसलिए धर्म का परिपालन ही एक ऐसी वस्तु हो सकती है, जिसके द्वारा समाज की शांति और व्यवस्था कायम रहे एवं सब लोग प्रेमभाव और सुख-शांति के साथ रहें। बुद्धिमान विचारको!

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुःखों में सुख का आविर्भाव करने वाले इस महान तत्त्व को नष्ट मत करो, इससे बगावत मत करो। शास्त्र कहता है—'**धर्म एव हतो हन्ति रक्षे रक्षित रक्षतः।**' धर्म की रक्षा करने से ही तुम्हारी रक्षा होगी और धर्म के नष्ट होने पर तुम भी नष्ट हो जाओगे।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1941, पृष्ठ-06

आत्मसाधना के लिए समय निकालें

दैनिक कार्यक्रम को बारीकी से देखा जाए तो हर आदमी के पास थोड़ा-बहुत समय फालतू अवश्य मिलेगा। वह चाहे तो आसानी से थोड़ा समय आत्मसाधना के लिए निकाल सकता है। प्रश्न रुचि का है। विचार करना चाहिए कि क्या आत्मसाधना ऐसी निरर्थक चीज है, जिसके लिए दुनियादारी के साधारण काम-काजों में से बचाकर समय का एक टुकड़ा भी न फेंका जा सके? घर में कुत्ते और भिखारी को थोड़ा-बहुत भोजन दिया जाता है, सोचना चाहिए कि आत्मा का महत्त्व क्या कुत्ते और भिखारी से भी कम है, जिसकी झोली में समय का एक छोटा-सा टुकड़ा भी न डाला जा सके? शरीर की भूख बुझाने के लिए हम तरह-तरह के बढ़िया-बढ़िया साधन जुटाते हैं, काफी समय खरच करके भोजन-सामग्री कमाते हैं, पर आत्मा की भूख बुझाने के लिए, स्वाध्याय, चिंतन, मनन तथा साधना के लिए, थोड़ा भी समय नहीं लगाया जा सकता? क्या सचमुच आत्मा ऐसी तुच्छ वस्तु है, जिसकी शरीर के मुकाबले में इतनी उपेक्षा की जाए?

यह विचारणीय प्रश्न है। इसे इसी प्रकार अधर में लटका रहने देने से काम न चलेगा। हमें सोचना होगा कि क्या हम शरीर मात्र हैं? क्या हमारी प्रगति धनसंचय एवं इंद्रियभोगों से ही हो सकती है? क्या मानव जीवन का उपयोग शरीर-पोषण और धन-उपार्जन मात्र है? क्या सांसारिक उन्नति ही पूर्ण उन्नति है? इन प्रश्नों पर विचार करने से पता चलेगा कि जो कुछ हम कर रहे हैं, वह ही पूर्ण नहीं है। आत्मोन्नति भी एक कार्य है और वह कार्य शरीर-पोषण से कम महत्त्व का नहीं है।

आत्मा की महत्ता पर विचार कीजिए, आत्मोन्नति के महत्त्व को समझिए और तब निर्णय कीजिए कि आपको फुरसत है या नहीं?

—अखण्ड ज्योति जून 1947, पृष्ठ-16

प्रबुद्ध वर्ग समाज-सुधार में लगें

आज तो केवल सामाजिक विकृतियों से लड़ना है—कुछ समय पूर्व जब महात्मा गांधी देशोद्धार के क्षेत्र में उतरे थे तो सामाजिक विकृतियाँ तो इस प्रकार थी हीं, साथ ही समाज के पैरों में अँगरेजी दासता की शृंखला भी पड़ी हुई थी। महात्मा गांधी ने तो आज से भी अधिक भयावह परिस्थिति में बिना किसी साधन के स्वाधीनता संग्राम छेड़ा था और अपने साहस, लगन एवं

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यवसाय के बल पर सफल होकर संसार के सामने एक उदाहरण उपस्थित कर दिया। विकृतियाँ देखने में ही भयावह मालूम होती हैं, वस्तुत: उनमें कोई शक्ति नहीं होती। सत्प्रवृत्तियों का प्रकाश होते ही उनका अंधकार तो आप से आप दूर होने लगता है। प्रबुद्ध वर्ग को हर प्रकार की शंकाएँ एवं भयों को त्यागकर समाज सुधार के कार्य में लग ही जाना चाहिए।

वह हर भाग्यवान व्यक्ति अपने को प्रबुद्ध वर्ग का नैसर्गिक सदस्य समझे जिसकी अंतरात्मा में परमात्मा ने देश, धर्म के प्रति जागरूकता और मन-मस्तिष्क में समाज की दयनीय दशा की पीड़ा पैदा की है। जो बुद्धिमान अपने अंदर आदर्शवादिता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, सामाजिकता एवं मानवता का कोई अंश समझता है और देश तथा समाज की वर्तमान दशा से क्षुब्ध होता है, जिसके हृदय में कुछ-न-कुछ उपाय करने की जिज्ञासा होती है, वह हर व्यक्ति अपने को प्रबुद्ध वर्ग का समझे और तदनुसार अपने कर्त्तव्य में यह समझकर लग जाए कि यदि परमात्मा हमसे इस पावन कर्त्तव्य की अपेक्षा न करता तो हमारी आत्मा में इस प्रकार की मंगलमयी जागरूकता न भरता।

हर प्रबुद्ध व्यक्ति नवनिर्माण के अलावा सुधार कार्यक्रमों में से अपने योग्य कोई भी एक अथवा अनेक कार्यक्रम चुन सकता है और उसे धार्मिक भावना के साथ अपने तथा समाज के कल्याण के लिए प्रसारित कर सकता है। आज समय की माँग है कि समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति एक या अनेक होकर समाज-सुधार के किसी-न-किसी काम को लेकर आगे बढ़ें और दूसरों को इस ओर बढ़ने की प्रेरणा दें। संसार की सारी क्रांतियाँ तथा परिवर्तन प्रबुद्ध वर्ग द्वारा ही लाए गए हैं। आज भी समाज-सुधार का महान कार्य प्रबुद्ध वर्ग ही कर सकता है और उसे करना भी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1966, पृष्ठ-38

समाज-सुधार के लिए प्रबुद्ध वर्ग आगे बढ़ें

समाज में तीन प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं। एक तो सर्वसामान्य जिन्हें रोटी कमाने और पेट भर लेने के अतिरिक्त दीन दुनिया की खबर नहीं रहती। संसार में रोटी ही उनका एकमात्र उद्देश्य होता है। समाज किधर जा रहा है, उसमें किन-किन सुधारों की आवश्यकता है इस चिंता से उनका कोई सरोकार नहीं होता। आराम से भोजन-वस्त्र मिल गया प्रसन्न हो गए, उसमें घाटा आ गया दुखी हो गए। बस यही उनका जीवन और यही उनका ध्येय होता है। ऐसे आदमियों को जड़ एवं अभावुक कहा जा सकता है। अन्य पशु-पक्षियों और उनके जीवन में कोई विशेष अंतर नहीं होता। संसार में ऐसे लोगों की ही बहुतायत हुआ करती है। इनमें भोजन एवं प्रजनन क्रिया की प्राकृतिक प्रेरणा के अतिरिक्त कोई विशेष चेतना नहीं होती। समाज में फैलने वाली विकृतियाँ इसी जड़ वर्ग में जन्म लेती और पनपती हैं।

समाज में एक दूसरा वर्ग भी होता है, जो अपेक्षाकृत अधिक सजग एवं सक्रिय होता है। इस वर्ग में वे लोग होते हैं जिनकी विद्या, बल और बुद्धि तथा साधन-सुविधाएँ एकमात्र अपने निकृष्ट

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं अवांछनीय स्वार्थों में लगी रहती हैं। इस वर्ग का उद्देश्य यही रहता है कि संसार की सारी संपत्तियाँ, भोग तथा सुविधाएँ अधिक से अधिक उसी के पास रहें। वह और उनका परिवार सबसे अधिक सुखी एवं संपन्न रहे। ऐसे स्वार्थी लोग अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए किसी का बड़े से बड़ा अहित कर देने में जरा भी संकोच नहीं करते। अपने मजा, मौज और सुख-स्वार्थ के लिए दूसरों का हिस्सा एवं अधिकार अपहरण कर लेना वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। शांति एवं सुरक्षा के वातावरण को सबसे अधिक क्षति इसी वर्ग से पहुँचती है।

समाज में एक वर्ग और होता है, जिसे 'प्रबुद्ध वर्ग' कह सकते हैं। इस वर्ग की विचारधारा संकीर्ण स्वार्थों एवं पाशविक वृत्तियों से उठी हुई होती है। देश, धर्म, समाज एवं राष्ट्र के प्रति इस वर्ग की भावनाएँ अधिक तीव्र एवं चिंतापूर्ण होती हैं। जिन-जिन देशों में सुधारात्मक क्रांतियाँ हुईं हैं, उनमें किसी ऐसे ही वर्ग की चेतना काम करती रही है।

प्रबुद्ध वर्ग को किसी भी समाज की जीवनीशक्ति कहा गया है। जिस देश अथवा समाज का यह वर्ग सतेज, सक्रिय एवं सजग रहता है उस समाज में पहले तो विकृतियाँ आती ही नहीं और यदि आ भी जाती हैं तो यह वर्ग उन्हें झाड़-बुहारकर साफ कर देता है।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1966, पृष्ठ-36-38

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विश्व संस्कृति की स्थापना में भारत नेतृत्व करेगा

आदर्शवादी तत्त्वज्ञान एवं सृजनात्मक युग-प्रवाह को गति देने के लिए युगमनीषा को आगे आना ही होगा। चाहे इसे अध्यात्म आंदोलन कहा जाए या पुनर्निर्माण आंदोलन, विश्व संस्कृति की स्थापना करने के लिए ऐसी प्रक्रिया अवश्य ही क्रियान्वित होगी। यह एक सपना नहीं, विधाता की क्रमबद्ध सुनियोजित क्रियापद्धति है। इसे संपादित करने के लिए मानवी संस्कृति के उद्गम-केंद्र भारत को ही नेतृत्व करना होगा।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1981, पृष्ठ-51

शासकीय सेवकों को संदेश

कर्मचारियों की ईमानदारी आवश्यक

अनीति को रोकना और साधनों को बढ़ाना शासन का कार्य है। सबको समान अवसर तथा समान न्याय प्राप्त हो, ऐसी स्थिति उत्पन्न करना राजकीय उत्तरदायित्व माना गया है। इन उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए राज्य कर्मचारियों को न्याय और कानून के प्रति नितांत निष्ठावान, निर्लोभ, निष्पक्ष एवं कर्त्तव्यपरायण होना चाहिए। कानून तो पुस्तकों में बंद रहते हैं,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका पालन करना और कराना राज्य कर्मचारियों का काम है। उनका चरित्रवान एवं उच्च आदर्शवादी होना ही प्रजा की सुख-शांति की गारंटी हो सकती है।

यदि यह शासक वर्ग अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों की उपेक्षा करेगा तो प्रजा का न्याय पर से विश्वास कम होता चलेगा और हर क्षेत्र में अनीति पनपेगी, भ्रष्टाचार बढ़ेगा, रिश्वतखोरी पनपेगी तथा अधिकारियों को अपने पक्ष में करके दुष्ट लोग जनता को संत्रस्त करेंगे। टैक्स चुराएँगे तथा नाना प्रकार के अपराध निर्भय होकर करेंगे। अपराधों की रोकथाम के समस्त उपाय एक ओर और राज्य कर्मचारियों की कर्त्तव्यपरायणता को एक ओर रखकर तोला जाए तो कार्यकर्त्ताओं की ईमानदारी ही अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। इसके अभाव में नाना प्रकार की योजनाएँ बनती-बिगड़ती रह सकती हैं पर जनहित का, समस्या का ठीक समाधान न हो सकेगा।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1963, पृष्ठ-21

अधिकारियों की प्रामाणिकता

अपराधों को रोकने वाले शासनाधिकारियों को उनकी ईमानदारी और विश्वस्तता की लंबी अवधि तक परख होते रहने के बाद नियुक्त किया जाए। उन्हें विभागों में से लिया जाए और यह देखा जाए कि अपराधों को रोकने में इनकी भावना एवं प्रतिभा कैसी रही है ? अनुभवहीन लड़कों को एकदम अपराध निरोधक पदों पर नियुक्त कर दिया जाना और उनके चरित्र की गुप्त जाँच न होते रहना शासन में भ्रष्टाचार उत्पन्न करता है। जिन पदों पर भ्रष्टाचार की संभावना है, उन पर नियुक्तियाँ शिक्षा एवं योग्यता के अतिरिक्त अनुभव एवं चरित्र को प्रधानता देते हुए की जाया करें। अपराधी अधिकारियों को जनदंड की अपेक्षा दस-बीस गुना दंड मिलने की व्यवस्था कानून में रहे। अधिकारियों का भ्रष्टाचार मिटे बिना जनता की अनैतिकता का मिट सकना कठिन है।

—अखण्ड ज्योति जून 1963, पृष्ठ-54

प्रवासी भारतीयों को संदेश

प्रवासी भारतीय अपने क्षेत्रों में श्रद्धा जगाएँ

प्रवासी भारतीय प्राय: तीन करोड़ हैं। उनसे भी यह आशा-अपेक्षा रखी जा सकती है कि जहाँ वे बसते हैं, वहाँ उन 91 देशों में नवोदय की श्रद्धा-ऊर्जा से उन प्रदेशों को भी ज्योतिर्मय बनाने में हाथ बँटाएँगे और अपने-अपने संपर्क-क्षेत्रों में धर्मतंत्र के माध्यम से भावनात्मक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1981, पृष्ठ-55

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधु-ब्राह्मणों को संदेश

ब्राह्मण बनें, ब्रह्मयज्ञ करें

शुभ संकल्पों का यज्ञ इतना उच्चकोटि का है कि इसकी समता में बड़े-बड़े सेवा, उपकार और दान-पुण्य तुच्छ हैं। सदैव शुभ विचारों की सामग्री जीवनयज्ञ में होमने का ब्रह्मयज्ञ विश्व के संपूर्ण यज्ञों में ऊँची से ऊँची कोटि का है। विचार एक मूर्तिमान पदार्थ है, जो भाप की तरह उड़ता है और बादलों की तरह बरसता है। जब हमारे मस्तिष्क में से कोई भला या बुरा विचार निकलता है, तो वह आकाश में उड़ जाता है और इधर-उधर घूमता फिरता है। रेडियो स्टेशन से ब्रोडकास्ट की हुई तरंगें उन स्थानों पर साफ-साफ सुनाई देती हैं, जहाँ रेडियो सैट लगे हुए हों। इसी प्रकार वे विचार उन लोगों के मस्तिष्कों से टकराते हैं, जिनके मन में कुछ-कुछ वैसे ही भाव उठ रहे हों। यदि हम सदैव भले विचार करते हैं तो वे विचार उन लोगों को बहुत बड़ा प्रोत्साहन देंगे, जो भलाई करने की बात कुछ-कुछ सोचते हैं। विचारों का कभी नाश नहीं होता और उनकी दौड़ने की शक्ति इतनी तेज है कि कुछ ही क्षण में पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच जाते हैं। कोई व्यक्ति सत्य मार्ग पर चलने का विचार करता है, उसी समय आपका किसी अन्य समय में फैलाया हुआ शुभ विचार उसके पास पहुँचता है—उसे दूना उत्साहित कर देता है। फलस्वरूप वह शुभ कर्म करता है और आगे के लिए भी उसी मार्ग का अभ्यासी हो जाता है। उसके प्रयत्न से अन्य लोगों का ऐसे ही उपकार होता है। यह बेल बढ़ती है और संसार में दैवी संपत्ति का विकास होता है। धर्म की उन्नति होती है, दुनिया में सुख-शांति बढ़ती है। इतना बड़ा काम आपके उस छोटे-से विचार से ही हुआ था, इसलिए उसका बहुत बड़ा पुण्यफल आपको मिलेगा।

स्वयं सदैव शुभ विचार करना, सत्य, प्रेम, न्याय, उदारता, सहानुभूति, दया आदि की भावनाएँ मन में धारण करना और ऐसे ही विचार दूसरों के मन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भरने का प्रयत्न करते रहना अखण्ड ब्रह्मयज्ञ है। अखण्ड शब्द इसके साथ में इसलिए जोड़ा गया है कि कभी शुभ और कभी अशुभ, कभी भले, कभी बुरे विचार करने से उतना लाभ नहीं होता। जैसे भले विचार संसार का कल्याण करते हैं, वैसे ही बुरे विचार अनिष्ट भी करते हैं। कभी इष्ट कभी अनिष्ट, कभी पूरब को कभी पश्चिम को, यह तो कोई अच्छी बात नहीं हुई। इसलिए जो कार्य करना चाहिए, उसमें न तो ढील होनी चाहिए और न उपेक्षा। जैसे हम रोज शौच जाते हैं, स्नान करते हैं, भोजन करते हैं, सोते हैं, वैसे स्वयं अच्छे विचार करें और दूसरों को अच्छे-अच्छे उपदेश करें। विचारों की अनंत शक्ति का अनुभव करें और उनके प्रचार करने का जब भी अवसर मिले, तभी प्रयत्न करें। घर का, बाहर का, परिचित-अपरिचित, विद्वान-मूर्ख किसी से भी वार्त्तालाप करने का अवसर मिले तभी उससे सत्य, प्रेम और न्याय की चर्चा करें। उसे बुराइयाँ छोड़ने और भलाइयाँ सीखने की सलाह दें। इस सुधार द्वारा हम उसके साथ सच्चे प्रेम का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिचय दे सकेंगे। किसी को मिठाई दी जाए, तो वह समझेगा कि इसने मुझसे प्रेम किया। किंतु ब्राह्मण इस मूर्खता को पहचानता है और वह मिठाई के द्वारा नहीं, विचार के द्वारा उसे ठोस लाभ पहुँचाना चाहता है। दुनिया ब्रह्मयज्ञ का महत्त्व नहीं समझती, न समझे पर एक आध्यात्मिक व्यक्ति को उसके अंदर बड़ा भारी लाभ दृष्टिगोचर होता है। हम अखण्ड ब्रह्मयज्ञ को निरंतर चालू रखकर प्राणिमात्र के साथ सर्वोच्च कोटि का प्रेम प्रदर्शन करते हुए अपना कल्याण कर सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1942, पृष्ठ-10

स्थूल के मूल में सूक्ष्म

यह बात भली प्रकार जान लेने की है कि इस संसार में जो कुछ स्थूल है, उसके मूल में सूक्ष्म काम करता है। शरीर और संपत्ति की, व्यक्ति और समाज की उन्नति-अवनति एवं भली-बुरी क्रियाएँ मनुष्यों के अंत:करण में निवास करने वाले व्यक्तिगत विचारों, भावों एवं सिद्धांतों के ऊपर निर्भर रहते हैं। इसलिए जो शक्ति का अकूत भंडार है, वह तो सरकार की पहुँच से बाहर ही रह जाता है। अंत:करणों में निवास करने वाले विश्वास, आदर्श और विचार ही जनरुचि को बनाते हैं और उस जनरुचि के पीछे प्रजातंत्री सरकारों को चलना पड़ता है।

इस जनरुचि का निर्माण करना धर्म का काम है। ब्राह्मणों को महाराज अर्थात महान राजा कहा जाता है, क्योंकि राजा प्रजा की भौतिक सामग्री पर अधिकार रखता है, पर ब्राह्मण, धर्म और दर्शन द्वारा जन साधारण के अंत:करणों का, चरित्रों का, स्वभावों का, आदर्शों का निर्माण करते हैं। जनरुचि की दिशा मोड़ने का कार्य उनके हाथ में होने के कारण शक्ति का अंतिम, अटूट स्रोत भी उनके हाथ में होता है, इसलिए वे महाराज कहलाते हैं।

आज हमारे ऊपर बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। सुरक्षा और पुनर्निर्माण का बड़ा भारी काम सामने पड़ा है। सरकार अपना काम कर रही है। राजनीति के अनुभवी उस दिशा में कार्य प्रवृत्त हों।

साथ ही जनरुचि के निर्माण के लिए समस्त ब्रह्मतत्त्वों को अखण्ड ज्योति आमंत्रित करती है। यह क्षेत्र सरकारी क्षेत्रों से भी अधिक आवश्यक, स्थायी एवं सुदृढ़ परिणाम उपस्थित करने वाला है। ब्रह्मपरायण आत्माओ, आओ! अपने महान धार्मिक आदर्शों को जन-जन के अंत:करण तक पहुँचाएँ और हर एक नागरिक को ऐसा सुरुचि संपन्न बनाएँ कि राष्ट्र की सुरक्षा में सुदृढ़ चट्टान की तरह अटूट बनें और पुनर्निर्माण में बरगद बीज का अनुकरण करें जो अपने को गलाकर एक महान वृक्ष उत्पन्न करता है। विचारको! भूलो मत, राजनीति की अपेक्षा धर्म और दर्शन की शक्ति अनेक गुनी अधिक है। इसलिए आओ, इस महान शक्ति को जाग्रत करके अपने राष्ट्र को उन्नति के शिखर तक पहुँचा देने के लिए प्राणपण से प्रयत्न करें।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1947, पृष्ठ-04

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्राह्मणो! सद्ज्ञानरूपी अमृत बाँटो

शास्त्र कहता है—"विद्यावान ब्राह्मण संसार के अज्ञान को अपने तप द्वारा दूर करें।" जिन व्यक्तियों को आज विद्या प्राप्त है, बुद्धि प्राप्त है, जिनके हृदय में दया है, जिनके हृदय में ब्राह्मणोचित तप, त्याग की भावना है, वे ही सच्चे अर्थों में ब्राह्मण हैं, चाहे वे किसी भी वंश में उत्पन्न क्यों न हुए हों! ऐसे ब्राह्मणों को गायत्री का प्रथम संदेश है—"बुद्धि संसार का सर्वश्रेष्ठ तत्त्व है, वह तुम्हारे पास एक ईश्वरीय अमानत के रूप में है, उसे शक्तिभर प्रयत्न के साथ जनता-जनार्दन में वितरण करो, तुच्छ स्वार्थों से ऊपर उठो और अपना गौरव इस बात में समझो कि ईश्वर ने आपको योग्यता और ईमानदारी वितरण करने वाले के पद पर नियुक्त किया है। अपने कर्त्तव्य का पालन करो, अज्ञान, दुःख से संतप्त जनता को सुखी बनाने के लिए सद्ज्ञानरूपी अमृत का वितरण करो और स्वयं तपश्चर्या एवं परोपकार का स्वर्गीय सुख उपलब्ध करो।"

ब्राह्मणो! ऐसा मत सोचो कि हम परमार्थ में प्रवृत्त होंगे तो हमारा खरच कैसे चलेगा? ईश्वर पर विश्वास करो, जनता में सद्ज्ञान का प्रसार करने के लिए कदम बढ़ाओ। अपने उत्तम ज्ञान और उज्ज्वल चरित्र से अंधकार से भरे हुए हृदयों में प्रकाश उत्पन्न करो, तुम्हें खरच की कुछ कमी न रहेगी। मनुष्य की वास्तविक जरूरतें बहुत थोड़ी होती हैं, फिर ब्राह्मण की जरूरतें और भी कम होती हैं। जन्म से पूर्व दूध के भरे हुए ऐसे दो घड़े जो सदा भरे ही रहते हैं जिसने उपस्थित कर दिए थे, वह ईश्वर इस सृष्टि से उठ नहीं सकता; ब्राह्मणत्व के प्रति असीम श्रद्धा का भाव मानव हृदय में से मिट नहीं सकता। इन महान तत्त्वों पर विश्वास करो। कंकड़ मत समेटो, हीरों का व्यापार करो। शास्त्र कहता है कि हे बुद्धिजीवियो! प्रलोभनों में मत पड़ो, ब्राह्मणोचित काम करो, संसार में सद्ज्ञान का प्रसार करो।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1949, पृष्ठ-09

साधु-ब्राह्मण अपना कर्त्तव्य निभाएँ

साधु-ब्राह्मणों का तो यह एक परम पवित्र कर्त्तव्य है कि इस समय जिस धर्म का आश्रय लेकर वे अपनी आजीविका चलाते हैं और पूजा-सम्मान प्राप्त करते हैं, उस धर्म की रक्षा के लिए उन्हें कुछ काम भी करना चाहिए, कुछ कष्ट भी उठाना चाहिए। आज जबकि धर्मसंकट में है, देश की सुरक्षा एवं प्रगति का प्रश्न है, तब तो उन्हें उन आदर्शों को परिपुष्ट करने के लिए अपना समय लगाना ही चाहिए। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी वे दक्षिणा बटोरने और पैर पुजाने का ही धंधा करते रहे; कर्त्तव्य को तिलांजलि दिए बैठे रहे तो आगामी पीढ़ियाँ उन्हें क्षमा न करेंगी। उन्हें धर्मध्वजी होने का सम्मान तो दूर, सामान्य नागरिक स्तर पर भी उन्हें न गिना जाएगा। उनकी आज की अकर्मण्यता भविष्य में साधु-ब्राह्मण संस्था का ही महत्त्व एवं गौरव समाप्त कर देगी। इसलिए उन्हें तो समय रहते चेत ही जाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1965, पृष्ठ-41, 42

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधु समाज गाँव-गाँव प्रव्रज्या करे

सज्जन एवं सच्चे साधुओं को वर्गवाद के दलदल से निकलकर समाजसेवा के कार्य में लग ही जाना चाहिए। उन्हें स्थानस्थ होकर पूजा कर लेने के स्थान पर परिव्रजन का कार्यक्रम बना लेना चाहिए और गाँव-गाँव, नगर-नगर, द्वार-द्वार धर्मोद्धार एवं समाज-सुधार का शंख फूँक देना चाहिए। आज के कठिनतम आर्थिक युग में अभाव के समय में जनता की सहज श्रद्धा के शोषक बनकर समाज का बोझ बढ़ाना अनुचित ही कहा जाएगा। साधुजनों को अपना यह कलंक धो डालने के लिए पूर्वकालीन साधु परंपरा को सच्चे मानों में जाग्रत कर यह दिखला ही देना चाहिए कि ऋषि-मुनियों के इस देश की वह साधुता अभी मर नहीं गई है, जिसके बल पर भारत का धर्म, उसकी सभ्यता, संस्कृति एवं समाज संसार का सरताज बना रहा है। साधु समुदाय के पास ऐसा कोई पारिवारिक उत्तरदायित्व नहीं जो उनके समय अथवा श्रम का कोई अंश छीन रहा हो। संयोग, भाग्य अथवा संस्कारोंवश साधुओं के लिए वे पूर्वकालीन सारी परिस्थितियाँ आज भी विद्यमान हैं, उनका समुचित उपयोग कर वे लोक-परलोक दोनों का सुधार कर सकते हैं। उन्हें करना भी चाहिए, अन्यथा संसार में बुद्धिवाद बहुत तेजी से बढ़ रहा है। भगवान न करे, यदि निषेधात्मक युग आ जाए तो इस साधु-समाज की क्या स्थिति हो सकती है, यह साधुओं के लिए विचारणीय एवं करणीय है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1967, पृष्ठ-24

युवाओं एवं छात्रों को संदेश

ध्वंसात्मक नहीं सृजनात्मक क्रांति चाहिए

स्वतंत्र भारत के युवक आज यह कह सकते हैं कि उस समय स्वाधीनता के लिए राष्ट्रीय क्रांति की आवश्यकता थी, लेकिन अब तो भारत स्वतंत्र है? इसके लिए समय की माँग के अनुरूप क्रांति के अर्थ को समझना अनिवार्य है। सामान्य अर्थों में क्रांति को एकतरफा तोड़-फोड़, सत्तापलट व व्यवस्था परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है, लेकिन आज का युवा व समाज जिन समस्याओं से आक्रांत है, उनके समाधान व उपचार के लिए उसी स्तर के गंभीर एवं व्यापक उपचारों की आवश्यकता है। इसके स्वरूप व उद्देश्य को समझने में भूल नहीं होनी चाहिए। यह व्यक्ति के परिष्कार के द्वारा समाज की एक उदात्त परिकल्पना को साकार करने के निमित्त होती है। यह एक बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रांति होगी। वर्तमान समय की सार्थक क्रांति किसी संकीर्ण राजनीतिक, धार्मिक, सांप्रदायिक या जातीय स्वार्थ द्वारा प्रेरित नहीं हो सकती। इसका मूल उद्देश्य सृजन है, ध्वंस तो इसकी सामयिक विवशता भर है, जिसे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नए भवन के निर्माण से पूर्व खंडहर गिराने या गंभीर रोग-उपचार से पूर्व आवश्यक चीर-फाड़ के रूप में समझा जा सकता है।

परिवर्तन के इन महान क्षणों में युवाओं को दुष्प्रवृत्तियों के दुश्चक्रों से उबरकर स्वयं को समग्र क्रांति के लिए प्रस्तुत करना चाहिए। समय की इस पुकार को कोई भी भावनाशील एवं विचारशील युवा अनसुना नहीं कर सकेगा। इस आदर्श के लिए स्वार्थों का त्याग करना होगा। इतिहास साक्षी है कि कोई भी महान कार्य बिना त्याग के नहीं हो सका है। युवाओं ने सदैव समय की पुकार को सुना है। चाहे क्रांति आध्यात्मिक, सांस्कृतिक रही हो अथवा फिर राजनीतिक एवं सामाजिक। युवा पीढ़ी ने ही अपनी सुख-सुविधाओं, सामाजिक पद-प्रतिष्ठा, पारिवारिक मोह-बंधनों की बेड़ियों को झटकने का दुस्साहस किया व कूद पड़े थे, उस क्रांति के दावानल में, जो युग की अव्यवस्था, असुरता एवं अनीति अत्याचार को ध्वस्त करने के लिए धधक रही थी।

ऐतिहासिक परिवर्तन के इस दौर में युग निर्माण मिशन ने समग्र क्रांति के लिए पुनः युवाओं का आह्वान किया है। आज जहाँ एकतरफा असुरता अपना पूरा जोर लगाकर सर्वतोमुखी विध्वंस का दृश्य प्रस्तुत करने पर तुली है, तो वहीं सृजन की असीम संभावनाएँ भी अपनी दैवी प्रयास में सक्रिय हैं। इस वेला में युवा-हृदय से यह आशा की जा रही है कि वे अपनी मूर्च्छा, जड़ता, संकीर्ण स्वार्थ एवं अहंमन्यता को त्यागकर युग के अभूतपूर्व सांस्कृतिक दिग्विजय अभियान से स्वयं को जोड़ें व अपने समाज, राष्ट्र व विश्व के उज्ज्वल भविष्य को साकार करने में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाएँ।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1997, पृष्ठ-17

संपूर्ण क्रांति की संजीवनी युवा वर्ग

किसी एक अंग में फोड़ा हो तो उसे थोड़ा-सा चीरकर मवाद निकाला जा सकता है, पर जब पूरा शरीर मवाद से भर गया हो तो संपूर्ण कायाकल्प के अचूक विधान तलाशने पड़ेंगे। देश की जो दशा आज है, उसमें छोटी-मोटी क्रांतियों से काम चलने वाला नहीं है। इसके लिए तो संपूर्ण क्रांति की संजीवनी चाहिए। यह महा साहस तो देश की युवा पीढ़ी ही कर सकती है। युवा पीढ़ी से हमें बहुत आशाएँ हैं। इन्हें लेकर हमने अनेक सपने बुने हैं। बड़े गर्व और विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि राष्ट्र की युवा चेतना यदि चेत गई तो भारतमाता यशस्विनी बनेगी। जब हम युवा पीढ़ी की सामर्थ्य पर यकीन करते हुए भविष्य को निहारते हैं, हमारे मुख पर खुशी छा जाती है। ''भारत का भविष्य उज्ज्वल है, परंतु वर्तमान की दुरवस्था हमें दारुण दुःख देती है।''

—अखण्ड ज्योति सितंबर 2006, पृष्ठ-64

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युवाओ अपने को पहचानो

''नौजवानों ! याद रखो, जिस दिन तुम्हें अपने हाथ, पैर और दिल पर भरोसा हो जाएगा, उसी दिन तुम्हारी अंतरात्मा कहेगी—बाधाओं को कुचलकर तू अकेला चल, अकेला। सफलता का शीतल आंचल तेरे माथे का पसीना पोंछने के लिए दूर हवा में फहरा रहा है।

जिन व्यक्तियों पर तुमने आशा के विशाल महल बना रखे हैं, वे कल्पना के व्योम में बिहार करने के समान अस्थिर, सारहीन, खोखले हैं। अपनी आशा को दूसरों में संशिलष्ट कर देना स्वयं अपनी मौलिकता का ह्रास कर अपने साहस को पंगु कर देना है। जो व्यक्ति दूसरों की सहायता पर जीवन यात्रा करता है, वह शीघ्र अकेला रह जाता है। अकेला रह जाने पर उसे अपनी मूर्खता का ज्ञान होता है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1953, पृष्ठ-14, 15

साधकों को संदेश

देवमानव बनाने वाली साधना

अपने साधकों को हमारी शिक्षा है कि वे कुछ दिन एकांत सेवन करें। इसके लिए यह जरूरी नहीं कि वे किसी जंगल, नदी या पर्वत पर ही जाएँ। अपने आस-पास ही कोई स्थान चुन लो। कुछ भी सुविधा न हो तो अपने कमरे के सब किवाड़ बंद करके अकेले बैठो। यह भी न हो सके तो शोरगुल से रहित एकांत में बैठकर आँखें बंद कर लो या चारपाई पर लेटकर हलके कपड़े से अपने को ढक लो और शांतचित्त होकर मन ही मन जप करो—'मैं अकेला हूँ'—'मैं अकेला हूँ'। अपने मन को यह अच्छी तरह अनुभव करने दो कि मैं एक स्वतंत्र, अखंड और अवतारी सत्ता हूँ। मेरा कोई नहीं और न मैं किसी का हूँ। आधा-एक घंटे तक अपना सारा ध्यान इसी क्रिया पर एकत्रित करो। अपने को बिलकुल अकेला अनुभव करो। अभ्यास के कुछ दिनों बाद एकांत में ऐसी भावना करो 'मैं मर गया हूँ'। सारा शरीर और दूसरी संपूर्ण वस्तुएँ मुझसे दूर पड़ी हुई हैं।

उपरोक्त छोटे-से साधन को हमारे प्राणप्रिय अनुयायी आज से ही आरंभ करें। वे यह न पूछें कि इससे क्या लाभ होगा? मैं आज बता भी नहीं रहा हूँ कि इससे किस प्रकार क्या हो जाएगा? किंतु शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो सच्चे हृदय से विश्वासपूर्वक इसे करेगा, वह कुछ ही समय में सच्चे आत्मज्ञान की ओर बढ़ जाएगा। सांसारिक घोर पाप, दुष्ट दुष्कर्म, बुरी आदतें, नीच वासनाएँ और नरक की ओर घसीट ले जाने वाली कुटिलताओं से उसे छुटकारा मिल जाएगा। इन पापमयी पूतनाओं को छोड़ने के लिए साधक अनेक प्रयत्न करते हैं, पर वे छाया की भाँति पीछे-पीछे दौड़ती रहती हैं और पिंड नहीं छोड़तीं। यह साधन उस झूठे ममत्व को ही छुड़ा देगा जिसकी सहचरी वे पाप-वृत्तियाँ होती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने को अकेला अनुभव करो। नित्य अभ्यास करो। शरीर को निश्चेष्ट पड़ा रहने दो। मन को पूरी योग्यता, तर्कबुद्धि के साथ यह समझने दो कि मैं अकेला हूँ। केवल बुद्धि द्वारा सोच लेना ही पर्याप्त न होगा किंतु यह भावना गहरी-गहरी मन के ऊपर अंकित हो जानी चाहिए। अभ्यास इतना बढ़ जाना चाहिए कि जब अपने बारे में सोचो, तो सोचो कि 'मैं अकेला हूँ।' हर घड़ी अपने को संसार की समस्त वस्तुओं से ऊँचा—कमलपत्रवत ऊपर उठा हुआ समझो।

मैं कहता हूँ कि यह साधन तुम्हें मनुष्य से देवता बना देने में पूरी तरह समर्थ है।

—अखण्ड ज्योति जून 1940, पृष्ठ-07

अपना आंतरिक जीवन टटोलो

सामयिक परिस्थितियों में भी अधिकांश का कारण अपना स्वभाव ही होता है। मुहल्ले वाले तुम्हें बुरा बताते हैं, झगड़े लगाते हैं और दुर्व्यवहार करते हैं। उन सबसे अलग-अलग लड़ोगे तो भी शायद इच्छित शांति को प्राप्त न कर सकोगे। सोचना चाहिए कि मेरे अंदर वास्तव में वे दुर्गुण कौन-से हैं जो इतने लोगों को मेरा विरोधी बनाए हुए हैं। तुम्हारे अंदर यदि कडुआ बोलने, अनुचित हस्तक्षेप करने; लोकविरोधी काम करने की आदतें हैं तो उन्हें सुधारो, बस सारे शत्रु मिट जाएँगे। तुम्हें कोई नौकर नहीं रखता, तो मालिकों को मत कोसो। अपने अंदर वह योग्यता प्राप्त करो जिसके होने पर हर जगह से आमंत्रण मिलता है। सद्गुण मनुष्य की वे संपत्ति हैं जिनके होने पर उसका हर जगह आदर होना चाहिए। हर किसी का प्रेम और सहानुभूति प्राप्त होनी चाहिए। जब साधु स्वभाव वाले पुरुष भी तुम्हारा विरोध कर रहे हों, तो देखो कि हमारे अंदर कौन-कौन से दुर्गुण आ छिपे हैं? कई लोगों में यह कमी होती है कि जन-साधारण में फैले हुए झूठे भ्रम को दूर नहीं कर सकते और अकारण लोगों के कोप के भाजन बनते हैं। उन्हें चाहिए कि सत्य बात को लोगों के सामने प्रकट करके अपनी निर्दोषिता साबित करें।

भय करने, डरने और घबरा जाने के दुर्गुण ऐसे हैं जो दूसरों को अपने ऊपर अत्याचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जिनका स्वभाव निर्भय रहने का, हर प्रकार की कठिनाइयों का मुकाबला करने का होता है, उन पर ज्यादती करने वाले झिझकते हैं। कहते हैं कि हिम्मत के सामने तलवार की धार भी मुड़ जाती है। धनाभाव के बारे में भी यही बात है। जिसका पूरा ध्यान और मनोयोग धनसंचय के साधनों में लगा हुआ नहीं है, वह धनपति नहीं हो सकता। स्वास्थ्य को बढ़ाने की जिसकी प्रबल मनोकामना नहीं है, वह पहलवान कैसे बन सकेगा?

बीमारी से ग्रसित हो जाने या किसी अन्य संकट में फँस जाने पर उससे मुक्त होने के लिए भी अपना आंतरिक बल चाहिए। सदाशा और शुभ भविष्य का दृढ़ विश्वास कठिनाई से निकाल सकते हैं। आत्मविश्वास की जितनी मदद बीस मित्र मिलकर भी नहीं कर सकते। आत्मनिर्भरता वह संजीवनी बूटी है जिसे पीकर मुरदे जी पड़ते हैं और बुड्ढे जवान हो जाते हैं। इसके मुकाबले का और कोई 'टॉनिक' विश्वभर में आविष्कृत नहीं हो सका है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तात्पर्य यह है कि बाहर की जो कुछ भी भली-बुरी परिस्थितियाँ तुम्हें घेरे हुए हैं, वह तो फूल-पत्तियाँ हैं, इनकी जड़ आंतरिक जीवन में है। उन्हें बदलना चाहते हो, अपने जीवन में परिवर्तन करना चाहते हो, कष्टों से छुटकारा पाना चाहते हो तो केवल बाहरी दौड़-धूप करके संतुष्ट मत हो जाओ, इससे तुम्हें स्थायी शांति नहीं मिल सकेगी। आत्यंतिक निवृत्ति तो तभी होगी, जब उसके मूल स्रोत का उपचार किया जाएगा।

यदि तुम अपने वर्तमान जीवन से असंतुष्ट हो, उन्नति और विकास की आकांक्षा करते हो तो अपना आंतरिक जीवन टटोल डालो। उसमें से बुरी आदतों, नीच वासनाओं, दुष्ट वृत्तियों को निकाल डालो। इससे तुम्हारा मार्ग साफ हो जाएगा और उसकी सारी कठिनाईयाँ दूर हो जाएँगी। आत्मबल, दृढ़ता और तीव्र इच्छाशक्ति को बढ़ाओ, अपने अंदर शुभ वृत्तियों और सद्गुणों को आने दो। इन्हीं के आधार पर उन्नति के पथ पर सरपट दौड़ते चले जाओगे।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1940, पृष्ठ-06, 07

आत्मनिरीक्षण के लिए समय निकालें

काश! मनुष्य अपने को पहचान सका होता; अपने वास्तविक स्वरूप को समझ सका होता; अपने और संसार के रिश्ते को जान गया होता तो कैसा सुंदर होता। तब यह संसार नरक न रहकर स्वर्ग बन जाता और मनुष्य शैतान का गुलाम न बनकर सम्राटों का भी सम्राट कहलाता।

हमारा विश्वास है कि पाठक कुछ-न-कुछ भजन, पूजा, साधना, अनुष्ठान अवश्य करते होंगे। वे जैसे भी कुछ अपने विश्वास के कारण करते हों, करें। परंतु एक साधन के करने के लिए हम उन्हें अनुरोधपूर्वक प्रेरित करेंगे कि वह दिन-रात में से कोई भी पंद्रह मिनट का समय निकालें और एकांत स्थान में शांतिपूर्वक यह विचार करें कि हम क्या हैं? हमारा जो कर्त्तव्य है क्या उसे हम पूरा कर रहे हैं? शैतानी आदतें और वृत्तियाँ हमारे अंदर कौन-कौन, कितने परिमाण में घुस आईं हैं? और उनने हमारे दैवी अंश को कितना ग्रस लिया है? इन प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व अपने मन से कहिए कि वह बिलकुल निष्पक्ष बन जाए। झूठी गवाही न दे। एक निर्भीक सत्य वक्ता की तरह अपने अवगुण साफ-साफ बताए। पाठक इस प्रकार नित्य किसी नियमित समय पर आत्मपरीक्षण करें और जो दोष दृष्टिगोचर हों उनके परिणाम के संबंध में सोचें कि क्या यही हमारे कल्याण का मार्ग है?

अपने अनुभव के आधार पर हम शपथपूर्वक कह सकते हैं कि जो आत्मपरीक्षण करेंगे, उन्हें वास्तविकता दिखाई देगी और जो वास्तविकता को समझेंगे उन्हें अपने कल्याण का मार्ग भी मिल ही जाएगा।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1940, पृष्ठ-07

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोई हुई श्रद्धा को जाग्रत करें

मनोविज्ञान के आधार पर यदि हम अपने विश्वासों, मान्यताओं, आदतों तथा विचारों का परीक्षण करें तो मालूम होगा कि जीवन के तीन चौथाई विश्वासों का आधार श्रद्धा पर अवलंबित है। तर्क तो केवल किसी नई सांसारिक समस्या के सामने आने पर, उसे सुलझाने में कुछ थोड़ी-सी मदद करता है। यदि स्वजनों की ईमानदारी पर संदेह किया जाए, उनके हर काम को अविश्वास की दृष्टि से देखा जाए; माता, पत्नी, संतान, मित्र आदि का भरोसा न किया जाए तो मनुष्य पिशाच की तरह उद्विग्न और अनिश्चित हो जाए, उसका दैनिक जीवन आशंका एवं अनिष्ट की भट्ठी में जल उठे, सुख और शांति के दर्शन दुर्लभ हो जाएँ। यदि अपने भविष्य तथा स्वास्थ्य पर से श्रद्धा खो दें तो निश्चय ही बहुत शीघ्र वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आत्महत्या कर लेगा।

हमारा तात्पर्य यह नहीं है कि कोई बिना समझे-बूझे चाहे जिस बात को मान ले और उसी भ्रम के ऊपर अपने जीवनरस को डाल दे। नहीं, हर बात में खूब सोचने-समझने, गहरा मनन करने, पूर्ण अनुसंधान करने के पश्चात ही कोई बात माननी चाहिए, किंतु तर्क का अवलंब श्रद्धा हो। श्रद्धा की आधारशिला पर बैठकर ही तर्क सफल होगा अन्यथा वह हलके बादल की तरह क्षण भर में एक स्थान से दूसरे स्थान को उड़ जाएगा। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ पक्ष से लगाकर बुरी से बुरी बात तक के पक्ष में बड़ी लच्छेदार दलीलें हो सकती हैं और हमारा अपूर्ण मस्तिष्क उनके आगे परास्त हो सकता है, ऐसी दशा में भला हम कहीं खड़े हो सकते हैं ? तर्क बेचारा अंधा और लँगड़ा है, वह मनुष्य जीवन की आधारभित्ति का निर्माण नहीं कर सकता और न ईश्वर तथा धर्म का मार्ग दिखा सकता है। तर्क की अंतिम गति नास्तिकता तक है।

यदि तुम्हारा मन धर्म मार्ग की ओर प्रवृत्त न होता हो, सांसारिक लालचों की ओर बार-बार इच्छा होती हो, तो समझो कि यह कार्य शंकाशील तर्क का है और वह तुम्हें नास्तिकता की ओर पकड़कर घसीटे लिए जा रहा है। ऐसी दशा में तुम तर्क से तर्क का निवारण नहीं कर सकते। आग से आग नहीं बुझ सकती। अपना पथप्रदर्शक चुनो, आप्तपुरुषों के पदचिन्हों की ओर देखो। ईश्वरीय ज्ञान की धर्म पुस्तकों से मदद माँगो। महापुरुष जिस मार्ग पर गए हों उसका अनुसरण करो। सोई हुई श्रद्धा को जाग्रत करो, वह तुम्हें परमतत्त्व के उस दरवाजे पर ले जाकर खड़ा कर देगी, जहाँ से प्रकाश दिखाई पड़ता है और उस प्रकाश के सहारे आत्मा अपने आप अपना मार्ग खोज लेती है। जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता है वैसे-वैसे सत्य का दर्शन होने लगता है। फिर हजारों तर्क मिलकर भी वहाँ अविश्वास नहीं कर सकते।

पाठक अपनी आध्यात्मिक भूमिका में छिपकर बैठे हुए इस संदेह को चिराग लेकर ढूँढ़ें और जहाँ कहीं उसे पाएँ, निकालकर बाहर करें। तभी वे अपने जीवन का सच्चा लक्ष्य और मार्ग देख सकेंगे। अन्यथा विभिन्न दलीलों और शंकाओं की आँधी में इधर से उधर उड़ते रहकर भगवान कृष्ण के शब्दों में वे संशयात्मा विनाश की ओर चले जाएँगे।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1940, पृष्ठ-06, 07

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महामानव बनने के सूत्र

तुम परमात्मा को अपना मित्र बनाओ। हर घड़ी अपने को उसकी गोदी में बैठा हुआ अनुभव करो। यह मत सोचो कि वह अदृश्य है, शरीरधारी नहीं है, इसलिए उससे मैत्री किस प्रकार की जा सकती है? जितना ही तुम उसे अपने निकट मानोगे, उतने ही निकट वह आता जाएगा। जिस प्रकार अपने सच्चे मित्र के आगे अपनी समस्या रख देते हो और उससे सलाह माँगते हो, उसी प्रकार उसके सामने अपना हृदय खोलकर रख दो, अपनी उलझनें उसके सम्मुख विस्तारपूर्वक उपस्थित करो और पूछो कि अब क्या करना चाहिए?

जैसे-जैसे अपनी मित्रता बढ़ाते जाओगे, अपने को उसके ऊपर छोड़ते जाओगे, वैसे ही वैसे वह तुम्हें अपने गाढ़े आलिंगन में लेता जाएगा। ऐसी स्थिति में सारे दुःख-दरद; सुख-शांति में परिणत होते जाते हैं। तुम्हें उसके स्वर्गीय संदेश अपने अंदर से आते हुए सुनाई देंगे। ऐसे प्रसंग जिन्हें देखकर साधारण आदमी घबरा जाता है और पीड़ा एवं व्याकुलता से छटपटाता है, परमात्मा पर विश्वास रखने वाला अचल रहता है। उसे ऐसा मालूम होता है मानो मैं तो किसी के हाथ का खिलौना मात्र हूँ। अंतरात्मा के आदेशों का वह निर्भयतापूर्वक पालन करता है और जो कुछ भी प्रिय-अप्रिय परिणाम मिलता है, उसे प्रभु का प्रसाद समझकर सहर्ष शिरोधार्य करता है।

तुम उस परमात्मा को अपनाओ, उसे ही अपना सखा—चौबीस घंटे का साथी बनाओ; अपने हृदय मंदिर में उसकी मुस्कराती हुई छाया देखो। हर घड़ी अपने को उसी की गोद में सुरक्षित बैठा हुआ देखो। एक शरीरधारी व्यक्ति की तरह उससे बातचीत करो और संपूर्ण शरीर को शिथिल करके अपनी अंतरात्मा में से आती हुई दैवी वाणी को सुनो, वह तुम्हें हर मामले में—चूल्हा फूँकने से लेकर योगाभ्यास तक के कार्यों में सच्ची सलाह देगा और पथ-प्रदर्शन करेगा। उसकी इच्छा को अपनी इच्छा बना दो। अपने चौबीस घंटे के साथी पर अपना बोझ डालकर निश्चिंत हो जाओ, तुम पार हो जाओगे और वह तुम्हें पार कर देगा।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1940, पृष्ठ-07

आनंद की खोज

मनुष्य स्वभावतः आनंदप्रिय है, उसे हर घड़ी आनंद की तलाश रहती है और जो कुछ सोचता-विचारता या करता-धरता है, वह इसलिए कि सुख मिले। परंतु वह अज्ञान में भटक जाता है, ऊँट को घड़े में तलाश करता है। दाद को खुजलाने में लोग बुरी तरह लगे हुए हैं; समझते हैं कि शायद यही सुख है। परंतु यह कैसा सुख जिसकी खुजली बढ़ती ही जाती है और अंत में चमड़ी छिल जाने पर दुखदायी घाव उत्पन्न हो जाते हैं। दाद के घावों में भी खुजली उठती है। उन घावों को खुजाने में जैसा सुख-दुःख मिलता है, वैसा ही आमतौर पर सब भोगते हैं। खुजली का सुख लूटने के लिए प्रयत्न करते हैं, पर घाव दूना बढ़कर असह्य वेदना उत्पन्न कर देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस अज्ञान से छुटकारा पाने के लिए अध्यात्म-पथ पर अग्रसर होना ही एकमात्र उपाय है। अज्ञान के अंधकार से छुटकारा पाने के लिए प्रकाश की ओर चलना चाहिए। माया से बचकर ईश्वर की ओर मुँह करना चाहिए। तभी वास्तविकता का ज्ञान होगा और तभी सब वस्तुओं का यथार्थस्वरूप समझ में आएगा। अँधेरे में पानी के धोखे दवात की स्याही पी जाने से कड़ुआ मुँह हो जाता है। इस कड़ुएपन को दूर करने का उपाय यह नहीं है, कि उस स्याही को मीठा मिलाकर पीने का प्रयत्न करो, वरन उचित यह है कि प्रकाश जलाओ और देखो कि जिन वस्तुओं से हम उलझे हुए थे, वे वास्तव में क्या हैं ? इसी प्रकाश द्वारा तुम्हें पता चलेगा कि पानी कहाँ रखा हुआ है ? शीतल जल पीने से ही प्यास बुझेगी। यह अंधकार में नहीं, प्रकाश में ही हो सकता है। अध्यात्म-पथ प्रकाश का मार्ग है। वास्तविकता प्रकाश में ही मालूम हो सकती है। प्रकाश की जड़ें आत्मा में हैं। आत्मस्वरूप का दर्शन करके ही सारे दु:ख-शोकों को जाना और त्यागा जा सकता है। आत्मा सुखों का मूल है। जीवन का वास्तविक आनंद उसी से प्राप्त हो सकता है। श्रुति कहती है—**तमसो मा ज्योतिर्गमय**, अंधकार से प्रकाश की ओर चलो। पाठको, अध्यात्म-पथ की ओर चलो।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1941, पृष्ठ-05

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हृदय मंदिर में शांति

जब कभी किसी दु:खद घटना से तुम्हारा मन खिन्न हो रहा हो; निराशा के बादल चारों ओर से छाए हुए हों; असफलता के कारण चित्त दुखी बना हुआ हो; भविष्य की भयानक आशंका सामने खड़ी हुई हो; बुद्धि किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रही हो, तो इधर-उधर मत भटको। उस लोमड़ी को देखो, जो शिकारी कुत्तों से घिरने पर, भागकर अपनी गुफा में घुस जाती है और वहाँ संतोष की साँस लेती है। ऐसे विषम अवसरों पर सब ओर से अपने चित्त को हटा लो और अपने हृदय-मंदिर में चले जाओ। बाहर की समस्त बातों को बिलकुल भूल जाओ। पाप-तापों को द्वार पर खड़ा छोड़कर जब भीतर जाने लगोगे तो मालूम पड़ेगा कि एक बड़ा भारी बोझ, जिसके भार से गरदन टूटी जा रही थी, उतर गया और तुम बहुत ही हलके—रूई के टुकड़े की तरह हो गए हो। हृदय-मंदिर में इतनी शांति मिलेगी, जितनी ग्रीष्म में तपे हुए व्यक्ति को बरफ से भरे हुए कमरे में मिलती है। कुछ ही देर में आनंद की झपकियाँ लेने लगोगे। देखा गया है कि कई दिनों से व्यथा से पीड़ित मनुष्यों को जब इस रक्षित अभेद्य दुर्ग में प्रवेश करने को कहा गया तो वे आनंद की झपकियाँ लेने लगे और उनका बाहरी शरीर भी निद्रा के वशीभूत हो गया।

ऐसे शांतिदायी स्थान में एकाएक प्रवेश पा सकना कठिन होता है। इसलिए पहले ही इसका अभ्यास करना आरंभ कर दो। प्रात:-सायं जब अवसर मिले, एकांत स्थान में जाओ और किसी आरामकुरसी या मसनद के सहारे शरीर को बिलकुल ढीला छोड़कर पड़े रहो। अपने हृदय-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंदिर के संबंध में ऊँची से ऊँची शांतिदायक भावना करो। मानो जो कुछ भी शांतिदायक वस्तुएँ दुनिया में हो सकती हैं, वह इसके अंदर भरी हुई हैं। हृदय-मंदिर का तात्पर्य यहाँ मांस के लोथड़े से नहीं है, वरन सूक्ष्म हृदय से है, जो उसके आंतरिक भागों में रहता है और ज्ञानचक्षुओं से ही देखा जा सकता है। अब अपने को बिलकुल अकेला अनुभव करते हुए; संसार को पूर्णतः भुलाते हुए धीरे-धीरे नीचे उतरो और जैसे ही अंतर प्रदेश में गहरे घुसने लगो, वैसे ही अपने सब भले-बुरे विचारों को बाहर छोड़ दो, मानो तुम बिलकुल विचाररहित हो गए हो। आनंद के अतिरिक्त और किसी प्रकार का कोई संकल्प ही मत उठने दो। इस प्रकार तुम अपने अक्षय दुर्ग में बैठकर कुछ क्षण के लिए विषाक्त बंधनों से छुटकारा पा सकोगे और इन क्षणों में वृद्धि करते-करते शाश्वत समाधि तक पहुँच सकोगे।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1941, पृष्ठ-05

प्रार्थना में शक्ति माँगें

ईश्वर से प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए—"आप हमें प्रेरणा दीजिए, हमारे अंदर अपनी शक्ति का संचार कीजिए, हमें साहस, उत्साह और धैर्य दीजिए।" यही वस्तुएँ सूक्ष्म सत्ता के केंद्र से आती हैं और इन्हें ही हम ईश्वर से प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर आटा गूँथने न आएगा, पर हम प्रार्थना करेंगे तो वह हमारी उस योग्यता को जाग्रत कर देगा, जिसके द्वारा वैसे कामों को आसानी से किया जा सकता है। आप अपना कर्त्तव्य अवश्य पूरा कीजिए, परिश्रम में रत्ती भर भी कमी न रखिए, तभी पिता का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। प्रार्थना की पहली सीढ़ी यह है कि यदि किसी सांसारिक वस्तु की हमें आवश्यकता है तो उसके लिए भरपूर प्रयत्न करें, जैसे आज्ञाकारी पुत्र को पिता अधिक प्यार करता है और अधिक वस्तु देता है, उसी प्रकार शक्तिभर प्रयत्न करने की ईश्वरीय आज्ञा को पालन करने वाला जगद्पिता का अधिक स्नेहभाजन बन सकता है। भूलकर भी अकर्मण्य होकर मत बैठिए कि हम तो भजन करेंगे, यह कार्य तो ईश्वर करके रख जाएगा। ईश्वर को ऐसे भजन या खुशामद की जरूरत नहीं है कि वह बदले में तुम्हारा चूल्हा फूँके। प्रार्थना की दूसरी सीढ़ी यह है कि कर्त्तव्य पूरा करते हुए भी प्रारब्ध कर्मों के कारण, अपनी त्रुटि के कारण या समष्टि मन के दोषों के कारण जो विपत्तियाँ सामने आएँ उनसे कायरों की भाँति न तो डरें और न घबराएँ वरन प्रभु से प्रार्थना करें—"प्रभो! हमें इनके सहन करने की शक्ति दीजिए, हमारे अंदर धैर्य भर दीजिए, ताकि फोड़े को चिरवाते समय विचलित न हों।" विपत्तियाँ सब पर आती हैं, राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, शिव, दधीचि, हरिश्चंद्र जैसी महान आत्माओं को विपत्ति ने नहीं छोड़ा, तो हम उससे अछूते नहीं बचे रह सकते। अप्रिय अवस्था को देखकर न तो चीखना चाहिए और न डरपोकों की तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना चाहिए। हमें उचित है कि ऐसे समय में निवारण का उपाय करें और जब तक वह कष्ट है, तब तक अविचल धैर्य की प्रभु से याचना करें।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1941, पृष्ठ-06

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य, प्रेम और न्याय की जय हो

यदि आपकी आत्मा सत्य, प्रेम और न्याय का संदेश सुनाती हो और ऐसा प्रतीत होता हो, तो भगवान हाथ पकड़कर आपको अपने महान उद्देश्य की पूर्ति का संदेशवाहक बनाना चाहते हैं, तो हे पाठक! भूल मत करना। आलस्य और प्रमाद की उलझन में मत पड़े रहना, वरन गोपियों की तरह सब बंधनों को छोड़कर मुरली की मधुर तान सुनते ही दौड़ पड़ना और पुकारना—"नाथ! मैं तुम्हारा हूँ। तुम्हारे आदेश को पूरा करने आता हूँ। तुम्हारी वाणी की ध्वनि पर थिरकता हुआ आता हूँ। प्रभो, मेरा कुछ नहीं है, जो कुछ है तुम्हारा ही है। तुम्हारी वस्तु तुम्हें सौंपने में मुझे कुछ उज्र नहीं है। आप अवतरित हो रहे हैं, मुझे आपकी बधाई बाँटने में आनंद है। आप मेरे घर आ रहे हैं, मैं आपकी सूचना सर्वत्र पहुँचाए देता हूँ।"

इस पाप-ताप परितप्त पृथ्वी पर अब सत्य-धर्म की स्थापना होगी। हाहाकारी वेदना से जलते हुए प्राणियों को संतोष की साँस लेने का अवसर मिलेगा। इस गंगावतरण के स्वागत के लिए हे नंदीगणो! प्रसन्न हो जाओ। इस कृष्ण जन्म के लिए हे बाल गोपालो! उत्सव मनाओ। उस रामावतार के लिए हे देवताओ! पुष्प बरसाओ। हे जाग्रत आत्माओ! इस आगामी युग का संदेश-दूत बनाकर प्रभु ने तुम्हें इस भूतल पर भेजा है। अपना कर्त्तव्यपालन करो। प्रभु की इच्छा पूरी होने दो। लोभ-मोह के बंधनों को दूर फेंक दो और सत्य-धर्म का प्रचार करने में अपने को जुटा दो। इस एक ही कार्य में लग जाओ। भगवान सत्य आपकी जय हो, भगवान प्रेम आपकी जय हो, भगवान न्याय आपकी जय हो। ऐसी ध्वनि पृथ्वी के कोने-कोने में गुंजित करने में लग जाओ। यह कर्त्तव्य की पूर्ति एक महान तप है। हे भगीरथो! तप में प्रवृत्त होओ, जिससे स्वर्गीय सुरसरि इस भूलोक पर शीघ्र ही प्रकट होकर मृत प्राणियों के मुख में अमृत टपका दे। तपस्वियो! यह कार्य आपके तप के द्वारा ही पूरा होगा। इसलिए उठो, तप में प्रवृत्त हो जाओ।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1942, पृष्ठ-47

ईश्वर भक्त के रोम-रोम से झरता प्रेम

बाहर के जड़ जगत का कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं हैं जो तत्त्वत: प्रेम का अधिकारी हो। स्वभावत: बाहरी वस्तुओं से मोह हो सकता है, प्रेम नहीं। जड़ और चैतन्य का कोई जोड़ा नहीं। दोनों की मित्रता हो ही नहीं सकती। प्रेम हमारे अपने अंदर है। आत्मा के अंतराल में प्रेम की ज्योति जगमगा रही है। उसे ही जाग्रत करके हम अपने अंदर प्रेम की सरिता बहा सकते हैं। यह जानना चाहिए कि परमात्मा कोई पृथक वस्तु नहीं है। आत्मा के उच्चतम स्वरूप को ही परमात्मा कहते हैं। हम उच्चतम दशा में पहुँचकर जैसे सत्-चित्-आनंद स्वरूप बन सकते है; जैसे महान, समर्थ, विशाल अंत:करण वाले उदार बन सकते हैं, उस अपनी सर्वोच्च स्थिति की कल्पना ही ईश्वर है। अपने इस महान तथा विकसित रूप, जिसे आमतौर से ईश्वर के नाम से पुकारा जाता है, से ही प्रेम करना योग्य है। ईश्वर-प्रेम का तात्पर्य यह है कि हम अपने वर्तमान अव्यवस्थित

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन और उस ध्येय जीवन के बीच में एक ऐसी चुंबक शृंखला बाँधते हैं जो दिनोंदिन इन दोनों के बीच का अंतर घटाती जाती है और अंत में दोनों को मिलाकर एक कर देती है—आत्मा को परमात्मा बना देती है।

परमात्मा से प्रेम करना, अपनी आत्मा से प्रेम करना ही सर्वश्रेष्ठ है, इसमें कभी किसी प्रकार का विछोह, विकार या विरोध उत्पन्न नहीं होता। दिन-दिन यह बढ़ता जाता है और अंत में मनुष्य सच्चा प्रेमी, सच्चा ईश्वर भक्त बन जाता है। सच्चे ईश्वर भक्त का रोम-रोम प्रेम से परिपूर्ण हो जाता है, उसके मन-वचन-कर्म से प्रेम टपकता रहता है, क्योंकि उसके भीतर-बाहर प्रेम ही प्रेम तो भरा हुआ है। देखने वाले देखते हैं कि वह हर प्राणी पर स्नेह की वर्षा कर रहा है, त्याग और सेवा के लिए अपरिचित के साथ भी वैसे ही तत्पर रहता है मानो यह उसके सगे-संबंधी हों। दूसरों के कष्ट देखकर उसकी आँखों में दया का झरना उमड़ पड़ता है। मोटी दृष्टि से देखने वाले समझते हैं कि यह व्यक्ति दूसरे लोगों से बड़ा भारी प्रेम रखता है, परंतु सूक्ष्म दृष्टि वाले देखते हैं कि ईश्वर भक्त को किसी जड़ पदार्थ से ममता नहीं है, उसके अंतर में जो अगाध प्रेम भरा हुआ है, उसको छूकर बाहर आने वाली बयार में वह गंध आती है। हमें आत्मा से प्रेम करना चाहिए, परमात्मा का भक्त बनना चाहिए, इसी से सच्चे प्रेमी बन सकते हैं और प्रेम का अमृतरस चखते हुए आत्मा की प्यास बुझाकर उसे तृप्त कर सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति मई 1942, पृष्ठ-13

जीवन-उपवन को कुशल माली की भाँति सँवारें

ईश्वर से की गई प्रार्थना का तभी उत्तर मिलता है, जब हम अपनी शक्तियों को काम में लाएँ। आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता और अज्ञान ये सब गुण यदि मिल जाएँ तो मनुष्य की दशा वह हो जाती है जैसे कि किसी कागज के थैले के अंदर तेजाब भर दिया जाए। ऐसा थैला अधिक समय तक न ठहर सकेगा और बहुत जल्द गलकर नष्ट हो जाएगा। ईश्वरीय नियम, बुद्धिमान माली के सदृश हैं, वह निकम्मे घास-कूड़े को उखाड़कर फेंक देता है और योग्य पौधों की भरपूर साज-सँभाल रखकर उन्हें उन्नत बनाता है। जिस खेत में निकम्मे खर-पतवार उग पड़ें, उसमें अन्न की फसल मारी जाएगी, भला ऐसे किसान की कौन प्रशंसा करेगा जो अपने खेत की ऐसी दुर्दशा कराता है। निश्चय ही ईश्वरीय नियम निकम्मे पदार्थों की गंदगी हटाते रहते हैं, ताकि सृष्टि का सौंदर्य नष्ट न होने पाए। यह कहावत बिलकुल सच है कि ईश्वर उसकी मदद करता है जो खुद अपनी मदद करता है, अपने पैरों पर खड़ा होने वाले को, पीठ थपथपाने वाले दूसरे लोग भी मिल जाते हैं।

प्रार्थना का सच्चा उत्तर पाने का सबसे प्रथम मार्ग आत्मविश्वास है। आत्मविश्वासी शरीर और मन से भरपूर प्रयत्न करता है। कर्त्तव्यपरायण द्वारा ही सच्ची प्रार्थना होना संभव है। तैरने वाला ही समुद्र के गहरे जल में डुबकी लगाकर तली में से मोती ढूँढ ला सकता है। जो पानी को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देखकर जी चुराता है, उसके लिए मोती पाना तो दूर, तैरने का आनंद लेना भी कठिन है। समय को बरबाद करने वाले, काम से जी चुराने वाले, अज्ञानी और इंद्रियपरायण लोग भक्त नहीं हो सकते, चाहे वे कितना ही ढोंग क्यों न रचते हों, ऐसे लोग ईश्वर के नाम पर भिक्षा माँगकर पेट भर सकते हैं। प्रार्थना नहीं कर सकते। प्रमाद और प्रेम ये दोनों तो एक दूसरे के विरोधी तत्त्व हैं, जहाँ एक होगा, वहाँ दूसरा ठहर नहीं सकता।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1943, पृष्ठ-68

जीवन को सुंदर बनाना सीखिए

आप कंजूस मत बनिए। जोड़ने जमा करने के चक्कर से बचकर उदारता का दरवाजा खुला रखिए। आप खुदगर्ज मत बनिए—दूसरों की सेवा-सहायता के लिए भी प्रयत्नशील रहिए। आप रूखापन धारण मत कीजिए—स्वयं प्रसन्न रहने और दूसरों को प्रसन्न करने का उद्योग किया कीजिए। आप शुष्क और नीरस मत बनिए, अपने हृदय में कोमलता, दया, करुणा, भ्रातृभाव के भावों को प्रवाहित किया कीजिए। आप उजड्ड और अभिमानी मत बनिए, दूसरों का स्वागत-सत्कार मधुर भाषण से, विनम्र व्यवहार से संतुष्ट करते रहिए। आप कृतघ्न मत बनिए, किसी के किए हुए उपकार को भूलिए मत और उसे समय-समय पर धन्यवादपूर्वक प्रकट करते हुए, प्रत्युपकार के लिए प्रयत्नशील रहा कीजिए। अपने क्षेत्र को दोष मत लगाइए, वरन पवित्र मानिए। अपने शरीर को, अपने परिवार को, अपने कार्य को, अपने स्वजन संबंधियों को, अपनी मातृभूमि को तुच्छ एवं घृणित मत समझिए, वरन उसमें पवित्रता, श्रेष्ठता और सात्विकता के तत्त्वों को ढूँढ़-ढूँढ़कर विकसित कीजिए। कुरूपता, गंदगी और अंधकार को हटाकर सौंदर्य, स्वच्छता और प्रकाश का प्रसार करिए।

हे आत्मन्! प्रेम की वीणा बजाते हुए जीवन को संगीतमय बनाओ, इसे एक सुंदर चित्र के रूप में उपस्थित करो। जिंदगी को एक भावुक कविता के रूप में रच डालो। प्रेम का मधुरस पान करो, खय्याम की तरह अपने प्याले को छाती से चिपकाए रहो, हाथ से छूटने मत दो। प्रेम करो! अपने आप से प्रेम करो, दूसरों से प्रेम करो, विश्व-ब्रह्मांड में बिखरे हुए मूर्तिमान परमेश्वर से प्रेम करो। मनुष्यो! प्रेम करो, यदि जीवन का अमृतरस चखना चाहते हो तो प्रेम करो। अपने अंत:करण को कोमल बनाओ, स्नेह से उसे भर लो। इस पाठ पर बार-बार विचार करो और बार-बार अंत:करण में गहराई तक उतारने की अनवरत साधना करते रहो।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1944, पृष्ठ-128,129

तप ही कल्पवृक्ष है

भूलोक का कल्पवृक्ष तप है। उत्साह, स्फूर्ति, लगन, धुन, परिश्रमप्रियता, साहस, धैर्य, दृढ़ता और कठिनाई को देखकर विचलित न होना, यह तप के लक्षण हैं। जिसने तप द्वारा इन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुणों को पैदा किया, अपने मनोवांछित तत्त्व को पाने के लिए खून-पसीना बहाना सीखा, वह एक प्रकार का सिद्ध है। कल्पवृक्ष की सिद्धि उसके आगे हाथ बाँधे खड़ी रहती है। ऐसे आदमी जो चाहते हैं कर गुजरते हैं; जो चाहते हैं प्राप्त कर लेते हैं। नेतृत्व, लोकसेवा, धन उपार्जन, प्रतिष्ठा, ज्ञान, भोग आदि संपदाएँ पाने की जिनके मन में लालसाएँ उठती हों, उन्हें सबसे पहले अपने को तपस्वी बनाना चाहिए। आलस्य, प्रमाद, समय का अपव्यय, बकवास, ठलुआपंथी, निराशा, निरुत्साह, अस्थिरता आदि दुर्गुणों को हटाकर तपश्चर्या के सद्गुणों को अपने अंदर धारण करना चाहिए। यह प्रगति जिस क्रम के साथ होती है, उसी क्रम से संपदाओं और वैभवों का समूह सामने उपस्थित होता है।

याद रखिए तप ही कल्पवृक्ष है। जिस किसी ने इस दुनिया में कुछ पाया है, परिश्रम से पाया है। आप भी कुछ पाना चाहते हैं तो अदम्य उत्साह के साथ घोर परिश्रम करना अपना स्वभाव बनाइए। इस साधना के फलस्वरूप आपको कल्पवृक्ष जैसी प्रतिभा मिलेगी और उसके द्वारा आपकी सब प्रकार की इच्छाएँ, आकांक्षाएँ आसानी से पूरी हो जाया करेंगी।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1945, पृष्ठ-19

www.awgp.org

आनंदमय जीवन शक्तिशाली को मिलता है

चारों ओर मोरचेबंदियाँ बँधी हुई हैं। यदि आप सावधान न रहें, जागरूकता से काम न लें तथा अपने को बलवान साबित न करें तो निस्संदेह इतने प्रहार चारों ओर से होने लगेंगे कि उनकी चोटों से अपने को बचाना कठिन हो जाएगा। ऐसी दशा में उन्नति करना, आनंद प्राप्त करना तो दूर, शोषण, अपहरण, चोट और मृत्यु से बचना मुश्किल होगा। अतएव सांसारिक जीवन में प्रवेश करते हुए इस बात को भली प्रकार समझ लेना चाहिए और समझकर गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि केवल जागरूक और बलवान व्यक्ति ही इस दुनिया में आनंदमय जीवन के अधिकारी हैं। जो निर्बल, अकर्मण्य और लापरवाह स्वभाव के हैं, वे किसी न किसी प्रकार दूसरों के द्वारा चूँसे जाएँगे और आनंद से वंचित कर दिए जाएँगे। जिन्हें अपने स्वाभाविक अधिकारों की रक्षा करते हुए प्रतिष्ठा के साथ जीने की इच्छा है, उन्हें अपने दुश्मनों से सजग रहना होगा, उनसे बचने के लिए बल एकत्रित करना होगा।

जब तक आप अपनी योग्यता नहीं प्रकट करते, तब तक लोग अकारण ही आपके रास्ते में रोड़े अटकाएँगे, किंतु जब उन्हें यह मालूम हो जाएगा कि आप शक्ति संपन्न हैं तो वे जैसे अकारण दुश्मनी ठानते थे, वैसे ही अकारण मित्रता भी करेंगे। बीमार के लिए पौष्टिक भोजन विषतुल्य हो जाता है; किंतु स्वस्थ मनुष्य को बल प्रदान करता है। जो सिंह रास्ता चलते सीधे-साधे आदमियों को मारकर खा जाता है, वही सिंह सरकस मास्टर के आगे दुम हिलाता है और उसकी आज्ञा का पालन करता हुआ, बहुत बड़ी आमदनी कराने का साधन बन जाता है।

अच्छे स्वास्थ्य वाले को बलवान कहते हैं, परंतु आज के युग में यह परिभाषा अधूरी है। इस समय शरीरबल, धनबल, बुद्धिबल, प्रतिष्ठा का बल, साथियों का बल, साहस का बल ये सब

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलकर एक पूर्ण बल बनता है। आज के युग में बलवान वह है, जिसके पास उपरोक्त छह बलों में से कई बल हों। आप अपने शरीर को बलवान बनाइए परंतु साथ-साथ अन्य पाँच बलों को भी एकत्रित कीजिए। किसी के साथ बेइनसाफी करने में इन बलों का उपयोग करें, ऐसा हमारा कथन नहीं है, परंतु जब आपको अकारण सताया जा रहा हो तो आत्मरक्षा के लिए यथोचित रीति से इनका प्रयोग भी कीजिए, जिससे पशुओं को दुस्साहस न करने की शिक्षा मिले। बलवान बनना पुण्य है क्योंकि इससे दुष्ट लोगों की कुवृत्तियों पर अंकुश लगता है और दूसरे कई दुर्बलों की रक्षा हो जाती है।

आनंद पुरुषार्थी को प्राप्त होता है। विजयलक्ष्मी की वरमाला बलवानों के गले में पड़ती है। यह वसुंधरा वीरभोग्या है, उद्योगी पुरुष-सिंहों को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है। आनंद और उल्लास का जीवन भी वीर पुरुष ही प्राप्त करते हैं। निर्बल-दुर्बलों को तो इस लोक और परलोक में रोना, झीखना, पिसना, पिटना ही हाथ रहता है। इसलिए वास्तविक जीवन, आनंदमय जीवन जीने की इच्छा करने वाले हर एक व्यक्ति को शक्तिशाली, बलवान बनना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1945, पृष्ठ-169, 170

वाचक ज्ञानी नहीं, कर्मनिष्ठ बनें

पूजा के समस्त कर्मकांड इसलिए हैं कि मनुष्य परमात्मा को स्मरण रखे; उसके अस्तित्व को अपने चारों ओर देखे और मनुष्योचित्त कर्म करें। पूजा, अर्चना, वंदना, कथा, कीर्तन, व्रत, उपवास, तीर्थ आदि सबका प्रयोजन मनुष्य की इस चेतना को जाग्रत करना है कि परमात्मा की निकटता का स्मरण रहे और ईश्वर के प्रेम एवं श्रद्धा द्वारा लोकसेवा का व्रत रखे तथा ईश्वर के क्रोध से डरकर पापों से बचे। जिस पूजा, उपासना से यह उद्देश्य सिद्ध न होता हो, वह व्यर्थ है। जिस उपाय से भी "पाप से बचने और पुण्य में प्रवृत्त होने" का भाव जाग उठे, वह उपाय ईश्वर भक्ति की साधना ही है।

पाठको! ईश्वर की खाल मत ओढ़ो! सच्चे ईश्वर भक्त बनो। भक्ति को मंदिरों की धरोहर मत बनाओ, उसे व्यावहारिक जीवन में उतार लो। वाचक ज्ञानी मत बनो, कर्मनिष्ठा सीखो। ईश्वर के थन लाठियों से मत छुओ, उसे अपने में ओत-प्रोत कर लो। विडंबना को छोड़ो, परमात्मा के चरणों से लिपट जाओ, उसे अपने अंत:करण के भीतरी कोने में बिठा लो। अपनी दृष्टि को परमात्ममय बना लो। तुम्हारा जीवन सच्चे आस्तिक का पवित्र जीवन होना चाहिए। अपवित्र जीवन तो प्रत्यक्ष नास्तिकता है।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1945, पृष्ठ-263

संयम का अर्थ है—शक्तियों का नियंत्रण

धन द्वारा जहाँ स्वास्थ्य, धर्म, शिक्षा, प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति होती है, वहाँ दुरुपयोग से बीमारी, कुसंस्कार, पाप, बदनामी, घमंड, बेचैनी आदि भी खरीदी जा सकती है। बुद्धि से हम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महापुरुष एवं महात्मा भी बन सकते हैं और असुर, पिशाच तथा शैतान भी। इसलिए जहाँ शक्ति का उपार्जन आवश्यक है, वहाँ उसको अपव्यय से बचाकर आवश्यकता के लिए संचय तथा उपयोगी कार्यों में व्यय करने की सावधानी भी आवश्यक है। यह सावधानी ही संयम है।

संयम का अर्थ स्वाभाविक एवं आवश्यक इच्छाओं, क्षुधाओं, आवश्यकताओं को अकारण कुचल डालना नहीं है। ऐसा करने से तो कुचली हुई मनोवृत्तियों का मनोविज्ञान शास्त्र के अनुसार बड़ा भयंकर रूप बन सकता है और उससे शारीरिक एवं मानसिक भयानक रोग उठ खड़े हो सकते हैं। विवेकपूर्वक हमें यह विचारना चाहिए कि किस शक्ति को किस कार्य के लिए, किस मात्रा में व्यय करना चाहिए। विवेक जैसा निर्णय करे उसके अनुसार शक्तियों का नियंत्रण भी करना चाहिए और व्यय भी। रोक हमें अपने चटोरेपन पर लगानी है; निग्रह, लोलुपता का करना है, जिस तृष्णा और अविवेक के कारण मन हानि-लाभ न सोचकर क्षणिक आनंद के लिए सत्यानाशी मार्ग पर दौड़ पड़ता है, उस कमजोरी पर विजय पानी है। हमें अपनी लोलुपता पर नियंत्रण करना चाहिए, उसे परास्त करना चाहिए और विवेक के आधार पर इंद्रिय भोगों का तथा जीवन के अन्य आनंदों का उपभोग करना चाहिए।

समय का एक-एक क्षण अमूल्य संपत्ति है। स्वास्थ्य संपत्ति है, जीवन संपत्ति है, मस्तिष्क संपत्ति है, इसके अतिरिक्त धन-दौलत, योग्यता-शिक्षा आदि भी संपत्ति है। इन सभी शक्तियों को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। इनके एक-एक कण को फजूलखरची से बचाना चाहिए और सर्वश्रेष्ठ लाभदायक उपयोग में उनको खरच करना चाहिए। यही संयम का तत्त्व है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1947, पृष्ठ-10

आत्मनिर्माण के महामंदिर में पदार्पण करें

अपनी बात को ही प्रधान मानने तथा ठीक मानने का अर्थ और सबकी बातें झूठी मानना है। इस प्रकार का अंहकार अज्ञान का द्योतक है। इस असहिष्णुता से घृणा और विरोध बढ़ता है, सत्य की प्राप्ति नहीं होती। सत्य की प्राप्ति होनी तभी संभव है, जब हम अपनी भूलों, त्रुटियों और कमियों को निष्पक्ष भाव से देखें। अपने विश्वास बीजों का हमें निरीक्षण और परीक्षण करना चाहिए। जो हमारे शक्तिकेंद्र हैं, जिनकी प्रेरणा से हमारी जीवन दिशा संचालित होती है, उन विश्वास-बीजों का हमें निष्पक्ष भाव से, कठोर समालोचक की तरह भली प्रकार अपनी अंत:भूमि में निरीक्षण करना चाहिए। जैसे चतुर किसान अपने खेत में उगे हुए झाड़-झंखाड़ों को अपना नहीं समझता और न उनसे अपनेपन का मोह रखता है, वरन उन्हें निष्ठुरतापूर्वक उखाड़कर फेंक देता है, उसी प्रकार हमें भी अपने कुसंस्कारों को बीन-बीनकर उखाड़ देना चाहिए। अब तक हम यह मानते रहे हैं, इसे बदलने में हमारी हेठी होगी, ऐसी झिझक व्यर्थ है। आत्मनिर्माण के लिए, सत्य की प्राप्ति के लिए, हमें अपना पुनर्निर्माण करना होगा। जैसे सिर के बाल घोटमघोट कराके ब्रह्मचारी गुरुकुल में प्रवेश करता है, वैसे ही अपनी समस्त पूर्व मान्यताओं

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को हटाकर नए सिरे से उचित, उपयोगी एवं सच्ची मान्यताओं को हृदय-भूमि में प्रतिष्ठित करना चाहिए। तभी हम आत्मनिर्माण के महामंदिर में पदार्पण कर सकते हैं। पक्षपाती और भ्रांत धारणाओं के दुराग्रही के लिए सत्य का दर्शन असंभव ही है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1948, पृष्ठ-09

मन की शक्तियों को लक्ष्य की ओर लगाएँ

मन बड़ा शक्तिमान है, परंतु है बड़ा चंचल। इसलिए उसकी समस्त शक्तियाँ छितरी रहती हैं और इसलिए मनुष्य सफलता को आसानी से नहीं पा लेता। सफलता के दर्शन उसी समय होते हैं, जब मन अपनी वृत्तियों को छोड़कर किसी एक वृत्ति पर केंद्रित हो जाता है, उसके अलावा और कुछ उसके आमने-सामने और पास रहता ही नहीं। सब तरफ लक्ष्य ही लक्ष्य, उद्देश्य ही उद्देश्य रहता है। जब मनुष्य तन्मय होता है, तो जिस शक्ति के प्रति तन्मय होता है, वह शक्ति जाग्रत होती है और उस व्यक्ति को वह सराबोर कर देती है। जो लोग तन्मयता के रहस्य को नहीं जानते; अपने जीवन में जिन्हें कभी एकाग्रता की साधना का मौका नहीं मिला, वे हमेशा डाल-डाल और पात-पात पर डोलते रहे, परंतु सफलता देवी के वे दर्शन नहीं कर सके।

जिन्हें हम विघ्न कहते हैं, वे हमारे चित्त की विभिन्न वृत्तियाँ हैं जो अपने अनेक आकार-प्रकार धारण करके सफल नहीं होने देतीं। यदि हम लक्ष्य सिद्ध करना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है कि लक्ष्य से विमुख करने वाली जितनी भी विचारधाराएँ उठें और पथभ्रष्ट करने का प्रयत्न करें, हमें उनसे अपना संबंध-विच्छेद करते जाना चाहिए और यदि हम चाहें, अपनी दृढ़ता को कायम रखें, अपने आप पर विश्वास रखें तो हम ऐसा कर सकते हैं। इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।

मन की अपरिमित शक्ति को जो लक्ष्य की ओर लगा देते हैं और लक्ष्य भ्रष्ट करने वाली वृत्तियों पर अंकुश लगा लेते अथवा उनसे अपना मुँह मोड़ लेते हैं, वे ही जीवन के क्षेत्र में विजयी होते हैं, सफल होते हैं। शास्त्रों में इस सफलता को पाने के लिए बाण के समान गति वाला बनने का आदेश दिया है—**''शरवत् तन्मयो भवेत्।''**

वाण की तरह तन्मय होना चाहिए। धुनष से छूटा बाण अपनी सीध में ही चलता जाता है, वह आस-पास की किसी वस्तु के साथ अपना संपर्क न रखकर सीधा वहीं पहुँचता है, जो कि उसके सामने होता है अर्थात सामने की तरफ ही उसकी आँख खुली रहती है और सब ओर से बंद। इसलिए जो लोग लक्ष्य की तरफ आँख रखकर, शेष सभी ओर से अपनी इंद्रियों को मोड़ लेते हैं और लक्ष्य की ओर ही समस्त शक्ति लगा देते हैं, वे ही सफल होते हैं। उस समय अर्जुन से पूछे गए द्रोण के प्रश्न के उत्तर में अर्जुन की तरह उनकी अंतरात्मा में एक ही ध्वनि गूँजती है। अपना लक्ष्य ही दिखाई देता है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1950, पृष्ठ-10, 11

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्याग के साथ भोग ही सच्ची तपस्या

भाग्य और कर्म, तकदीर और तद्वीर दोनों एक ही वस्तु हैं। जैसे कल का दूध आज दही बन जाता है, वैसे ही भूतकाल के कर्म आज प्रारब्ध बनकर प्रकट होते हैं। हम अपने भाग्यनिर्माता आप हैं। अपनी कर्मरेखा के लेखक, प्रारब्ध के रचयिता हम स्वयं हैं। भूतकाल में जो कर चुके हैं, उसका परिणाम आज मौजूद है। यदि हम भविष्य को अच्छा, सुख-शंतिमय, आनंददायक बनाना चाहते हैं तो आज के कर्त्तव्य-कर्म को मजबूती से अपनाना पड़ेगा, कर्मयोगी बनना पड़ेगा। यदि आज के कर्त्तव्य की उपेक्षा की जा रही है तो निश्चित है कि कल का प्रारब्ध हमें अत्यंत त्रासदायक दुर्भाग्य के रूप में भोगना पड़ेगा।

कर्म से वैराग्य लेना भूल है। बुराइयों से, लिप्सा से, तृष्णा से, दुष्कर्मों से, कुविचारों से, आलस्य से वैराग्य लेना चाहिए। कर्त्तव्य-कर्म से वैराग्य लेना तो वैराग्य शब्द की दुर्गति करना है। प्राचीन ऋषि-मुनि निरंतर कर्त्तव्य करते रहते थे। उन्होंने लोकहित में जीवन का सदुपयोग जिस उत्तमता से किया था, वह आदर्श है। प्रत्येक कर्मयोगी को वैसा ही वैरागी होना चाहिए। घर में रहकर तपोवन का निर्माण करना, भोग के साधन होते हुए भी उनका परित्याग करना सच्चा वैराग्य कहा जा सकता है। अभाव में जो त्याग होता है उसके अपरीक्षित होने के कारण परीक्षा के समय पर विफल हो जाने का भय बना रहता है। भोग के रहते हुए त्यागी होना ही सच्ची तपस्या है।

कर्मयोगी अनुद्विग्न रहता है। वह जरा-जरा से हानि-लाभों में मानसिक संतुलन को नष्ट नहीं होने देता। हर्ष-शोक उसके लिए समान हैं, हानि-लाभ में, सफलता-असफलता में, उसे मानसिक विक्षोभ नहीं होता, क्योंकि उसका केंद्रबिंदु कर्म है। यदि अपना कर्त्तव्यपालन किया जा रहा है तो असफलता में दुखी या सफलता में हर्षोन्मत्त होने का कोई कारण नहीं। फल देने वाली शक्ति दूसरी है, हम तो अपना कर्त्तव्य पूरा करें, यह भावना स्थितप्रज्ञ की है; अनासक्त योगी की है जो इस दृष्टिकोण से सोचता है, वह सदा प्रसन्न ही रहता है। दुःख या कष्ट में भी उसे अप्रसन्नता का कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता।

गायत्री का '**भुवः**' शब्द हमें कर्मयोगी बनाता है। इस आदेश को शिरोधार्य करने वाला कर्म-बंधन में नहीं फँसता, इसलिए जीवन मुक्ति सदा उसके करतलगत रहती है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1951, पृष्ठ-06, 07

आनंद की खोज भीतर करें

प्रसन्न मुख मुद्रा प्रामाणिकता की साक्षी देती है। जो स्थिर चित्त है, सुखी है, सफल है, संतुष्ट है; वह प्रसन्न रहेगा अथवा यों कहिए कि जो प्रसन्न रहता है, जिसके पास ये चारों संपदाएँ हैं, वह निश्चय ही बुद्धिमान, गंभीर, विश्वसनीय, साहसी, कुशल एवं सुयोग्य समझा जाता है। प्रसन्न रहना देखने में मामूली बात है, पर इसके पीछे अनेक आशाजनक रहस्य छिपे हुए हैं। प्रसन्नता का हर जगह स्वागत होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छे से अच्छे भविष्य की आशा करें और बुरे से बुरे परिणाम का मुकाबला करने को तैयार रहें। यदि कठिनाइयों को, अपने प्रयत्न को बढ़ाने की चुनौती मात्र समझा जाए, उनसे भयभीत न हुआ जाए, तो निश्चय ही कोई अप्रिय परिस्थिति हमें दुखी नहीं कर सकती, अपनी प्रसन्नता में बाधक नहीं हो सकती। प्रसन्न रहना अपना स्वभाव बना लेने की सद्बुद्धि को अपना लिया जाए तो जरा-जरा से तुच्छ कारणों से दुखी होने की कुबुद्धि से सहज ही छुटकारा मिल सकता है। जीवन खिलाड़ी की भावना से खेलने के लिए है। खिलाड़ी पूरे उत्साह से खेलते हैं, पर जीत-हार की विशेष परवाह नहीं करते। रंगमंच पर पार्ट करने वाले नट अनेक प्रकार के अभिनय करते हैं पर स्वयं उससे प्रभावित नहीं होते। खिलाड़ी और नट की इस भावना के साथ जीवन का खेल, खेलना चाहिए। किसी भी घटना को, किसी भी परिस्थिति को बहुत अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए। जो कष्ट या अभाव हमें बहुत परेशान करते हैं, उन्हें यदि हलकी दृष्टि से देखें तो वे बहुत ही तुच्छ प्रतीत होते हैं। इन अभावों के होते हुए भी अनेकों से अपनी स्थिति बहुत अच्छी है, जितनी सुविधाएँ प्राप्त हैं, उनकी तुलना में दुःख तो नाममात्र का है ऐसी दशा में यदि हम चाहें तो अपनी संपदाओं और सुविधाओं पर प्रसन्न होकर छोटे-छोटे अभावों की सहज ही उपेक्षा कर सकते हैं।

आनंद भीतर हैं, उसे बाहर की वस्तुओं में नहीं ढूँढ़ना चाहिए। वरन भीतर से प्रेरित करना चाहिए। सद्बुद्धिरूपी प्रसन्नता हमारे अंतर में छिपी पड़ी है, उसे प्रेरित, समुन्नत करते ही कष्टों की निशा समाप्त हो जाती है और आनंदरूपी सूर्य की किरणें अपने चारों ओर बिखरी हुई दिखाई पड़ती हैं।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1951, पृष्ठ-07

प्राणशक्ति के विकास से प्रतिभासंपन्न बनें

आत्मनिर्भरता का मतलब है—दूसरों के ऊपर निर्भर न रहकर अपने प्रयत्न, पुरुषार्थ, उद्योग और परिश्रम पर विश्वास करना। जो लोग अपनी योग्यताओं, शक्तियों और सामर्थ्यों को तो बढ़ाते नहीं और दूसरों से यह आशा करते रहते हैं कि अमुक की कृपा से हमारे सब काम हो जाएँगे, वे सदा घाटे में रहते हैं। भले ही किसी की कृपा से कोई अनायास लाभ हो जाए, परंतु पराश्रयी, परमुखापेक्षी रहने पर उनकी अपनी प्राणशक्ति न बढ़ेगी और प्राणमयकोश सुव्यवस्थित न हो सकेगा। सफलता चाहे छोटी हो, थोड़ी हो, पर होनी चाहिए अपने बाहुबल द्वारा उपार्जित। ऐसी दशा में ही साहस, उत्साह और आत्मविश्वास बढ़ सकता है। जिसे अपनी महानता का, अपने आत्मगौरव का ध्यान है, वह नीच विचारों और पतित कर्मों को नहीं अपना सकता। अतएव उसकी विचारधारा और उत्तम कार्यप्रणाली अपने आप ही स्वचालित डाइनुमा की तरह प्राणशक्ति की बिजली उत्पन्न करती है और साधक का प्राणमयकोश सुविकसित होता चलता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशेष साधनाओं द्वारा भी प्राणशक्ति का विकास होता है। परंतु जीवन में निर्भयता, प्रसन्नता, ईमानदारी और आत्मनिर्भरता के सद्‌गुणों को अधिकाधिक मात्रा में सम्मिलित करते चलना भी एक ऐसी व्यावहारिक एवं सर्वसुलभ साधना है, जिसको अपनाकर हर कोई मनुष्य बिना यौगिक साधनाओं के भी प्राणमयकोश को सुव्यवस्थित कर सकता है; प्राणशक्ति का विकास कर सकता है।

जिसमें निर्भयता, प्रसन्नता, ईमानदारी और आत्मनिर्भरता के गुण होंगे, उसका अंत:करण निरंतर प्रफुल्ल, उत्साहित एवं संतुष्ट रहेगा। ऐसी ही मनोभूमि में प्राणशक्ति का विकास होता है। यह सद्‌गुण मनुष्य को प्राणवान बनाते हैं; उसकी प्रतिभा, तेजस्विता और पुरुषार्थ शक्ति को बढ़ाते हैं। फलस्वरूप वह व्यक्ति व्यावहारिक जीवन के प्रत्येक मोरचे पर सफल होता है। उसकी वाणी में, भावभंगिमा में, चेष्टा में, क्रिया में, विचारधारा में, सर्वत्र प्राण ही प्राण, परिलक्षित होता है। ऐसे ही सद्‌गुणों एवं प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों के द्वारा संसार में महान कार्यों का संपादन होता है और वही महापुरुष कहलाते हैं।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1951, पृष्ठ-16

दृष्टिकोण की त्रुटियों को समझें

जीवन को सुखी-शांतिमय बनाने के लिए सुविधा-सामग्रियों की आवश्यकता अनुभव की जाती है, सो ठीक है। इसके लिए भी प्रयत्न करना चाहिए। यह भी न भूल जाना चाहिए कि जो प्राप्त है, उसका सदुपयोग किया जाए। उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करना यदि हम सीख जाएँ, हर वस्तु का मितव्ययतापूर्वक उपयोग करें, उसका पूरा-पूरा लाभ लें, तो जो कुछ प्राप्त है, वही हमारे आनंद को अनेक गुना बढ़ा सकता है। अपनी धर्मपत्नी जैसी भी कुछ वह है, यदि उसे अधिक शिक्षित, अधिक सुयोग्य बनाया जाए और उसके स्वभाव तथा गुणों का अपने कार्यक्रमों में ठीक प्रकार उपयोग किया जाए, तो यही पत्नी जो आज व्यर्थ का बोझ जैसी मालूम पड़ती है—अत्यंत उपयोगी एवं लाभदायक प्रतीत होने लगेगी। जितनी आजीविका आज अपने को प्राप्त है यदि उसके खरच की ही विवेक और मितव्ययतापूर्वक ऐसी योजना बनाई जाए कि प्रत्येक पैसे से अधिकाधिक लाभ उठाया जा सके तो यह आज की थोड़ी आजीविका भी आनंद और सुविधाओं में अनेक गुनी वृद्धि कर सकती है। इसके विपरीत यदि अपना दृष्टिकोण अस्त-व्यस्त है, तो बड़ी मात्रा में सुख-साधन उपलब्ध होते हुए भी, वे कुछ लाभ न पहुँचा सकेंगे वरन 'जी के जंजाल' बनकर परेशानियाँ और उलझनें ही उत्पन्न करेंगे।

सुखी जीवन की आकांक्षा सभी को होती है। वह उचित और स्वाभाविक भी है, पर उसकी उपलब्धि तभी संभव है, जब हम अपने दृष्टिकोण की त्रुटियों को समझें और उन्हें सुधारने का प्रयत्न करें। सुधरा हुआ दृष्टिकोण स्वल्प साधनों और कठिन परिस्थितियों में भी शांति और संतोष को कायम रख सकता है। गरीबी में भी लोग स्वर्ग का आनंद उपलब्ध करते देखे जाते हैं। पर यदि दृष्टिकोण अनुपयुक्त है, तो संसार के समस्त सुख-साधन उपलब्ध होते हुए भी हमें

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुखी न बना सकेंगे। अतएव सुखी जीवन की आकांक्षा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उचित है कि अपने दृष्टिकोण को परिमार्जित बनाने के लिए निरंतर प्रयत्न करता रहे।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1960, पृष्ठ-07

अपनी सेवा ही विश्वमानव की सेवा

मन सचमुच कल्पवृक्ष है। इसकी सेवा करके हम असीम लाभ और अनंत पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही इससे सध सकते हैं। लौकिक सुख और पारलौकिक शांति की कुंजी हाथ आ सकती है। यदि उसे साधा न गया तो वह शैतान की तरह हमारे सिर पर सवार होकर नाना प्रकार के कुकृत्य कराता है, विविधविध नाच नचाता है। यदि हम इसे वश में नहीं करते तो इसके वश में हमें होना पड़ता है। कहते हैं—'भूत' लोगों को डराता और सताता रहता है, पर यदि कोई तांत्रिक उसे वश में कर लेता है तो फिर वह उसकी इच्छानुसार नाचता है, जो कुछ कराना चाहता है, करता है और जो मँगाया जाता है, लाकर देता है। सचमुच का भूत किसी को देखना हो तो वह अपने मन के रूप में देख सकता है। असंयमी और उच्छृंखल मन किसी प्रबल शत्रु से—बेताल ब्रह्मराक्षस से कम नहीं है। पर यदि उसे साध लिया जाए तो वही परम मित्र बन जाता है, देवता की तरह सहायक सिद्ध होता है।

हजारों मनुष्यों की थोड़ी-थोड़ी सेवा कर देने से उतना लोकहित नहीं हो सकता जितना अकेले अपने को साध लेने और सुधार लेने से हो सकता है। इसलिए सेवा का सबसे बड़ा पात्र एवं अधिकारी हमारा अपना आपा ही है। इसकी सेवा करके हम समस्त प्राणियों की—सारे विश्व-ब्रह्मांड की सेवा कर सकते हैं। सेवाधर्म का आरंभ करने के लिए प्रारंभिक सीढ़ी यही है। अपनी सेवा में भगवान की—विश्वमानव की सेवा सन्निहित है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1961, पृष्ठ-07

दूरदर्शिता का तकाजा

हम शरीर नहीं आत्मा हैं। शरीर कल नहीं तो परसों नष्ट होने वाला है। वह हमें एक साधन, औजार, उपकरण एवं वाहन के रूप में मिला है। क्या इस वाहन के लिए ही अपनी सारी शक्ति लगा दी जाए और अपना गंतव्य लक्ष्य भुला दिया जाए? यह विचारणीय प्रश्न है और इस पर विचार किया ही जाना चाहिए। शरीर की सुरक्षा रखी जानी उचित है। उससे संबंधित आजीविका उपार्जन, परिवार का पोषण एवं लौकिक कर्त्तव्यों का पालन भी उचित है। अपने घोड़े को कौन भूखा मार डालता है? कौन उसकी साज-सँभाल नहीं करता? पर इसी प्रक्रिया में अपनी सारी शक्ति नहीं लगनी चाहिए। घोड़ा जिस यात्रा के लिए खरीदा गया था, उस मंजिल का स्मरण ही भुला देना, कहाँ की बुद्धिमानी है?

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा का जीवन चिरस्थायी है। शरीर उसका एक वस्त्र मात्र है। वस्त्र को रंगीन बनाने के लिए अपना रक्त निकालकर उसकी रँगाई कौन करेगा? पर हम हैं जो इसी खिलवाड़ में लगे हुए हैं। कुछ दिन के मनोरंजन में व्यस्त रहकर आत्मा के भविष्य को लाखों-करोड़ों वर्ष के लिए अंधकारमय बना रहे हैं।

अपनी आज की मनोदशा पर हमें विचार करना है। अपनी अब तक की गतिविधियों पर हमें शांत चित्त से ध्यान देना है। क्या हमारे कदम सही दिशा में चल रहे हैं? यदि नहीं तो क्या यह उचित न होगा कि हम ठहरें, रुकें, सोचें और यदि रास्ता भूल गए हैं तो पीछे लौटकर सही रास्ते पर चलें। इस विचार-मंथन की वेला में आज हमें यही करना चाहिए। यही सामयिक चेतावनी और विवेकपूर्ण दूरदर्शिता का तकाजा है।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1961, पृष्ठ-05

मन की स्वच्छता आवश्यक

मन की मलिनता को हटा देने पर हम पतन और संताप से कितने बचे रह सकते हैं और मन को स्वच्छ रखकर उत्थान और आनंद का कितना अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है, यह लिखने-पढ़ने और कहने-सुनने की नहीं, करने और अनुभव में लाने की बात है। लौकिक जीवन को आनंद और उत्थान की दिशा में गतिवान करने का प्रमुख उपाय यह है कि हम अपने मन को स्वच्छ कर उसकी मलिनताओं को हटाएँ। मनन करने वाले को ही मनुष्य कहते हैं। अपनी भीतरी मलिनताओं को खोजना और उन्हें सुधारने का प्रयत्न करना, इस संसार का सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। संसार के प्रत्येक महापुरुष को अनिवार्यत: यह पुरुषार्थ करना पड़ा है। क्या यह कोई ऐसा कठिन काम है जो हम नहीं कर सकते? दूसरों को सुधारना कठिन हो सकता है, पर अपना मन अपनी बात न माने, यह कैसे हो सकता है? हम अपने आप को तो सुधार ही सकते हैं, अपने आप को तो समझा ही सकते हैं, अपने को तो सन्मार्ग पर चला ही सकते हैं। इसमें दूसरा कोई क्या बाधा देगा? हम ऊँचे उठना भी चाहते हैं और उसका साधन भी हमारे हाथ में है, तो फिर उसके लिए पुरुषार्थ क्यों न करें? आत्मसुधार के लिए, आत्मनिर्माण के लिए, आत्मविकास के लिए क्यों न कटिबद्ध हों?

हमारे आध्यात्मिक लक्ष्य की आधारशिला मन की स्वच्छता है। जप, तप, भजन, ध्यान, व्रत, उपवास, तीर्थ, हवन, दान, पुण्य, कथा, कीर्तन सभी का महत्त्व है, पर उनका पूरा लाभ उन्हीं को मिलता है, जिनने मन की स्वच्छता के लिए भी समुचित श्रम किया है। मन मलिन हो, दुष्टता एवं नीचता की दुष्प्रवृत्तियों से मन गंदी कीचड़ की तरह सड़ रहा हो तो भजन-पूजन का भी कितना लाभ मिलने वाला है? अंतरात्मा की निर्मलता अपने आप में एक साधन है, जिसमें कलोल करने के लिए भगवान स्वयं दौड़े आते हैं। थोड़ी साधना से भी उन्हें आत्मदर्शन का,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुक्ति एवं साक्षात्कार का लक्ष्य सहज ही प्राप्त हो जाता है। स्वल्प साधना भी उनके लिए सिद्धि-दायिनी बन जाती है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1962, पृष्ठ-28

संतुष्ट रहने का महामंत्र

मनुष्य अनेक वस्तु चाहता है। अपने से बड़े और सुखी संपन्न स्थिति के लोगों को देखकर यह इच्छा उत्पन्न होती है कि हमारे पास भी इतना ही वैभव और ऐश्वर्य क्यों न हो? इस प्रकार की तृष्णा ही असंतोष का कारण देखी जाती है। हमें चाहिए कि अपने से नीचे गिरे हुए, दुखी और गरीबों से अपनी तुलना करते हुए संतोष की साँस लें कि परमात्मा ने हमें अनेकों से कमजोर भले ही बनाया हो पर असंख्यों से ऊँचा भी रखा है। असंतोष के यदि दस कारण जीवन में होते हैं, तो सौ कारण संतोष के भी होते हैं। जो कुछ संतोष के कारण हमें प्राप्त हैं, उन पर विचार करें और उनसे अपना चित्त प्रसन्न रखने का प्रयत्न करें तो दृष्टिकोण के बदलते ही मन की खिन्नता का प्रत्यावर्तन प्रसन्नता और उल्लास में हो जाता है। हर इच्छा किसी की भी पूरी नहीं हुई। सबको जो कुछ मिला है, उसी पर सबर करके अधिक प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते रहना पड़ता है। यही क्रम शांतिदायक है, इसी को अपनाकर हम संतोष के अधिकारी बन सकते हैं।

महत्त्वाकांक्षा गुणों की होनी चाहिए। हम दूसरों की अपेक्षा अधिक विद्वान, अधिक स्वस्थ, अधिक संयमी, अधिक सेवाभावी, अधिक सभ्य, अधिक सहिष्णु, अधिक धार्मिक बनें, यह प्रतिस्पर्द्धाएँ यदि चलने लगें तो व्यक्ति का पतन नहीं, उत्थान ही होगा। तुच्छ कीट-पतंग की तरह निम्न श्रेणी का जीवनयापन न करके हम नर-रत्नों की श्रेणी में अपना नाम अंकित करें, महापुरुषों जैसे आदर्श उपस्थित करें! जीवन का लक्ष्य पूर्ण करके जीवन मुक्ति का आनंद प्राप्त करें—ऐसी महत्त्वाकांक्षाएँ यदि मन में जाग्रत रहें और उनके लिए हम प्रयत्न करें तो उसका प्रतिफल ऐसा हो सकता है, जिसके आधार पर सभ्य समाज की रचना और युग निर्माण का उद्देश्य पूर्ण हो सके।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1962, पृष्ठ-23, 24

आत्मनिरीक्षण नित्य करें

सांयकाल को चारपाई पर पड़ने से लेकर सोने तक का समय आत्मनिरीक्षण में लगाना चाहिए। आज के दिन हमने क्या-क्या भूलें और बुराइयाँ कीं, इस पर बहुत बारीकी से सोचना चाहिए। भूलें वे हैं जो अपराधों की श्रेणी में नहीं आतीं पर व्यक्ति के विकास में बाधक हैं। चिड़चिड़ापन, ईर्ष्या, आलस, प्रमाद, कटुभाषण, अशिष्टता, निंदा, चुगली, कुसंग, चिंता, परेशानी, व्यसन, वासनात्मक कुविचारों एवं दुर्भावनाओं में जो समय नष्ट होता है, उसे स्पष्टत: समय की बरबादी कहा जाएगा। प्रगति के मार्ग में यह छोटे-छोटे दुर्गुण ही बहुत बड़ी बाधा बनकर प्रस्तुत

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होते हैं, इसलिए सायंकाल को आत्मनिरीक्षण के समय यह विचार करना चाहिए कि आज इस प्रकार की भूलों में हमारा कितना समय बरबाद हुआ? ये भूलें प्रत्यक्षत: अपराध नहीं मानी जातीं तो भी यह अपराधों के समान ही हानिकारक हैं। बुराइयों में नैतिक बुराइयाँ गिनी जाती हैं। झूँठ, हिंसा, नशेबाजी, व्यभिचार, बेईमानी, चोरी, जुआ, ठगी, क्रूरता, गुंडागर्दी, अशिष्टता आदि की मोटी बुराइयाँ तो स्पष्टत: त्याज्य हैं। इनके विचारों का मन में प्रवेश करना भी मानसिक पाप कहा जाता है, उनसे भी बचना चाहिए। आज के दिन जो बुराइयाँ और भूलें बन पड़ी हैं, उनका आत्मा द्वारा मन से उसी प्रकार लेखा-जोखा लिया जाना चाहिए, जिस प्रकार कोई उद्योगपति अपने कारखाने के मैनेजर से रोज के कार्य और हिसाब का लेखा-जोखा लिया करता है। दोषों की कमी होते चलना और गुणों की बढ़ोतरी होना, आत्मिक प्रगति के व्यापार में लाभ होने का चिह्न है। यदि बुराइयाँ बढ़ रही हैं और अच्छाइयाँ घट रहीं हैं तो समझना चाहिए कि फर्म दिवालिया होने जा रही है। पूर्ण निर्दोष कोई नहीं और न कोई पूर्ण गुणवान ही इस दुनिया में है। फिर भी प्रयत्न करते रहा जाए तो हमारी बुराइयाँ और भूलें दिन-दिन घटती और श्रेष्ठताएँ बढ़ती चल सकती हैं। इससे आज का लेखा-जोखा समझने के बाद कल के लिए ऐसी योजना सोचनी चाहिए कि श्रेष्ठता की अभिवृद्धि और क्षुद्रता की कमी होने लगे। रोज-रोज यह कार्यक्रम ठीक तरह बनाया जाता रहे तो आत्मसुधार का कार्य निरंतर गतिवान रह सकता है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1962, पृष्ठ-40, 41

साधना हमारा नित्य कर्म बने

हमारे नित्यकर्म में जिस प्रकार स्नान, भोजन, श्रम-विश्राम आवश्यक हैं, उसी प्रकार गायत्री उपासना के लिए एक छोटा समय भाग नियत रहना चाहिए। सद्बुद्धि से बढ़कर और कोई संपत्ति इस संसार में नहीं। जबकि साधारण मूल्य वाली वस्तुओं के उपार्जन के लिए हम इतना श्रम करते हैं तो क्या हमें इस धरती की सबसे श्रेष्ठ संपदा का उपार्जन करने के लिए कुछ भी समय न लगाने की हठ पर ही अड़ा रहना उचित है? गायत्री के प्रथम स्तर जिसमें जप, अनुष्ठानों, बीजमंत्रों और अमुक विधि-विधानों की आवश्यकता होती है, सर्वसाधारण के लिए सरल हैं। इसमें कोई भूल रहने पर भी हानि की संभावना नहीं रहती। थोड़ा करने या विधि-विधान की पूरी जानकारी न होने पर लाभ भले ही थोड़ा मिले पर हानि या प्रतिकूल फल की तो किसी भी दशा में कोई आशंका नहीं रहती। मानव प्राणी में मानवता की विशेषता को बढ़ाने वाली इस अध्यात्म विज्ञानसम्मत परम श्रेयस्कर प्रकृति को हममें से प्रत्येक को किसी-न-किसी रूप में अपनाना ही चाहिए। दैनिक जीवन का एक आवश्यक धर्म-कर्त्तव्य समझकर उसे अपने नित्य कर्म में उचित स्थान देना ही चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1962, पृष्ठ-12

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कामधेनु और कल्पवृक्ष हमारे अंत:करण में

आनंद का सबसे बड़ा शत्रु है—असंतोष। हम प्रगति के पथ पर उत्साहपूर्वक बढ़ें; परिपूर्ण पुरुषार्थ करें; आशापूर्ण सुंदर भविष्य की रचना के लिए संलग्न रहें पर साथ ही यह भी ध्यान रखें कि असंतोष की आग में जलना छोड़ें। इस दावानल में आनंद ही नहीं मानसिक संतुलन और सामर्थ्य का स्रोत भी समाप्त हो जाता है। असंतोष से प्रगति का पथ प्रशस्त नहीं, अवरुद्ध होता है। जल्दी कामना पूर्ण हो, इस हड़बड़ी में ही चित्त उलझा रहता है। प्रगति-पथ पर व्यवस्थापूर्वक बढ़ चलने के योग्य धैर्य और शांत चित्त द्वारा बन सकने वाली योजना भी उससे कहाँ बन पड़ती है? ऐसा व्यक्ति कोई ठोस सफलता प्राप्त कर सकेगा इसमें संदेह ही बना रहेगा।

आज जो उपलब्ध है, उससे पूरा-पूरा आनंद उठाया जाना चाहिए। अपना शरीर, परिवार, आजीविका आदि के जो साधन उपलब्ध हैं, उनसे चित्त में पूर्ण संतोष और हर्ष अनुभव करना चाहिए। जो मिला है, वह ईश्वर की अपार कृपा का फल है। अकेला मानव जीवन ही संसार के समस्त प्राणियों की तुलना में सबसे बड़ा सौभाग्य है, फिर वह चाहे कितना ही अभावग्रस्त क्यों न हो। अपने अभावों की बात ही सदा नहीं सोचते रहना चाहिए वरन यह भी सोचना चाहिए कि जो मिला हुआ है, वह भी क्या किसी प्रकार कम है? कामधेनु और कल्पवृक्ष हमारे अंत:करण में मौजूद हैं। तृष्णाओं को सीमित करना कल्पवृक्ष है और जो मिला है उस पर आनंद की अनुभूति करना कामधेनु है। स्वर्ग अपने भीतर है। आनंद के अमृत को खोजने कहीं जाना नहीं है। उसका मंगलकलश तो अपने हृदय में ही सुसज्जित रखा हुआ है। हम संतोष की सांस लें तो उसके साथ-साथ आनंद का मलय-मारुत प्रवाहित होगा। संतोषी मनुष्य की मुट्ठी में आनंद भरा रहता है। वह स्वयं तृप्त रहता है और अपनी तृप्ति की सुगंध से समीपवर्ती लोगों को भी तृप्त करता रहता है।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1962, पृष्ठ-44

परिवर्तन का केंद्रबिंदु—दृष्टिकोण

दृष्टिकोण का परिवर्तन ही व्यक्ति परिवर्तन कहा जाता है। बाहरी कामों, व्यवस्थाओं, गतिविधियों को, परिस्थितियों को तो बलपूर्वक भी बदला जा सकता है। भय, दंड या प्रलोभन के वशीभूत होकर लोग वह कार्य करते हैं जो वस्तुत: उन्हें करने नहीं होते। दिखावट, ढोंग, लोक-लाज या दबाव से कितने ही कार्य इस संसार में अनिच्छापूर्वक भी होते रहते हैं, पर उनमें कोई स्थायित्व नहीं होता। सरकारी कानून, सामाजिक प्रतिबंधों या भावुकता को उभारकर, जोश-आवेश में बुराइयों की रोकथाम की जा सकती है किंतु होती वह अस्थायी ही है। बाहरी दबाव जैसे ही कम हुआ, वे दुष्प्रवृत्तियाँ उसी या वैसे ही अन्य किसी रूप में पुन: उभर आती हैं। वास्तविक उन्मूलन तो तभी संभव है, जब अंत:करण बदलें, हृदय-परिवर्तन हो और दृष्टिकोण में सुधार हो। इसी में स्थिरता भी सन्निहित है और वास्तविकता भी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा शुद्ध स्फटिक मणि के समान है। दर्पण के सामने जो भी वस्तु आती है, उसमें वैसी ही छाया दीखने लगती है। स्फटिक मणि के सामने जिस रंग की वस्तुएँ रखी होंगी, वह उसी रंग की दीखने लगेंगी। आज असुरता की परिस्थितियाँ फल-फूल रही हैं, तो मानव का स्वरूप दुष्ट, दुराचारी, अज्ञानी और असुर जैसा दीख रहा है। जैसे ही स्थिति में परिवर्तन होगा परिस्थितियाँ मानवता, नैतिकता, धार्मिकता एवं सज्जनता के अनुकूल बनती जाएँगी। दुष्कर्म का स्थान सत्कर्म ग्रहण करेंगे, दुर्भावनाओं के स्थान पर सद्भावनाओं की स्थिति दिखाई देगी। ऐसी परिस्थितियों में वही मानव प्राणी जो आज असुर दिखाई देता है, मानवता के उच्च आदर्शों से ओत-प्रोत होकर देवत्व की ओर तेजी से बढ़ता हुआ दिखाई देगा।

दृष्टिकोण का परिवर्तन ही सबसे बड़ा परिवर्तन है। अपनी सीमा के संकीर्ण दायरे को बढ़ाकर विशाल क्षेत्र तक विकसित करने का नाम ही विकास है। वासना और तृष्णा की क्षुद्रता की मोह-निद्रा की उपेक्षा करते हुए कर्त्तव्यपालन और परमार्थ की आकांक्षाएँ जाग्रत करना, यही जागरण है। कुविचारों और दुर्भावनाओं के; काम, क्रोध, लोभ, मोह के बंधनों को तोड़ डालना, इसी का नाम मुक्ति है। संतोष, संयम और सचाई, सज्जनता और शांति की संतुलित मनोभूमि बनाए रखना, यही स्वर्ग है। यह अपनी धरती स्वर्ग से श्रेष्ठ है, यह अपना मानव शरीर देवताओं से उत्तम है। यह मनुष्य जन्म ईश्वर का हमें सबसे बड़ा अनुग्रह और वरदान है। इस अलभ्य अवसर का, इस परम सौभाग्य का समुचित सदुपयोग करते हुए वह करना चाहिए जो करने योग्य है, वह सोचना चाहिए जो सोचने योग्य है, वह चाहना चाहिए जो चाहने योग्य है। उस मार्ग पर चलना चाहिए जो चलने योग्य है।

हमें अपनी असुरता को देवत्व में परिणत करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि नारकीय अंतर्द्वंदों और शोक-संतापों से छुटकारा पाकर शांति एवं संतोष का स्वर्गोपम सुख निरंतर उपलब्ध करते रह सकना संभव हो सके। दृष्टिकोण बदलने से जीवन बदल जाता है, संसार बदल जाता है और युग बदल जाता है। असुरता देवत्व में बदल सकती है, नरक को स्वर्ग में परिणत किया जा सकता है यदि हमारा दृष्टिकोण बदले। इस बदलने की विशाल कार्यपद्धति को लेकर आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं नैतिक क्रांति का बिगुल बजाते हुए हम युग निर्माण के लिए अग्रसर होते हैं। आज हम थोड़े लोग इधर बढ़ें तो कल इन्हीं पदचिह्नों पर सारी दुनिया को चलना पड़ेगा।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1962, पृष्ठ-07, 08

आत्मनिर्माण के पाँच कार्यक्रम

यदि हम अपने व्यक्तित्व को श्रेष्ठता के ढाँचे में ढालने के लिए सचमुच ही उत्सुक एवं उद्यत हों तो अपने दैनिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट विचारधाराओं को मस्तिष्क में ठूँसने का एक नियमित विभाग बना ही लेना चाहिए। मन लगे चाहे न लगे, फुरसत मिले चाहे न मिले, इसके लिए बलपूर्वक, हठपूर्वक समय निकालना ही चाहिए। नित्य कितने ही काम अनिच्छापूर्वक भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने पड़ते हैं और समय न रहने पर भी आकस्मिक स्थिति के अनुरूप समय निकालना पड़ता है। विचार-निर्माण को भी ऐसी ही एक अनिवार्य आवश्यकता मानना चाहिए और उसके लिए हठपूर्वक कटिबद्ध हो जाना चाहिए। थोड़े ही समय में यही क्रम बहुत ही रुचिकर लगने लगेगा, संतोष और आनंददायक प्रतीत होगा।

नित्य-नियमित ईश्वर उपासना के बारे में हम सदा से कहते रहे हैं। चरित्र-निर्माण की आधारशिला ही आस्तिकता है। ईश्वर विश्वास छोड़ देने से मनुष्य अंकुशरहित उन्मत्त हाथी की तरह आचरण करता है, अपने लिए तथा दूसरों के लिए विपत्ति का कारण बनता है। इसलिए हममें से हर एक को किसी न किसी रूप में ईश्वर उपासना नित्य ही करनी चाहिए।

प्रत्येक पाठक को व युग निर्माण योजना के प्रत्येक सदस्य को (1) अपने दैनिक जीवन में उपासना को स्थान देना चाहिए। (2) स्वाध्याय के लिए कोई निश्चित समय निर्धारित करना चाहिए। (3) नित्य युग निर्माण का सत्संकल्प पढ़ना चाहिए। (4) सोते समय आत्मनिरीक्षण का कार्यक्रम नियमित रूप से चलाना चाहिए। (5) दिन में समय-समय पर कुविचारों से लड़ते रहने की तैयारी करनी चाहिए। ये पाँच कार्यक्रम आत्मनिर्माण की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक हैं। युग निर्माण अपने आप से ही आरंभ करना है, इसलिए ये पाँच कार्य जितनी जल्दी आरंभ किए जा सकें, उतना ही उत्तम है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1963, पृष्ठ-24, 25

फल में आतुरता न बरतें

हमें जानना चाहिए कि हर वस्तु समयसाध्य है और श्रमसाध्य भी। कोई मार्ग ऐसा नहीं जिसमें रुकावटें और बाधाएँ न हों। उन्हें हटाने के लिए प्रयत्न भी करना पड़ता है और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा भी। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, परिश्रमी और पुरुषार्थी को तो सफलता मिलती ही है और यदि न भी मिले तो उसकी प्रतिभा और क्षमता तो बढ़ती रहती है। प्रयत्नशीलता से, पुरुषार्थ से, अध्यवसाय से व्यक्तित्व निखरता है और उसके आधार पर प्रगति की ऊँची मंजिल पर चढ़ सकना संभव हो जाता है।

धैर्य और दूरदर्शिता हमें अपनानी चाहिए। सफलता और प्रगति के पथ पर बढ़ते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा पूरा ध्यान अपने पुरुषार्थ पर रहे। फल कब मिलेगा? कितना मिलेगा? कैसा मिलेगा? इसका कुछ निश्चय नहीं। ये सब परिस्थितियों पर निर्भर है। छोटे काम में भी बहुत देर लग सकती है और बड़े काम भी संयोगवश जल्दी हो सकते हैं। मनुष्य के हाथ में उसका प्रयत्न ही ईश्वर ने दिया है और फल का विधान अपने हाथ में रखा है। हमें अपना काम करना चाहिए और ईश्वर का काम उसे करना चाहिए। ईश्वर के काम पर हम कब्जा करें और अपना कर्त्तव्य ईश्वर से पालन कराने की इच्छा करें तो यह अनधिकार चेष्टा ही होगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फल की आतुरता प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। धैर्य और साहसपूर्वक अपना कर्त्तव्यपालन करते रहना और उचित मार्ग पर चलते रहना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। जल्दबाजी में लाभ तो कुछ नहीं होता, उलटे सफलता का लक्ष्य दूर हट जाता है। साथ ही ऐसे उलटे काम भी बन पड़ते हैं जो असफलता से भी अधिक कष्टकारक परिणाम उत्पन्न करने वाले सिद्ध होते हैं।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1964, पृष्ठ-22

पात्रता की शर्त पर अनुदान

दैवी अनुग्रह हमारी पात्रता के आधार पर ही उपलब्ध हो सकता है। अतएव उसके लिए बहुत चिंता या बहुत खोज-बीन करने की अपेक्षा, अपनी आंतरिक उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। सत्पात्रों की उचित सहायता एवं मागदर्शन करने के लिए ईश्वरीय नियम अपने आप काम करता रहता है और उसकी पूर्ति अनायास ही होती रहती है। गुरु ढूँढ़ने नहीं पड़ते, अधिकारी को वे अनायास ही मिल जाते हैं। पुष्प खिलते ही बिना निमंत्रण के भौंरे उसके आगे गुंजार करने स्वत: ही जा पहुँचते हैं। जहाँ पर जितना गहरा गड्ढा होता है, वहाँ उतना जल भर जाता है। कम गहरा गड्ढा, बड़े सरोवर की बराबर जल कैसे प्राप्त कर सकेगा? 'बादलों पर कम देने' का दोष भले ही वह लगाया करें, पर वस्तुस्थिति यही है कि गड्ढे के उथलेपन ने ही उसे प्रचुर जलराशि संग्रह करने के लाभ से वंचित रखा। बादलों का सरोवर और गड्ढे में से किसी के साथ पक्षपात नहीं था। उनने समान वर्षा की, पर लाभ उन्हें अपनी पात्रता के अनुरूप ही मिल सका। ईश्वर, देवता या सिद्धपुरुषों से विविध वरदानों की कामना एवं प्रार्थना करने के साथ-साथ हमें अपनी पात्रता भी देखनी चाहिए और उसे बढ़ाने के लिए प्रयत्न भी करना चाहिए।

अध्यात्म की महिमा का पारावार नहीं, उसके द्वारा प्राप्त हो सकने वाले लाभों की गणना नहीं हो सकती। मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट विभूति वही है। अंत:प्रदेश में सन्निहित रहस्यमयी शक्तियों के जागरण से मनुष्य की परिणति देवत्व में हो सकती है, पर उस मार्ग पर चलने वाले को इतना तो ध्यान रखना ही चाहिए कि उपासना विधानों की तरह व्यावहारिक जीवन को उत्कृष्ट एवं परिष्कृत बनाना भी आवश्यक है। इसके बिना कठोर साधना भी निरर्थक सिद्ध होती है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1964, पृष्ठ-48

अंत:करण को पवित्र बनाइए

मैले शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिबिंब नहीं पड़ता। उसी प्रकार जिनका अंत:करण मलिन और अपवित्र है, उनके हृदय में ईश्वरीय प्रकाश का प्रतिबिंब नहीं पड़ सकता। इसलिए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी प्राप्ति के लिए अपने अंत:करण को पवित्र बनाइए। आपको औरों के हितसाधन में भी प्रवृत्त होना है सो विशाल अंत:करण धारण कीजिए। जीवनलक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे स्वच्छ और निर्मल बनाइए। तभी मानव जीवन की सार्थकता है।

अंत:करण की निर्मलता मनुष्य की बाह्य गतिविधियों में सहिष्णु भाव, मुखाकृति में सौम्यता और व्यवहार में उदारमना होने से परिलक्षित होती है। जिनका अंत:करण पवित्र और विशाल होता है, उन्हें कभी मित्रों का अभाव न रहेगा। आप दूसरों से यदि सम्मान और सहयोग पाना चाहते हैं तो इसका एक ही उपाय है कि अपना अंत:करण छलरहित बनाइए। उज्ज्वल व्यक्तित्व की यही परख है कि व्यक्ति का अंत:करण कितना पवित्र है?

धरती पर देवत्व का विकास और दनुजता का विनाश हो, इसके लिए पवित्र अंत:करण के व्यक्तियों की अधिकता होना आवश्यक है। देवत्व के विकास का प्रथम सोपान मानव का निर्मल अंत:करण ही माना गया है। इसके बिना अणु से विभु, लघु से महान बनने की अभिलाषा अधूरी ही बनी रहेगी। अपवित्र अंत:करण बना रहा तो दिव्यदृष्टि का उदय होना असंभव है। आंतरिक निर्मलता एवं पवित्रता में वह शक्ति है, जो अन्य साधनों के अभाव में भी जीवनलक्ष्य की प्राप्ति करा सके।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अंत:करण को अशुद्ध वासनाओं से बचाइए; उसकी पवित्रता पर किसी भय या प्रलोभन का कुठाराघात न होने दीजिए। पापी अंत:करण की यंत्रणा ही वह नरक है जो जीवित व्यक्ति को प्रति क्षण पश्चात्ताप की आग में जलाती रहती है। ऐसा व्यक्ति न तो स्वयं चैन पाता है और न दूसरों को ही शांतिपूर्वक रहने देता है। अशांति का कारण प्रतारणापूर्ण पापी अंत:करण ही हुआ करता है। यदि उसे कुत्सित प्रवचनों से बचाया जा सके तो सर्वत्र ही मंगलदायक परिस्थितियाँ दिखाई देने लग पड़ेंगी।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1964, पृष्ठ-03

मनुष्य शरीर में देवत्व के दर्शन

क्रोध का अधिकांश कारण अपना झूँठा अहंकार होता है। अत: सदैव शिष्ट, उदार, मितभाषी और नम्र बनने का प्रयत्न करना चाहिए। जो स्वयं को सबसे छोटा मानता है, उसे इस दुष्ट महारोग से बिना औषधि छुटकारा मिल जाता है।

इसी प्रकार लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, कलह और कटुता की दुर्भावनाएँ भी मनुष्य को नीचे गिराती हैं। इनकी हर घड़ी अपने मस्तिष्क की प्रयोगशाला में निगरानी बनाए रखना चाहिए। इन्हें असंयत, अमर्यादित छोड़ देंगे तो मानसिक, शारीरिक विग्रह उत्पन्न होते देर न लगेगी। इनकी भयंकरता से जीवन का संपूर्ण उल्लास और आनंद समाप्त हो जाता है।

सात्विकता की अभिवृद्धि होने से आत्मा में असाधारण शांति, संतोष, प्रसन्नता और प्रफुल्लता का आनंद छाया रहता है। सदाचरण से जीवन का प्रत्येक क्षेत्र फलता-फूलता दिखाई देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्कर्म मनुष्य को ऊँचा उठाते हैं। सभी प्रकार के सुखों और सफलताओं की कुंजी यह आत्मनिरीक्षण की प्रवृत्ति, जिसने अपना ली उसका कायाकल्प होते देर न लगेगी। मनुष्य शरीर में भी देवत्व के दर्शन यदि कहीं संभव हो सकते हैं तो वे शीलवान पुरुष में प्रत्यक्ष देखे जा सकते हैं। इसलिए अपना प्रत्येक कार्य सतोगुणी हो, भावनाओं में लोक-कल्याण सन्निहित हो। ऐसा कर सकें तो हमारे शरीर और मन का रोग मुक्त, शांत एवं संतुलित रह सकना संभव हो सकता है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1964, पृष्ठ-20

मन को पवित्र और शांत बनाएँ

मन में शुद्ध भावनाओं को प्रोत्साहन दीजिए। शुभ विचारों के चिंतन में मन को लगाए रहिए, इस पर भी यदि वह उच्छृंखलता बरते तो उस पर ध्यान न दीजिए। आपने जो निश्चय किया है, जो लक्ष्य और कार्यक्रम बनाया है, उसी की धुन निरंतर सुनाते रहें अपने मन को। आप देखेंगे एक दिन आपका मन अपनी समस्त उच्छृंखलता, उद्दंडता, चंचलता छोड़कर आपका दास बन जाएगा।

मन की साधना के लिए उपयुक्त वातावरण, अनुकूल परिस्थितियों का होना भी आवश्यक है। जिस तरह चीनी के भंडार में रखकर सामान्य मनुष्य से चीनी खाने की आदत छुड़ाई नहीं जा सकती, उसी तरह मन की चंचलता को बढ़ाने वाले वातावरण में रहकर उसको साधना प्राय: कठिन ही होता है। इसलिए जहाँ तक बने साधना के अनुकूल शांत, निर्विघ्न परिस्थितियों में रहकर मन को एकाग्र करने की साधना की जाए तो अपेक्षाकृत जल्दी सफलता मिलेगी।

अपने दैनिक जीवनक्रम में भी जहाँ तक बने स्थिरता, धैर्य और शांति के साथ काम करना चाहिए। चंचलता, भाग-दौड़, अस्तव्यस्तता, आवेश और उद्वेग का तो जीवन में किसी भी शर्त पर स्थान नहीं होना चाहिए। इससे मन की शक्ति नष्ट होती है। हम जो भी कुछ करें, वह व्यवस्थित शांत होकर करें।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1965, पृष्ठ-10

इंद्रियाँ शत्रु नहीं, सेवक

इंद्रियों को आत्मा का शत्रु नहीं, सेवक मानना चाहिए। परमात्मा ने इन्हें इसलिए प्रदान किया है कि इनकी सहायता से सृष्टि-संचालन की आवश्यकता पूरी हो और सुख मिले। निस्संदेह इंद्रियाँ बड़ी उपयोगी हैं। इनसे जीवात्मा का उत्कर्ष होता है और आनंद की प्राप्ति होती है। ये आत्मा के हित व कल्याण में बाधक नहीं वरन साधन स्वरूप हैं। इनका सदुपयोग किया जाए तो मनुष्य जीवन का मधुर रस चखता हुआ अपना जीवन-लक्ष्य पूरा कर सकता है।

सच तो यह है कि किसी भी इंद्रिय का उपयोग करना पाप नहीं है। ये अंत:करण की विभिन्न क्षुधाओं, पिपासाओं को तृप्त करने का उत्तम माध्यम हैं। ज्ञानेंद्रियों की क्षुधा उचित रीति

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से तृप्त नहीं की जाती तो आंतरिक क्षेत्र का संपूर्ण संतुलन ही बिगड़ जाता है। मानसिक गड़बड़ी पैदा होती है। बुरा तो इनका अनुचित उपयोग है। अस्वाभाविक इच्छापूर्ति के लिए अनियंत्रित भोग-वासना के कारण आदमी पतित बनता है। अमर्यादित और स्वेच्छाचारी इंद्रियाँ जीवन-लक्ष्य से गिराती हैं। इसलिए इंद्रिय भोगों की सर्वत्र निंदा की गई है। उचित रीति से भोगी गई इंद्रियाँ दु:ख का कारण नहीं होतीं। स्वाभाविक रीति से इंद्रियों का सदुपयोग बुरा नहीं होता। हमारे शत्रु के रूप में तो अनियंत्रित भोग-वासना होती है। इससे ही बचने का सदैव प्रयत्न करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1965, पृष्ठ-14

दूसरों के दोषों की अनदेखी करें

अपने दोष व्यक्त करते हुए आंतरिक निष्कपटता पा लेना जितना जरूरी है, उतना ही दोषान्वेषण की प्रवृत्ति के परित्याग में भी सावधान रहना चाहिए। मन की भरी हुई बुराइयों की सड़ाँद से कुछ कम घातक प्रभाव दोष-दर्शन का नहीं होता। यह ठीक पहली स्थिति जैसी ही खतरनाक बात है। मन को दोषों में रस नहीं लेने देना चाहिए फिर वे चाहे अपने हों चाहे पराये। जो मनुष्य दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को इतना उन दोषों से नहीं बचाता, जितना अपने को बचाता है। दूसरों में दोष नहीं ढूँढ़ते वरन अपने लिए जी की जलन और विक्षोभ ढूँढ़ते हैं, जिसे पाकर मनुष्य का जीवन न संतुष्ट होता है और न सुखी। उसकी वाणी और व्यवहार से सदैव ओछापन ही टपकता है।

गुणों का चिंतन न करें, केवल अवगुणों पर ही दृष्टिपात करें तो अपना प्रत्येक प्रियजन भी अनेक बुराइयों, दोषों में ही ग्रस्त दिखाई देगा। अत: स्नेह, आत्मीयता, सौजन्यता तथा प्रेमपूर्ण व्यवहार में कमी आएगी, जिससे जीवन में सुखों का अभाव हो जाएगा। अपने बच्चों के छोटे-मोटे दोष भूल जाने की पिता की दृष्टि ही सच्ची होती है। माँ यदि बेटों की गलतियाँ ढूँढ़ा करें तो उसे दंड देने से ही फुरसत न मिले। अवगुणों को उपेक्षा की दृष्टि से ही देखना उचित है। पराये दोषों को भुला देना बड़प्पन का ही चिह्न माना जाएगा।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1965, पृष्ठ-22

परमात्मा की सृष्टि सत्-चित्-आनंद स्वरूप

परमात्मा की सृष्टि में सुख ही सुख है। दु:ख का नाम भी नहीं है, पर सारे फसाद की जड़ यह है कि लोग अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना नहीं चाहते। बेटा अपने धनी बाप से बिछुड़ गया है और अपने आप को निर्धन की-सी स्थिति में पड़ा हुआ अनुभव करता है। उसका शरीर, प्राण और मन सब अस्त-व्यस्त हैं क्योंकि वह जानता भी नहीं कि उसका बाप कितना व्यवस्थित, कितना विकसित और कितना विशाल है? अपने अमर स्वरूप को मनुष्य पहचान जाए तो ये विशेषताएँ उसमें भी तत्काल परिलक्षित होने लगें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुधारू गाय की बछिया भी दुधारू होती है। मीठे आम की नस्ल में उत्पन्न किया हुआ आम भी उसी गुण वाला होता है। संतरे के पेड़ में नीबू के फल नहीं लगते। अपने अमरस्वरूप में मनुष्य भी ईश्वरीय गुणों से ओत-प्रोत है, किंतु उसकी यह महानता अज्ञानता के अंधकार में छिपी हुई है। मनुष्य अपने पिता परमात्मा के गुण, ऐश्वर्य और वैभव के अनुरूप अपना जीवनक्रम बनाता तो उसकी शक्तियाँ भी छिपी हुई न रहतीं और वह भी अपने आप को अपने पिता के सदृश ही सत्-चित और आनंद रूप में पाता।

आप अपने आप को रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, मेद आदि से बना हुआ क्षुद्र शरीर मत मानिए। आप आत्मा हैं। इस तथ्य को भलीभाँति समझ लें? आत्मा अपने अमरत्व को पहचानने के लिए ही मनुष्य शरीर में अवतरित हुई है। उसे इस उद्देश्य को पूरा करना ही चाहिए। अमरत्व का आनंद लूटना ही चाहिए। इस उद्देश्य के लिए वह अग्रसर हो तो सचमुच उसका यह अलभ्य अवसर पाना भी सार्थक हो।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1965, पृष्ठ-06

हर घटना को निर्विकार भाव से लें

किसी प्रतिकूलता अथवा अप्रियता के प्रभाव से खिन्न होकर बैठे रहना उससे छूटने का उपाय नहीं है। किसी बीती घटना की याद करना, उसके लिए रोना, कल्पना या चिंता करना ठीक नहीं। भूतकाल की किसी अप्रिय घटना से त्रस्त होकर बैठ जाने और उसके चिंतन में समय खराब करने का अर्थ है, आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए भी अंधकार का प्रबंध कर रहे हैं। जितनी देर आप बैठकर खिन्नता की क्रिया-प्रतिक्रियाओं को सहन करते और पीड़ित होते हैं, उतनी देर यदि प्रसन्नचित्त रहकर काम करें तो जीवन में अनेक सफल कदम आगे बढ़ सकते हैं।

जीवन को सुखी और सफल बनाने का एक ही उपाय है कि आप एक क्षण को भी खिन्नता के वशीभूत न हों। अप्रिय परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी प्रसन्नचित्त रहिए। संसार के प्रति अपना दृष्टिकोण इस प्रकार का बनाइए कि आपको प्रतिकूलताओं में भी सफलता और समुन्नति के पदचिह्न दिखाई दें। अपना मानसिक स्तर इतना ऊँचा उठाइए कि संसार की छोटी-बड़ी कोई भी प्रतिकूलता आप का मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त न कर सके। प्रतिकूलताओं में भी हँसिए, कठिनाइयों में मुस्कराइए और असफलता में सफलता की संभावना देखिए। विरोध को विरोध के रूप में न लेकर उसे प्रेरणा के रूप में स्वीकार कीजिए। कटुता का उत्तर मधुरता में दीजिए। हानि-लाभ, सुख-दुःख, उत्कर्ष-अपकर्ष में तटस्थ रहिए। इनसे उस सीमा तक प्रभावित न होइए कि आपके लिए विषाद, निराशा, निरुत्साह अथवा व्यग्रता का कारण बन जाए। सामने आई हुई दुविधाओं को संसार का सहज घटनाचक्र समझकर निर्विकार भाव से सहन कीजिए और तब देखिए कि बड़े-से-बड़ा कारण आने पर भी आप खिन्न नहीं होंगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खिन्नता हर तरह के शोक-संतापों की जड़ है। इसको आश्रय देते ही संपूर्ण जीवन दु:खों का भंडार बन जाएगा। खिन्नता कायर मन की अभिव्यक्ति है। वीर वह है जो संसार के सारे दु:ख-द्वंद्वों को तटस्थ भाव से सहन करता हुआ सदा प्रसन्न रहता है।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1965, पृष्ठ-28

मृत्यु का भय निरर्थक

जिसे लोग प्राय: मृत्यु का भय कहते हैं, वह वास्तव में भोगों के छूट जाने की चिंता ही होती है। दुनिया छूट जाने का मोह ही होता है, लोग वास्तव में यह सोचकर दुखी होते हैं कि जब हम मर जाएँगे तो हमारी यह पत्नी एवं बच्चे और यह धन-दौलत सब छूट जाएगी और हम एकाकी न जाने कहाँ-कहाँ भटकते रहेंगे। यह सब हमारे प्रियजन तथा धन-संपत्ति हमें फिर कहाँ मिलेगी? अच्छा होता मृत्यु न आती और हम सदा-सर्वदा इनके संपर्क में सुख उठा सकते। इस प्रकार की मोह भावना ही बहुधा मृत्यु का भय बनकर सामने आया करती है। ऐसे व्यक्ति कम ही होते हैं जिन्हें मृत्यु का भय अपनी अज्ञात दशा की चिंता के कारण सताता हो।

निस्संदेह मृत्यु का मोहजन्य भय बड़ी ही निकृष्ट भावना है। यह अकारण ही आत्मा के बंधन कड़े कर दिया करता है। संसार तो सभी को एक दिन छोड़ना पड़ता है। संपत्ति एवं प्रियजन सबके ही छूटते हैं। इस भवितव्यता में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं पड़ सकता। इस अवश्यंभाव्य के प्रति निरर्थक मोह करना सबसे बड़ी मूर्खता है।

जो व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम आदि की प्राप्ति के लिए पुण्यपूर्वक प्रयत्न किया करता है, उसको इनके प्रति निकृष्ट मोह भी नहीं होता है। वह इन सबकी प्राप्ति भोग सुख के लिए नहीं केवल मानव कर्त्तव्य समझकर ही करता है। जिस प्रकार कर्त्तव्य पूरा हो जाने पर मनुष्य को कार्य के प्रति मोह न रहकर, आत्मसंतोष होता है, उसी कर्त्तव्यपूर्वक लौकिक उपलब्धियों को पाकर मनुष्य को केवल कर्त्तव्यपालन का सुख ही रहता है; उनके प्रति मोह नहीं। जिस प्रकार वह उन्हें पुण्य-पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त करता है, उसी प्रकार साहसपूर्वक छोड़ भी देता है।

मोहजन्य अथवा अकृतजन्य मृत्यु का भय निरर्थक, निकृष्ट एवं निम्नवाहक है। मनुष्य को इससे बचे रहने का प्रयत्न करना चाहिए और यदि वह आता ही है तो उसका लाभ उठाकर सत्कर्मों द्वारा मृत्यु से मोर्चा लेने की तैयारी कर लेनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1966, पृष्ठ-15

प्रेम परमात्मा का अनुभूतिमय स्वरूप

प्रेम में प्रदान के सिवाय, आदान का विनिमय नहीं होता। वह विशुद्ध बलिदान, त्याग और आत्मोत्सर्ग की भावना है। सत्य प्रेम का पोषक प्रेमी अपने प्रियजन के हित और सुख के लिए सब कुछ दे डालता है और इस देने की भावना में दान अथवा प्राप्ति का कोई भाव नहीं रखता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी के लिए कुछ त्याग करते समय जब ऐसा अनुभव हो कि हम अपने लिए ही त्याग कर रहे हैं, अपने त्याग से दूसरे को मिलने वाला सुख जब अपनी आत्मा में अनुभव हो, तब समझना चाहिए कि हमारे हृदय में सच्चे प्रेम का शुभारंभ हो गया है। जिस दिन इस शुभ का आरंभ हो जाएगा, संसार के सारे दुःख; शरीर, मन और आत्मा के तीनों ताप नष्ट होने लगेंगे। हर समय एक अनिर्वचनीय आनंद की शीतलता का अनुभव होता रहेगा।

प्रेम ही परमात्मा का अनुभूतिमय स्वरूप है। उसे प्राप्त करना ही मानव जीवन का ध्येय होना चाहिए। इसकी प्राप्ति के लिए सबसे पहली शर्त है—निस्स्वार्थ होना। अपने हृदय का प्रेम अणु-अणु में स्थापित कर उसके लिए निस्स्वार्थ त्याग का अभ्यास करने वाले ठीक उस मार्ग पर चल पड़ते हैं, जो कि उस परम पिता परमात्मा की ओर जाता है। इस प्रेमभावना का विकास, अपने से बढ़ा, आत्मप्रेम की परिधि को परमात्मा तक पहुँचाकर सरलता से किया जा सकता है।

अस्तु, आत्मकल्याण के इस क्रम को स्मरण रखते हुए मनुष्य को अपने जीवन का संचालन करना चाहिए। ज्यों-ज्यों प्रेम की परिधि बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों स्वार्थ घटता जाता है; ज्यों-ज्यों स्वार्थ घटता जाता है, त्यों-त्यों त्याग भावना की वृद्धि होती जाती है और ज्यों-ज्यों त्याग की वृद्धि होती है, त्यों-त्यों आत्मा में आनंद का आगमन होता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि मनुष्य परमानंद स्वरूप परमात्मा को पाकर भव-बंधन से मुक्त हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1968, पृष्ठ-07

आप आनंदमय ईश्वर के अंश हैं

विवेक की बात यह है कि संकट, आपत्ति अथवा दुःख पाने पर प्रसन्न होना चाहिए। इसलिए कि यही वह विधान है, जिसके द्वारा मनुष्य का प्रारब्ध भोग पूरा होता है। उसके पूर्व कर्मों का परिपाक मोक्ष होता है। एक-एक संकट, एक-एक प्रारब्ध को व्यर्थ करता जाता है, जिसके अनुसार भव-बंधन की लंबी शृंखला की एक-एक कड़ी टूटती जाती है। दुःख का संयोग आते ही मनुष्य को उसका उपचार तो करना चाहिए, पर साथ ही यह सोचकर प्रसन्न भी कम नहीं होना चाहिए कि उसके प्रारब्ध भोग की एक किश्त उतर गई। आत्मा का भार, भविष्य का अंधकार कुछ कम हो गया और प्रकाश का लक्ष्य कुछ समीप आ गया है। ऐसे उपकारी संकटों को देखकर रोना-चिल्लाना वैसी ही मूर्खता है, जैसी कि किसी विषाक्त फोड़े का आपरेशन करने के लिए डाक्टर को देखकर भयभीत होने की मूर्खता। दुःख के बाद सुख और संकट के बाद सुविधा, प्रकृति का यह अटल नियम है। इस आधार पर भी तो दुःख देखकर प्रसन्न ही होना चाहिए। दुःख और संकट उस सुख-संपत्ति की पूर्व भूमिका होते हैं, जो निकट भविष्य में मिलनी होती है। बादल और बिजली को देखकर भयभीत होने वाले बाल बौद्धिक लोग कुछ ही देर में होने वाली प्राणदायक और धन-धान्य की विधायक वर्षा को नहीं देख पाते। संकट, सुख और कल्याण के अग्रदूत होते हैं। उनको देखकर भयभीत नहीं होना चाहिए, बल्कि सहर्ष उनका स्वागत करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वास रखिए दुःख का अपना कोई मूल अस्तित्व नहीं होता। इसका अस्तित्व मनुष्य का मानसिक स्तर ही होता है। यदि मानसिक स्तर योग्य और अनुकूल है तो दुःख की अनुभूति या तो होगी ही नहीं और यदि होगी भी तो बहुत क्षीण, तथापि यदि आपको दुःख की अनुभूति सत्य प्रतीत होती है, तब भी उसका अमोघ उपाय यह है कि उसके विरुद्ध अपनी आशा, साहस और उत्साह के प्रदीप को जलाए रखा जाए। अंधकार का तिरोधान और प्रकाश का अस्तित्व बहुत से अकारण भयों को दूर कर देता है।

आशा, विश्वास और परिवर्तन के अटल विधान में आस्था रखने के साथ ही साथ समय रूपी महान चिकित्सक में विश्वास रखिए। समय बड़ा बलवान और उपचारक होता है। वह, धैर्य रखने पर मनुष्य के बड़े-बड़े संकटों को ऐसे टाल देता है, जैसे वह आया ही न था। संकट तथा दुःख देखकर भयभीत होना कापुरुषता है। आप ईश्वर के अंश हैं, आनंदस्वरूप हैं। आपको तो धैर्य, साहस, आशा-विश्वास और पुरुषार्थ के आधार पर संकट और विपत्तियों की अवहेलना करते हुए सिंहपुरुषों की तरह ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1969, पृष्ठ-44, 45

वास्तविक आनंद आत्मा की शरण में

यदि सच्चे सुख और वास्तविक आनंद की आकांक्षा है तो सांसारिक वस्तुओं अथवा विषयों की नहीं, आत्मा की शरण में जाना होगा। उसी की आराधना एवं उपासना से आनंद की यह आकांक्षा पूर्ण होगी। बाहर संसार में कुछ भी नहीं है। जो भी सुख और आनंदस्वरूप है, वह सब अपने अंदर और अपनी आत्मा में ही है। बाह्य संसार में जो भी रसानुभूति होती है, वह सब अपने अंतर की ही छाया मात्र होती है। जिसकी आत्मा जितनी-जितनी स्पष्ट और व्यापक होती जाती है, उसकी छाया भी उतनी ही गहरी और स्थायी होती जाती है। आभास के अनुपात से ही बाहर संसार के पदार्थों में भी उसी अनुपात से सुख-सौंदर्य की अनुभूति होती जाती है।

बाह्य वस्तुओं तथा विषयों से आत्मा को सुखी करने का प्रयास गलत है। सही प्रयास यह है कि आत्मा द्वारा उसके विकास और आभास द्वारा बाह्य संसार की विषय वस्तुओं को सुख एवं सौंदर्य के योग्य बनाना चाहिए, जो कुछ है अपने अंदर ही है। इसलिए अपने अंदर अपनी आत्मा को ही खोजना, समझना, पाना और बनाना चाहिए। आत्मा के जागरण, विकास तथा निस्तार के उपलक्ष्य में ही यह कुरूप तथा क्लेशपूर्ण संसार आनंददायक तथा आकर्षक बन सकता है। शाश्वत सुख और अक्षय आनंद पाने का एक ही उपाय है—आत्मीयता का भाव बढ़ाना। आनंद की उत्पत्ति प्रियता से और प्रियता की उत्पत्ति आत्मीयता से होती है। जिस दिन मनुष्य का आत्मविस्तार संसार के अणु-अणु से आत्मीयता का संबंध बना लेगा, उस दिन उसके लिए यह सारा संसार आनंद और सौंदर्य का निधान बन जाएगा और उसके लिए उसी प्रकार इस अनुभूति की कमी न रहेगी जैसे हमारे ऋषि-मुनियों के लिए नहीं रहती थी।

—अखण्ड ज्योति जून 1970, पृष्ठ-12

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य का आश्रय लेना चाहिए

''हमारा सो सही, आपका सो गलत'' आज सही गलत की यही मात्र परख है। अपनी जाति, भाषा, देश, वंश, परिवार, संप्रदाय, रहन-सहन, रीति-रिवाज एवं विचारपद्धति का जो अनावश्यक पक्षपात है, उसे हटाया जाना चाहिए। निष्पक्ष विश्व के निष्पक्ष नागरिक की तरह एक न्यायनिष्ठ जज की तरह हमें हर प्रचलित रीति-नीतियों और विचारणाओं पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। न तो प्राचीन के प्रति मोह रहे और न नवीन के प्रति द्वेष। प्राचीन हो या नवीन इससे यथार्थता में कोई अंतर नहीं आता। किसी सड़ी-गली मृतप्राय वस्तु को इसलिए सँजोकर नहीं रखा जा सकता कि वह पुरानी है।

जिस प्रकार दूसरे लोगों के बारे में 'गलत राह अपनाने वाला' सोचा जा सकता है, उसी प्रकार बहुत संभव है कि विवेक की कसौटी पर अपनी मान्यताएँ अथवा गतिविधियाँ जब परखी जाएँ तो वे असत्य निकलें। ऐसी दशा में हमें इतनी निष्पक्षता तो अपने भीतर उत्पन्न कर ही लेनी चाहिए कि जो सत्य होगा उसे ही स्वीकार करेंगे। अपने और पराये का, प्राचीन और नवीन का कोई भेदभाव एवं पक्षपात पैदा न होने देंगे। इतना आधार यदि तैयार हो जाए तो ही आशा की जा सकती है कि सत्य का अवतरण संभव हो सकेगा। अन्यथा हर व्यक्ति अपनी मान्यताओं और रीति-नीतियों को सही मानकर दूसरों के प्रति घृणा, तिरस्कार, द्वेष और दुर्भावों की धारणा बनाए बैठा रहेगा। इससे अशांति ही बढ़ेगी।

हमें सत्य की शोध करनी चाहिए, सत्य का आश्रय लेना चाहिए, सत्य पर आरूढ़ होना चाहिए और सत्य के ही समीपवर्ती वातावरण में प्रतिष्ठापना करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। ध्यान यह भी रखा जाए कि हमारा सत्य तथ्य पर आधारित है। केवल पूर्व मान्यताओं तथा परंपराओं के आधार पर ही किसी बात को सत्य न मान बैठें।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1971, पृष्ठ-38

हम आत्मज्ञानी बनने की साधना करें

आत्मबोध, आत्मनिर्माण और आत्मविकास की त्रिविध आत्मोत्कर्ष प्रक्रिया अपनाने के लिए जो साधना करनी पड़ती है, उसका क्रम अहर्निश चलता है। जागने से लेकर सोने तक का प्रत्येक क्षण इस प्रयास में लगाना पड़ता है कि चिंतन में उत्कृष्टता का और कर्तृत्व में आदर्शवादिता का परिपूर्ण समावेश रहे। अपनी कोई भावतरंग उच्च गौरव से गिरी, पिछड़ी न रहे। अपनी कोई हलचल ऐसी न हो जो ईश्वर के पुत्र की गरिमा के माथे पर कलंक-कालिमा लगाए। उचित-अनुचित का, श्रेय और प्रेय का निरंतर अंतर करते रहने वाली तथा सन्मार्ग पर अग्रसर करने वाली ऋतंभरा प्रज्ञा को जिन्होंने सर्वोपरि प्रतिष्ठा प्रदान की है; वस्तुतः वे ही आत्मज्ञानी हैं। आत्मोत्कर्ष उन्हीं का हो सकता है, जिन्होंने अपने सोचने और करने की समस्त हलचलों में उच्चस्तरीय

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तत्त्वदर्शन का समावेश कर सकने में सफलता प्राप्त की है। इस महान प्रयास में पूजा-उपासना भी एक अंग है। भोजन में नमक-शक्कर का जितना स्थान है, उतना ही मूल्य जप-भजन का भी है। क्षुधा तो आहार से पूरी होती है, आत्मकल्याण तो जीवन साधना की तत्परता पर निर्भर रहता है।

हमें आत्मकल्याण की राह ढूँढ़नी चाहिए। आत्मबल संपादित करना चाहिए और आत्मप्राप्ति के अजस्र आनंद का लाभ लेकर मानव जीवन को धन्य बनाना चाहिए।

इस प्रकार का आत्मवादी चिंतन यदि अंत:करण में स्थान प्राप्त कर सके तो समझना चाहिए कि ज्ञान चेतना सार्थक हो गई। यदि कर्तृत्व में दिव्य क्रिया-कलाप का समावेश हो सके तो समझना चाहिए कि सुर-दुर्लभ मानव काया का ईश्वरीय अनुदान सार्थक हो गया। असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर, यदि हम चल सके तो ही जीवन की महान उपलब्धि को धन्य माना जा सकेगा।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1972, पृष्ठ-59

संघर्ष ही जीवन है

दूसरों से उदार व्यवहार की आशा करना व्यर्थ है। यह संसार बहुत चतुर है। सहायता उनकी करता है, जिनसे प्रतिफल की आशा होती है। निस्स्वार्थ करुणा भी अभी जीवित तो है, पर वह कभी-कभी बरसात की बिजली की तरह ही चमकती है और एक बार थोड़ी चमक दिखाकर गायब हो जाती है। घर का अँधेरा दूर करने के लिए बिजली की चमक उत्पन्न होने की प्रतीक्षा में आकाश की ओर ताकते रहना व्यर्थ है, हमें घर में ही आग जलाने के साधन जुटाने चाहिए। प्रयोजन उन्हीं से सिद्ध होगा। दूसरे लोग कृपा करके हमारी सहायता करें और संकट से उबारें, यह सोचना व्यर्थ है। यहाँ अच्छी जमीन में ही किसान अपना बीज बोता है। अच्छे नंबर लाने वाले विद्यार्थी ही छात्रवृत्ति पाते हैं। ऊसर जमीन में कृपापूर्वक बीज कौन बोता है? अनुत्तीर्ण होते रहने वाले छात्र को उसकी निर्धनता पर द्रवित होकर छात्रवृत्ति कौन देता है? अशक्त रहकर तो हम देर तक दूसरों की थोथी सहानुभूति तक नहीं पा सकते।

हमें अपने भीतर तलाश करना चाहिए। वहाँ अगणित विशेषताओं के बीज मौजूद हैं। उन्हीं को ढूँढ़ने, बढ़ाने और उपयोग में लाने के लिए तत्पर हो जाएँ तो भूतकाल के दुर्भाग्य को भविष्य के सौभाग्य में आसानी के साथ बदला जा सकता है। यह संभव तभी होगा जब संघर्षशील मनोवृत्ति को विकासोन्मुख किया जाए। योगाभ्यासी, तपस्वी, साधनारत व्यक्ति अपने आपे से लड़ने की, अपनी आंतरिक अशक्तता से जूझने की दिशा में ही तो अग्रसर होते हैं।

जिसने जो कुछ पाया है, वह अपनी ही प्रबल सक्रियता का परिणाम रहा है। जो अवांछनीय है, अपर्याप्त है, अनुपयुक्त है, उससे हमें साहसिक शूरवीरता के साथ लड़ने के लिए तत्पर होना चाहिए। इस संघर्ष से ही हम अभीष्ट मनोरथों की पूर्ति कर सकेंगे। इस अप्रिय किंतु अनादि तथ्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को हमें गाँठ बाँधकर चलना चाहिए कि संघर्ष का नाम ही जीवन है। जीवितों की तरह जीवित रहने के लिए संघर्षरत होने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1974, पृष्ठ-27

अपनी आंतरिक स्थिति को ऊँचा उठाएँ

सफल, प्रगतिशील, विकासोन्मुख और सम्मानित जीवनयापन करना जिन्हें अभीष्ट हो, उन्हें इसके लिए अंतरंग में छिपे हुए सामर्थ्य बीजों को अंकुरित करने का प्रयत्न करना चाहिए। वे आमतौर से उपेक्षित पड़े रहते हैं, लोग बाह्य साधनों में सफलताओं की संभावना एवं कामनाओं की पूर्ति के आधार ढूँढ़ते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि वे आधार बाहर नहीं भीतर हैं। जिनसे व्यक्तित्व को विकसित करना संभव होता है और सफलताओं के रुके हुए द्वार खुलते हैं।

बाहरी साधनों की, व्यक्तियों के सहयोग की, परिस्थितियों की अनुकूलता की आवश्यकता रहेगी ही और सफलता के लिए उन्हें जुटाने की बाह्य क्षेत्र में भी चेष्टा करनी पड़ेगी, पर इतने से ही काम चलने वाला नहीं है। इस सबके साथ मूल आधार पर भी ध्यान देना होगा, वह है अपना परिष्कृत व्यक्तित्व। भौतिक सफलताओं की दृष्टि से परिष्कृत व्यक्तित्व की परिभाषा, प्रखर मनस्विता और प्रयत्नों की समस्वरता के रूप में ही की जा सकती है। हमारी मन:स्थिति न तो उथली होनी चाहिए और न असंतुलित। इसी प्रकार हमारी चेष्टाएँ न तो आलस्य-प्रमाद से घिरी हुई हों और न उनमें अदूरदर्शिता एवं अव्यवस्था का ही समावेश हो। आंतरिक स्थिति को सही बनाने का प्रथम चरण पूर्ण होते ही, बाह्य परिस्थितियों में आशाजनक अनुकूलता उत्पन्न होती है और प्रगति का पथ अनवरत रूप से प्रशस्त होता चला जाता है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1975, पृष्ठ-31

दैव अनुग्रह चाहते हैं, पात्रता बढ़ाएँ

कार्यपद्धति का सही निर्धारण करने के लिए दूरदर्शिता एवं प्रत्युत्पन्नमति की आवश्यकता होती है। जहाँ पहुँचना है, उसका सही मार्ग पहले से ही ज्ञात होना चाहिए, अन्यथा अस्त-व्यस्त दिशा में घुड़दौड़ लगाने से भी काम न चलेगा। हर काम अपने लिए उपयुक्त समय माँगता है और साधन चाहता है। उसके लिए आवश्यक धैर्य रखा जाना चाहिए। उतावले मनुष्य तुरत-फुरत सफलता चाहते हैं और घुड़ सवारों की तरह देखते-देखते मंजिल पूरी करना चाहते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि अपने स्वल्प साधनों में देर लगनी स्वाभाविक है। साधन संपन्न लोग जिस काम को एक वर्ष में करते हैं, उसमें साधनहीन व्यक्तियों को दो वर्ष लगने ही चाहिए। ऐसा धैर्य जिनमें नहीं, उनके अत्युत्साह को निराशा में बदलते देर नहीं लगती। हथेली पर सरसों जमाने के लिए अधीर मनुष्य प्राय: हिम्मत हारकर बैठ जाते हैं और अति निकट सफलता से मुँह मोड़कर, दुर्भाग्य का रोना रोते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता के लिए दूसरों का सहयोग आवश्यक है और उसे पाने के लिए हमें हर दृष्टि से प्रामाणिक बनना चाहिए। अनुकूल परिस्थितियाँ सत्पात्रों के लिए सुरक्षित हैं। इसलिए हमें अपनी पात्रता बढ़ानी चाहिए। अनायास ही दैव अनुग्रह से लाभदायक परिस्थितियाँ मिल जाएँ और बिना आवश्यक मूल्य चुकाए अभीष्ट मनोरथ सरलतापूर्वक पूरे हो जाएँ, ऐसा सोचना उपहासास्पद ही माना जाएगा।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1975, पृष्ठ-28

कर्म का प्रतिफल अकाट्य है

अनादिकाल से सृष्टि कर्म की धुरी में घूमती चली आ रही है। विश्व में कर्म को ही प्रधानता दी गई है, जो जैसा कार्य करता है, उसी के अनुरूप उसे फल भी भोगना पड़ता है। संसार एक कर्मभूमि है। यहाँ आकर मनुष्य जैसा बोता है, उसे वैसा ही काटना पड़ता है।

अंत:करणरूपी खेत में विचार बीज स्वरूप होते हैं। यही विचार अंकुरित होकर कर्मरूपी फसल का रूप धारण करते हैं। व्यक्ति जिस तरह के विचारों को मन में आश्रय देता है, वे ही पुष्पित तथा पल्लवित होते रहते हैं। इस संसार में जो भी सुख-दु:ख की परिस्थितियाँ हमें दृष्टिगत होती हैं, वह कुछ और नहीं हमारे ही बुरे या अच्छे विचारों का परिणाम होती हैं।

यदि कोई किसान अपने खेत में धान बोये और गेहूँ की फसल काटना चाहे तो यह उसी प्रकार असंभव है जैसे व्यक्ति बुरे कर्म करके भगवान से यह आशा लगाए कि उसका जीवन सुखी एवं समृद्ध बने।

जीवन को श्रेष्ठ एवं समुन्नत बनाने के लिए यहाँ आवश्यक है कि हम नित्यप्रति के जीवन में उच्च विचारों की दिव्य ज्योति से अंत:करण को आलोकित करते रहें। मनुष्य महानता से उत्पन्न हुआ है, उसका लक्ष्य महान होना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को कर्मरूपी गांडीव लेकर अपने मन में नित्यप्रति उत्पन्न होने वाले विकारों से युद्ध करना चाहिए और अपने को शुद्ध एवं सात्विक बनाते चलना चाहिए। शुभ कर्म तथा विचार वह सीढ़ी है, जिसका सहारा लेकर चढ़ने से मनुष्य उच्च, आदर्शवादी एवं महान बन सकता है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1975, पृष्ठ-01

जीवन देवता की साधना से अभीष्ट सिद्धि

ब्रह्मविद्या का सबसे महत्त्वपूर्ण निर्देश यह है कि अपने आप को जानो, अपने को समझो और अपने को सुधारो। **''आत्मा वारे श्रोतव्य, ज्ञातव्य, निदिध्यासितव्य:''** की उक्ति में यही उद्‌बोधन भरा पड़ा है। गीता कहती है—''अपना उद्धार आप करो'' अपने आप को गिराओ मत। **'उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत'** की सूक्ति में यही ब्रह्म वाक्य गूँजता है। मित्रों को ढूँढ़ने और शत्रुओं को भगाने के लिए अन्यत्र कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, वे अपने ही भीतर डेरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डाले बैठे हैं—"**आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः**।" का गीता कथन अक्षरशः सत्य है। अपने पौरुष पुरुषार्थ से, अपनी विवेकशीलता और दूरदर्शिता से ही प्रगति के द्वार खुलते हैं। अपनी ही अकर्मण्यता, अदूरदर्शिता और अनास्था ही हमें ले डूबती है। अपने उत्थान-परिष्कार की तथा पतन-पराभव की कुंजियाँ अपने ही हाथों में हैं, दोनों में से चाहें जिसका द्वार स्वेच्छापूर्वक खोला जा सकता है। यह तथ्य समझ में आ सके तो प्रतीत होगा कि अपना आपा ही कल्पवृक्ष है, जिसकी जिस कामना से उपासना की जाए, उसी के अनुरूप वरदान मिलते चले जाएँगे। अन्य किसी देवता की उपासना भले ही निष्फल चली जाए, पर जीवन देवता की आत्मनिर्माण साधना निश्चित रूप से अभीष्ट सिद्धि देकर ही रहती है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1976, पृष्ठ-11

आनंदित जीवन के सूत्र

जीवन का आनंद लेने के लिए कुछ थोड़े से ही सूत्र हैं। उन्हें जान लेने मात्र से काम नहीं चल सकता। वे अपना चमत्कार तभी दिखाते हैं, जब व्यवहार में उतारा जाए और गुण-कर्म-स्वभाव का अंग बना लिया जाए।

हम कर्मयोगी बनें। कर्त्तव्यपालन को प्रधानता दें। शरीर को भगवान की अमानत समझें और श्रम एवं संयम के सहारे उसे प्रखर बनाए रहें। अच्छे से अच्छे की आशा करें और बुरे से बुरे के लिए तैयार रहें। अपनी प्रसन्नता कर्त्तव्यपालन के केंद्र से जुड़ी रखें। मालिक किसी के न बनें। माली की तरह अपने संपर्क-क्षेत्र के हर पदार्थ, प्राणी और संबंधी को परिष्कृत करने भर का दृष्टिकोण रखें। उपयोग की आतुरता का खतरा समझें। साधनों का श्रेष्ठतम उपयोग क्या हो सकता है, इसका विचार और प्रयास करते रहें। ऐसा कुछ न करें जिस पर पीछे पश्चात्ताप करना पड़े। आत्मा धिक्कारे और बाहर से तिरस्कार बरसे। लोभ का आकर्षण, संबंधियों का आग्रह तथा जोखिम का भय इन तीनों का सामना करने का साहस जुटा सकने वाला ही सच्चा शूरवीर है। कर्मयोगी उच्चकोटि के योद्धा होते हैं। जीवन संग्राम में अवांछनीयता के शत्रुओं से पग-पग पर जूझना पड़ता है। ईमानदारी, तत्परता और तन्मयता के साथ जब कर्म किया जाता है और उसकी उत्कृष्टता एवं समग्रता को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया जाता है, तो ऐसे ही सत्कर्म ईश्वर की श्रेष्ठतम उपासना एवं जीवन साधना के अति महत्त्वपूर्ण अंग बन जाते हैं। जीवन की सार्थकता का प्रथम सूत्र यह कर्मयोग ही है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1977, पृष्ठ-6, 07

ईश्वर और औचित्य समान समझें

उदात्त परंपरा यह है कि समर्थ लोग अपनी सामर्थ्य का न्यूनतम लाभ अपने लिए रखें और शेष को उन्हें दे दें जिन्हें अपने पैरों खड़े होने के लिए सहायता अपेक्षित है। अपनी सुविधाओं में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कटौती करना यह साध्य है, उत्पादन क्षमता बढ़ाते जाना प्रतिभा का चिह्न है। इसमें संस्कृति का समन्वय होने पर सुविधाओं में कटौती करके बचाया हुआ अंश पतन के पराभव को दूर करने के लिए लगाना पड़ता है। पिछड़े लोग इस लाभ के बदले कृतज्ञता अनुभव करते हैं और जो सहयोग मिला उसका श्रेष्ठतम सुदुपयोग करते हैं। इस प्रकार पारस्परिक सद्भावों के आदान-प्रदान में समर्थ और असमर्थ दोनों ही पक्ष लाभान्वित होते हैं। विग्रह से उत्पन्न ध्वंस को समझा जाना चाहिए और बरबादी के लिए नष्ट की जाने वाली शक्ति का मिल-जुलकर उभयपक्षीय प्रगति के प्रयत्नों में जुट जाना चाहिए। शांति का वातावरण इसी प्रकार बनेगा। सद्भावजन्य सहयोग का भवन इसी आधार पर खड़ा होगा। लड़कर नहीं, हम मिलकर ही भलाई का लाभ ले सकते हैं।

हममें से प्रत्येक को ईमानदारी से अपनी कमियों पर विचार करना चाहिए और उन्हें दूर करने के लिए संकल्पबल का परिचय देना चाहिए। हम सत्य और असत्य के बीच का अंतर करना सीखें। सन्मार्ग पर चलने के सत्परिणामों और कुमार्ग के दुष्परिणामों के संबंध में अपनी दृष्टि साफ रखें। अनीति अपनाकर सुखी बन सकने की संभावना अधिकांश लोगों के मस्तिष्क पर छाई रहती है। नीति का मार्ग अपनाए रहने पर समयानुसार सत्परिणाम मिलते हैं, उस विश्वास को तत्काल लाभ की आतुरता अकसर डगमगाती रहती है। ऐसी दूरदर्शिता का विकास होना चाहिए जो औचित्य और ईश्वर को समान मानकर चल सके और दोनों के प्रति अटूट श्रद्धा बनाए रह सके।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1978, पृष्ठ-25

साधना का फल निश्चित मिलेगा

संसार के सफलतम और प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों की उपलब्धियाँ एक जीवन की देन नहीं है, वरन उसके पीछे, पिछले कई जन्मों की साधना शक्ति पूँजी के रूप में जुड़ी हुई है। उसी पूँजी से सफलता के वर्तमान शिखर छुए जा सके हैं। इसलिए वर्तमान जीवन में किए गए प्रयासों की असफलता के बारे में सोच-सोचकर निराश होने का कोई कारण नहीं है कि किए जा रहे प्रयत्न व्यर्थ जा रहे हैं। किसान बीज बोता है तो बोते समय तो यही लगता है कि बीज व्यर्थ मिट्टी में जा रहे हैं, पर जब वे फसल के रूप में उग आते हैं तो प्रतीत होता है कि बोये गए बीज व्यर्थ नहीं गए वरन उनका निश्चित परिणाम प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार प्रगति और उत्कर्ष की दिशा में किए गए कोई भी प्रयास व्यर्थ नहीं जाते। उनके परिणाम निश्चित रूप से मिलते हैं। यह बात अलग है कि उनका परिणाम आज अभी या इसी जन्म में नहीं मिलता लेकिन मिलता अवश्य है। इसी तथ्य को गीताकार ने स्पष्ट करते हुए कहा है, **''नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।''** अर्थात जिसका प्रारंभ कर दिया जाता है उसका कभी नाश नहीं होता और न ही परिणाम में कोई उलट-फेर होता है। इसलिए परिणाम न होता दिखाई देने पर भी प्रयत्नों को शिथिल नहीं करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह मानकर अनवरत यत्नशील रहना चाहिए कि साधना का फल निश्चित रूप से मिलेगा। आज न मिल पाए तो कल मिलेगा, पर मिलेगा वह निश्चित ही।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1980, पृष्ठ-13

जीवन साधना सभी के लिए अनिवार्य

जन्म-जन्मांतरों की संग्रहीत पशु-प्रवृत्तियाँ बड़ी हठीली होती हैं। समझाने-बुझाने पर भी किसी न किसी बहाने अपना ढर्रा अपनाए रहने के लिए रास्ता बना लेती हैं। इनसे निपटना, अनगढ़ को सुगढ़ बनाना इतना महत्त्वपूर्ण कार्य है कि उसके कष्टसाध्य होते हुए भी करने के लिए दूरदर्शिता को भरसक प्रयत्न करना पड़ता है। वह कदम ऐसा है जो हर प्रगतिशील को अनिवार्यत: उठाना ही चाहिए।

लौकिक जीवन में सफल सम्मानित रहने के लिए ही नहीं व्यक्तित्व को वजनदार, बहुमूल्य बनाने के लिए जीवन साधना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। यों अनगढ़ लोग भी अपनी कुसंस्कारिता बनाए रहकर, अनैतिक तरीकों से कुछ न कुछ कमा ही लेते हैं किंतु स्मरणीय यह है कि वे बड़े आदमी कहलाने पर भी आत्मसंतोष, लोकसम्मान एवं दैवी अनुग्रह की तीनों ही विभूतियों से वंचित रहते हैं। अनीति उपार्जन एवं उद्धत उपभोग उनके लिए आत्मप्रताड़ना और आधि-व्याधि से लेकर, भर्त्सना और ईश्वरीय दंडों तक से आएदिन पीड़ित ही होते रहते हैं। इस प्रकार दूसरों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करने वाला होते हुए भी वह वैभव अंतत: बहुत महँगा पड़ता है और सिकंदर, रावण, हिरण्यकशिपु आदि की तरह उस पर पश्चात्ताप ही करना पड़ता है।

जीवन देवता की, गौरवशाली व्यक्तित्व की साधना करने से मनुष्य को इसी हाड़-मांस की काया में रहते हुए देव-स्तर का बन सकने का सुयोग मिलता है। परीक्षा में अच्छे नंबर लाने के अतिरिक्त प्रामाणिकता सिद्ध करना और तद्नुरूप पद पाना कठिन है। महामानवों, सिद्धपुरुषों, ऋषियों, देवदूतों की बिरादरी का हर सदस्य उसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपरांत गौरव भरी विशिष्टता उपलब्ध करता रहा है।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1981, पृष्ठ-07

महामानवों का अनुसरण करें

जीवन की महत्ता पर दूरदर्शी विवेकशीलता के साथ विचार करना चाहिए। प्रमाद की सड़न एकत्र न होने देकर ऐसे उत्कर्ष का विनियोग करना चाहिए, जिससे स्वयं उबरें और अपने सहचरों या अनुगामियों को नवजीवन का संदेश प्रदान करें। श्रेष्ठता के चयन में ही मानव का कल्याण है।

अनुकरण नर-पशु की तरह जीने वाले मृतकों का नहीं करना चाहिए। उनकी नियति तो बरबादी है। हमें महानता के अनुसरण की बात सोचनी चाहिए ताकि भीतर से महानता और बाहर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से सुसंपन्न प्रगतिशीलता उभरे। जीवन का महत्त्व न समझा जा सके तो उसे अर्द्धमृतकों, अर्द्ध-मूर्च्छितों की तरह अपंग जैसी भारभूत स्थिति में बिताना पड़ेगा। पेट और प्रजनन के अतिरिक्त और कुछ सूझ न पड़ेगा। तृष्णा और वासना के अतिरिक्त और कहीं रस न मिलेगा। उद्दंडता उभरी तो अन्यान्यों का विनाश करते हुए अपना भी मरण आमंत्रित करना पड़ेगा।

अपने जीवन का महत्त्व समझें। उसे भटकावों में न बिताएँ, गर्त में न गिराएँ और निर्जीवों की तरह अपने को दुर्गंध भरी सड़न के रूप में परिणत न करें। इसकी पूरी-पूरी गुंजाइश है कि महामानवों का ही अनुसरण किया जाए। उनके ही पदचिह्नों पर चला जाए और वह कर गुजरा जाए जिससे अपनी गणना मनस्वी, यशस्वी वर्ग में हो सके और विनाश के वातावरण का आमूल-चूल परिवर्तन हो सके।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1986, पृष्ठ-08

सुखों का सूर्य दुःखों के बादलों के पीछे छिपा है

विषम परिस्थितियाँ मनुष्य के लिए वरदान रूप ही होती हैं। इन वरदानों का लाभ वही उठा सकता है जिसमें इनको सँभालने की शक्ति हो। पुरुषार्थी और साहसी व्यक्ति ही इनको फलीभूत करके अनेक विभूतियाँ पाता है। जबकि आलसी, कायर, अकर्मण्य इनकी चपेट में आकर जीवन के सुखों से हाथ धो बैठता है। विषमताओं का मूल्य गहरा है। इन पर विजय पाने वाला ही इनसे बहुत कुछ पाता है और हार बैठने वाले को हाथ का भी गँवाना पड़ता है।

कष्ट के समय को जो लोग विवेक, धैर्य, पुरुषार्थ की कसौटी समझकर परीक्षा देते हैं, वे जीवन के वास्तविक सुख-शांति से लाभान्वित होते हैं। सही माइने में सुखों का सूर्य दुःखों के बादलों के पीछे छिपा रहता है। जो बादलों की गर्जन-तर्जन से भय किए बिना इन्हें पार करता है, उसी को इसकी प्राप्ति होती है।

इसके अलावा दुःख, कष्ट का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इनके आने पर परमात्मा का सच्चे हृदय से स्मरण हो पाता है। इसी कारण पांडवों की माता कुंती ने भगवान श्रीकृष्ण से दुःखों का वरदान माँगा था। कष्टों की तीव्रता व्यक्ति में ईश्वर की अनुभूति पैदा कर उसके पास पहुँचा देती है।

कठिनाइयों को जो दुःख देने वाला मानकर पलायन करता है, उसे वे दुःख रूप में ही पीछे लग जाती हैं। जो साहसी, बुद्धिमान इन्हें सुखमूलक मान इनका स्वागत करता है, उसे देवदूतों की तरह वरदान देने वाली होती हैं।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1989, पृष्ठ-08

समय, परमात्मा का बहुमूल्य उपहार

समय का मूल्य अमूल्य है। उसके समुचित सदुपयोग की शिक्षा ग्रहण करें तो इस मनुष्य जीवन में स्वर्ग का-सा सुखोपभोग प्राप्त किया जा सकता है। आवश्यक है कि अपने समय को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उचित प्रकार से दिनभर के कामों में बाँट लें जिससे जीवन के सब काम सुचारु रूप से होते चले जाएँ। हमें इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि समय ही जीवन है। यदि हमें अपने जीवन से प्रेम है तो अपने समय का सदुपयोग भी करना चाहिए।

हम अपना समय आलस्य और निरर्थक कार्यों में खरच न करें। आलस्य दुनिया की सबसे भयंकर बीमारी है। आलस्य समस्त रोगों की जड़ है। उसे साक्षात मृत्यु कहें तो इसमें अत्युक्ति न होगी। अन्य बीमारियों से तो शरीर को छुटकारा भी मिल जाता है किंतु आलस्य एक प्रकार का जंग है जो सारे मनुष्य जीवन को ही खा डालता है। आलस्य में पड़कर मनुष्य की क्रियाशक्ति कुंठित होने लगती है, जिससे न केवल शरीर शिथिल पड़ता है वरन आर्थिक आय के साधन भी शिथिल पड़ जाते हैं।

हमारी जीवन व्यवस्था के लिए समय का बहुमूल्य उपहार परमात्मा ने दिया है। इसका एक-एक दिन, एक-एक मोती के समान कीमतदार है जो इन्हें बटोरकर रखता है, सदुपयोग करता है वह यहाँ सुख प्राप्त करता है। गँवाने वाले व्यक्ति के लिए समय ही मृत्यु है। समय के दुरुपयोग से जीवनीशक्ति का दुरुपयोग होता है और मनुष्य जल्दी ही काल के गाल में समा जाता है। इसलिए हमें चाहिए कि समय का उपयोग सदैव सुंदर कार्यों में करें और इस स्वर्गतुल्य संसार में सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जिएँ।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1965, पृष्ठ-34

विचारों पर नियंत्रण आवश्यक

विचार ही हैं जो न केवल मनुष्य के जीवन पर छाए रहते हैं, वरन वे पीढ़ी दर पीढ़ी भी चलते हैं। मस्तिष्क जो सोचता है, उसका परिणाम हमें ही नहीं भुगतना पड़ता वरन उसका दूरगामी प्रभाव संतान और परिवार पर भी जाता है। हम जानें चाहे न जानें, वस्तुत: अपना और अपने परिवार का भला-बुरा भविष्य बनाने का बहुत कुछ उत्तरदायित्व उन विचारों पर ही है जो मस्तिष्क पर ही अपना कब्जा जमाए रहते हैं।

अनियंत्रित विचार मन में नहीं ही आने चाहिए। चिंतन के क्षेत्र में ऊल-जलूल उछल-कूद नहीं चलनी चाहिए। यह वह चौराहा नहीं है, जहाँ से हर किसी को गुजरने दिया जाए। यह महत्त्वपूर्ण मर्म स्थान हैं जहाँ पहुँचने के लिए पर्याप्त प्रतिबंध रहने चाहिए। धन रखने की तिजोरी, बिजली का स्विच, कारतूसों का बक्स हर किसी को खिलवाड़ करने के लिए नहीं छोड़े जा सकते। उन्हें स्पर्श करने के लिए अधिकारी को ही स्वीकृति मिलती है।

महत्त्व के स्थानों पर पहरे की व्यवस्था की जाती है। मस्तिष्क पर कड़ा पहरा रहना चाहिए कि कोई अवांछनीय कुविचार उसमें प्रवेश नहीं करने पाए। खाली हो या व्यस्त हर हालत में सृजनशीलता, व्यवस्था, वास्तविकता एवं उपयोगिता की दृष्टि से खरे उतरने वाले चिंतन को ही मान्यता देनी चाहिए। जब भी बेतुके, विघटनकारी और पतनोन्मुख विचार मस्तिष्क पर आक्रमण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करें, उन्हें निरस्त करने के लिए ऐसी बहादुरी का परिचय देना चाहिए जैसा कि चोर, डाकू और आक्रमणकारी आततायियों से निपटा जाता है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1973, पृष्ठ-44

जीवन देवता को कैसे साधें ?

आइए, जरा समझदारी अपनाएँ और समझदारों की तरह सोचना आरंभ करें। मनुष्य जीवन, स्रष्टा की बहुमूल्य धरोहर है, जो स्वयं को सुसंस्कृत और दूसरों को समुन्नत करने के दो प्रयोजनों के लिए सौंपा गया है। इसके लिए अपनी योजना अलग बनानी और अपनी दुनिया अलग बसानी पड़ेगी। मकड़ी अपने लिए अपना जाल स्वयं बुनती है। उसे कभी-कभी बंधन समझती है तो रोती-कलपती भी है। किंतु जब भी वस्तुस्थिति की अनुभूति होती है तो समूचा मकड़-जाल समेटकर उसे गोली बना लेती और पेट में निगल लेती है। अनुभव करती है कि सारे बंधन कट गए और जिस स्थिति में अनेक व्यथा-वेदनाएँ सहनी पड़ रही थीं, वह सदा-सर्वदा के लिए समाप्त हो गईं।

ठीक इसी से मिलता-जुलता दूसरा तथ्य यह है कि हर मनुष्य अपने लिए अपने स्तर की दुनिया अपने हाथों आप रचता है। उसी घोंसले में वह अपनी जिंदगी बिताता है। उसमें किसी दूसरे का कोई हस्तक्षेप नहीं है। दुनिया की अड़चनें और सुविधाएँ तो धूप-छाँव की तरह आती-जाती रहती हैं। उनकी उपेक्षा करते हुए कोई भी राहगीर, अपने अभीष्ट पथ पर निरंतर चलता रह सकता है। किसी के भी वश में इतनी हिम्मत नहीं, जो लड़ने वालों के पैर में बेड़ी डाल सके। भले या बुरे स्तर के आश्चर्यजनक काम कर गुजरने वालों में से प्रत्येक की कथा-गाथा इसी प्रकार की है, जिसमें प्रतिकूल परिस्थितियों का झीना परदा उनने हटाया और वही कर गुजरे, जो उन्हें अभीष्ट था।

शास्त्रकारों और आप्तजनों ने इस तथ्य का पग-पग पर प्रतिपादन किया है। वेदांत विज्ञान के चार महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं—**'तत्त्वमसि'**, **'अयमात्मा ब्रह्म'**, **'प्रज्ञानं ब्रह्म'**, **'सोऽहम्'**। इन चारों का एक ही अर्थ है कि परिष्कृत जीवात्मा ही परब्रह्म है। हीरा और कुछ नहीं, कोयले का ही परिष्कृत स्वरूप है। भाप से उड़ाया हुआ पानी ही वह स्रवित जल (डिस्टिल्ड वाटर) है, जिसकी शुद्धता पर विश्वास करते हुए उसे इंजेक्शन जैसे जोखिम भरे कार्य में प्रयुक्त किया जाता है। मनुष्य और कुछ नहीं, मात्र भटका हुआ देवता है। यदि वह अपने ऊपर चढ़े मल-आवरण और विक्षेप को, कषाय-कल्मषों को उतार फेंके, तो उसका मनोमुग्धकारी अतुलित सौंदर्य देखते ही बनता है। गांधी और अष्टावक्र की दृश्यमान कुरूपता उनकी आकर्षकता, प्रतिभा, प्रामाणिकता और प्रभाव गरिमा में राई-रत्ती भी अंतर न डाल सकी। जब मनुष्य के अंत:करण का सौंदर्य खुलता है, तो बाहरी सौंदर्य की कमी का कोई महत्त्व नहीं रह जाता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गीताकार ने इस तथ्य की अनेक स्थानों पर पुष्टि की है। वे कहते हैं—"मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु है और स्वयं अपना मित्र है, मन ही बंधन और मोक्ष का एक मात्र कारण है।" "अपने आप को ऊँचा उठाओ, उसे गिराओ मत।" इन अभिवचनों में अलंकार जैसा कुछ नहीं है। प्रतिपादन में आदि से अंत तक सत्य ही सत्य भरा पड़ा है। एक आप्तपुरुष का कथन है—"मनुष्य की एक मुट्ठी में स्वर्ग और दूसरी में नरक है। वह अपने लिए इन दोनों में से किसी को भी खोल सकने में पूर्णतया स्वतंत्र है।"

यदि कस्तूरी वाले मृग की तरह निरर्थक न भटकना हो, तो अपना ही अंत:करण टटोलना चाहिए। उसी परदे के पीछे बैठे परमात्मा को जी भरकर देखने की, हृदय खोलकर मिलने-लिपटने की अभिलाषा सहज ही पूरी कर लेनी चाहिए। भावुकता भड़काने या काल्पनिक उड़ानें उड़ने से बात कुछ बनती नहीं। ईश्वर जड़ नहीं चेतन है। इसे प्रतिमाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता। चेतना वस्तुत: चेतना के साथ ही, दूध-पानी की तरह घुल-मिल सकती है। मानवी अंत:करण ही ईश्वर का सबसे निकटवर्ती और सुनिश्चित स्थान हो सकता है।

मंदिर बनाने के लिए अतिशय व्याकुल किसी भक्त जन ने किसी सूफी संत से मंदिर की रूपरेखा बना देने के लिए अनुरोध किया। उनने अत्यंत गंभीरता से कहा—इमारत अपनी इच्छानुरूप कारीगरों की सलाह से बजट के अनुरूप बना लो, पर एक बात मेरी मानों, उसमें प्रतिमा के स्थान पर एक विशालकाय दर्पण ही प्रतिष्ठित करना, ताकि उसमें अपनी छवि देखकर दर्शकों को इस वास्तविकता का बोध हो सके कि या तो ईश्वर का निवास उसके लिए विशेष रूप से बने इसी काय-कलेवर के भीतर विद्यमान है अथवा फिर यह समझें कि आत्मसत्ता को यदि परिष्कृत किया जाए, तो वही परमात्मसत्ता में विकसित हो सकती है। इतना ही नहीं वह परिष्कृत आत्मसत्ता, पात्रता के अनुरूप दिव्य वरदानों की अनवरत वर्षा भी करती रह सकती है। भक्त को कुछ का कुछ सुझाने वाली सस्ती भावुकता से छुटकारा मिला। उसने एक बड़ा हाल बनाकर सचमुच ही ऐसे स्थान पर एक बड़ा दर्पण प्रतिष्ठित कर दिया, जिसे देखकर दर्शक अपने भीतर के भगवान को देखने और उसे निखारने, उभारने का प्रयत्न करते रह सकें।

मन:शास्त्र के विज्ञानी कहते हैं कि मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही करता है एवं वैसा ही बन जाता है। किए हुए भले-बुरे कर्म ही संकट एवं सौभाग्य बनकर सामने आते हैं। उसी आधार पर रोने-हँसने का संयोग आ धमकता है। इसलिए परिस्थितियों की अनुकूलता और बाहरी सहायता प्राप्त करने की फिराक में फिरने की अपेक्षा, यह हजार दरजे अच्छा है कि भावना, मान्यता, आकांक्षा, विचारणा और गतिविधियों को परिष्कृत किया जाए। नया साहस जुटाकर, नया कार्यक्रम बनाकर प्रयत्नरत हुआ जाए और अपने बोये हुए को काटने के सुनिश्चित तथ्य पर विश्वास किया जाए। बिना भटकाव का, यही एक सुनिश्चित मार्ग है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव जीवन का परम पुरुषार्थ, सर्वोच्च स्तर का सौभाग्य एक ही है कि वह अपनी निकृष्ट मानसिकता से त्राण पाए। भ्रष्ट-चिंतन और दुष्ट-आचरण वाले स्वभाव, अभ्यास को और अधिक ग्रहण करते रहने से स्पष्ट इनकार कर दे। भूल समझ में आने पर उलटे पैरों लौट पड़ने में भी कोई बुराई नहीं हैं। गिनती गिनना भूल जाने पर, दुबारा नए सिरे से गिनना आरंभ करने में किसी समझदार को संकोच नहीं करना चाहिए। जीवन सच्चे अर्थों में धरती पर रहने वाला देवता है। नर-कीटक, नर-पशु, नर-पिशाच जैसी स्थिति तो उसने अपनी मनमरजी से स्वीकार की है। यदि वह कायाकल्प जैसे परिवर्तन की बात सोच सके, तो उसे नर-नारायण, महामानव बनने में भी देर न लगेगी। आखिर वह है तो ऋषियों, तपस्वियों और मनीषियों का वंशधर ही।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1990, पृष्ठ-17-18

साधना के तीन अनिवार्य सोपान

प्रत्येक साधक के लिए तीन कार्य आवश्यक हैं—

(1) आत्मबल प्राप्त करने के लिए नित्य कुछ पूजा उपासना करना।

अपने संप्रदाय या पूजा में अपनी पूर्व निर्धारित मान्यता के अनुसार चलने में हर सदस्य स्वतंत्र है, पर गायत्री उपासना को भी उसमें सम्मिलित रखना आवश्यक है। क्योंकि एक तो ऋषियों ने इस गायत्री को आवश्यक नित्यकर्म माना है, दूसरे इस महामंत्र में सन्निहित शिक्षाओं के आधार पर ही सांस्कृतिक पुनरुत्थान का सारा कार्यक्रम चलाना है। (1) सद्ज्ञान की निरंतर अभिवृद्धि (2) त्यागमय प्रेम से परिपूर्ण व्यवहार, इन दो कार्यक्रमों के प्रतीक ही गायत्री (सद्ज्ञान) और यज्ञ (त्यागमय प्रेम) हैं। इन दोनों प्रतीकों को हमारी नित्य उपासना में स्थान रहना है। चाहे 24 गायत्री मंत्र जपने और 5 मिनट सुगंधित धूपबत्ती या घृत दीप जलाने जितनी छोटी-सी ही उपासना क्यों न हो, पर गायत्री एवं यज्ञ की परंपरा को दैनिक जीवन में प्रत्येक सदस्य को स्थान देना आवश्यक है।

(2) मनोबल प्राप्त करने के लिए अपने विचारों और कार्यों को अधिक श्रेष्ठ बनाने के लिए नित्य प्रयत्न करना।

जन्म-जन्मांतरों से संचित कुसंस्कार नित्य ही टांग पकड़कर पीछे घसीटते हैं और आत्मोत्थान के मार्ग में बाधा पहुँचाते हैं। इनसे प्रतिदिन डरने या निराश होने की नहीं, वरन् जीवन भर इनके विरुद्ध युद्ध करते रहने का व्रत लेने की आवश्यकता है। प्रातः उठते समय पिछले दिन की त्रुटियों को आज न करने के आधार पर आज का कार्यक्रम बनाना और रात को सोते समय दिनभर के कार्यों की अच्छाई-बुराई का लेखा-जोखा लेना। इस क्रम से दिन-दिन अपने गुण, कर्म, स्वभाव, ज्ञान, स्वास्थ्य, मैत्री आदि में अभिवृद्धि करते चलना। यह प्रगति मंद हो तो भी निराश न होकर उठने और बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(3) धर्मबल प्राप्त करने के लिए सांस्कृतिक सेवा के लिए कुछ त्याग करना।

दूसरों को सुसंस्कृत बनाने के लिए अपने निकटवर्ती क्षेत्र में सांस्कृतिक विचारधारा का निरंतर प्रचार करते रहना। अपने पास अच्छे साहित्य का संग्रह बढ़ाते चलना और उसे पढ़ने के लिए दूसरों को उत्साहित करना, अवसर मिलने पर उन्हें समझाने का प्रयत्न करना। छोटे-बड़े सांस्कृतिक आयोजनों के द्वारा लोगों को एकत्रित करके उनमें सद्भावना के बीज बोना, अन्य प्रकार से दूसरों की सेवा करके अपने प्रेम एवं उपकार द्वारा उन्हें सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रस्तुत करना, सांस्कृतिक व्यापक आंदोलन के केंद्रीय कार्यक्रम मजबूत बनाने के लिए सहयोग देना आदि अनेकों मार्ग इसके हो सकते हैं।

हर व्यक्ति की योग्यता, परिस्थिति, शक्ति एवं सामर्थ्य भिन्न होती है। सबके लिए एक समान कार्यक्रम नहीं बन सकते हैं। उपरोक्त तीन कार्यक्रमों को कौन व्यक्ति किस प्रकार चरितार्थ करे, यह उसे स्वयं ही सोचना पड़ेगा और बदलने वाली परिस्थितियों के अनुसार उनमें हेर-फेर भी करते रहना होगा।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1956, पृष्ठ-32, 33

मनुष्य को प्राप्त चिंतन का कल्पवृक्ष

एक मनुष्य किसी गाँव को जा रहा था। धूप-प्यास का मारा, थका हुआ एक पेड़ के नीचे ठंडी छाया में विश्राम करने लेट गया। कल्पना करने लगा—काश! यहाँ पीने के लिए पानी होता। सोचते ही पानी का झरना फूट पड़ा। उसने पानी पीकर प्यास बुझाई। फिर सोचा कि कुछ खाने को होता। स्वादिष्ट पकवानों से भरा थाल सामने आ गया। भोजन के बाद उसने सोचा काश! सोने के लिए पलंग होता। तुरंत पलंग आ गया। इन सब घटनाओं से डर कर उसने सोचा कि यहाँ कोई मायावी राक्षस तो नहीं हैं। इतने में राक्षस सामने आ खड़ा हुआ। उसने विचार किया कि यह मुझे खा न जाए। वह राक्षस उस यात्री को खा गया। वास्तव में वह वृक्ष कल्पवृक्ष था, जो मन की इच्छानुसार फल देता था। मनुष्य का चिंतन और मनोबल एक प्रकार से कल्पवृक्ष ही है। उसका सदुपयोग करने वाला, सकारात्मक चिंतन करने वाला व्यक्ति अपने जीवनलक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-3

बाल निर्माण

बच्चों को जीवन विकास की शिक्षा मिले

हम क्या पढ़ें एवं बच्चों को क्या पढ़ाएँ? इस प्रश्न का सीधा-सा उत्तर शास्त्रकार इस प्रकार देते हैं कि जिस ज्ञान के आधार पर दुखदायी बंधनों से छुटकारा प्राप्त किया जा सके, वही विद्या है, उसे ही पढ़ो। रोग, शोक, द्वेष, पाप, दीनता, दासता, गरीबी, बेकारी, अभाव, अज्ञान, दुर्गुण, कुसंस्कार आदि के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करने की योग्यता, शक्ति जिस उपाय द्वारा मिले वही विद्या है, उसे ही सीखना और सिखाना उचित है।

आज की शिक्षा उपरोक्त कसौटी पर कसे जाने के उपरांत बिलकुल निकम्मी सिद्ध होती है। जीवन का एक तिहाई भाग स्कूल कॉलेजों के कैदखाने में व्यतीत करने के बाद हमारे बालक जब बाहर आते हैं तो वे उपरोक्त बंधनों से छूटना तो दूर, उलटे जब स्कूल में प्रवेश हुए थे, उसकी अपेक्षा और भी अधिक जकड़े हुए निकलते हैं। शील, स्वास्थ्य, संयम, विवेक, विनय, श्रद्धा, उत्साह, वीरत्व, सेवा, सहयोग आदि विद्या द्वारा प्राप्त होने वाले स्वाभाविक फल जब उनमें दृष्टिगोचर नहीं होते तो फिर किस प्रकार कहा जा सकता है कि उन्होंने विद्या प्राप्त की है या वे विद्वान हो गए हैं।

अंधानुकरण करके अपने बालकों के ऊपर इस निरर्थक एवं हानिकर शिक्षा का भार लादकर, उनको स्वस्थ और जीवन विकास से रोकना उचित नहीं। इतनी खरचीली, इतनी श्रमसाध्य शिक्षा जब विद्या से प्राप्त होने वाले सुफल को उपस्थित नहीं करती, वरन उलटे परिणाम उत्पन्न करती है तो उसे अविद्या या कुशिक्षा ही कह सकते हैं। इस कुशिक्षा में बालकों के जीवन के विकासोन्मुखी प्रमुख भाग बरबाद कर दिए जाने पर भविष्य में वे कोई महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकेंगे। इसकी संभावना बहुत कम रह जाती है। किशोरावस्था का पुष्प, तोतारटंत में रात-रात भर जागकर जब मसल डाला जाए तो फिर उस पर उत्तम फल लगने की क्या आशा की जा सकती है?

उच्च शिक्षा के नाम पर प्रचलित वर्तमान अनुपयोगी शिक्षा से हमारा कुछ भी भला नहीं हो सकता। अब हमें ऐसी शिक्षा का निर्माण करना होगा जो क्लर्क, बाबू ढालने की फैक्टरी न रहकर शिक्षार्थी के जीवन विकास में सर्वतोमुखी सहायता प्रदान करे। उस शिक्षा में अनावश्यक पुस्तकों का गर्दभ भार न रहकर, अनुभवी क्रियाकुशल आचार्यों द्वारा जीवनोपयोगी व्यावहारिक शिक्षा देने की व्यवस्था होगी। वही शिक्षा हमारे बालकों को सफल योद्धा, व्यापारी, नेता, सेवक, शिल्पी,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वैज्ञानिक आदि बना सकेगी। उस धार्मिक आधार पर खड़े हुए शिक्षणतंत्र से ही मनुष्यों के बीच सच्चे प्रेम और सद्भाव की स्थापना होगी और सुख-शांतिमय लोक-परलोक का निर्माण होगा।

—अखण्ड ज्योति मई 1946, पृष्ठ-9, 10

बच्चों को भी महत्त्व दें

बहुत से माँ-बाप बच्चों के लिए नियमित व्यवस्थित जीवन बिताने के लिए बड़े ही सख्त और रूखे नियम बना देते हैं, किंतु इससे अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं होते। बहुत से बच्चे उन नियमों के अनुसार चलेंगे नहीं या जो थोड़ा-बहुत नियम पालन करेंगे उनकी मौलिकता, आत्मविश्वास की शक्ति कुंद हो जाएगी। अत: बच्चों पर नियम लादे नहीं जाने चाहिए वरन स्वयं उन्हीं की राय को महत्त्व, प्रोत्साहन देकर बच्चों के खाने-पीने, सोने, पढ़ने, खेलने आदि का समय निश्चित कर देना चाहिए। यदि किन्हीं नियमों के कारण बच्चों को किसी तरह की कठिनाई हो तो उन्हें सरल भी बना देना चाहिए। बच्चों को नियमानुवर्ती बनाने से पूर्व स्वयं माँ-बाप को भी नियमित और बँधा हुआ जीवन बिताना आवश्यक है। जो माँ-बाप स्वयं अनियमित जीवन बिताकर बच्चों को नियमानुवर्ती बनाना चाहते हैं, वे भूल करते हैं। यदि बच्चे अभ्यासवश नियम-पालन में कोई गड़बड़ी अथवा भूल करें तो उन्हें एकदम धमकाना नहीं चाहिए। बहुत बार एकसी भूल करने पर कह देना चाहिए।

केवल नियम आदि बनाकर बच्चों पर कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी डालने से काम नहीं चलता। समय-समय पर बच्चों के साथ विचार-विमर्श करना, उनकी बात पूछना, उनके कार्यक्रम, जीवनक्रम आदि के बारे में दिलचस्पी प्रकट करना, अपनी सूझ-बूझ से बच्चों को नवीन तथ्यों का ज्ञान देना भी आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1963, पृष्ठ-46

बाल निर्माण का शुभारंभ आत्मनिर्माण से

बच्चों में सद्गुणों, उत्कृष्ट आदतों की प्रतिष्ठापना के लिए स्वयं अभिभावकों को अपने आप में ही उनकी प्रतिष्ठापना करना आवश्यक है। अपना सुधार किए बिना बच्चों को सुधारने का प्रयत्न विडंबना मात्र है। स्वयं बीड़ी पीते हुए बच्चों को धूम्रपान न करने का उपेदश देना क्या भूल नहीं है ? बच्चों से जिन गुणों की आशा की जाए, उन्हीं से संबंधित वातावरण आस-पास होना चाहिए। सच बोलना सिखाने के लिए घर का वातावरण भी सचाई से भरा हुआ होना चाहिए। दवा पिलाने, अस्पताल में फोड़ा चिरवाने अथवा इंजेक्शन लगवाने के लिए बच्चों को बहाना करके या झूँठ बोलकर ले जाना, बच्चों को धोखा देना, उनमें वैसी ही आदतें पैदा करना है। बच्चे फिर उन्हीं बातों का अवलंबन लेते हैं। उन्हें फिर माँ-बाप की आदर्श भरी बातों में भी संदेह होने लगता है और उन्हें झूँठा मानने लगते हैं।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1963, पृष्ठ-47

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चों के विकास में अभिभावकों का योगदान

शिक्षा के विषय में केवल शिक्षालयों तथा शिक्षकों पर ही निर्भर न रहना चाहिए। स्वयं भी देखना चाहिए कि उनका बच्चा पढ़ाई-लिखाई में क्या प्रगति कर रहा है? कमजोर बच्चों के अभिभावकों को स्वयं पढ़ाई में कुछ-न-कुछ सहायता करनी चाहिए! साल बचाने के लिए एक कक्षा से दूसरी कक्षा में पहुँचाने के लिए व्यर्थ प्रयत्न न करना चाहिए! शिक्षा को योग्यता के मापदंड से नापना चाहिए, न कि कक्षा की श्रेणी से। आशय यह कि बच्चों के लिए शिक्षा की ऐसी अवस्थाओं और व्यवस्थाओं का प्रबंध करना चाहिए, जिससे कि वे दिनोंदिन योग्य बन सकें।

मानसिक विकास के लिए उन्हें अधिक से अधिक प्रसन्न एवं विशुद्ध वातावरण में रखने का प्रयत्न करना चाहिए। उन पर इतना नियंत्रण नहीं करना चाहिए कि वे मुरदा-मन हो जाएँ और न इतनी छूट देना चाहिए कि वे उच्छृंखल हो जाएँ। इन्हें भय से मुक्त करने के लिए साहस की कथाएँ सुनाई जानी चाहिए और उदाहरण देने चाहिए। उन्हें किसी बात से सावधान तो करना चाहिए, किंतु भयभीत नहीं। धीरे-धीरे कठिन कामों का अभ्यस्त बनाना चाहिए। काम बिगड़ जाने पर उनका उपहास न करके उनके सुधार की शिक्षा देनी चाहिए और समुचित सराहना से प्रोत्साहित करना चाहिए। उनके सामने क्रोध, लोभ, स्वार्थ अथवा असद् भावनाओं की परिस्थितियाँ न आने देना चाहिए। उन्हें अच्छी बातों के लिए प्रोत्साहित और बुरी बातों के लिए हतोत्साहित करना चाहिए। उनके सामने कभी भी ऐसी बातें न की जानी चाहिए जिससे उनके मन पर कोई बुरा प्रभाव पड़े! अभिभावकों को अपने व्यसनों की तुष्टि उनकी नजर बचाकर करना चाहिए क्योंकि ऐसा न करने से वे भी व्यसनी बन सकते हैं और तब उन पर समझाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा!

—अखण्ड ज्योति जून 1965, पृष्ठ-36

हमारे बच्चे वीर बाँकुरे बनें

बच्चों को ऐसी रचनाएँ सुनानी और याद करानी चाहिए जिनसे उनकी भावनाओं में दृढ़ता, वीरता और आदर्श जाग्रत होता हो। बुद्धिमान स्त्रियाँ बच्चों को लोरियाँ गाकर सुलाती हैं। उन लोरियों में भय नहीं, प्रेम, श्रद्धा और वीरता की बातें होती हैं। भूत आदि की अंधविश्वासमयी बातों से बालक का मन कमजोर नहीं करतीं। इसीलिए ऐसे लोग वीर होते हैं। बालक के मन को भय, आतंक और विकारजन्य संस्कारों से बचाना नितांत आवश्यक है।

बच्चों को स्वस्थ रखने की सामान्य जानकारी प्रत्येक अभिभावक को होनी चाहिए। आहार-विहार, खेल-कूद के नियमोपनियम तथा सुव्यवस्था की जानकारी खुद न हो तो अपने मित्रों और पड़ोसियों से सीख लेनी चाहिए।

यदि किसी बच्चे का वजन प्रति मास बढ़ता रहता है, श्वास-प्रश्वास नियमपूर्वक चलते हैं, सोते समय उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता और खूब गहरी नींद आती है, दिन में उसे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाखाना एक या दो बार साफ आता है, तो समझना चाहिए कि बच्चा स्वस्थ है और उसे कोई शारीरिक बीमारी नहीं है। अस्वस्थ होने पर बच्चे मुरझाए रहते हैं, खेलते नहीं और उनका वजन भी नहीं बढ़ता। ऐसा कोई कारण जान पड़े तो उसका तुरंत उपचार करना चाहिए।

घर की बैठक के कमरे में शिवाजी, राणाप्रताप, गुरु गोविंदसिंह, रणजीतसिंह, सुभाष आदि वीर पुरुषों के चित्र रहने चाहिए। अवकाश होने पर बच्चों को उनसे संबंधित ऐतिहासिक संस्मरण भी सुनाने चाहिए।

माताएँ और कुछ न करें तो भी केवल अपने संकल्प से बच्चों में वीरतापूर्ण, शौर्य और साहसपूर्ण भावनाओं का जागरण कर सकती हैं। बच्चे को दूध पिलाते समय ऐसी भावना की जाती रहे कि मेरे स्तनों से यह जो मधुर दूध बच्चे के शरीर में पहुँच रहा है, उससे उसका शरीर, मन और आत्मा सभी बलिष्ठ हो रहे हैं, मेरा बच्चा कर्ण, अर्जुन, अभिमन्यु, राम, भरत, गोरा, बादल, फतेहसिंह, जोरावर सिंह आदि की तरह ही वीर बाँकुरा और बलशाली बनेगा। वह धर्मनिष्ठ होगा, पर दुष्टता एवं अनैतिकता से जूझने में भी पीठ न दिखाएगा। हमारे बच्चे वीर बाँकुरे बनें यह हमारा उत्तरदायित्व है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1966, पृष्ठ-36

बालकों के निर्माण में अभिभावकों का दायित्व

बच्चों का सबसे पहला और प्रमुख विद्यालय होता है घर। घर के वातावरण में मिली हुई शिक्षा ही बालक के संपूर्ण जीवन में विशेषतया काम आती है। मानव जीवन की दो तिहाई शिक्षा माँ-बाप की छत्रछाया में घर के वातावरण में संपन्न होती है। घर में विपरीत वातावरण होने पर स्कूल-कॉलेजों में चाहे कितनी अच्छी शिक्षा दी जाए, वह प्रभावशाली सिद्ध नहीं होती।

जिन घरों में तनातनी, लड़ाई-झगड़े, कलह, अशांति रहती है, वहाँ बच्चों पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। जो माँ-बाप बच्चों के श्रद्धा, स्नेह के केंद्र होते हैं, उन्हें बच्चे जब परस्पर लड़ते-झगड़ते, तू-तू, मैं-मैं करते, एकदूसरे को बुरा कहते देखते हैं तो बच्चों के कोमल हृदय पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। उन बच्चों में माँ-बाप के प्रति तुच्छता, अनादर, संकीर्णता के भाव पैदा हो जाते हैं जो आगे चलकर उनके स्वभाव और व्यक्तित्व के अंग बन जाते हैं। अत: कभी भूलकर भी बच्चों के सामने माता-पिता को अपनी तकरार, लड़ाई-झगड़े की बात प्रकट नहीं होने देनी चाहिए। लड़ाई-झगड़े, क्लेश, अशांति से बच्चों के कोमल मानस पर आघात पहुँचता है।

कई माँ-बाप अपने बच्चों को गलत आदतें, तोड़-फोड़, सामान को बिखेरने, नुकसान करने आदि पर लाड़-प्यार वश कोई ध्यान नहीं देते, वरन स्वयं उन्हें फिर से जुटा देते हैं। कोई चीज नष्ट हो जाने पर फिर उसे खरीदकर ला देते हैं। इस अनावश्यक उदारता और स्नेह-ममता का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूषित प्रभाव बच्चों में कई बुराईयाँ पैदा कर देता है। जो चीज बच्चे ने तोड़ी है उसका अभाव कुछ दिन बना रहने देना चाहिए ताकि वह अपनी भूल से उत्पन्न कठिनाई पर विचार कर सके।

बच्चों को किसी बात से रोकने अथवा उन्हें डराने, धमकाने या कुतूहल पैदा करने के लिए भूत, चुड़ैल, हौवा आदि का डर दिखाना उनकी क्षमता, साहस, शक्ति को कुंठित करना है। साथ ही भय की प्रबल भावना पैदा करना है जो जीवन भर उनका साथ नहीं छोड़ती और यही भय की भावना उन्हें जीवन के किसी भी महत्त्वपूर्ण काम में हाथ नहीं डालने देती। इसका कारण बाह्य वातावरण नहीं अपितु बच्चों में घर की पैदा हुई भय की भावना ही होती है।

उदारता, प्रेम, आत्मीयता, बंधुत्व आदि की अनुकूल-प्रतिकूल भावनाओं का अंकुर बच्चों के प्रारंभिक जीवन में ही लग जाता है। जिन बच्चों को माँ-बाप का पर्याप्त प्यार, दुलार मिलता है, जिन पर अभिभावकों की छत्रछाया बनी रहती है, जो माँ-बाप बच्चों के जीवन में दिलचस्पी प्रकट करते हैं, उनके बच्चे मानसिक विकास प्राप्त करते हैं। उनका जीवन भी उन्हीं गुणों से ओत-प्रोत हो जाता है जिनमें वे पलते हैं। माता-पिता के व्यवहार, आचरण से ही बच्चों का जीवन बनता है। साहस, निर्भीकता, आत्मगौरव की भावना बचपन में घर के वातावरण से ही पनपती है।

माँ-बापों के व्यसन, आदतों का अनुकरण बच्चे सबसे पहले करते हैं। माँ-बाप का सिनेमा देखना, ताश खेलना, बीड़ी, सिगरेट, फैशन, बनाव, शृंगार का अनुकरण कर बच्चे भी वैसा ही करने लगते हैं। इसी तरह जो माँ-बाप सदाचारी, संयमी, विचारशील, सद्गुणी होते हैं वैसा ही प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ता है।

परिवार के वातावरण में बच्चों के संस्कार, भाव, विचार, आदर्श, गुण, आदतों का निर्माण होता है जो उनके समस्त जीवन को प्रभावित करते हैं। उपदेश या पुस्तकों से जीवन की महत्त्वपूर्ण शिक्षा नहीं मिलती, यह तो घरों के वातावरण को स्वर्गीय, सुंदर, उत्कृष्ट बनाने पर ही निर्भर करती है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1963, पृष्ठ-36-37

बच्चों को उत्तरदायित्व सौंपें

बच्चों को व्यवहारकुशल बनाने के लिए उनमें उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना बहुत आवश्यक है। जिन बच्चों में उत्तरदायित्व का भाव जाग जाता है, वे हर काम बड़ी होशियारी से करते हैं। हर समय इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनसे कोई काम बिगड़ न जाए। उन पर कोई उँगली न उठा सके अथवा किसी समय वे उपहासास्पद न बन जाएँ।

व्यवहारकुशलता का सीधा-सा अर्थ है—कोई ऐसी बात या कोई ऐसा काम न करना जिनसे किसी को कोई तकलीफ पहुँचे अथवा वे आलोचना या उपहास के पात्र बन जाएँ।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1965, पृष्ठ-35

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चों को सच्चरित्र बनाएँ

बालकों के माता-पिता तथा अध्यापकों का यह कर्त्तव्य है कि वे जिन नियमों का बालकों से पालन कराना चाहते हैं उनका स्वयं पालन करें। घर पर तथा पाठशाला में प्रत्येक कार्य नियत समय पर किया जाए, प्रत्येक वस्तु के लिए निश्चित स्थान हो, प्रत्येक कार्य को करने में स्वच्छता तथा सुंदरता की ओर ध्यान दिया जाए, प्रत्येक व्यवहार में शिष्टता तथा कर्त्तव्यपरायणता विद्यमान हो और भिन्न-भिन्न नियमों का यथोचित रीति से पालन किया जाए। इस प्रकार की आदर्श परिस्थिति में उपर्युक्त बातें सरलता से ही बालकों के स्वभाव का अंग बन जाती हैं और वे अनायास ही सच्चरित्र बन जाते हैं जो कि मनुष्यता का प्रधान लक्षण है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1953, पृष्ठ-25

परमार्थ से ही राष्ट्र निर्माण संभव

कोई राष्ट्र तभी तक सुदृढ़ रहता है जब तक उसके संबंधीकरण करने वाले व्यक्ति अपना कार्य भली प्रकार से करते हैं। जब राष्ट्र में उन लोगों की कमी हो जाती है जो समाज के एक व्यक्ति का संबंध दूसरे व्यक्ति से जोड़ते हैं तो समाज निर्बल और छिन्न-भिन्न हो जाता है। राष्ट्र में अनेक प्रकार के भ्रष्टाचारों का यही कारण होता है। वर्तमान काल में जो हम भारतवर्ष में देशव्यापी भ्रष्टाचार देखते हैं उसका प्रधान कारण यही है कि हमारे राष्ट्र में उन लोगों की कमी है जो राष्ट्रीयता के हेतुओं को लेकर किसी कार्य में हाथ डालते हैं। सामाजिकता के भावों की कमी के कारण ही हमारा देश सदियों गुलाम रहा और इन्हीं भावों की कमी के कारण अर्थात राष्ट्र के लिए जीने वाले लोगों की कमी के कारण आज हमारे समाज में अनेक प्रकार के भ्रष्टाचार फैले हुए हैं। किसी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि समाज में ऐसे लोगों की वृद्धि हो जो व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर नहीं वरन दूसरों की सुख-समृद्धि के हेतु अनेक प्रकार के कामों में हाथ डालते हैं।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1953, पृष्ठ-13

महिला एवं नारी जागरण

नारी का सच्चा आभूषण गहने नहीं, सद्गुण

हमारी संतानें ज्ञानवान, धर्मवान, धनवान और शक्तिसंपन्न बनें। इसके लिए स्त्रियों का जीवन विलासिता की सामग्री से नहीं गुण और कष्ट की सहिष्णुता से ओत-प्रोत होना चाहिए। स्त्रियाँ शिक्षित हों, विचारवान हों तभी उनसे राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रमों में सहयोग की आशा की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा सकती है। इसके लिए सर्वप्रमुख आवश्यकता तो यही है कि वे ऐसी संकीर्ण विचारधाराओं से उन्मुक्त हों और कर्त्तव्य-पालन की ओर उनका ध्यान अधिक-से-अधिक रहे। कर्त्तव्य में वह सारे उत्तरदायित्व आ जाते हैं, जिनका पारिवारिक सुव्यवस्था से संबंध है। आभूषणों से अधिक लगाव होना, यह एक ऐसी समस्या है जिससे शेष सभी क्षेत्रों पर कुप्रभाव पड़ता है। अर्थव्यवस्था ही नहीं मनुष्य का नैतिक जीवन भी इस कुरीति के कारण विकृत हुए बिना नहीं रहता। समाज और राष्ट्र की व्यवस्था में भी इससे गड़बड़ी ही उत्पन्न होती है।

नारी जाति स्नेह और सौजन्य की देवी है, वह पुरुष की निर्मात्री है। किसी भी राष्ट्र का उदय नारी जाति के उत्थान से ही होता है इसलिए अब इस कुरीति का उन्मूलन कर, उन्हें निर्माण क्षेत्र में आगे बढ़ाने की बड़ी तीव्र आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इसमें कोई बाह्य हस्तक्षेप कारगर नहीं हो सकता। इस कुरीति को कोई दूसरा दूर नहीं कर सकता। जेवर और गहनों के प्रति अरुचि, उनमें समझ उत्पन्न करने से ही हो सकती है। विचारवान स्त्रियों को स्वयं ही इस दिशा में कुछ करने के लिए प्रोत्साहन मिलना चाहिए। जिनकी समझ में आभूषणों की निरर्थकता की बात आ जाए, उन्हें इस शिक्षा का प्रसार तेजी से करना चाहिए।

यह युग हमारे विकास का युग है। राजनीतिक स्वाधीनता मिले हुए हमें काफी दिन हो गए, पर परंपरागत कुरीतियाँ अभी ज्यों की त्यों है। इन्हें दूर करने से ही अपनी सर्वांगीण उन्नति का द्वार खुल सकता है। यह उन शिक्षित नारियों के लिए आह्वान है कि वे भारतवर्ष के आर्थिक तथा नैतिक स्तर के विकास में अपना सहयोग दें। इस पुण्य कार्य के लिए स्वर्ण या रजत के आभूषणों की आवश्यकता नहीं, वरन उन्हें गुणों से अलंकृत होना होगा। गुण ही नारी का सच्चा आभूषण है। शीलवान होना किसी भी अलंकार से बढ़कर है। अब उन्हें ऐसे ही गहने ग्रहण करने चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1965, पृष्ठ-38

नारी अश्लील आकर्षण का केंद्र न बने

नारी को अश्लील आकर्षणों का केंद्र नहीं बनाया जाना चाहिए। साहित्य, संगीत, कला के नाम पर उसे रमणी बनने के लिए आकर्षित न किया जाए, वरन पुरुष के सहस्तर वाले मित्र एवं सहचर के रूप में उत्तरदायी विश्व नागरिक के सपने, अपने गौरवशाली स्थान को सँभाल रह सकने योग्य साहस एवं चरित्र प्रदान किया जाए। पुरुष वर्ग का कर्त्तव्य है कि वह नारी को बहकाने, फुसलाने और गिराने का प्रयत्न छोड़े और उसे भावनात्मक, बौद्धिक एवं व्यावहारिक सहयोग इस प्रकार का प्रदान करे, जिससे उसकी प्रतिभा को विकसित होने और नवनिर्माण की भूमिका संपादन में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकने का अवसर मिल सके। साथ ही नारी में वह चेतना उत्पन्न की जानी चाहिए कि वह अपने विरुद्ध खड़े किए गए षड्यंत्र में फँसने से इनकार कर सके। उसके मानवीय स्वाभिमान का तकाजा है कि वह किसी को आकर्षित करने के लिए शृंगार करने को तिलांजलि देकर अपनी प्रतिभा की प्रखरता बढ़ाती हुई समाज का नैतिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मार्गदर्शन और नेतृत्व कर सकने में समर्थ हो सके। इस स्तर का वातावरण एवं उत्साह उत्पन्न करने के लिए हमें विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिए ताकि नारी स्वातंत्र्य का विश्व को समुचित लाभ मिल सके।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1971, पृष्ठ-35

नारी का वर्चस्व बढ़ेगा

हर किसी को समझना और समझाया जाना है कि नारी आद्यशक्ति है। वही सृष्टि को उत्पन्न करने वाली, अपने स्तर के अनुरूप परिवार का तथा भावी पीढ़ी का सृजन करने में पूरी तरह समर्थ है। इक्कीसवीं सदी में उसी का वर्चस्व प्रधान रहेगा। नर ने अपनी कठोर प्रकृति के आधार पर पराक्रम भले ही कितना ही क्यों न किया हो, पर उसी की अहंकारी उद्दंडता ने अनाचार का माहौल बनाया है। स्रष्टा की इच्छा है कि स्नेह, सहयोग, सृजन, करुणा, सेवा और मैत्री जैसी विभूतियों को संसार पर बरसने का अवसर मिले, ताकि युद्ध जैसी अनेकानेक दुष्टताओं का सदा-सर्वदा के लिए अंत हो सके। इस भवितव्यता को स्वीकार करने के लिए लोकमानस को समझाया और दबाया जाना चाहिए कि वह नारी को समता से ही नहीं, वरिष्ठता से भी लाभान्वित करें।

'सतयुग की वापसी' का शुभारंभ करना वर्तमान जनसमुदाय का काम है। ढाँचा और तंत्र खड़ा करना, सरंजाम जुटाना और वातावरण बनाना उसी का काम है। उन सभी उत्तरदायित्वों को अगली पीढ़ी के ही कंधों को उठाना होगा। आज जो पौधे लगाए जा रहे हैं उनके द्वारा विकसित हुए वृक्षों की शोभा-सुषमा को सुरक्षित रखने का कार्य तो वे ही करेंगे, जो आज भले ही जन्मे हों, जन्मने जा रहे हों, पर आवश्यकता के समय तक प्रौढ़ परिपक्व होकर रहेंगे।

ऐसी समुन्नत पीढ़ी को जन्म दे सकना तथा सुसंस्कृत बनाना उन नारियों के लिए ही संभव हो सकेगा जो आज के महान अभ्युदय में भागीदार बनकर नवसृजन की महती भूमिका निभाने में किसी न किसी प्रकार अपनी विशिष्टता का परिचय देंगी। आज के नारी जागरण आंदोलन को भविष्य में अतिशय प्रभावित करने वाला बनाना भी इसका एक महान उद्देश्य है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1988, पृष्ठ-58

नारी युग का समय आ गया

इन दिनों नारी जाग्रति की लहर है। इक्कीसवीं सदी को योगी अरविंद जैसे तत्त्वदर्शी 'मातृ शताब्दी' कह चुके हैं। शांतिकुंज द्वारा भावी संभावनाओं का सही अनुमान लगाकर यह घोषित किया है कि पूरी इक्कीसवीं सदी ऐसी संभावनाओं से भरी-पूरी है, जिसमें नारी अपनी वर्तमान दुर्गति से उबर ही नहीं रही है, वरन ऐसी स्थिति अपनाने भी जा रही है जिसे उन्नति के उच्च

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिखर पर पहुँचना भी कहा जा सके। नारी युग के रूप में एक अद्‌भुत और असाधारण समय एकाएक सामने आ उपस्थित हुआ देखा जा सके।

प्रजातंत्र के प्रचलन के उपरांत से ही यह माँग उठती आ रही है कि मानवी मौलिक अधिकारों को जब मान्यता मिल चुकी है, तो फिर नारी को भी मनुष्य मानने और उसे मताधिकार मिलने का कदम उठे। इस प्रयास में लंबा समय लग गया। प्रगति धीमे-धीमे अवश्य हुई, पर उसमें क्रमशः एक देश के बाद दूसरे देश में वह लहर पनपती गई और आज स्थिति है, जिसमें समझदारी ने विश्व के अधिकांश भाग को अपने अनुरूप सहमत कर लिया है। मात्र मुट्‌ठीभर प्रतिगामी इसमें हास्यास्पद अड़चनें उत्पन्न करने पर अड़े हुए हैं।

नारी प्रगति के संदर्भ में अपना देश प्रतिगामी स्तर का ही माना जाता रहा है। यहाँ सतीप्रथा, कन्यावध, बालविवाह, कन्याविक्रय, देवदासी, बलात्कार जैसे प्रचलनों को सहज स्वाभाविक माना और बिना किसी विरोध-विग्रह के साथ सहन किया जाता रहा है। शिक्षा, व्यवसाय, शासन, नेतृत्व जैसे अवसरों से उसे प्रायः वंचित ही रखा जाता रहा है। परदा प्रथा अभी भी पूरी तरह मिटी नहीं है। घरों की चहारदीवारी से बाहर निकलकर कोई उपयोगी कार्य करने तक की छूट को पूरी तरह मान्यता नहीं मिली है।

महिलाओं का भविष्य उज्ज्वल है, उनके आगे बढ़ने की संभावना सुनिश्चित है। समय के साथ चलते हुए जो इस प्रतिस्पर्द्धा के युग में अपने परिवार या प्रभाव क्षेत्र में महिलाओं को अग्रगमन के लिए प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान करेंगे, वे प्रगतिशील समझदारों की तरह नफे में रहेंगे। जो धीमे चलेंगे, उदासी अपनाएँगे, उपेक्षा करेंगे वे पिछड़ों की अग्रिम पंक्ति में खड़े होंगे। बनना तो उन्हें भी वही पड़ेगा जो सर्वत्र बनने जा रहा है। पश्चात्ताप इसी बात का रह जाएगा कि समय आगे बढ़ा और हम हठवादिता अपनाते हुए 'फिर कभी देखा जाएगा' की बहानेबाजी का आश्रय लेते रहे।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1990, पृष्ठ-25-26

पुरुष नारी के उत्कर्ष में बाधक न बनें

यह सत्य है कि महिलाएँ अब लंबी अँधेरी रात्रि के बाद जाग उठी हैं। उन्हें अपनी गरिमा का बोध हो रहा है कि वह किसी भी तरह पुरुष से कम नहीं। नारी चेतना में जाग्रति की यह आँधी अब अपने गौरव पद से वंचित करने वाली सारी प्रतिकूलताओं व बाधाओं को उखाड़ फेंकेगी व अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही दम लेगी। इसके प्रगतिशील चरणों को अब कोई रोक नहीं सकता। आखिर युग परिवर्तन के अधिष्ठाता महाकाल का भी तो यही संकल्प है, जिसने स्पष्टतः इक्कीसवीं सदी को नारी सदी के रूप में उद्‌घोषित किया है। बेहतर होगा कि अपने पौरुष एवं श्रेष्ठता का दंभ भरने वाला पुरुष अब चेत जाए व नारी शक्ति के सर्वांगीण उत्कर्ष में बाधक बनने की बजाय उसको हर तरह से सहयोग दे।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1997, पृष्ठ-20

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी जागरण की कमान नारी ही सँभाले

जिस देश की आधी जनसंख्या नारी रूप में अशिक्षित, अनगढ़, असमर्थ स्थिति में पड़ी हो उसकी प्रगति की संभावना कभी भी समग्र न बन सकेगी। नारी को नर के समतुल्य, सुयोग्य, समर्थ और समुन्नत बनाने के लिए भावनाशीलों को व्यक्तिगत और सामूहिक समर्थ प्रयास करने चाहिए। व्यक्तिगत रूप से अपने प्रभावक्षेत्र से इसका साहसिक शुभारंभ किया जाए और सामूहिक रूप से प्रचंड नारी जागरण अभियान चलाया जाए।

शिक्षित महिलाएँ इस प्रयोजन में आगे रहें। वे समीपवर्ती क्षेत्रों में नारी संपर्क के लिए टोली बनाकर निकलें। नारी के द्वारा नारी-जागरण अधिक अच्छी तरह संपन्न हो सकता है। आरंभ अपने घरों की महिलाओं से हो, इसके लिए आगे बढ़ने का अवसर, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन दें। नारी-जागरण की योजना पुरुष बनाएँ, वातावरण विनिर्मित करें और साधन जुटाएँ, पर प्रत्यक्ष संपर्क और सेवा कार्यों में अपने घरों की तथा संपर्क की नारियों को ही आगे रखें। इक्कीसवीं सदी नारी प्रधान होगी। उसी की शालीन सेवा साधना से समाज का कायाकल्प होगा। उस तैयारी के लिए अभी से कार्य आरंभ कर देना चाहिए। नारी-जागरण के प्रयासों में अब हर विचारशील नर-नारी को बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।

सामान्य महिलाओं को शिक्षा, स्वावलंबन, सत्संग, संगठन की सुविधा देकर क्रमशः आगे बढ़ाया जा सकता है, पर उनका मार्गदर्शन करने के लिए ऐसी प्रतिभावान महिलाओं की आवश्यकता है जो समीपवर्ती क्षेत्र में घर-घर जाकर महिलाओं से संपर्क साधने में झिझक अनुभव न करें। ऐसी दो महिलाएँ साथ-साथ निकल सकें, रूढ़िवादिता से उन्हें विरत करके प्रगति पथ पर चलने के लिए प्रयत्नशील रह सकें, तो यह प्रयास ही अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति कर देगा। विचारशील पुरुषों को अपने घरों की प्रतिभावान महिलाओं को इस सेवा साधना के लिए प्रोत्साहित एवं प्रशिक्षित करना चाहिए। स्वयं पीछे रहकर उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए। अपने देश में नारी संपर्क के लिए पुरुषों को उपयुक्त नहीं समझा जाता। उन पर संदेह एवं अविश्वास किया जाता है। इसलिए यदि उन्हें कार्य करना है तो साथ में घर की महिलाओं को अवश्य ले लेना चाहिए। पुरुषों का एकाकी प्रयत्न उतना सफल नहीं हो सकता, जितना होना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1988, पृष्ठ-60, 61, 63

नारी जागरण आंदोलन युद्ध स्तर पर चले

इक्कीसवीं सदी नारी प्रधान होगी। उसमें उसकी उत्कृष्टता का समुचित योगदान होगा। इस निमित्त यह नितांत आवश्यक है कि नारी जागरण का आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम जैसे युद्ध स्तर पर आरंभ किया जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिशन की कितनी ही समर्थ महिलाएँ हैं, वे अपने बलबूते एक मंडली गठित कर सकती हैं और अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाकर न्यूनतम पच्चीस तो कर ही सकती हैं।

इस निमित्त प्रौढ़ शिक्षा, कुटीर उद्योग, संगीत सम्मेलन, कुरीति निवारण, स्वभाव परिवर्तन जैसे अनेक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कार्य हाथ में लिए जाएँ और उन्हें आगे बढ़ने के लिए ऐसे सुदृढ़ प्रयत्न किए जाएँ जो सहज शिथिल न होने पाएँ।

—अखण्ड ज्योति मई 1988, पृष्ठ-64

गृहस्थ जीवन

संतान के लिए आदर्श माता-पिता बनें

ईश्वर ने जो संतान तुमको दी है, उनसे प्यार करो, पर तुम्हारा वह प्रेम सच्चा और गहरा होना चाहिए। वह अनुचित लाड़ या झूँठा स्नेह न हो जो तुम्हारी स्वार्थपरता और मूर्खता से उत्पन्न होता है और उनके जीवन को नष्ट करता है। तुम कभी इस बात को न भूलो कि तुम्हारी इन वर्तमान संतानों के रूप में आने वाली प्रजाएँ तुम्हारी अधीनता में हैं, इसलिए इनके प्रति अपने उस कर्त्तव्य का जो ईश्वर ने तुमको सौंपा है और जिसके तुम सबसे अधिक उत्तरदायी हो, पालन करो। तुम अपनी संतानों को केवल जीवन के सुख और इच्छापूर्ति की शिक्षा न दो, किंतु उनको धार्मिक जीवन, सदाचार और कर्त्तव्यपालन की भी शिक्षा दो। इस स्वार्थमय समय में ऐसे माता-पिता विशेषत: धनवानों में बिरले ही मिलेंगे, जो संतान की शिक्षा के भार को जो उनके ऊपर है, ठीक-ठीक परिमाण में तौल सकें।

तुम जैसे हो वैसी ही तुम्हारी संतानें भी होंगी; वे उतनी ही अच्छी या बुरी होंगी जितने आप अच्छे या बुरे हो। जबकि तुम अपने भाइयों के प्रति दयालु और उदार नहीं हो, तो उनसे क्या आशा कर सकते हो कि वे उनके प्रति प्रेम और उदारता दिखलाएँगे। वे किस प्रकार अपनी विषय-वासना और बुरी इच्छाओं को रोक सकेंगे, जबकि रात-दिन तुमको विषय-लोलुप और कामुक देखते हैं। वे किस प्रकार अपनी प्राकृतिक पवित्रता को स्थिर रख सकेंगे। जबकि तुम अपने अश्लील और निर्लज्ज व्यवहारों से उनकी लज्जा को तोड़ने में संकोच नहीं करते। तुम कठोर साँचे हो, जिनमें उनकी मुलायम प्रकृति ढाली जाती है। इसलिए यह तुम पर निर्भर है कि तुम्हारी संतान मनुष्य हों या मनुष्याकृति वाले पशु।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1948, पृष्ठ-11

सुखी दांपत्य का आधार—सात्विक प्रेम

सुखी दांपत्य का आधार है, पति-पत्नी का शुद्ध सात्विक प्रेम। जब दोनों एकदूसरे के लिए अपनी स्वार्थ भावना का परित्याग कर देते हैं, तब हृदय परस्पर मिले-जुले रहते हैं। प्रेम में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अहंकार का भाव नहीं होता है। त्याग ही त्याग चाहिए, विशुद्ध प्रेम के लिए। एकदूसरे के लिए जितने गहन तल से समर्पण की भावना होगी उतना ही प्रगाढ़ प्रेम होगा। दांपत्य सुख प्राप्त करने के लिए प्रेम का प्रयोग करना चाहिए। यह प्रेम त्याग भावना, कर्त्तव्य भावना से ही हो। सौंदर्य और वासना का प्रेम, प्रेम नहीं कहलाता। वह एक तरह का धोखा है। जो इस जंजाल में फँस जाते हैं, उनका दांपत्य जीवन बुरी तरह बेहाल हो जाता है। प्रेम आत्मा से करते हैं, शरीर से नहीं; कर्त्तव्य से करते हैं, कामुकता से नहीं। प्रेम में किसी तरह का विकार नहीं होना चाहिए। शुद्ध, निर्मल और निश्छल प्रेम से ही स्त्री-पति एकसूत्र में बँधे रह सकेंगे। सुखी जीवन का यह प्रमुख आधार है।

इस सद्भावना का प्रमुख शत्रु है, अपना विषमय मन। यह बड़ा शंकातुर होता है, वह बात-बात पर संदेह प्रकट करता है। लिंगभेद के कारण स्त्री-पुरुषों में कुछ-न-कुछ छिपाव होता ही है, हलके स्वभाव के व्यक्ति इन बातों को अपनी कटुता का आधार बनाते हैं। तरह-तरह की कुत्सित कल्पनाओं से संदेह के बीज बोते और वैमनस्य पैदा करते रहते हैं। स्त्री और पुरुष के बीच में एक विश्वास होना चाहिए। अविचलित विश्वास बना रहेगा तो दुर्भावनाएँ अपने आप दूर रहेंगी और दांपत्य जीवन का वातावरण विषाक्त होने से बच जाएगा।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1965, पृष्ठ-29

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पति-पत्नी एकदूसरे की प्रशंसा करें

स्त्री और पुरुष दोनों एकदूसरे को पारिवारिक सुखों का देवता समझकर उनकी प्रशंसा किया करें तो प्रेम ओर सहयोग की भावना पैदा होती है। कुछ-न-कुछ गुण हर किसी में होते हैं। उनकी प्रशंसा मुक्तकंठ से करनी चाहिए। इसमें हीनता या संकोच नहीं करना चाहिए। अपने जीवनसाथी को उत्साहित करना, ऊँचा उठाना, सुसंस्कृत और सभ्य बनाना, अपना लक्ष्य होना चाहिए। संभव है कि उसकी इन कामों में रुचि न हो, पर प्रशंसा में वह शक्ति होती है जो मनुष्य में कठिन-से-कठिन कार्य करने के लिए उत्साह भरती है।

इस बात के लिए स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों का उत्तरदायित्व अधिक है। उन्हें चाहिए कि वे स्त्रियों के खाना पकाने, सेवा करने, शिशुपालन में सहयोग देने की प्रशंसा किया करें? इससे उनका हृदय उदारता और आत्मीयता से भरा रहता है। उनके प्रत्येक हाव-भाव से प्रेम, स्नेह और आत्मदान की भावना टपकती रहती है। इससे उल्लासपूर्ण वातावरण विनिर्मित होता है।

एकदूसरे के रंग-रूप, माता-पिता या ससुराल वालों को लेकर कभी आलोचना नहीं करनी चाहिए। ऐसी कोई भी बात न कहनी चाहिए, जिससे अपने जीवनसाथी की अपेक्षा किसी दूसरे का महत्त्व अधिक जान पड़ता हो। लोग अपने आदमियों के सामने दूसरों की प्रशंसा करने में तो बड़े पटु होते हैं, पर चतुर जन वे होते हैं जो औरों के सामने भी अपने ही व्यक्तियों की प्रशंसा करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन बातों में जहाँ पुरुषों के दायित्व बड़े हैं, वहाँ स्त्रियों को भी चाहिए कि वे अपनी इच्छाएँ, आवश्यकताएँ पतियों के सामने रखते समय घर की आर्थिक स्थिति का भी ध्यान रखा करें। जो इच्छाएँ पति न पूरी कर सकते हों, उन्हें कभी भूलकर भी जबान पर नहीं लाना चाहिए।

दांपत्य जीवन की सफलता के लिए भावनात्मक परिष्कार का उद्देश्य स्त्री-पुरुष को नेक और सुशील बनाना होता है। पुरुष में पुरुषत्व के और स्त्री में स्त्रीत्व गुण विद्यमान हों तो कोई कारण नहीं कि दांपत्य जीवन सुख से न बीते। अन्य सारी योग्यताएँ इन्हीं गुणों के विकास की माध्यम हैं। मुख्य रूप से पुरुष में शक्ति, साहस, सक्रियता और निर्भयता आदि गुणों का समावेश हो और स्त्री में कोमलता, मृदुलता, दयालुता, स्नेह, सौम्यता और सहानुभूति के गुण होने चाहिए। दोनों के स्वभाव में अपने-अपने गुणों का पर्याप्त स्थान हो तो प्रेम, विश्वास, आत्मीयता आदि का परिमार्जन अपने आप होता है और दांपत्य जीवन में उत्तरोत्तर घनिष्ठता बढ़ती जाती है और उनके जीवन में आनंद की कोई कमी नहीं रहती। ऐसे ही घरों में श्रेष्ठ और सद्गुणी संतानें जन्म लेती हैं और उनसे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन सुखी एवं समुन्नत होता है। इसलिए दांपत्य जीवन को पवित्र बनाना, उद्देश्यपूर्ण रखना प्रत्येक गृहस्थ का मूल धर्म-कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1965, पृष्ठ-28

दांपत्य जीवन के सूत्र

पति-पत्नी में कभी झगड़ा नहीं होना चाहिए। यह शोभनीय भी नहीं है और कल्याणकारी भी नहीं है। पति-पत्नी के झगड़े का मतलब है पूरे परिवार का नाश और उनके प्रगाढ़ प्रेम का अर्थ सुंदर परिवार, सुखदायी गृहस्थ। पति-पत्नी के पारिवारिक लड़ाई-झगड़े के कुछ बाह्य और कुछ मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं। उनमें से अकर्त्तव्यशीलता भी एक विशेष कारण है। यदि पति-पत्नी परस्पर अपने बाह्य और मनोवैज्ञानिक कर्त्तव्यों को सावधानीपूर्वक पूरा करते रहें तो उन दोनों में कभी कोई लड़ाई-झगड़ा न हो।

कर्त्तव्यों में पति का सबसे पहला कर्त्तव्य है कि वह पत्नी के स्वास्थ्य का अपनी ओर से पूरा ध्यान रखें। बहुत-से स्वार्थी पति अपनी सेवा लेने के साथ-साथ पत्नी को हर समय किसी-न-किसी काम में लगाए रखते हैं।

बहुधा पत्नियों से इतना काम लिया जाता है कि जरा आराम करने का अवसर नहीं मिलता, जिसका फल यह होता है कि उसका स्वास्थ्य, उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और वह बात-बात पर झल्लाने और रोने लगती है। गृहकलह आरंभ हो जाता है। जिन्हें पास्परिक प्रेम, सद्भावना और सुख-शांति वांछित है, पत्नी से उतना ही काम लें जितना उचित और आवश्यक है। जो उनके अपने काम हों, वे सब स्वयं ही करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छे और भले पति हर अच्छी वस्तु को प्रेमपूर्वक प्रियतमा को ही अधिक-से-अधिक खिलाने-पिलाने में सुख अनुभव करते हैं। चूँकि वे कमाई करते हैं इसलिए उन्हें अपना यह कर्त्तव्य अच्छी तरह याद रहता है।

संकोचवश पत्नी किन्हीं वस्तुओं को जी भरकर न खाने का अभ्यास न कर ले अथवा खाने में संकोच करे। वे अपने आप अपने सामने अथवा अपने साथ बिठाकर खिलाने का ही यथासंभव प्रयत्न करते हैं। ऐसे पतियों की पत्नी कितनी प्रसन्न और सुखदायक रहती हैं, इसका अनुमान सहज नहीं। पुरुष होने के नाते पति मोटे, सस्ते और सादे कपड़े पहने और पत्नी को अच्छे-से-अच्छे कपड़े पहनाए। वह सुंदर है, सुकुमार है, वस्त्र उसकी शोभा है।

पत्नी को पहनाने वाले पति अपनी पत्नी पर बिना मंत्र के वशीकरण कर देते हैं और प्यार में बदली उसकी कृतज्ञता का आनंद प्राप्त करते हैं। पति को कुछ मनोवैज्ञानिक कर्त्तव्यों का भी निर्वाह करना चाहिए। सबसे पहला कर्त्तव्य है—प्रशंसा। उसके भोजन और शृंगार की प्रशंसा कीजिए और प्रशंसा की आँखों से ही उसे देखिए। उसे यह विश्वास रहता है कि पति को मैं और मेरे काम पसंद हैं। यह पसंदगी की भावना हर नारी की एक साध होती है। इस पर वह अपना आराम और सुख-सुविधा तक निछावर करने को तैयार रहती है। हँसते-मुस्कराते और एकाग्र होकर बात करने का प्रयत्न करिए। इससे उसको यह बड़ा संतोष रहता है कि पति उसको देखकर खिल उठता है।

जब भी आइए कुछ-न-कुछ उसकी पसंद की वस्तु अवश्य लेकर आइए। स्त्रियों का स्वभाव भी कुछ बच्चों जैसा होता है, अपनी पसंद की छोटी-सी वस्तु भी पाकर बहुत अधिक प्रसन्न हो जाती है। यह और इस प्रकार के अन्य बाह्य और मनोवैज्ञानिक कर्त्तव्यों का पालन करने वाले पतियों की पत्नियाँ सदा प्रसन्न रहती हैं और किसी भी स्थिति में गृहकलह उपस्थित नहीं कर पाती हैं।

नियम है कि ताली एक हाथ से कभी नहीं बजती। आदान के अभाव में प्रदान संभव नहीं होता। ऐसे कारण उपस्थित नहीं करना चाहिए, जिससे पति का उसकी ओर से मन फिरने की संभावना हो जाए। पति की उचित सेवा में न तो प्रमाद करना चाहिए और न अरुचि ही। पति के आने पर जो पत्नियाँ उसकी सेवा-स्वागत भूलकर अपनी गाथा लेकर बैठ जाती हैं या तत्काल बाजार का काम बतलाने लगती हैं, वे उसकी अनुकूलता कभी प्राप्त नहीं कर सकती।

पौष्टिक पदार्थों के उपयोग में पति की बराबरी करने का प्रयत्न न कीजिए और न अपने ऊपर इस स्पर्द्धा से अधिक खरच करिए कि जब वह इतना व्यय करते हैं तो मैं क्यों न करूँ। अपने वस्त्रों का स्तर यथासंभव उतना ही रखिए जितना कि पति का हो।

पति की आर्थिक आलोचना करने का अर्थ है उसका मन अपनी ओर से विमुख कर देना। पति के प्रिय मित्रों की अनुचित आलोचना करना अथवा उनका संबंध विच्छेद कराने का प्रयत्न करना पति के एक सुंदर सुख को छीन लेने के बराबर है। पति के मित्रों को स्वजन और शत्रु को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शत्रु मानना पत्नी का प्रमुख कर्त्तव्य है। जो पत्नियाँ अपना स्वतंत्र अस्तित्व मानकर केवल अपने मित्र को मित्र और अपने विरोधी को विरोधी मानती हैं, वे अपने दोनों के बीच खाई खोदने की भूल करती हैं।

संकट के समय में भी पति के पास मुस्कराती हुई ही रहो। मधुर और मृदुल बोलिए। नारियों की मीठी वाणी और अनुकूल मुस्कान का जादू पुरुष पर अधिकार जमा लेता है। यदि इस प्रकार पति-पत्नी एकदूसरे की भावनाओं का ध्यान रखते हुए अपने यह कतिपय बाह्य और मनोवैज्ञानिक कर्त्तव्यों का पालन करते रहें तो उनके बीच कलह-क्लेश होने की संभावना ही न रहे और दांपत्य जीवन का अधिक-से-अधिक आनंद पा सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1968, पृष्ठ-26-28

दांपत्य जीवन की सफलता

दांपत्य जीवन की सुख-समृद्धि एवं शांति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि व्यवहार में एकदूसरे की भावनाओं का ध्यान रखें। एक मोटा-सा सिद्धांत है कि 'मनुष्य दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसा वह स्वयं के लिए चाहता है।' पति-पत्नी भी सदैव एकदूसरे की भावनाओं, विश्वासों का ध्यान रखें। किंतु देखा जाता है कि अधिकांश लोग अपनी भावना, विचारों में इतना खो जाते हैं कि दूसरे के विचारों, भावों का कुछ भी ध्यान नहीं रखा जाता। वे उन्हें निर्ममता के साथ कुचल भी देते हैं। इस तरह दोनों की एकता, सहयोग के स्थान पर असंतोष का उदय हो जाता है। अपनी इच्छानुसार पत्नी को जबरदस्ती किसी काम के लिए मजबूर करना, उसकी इच्छा न होते हुए भी दबाव डालना पति के प्रति पत्नी के मन में असंतोष की आग पैदा करना है। इसी तरह कई स्त्रियाँ अपने पति के स्वभाव, रुचि, आदेशों का ध्यान न रखकर अपनी छोटी-छोटी बातों में ही उन्हें उलझाए रखना चाहती हैं। फलतः उन लोगों को विवाह एक बोझ-सा लगने लगता है। दांपत्य जीवन के प्रति उन्हें घृणा, असंतोष होने लगता है और यही असंतोष उनके परस्पर के व्यवहार में प्रकट होकर दांपत्य जीवन को विषाक्त बना देता है। यदि किसी की मानसिक स्थिति ठीक न हो तो परस्पर लड़ाई-झगड़े होने लगते हैं। एकदूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करते रहते हैं।

पति-पत्नी का सदैव एकदूसरे के भावों, विचारों एवं स्वतंत्र अस्तित्व का ध्यान रखकर व्यवहार करना, दांपत्य जीवन की सफलता के लिए आवश्यक है। इसी के अभाव में आजकल दांपत्य जीवन एक अशांति का केंद्र बन गया है। पति की इच्छा न होते हुए, साथ ही आर्थिक स्थिति भी उपयुक्त न होने पर स्त्रियों की बड़े-बड़े मूल्य की साड़ियाँ, सौंदर्य प्रसाधन, सिनेमा आदि की माँग पतियों के लिए असंतोष का कारण बन जाती है। इसी तरह पति का स्वेच्छाचार भी दांपत्य जीवन की अशांति के लिए कम जिम्मेदार नहीं है। यही कारण है कि कोई घर ऐसा नहीं दीखता, जहाँ स्त्री-पुरुषों में आपस में नाराजगी, असंतोष दिखाई न देता हो।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्याप्त शिक्षा-दीक्षा के अभाव के कारण भी मानसिक विकास नहीं होता, जिसके कारण एकदूसरे की भावनाओं, व्यावहारिक जीवन की बातों के बारे में मनुष्य को जानकारी नहीं मिलती। जीवनसाथी का समकक्ष होना आवश्यक है। अपने साथी की ज्ञान-वृद्धि, विकास एवं कल्याण के लिए भी अन्य आवश्यक कार्यों की तरह ही प्रयत्न करना आवश्यक है। मन, बुद्धि के विकास के अभाव में दांपत्य जीवन सुखी और समृद्ध नहीं बन सकता।

योग्य होकर भी एकदूसरे की भावनाओं का ध्यान रखते हुए भी कभी-कभी स्वभावतया ऐसा व्यवहार हो जाता है जो पति-पत्नी में से एकदूसरे को अखरने लगता है। ऐसी स्थिति में किसी भी एक पक्ष को क्षमाशीलता, सहिष्णुता का परिचय देकर विक्षोभ उत्पन्न न होने देने का प्रयत्न करना आवश्यक है। साथ ही दूसरे पक्ष को भी अपनी भूल को महसूस कर क्षमा माँगकर परस्पर मनों को साफ रखना चाहिए। अन्यथा परस्पर मनोमालिन्य बढ़ जाता है और दांपत्य जीवन में कटुता पैदा हो जाती है। महात्मा सुकरात, टालस्टाय, संत तुकाराम जैसे महापुरुषों ने अपनी फूहड़ और लड़ाकू स्त्रियों को सहनशीलता, क्षमा, उदारता के साथ जीवन में निभाया था।

पति-पत्नी में से जब किसी एक में भी कोई स्वाभाविक कमजोरी दीखती हो तो उसका सहनशीलता के द्वारा निराकरण करके गृहस्थ की गाड़ी को चलाने में पूरा-पूरा प्रयत्न करते रहना आवश्यक है।

पति-पत्नी दोनों का जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों में अभिन्नता है, एक्य है। भारतीय संस्कृति में तो पुरुष और स्त्री को आधा-आधा अंग मानकर एक शरीर की व्याख्या की गई है जिसमें पुरुष को अर्द्धनारीश्वर तथा स्त्री को अर्द्धांगिनी कहा गया है। दांपत्य जीवन स्त्री-पुरुष की अनन्यता का गठबंधन है। अत: परस्पर किसी तरह का दुराव, छिपाव, दिखावा, बनावटी व्यवहार करना परस्पर अविश्वास एकदूसरे के प्रति घृणा को जन्म देता है और इसी से दांपत्य जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं अपनी प्रत्येक चेष्टा में स्पष्टता, दुराव-छिपाव का अभाव रखकर अभिन्नता प्रकट करते हुए पति-पत्नी को एकदूसरे का विश्वास मानसिक एकता प्राप्त करना चाहिए। वैसे जहाँ तक बने प्रत्येक व्यक्ति को अपने बाह्य जीवन में भी रहस्य, छल, बनाव, दिखावे से बचना चाहिए। क्योंकि इस बाहरी व्यवहार को देखकर भी पति-पत्नी एकदूसरे पर संदेह करने लगते हैं। वे सोचते हैं 'हो सकता है यही व्यवहार हमसे किया जा रहा हो।' संदेह की भूल-भुलैया में ही अनेक दंपत्तियों का जीवन क्लिष्ट, उलझा हुआ तथा दुरूह बन जाता है।

पति-पत्नी दोनों अपने मानसिक क्षेत्र में बहुत बड़ा कुटुंब होते हैं। अपनी मानसिक आवश्यकताओं के आधार पर पति अपनी पत्नी से ही विभिन्न समय में, सलाहकार की तरह मंत्री की-सी योग्यता, भोजन करते समय माँ की-सी वात्सल्यता, आत्मसेवा के लिए आज्ञापालक नौकर, जीवन पथ में एक अभिन्न मित्र, गृहिणी, रमणी आदि की आकांक्षा रखता है। इसी तरह पत्नी भी पति से जीवन- निर्वाह के क्षेत्र में माँ-बाप, दु:ख-दरद में अभिन्न साथी, कल्याण और उन्नति के लिए सद्गुरु, कामनाओं की तृप्ति के लिए भर्तार, सुरक्षा-संरक्षण के लिए भाई आदि

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की आकांक्षा रखती है। जब परस्पर इन मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तो एकदूसरे में असंतोष, अशांति पैदा हो जाती है जिससे दांपत्य जीवन में विकृति पैदा हो जाती है।

एकदूसरे की भावनाओं का ध्यान रखते हुए, एकदूसरे की योग्यता वृद्धि, खासकर पुरुषों द्वारा स्त्रियों के ज्ञानवर्द्धन में योग देकर, परस्पर क्षमाशीलता, उदारता, सहिष्णुता, अभिन्नता, एकदूसरे की मानसिक तृप्ति करते हुए दांपत्य जीवन को सुखी-समृद्ध बनाया जा सकता है। अधिकतर इसके लिए पुरुषों को ही अधिक प्रयत्न करना आवश्यक है। वे अपने प्रयत्न और व्यवहार से गृहस्थ जीवन की कायापलट कर सकते हैं। अपने सुधार के साथ ही स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा, ज्ञानवृद्धि, उनके कल्याण के लिए हार्दिक प्रयत्न करके दांपत्य जीवन को सफल बनाया जा सकता है। धैर्य और विवेक के साथ एकदूसरे को समझते हुए अपने स्वभाव, व्यवहार में परिवर्तन करके ही दांपत्य जीवन को सुख-शांतिपूर्ण बनाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1963, पृष्ठ-25-27

दांपत्य जीवन की सफलता, मर्यादाओं के पालन में

नर और नारी दोनों को ही यह ध्यान रखना चाहिए कि पवित्र भाव से भी युवावस्था वाले दूसरे पक्ष के साथ इस प्रकार की समीपता, घनिष्ठता और वार्ता से बचें जो उँगली उठाने का अवसर देती हो। शील, संकोच और लज्जा की दीवारें पतिव्रत और पत्नीव्रत को सुरक्षित बनाए रहने में अमोघ कवच का काम करती हैं। गृहस्थ की सुदृढ़ता, दांपत्य जीवन की आस्था बनाए रखने के लिए यह लोकाचार नितांत आवश्यक है। स्वतंत्रता नागरिक, मानवीय अधिकारों के लिए ही बरती जानी चाहिए। कैदी बनाकर पिंजड़े के पक्षी की तरह स्त्रियों को उनके नागरिक अधिकारों से, शिक्षा-स्वावलंबन तथा प्रगति की सुविधाओं से वंचित न किया जाए। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मर्यादाओं का उल्लंघन, शील-संकोच की उपेक्षा आजादी नहीं बरबादी का रास्ता है, उस पर न चलना ही उचित है।

दांपत्य जीवन में प्रचलित अनेक विकृतियाँ और परंपराएँ आज पारस्परिक स्नेह-सौजन्य में बाधक बनी हुई हैं, उन्हें सुधारने के लिए आवश्यक ध्यान देना उचित है। इस मूल तथ्य को ध्यान में रखना ही चाहिए कि पारस्परिक गहन आस्था, अनन्य आत्मीयता और साथी के प्रति उदारता एवं सहिष्णुता का दृष्टिकोण रखते हुए उसके निर्वाह की बात सर्वोपरि है। यह आधार जहाँ भी होगा, वहाँ अनेक त्रुटियों के रहते हुए भी दांपत्य जीवन सफल ही बना रहेगा।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1963, पृष्ठ-39

दांपत्य जीवन की सफलता का आधार—प्रेम और आत्मीयता

आज के पारिवारिक जीवन को फिर से नया रूप देने की आवश्यकता सभी विचारवान पुरुष अनुभव कर रहे हैं। लोगों को शिक्षित बनाने के, आमोद-प्रमोद के साधन जुटाने के भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक कार्य सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर चला रहे हैं, किंतु गृहस्थ जीवन को सुव्यवस्थित, सुखी एवं संतुष्ट बनाने के लिए प्रेम-आत्मीयता के अभाव में सारी योजनाएँ विफल ही लग रही हैं। दांपत्य जीवन को फिर से सुदृढ़ बनाने के लिए, फिर से पति और पत्नी के गुण, कर्म, स्वभाव में परिवर्तन को प्राथमिकता देनी पड़ेगी। जिस स्थान से भटक गए थे फिर उसी स्थान की ओर लौटना पड़ेगा। दांपत्य जीवन की सफलता के लिए धन जुटाएँ, पारिवारिक शिक्षा का भी ध्यान दें और भी जो साधन उचित हों ग्रहण करें, किंतु यह न भूलें कि पारस्परिक प्रेम और आत्मीयता के अभाव में दांपत्य जीवन सफल न होगा। इसके लिए पारस्परिक प्रेम, विश्वास, सहिष्णुता, उदारता और आत्मत्याग का आश्रय लेना पड़ेगा। इसी आधार पर घरों में स्वर्ग उतरेगा और यही परिस्थितियाँ सुव्यस्थित होकर सभ्य समाज की रचना का स्वप्न साकार करेंगी।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1964, पृष्ठ-43

आवश्यकता है चरित्रनिष्ठ और लोकसेवी नेताओं की

नेता के सेवा कार्यों का वर्णन होता है। उनके क्रिया-कलापों की गाथा गाई जाती है। पर ऐसा वस्तुतः बन सकना या कर सकना तभी संभव हो सकेगा, जब व्यक्ति निजी जीवन में दो शर्तों का निर्वाह करे। एक यह कि उसे चिंतन, चरित्र और व्यवहार की दृष्टि से परिष्कृत एवं प्रामाणिक होना चाहिए। उसकी चादर पर ऐसे दाग-धब्बे लगे न हों, जिस पर हर किसी की आँख जाए और उँगली उठे। दूसरा यह कि उसके क्रिया-कलाप में सेवा भावना गुंथी होनी चाहिए। उसे प्रचार कार्य के अतिरिक्त ऐसे पुण्य-परमार्थ भी अपनाने चाहिए, जिसके सहारे उदारता, सज्जनता एवं आदर्शवादिता प्रकट होती हो। जिनके पास न चरित्र की पूँजी है और न जिनकी सेवा-साधना का कोई इतिहास, वे तो खेतों में खड़े हुए काग भगौओं की तरह है, जो दूर से देखने पर रखवाले जैसे प्रतीत होते हैं, पर निकट जाने पर प्रतीत होता है कि यह तो लकड़ी के ढाँचे पर घड़े का सिर और फटे कपड़े की पोशाक पहने हुए हैं। जिन्हें सच्चे अर्थों में किसी बड़े क्षेत्र का नेता बनना है, उन्हें चरित्रनिष्ठा के अतिरिक्त सेवा प्रयोजनों के लिए समयदान, अंशदान की बढ़ी-चढ़ी उदारता भी दिखानी चाहिए। उपयोगी सेवा कार्यों में बिना किसी आमंत्रण के स्वयं दौड़कर भागीदार बनना चाहिए। वस्तुतः चरित्रनिष्ठा और सेवा भावना एकदूसरे से पूरी तरह गुंथे हुए हैं। ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जहाँ एक होगा, वहाँ दूसरा भी अनायास ही साथ हो जाएगा। इनमें से किसी को भी एकाकी नहीं माना जा सकता। लोकसेवा और चरित्रनिष्ठा दोनों साथ हों तो वह नेतृत्व वास्तविक एवं प्रभावशाली जनोपयोगी नेतृत्व कहलाता है। जहाँ इस युग्म का अभाव है, वहाँ मात्र अभिनेता का तमाशा भर है। आवश्यकता है आज सही अर्थों में परमार्थपरायण नेताओं की जो मुखौटे लगाए अभिनेताओं की भीड़ में अलग से पहचाने जा सकें, जिनके पीछे चलने के लिए अगणित व्यक्ति सहर्ष तैयार हो जाएँ।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1986, पृष्ठ-20

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चा लोकसेवी नेतृत्व—आज की आवश्यकता

विचारशीलों और सद्भाव संपन्नों की कमी नहीं, अभाव तो आगे बढ़कर नेतृत्व करने का होता है। सत्प्रयोजनों के लिए आगे बढ़ने में विचारवान भी झेंपते-सकुचाते रहते हैं। आगे बढ़कर जो दूसरों को झकझोर सके, सोतों को जगा सके, जगों को खड़ा कर सके, खड़ों को चला सके ऐसी प्रखर तेजस्विता किसी-किसी में ही पाई जाती है। जिनमें पाई जाती है, उन्हें प्राणवान कह सकते हैं। आवश्यकता आज प्राणवानों की है।

इस बार इस विशेष अवसर पर तो हमें अपने विशाल परिवार में से ऐसे प्राणवान मोती ही ढूँढ़ने हैं। उनकी परख-परीक्षा के लिए यह चुनौती प्रस्तुत की गई है कि हमारी सबसे बड़ी सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपना काम छोड़कर दरवाजे-दरवाजे पर धक्के खाने के लिए, व्यंग्य, उपहास, तिरस्कार, आरोप सहने के लिए आगे आएँ और कम से कम इतना मनोयोग, इतना समय तो इस कार्य के लिए समर्पित कर ही दें, जितने में स्थानीय परिजनों का संगठित ढाँचा खड़ा हो सके और साथ ही महिला जागरण अभियान का शुभारंभ हो सके।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1975, पृष्ठ-65

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वरिष्ठ नागरिक वानप्रस्थी

बूढ़ा होना दुःख की नहीं गौरव की बात

वृद्धावस्था में शरीर की श्रमशक्ति का कम हो जाना स्वाभाविक है। पर इसी कारण निराश होने का कोई कारण नहीं। बालकों की शारीरिक श्रम करने की योग्यता कम होती है, पर इसी कारण उनकी न तो उपेक्षा की जाती है और न मृत्यु की कामना। शारीरिक श्रम शक्ति का कम हो जाना कोई बहुत बड़ी क्षति नहीं है। मनुष्य का मूल्य शारीरिक बल से नहीं आँका जाता, उसका महत्त्व जिन बातों पर निर्भर है, वे वृद्धावस्था में कम नहीं होतीं वरन बढ़ती हैं। इससे स्पष्ट है कि वृद्ध पुरुषों की उपयोगिता बढ़नी चाहिए, स्थिर रहनी चाहिए।

इस पर भी हम देखते हैं कि आज 'बूढ़ा' होना एक अभिशाप के समान है। कारण यही है कि लोग अपनी योग्यताओं, शक्तियों को बढ़ाने और स्थिर रखने की आशा, प्रेरणा और क्रिया को छोड़ देते हैं। शेष जीवन को निराश और उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगते हैं। जो अपने जीवन को जिस दृष्टि से देखता है, दूसरे भी उसको उसी दृष्टि से देखने लगते हैं। फलस्वरूप बूढ़ा होना गिरी दशा का सूचक बन जाता है। चढ़ती उम्र के और ढलती उम्र के—दोनों ही प्रकार के ऐसे बूढ़ों से हमारा समाज भरा हुआ है, जो अंधकारपूर्ण भविष्य के गहरे गर्भ की ओर तेजी से कदम बढ़ाते हुए चले जा रहे हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन चढ़ती और ढलती उम्र के निराशावादी बूढ़ों के कारण बेचारी वृद्धावस्था बदनाम होती चली जा रही है। अब समय आ गया है कि पूज्यनीय वृद्धावस्था को इस दुर्दशा से बचाया जाए। वृद्ध कहे जाने वाले पुरुष, अपने बुढ़ापे में अपने उत्साह को मंद न होने दें; अपनी आशाओं को स्थिर रखें, अपनी क्रियाशक्ति को सचेत बनाए रहें। शरीर और मस्तिष्क से सामर्थ्य के अनुसार बराबर काम लें। शेष जीवन की एक-एक घड़ी से अधिकाधिक लाभ उठाने की इच्छा रखें। जो ज्ञान और अनुभव संचित कर लिया जाएगा, वह अगले जन्म में काम देगा, ऐसा सोचकर मृत्यु की घड़ी तक ज्ञान संपादन करने, योग्यता बढ़ाने, अनुभव प्राप्त करने, भूलों का सुधार करने एवं अपने अनुभव से दूसरों को लाभ पहुँचाने का प्रयत्न निरंतर जारी रखना चाहिए। यदि ऐसा प्रयत्न वृद्ध लोग करते रहें तो बूढ़ा होना दुःख की बात न रहकर गौरव की बात होगी।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1945, पृष्ठ-243,244

वृद्धावस्था जीवन का स्वर्णकाल

वृद्धावस्था का सबसे सुंदर सदुपयोग इसी में है कि जन कल्याणकारी, पारमार्थिक प्रवृत्तियों में अपनी समस्त शक्तियों को लगा दिया जाए। अपनी पारमार्थिक रुचियों और प्रवृत्तियों का क्षेत्र व्यापक और विभिन्नताओं से युक्त बना लेना और उनमें निमग्न हो जाना चाहिए। इससे न तो मनुष्य को अपनी आयु के आँकड़े गिनने का अवसर रहता है, न अतीत की स्मृतियों में डूबने का और न भविष्य की चिंताओं में खीजने का। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारतीय जीवन व्यवस्था में अंतिम समय को वानप्रस्थ, संन्यासी के रूप में बिताने का विधान है।

वृद्धावस्था में मनुष्य के जीवन का प्रवाह एक नदी की तरह होना चाहिए जो हिम-शिखिरों से पतली धारा के रूप में तीव्र वेग से निकली है, अनेक धाराओं को अपने अंक में समेटती है। सामने आए रोड़ों को टक्कर मारकर हटाती है तो कभी नया रास्ता ग्रहण करती है। फिर मैदान में बहती है, धरती की प्यास बुझाती है। अंत में शत-शत धाराओं में विभक्त हो, गंभीरता के साथ विराट समुद्र में प्रवेश करती है। मनुष्य वृद्धावस्था में पहुँचने तक पूर्णरूपेण 'स्वः' से मुक्त हो परमार्थ को जीवन का अंग बना ले और निस्पृह भाव से सर्वजन हिताय कार्य करे तो वृद्धावस्था सचमुच ही जीवन का स्वर्ण अवसर सिद्ध हो सकती है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1963, पृष्ठ-35,36

ढलती आयु का सदुपयोग

जिस प्रकार चढ़ती उम्र में ब्रह्मचर्य, यौवन में गृहस्थ आवश्यक है, उसी प्रकार यह भी उचित है कि ढलती आयु को आत्मकल्याण की साधना में लगाया जाए। उपासना, जीवन-शोधन और परमार्थ के त्रिविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों में पूरी तरह लग जाने का ठीक यही समय है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि इस ओर से उपेक्षा बरती गई तो शरीर त्यागते समय कुसंस्कारों में घिरा हुआ जीव बहुत ही त्रास पाकर विदा होता है। उस समय की मोह-ममता तथा वासना-तृष्णा उसे सद्गति का अधिकारी नहीं बनने देतीं। फिर उन्हीं प्रियजनों की, प्रिय वस्तुओं की समीपता पाने के लिए कर्मानुसार भली-बुरी योनियों में जन्मता-मरता रहता है। जिसने मोह-बंधनों से छुटकारा प्राप्त नहीं किया, उसके लिए जीवन-मुक्ति असंभव ही बनी रहेगी।

जिनकी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ इतनी हलकी हो गई हैं कि घर का ढर्रा थोड़े मार्गदर्शन से अपने आप चलता रहे, उनके लिए सबसे बड़ी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता की बात यही है कि वह आत्मकल्याण की साधना में लगें और वानप्रस्थ जीवन के नियम धर्मों का पालन करना आरंभ कर दें। (1) स्वाध्याय-सत्संग और चिंतन-मनन में समुचित समय लगाते हुए अपनी अंत:भूमिका को अधिकाधिक परिष्कृत करने का प्रयत्न करें। (2) ईश्वर उपासना में अधिक मन लगाएँ। (3) अपने स्वभाव और संस्कारों को परमार्थ-वृत्ति से संपन्न करने के लिए लोकसेवा के कार्यक्रमों को विशुद्ध आध्यात्मिक साधना मानते हुए जनकल्याण की प्रवृत्तियों में पूरे उत्साह के साथ भाग लें। संयम, सदाचार, त्याग, उदारता, निर्लोभता और निरहंकारिता का सतर्कतापूर्वक अभ्यास करें। ये तीनों बातें जिनके जीवनक्रम का अंश बन गईं, समझना चाहिए कि वानप्रस्थ धर्म अपनाते हुए उनने मानव जीवन की सफलता का द्वार प्रशस्त कर लिया।

—अखण्ड ज्योति मई 1964, पृष्ठ-55, 56

गृहस्थ के बाद वानप्रस्थ बनें

गृहस्थ में रहते हुए एक अवस्था ऐसी आती है जब उसके लिए अपनी आवश्यकता घटने लगती है। गृहस्थी के संचालन का उत्तराधिकार संतान ले लेती है। अर्थ और काम्य प्रयोजनों को पूरा कर लेने से इंद्रियों के विषय भी काफी तृप्त हो चुके होते हैं। शास्त्रों में यह अवस्था 50 के लगभग मानी जाती है, जब लोगों को अपने कंधों का भार उतारकर परिवार के ज्येष्ठ प्रतिनिधि को सौंप देना चाहिए और लोकहित के कार्यों में अधिक रुचि लेना चाहिए। अधिक आयु के पुरुषों तथा युवकों के विचारों में प्राय: साम्य नहीं होता इसलिए पारिवारिक जीवन को अकारण कलह से बचाने के लिए भी यह आवश्यक है कि उतरती उम्र के व्यक्ति अपना जीवन समाज के लिए समर्पित कर दें। उदर-पोषण के लिए या जब तक उत्तराधिकारी पूर्ण रूप से विकसित न हो जाए और उस व्यक्ति के मार्गदर्शन की आवश्यकता बनी रहे, तब तक कोई व्यक्ति पारिवारिक संपर्क में बना रह सकता है, पर उसे केवल अपने आप को व्यवस्थापक रहकर ही चलना चाहिए और जीवन का अधिकांश भाग आत्मचिंतन तथा लोकोपकारी साधनाओं में खरच करना चाहिए। अनावश्यक आसक्ति और मोह के कारण प्राय: लोग परिवार को छोड़ना नहीं चाहते, उसी से चिपके रहना चाहते हैं। उन्हें यह गलतफहमी होती है कि यदि वे नहीं रहेंगे तो शायद बालकों का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवित रहना कठिन हो जाएगा। यह मोह-बुद्धि परिवार में अनेक बखेड़ों का कारण बनती है। गृहस्थी का संचालन सुचारु रूप से चलते रहने देने की दृष्टि से अपना शरीर परिवार से हटा लेना कुछ बुरा नहीं, वरन यह एक नैतिक धर्म-कर्त्तव्य है। नए की स्थापना के लिए पुराने को वहाँ से हट ही जाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1965, पृष्ठ-32

वानप्रस्थ बनें, लोकसेवा करें

जहाँ व्यक्तिगत पूजा-पाठ में समाजसेवा का समावेश नहीं रहता, वहाँ समाजसेवा में जनता-जनार्दन की परिचर्या करने, विश्व-विराट की आराधना करने में भजन-पूजन का भाव सन्निहित रहता है। भजन शब्द 'भज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ सेवा ही होता है। जिस विधान में सेवा सम्मिलित नहीं, वह न तो पूजा है और न आराधना। वानप्रस्थ आश्रम का मूल प्रयोजन भी समाजसेवा ही है। विषय-वासनाओं एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व से मुक्त होकर ही कोई मनुष्य निस्स्वार्थ भाव से समाज की आराधना के कार्यक्रमों में योगदान कर सकता है। यदि समाज की रखवाली करने वाले, उसे ठीक दिशा दिखलाने और दुष्प्रवृत्तियों से सावधान करने वाले अनुभवी व्यक्ति आगे न बढ़ते रहें तो निश्चय ही मानव समाज कुछ ही समय में भयानक रूप से पतित हो जाए और ऐसी अवस्था में मनुष्य की क्या दशा हो जाए, कुछ नहीं कहा जा सकता। निस्पृह, निस्स्वार्थ, निष्काम, अनुभवी एवं परितृप्त व्यक्ति ही समाज की रखवाली ठीक तरह से कर सकते हैं और ऐसे साधु पुरुष वे वानप्रस्थी ही हो सकते हैं जो पारिवारिक उत्तरदायित्व से मुक्त होकर उस अवस्था में आ गए हैं, जिसमें वितृष्णाओं की कमी हो जाती है और वे किसी रूप में शोभा भी नहीं देतीं।

अस्तु, मनुष्यों का पावन कर्त्तव्य है कि वह पचास वर्ष की आयु होने पर वानप्रस्थ धर्म में दीक्षित होकर सामाजिक ऋण से उऋण होवें। समाज का प्रहरी बनने और आत्मा की मुक्ति के लिए निस्पृह भाव से निरंतर लोकसेवा के कामों में निरत होकर मानव जीवन को सार्थक बनाएँ।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1966, पृष्ठ-26

वानप्रस्थ लोक-कल्याण की गतिविधियों का संचालन करें

जिनकी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निवृत हो चुकी हैं, बच्चे कमाने-खाने लगे हैं, उपार्जन एवं व्यवस्था का उत्तरदायित्व दूसरों ने सँभाल लिया है; नौकरी से निवृत्त होकर पेंशन, फंड आदि की व्यवस्था बना ली है अथवा जिन्हें पैतृक उत्तराधिकार में गुजारे जितनी संपत्ति मिल गई है, उनके लिए यही उचित है कि अपना शेष जीवन धन-उपार्जन करते रहने की तृष्णा में ही बरबाद न करें। बाल-बच्चों को प्यार करना उचित है, पर उनके मोह में अपना जीवनोद्देश्य नष्ट करना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उचित नहीं। नाती-पोतों को गोदी में खिलाते रहने की और आराम से दिन काटने की रीति-नीति निरुद्देश्य, निकम्मे व्यक्तियों के लायक है। जिनमें थोड़ा जीवन है, विवेक है, अंत: प्रकाश है; उन्हें अपनी गतिविधियाँ आदर्शवादिता के ढाँचे में ढालनी चाहिए।

जब तक परिवार की जिम्मेदारियाँ अपने सिर पर हैं, तब तक घर की सीमा में बँधे रहना ही होता है, पर जब बड़े बच्चे ने घर सँभाल लिया तो उसके ऊपर छोटे भाई-बहनों की जिम्मेदारी भी चली जाती है। प्राचीनकाल में यही प्रथा थी, बड़े बच्चे को उत्तराधिकारी, युवराज बनाकर लोग आत्मकल्याण के लिए आत्मोत्थान की दिशा में चल पड़ते थे। वानप्रस्थ जीवन व्यतीत करके अपना और समस्त संसार का भला करते थे। ढलती आयु में वही मार्ग अपनाना हर विवेकशील व्यक्ति के लिए उचित है।

बचपन की लौकिक शिक्षा, साधना जवानी में गृहस्थ को सुखी-समृद्ध बनाती है। ढलती आयु में पुन: वैसा ही समय आता है। वानप्रस्थ में आध्यात्मिक शिक्षा, साधना का पुन: वैसा ही अवसर आता है। इससे मरणोत्तर जीवन सफल बनता है। आत्मा को परमात्मा की दिशा में बढ़ने का अवसर मिलता है और समस्त संसार की, देश, धर्म, समाज, संस्कृति की सेवा करने का मंगलमय सौभाग्य मिलता है। जीवनकाल में ढलती आयु के गृहनिवृत्त, वानप्रस्थ ही लोक-निर्माण की समस्त सत्प्रवृत्तियों का संचालन करते थे। वे ही अपने समय एवं समाज के सच्चे नेता और निर्माता होते थे। खेद है कि ढलती आयु के गृहनिवृत्त व्यक्ति भी तृष्णा-वासना के कीचड़ में पड़े सड़ रहे हैं और मानव जाति को उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं से वंचित कर रहे हैं।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1967, पृष्ठ-31, 32

वानप्रस्थ में लोकमंगल की साधना

ढलती आयु के हर व्यक्ति को स्वाध्याय, उपासना और आत्मशोधन की तपश्चर्या के लिए समय निकालना चाहिए और लोकमंगल की साधना में नियमित रूप से कम-से-कम चार घंटा समय देना चाहिए। प्रात: और सायंकाल का समय व्यक्तिगत साधना के लिए और दिन का बचा समय लोकमंगल की सेवा-प्रक्रिया में लगाने के लिए नियुक्त रहना चाहिए। कहना न होगा कि समय की आवश्यकता को देखते हुए आज की सबसे बड़ी लोकसेवा विचार-परिवर्तन की दृष्टि से किए गए प्रयत्नों पर ही निर्भर है। आर्थिक, शारीरिक या बौद्धिक सुविधाएँ बढ़ाने वाले कार्य भी यों सेवाक्षेत्र में आते हैं, पर उनका भी महत्त्व तभी है, जब लोगों की विचारपद्धति का परिष्कार हो, अन्यथा अगणित सुख-सुविधाएँ रहते हुए भी मनुष्य दुखी ही बना रहेगा। सुखों की मूल भित्ति उच्च विचारणा ही है। समाज में विचारशीलता, विवेकशीलता और सद्भावना बढ़ सके, ऐसे लोकसेवा के कार्यों को हाथ में लेना वानप्रस्थ साधना का अविच्छिन्न अंग है। इस साधना को करते हुए आत्मकल्याण, पूर्णता की प्राप्ति और ईश्वरीय प्रकाश की उपलब्धि का पूरा लाभ एवं आनंद उठाया जा सकता है। सत्कर्मों से ही शुभ संस्कार बनते हैं और वे हमारी प्रधान आध्यात्मिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूँजी हैं। सद्भावना अभिवर्द्धन की लोकसेवा उसी प्रयोजन की पूर्ति करती है। वानप्रस्थ में साधु-ब्राह्मणों जैसी लोकमानस को परिष्कृत करने की सेवा साधना करनी होती है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1969, पृष्ठ-51

वानप्रस्थों ने दिया सराहनीय योगदान

अनेक सत्प्रवृत्तियों के गतिशील रहने से ही समाज की श्रेष्ठता और महानता सुदृढ़ रह सकती है। इस कार्य के लिए ढलती आयु के व्यक्तियों को अपना जीवन समर्पित करना चाहिए। उसे उदारता, दान, परमार्थ, धर्म, पुण्य कुछ भी कहा जा सकता है। ऋण चुकाना या कर्त्तव्यपालन भी इसे कह सकते हैं। कहा कुछ भी जाए, यह है नितांत आवश्यक। यह परंपरा चलते रहने से ही सुयोग्य समाजसेवियों की आवश्यकता पूरी हो सकती है और सामाजिक महानता अक्षुण्ण रह सकती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी को शास्त्र मर्यादा या ईश्वरीय आज्ञा के रूप में ढलती आयु में 'वानप्रस्थ' ग्रहण करके अपना श्रम, समय और मनोयोग लोक-कल्याण के लिए लगाने का निर्देश दिया गया है।

जब तक इस वानप्रस्थ परंपरा का निर्वाह भारतीय समाज में ठीक तरह होता रहा, तब तक यहाँ की सामाजिक स्थिति अति उच्चकोटि की बनी रही और उससे प्रभावित होकर घर-घर में नर-रत्न उत्पन्न होते रहे, जिन्होंने समस्त विश्व में श्रेष्ठता की मर्यादाओं को स्थापित करने में महान योगदान दिया।

जब से हम संकीर्ण और स्वार्थी होते चले गए, समाज का ऋणभार लेने की निर्लज्जता अपना बैठे। मरते समय तक पैसा और बेटे-पोतों की ही बात सोचने वाले क्षुद्र स्तर पर आ गए, फिर समाज को सुयोग्य और निस्स्वार्थ प्रतिभाएँ मिलती ही कहाँ से और उनके बिना सामाजिक स्तर ऊँचा रहता भी कैसे? इस अभाव की पूर्ति के बिना कोई राष्ट्र और समाज प्रखर और महान रह ही नहीं सकता।

इस अभाव की पूर्ति की जानी चाहिए। जनसाधारण का दृष्टिकोण बदला जाना चाहिए। सारा जीवन पैसे और परिवार के लिए ही लगाया जाना सामाजिक अपराध घोषित किया जाना चाहिए। हर व्यक्ति को यह अनुभव कराना चाहिए कि आधा जीवन 'गौ ग्रास' है। वह समाजसेवा की अवधि है। उसका अपहरण करके निजी संपदा बढ़ाते रहना, बेटे-पोतों की टहल-चाकरी करते रहना गौ के मुख से ग्रास को छीनकर, गधे को खिलाने के बराबर है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1972, पृष्ठ-30, 32

अपनी प्रतिभा लोकमंगल में लगाने वाले ही धर्मात्मा

धर्म के आधार पर विकसित होने वाली परमार्थ-प्रवृत्ति को लोकमंगल में नियोजित करना, आत्मविद्या का मूलभूत प्रयोजन है। उसे इन दिनों पूरी तत्परता के साथ इसी भूल सुधार में लगना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए। पिछले दिनों के भटकाव को सुधारना ही इन दिनों धर्मक्षेत्र के लिए सर्वोत्तम प्रायश्चित होगा। खोई हुई आस्था और प्रतिष्ठा को वह इसी आधार पर पुनः वापस लाने में समर्थ होगा।

जिन्हें सचमुच विद्या से प्रेम है, उन्हें वर्तमान धर्म शिक्षा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने के लिए आगे आना चाहिए। बुद्धि, प्रतिभा, समय, श्रम और धन का जो जितना बड़ा अंश लोकमंगल के लिए नियोजित कर सके, उसे उतना ही बड़ा धर्मात्मा माना जाए। पिछले अंधकार युग की सामाजिक एवं बौद्धिक विकृतियाँ इतनी अधिक अभी भी भरी हुई हैं कि उनकी सफाई में भारी प्रयत्न करने की आवश्यकता है। उत्कृष्ट चिंतन और आदर्शवादी कर्तृत्व को जनसाधारण के दृष्टिकोण, स्वभाव एवं अभ्यास में स्थान दिलाने के लिए घनघोर प्रयास करने होंगे। इसके लिए प्रत्येक धर्मप्रेमी को सामयिक कर्त्तव्य समझकर सर्वतोभावेन संलग्न होना चाहिए। धर्म शिक्षा का, आत्मविद्या का प्रशिक्षण इन दिनों इसी केंद्र पर केंद्रित रहना चाहिए। इसी प्रयास को आत्मकल्याण, स्वर्ग-मुक्ति एवं ईश्वरप्राप्ति की सर्वोत्तम युग साधना बनाया जाना चाहिए। धर्म और ईश्वर के नाम पर खरच होने वाला प्रत्येक पैसा और समय का प्रत्येक क्षण इसी केंद्र पर केंद्रित किया जाना चाहिए।

वानप्रस्थ परंपरा इसलिए थी कि अधेड़ होने तक मनुष्य अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त हो ले और जीवन का उत्तरार्द्ध लोकमंगल के लिए उत्सर्ग करे। इस परंपरा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है ताकि सुयोग्य, अवैतनिक, भावनाशील, अनुभवी सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की सेना का उद्‌भव फिर शुरू हो जाए और उसके द्वारा सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रांति की—सर्वतोमुखी नवनिर्माण की आवश्यकता को पूरा किया जाना सहज ही संभव हो सके।

शिक्षा और विद्या में परिवर्तन और सुधार ही मानवीय प्रगति का मूलभूत आधार है। विश्व-कल्याण और विश्व-शांति के उभयपक्षीय प्रयोजन शिक्षा और विद्या के परिष्कार पर अवलंबित हैं। इस तथ्य को जितनी जल्दी समझ लिया जाए, उतना ही उत्तम है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1972, पृष्ठ-49

वृद्धों को हमारा परामर्श

समय रहते चेतने की नीति यदि स्वीकार हो तो वृद्धावस्था के आगमन की गति धीमी करने वाले आवश्यक उपाय सहज ही अपनाए जा सकते हैं। काम तो पूरे समय किया जाता रहे, पर उसे हलका बनाया जाए। बीच-बीच में सुस्ता-सुस्ता कर किया जाए। आलसी बनने की आवश्यकता नहीं है। काम को मनोरंजन बनाया जा सकता है और उसे खेल की तरह खेलते हुए स्वास्थ्य रक्षा, उत्पादन, लोकहित और आत्मसंतोष का बहुमुखी लाभ उठाया जा सकता है।

भूख घट जाए तो भोजन की मात्रा तुरंत कम कर देनी चाहिए। पेट की थैली तो युवावस्था जितनी ही फैली रहती है और उसे ठूँसते रहने की पुरानी आदत भी बनी रहती है किंतु पाचनशक्ति की न्यूनता से उतना पच नहीं पाता। अपच से विष उत्पन्न होता है और उससे शरीर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को वृद्धावस्था के साथ-साथ रुग्णता का भी कष्ट सहना पड़ता है। यह सोचना गलत है कि कम खाने से कम शक्ति मिलेगी। भोजन का उतना ही अंश लाभदायक होता है जो पच सके। बुढ़ापे में थोड़ा भोजन ही पच सकता है। अस्तु, उसकी मात्रा पेट की सामर्थ्य गिरते ही तुरंत घटानी आरंभ कर देनी चाहिए। युवावस्था की तुलना में वृद्धावस्था का भोजन आधा तो कर ही देना चाहिए। आवश्यकतानुसार उसे और भी अधिक अनुपात में कम किया जा सकता है। एक समय भोजन दूसरे समय दूध, फल आदि हलकी चीजें लेकर काम चलाया जाए। भोजन से गरिष्ठता हटा दी जाए। सात्विक भोजन बच्चे और बूढ़ों के लिए भी उपयुक्त है। इंद्रियनिग्रह यों होता तो सभी के लिए उत्तम है, पर वृद्धावस्था में तो उस पर अधिकाधिक अंकुश ही लगाते चलना चाहिए। प्रातःकाल कई मील नियमित रूप से टहलने जाना, गहरी और लंबी सांस लेने की आदत डालना, बुढ़ापे पर नियंत्रण करने का अच्छा उपचार है। भोजन के समय तो उतना नहीं, पर बाद में कई गिलास पानी पीने की आदत डालनी चाहिए। व्यस्तता में लोग पानी पीने की उपेक्षा करने लगते हैं। फलतः शरीर में जलीय अंश घट जाने से नस-नाड़ियों में, मांस-पेशियों में कठोरता उत्पन्न होती है और मलों के निष्कासन में रुकावट पड़ती है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1979, पृष्ठ-46, 47

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थ बनाम आत्मोत्कर्ष और सेवा साधना

वानप्रस्थ का मतलब किसी जमाने में सघन आरण्यकों में रहना होता था। वहाँ उस समय की स्थिति के अनुरूप क्षमताएँ बढ़ाने वाली तपश्चर्या की जाती थी। अब स्थिति दूसरी है। अस्तु, सनातन लक्ष्य की रक्षा करते हुए व्यवस्था क्रम में थोड़ा हेर-फेर करना ही पड़ेगा। इन परिस्थितियों में यह उचित है कि घर-परिवार में पूरी तरह घुले रहने की अपेक्षा उससे कुछ दूरी बनाई जाए, भले ही देख-भाल परामर्श का आने-जाने का क्रम बना रहे, पर मनःस्थिति यह होनी चाहिए कि हम इस छोटे परिवार तक सीमित न रहकर विश्व-वसुधा की संपत्ति बन गए। अब अपने उत्तरदायित्व विश्वमानव की सुख-शांति के लिए अथक प्रयास करने की परिधि तक बढ़ गए हैं। अब अपना प्रधान कार्य आत्मोत्कर्ष है। इसके लिए उपासनात्मक तपश्चर्या और साधनात्मक सेवा साधना में समय और शक्ति को पूरी तरह नियोजित करना है।

—अखण्ड ज्योति जून 1973, पृष्ठ-65

वानप्रस्थी जीवन दर्शन

वानप्रस्थ का सामान्य स्वरूप है—व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं को जीवन-निर्वाह के सादगीपूर्ण बिंदु तक सीमित करके, संयमी और मितव्ययी जीवन जिया जाए। संतानोत्पादन न किया जाए। आंतरिक स्तर को परिष्कृत करने के लिए सद्ज्ञान-संचय एवं तप-साधना का आश्रय लिया

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाए। इसके अतिरिक्त जनमानस में युगांतरकारी परिवर्तन लाने के लिए ज्ञानयज्ञ की ज्वालाएँ प्रचंड बनाने की सेवा-साधना में अनवरत रूप से तत्पर रहा जाए। यही है वानप्रस्थी जीवन दर्शन। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपनी शक्तियों को अधिकाधिक मात्रा में लगाना आवश्यक हो जाता है। अत: यह आवश्यक है कि पारिवारिक उत्तरदायित्वों का भार या तो बिलकुल ही न हो, यदि हो तो वह इतना कम हो कि परमार्थ प्रयोजन की विधि-व्यवस्था के लिए अवकाश और मनोयोग की कहने लायक मात्रा हाथ में रह सके।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 2006, पृष्ठ-34

स्वाध्याय-माहात्म्य

भावन्त: वा इमां पृथिवी वित्तेन पूर्णमद तल्लोकं जयति त्रिस्तावन्तं जयति भूयां सेवाक्षम्यय एवं विद्वान अहरह स्वाध्याय मधीते।

—शतपथ ब्राह्मण

तात्पर्य यह है कि धन-धान्य से संपन्न धरती दान करने से, जितना पुण्य दाता को मिलता है, उसके तीन गुने से भी अधिक लाभ नियमित रूप से स्वाध्यायशील को मिलता है।

स्वाध्याय योग युक्तात्मा परमात्मा प्रकाशते।

—महर्षि व्यास

स्वाध्याययुक्त साधना से ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

नित्यं स्वाध्यायशीलश्च दुर्गान्यति तरन्ति ते।

—महाभारत शांति पर्व

नित्य स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति दु:खों से पार हो जाता है।

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते। **—गीता 17/15**

स्वाध्याय करना ही प्राणी का तप है।

स्वाध्याय से बढ़कर आनंद कुछ नहीं।

—गांधी जी

मुझे नरक में भेज दो, वहाँ भी स्वर्ग बना दूँगा, यदि मेरे पास पुस्तकें हों।

—लोकमान्य तिलक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-4

शिक्षा का उद्देश्य गुरुकुल पद्धति

सा विद्या या विमुक्तये

जो उद्योग हममें से पशुपन निकाल दें, मक्कारी दूर कर दें, स्वार्थ नष्ट कर दें, अन्यायपूर्ण बल का उपयोग हटा दें, प्रकृति माता के भोगों का न्यायपूर्वक भोग करना सिखा दे, उस उद्योग का नाम शिक्षा है।

शिक्षा वह है, जिसके द्वारा मनुष्य कठिनाइयों को दूर भगाने के योग्य बन सके। जो बुद्धि के विकास में सहायता दे, जिसमें संकट दूर करने के उपाय ढूँढ़ निकालने का बल हो, जिससे स्वावलंबन की शक्ति मिलती हो।

लिखना-पढ़ना जान लेना शिक्षा नहीं है, यह केवल सरस्वती देवी के मंदिर में प्रवेश करना है।

'सा विद्या या विमुक्तये' जो मुक्ति के योग्य बनाती है, वह है विद्या, शेष सब अविद्या है। इस कारण जो शिक्षा, चित्त की शुद्धि न करती हो, मन और इंद्रियों को वश में रखना न सिखाती हो, निर्भयता और स्वावलंबन न पैदा करे, उपजीविका का साधन न बताए और गुलामी से छूटने का और आजाद रहने का हौसला, साहस और सामर्थ्य न पैदा करे उसमें चाहे जानकारी का खजाना ही भरा हो वह वास्तविक नहीं नकली है; भले ही उसमें अगाध तार्किक कुशलता और भाषा पांडित्य हो।

शिक्षित वह है, जिसमें पशुपन का अभाव और मनुष्यत्व का पूर्ण समावेश हो। जैसे चारों वेदों से लदा हुआ गधा पंडित नहीं हो जाता, वैसे ही बड़ी-बड़ी डिग्रियों का धारण करने वाला शिक्षित नहीं कहला सकता।

शिक्षित मनुष्य वह है, जो अपनी शक्तियों को पहचानता है। जो सदगुणों की महानता समझकर उनका यथेष्ट उपयोग करे वही शिक्षित है।

शिक्षा-प्रणाली में उद्योग, दस्तकारी की शिक्षा को भी स्थान मिलना चाहिए। इससे मानसिक दासता भी दूर की जा सकेगी। शिक्षा का एक गुण धार्मिक सहनशीलता भी है। शिक्षित व्यक्ति वह है जो अपने विरोधी को वैसी ही मानसिक स्वतंत्रता देने का पक्षपाती हो, जैसी वह अपने लिए चाहता है।

—अखण्ड ज्योति जून 1945, पृष्ठ-137

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा मानवता के गुण सिखाती है

शिक्षा का उद्देश्य शिष्यों को भगवान और व्यक्ति से प्रेम करना सिखाना है। सच्ची शिक्षा वही है जो विद्यार्थियों को सत्यवक्ता, सच्चरित्र, निर्भय, नम्र एवं दयावान बनाती है और उन्हें सदाचरण, सादा जीवन, उच्च विचार, आत्मबलिदान तथा ब्रह्मविद्या का पाठ पढ़ाती है।

दैवों, असुरों तथा मनुष्यों ने प्रजापति की अध्यक्षता में शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने आत्मसंयम, उदारता और दया के पाठ पढ़े। यही वास्तविक शिक्षा है।

सब विश्वविद्यालयों का वास्तविक कार्य मनुष्य को मनुष्य से मिलाना होना चाहिए। गीता, उपनिषद, रामायण, भागवत, महाभारत, पातंजल योगसूत्र, ब्रह्मसूत्र, तुलनात्मक धर्म और दर्शन, सब विद्यालयों में पढ़ाए जाने चाहिए। इनका अध्ययन आवश्यक होना चाहिए। नैतिक शास्त्र, योग, ध्यान, मन का नियंत्रण इन विषयों पर विद्यार्थियों को क्रियात्मक शिक्षाएँ भी दी जानी चाहिए। संस्कृत का अध्ययन आवश्यक होना चाहिए। संस्कृत के अध्ययन के बिना दर्शन के गंभीर तत्त्व नहीं समझे जा सकते।

कॉलेजों के प्रिंसिपल और प्रोफेसर महानुभावों तथा हाईस्कूलों के हैड मास्टरों का ऊँचे उठे हुए संन्यासियों और योगियों द्वारा पथ-प्रदर्शन किया जाना चाहिए, तभी वास्तविक शिक्षा विद्यार्थियों को दी जा सकती है। यदि प्रतिवर्ष भारत के विद्यालयों से वास्तविक शिक्षा को ग्रहण किए हुए छात्र बाहर निकले तो उज्ज्वल, नवभारत का निर्माण और शांति, समृद्धि तथा आनंद का नूतन युग उपस्थित होगा।

संसार को अध्यात्म-धन के धनी व्यक्तियों की आवश्यकता है। जाग्रत आत्माएँ जिन्होंने ज्योति प्राप्त कर ली है, विश्व के लिए वरदान हैं। वे लोगों को सन्मार्ग की ओर ले जाएँगी तथा अज्ञान का समुद्र पार करने में उनकी सहायता करेंगी और अमरत्व तथा अक्षय आनंद प्राप्त कराएँगी।

भगवान करे आप सबको सत्यज्ञान और वास्तविक शिक्षा प्राप्त हो। संसार वास्तविक शिक्षा संपन्न पुरुषों से भरपूर हो। विश्वविद्यालय, कॉलिज और स्कूल वास्तविक शिक्षा और संस्कृत के केंद्र हो। तुम सब शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य और जीवन के लक्ष्य को समझो। शिक्षा-संस्थाओं के अधिकारी वर्ग में दिव्य ज्ञान-ज्योति जागे जिससे वे विद्यार्थियों का पथ प्रदर्शन कर सकें।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1945, पृष्ठ-245-246

प्राचीन ऋषि प्रणाली पुनः उदय होगी

आजकल केवल भौतिक जानकारियों की शिक्षा स्कूल कॉलिजों में दी जाती है। गणित, भूगोल, इतिहास, भाषा, विज्ञान, रसायन आदि विषय पढ़ाकर शिक्षकगण अपने कर्त्तव्य की इति समझ लेते हैं। परीक्षक लोग प्रश्नपत्रों द्वारा यह जाँच लेते हैं कि छात्र ने इन विषयों को किस सीमा तक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

याद किया है ? उत्तीर्ण छात्रों को बी.ए., एम.ए. विशारद आदि की उपाधि दे दी जाती है। यह उपाधि यह प्रकट करती है कि छात्र ने अमुक विषयों में, अमुक श्रेणी जैसी शिक्षा प्राप्त कर ली है।

प्राचीनकाल में इस प्रकार की भौतिक शिक्षा प्रणाली न थी। उस समय गुरु का कार्य शिष्य को भौतिक विषयों की शिक्षा देने के साथ-साथ उनके व्यक्तिगत जीवन में गुण, कर्म और स्वभावों का समुचित विकास करना भी था। इसलिए गुरु का महत्त्व, माता और पिता के बराबर समझा जाता था। पहला जन्म माता-पिता के रज-वीर्य से होता था—दूसरा जन्म गुरुकुल में आचार्य द्वारा होता था। तब द्विज—द्विजन्मा बनते थे। गुरु 'शिक्षा' से अधिक 'विद्या' पढ़ाते थे। भौतिक बातों की अपेक्षा आत्मनिर्माण संबंधी ज्ञान देते थे।

प्राचीनकाल में गुण, कर्म, स्वभाव और योग्यता के अनुकूल गुरुकुल में परीक्षा होती थी। उसी के आधार पर गुरु उपाधि देते थे। ये उपाधियाँ शिष्यों के गुणों और योग्यताओं की प्रतीक होती थीं।

ये उपाधियाँ सामाजिक जीवन में प्रवेश पाने के लिए आवश्यक समझी जाती थीं। इनसे प्रकट होता था कि इस व्यक्ति ने गुरुकुल में प्रवेश किया है। गुरुकुल से रहित व्यक्ति को 'निगुरा' जैसे तिरष्कार सूचक शब्दों से संबोधित किया जाता था। जैसे वैध पिता का न होना आज एक बुरी बात समझी जाती है उसी प्रकार गुरुदीक्षा प्राप्त न होना भी एक लज्जा एवं कर्त्तव्यहीनता की बात समझी जाती थी। अपनी गुरुदीक्षा के प्रतीक गुरुकुल की पदवियों को लोग सम्मान और आग्रह के साथ धारण करके, अपने को गौरवान्वित समझते थे।

आज स्कूली भौतिक शिक्षा का बोलबाला है। बी.ए., एम.ए. की डिग्रियाँ पेट भर रोटी दिलाने में समर्थ न होने के कारण अपनी भौतिक महत्ता भी खो रही हैं। गुरुकुल प्रणाली का लोप हो चला है। इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति के कारण आज पदवियों की निरर्थकता दृष्टिगोचर होती है। वह समय दूर नहीं जब प्राचीन ऋषि प्रणाली का पुनः उदय होगा और भारतमाता की आर्य संतानें ऋषिपद्धति से जीवन को सच्चा जीवन बनाने वाली गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त करेंगी। भगवान वह दिन शीघ्र लाए।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1948, पृष्ठ-16-17

शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन होगा

अगले दिनों ऐसी शिक्षा का प्रबंध करना पड़ेगा जिससे मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप एवं कर्त्तव्य-दायित्व का गंभीरतापूर्वक भान करे। साथ में ऐसा आचरण भी करे जो आत्मा की पुकार, परमात्मा के संकेत एवं युगधर्म की चुनौती स्वीकारने के लिए विवश कर सके। ऐसी शिक्षा स्कूली पाठ्यक्रम में छात्रों के लिए सम्मिलित रहेगी। अध्यापकों को अपना चरित्र उसी ढाँचे में ढला हुआ सिद्ध करना पड़ेगा। यह नियमित पढ़ाई की बात हुई जिसे स्कूली शिक्षा कहते हैं। यह आवश्यक तो है, पर पर्याप्त नहीं। धर्मोपदेशकों, कर्णधारों, नेतृत्व कर सकने की स्थिति में पहुँचे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुए साहित्यकारों, कलाकारों को अपने-अपने साधनों एवं कौशल के सहारे जनमानस में वह प्रेरणा गहराई तक पहुँचानी पड़ेगी। जिसके सहारे अपने व्यक्तित्व को विभूतिवान, प्रतिभावान, चरित्रवान और कर्त्तव्यपरायण सिद्ध कर सकें। ऐसी शिक्षा के लिए हमें अभी से तैयारी करनी होगी, जिससे कि अगली शताब्दी का जन समुदाय आदर्शवादी, कर्मनिष्ठ और सिद्धांतों के प्रति आस्थावान, दृढ़व्रती दृष्टिगोचर हो सके।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1987, पृष्ठ-44

शिक्षा का उद्देश्य

भारतीय बच्चों के सामने शिक्षा का नया आदर्श रखना है। उनको कर्मवीर बनाने की शिक्षा देनी है। उनके अंदर स्वावलंबन की संजीवनी शक्ति भरनी है। यह सब तभी होगा जब श्रम की महत्ता को शिक्षा में प्रथम स्थान दिया जाएगा, जब देश के लोग चरित्र की कसौटी से ऊँच-नीच की परख करेंगे। अकर्मण्यता का जहर जो आज हमारे समाज में फैल रहा है, उसको निकालना है। जो शिक्षा आजकल स्कूलों में दी जाती है, वह केवल एक प्रकार का वपतिस्मा है। यह किसी भलेमानस की बात समझने लायक बनाती है। उसको मैं शिक्षा नहीं कहता, शिक्षा दूसरी वस्तु है। वर्तमान शिक्षा से उलटी भीरुता, कायरता और अकर्मण्यता फैल गई है और हमारा बल, वीर्य नष्ट हो गया है। इसलिए हमें सच्ची शिक्षा की ओर आना चाहिए और अपनी पिछली भूलों को सुधारने का यत्न करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1953, पृष्ठ-12

अच्छी शिक्षा से ही राष्ट्र का उत्थान

वैदिक युग में शिक्षा को इतना महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता था कि जीवन का प्रथम भाग इसी में समाप्त हो जाता था। इसी प्रथमावस्था की शिक्षा शिक्षार्थी के भावीजीवन को सुंदर बना देती थी। गुरुकुलों की शिक्षा, जहाँ पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन कराते हुए दी जाती थी, वहाँ विद्याभ्यास के साथ-साथ ही शिक्षार्थीगण नीति शास्त्र, राज्य रक्षा के प्रकार तथा राष्ट्र के प्रमुख-प्रमुख हितों की महत्त्वपूर्ण समस्याओं को भी सीख जाया करते थे।

गुरुकुल के विद्यार्थी उस समय राष्ट्र की निधि समझे जाते थे। आचार्यों द्वारा शिक्षा प्राप्त करके शिक्षार्थी एक सफल गृहस्थ, विद्वान, सदाचारी, अध्यात्मतत्त्व ज्ञानी, आस्तिक होता था और साथ ही मनुष्य भी।

आज की शिक्षा को जब उस वैदिक युग की शिक्षा से मिलाते हैं तो इसी परिणाम पर दृष्टि जाती है कि वर्तमान शिक्षा अधूरी है। माना कि उस वैदिक युग में और इस युग में बहुत अंतर है। न वैसे शिक्षार्थी हैं और न शिक्षा, किंतु जो कुछ भी प्राप्त है उससे भी शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाकर शिक्षा का आदर्श एवं लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा से मानव में पूर्णता आती है। जीवन स्तर और बौद्धिक शक्ति का विकास होता है। राष्ट्र का उत्थान अच्छी शिक्षा प्राप्त होने से हो सकता है। अतएव शिक्षा के सर्वांगीण विकास के मूलतत्त्व को विकसित करना नितांत आवश्यक है। शिक्षालयों का वातावरण जिस तरह अधिक अच्छा बनाया जाए उसके लिए प्रत्येक संभव प्रयत्न किया जाए। मनुष्य के मस्तिष्क के साथ ही उसके हृदय को भी विशाल एवं उदार जिस शिक्षा के माध्यम से बनाया जाए; आज वैसी ही शिक्षा की नितांत आवश्यकता है।

—अखण्ड ज्योति जून 1959, पृष्ठ-30

स्वास्थ्य

मन चंगा तो कठौती में गंगा

जो लोग स्वस्थ और नीरोग रहना चाहते हैं, उन्हें समझ लेना चाहिए कि इसका मूल केंद्र मन है। कहा है कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।' मन के पवित्र और प्रसन्न होने पर कठौती जैसे क्षुद्र साधन के अंतर्गत गंगा जैसे दुर्लभ तत्त्व भरे जा सकते हैं, यह कोई कल्पना नहीं, वरन अक्षरश: सत्य है। अपनी स्थिति के अनुसार जो कुछ भोजन तुम प्राप्त कर सकते हो, उसे पवित्रता और प्रसन्नता के साथ खाओ। एक-एक ग्रास के चर्वण के साथ अमृतत्त्व की भावना करते जाओ। थाली पर हाथ डालते और छोड़ते समय परमात्मा से प्रार्थना करो कि हे प्रभु यह अन्न हमारे लिए कल्याणकारी हो, हमें अमृतत्त्व प्रदान करें। निश्चय ही वह अन्न हमारे लिए उत्तम पौष्टिक पदार्थों के समान बलवर्द्धक सिद्ध होगा।

अपने दैनिक जीवन में मन को ऐसी स्थिति में रखिए कि वह प्रसन्न रहे और निराशा एवं क्षोभ के अंधकूप में न गिरने पाए। अपने कार्यों को निर्दोष एवं पवित्र रखिए, जिससे आंतरिक शांति नष्ट न होने पाए। निर्भय और निर्द्वंद रहिए ताकि रोग, शोक आपको देखते ही उलटे पाँवों लौट जाएँ। कहते हैं कि भूत वहाँ जाते हैं, जहाँ उन्हें बुलाया जाता है। इसी प्रकार रोग वहाँ जाते हैं, जहाँ उनका आदर होता है। जो रोग की आवभगत नहीं करता यहाँ तक कि उनके आने का विचार तक मन में नहीं उठने देता, उसके घर तिरस्कृत अतिथि की तरह वे पुन: वहाँ जाने की इच्छा नहीं करते। दुर्गुणों और कुविचारों के लिए अपने मन के कपाट मत खोलिए क्योंकि रोग और शोक इन्हीं का नाम है। आप चाहे कुछ कहते रहें पर हमें दृढ़तापूर्वक यही घोषणा करने दीजिए कि सुविचार ही स्वास्थ्य है, प्रसन्नता ही शक्ति है। यदि कोई स्वस्थ रहना चाहता है तो मन को पवित्र और प्रसन्न रखे, क्योंकि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' वाला सिद्धांत बिलकुल सत्य है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1941, पृष्ठ-19, 20

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वस्थ रहने का महामंत्र

लोग बीमारी से छुटकारा पाने और बल बढ़ाने के लिए वैद्य-डॉक्टरों की देहरी की धूल चाटते रहते हैं। हजारों रुपए पानी की तरह बहाते हैं, तरह-तरह के खाद्य पदार्थ और नाना गुण-दोष वाली दवाइयों की तलाश करते रहते हैं। इस मृगमरीचिका में उनके हाथ निराशा के अतिरिक्त और कुछ नहीं आता। कारण यह है कि स्वास्थ्य कोई खोजने की वस्तु नहीं है, वह तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रकृति माता ने वह तो आरंभ से ही परिपूर्ण मात्रा में प्रदान किया है। उसे सुरक्षित रखने के लिए किसी बाहरी प्रयत्न की जरूरत नहीं है। केवल इस बात की आवश्यकता है कि हम अपने शरीर पर अत्याचार करना, अपनी इंद्रिय शक्तियों का दुरुपयोग करना बंद कर दें। इतना करने मात्र से बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य सुधर सकता है और सुधरा हुआ स्वास्थ्य बढ़ सकता है।

यदि हम दीर्घजीवी रहना चाहते हैं तो सबसे पहले जिह्वा, इंद्रिय और कामेंद्रिय का दुरुपयोग छोड़ना पड़ेगा। पेट में भूख न रहते हुए लोग स्वादवश अनावश्यक भोजन ठूँसते रहते हैं, भोजन को अपने स्वाभाविक रूप से विकृत करके उसे जायके के लिए ऐसा भूनते, जलाते, सड़ाते एवं बिगाड़ते हैं कि उसके पोषण-तत्त्व नष्ट होकर, वह केवल भूख बुझाने वाला बोझ मात्र रह जाता है। इन दोनों बुराइयों से बचने की आवश्यकता है। भोजन तभी किया जाए जब कड़ाके की भूख लगी हो, पेट की आवश्यकता और पुकार पर ही ग्रास तोड़ा जाए, नहीं तो स्वाद की दृष्टि से तो अनावश्यक अमृत को भी ठुकरा देना चाहिए। जो भोजन किया जाए यथासंभव सजीव हो। फल, दूध, हरे शाक-भाजी, मेवे, पानी में भिगोए हुए अन्न भोजन का मुख्य भाग होना चाहिए। यदि किसी चीज को पकाना ही पड़े तो पानी में उबाल लेना या थोड़ा सेक लेना पर्याप्त है। घी, तेल में तली हुई, बहुत जली-भुनी हुई, बासी, मसाले और चीनी मिलाकर जायकेदार बनाई हुई, नशीली, मांस आदि अभक्ष्य चीजें शरीर को लाभ के स्थान पर हानि ही पहुँचाती है, इसलिए सात्विक, स्वाभाविक, सजीव आहार यदि खूब भूख लगने पर, अच्छी तरह चबाकर और अन्न को अमृत बुद्धि और ईश्वर प्रसाद की भावना के साथ ग्रहण किया जाए तो वह साधारण कोटि का होते हुए भी बहुत बलवर्द्धक बन जाता है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1952, पृष्ठ-04, 05

मनोविकारों से बचें, स्वस्थ और प्रसन्न रहें

उत्तेजना में अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों की भारी क्षति होती है। डॉक्टरों का कहना है कि यदि मुनष्य लगातार चार घंटे क्रोध में भरा रहे तो उसका लगभग 8 औंस खून जल जाएगा और शरीर में इतना विष उत्पन्न हो जाएगा, जितना कि एक तोला कुचला खाने से उत्पन्न होता है। चिंता की अधिकता से हड्डियों के भीतर रहने वाली मज्जा सूख जाती है। फलस्वरूप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक बीमारियाँ उठ खड़ी होती हैं। भविष्य की आशंका से जिनका चित्त भयभीत रहता है, उनके रक्त में क्षार की मात्रा घट जाती है। बाल झड़ने और सफेद होने लगते हैं। शोक के कारण नेत्रों की ज्योति क्षीणता, गठिया, बहुमूत्र, पथरी सरीखे रोग हो जाते हैं। ईर्ष्या, द्वेष एवं प्रतिहिंसा की जलन के कारण तपैदिक, दमा, बहरापन, कुष्ठ सरीखी व्याधियाँ उत्पन्न होती देखीं गईं हैं। कारण स्पष्ट है कि आवेशों के कारण जो अंतर्दाह उत्पन्न होता है, उसकी अग्नि से शरीर भीतर ही भीतर जलता रहता है और वह बीमारी तथा अकाल मृत्यु का ग्रास बन जाता है। मानसिक दृष्टि से ही ऐसे मनुष्य आधे पागल हो जाते हैं। वे आगत कठिनाइयों से छूटने के जो प्रयत्न करते हैं, वे बुद्धिहीनता के कारण उलटे पड़ते हैं और उनकी विपत्ति दूनी बढ़ जाती है। स्मरण शक्ति, सहनशीलता एवं विचारशीलता की कमी हो जाने पर वे एक प्रकार के बौद्धिक अपाहिज बन जाते हैं।

अपने को आवेशों से सदैव बचाए रखना चाहिए। समुद्र तट पर रहने वाले पर्वतों से समुद्र की लहरें नित्य टकराती रहती हैं, पर वे पर्वत जरा भी परवाह नहीं करते। खिलाड़ी खेलते हैं, कई बार हारते हैं, कई बार जीतते हैं। कई बार हारते-हारते जीत जाते हैं और कई बार जीतते-जीतते हार जाते हैं, पर कोई खिलाड़ी उसका आत्मघाती असर मन पर नहीं पड़ने देता। विश्व के रंगमंच पर हम सब खिलाड़ी हैं। प्रारब्धानुसार, विधि के विधानानुसार हममें से हर एक को हार और जीत के, दुःख और सुख के खेल खेलने पड़ते हैं, पार्ट अदा करने पड़ते हैं। इसमें उद्विग्न होने की कोई बात नहीं। हम हँसते हुए जिएँ, जीवन की हर घटना में रस लें और हार-जीत की प्रत्येक स्थिति में आनंद का अनुभव करें।

उद्विग्नता एक मानसिक बीमारी है। उससे शरीर और मन दोनों की शक्तियों का भारी नाश होता है। इसलिए उससे हमें सदैव बचना चाहिए। जीवन को सुख और समुन्नत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा मानसिक संतुलन ठीक रहे। हम दिमाग को ठंढा रखना सीखें, शांतचित से हर बात पर विचार करें और क्षणिक आवेशों से बचते हुए दूरदर्शिता की विवेकपूर्ण नीति को अपनाएँ।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1952, पृष्ठ-05

अपनी भावनाएँ ऊँची रखिए

मनुष्य की भावना ही मृत्यु है और वही अमृत। भावना की तेजस्विता मनुष्य में ओज-तेज तथा आयुष्य की वृद्धि करती है जबकि उनकी मलिनता जीवित रहने पर भी निर्जीव जैसा बना देती है।

शारीरिक दृष्टि से निर्बल हो जाने पर भी मनुष्य को मानसिक रूप से सबल बना रहना चाहिए। अपने मनोबल को बनाए रखने से शीघ्र ही ऐसा समझ में आ जाएगा और मनुष्य शारीरिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टि से भी सबल बन जाएगा। हमारे विचारों का प्रवाह जिस ओर होगा, निश्चय ही हम उसी ओर बढ़ेंगे। उद्वेग, शोक, दुःख, चिंता, निराशा अथवा जीवन के प्रति अविश्वास की भावना रखने वाले संसार में कदापि सफल अथवा सुखी नहीं रह सकते। आत्मविश्वास के साथ शक्ति भर प्रयास करने, आशापूर्ण दृष्टिकोण से देखने और साहस के साथ संघर्ष करने वाले कर्मवीर सारी कठिनाइयों को जीतकर जीवन के रंग-मंच पर प्रतिष्ठित होते हैं। जरा-सी कठिनाई आ जाने पर रोने लगने वाले, घबराकर हाथ-पैर छोड़ देने वाले अथवा अपनी शक्तियों में अविश्वास करने वाले संसार के हर सुख से वंचित रहकर शोक-संताप से भरा जीवन काटने के ही अधिकारी बन सकते हैं।

अपने प्रति उच्च भावना रखिए, छोटे-से-छोटे काम को भी महान भावना से करिए, बड़ी-से-बड़ी विपत्ति में भी निराश न होइए। आत्मविश्वास एवं आशा का प्रकाश लेकर आगे बढ़िए, जीवन के प्रति अखंड निष्ठा रखिए और देखिए कि आप एक स्वस्थ सुंदर, सफल एवं दीर्घजीवन के अधिकारी बनते हैं या नहीं?

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1966, पृष्ठ-09

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सफलता का मूलमंत्र—उत्तम स्वास्थ्य

लोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास की इच्छा रखते हैं। जिस परिस्थिति में उनका आज का जीवन होता है, कल उससे कुछ अधिक की आशा होती है। धन-संपत्ति की, जमीन-जायदाद आदि की लौकिक कामनाएँ तथा सद्प्रवृत्तियों के विकास व आत्मनिर्माण की आध्यात्मिक भावनाओं के विकास की सभी को इच्छा होती है। इसके लिए तरह-तरह के साधन-विधान उपयोग में लाए जाते हैं, किंतु यहाँ यह बात समझ लेने की है कि उन्नति का वह चाहे कैसी भी हो, मूल मंत्र उत्तम स्वास्थ्य ही है। इसके बिना जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलताएँ प्राप्त नहीं की जा सकतीं। इसलिए स्वस्थ जीवन जीने के लिए, सुखद परिणाम पाने के लिए अपने जीवन को नीरोग बनाएँ, अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें। यही सफलता का गुरुमंत्र है; यही आत्मविकास का राजमार्ग है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1964, पृष्ठ-46

स्वस्थ जीवन की आवश्यकता और सिद्धांत

दुर्भाग्य से अपने देश में शारीरिक-मानसिक रोगियों की संख्या दिन-दिन बढ़ती ही जाती है। इसका कारण जहाँ आर्थिक सुविधाओं, पोषक आहार का उपलब्ध न होना एक है, वहाँ दूसरा यह है कि आहार, विहार, स्वच्छता, उपयुक्त श्रम, मानसिक संतुलन सही न रखना भी एक बड़ा कारण है। आदतों में घुसी गंदगी, अन्यमनस्कता, अस्तव्यस्तता भी रुग्णता और दुर्बलता का एक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़ा कारण है। जब तक जीवनचर्या में आवश्यक परिवर्तन नहीं होते तब तक यह संभव नहीं कि कोई व्यक्ति आवश्यक सुविधाएँ रहने पर भी स्वस्थ रह सके। इस संदर्भ में बड़ी आयु वालों को भी सुशिक्षितों को भी इसी प्रकार की समग्र शिक्षा देनी पड़ेगी जैसी कि अनगढ़ों और अनपढ़ों को देनी पड़ती है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को अक्षुण्ण रखने की विधा से आम आदमी एक प्रकार से अपरिचित ही है। इस क्षेत्र में वैसे ही शिक्षण की आवश्यकता है जैसी कि नौसिखियों और बालकों को आरंभिक शिक्षण से शुरुआत करनी पड़ती है। जानना एक बात है और मानना दूसरी। मानने के क्षेत्र में लोग इतने अधिक पिछड़े हुए हैं मानों उसमें उनने न कभी स्वस्थ रहने के मूलभूत आधारों पर ध्यान दिया हो और न उन्हें अभ्यास में उतारने की आवश्यकता समझी हो। स्वास्थ्य रक्षा को जन-जन का एक अतीव-आवश्यक विषय मानकर उस संदर्भ में उदारचेताओं को इस हेतु सुनिश्चित सेवा साधना करते रहने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

स्वास्थ्य रक्षा के कुछ प्रमुख अंग हैं—(1) सात्विक, सुपाच्य और सीमित आहार (2) वस्त्र, मकान, उपकरण आदि में कहीं भी गंदगी न पनपने देना (3) शारीरिक श्रम उतना करना जिसमें न आलस्य पनपे और न थकान बढ़े (4) दिनचर्या को नियमित रखना (5) प्रकृति के समीप रहना और उसके निर्देशों के अनुरूप चलना (6) मनोविकारों को न पनपने देना, सदा प्रसन्नचित्त, निश्चिंत और हलकी-फुलकी, हँसती-हँसाती जिंदगी जीना (7) असंयम न बरतना (8) रोग होने पर चिकित्सा हेतु तेज दवाइयाँ न लेकर जड़ी-बूटियों पर निर्भर रहना आदि आदि।

उपरोक्त सभी बातों को जन-जन के मानस में बिठाने के लिए लोकसेवियों को स्वास्थ्य रक्षा के लिए हर स्थिति में, हर क्षेत्र में कुछ-न-कुछ करते ही रहना चाहिए। इसके लिए गाँव-गाँव आरोग्यशालाएँ बननी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1988, पृष्ठ-61

पर्यावरण

निस्स्वार्थ परोपकारी वृक्ष की सेवा-सुरक्षा परम पुण्य

आध्यात्मिक उन्नति के लिए मनुष्य का परोपकारी होना आवश्यक है। मनुष्य का स्वयं परोपकारी होना और किसी परोपकारी के प्रति आदरभाव रखना, श्रद्धा करना अथवा उसकी रक्षा करना भी परोपकार ही है और यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो पता चलेगा कि किसी की सेवा करना, भला अथवा सहायता करना एकधा परोपकार करना है, किंतु किसी परोपकारी, समाजसेवी, दानी, दयालु आदि परमार्थी व्यक्तियों के प्रति श्रद्धा रखना, आपत्ति के समय उनकी रक्षा में सहायक होना, उनके पुण्य-कार्यों में सहयोग करना द्विधा परोपकार है। एक तो व्यक्तिरूप में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परोपकारी की सेवा करना दूसरे ऐसे व्यक्ति का पोषण, परिवर्द्धन, रक्षा करना, परोक्ष रूप में उन सब लोगों की सेवा-सहायता में मूल परोपकारी के माध्यम से भागीदार बनना है।

इस द्विधा परोपकार का पुण्यफल पाने के लिए मनुष्यों को वृक्ष जैसे निस्स्वार्थ परोपकारी की हर प्रकार से सेवा, सहायता तथा सुरक्षा करनी चाहिए। वृक्षों के परोपकार का यदि लेखा-जोखा लिया जाए तो पता चलेगा कि जीव-जंतुओं तथा पक्षियों को शरण तथा भोजन-वास देने के अतिरिक्त वृक्ष मनुष्य जीवन के प्राय: सभी क्षेत्रों में किसी-न-किसी रूप में उपयोगी होते हैं। छाया, फल-फूल, ईंधन, कोयला, इमारती लकड़ी, गंध, औषधियाँ, गोंद, लाख, राल, शहद आदि न जाने जीवनोपयोगी कितनी चीजें वृक्षों से ही पाई जाती हैं। मेवे, मसाले आदि सब वृक्षों से ही मिलते हैं। अब तो कागज एवं कपड़ा भी वृक्षों के गूदे, छाल, पत्तियों तथा रेशों से बनने लगा है। हल से लेकर खुरपी तक और बैलगाड़ी से लेकर हवाई जहाज तक के निर्माण में वृक्षों से प्राप्त होने वाली लकड़ी का विशेष स्थान है।

प्राणरक्षक ऑक्सीजन गैस का देना और घातक गैस कार्बन डाइऑक्साइड गैस का शोषण करना वृक्षों का ही पुण्य-कार्य है। यदि ऐसा न हो तो पृथ्वी पर प्राणियों का जीवन असंभव हो जाए। उपकारी वृक्षों को पालना, उनकी रक्षा करना तथा उनको लगाना कितना महान पुण्य हो सकता है और इनका काटना तथा उजाड़ना कितना जघन्य पाप हो सकता है, इसको कोई भी आध्यात्मिक उन्नति का आकांक्षी व्यक्ति सहज ही में समझ सकता है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1966, पृष्ठ-34

वृक्ष हमारी श्रद्धा के केंद्र

एक वृक्ष एक ऋतु में वायुमंडल से 130 लिटर पेट्रोल के शीशे का अंश सोखकर उसे लेड फास्फेट में बदल देता है। यह पानी में घुलता नहीं, उसे वह अपने आप में जीवनभर आत्मसात किए रहता है। मर जाने के बाद ईंधन के रूप में उसे ही मनुष्य के लिए उपयोगी बनाकर छोड़ जाता है। यही नहीं बड़े कारखाने जो ताप पैदा करते हैं, स्वयं प्रकृति की गरमी की असह्य मात्रा को भी संतुलित रखने में यह वृक्ष ही सहायक होते हैं।

एटामिक रेडिएशन (अणुविकिरण) जैसे हानिकारक प्रभाव से भी वृक्ष हमारी जीवन रक्षा करते हैं। मांट्रियल स्थित मैकगिल यूनिवर्सिटी की गैस्ट्रो इन्टेस्टाइनल रिसर्च लेबोरेटरी ने अपनी शोधों के आधार पर बताया है कि साधारण घास तक रेडियेशन से रक्षा करती है। अतएव पृथ्वी में हरीतिमा अभिवृद्धि, वृक्षारोपण, पुष्पवाटिका अभियान को नैतिक कर्त्तव्य के रूप में पूरा करना चाहिए। शहरों में तो लोन और पार्क इतने अधिक आवश्यक हैं कि उन्हें मनुष्य जीवन का हृदय ही कहा जा सकता है। वह मस्तिष्क को दृष्टि मात्र से निद्रा प्रदान करने वाली शीतलता देते हैं। यदि शहरों में पार्क न हों तो पागलपन की मात्रा इतनी अधिक बढ़ सकती है कि उसे सँभालना ही कठिन हो जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जेट हवाई जहाजों, भारी मात्रा में रेलों, बसों, भार-वाहनों तथा फैक्टरियों आदि के शोरगुल से कानों में सीधा आघात पहुँचता है। वृक्ष न हों तो यह शोरगुल ही लोगों को बहरा बना सकता है। किसी भी रूप में वृक्षों के प्रति श्रद्धा व्यक्त किए बिना काम चलेगा नहीं।

जंगल अनावश्यक न काटें, यह कार्य सरकार देखे पर मनुष्य को तो स्थान-स्थान पर वृक्षारोपण करना ही चाहिए। घरों के आस-पास गमलों, लकड़ी की पेटियों में फल-फूल, सब्जियाँ लगाकर अपने लिए दोहरे लाभ की व्यवस्था कर सकते हैं। फूलों के पौधे तो कहीं भी निरर्थक स्थान मिले वहीं रोपें, यह न कहें कि यह स्थान उनका तो है ही नहीं। मानवता की सुरक्षा का दायित्व सब पर है, उसे उदारतापूर्वक पूरा किया जाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति मई 1978, पृष्ठ-22

विषाक्तता का परिशोधन

समय रहते प्रस्तुत विभीषिका से निपटने के लिए विश्व के शासकों, अर्थशास्त्रियों, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों को मिलकर ऐसे उपाय सोचने चाहिए, ऐसे कदम उठाने चाहिए कि संव्याप्त विषाक्तता का परिशोधन हो सके। बड़े कारखानों के स्थान पर छोटी विद्युत संचालित मशीनों का उपयोग हो, वे एक स्थान पर न लगें, छोटे-छोटे देहातों में बिखरें। बड़े शहरों में बढ़ने से रोका जाए और कसबों में विकेंद्रीकरण हो। अणु विस्फोट एवं विकिरण पर रोक लगे। कोलाहल पर रोक लगे। कोलाहल पर अंकुश लगे। धुएँरहित ईंधन प्रयुक्त हो, ऐसे-ऐसे अनेक उपचार इस संदर्भ में अपनाए जा सकते हैं। वृक्षों की कटन रोको और हरीतिमा संवर्द्धन की बात नए सिरे से सोची जा सकती है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि पर आज जैसा स्वेच्छाचार अगले दिनों न चलने दिया जाना चाहिए।

यह भौतिक उपाय-उपचारों की चर्चा हुई जो बढ़ते वायु प्रदूषण पर अंकुश लगा सकते हैं। प्रश्न तब भी अड़ा रह जाता है कि जितना प्रदूषण अब तक आकाश में भर गया है, वह भी कम भयानक नहीं है। इसके परिशोधन का भी कोई कारगर उपाय निकलना चाहिए। इस संदर्भ में दो उपचार ऐसे हैं जिन्हें प्रज्ञा अभियान द्वारा अपनाया जा सकता है और प्रज्ञा-परिजन उसकी पूर्ति को अपनी कार्यपद्धति में सम्मिलित करने के लिए तत्पर हो सकते हैं।

हरीतिमा संवर्द्धन इस प्रयोजन के लिए सर्वमान्य सिद्धांत है। वृक्ष हैं जो विषाक्तता को सोखते और प्राणप्रद वायु का उत्पादन करते हैं। पिछले दिनों वन संपदा बेतरह कटी है। नए उत्पादन के लिए प्रयत्न अपेक्षाकृत कम हुए, फलतः भूमि क्षरण, रेगिस्तान, बाढ़, सूखा जैसे अनेक संकट उत्पन्न हुए। उस भूल को अब सुधारा जाना चाहिए और वृक्षारोपण के लिए वनस्पति उत्पादन के प्रयत्न नए उत्साह के साथ आरंभ करने चाहिए। यह कार्य ऐसा है जिसे सरकार अपने ढंग से तथा जन समुदाय अपने ढंग से संपन्न करते रह सकते हैं। प्रज्ञा अभियान इस प्रक्रिया को अपने ढंग से कार्यान्वित करने के लिए अग्रसर हो सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके अतिरिक्त एक अध्यात्म उपचार और भी है—अग्निहोत्र की प्रक्रिया का अभिनव पुनरुत्थान प्रचलन। रोगाणुओं को मारने के लिए जिस प्रकार एंटी बायोटिक्स रसायनों का प्रयोग होता है उसी प्रकार वायु प्रदूषण के निराकरण में अग्निहोत्र-प्रक्रिया की अपनी विशिष्ट भूमिका है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1983, पृष्ठ-47, 48

प्रकृति के साथ छेड़छाड़ न करें

यह सुनिश्चित है कि आग में हाथ डालने पर वह जलेगा। जहर खाने वाले मौत के मुँह में ही चले जाते हैं। प्रकृति के साथ उद्दंडतापूर्ण खिलवाड़ करना भी ऐसा ही दंडनीय अपराध है, जिसमें न केवल कर्त्ता को, वरन किसी भी रूप में संबद्ध सहयोगी परिकर को भी उसके लिए प्रताड़ित होना पड़ता है। आग से खेल खेलने वाला अकेला ही क्षतिग्रस्त नहीं होता वरन उसके समीपवर्ती परिकर में उस हानि के भागीदार बनते हैं। यह सब प्रत्यक्ष होते हुए भी व्यवहार में अप्रत्यक्ष जैसा बनकर रह गया है। अपराधियों को दंड मिलने की, पुलिस, कानून, कचहरी, जेल जैसी व्यवस्था मौजूद है, पर प्रकृति के साथ अनुचित खिलवाड़ करना तो बारूद के ढेर में चिनगारी फेंकने के समान है। उसके दुष्परिणाम समूचे क्षेत्र को भुगतने पड़ते हैं।

सभी प्राणी शांतिपूर्वक रहते और चैन के साथ समय गुजारते हैं। सीधी राह चलने वालों का न काँटों से पाला पड़ता है और न ठोकरें खानी पड़ती हैं। कठिनाइयों और विपत्तियों में से आकस्मिक तो कभी-कभी कुछ ही होता है। आमतौर से उद्दंडता और अव्यवस्था का व्यतिरेक ही ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है जिन्हें विपत्ति, कठिनाई, उलझन एवं विपन्नता-विभीषिका का नाम दिया जा सके। सर्प, सिंह आदि को छेड़ने तथा बर्रों के छत्ते में हाथ डालने की प्रतिक्रिया विपत्ति उत्पन्न किए बिना नहीं रहती। प्रकृति की विधि-व्यवस्था का उल्लंघन करने की उद्दंडता भी ऐसी ही दुर्बुद्धि है, जिसने किसी को भी मजा चखाए बिना नहीं छोड़ा। इस तथ्य को हर किसी को गाँठ बाँधकर रखना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1988, पृष्ठ-38

प्राकृतिक संपदा का संरक्षण हो

बिगड़ी हुई स्थिति को बनाने के लिए जरूरी है—उलटे को सीधा करना। प्रकृति सीधी सौम्य गाय भी है और रुष्ट सिंहनी भी। यदि उसके साथ अनर्गल और अनौचित्यपूर्ण व्यवहार न किया जाए तो अनंत काल तक अपने दूधरूपी अनेक तरह की संपदाओं से हमारा पालन-पोषण करती रह सकती है। यदि नोच-खसोट, छीना-झपटी का दुर्व्यवहार किया तो क्रुद्ध सिंहनी की तरह अंग-भंग करने, चीरने-फाड़ने में भी वह कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छा यही है कि हम उसकी गोद में फलें-फूलें। इसके लिए ध्यान रखना होगा कि हम अपने आस-पास के वातावरण को सुरम्य और सौम्य बनाएँ। मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन से स्पष्ट किया है कि जो स्थान प्राकृतिक संपदा से भरपूर हैं, वहाँ हरियाली, नदी-तालाब में सौम्यता एवं मन में प्रसन्नता का अनुभव किया जा सकता है। ऐसे स्थानों पर स्वास्थ्यवर्द्धक ऋण आयन्स भी प्रचुर मात्रा में पाए गए हैं।

इससे सिद्ध होता है कि यदि प्रकृति को संरक्षण दिया जाए तो वह हमें भी संरक्षण प्रदान करेगी। उनके अनुसार यह जिम्मेदारी विश्व-वसुधा पर रहने वाले हममें से प्रत्येक की है कि वह आचरण और व्यवहार में नैतिक मूल्यों का समावेश करें। इसका पहला कदम यही है कि स्थान और परिस्थिति के अनुसार प्रकृति का संरक्षण करें। उसे प्रदूषित होने, नष्ट होने से रोककर उसे बढ़ाने में सहायक बनें।

भारतीय चिंतन में प्रकृति की विभिन्न शक्तियों को देवता माना गया है। इसके अनुसार मनुष्य जाति इनसे सहयोग का व्यवहार करके प्रसन्न बने रहकर समृद्धि से भरपूर हो सकेगी। गीताकार के शब्दों में—''इन देवताओं को मनुष्य संरक्षण दे तो ये देवता मनुष्य को संरक्षण देंगे''। दोनों इस प्रकार सहयोग का आचरण करते हुए उन्नति व विकास को प्राप्त होंगे।

—अखण्ड ज्योति जून 1989, पृष्ठ-36

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकृति का दोहन सोच-समझकर

विज्ञानवेत्ता भी अपने सतत अनुसंधान द्वारा इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मानवीय जीवन एवं प्राकृतिक पर्यावरण एकदूसरे से घनिष्टतापूर्वक जुड़े हैं, एक की गड़बड़ी से दूसरा प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। व्यवहारविज्ञानियों ने इन दिनों एक नये आयाम की खोज की है। उनके अनुसार समूचे संसार में फैले मानव समाज की व्यवहार संबंधी गड़बड़ियों का एक महत्त्वपूर्ण कारण पर्यावरण असंतुलन है। इनका मानना है कि अच्छे समाज, अच्छे आदमी के लिए जरूरी है कि प्रकृति संपन्न और समृद्ध हो।

बात भी सही है। प्रकृति एवं मानव समाज की पारस्परिक अंतर्क्रिया इतनी व्यापक है कि उससे समूची मानव जाति प्रभावित हो रही है। वर्तमान में दिखाई दे रहे पर्यावरणीय बिगाड़ का कारण बेतहाशा औद्योगीकरण, अंधाधुंध शहरीकरण, ऊर्जा और कच्चे माल के पारंपरिक साधनों की घटोत्तरी, प्राकृतिक संतुलनों के विघटन, विभिन्न जानवरों एवं पेड़-पौधों का भारी विनाश ही है। स्वच्छंद वैज्ञानिक प्रगति तथा तकनीकी सामर्थ्य ने मनुष्य को काफी ताकत दे दी है। हम पर्वतों को हटा सकते हैं, नदियों का मार्ग बदल सकते हैं। नए सागरों का निर्माण कर सकते हैं। मतलब यह कि हम प्राकृतिक जगत में काफी फेर-बदल कर सकते हैं। परंतु कौन-सी अनुचित है? क्या करने से सत्परिणाम सामने आएँगे, क्या करने से दुष्परिणाम? इसे बिना सोचे-विचारे कुछ भी करने लगा जाए तो इसे मूर्खता के सिवा और क्या कहा जाएगा?

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1997, पृष्ठ-16

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति को माता के रूप में स्वीकार करें

इनसान द्वारा भौतिक चीजों के लिए प्रकृति के शोषण की शैली ने पर्यावरण को नहीं मनुष्य के जीवन जीने के रंग-ढंग को भी बरबाद कर दिया है। हमारा जीवन सरल, सौम्य और मृदुल बने; इसके लिए जरूरी है कि हम पृथ्वी पर जीवन-प्रणाली के विभिन्न तत्त्वों पर अपने प्रभाव को सावधानीपूर्वक देखें, समझें और सुधारें। पर्यावरण को मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित करना एक सीमा तक तो ठीक है। अन्यथा विनाशक प्राकृतिक शक्तियों जैसे भूकंपों, चक्रवातों, बाढ़, सूखा, चुंबकीय और सौर आँधियों से भी संघर्ष करना पड़ेगा। यह केवल उन नियमों के अनुसार ही किया जा सकता है, जिनके द्वारा जैवमंडल एक अखंड एवं स्व-नियामक प्रणाली के रूप में काम करता तथा विकसित होता है। आज का पर्यावरणीय सवाल महज प्रदूषण तथा मनुष्य के आर्थिक क्रिया-कलापों के दूसरे नकारात्मक परिणामों तक सीमित नहीं है। यह हमारी जीवनशैली को गढ़ने से भी संबंधित है।

इसे हल करना तभी संभव है, जब हम समवेत भावनाओं से प्रकृति को वैदिक ऋषियों की भाँति 'माता' के रूप में स्वीकारें, समादृत करें। अंत:करण में इन भावनाओं के उपजते ही उस नीति में अपने आप बदलाव आने लगेगा, जिसके अंतर्गत प्रकृति पर विजय प्राप्त करने, उसके विभिन्न साधन-स्रोतों से मनचाही लूट-खसोट करने को ही मानवीय पुरुषार्थ का प्रतीक और सामाजिक लक्ष्य मान लिया गया था।

हम हँसी-खुशी की जिंदगी जी सकें, इसके लिए संतुलित रीति हर हाल में अख्तियार करनी ही होगी। इसके प्रयोग के तौर-तरीके, स्थान-परिवेश और उसकी अवस्थाओं, आवश्यकताओं के अनुरूप अवश्य भिन्न हो सकते हैं। सहयोग, संरक्षण, सद्भाव का यह प्रवाह हमारे व्यावहारिक विकारों को धीरे-धीरे दूर कर, निर्मल करता जाएगा। इसके लगातार बने रहने के लिए जरूरी है, हम सभी का एकजुट प्रयास, जो एकदूसरे में निरंतर इसके लिए प्रेरणा भरता रहे।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1997, पृष्ठ-16

पर्यावरण संरक्षण जीवित रहने के लिए अनिवार्य

पर्यावरण संरक्षण निम्न पाँच स्तरों पर संभव होगा—

(1) मानव-प्रकृति एवं परमेश्वर के संबंध, (2) मानव और अन्य जीव-जंतुओं का संबंध, (3) मानव और प्रकृति के विविध रूपों का संबंध, (4) मनुष्यों के आपसी संबंध, (5) वर्तमान पीढ़ी का भविष्य की पीढ़ी से संबंध। जीव-जंतुओं पर एक समग्र सोच न बनने से छोटे-छोटे निरीह एवं मूक प्राणी उपेक्षित रह जाते हैं और संरक्षण एकांगी रहता है। यह तभी संभव है जब हम स्वयं में एवं प्रकृति के समस्त घटकों में परमेश्वर की पराचेतना अनुभव करें। तभी सभी जंतुओं एवं वनस्पतियों के प्रति संवेदना का भाव-विकास संभव हो सकेगा। प्रकृति के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विविध रूपों के प्रति मनुष्य का संबंध इसी समझ पर आधारित होना चाहिए कि इनसे हमें केवल अपने उपयोग की वस्तुएँ ही नहीं लेनी हैं बल्कि इसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी हमारी है। जमीन, जंगल, नदी और भूजल के प्रति आक्रामक रवैया छोड़कर हमें इनके सहज विकास पर ध्यान देना होगा।

कृत्रिम वृक्षारोपण के साथ प्राकृतिक वन संरक्षण भी जरूरी है, क्योंकि जलवायु संतुलन, जल एवं भू-संरक्षण तथा जैव विविधता की वास्तविक सुरक्षा प्राकृतिक वनों में ही संभव है। यह भी ध्यान दिया जाना जरूरी है कि मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण से प्रकृति भी प्रभावित होती है। शोषक अपनी विलासिता के लिए आदतन प्रकृति को विनष्ट करता है। मनुष्यों में पारस्परिक सौहार्द्र एवं मर्यादा पर्यावरण संरक्षण के लिए अतीव आवश्यक है। शोषण एवं विषमता जितनी कम होगी पर्यावरण उतना ही समृद्ध होगा। पर्यावरण की समृद्धि ही संसार की समृद्धि है। अपनी भावी पीढ़ी को जीवन की संपन्नता तभी सौंपी जा सकती है, जब वर्तमान पीढ़ी पर्यावरण संरक्षण के लिए पूर्ण जागरूक एवं कटिबद्ध हो। युग निर्माण मिशन के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को न केवल स्वयं जानना चाहिए बल्कि द्वार-द्वार जाकर, घर-घर पहुँचकर जन-जन को यह चेताना चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण केवल वृक्षारोपण नहीं है, अपितु वह प्राकृतिक आधार है, जिस पर मानव जीवन व जीव-जंतु जीवित रहते हैं। इसी पर कृषि एवं औद्योगिक क्रांति भी निर्भर है। पर्यावरण ही सृष्टि का आधारभूत जीवन-तत्त्व है। इसका संरक्षण-संवर्द्धन हमारे, हम सबके जीवित रहने की अनिवार्य शर्त है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1997, पृष्ठ-20

सामाजिक कुरीतियाँ

शक्ति की आराधना करें, समर्थ बनें

विशिष्ट मनन के पश्चात प्रतीत होता है कि अन्याय की जननी अशक्तता है। अत्याचारी उतना बड़ा पापी नहीं हैं, जितना कि अशक्त। प्रभु ने अनंत शक्तियों का भंडार मनुष्य को देकर उसे इस भूमंडल पर निर्भयता के साथ विचरण करने के लिए भेजा है। उसके अंदर इतना तेज एवं पराक्रम परिपूर्ण है कि कोई भी उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देख सकता। जो व्यक्ति अपनी ईश्वरप्रदत्त सत्ता को गवाँ देता है, वह अवश्य ही बड़ा भारी पापी है। इस पाप के फल से उसे छुटकारा नहीं मिल सकता। प्रकृति अपने कठोर नियमों के अनुसार उसे उसी क्रम से कूट-कूटकर दंड देती है, जिस क्रम से कि उसने अपनी सामर्थ्यों को नष्ट किया होता है। जो जितना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्बल है, उसे उतना ही यह प्रकृति अधिक सताएगी। रोना, चिल्लाना, गाली देना, बुरा बताना, व्यर्थ है; इससे कुछ होना जाना नहीं हैं। भेड़ के बालों को एक गड़रिये से बचा लिया जाए, तो दूसरा काट लेगा। इसलिए रीछ बनना होगा, जिसके बालों की तरफ दृष्टि उठाने की भी किसी की हिम्मत न पड़े। 'शक्ति' यह प्राणी का जन्म सिद्ध अधिकार है। आध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से हमें बलवान होना चाहिए। शक्ति की आराधना करके समर्थ बनना चाहिए। आत्मस्वरूप को पहचानकर, आत्मविश्वास और आत्मगौरव की भावनाएँ हृदय में कूट-कूटकर भरना, शरीर को नीरोग और बलवान बनाना, मन को सुसंस्कारित, सुव्यवस्थित, विद्वान एवं उसका सदुपयोग करने के स्रोतों को पहचानना और खोलना, सामाजिक रूढ़ियाँ और कुरीतियों को हटाकर, जन समाज में सुदृढ़ संगठन पैदा करना, राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करना, अंतरराष्ट्रीय बंधु भाव प्रचलित करना, ये सब कार्य एक शक्ति पैदा करते हैं। देखने में यह विभिन्न दशाओं की शक्तियाँ भिन्न-भिन्न प्रतीत होती हैं, पर यथार्थ में एक ही शक्ति के विभिन्न स्वरूप हैं। उसी अखंड शक्ति की उपासना करना मनुष्य का सबसे प्रथम कर्त्तव्य है। शक्ति प्राप्त किए बिना तो हम, मनुष्य भी नहीं कहला सकते। अत: मनुष्य को चाहिए कि सबसे प्रथम शक्ति की आराधना करें और बल को बढ़ाएँ।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1942, पृष्ठ-11

सात्विक वेशभूषा विचारों को भी सात्विक बनाती है

सादगी अपने आप में एक पूर्ण फैशन है। स्वच्छतापूर्ण सादगी में एक सात्विक सजावट है, जो शांतिपूर्ण सद्भावों का अविर्भाव करती है। हमारी बहनें, बेटियाँ, माताएँ यदि रंग-बिरंगे, खरचीले, आकर्षक, वस्त्राभूषण न पहनकर श्वेत, शुद्ध, स्वच्छ, स्वदेशी, आवश्यक मात्रा में धारण करें तो एक दैवी सजावट से सुसज्जित प्रतीत होंगी। उनके भावों, विचारों, शब्दों एवं आकांक्षाओं में जमीन-आसमान का अंतर हो जाएगा। सात्विक भावों की वृद्धि होने से वे गृहस्थ जीवन के वातावरण में स्वर्गीय आनंद का आविर्भाव कर सकती हैं। आदर्श पत्नी, आदर्श माता और आदर्श पुत्री बनने की इच्छा रखने वाली देवियों का प्राथमिक कर्त्तव्य यह है कि वे वर्तमान भड़कीले फैशन से सच्चे हृदय से घृणा करें, उसे आसुरी चक्र समझकर दूर से ही नमस्कार करें। सौभाग्य सूचक, आवश्यक आभूषणों को पर्याप्त समझें, जेवरों से लदने की तृष्णा से अपना पिंड छुड़ाएँ, सादा, शुद्ध, स्वदेशी वस्त्रों को धारण करें।

आप सादगी पसंद कीजिए, अपने विचारों की भाँति वेशभूषा को भी सात्विक रखिए। फैशनपरस्ती छोड़िए क्योंकि यह सब दृष्टियों से आपके लिए अनावश्यक एवं हानिकर है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1947, पृष्ठ-23

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फजूलखरची एक रोग है

रुपए को सुख का एक साधन मानिए। उससे जीवन में सुख मिलता है, पर रुपए से ही सब कुछ मिलता हो, सो बात नहीं है। जीवन अनेक मुखी है, इसके अनेक पहलू हैं। आपको इन सभी दिशाओं में अपनी शक्तियाँ लगानी चाहिए। जो व्यक्ति दिन-रात धन-उपार्जन की चिंताओं में ही लगे रहते हैं और रुपया जोड़-जोड़कर रखते हैं, वे कभी आंतरिक शांति प्राप्त नहीं कर पाते। उन्हें यह विदित नहीं होता कि इस कमाई की धुन में वे कैसी महत्त्वपूर्ण चीजें नष्ट कर देते हैं। स्वास्थ्य-सुख, सच्चे मित्रों की मैत्री, दंपत्ती का हार्दिक एकीकरण, घर के बाल-बच्चे धन से कहीं अधिक महत्त्व रखते हैं।

अर्थोपार्जन में मर्यादित शक्ति का व्यय होना चाहिए। पैसे की लोलुपता, तृष्णा और चिंता कम कीजिए। सुख रुपए-पैसे में नहीं। हाँ, रुपया-पैसा कभी-कभी सुख के मार्ग को सरल बनाता है। रुपए की हाय-हाय से समय बचाकर आत्मा के सद्गुणों के विकास में उसे व्यय करना चाहिए। अपने चरित्र का निर्माण इस प्रकार कीजिए कि उचित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कभी धन की कमी न पड़े और व्यर्थ की विलासमयी आवश्यकताओं के लिए धनखरच करने की आवश्यकता ही प्रतीत न हो। रुपए का काम थोड़ी देर का आनंद, मजेदारी नहीं, प्रत्युत मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति को ऊँचा उठाना है।

फजूलखरची एक रोग है। बड़े-बड़े रईस और ताल्लुकेदार इसी के कारण गरीब बने हैं। इसे छोड़ देना ही उचित है। घरेलू बजट, आय-व्यय का हिसाब ही हमारा मार्ग-प्रदर्शन कर सकता है। खेद का विषय है कि लोगों को अपनी आमदनी, मासिक वेतन का तो ज्ञान रहता है, किंतु आज क्या व्यय हुआ? कैसे हुआ? कृत्रिम आवश्कताओं या विलास-मनोरंजन में हुआ? उससे स्थायी लाभ हुआ या नहीं? कल खरच करने के लिए कहाँ से आएगा? यदि हाथ में कुछ न हुआ तो किससे कर्ज लेंगे? किसके सामने हाथ फैलाएँगे? इन प्रश्नों पर हम तनिक भी विचार नहीं करते। कम आय से मत डरिए वरन उसी को सावधानी से व्यवस्थापूर्वक व्यय कीजिए। सावधानी से बजट बनाकर अपनी आवश्यकताओं को मर्यादित कर, संयमित एवं व्यवस्थित जीवन व्यतीत करना जीवन में दक्षता का रहस्य है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1950, पृष्ठ-39

कुरीतियों के विरोध में खड़े हो जाएँ

हमें स्वस्थ परंपराओं को जन्म देना चाहिए। समाज का, व्यक्ति का वास्तविक हित जिसमें होता है, उसी मार्ग को अपनाना चाहिए। अपना मन सदा नीति, न्याय और औचित्य के पक्ष में रखना चाहिए। कुकर्म करते हुए एक छोटे बच्चे से भी, अपनी अंतरात्मा से भी डरना चाहिए। सत्कर्म का, अच्छी प्रथा-परंपराओं का आरंभ करते हुए हमें सारे समाज की, सारी दुनिया की भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परवाह नहीं करना चाहिए। अनीति और अनाचार के विरुद्ध यदि अकेले ही लड़ने को खड़ा होना पड़े तो उसमें झिझकना नहीं चाहिए।

सचाई और बुद्धिमानी के मार्ग को अपनाकर अकेले भी आगे बढ़ा जाए तो हर्ज नहीं। इतिहास बताता है कि सुधारकों और युग निर्माताओं को अकेले होने की चिंता न करके ही अपना पथ प्रशस्त करना पड़ा है। शंकराचार्य, दयानंद, बुद्ध, गांधी, ईसा, लूथर, मार्क्स, गैलीलियो आदि आरंभ में अकेले ही थे, पर जब उनने बुद्धिमत्तापूर्ण बातें कहीं तो उन्हें असंख्य लोगों ने स्वत: शिरोधार्य कर लिया। अंध-परंपराओं की जड़ मनुष्य की आंतरिक अविवेकशीलता और भीरुता में छिपी पड़ी रहती है। हेय और कष्टकारक कुप्रथाएँ यदि हटानी अभीष्ट हों तो इसके लिए सामाजिक आंदोलनों से ही काम न चलेगा, व्यक्ति के अंत:करण में भरी हुई कायरता और दुर्बलता को हटाना पड़ेगा। सत्य के लिए साहस, औचित्य के लिए आस्था और सन्मार्ग के लिए उत्साह यदि हमारी मनोभूमि में स्थान प्राप्त कर लें तो सामाजिक कुरीतियों को मिटा देने का कार्य इतना ही सरल सिद्ध होगा, जितना कागज के बने रावण को एक दीयासलाई लगाकर देखते-देखते भस्म कर देना। यह साहसपूर्ण कदम उठाने का कार्य हम अपने आप से ही आरंभ करें। अनुयायियों और समर्थकों की भीड़ तो सहज ही पीछे लग लेगी।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1963, पृष्ठ-26

अशिष्टता का अभिशाप मिटाएँ

आजकल अशिष्टता की व्यापक वृद्धि होती जा रही है। व्यवहार में उच्छृंखला बढ़ती जा रही है। यह हमारे समाज और देश के लिए एक अभिशाप है। दूसरे के सम्मान, आदर का कोई ध्यान नहीं रखकर, अपने स्वार्थ और स्वेच्छाचार से प्रेरित होकर दूसरों के साथ मनमाना व्यवहार करना अशिष्टता है। दूसरों की भावनाओं का ध्यान न रखकर उनका मजाक उड़ाना, ताने कसना, व्यंग्य-बाण मारना, दूसरों में त्रुटियाँ निकालकर उनका उपहास करना अशिष्टता का साकार रूप है। माँ-बाप या अभिभावकों की उपेक्षा करना, कुसंगति के फलस्वरूप बच्चे गाली का प्रयोग करना, भद्दे, अश्लील वचन बोलना सीख लेते हैं और फिर इसमें तनिक भी लज्जा महसूस नहीं करते। घर हो या बाहर, एकांत स्थान हो या सार्वजनिक, लोगों को बुरे शब्द बोलते, अशिष्ट आचरण करते हुए देखा जा सकता है। सभा, जलूसों में भाग लेते समय, रेल में सफर करते समय, सिनेमाओं में इस तरह का कुत्सित आचरण, अशिष्टाचार लोगों में सहज ही देखा जा सकता है। गुरुजनों अथवा परिवार में वृद्धजनों के सम्मान, आदर, उन्हें प्रणाम करने, पैर छूने की परंपराएँ मिटती जा रही हैं। आज के शिक्षित और सभ्य कहे जाने वाले लोग इनमें अपना अपमान-सा समझते हैं।

कुछ भी हो, किसी भी रूप में अशिष्टता मानव जीवन का बहुत बड़ा कलंक है। समाज में बढ़ती हुई अशिष्टता देश और जाति के लिए हानिकारक है। इसे हेय और त्याज्य माना जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दैनिक जीवन की छोटी से लेकर बड़ी बातों में शिष्टाचार ही हमारी सभ्यता और संस्कृति का दर्पण है। किसी भी तरह की अशिष्टता अपनी असभ्यता और पिछड़ेपन की निशानी है। इससे दूसरे लोगों में हमारी साख और कीमत कम होती है।

आवश्यकता इस बात की है कि हमारे पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन में बढ़ती हुई अशिष्टता को व्यापक स्तर पर दूर किया जाए, तभी हम विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ सकेंगे। परस्पर व्यवहार, बातचीत, रहन-सहन में शिष्टाचार के सिद्धांतों का पालन करने का हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए। बचपन से ही उठने- बैठने, बोलने-चालने, व्यवहार करने के शिष्ट तरीके सिखाए जाएँ। बच्चों के अशिष्ट आचरण में सुधार का ध्यान दिया जाए। शिष्टाचार का स्वयं आचरण करके, अपने से छोटों के समक्ष हमें उनके सुधार का उदाहरण पेश करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति मई 1964, पृष्ठ-12

समय के साथ हम सब बदलें

समय सदा एक जैसा नहीं रहता। वह बदलता एवं आगे बढ़ता जाता है, तो उसके अनुसार नए नियम-निर्धारण भी करने पड़ते हैं। आदिम काल में मनुष्य बिना वस्त्रों के ही रहता था। मध्यकाल में धोती और दुपट्टा दो ही, बिना सिले वस्त्र काम आने लगे थे। प्रारंभ में अनगढ़ औजारों, हथियारों से ही काम चल जाता था। मध्यकाल में भी धनुष-बाण और ढाल-तलवार ही युद्ध के प्रमुख उपकरण थे, पर इन दिनों वे दोनों ही एक प्रकार से बेकार हो गए, अब आग्नेयास्त्रों के बिना काम चल ही नहीं सकता। समय के साथ परिस्थितियाँ बदलती हैं और फिर उनके समाधान भी ढूँढ़ने पड़ते हैं। जो पुरानी प्रथाओं पर ही अड़ा रहेगा, उसे न केवल घाटा ही घाटा उठाना पड़ेगा वरन उपहासास्पद भी बनना पड़ेगा।

मान्यताएँ, विचारणाएँ, निर्धारण और क्रिया-कलाप आदि भी समय के परिवर्तन से प्रभावित हुए बिना रहते नहीं। उनकी सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती। धर्मशास्त्र भी समय की मर्यादाओं में बँधे रहे हैं और उनमें प्रस्तुत बदलाव के आधार पर परिवर्तन होते रहे हैं। स्मृतियाँ और सूत्र-ग्रंथ भी भिन्न-भिन्न ऋषियों ने अपने-अपने समय के अनुसार, नए सिरे से लिखने की आवश्यकता समझी और वह सुधार ही जनजीवन में मान्यता प्राप्त करता रहा। इसका कारण उन निर्माताओं में परस्पर विवाद या विग्रह होना नहीं है, वरन यह है कि बदलती परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए धर्म-प्रचलन के स्वरूप में भी भारी हेर-फेर किया गया।

समय पीछे नहीं लौटता, वह निरंतर आगे ही बढ़ता है। उसके साथ ही मान्यताओं में, प्रचलनों में भी परिवर्तन होता चलता है। ऐसा आग्रह कोई कदाचित ही करता हो, कि जो पहले दिनों माना या किया जाता रहा है, वही पत्थर की तरह सदा-सर्वदा जारी रहना चाहिए? ऐसे दुराग्रही तो शायद बिजली का प्रयोग करने और नल का पानी पीने से भी ऐतराज कर सकते हैं? उन्हें शायद गुफा बनाकर रहने का भी आग्रह हो, क्योंकि पूर्व-पुरुषों ने निवास के लिए उसी प्रक्रिया को सरल समझा था?

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवर्तन के साथ जुड़े हुए नए आयाम विकसित करने की आवश्यकता अब इतनी अनिवार्य हो गई है, कि उसे अपनाने से कदाचित ही कोई इनकार करता हो? समय हर किसी को बाधित करता है कि युगधर्म पहचाना जाए और उसे अपनाने में आना-कानी न की जाए। सनातन धर्म, नीतिनिष्ठा एवं समाजनिष्ठा के संबंध में शाश्वत हो सकता है, पर रीति-रिवाजों, क्रिया-कलापों, उपकरणों आदि प्रचलित नियम-अनुशासन के संबंध में पुरातन की दुहाई देकर दुराग्रह अपनाने से कुछ काम चलता नहीं। ऐसे हठवादी-दुराग्रही, पुरातन परिपाटी के भक्त तो कहे जा सकते हैं, पर अपने अतिरिक्त और किसी को इसके लिए सहमत नहीं कर सकते कि लकीर के फकीर बने रहने में ही धर्म का पालन सन्निहित है, जो पुरातनकाल में चलता रहा है, उसमें हेर-फेर करने की बात किसी को सोचनी ही नहीं चाहिए, ऐसा करने को अधर्म कहा जाएगा और उसे करने वाले पर पाप चढ़ेगा।

किसी भी भली-बुरी प्रथा को अपनी और पूर्वजों की प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उस पर अड़ा और डटा तो रहा जा सकता है, पर उसमें बुद्धिमानी का समावेश तनिक भी नहीं है। मनुष्य प्रगतिशील रहा है और रहेगा। वह सृष्टि के आदि से लेकर अनेक परिवर्तनों के बीच से गुजरता हुआ आज की स्थिति तक पहुँचा है। यह क्रम आगे भी चलता ही रहने वाला है। पुरातन के लिए हठवादी बने रहना किसी भी प्रकार, किसी के लिए भी हितकारी नहीं हो सकता। युगधर्म का निर्धारण और परिपालन ही प्रगतिशीलता का प्रधान चिह्न है। युगधर्म को अपनाकर ही मनुष्य आगे बढ़ा है और आगे भी उसके लिए तैयार रहेगा। समय का यह ऐसा तकाजा है, जिससे इनकार नहीं किया जा सकता।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1990, पृष्ठ-03-04

दुष्प्रवृत्तियाँ-सत्प्रवृत्तियाँ

बुराई को दूर से ही प्रणाम करें

बुराई और उसके दुष्परिणामों का बहुत देर तक चिंतन करना और उनसे बचना बहुत आवश्यक है। जीवन में यह क्रिया आवश्यक है। जिस तरह शरीर, वस्त्र, घर आदि की नित्य सफाई होती रहती है, उसी तरह बुरे विचारों का भी परिमार्जन होता रहना चाहिए।

अच्छा तरीका है, आप भलाई का स्वभाव बना डालें। भलाई अपने जीवन में घुला लें। भलाई ही आपके जीवन का उद्देश्य बन जाए। भलाई इतनी भली होती है कि वह अपने कर्त्ता को तुरंत आत्मसंतोष प्रदान करती है। भलाई का आशीर्वाद मनुष्य जीवन में फलीभूत होकर अपार सुख-संपदा से ओत-प्रोत कर देता है। वह एक द्वार से प्रस्फुटित होती है और अपने अनुदान समेटकर सैकड़ों दरवाजों से अपने स्वामी की ओर गमन करती है। आप औरों से मीठा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोलिए; सारा संसार आपको मित्र सरीखा लगेगा। सब आपकी सहायता को तत्पर रहेंगे। सब आपके पास बैठना चाहेंगे। आप तकलीफ में होंगे तो किसी को बुलाने की आवश्यकता नहीं, यदि आपके पास भलाई की शक्ति है तो वह अपने आप औरों को आपकी सहायता के लिए बुला लेगी। भलाई का अंत सदैव भला ही होता है।

बुराई व्यग्र करती हुई आत्मअसंतोष के रूप में निरंतर बेचैन रखती है। करने में भी बुरा और अंत भी बुरे का बुरा, शराब पीने में भी कड़ुवी और प्रभाव में भी बुरी। चोरी करने में भय और घबराहट तथा करने के बाद भी बेचैनी, परेशानी, भय और तिरस्कार। बुरे का फल सदैव बुरा ही होता है, ऐसा निश्चयपूर्वक जान लेना चाहिए।

मनुष्य शरीर में जीवात्मा अपने गुणों का रसास्वादन करने धरती पर आती है। वह बुराइयों में भटक जाती है, उसके सुख समूल नष्ट हो जाते हैं। भलाई गुणों को सींचने वाला अमृत है। उससे आत्मा को तृप्ति मिलती है, ऐसा विश्वासपूर्वक जानकर अच्छे कर्म ही करना चाहिए। बुराई तो सर्वथा त्याज्य है, उसे दूर से ही नमस्कार करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1967, पृष्ठ-18

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सकारात्मक चिंतन ही करें

आत्मशोधन का कार्य बड़ी सावधानी और संतुलित मन:स्थिति से ही किया जाना चाहिए, एकांगी आलोचना उचित नहीं। न केवल दोष ही देखें और न केवल गुणों का ही विचार करें, वरन दृष्टि यह रखें कि जो बुराइयाँ दीखें, उनके लिए अपनी ताड़ना करें और जो अच्छाइयाँ सूझ पड़ें, उनसे प्रसन्नता अनुभव करें—प्रोत्साहन प्राप्त करें और संतोष व्यक्त करें। अच्छाइयों को बढ़ाते चलने से बुराई स्वत: घटती है। केवल बुराई को छोड़ने भर की बात सोची जाए और अच्छाई बढ़ाने की ओर ध्यान न हो तो प्रयोजन सिद्ध न होगा। पानी से भरे बरतन में यदि कंकड़-पत्थर डाल दिए जाएँ तो उतना ही पानी बरतन से बाहर निकल जाएगा। मनरूपी बरतन में सद्गुणों की जितनी प्रतिष्ठापना होती चलेगी, उतने ही दोष-दुर्गुण अपने-आप समाप्त होते चलेंगे। व्यभिचार छोड़ेंगे, यह सोचने की अपेक्षा यह कहना अच्छा है कि ब्रह्मचर्य पालन करेंगे। चोरी छोड़ेंगे यह कहने की अपेक्षा यों सोचना चाहिए कि ईमानदारी का पवित्र जीवन बिताएँगे। आलस में न पड़े रहेंगे, यों न कहकर यों कहना चाहिए कि स्फूर्ति और श्रमशीलता का वरण करेंगे। बात एक ही है पर निषेधात्मक पक्ष को म. ि:क्षेत्र में स्थान देने की अपेक्षा, यह उत्तम है कि रचनात्मक पक्ष की विचारधारा से मस्तिष्क को प्रभावित किया जाए। दुष्टता का उन्मूलन करेंगे, यों सोचने में उन्मूलन के लिए जिस क्रोध, विनाश, विध्वंस की आवश्यकता है, उसकी तैयारी में मन लगेगा, पर यदि सज्जनता का प्रसार करेंगे, यह अपना लक्ष्य हो तो सज्जनता के उपयुक्त शिष्टाचार, प्रेम, उदारता, मधुरता, त्याग, सहिष्णुता आदि के भाव मन में भ्रमण करेंगे। एक ही

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बात के भले और बुरे दो पहलू होते हैं। उन दोनों में से हमें बुरा नहीं, भला पहलू ही अपने लिए चुनने का प्रयत्न करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति दिसबंर 1962, पृष्ठ-14, 15

अच्छाइयाँ ढूँढ़ें, प्रशंसा करें

हमें अपने सभी स्वजन-संबंधियों की, परिचित-अपरिचितों की सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करते रहना चाहिए। ढूँढ़ने पर हर किसी में कुछ गुण मिलते हैं, अच्छाइयों से रहित इस धरती पर कोई व्यक्ति पैदा नहीं हुआ। जिसमें जो सद्गुण दीख पड़ें, उनकी चर्चा उस व्यक्ति के सामने की जाए कि वह इन गुणों को बढ़ाते हुए एक दिन बहुत उन्नतिशील बन सकता है, तो निश्चय ही इस प्रशंसा का प्रभाव उस पर पड़े बिना न रहेगा। प्रशंसक बनकर हम हर व्यक्ति के मित्र बन सकते हैं। उसे समझाने और सुधारने में भी सफल हो सकते हैं। पर यदि निंदा और भर्त्सना करना ही हमने सीखा है तो सब कोई अपने शत्रु बनते जाएँगे और अपनी सीख को भी दुर्भावना मानकर उसके प्रतिकूल आचरण करेंगे।

सुधार की दृष्टि से कभी-कभी मधुर शब्दों में दोषों को बहुत ही आत्मीयता से एकांत में बता देना भी उन्हें सुधारने की बात कही जा सकती है, पर यह सब बहुत ही सावधानी से आत्मीयता और सौजन्य के वातावरण में कहा जाना चाहिए और समझाने के बाद अंत में फिर एक बार अपनी सद्भावना और आत्मीयता की सफाई दे देनी चाहिए। कारण यह है कि कोई व्यक्ति यह मान ले कि अमुक व्यक्ति मुझसे घृणा करता है तो फिर वह उसके प्रति शत्रुता जैसी दुर्भावना रखने लगता है। तब उसकी सलाह को भी वह दो कौड़ी का महत्त्व देता है। इसलिए सुधारात्मक, आलोचनात्मक चर्चा बहुत ही सावधानी से नपे-तुले और स्नेह-शिष्टाचार मिश्रित मधुर शब्दों में ही करनी चाहिए और ऐसे अवसर कभी-कभी ही आने देने चाहिए।

आमतौर से हमें प्रशंसक की ही भूमिका प्रस्तुत करते रहना चाहिए, जिससे उनके सद्गुण बढ़ें। साहस और आत्मविश्वास बढ़ाकर ही किसी को श्रेष्ठता के कठिन सन्मार्ग पर चलाया जाना संभव हो सकता है। दमन और दंड से, निंदा और तिरस्कार से कोई दुर्गुण दब तो जाते हैं, पर अवसर मिलने पर वे प्रतिहिंसा के साथ और भी भयंकर रूप में प्रकट होते हैं। दोषों का उन्मूलन तो गुणों की वृद्धि से ही संभव है। गुणों को बढ़ाने में प्रोत्साहन और प्रशंसा का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है। स्वच्छ वायु फेंफड़ों में भरने से पुरानी गंदी वायु को बाहर निकालना ही पड़ता है। सद्भावनाएँ बढ़ने से दुर्भावनाएँ घटती ही हैं। सुधार का यही मार्ग अधिक प्रामाणिक और सुनिश्चित सिद्ध होता है।

शत्रुओं की संख्या घटाने और मित्रों की संख्या बढ़ाने का सबसे सरल और सबसे प्रभावशाली तरीका यह है कि हम दूसरों के गुणों को देखें, अच्छाइयों की चर्चा करें और अपनी प्रसन्नता एवं भविष्य में और प्रगति की आशा व्यक्त करें। यह स्वभाव बना लेने पर हम दूसरों को अच्छाई के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मार्ग पर बहुत आगे बढ़ा सकते हैं, बहुत सुधार सकते हैं और उनके मनोबल में भारी अभिवृद्धि कर सकते हैं। बिना कौड़ी-छदाम खरच किए दूसरों का भारी उपकार कर सकने का यह गुण यदि अपने में विकसित हो जाए तो परमार्थ का बहुत पुण्य प्राप्त हो, साथ ही अपने मित्रों की संख्या अत्यधिक हो जाने से उन्नति, प्रगति, सहयोग और सम्मान का मार्ग भी प्रशस्त हो। अपने स्वभाव, दृष्टिकोण और संभाषण में हमें इतना सुधार तो कर ही लेना चाहिए। जीवनविद्या के इस अत्यधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य को हमें हृदयंगम कर ही लेना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति दिसबंर 1962, पृष्ठ-21

दृष्टिकोण का परिष्कार आवश्यक

हम अपने भीतरी दृष्टिकोण को बदलें तो बाहर जो कुछ भी दिखाई पड़ता है, वह सब कुछ बदला-बदला दिखाई देगा। आँखों पर जिस रंग का चश्मा पहना होता है, बाहर की वस्तुएँ उसी रंग की दिखाई पड़ती हैं। अनेक लोगों को इस संसार में केवल पाप और दुर्भाव ही दिखाई पड़ता है। सर्वत्र उन्हें गंदगी ही दीख पड़ती है। इसका प्रधान कारण अपनी आंतरिक मलिनता ही है। इस संसार में अच्छाइयों की कमी नहीं, श्रेष्ठ और सज्जन व्यक्ति भी सर्वत्र भरे पड़े हैं, फिर हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ अच्छाई तो होती है। छिद्रान्वेषण छोड़कर यदि हम गुण अन्वेषण करने का अपना स्वभाव बना लें तो घृणा और द्वेष के स्थान पर हमें प्रसन्नता प्राप्त करने लायक भी बहुत कुछ इस संसार में मिल जाएगा। बुराइयों के सुधारने के लिए भी हम घृणा का नहीं, सुधार और सेवा का दृष्टिकोण अपनाएँ तो वह कटुता और दुर्भावना उत्पन्न न होगी जो संघर्ष और विरोध के समय आमतौर से हुआ करती है।

दूसरों को सुधारने से पहले हमें अपने सुधार की बात सोचनी चाहिए। दूसरों से सज्जनता की आशा करने से पूर्व हमें अपने आप को सज्जन बनाना चाहिए। दूसरों की दुर्बलताओं के प्रति एक दम आग-बबूला हो उठने से पहले हमें यह भी देखना उचित है कि अपने भीतर कितने दोष-दुर्गुण भरे पड़े हैं। बुराइयों को दूर करना एक प्रशंसनीय प्रवृत्ति है। अच्छे काम का प्रयोग अपने से ही आरंभ करना चाहिए। हम सुधरें, हमारा दृष्टिकोण सुधरे तो दूसरों का सुधार होना कुछ भी कठिन न रह जाएगा।

—अखण्ड ज्योति मई 1963, पृष्ठ-20

विवेक की अखण्ड ज्योति जगमगाती रहे

भावनात्मक परिष्कार के लिए केवल अपने विचार जगत में निरीक्षण की प्रवृत्ति रखना ही यथेष्ट नहीं है। अपने खान-पान, वस्त्र, आवास, पास-पड़ोस के जीवन पर भी गंभीरतापूर्वक विचार करते रहना होगा। व्यक्ति की भलाई का क्षेत्र उसके मन, वाणी और शरीर तक ही सीमित नहीं है, उसका सामाजिक पहलू भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। अत: अंदर से भी पूर्ण विवेक का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालन करना पड़ेगा। आरोग्य, मितव्ययता, निराशक्तता के साथ ही सामाजिक संबंध, विनयशीलता, भद्रता और सौमनम्य भी अतीव आवश्यक हैं।

मानसिक, भावनात्मक तथा सांसारिक जीवन की न्यायपूर्ण समीक्षा ही विवेक की स्थिति है। यदि हम इस दिशा में निष्क्रिय निश्चेष्ट और निष्प्राण बने रहे तो हमारे जीवन का परम लक्ष्य एक गोपनीय विषय ही बना रह जाएगा। लोग कभी सांसारिक कामनाओं से हटकर आध्यात्मिक जीवन की ओर झाँककर देखना भी न चाहेंगे। इसलिए अन्य भूमिकाओं के साथ विवेक की साधना भी सतत चलती रहनी चाहिए ताकि हमारे जीवन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक पहलू आँखों से ओझल न होने पाए। एक भाग अप्रकाशित ही न बना रहे इसके लिए विवेक की अखण्ड ज्योति प्रत्येक मनुष्य के जीवन में जगमगाती ही रहनी चाहिए। हमारा हृदय इतना शुद्ध और पवित्र होना चाहिए कि प्रत्येक भावना का सूक्ष्मतर प्रत्युत्तर वह दे सके।

मनुष्य जीवन के दो पहलू हैं—सत् अर्थात निर्माण का क्षेत्र, असत् अर्थात निषेधात्मक पहलू। किसी निश्चित पथ पर सरलतापूर्वक आगे बढ़ने का यही उपाय है कि अपने मार्ग की बाधाओं को दूर करते हुए आगे बढ़ें। आध्यात्मिक विकास के पथ पर भी ठीक ऐसी ही प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। अपने दोष-दुर्गुणों को ढूँढ़ना, उनका निवारण करना, अपने जीवन में सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन एवं प्रश्रय देना, इसी का नाम विवेक है। जो इस स्थिति को पा लेते हैं, उन्हीं का मानव जीवन सफल कहा जा सकता है। वही अंत में महानता की महान विभूति से गौरवान्वित होते और श्रेय का अनंत सुख प्राप्त करते हैं।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1964, पृष्ठ-12

प्रतिशोध की भावना सदैव हानिकारक

अन्य दूषणों की अपेक्षा प्रतिशोध इसलिए अधिक हानिकारक है क्योंकि वह मनुष्य के साथ बहुत दूर तक जाता है। दूसरे जन्मों में भी वह साथ नहीं छोड़ता। वह तरह-तरह के पाप मनुष्य से कराता रहता है। इसलिए यह न समझिए कि यदि अपना क्रोध शांत कर लेंगे तो लोग आपको कायर, शक्तिहीन तथा छोटा समझेंगे। इसमें आपका बहुत बड़ा हित छिपा है। अत: जब कभी बदले की भावना उगती दिखाई दे उसे प्रेमपूर्ण विचारों से तुरंत नष्ट कर डालिए। इतना ही नहीं अवकाश मिले तो आपके प्रति अभद्रता प्रकट करने वालों की भी आप यथाशक्ति भलाई कीजिए, उन्हें सहायता दीजिए, दु:ख में हाथ बँटाइए। ऐसा करने से वह व्यक्ति आपके प्रति विनीत ही नहीं होगा वरन उसके अंत:करण में भी सद्भावनाओं की तीव्र जाग्रति होगी।

विरोधी बातों को कभी मस्तिष्क में टिकने न दिया कीजिए, यह न जाने कब विद्रोह पैदा कर दें। परदोष दर्शन, घृणा तथा द्वेष करके भी मन में प्रतिशोध के भाव न रहने दीजिए। प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाई ढूँढ़ा कीजिए। गुणग्राहकता से आपके सद्गुण बढ़ेंगे। घृणा के बदले प्रेम किया कीजिए। किसी का अहित न सोचिए, बन पड़े तो उपकार कीजिए, हित करिए। कोई अपराध भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करता है तो उसे भी क्षमा कर दीजिए। यह मत सोचिए कि इससे आपको हानि होगी। सद्गुणों और सद्विचारों की कीमत कई गुना अधिक होकर लौटती है और मनुष्य के अंत:करण को शीतल बना देती है।

यह सारा संसार परमात्मा से ही ओत-प्रोत है, जिस तरह एक ही सूरज पानी के कई घड़ों में एक ही तरह से दिखाई देता है, उसी तरह शरीर की विविधता होते हुए भी प्राणिमात्र उस अव्यय परमात्मा के ही प्रतिबिंब हैं। इनसे दुराव करने का तात्पर्य यह है कि आप परमात्मा को दोष लगाते हैं। किसी के प्रति बैर-भाव का अर्थ परमात्मा से विद्रोह पैदा करना है। आप इन भावनाओं को मन से निकालकर सदैव मंगल ही सोचा करें। सद्भाव सारे वातावरण में फैलकर आपके हृदय में पवित्रता, शांति तथा मैत्री का विस्तार करेंगे। इस तरह के मंगल कर्म करने वाले की कभी दुर्गति नहीं होती। वह चिरकाल तक धरती के सुखों का उपभोग करता रहता है।

—अखण्ड ज्योति मई 1965, पृष्ठ-26

बहुमूल्य मानव जीवन

मनुष्य जीवन बड़ा बहुमूल्य है। एक बार मिलने के पश्चात किसे मालूम, कब जन्म हो? यह शरीर भी कब नष्ट हो जाए, कुछ पता नहीं। अतएव पग-पग पर सजग रहने की आवश्यकता है। जरा-सी असावधानी से आप भारी संकट में फँस सकते हैं।

मामूली-सी कब्ज बढ़कर छोटी-बड़ी बीमारियों का रूप धारण कर सकती है। छोटा-सा फोड़ा पककर घाव बन जाता है। शारीरिक बुराइयों का जो प्रभाव शरीर पर पड़ता है, मानसिक कुविचारों का उससे भी घातक प्रभाव मनुष्य की आंतरिक शांति और व्यवस्था पर पड़ता है। जो लोग क्षणिक आवेश में पड़कर किसी बुराई को बुलाते हैं, उन्हें उसका दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ता है। अत: हमें अपना प्रत्येक कदम बहुत सही, बिलकुल नपा-तुला रखना चाहिए।

जीवन की घड़ियाँ गिनी-चुनी हैं, इनका सच्चा सदुपयोग आत्मविकास है। अपने आप को गुणवान बनाने से बढ़कर कल्याणकारी वस्तु और नहीं। बुराइयाँ हमें उधर जाने से रोकती हैं। इनके विषय में बहुत सतर्क रहिए। अच्छाइयों का एक-एक तिनका चुन-चुनकर जीवन-भवन का निर्माण होता है, पर बुराई का एक हलका झोंका ही उसे मिटा डालने के लिए पर्याप्त होता है। अत: आने वाला प्रत्येक क्षण अपनी जागरूकता का विषय होना चाहिए। सतर्कता दैवी गुण है। बुराइयों के प्रति निरंतर सतर्क रहने से मनुष्य अपने जीवन के अनेक कंटक दूर कर सकता है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1965, पृष्ठ-38

न अभिमान करें, न बेहोश हों

अहंकार का एक नाम मद भी है। मद का अर्थ है—नशा। अहंकार का नशा चढ़ते ही मनुष्य मद्यपों की भाँति मतवाला हो जाता है। उसकी विभिन्न क्रियाएँ, चेष्टाएँ और भावनाएँ असंयत एवं

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असंतुलित हो जाती हैं। उसकी बुद्धि पर अज्ञान का अंधकार छा जाता है और तब वह न करने योग्य कामों में प्रवृत्त होने लगता है। ऐसी मदहोशी में यदि वह अपने सम्मान को सुरक्षित रखना चाहता है तो उसकी यह चाह सफल नहीं हो सकती। अभिमान उसे अपकृत्य करने के लिए प्रेरित करेगा ही। उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा ही। कोई एक-दो, चार-छह लोग उसे क्षमा कर देंगे, किंतु अंततः कोई न कोई माई का लाल मिल ही जाएगा जो, उसका सारा अहंकार और सारा नशा उतार ही देगा। यह एक ईश्वरीय विधान है, इसमें व्यवधान नहीं पड़ सकता। संसार में आज तक किसी घमंडी का सिर ऊँचा नहीं रहा, उसे नीचा होना ही पड़ता है। इसलिए इसी में बुद्धिमानी है और इसी में कल्याण है कि मनुष्य शक्ति, संपत्ति, साधन, समर्थन, सहायक अथवा विद्या, बुद्धि, रूप-रंग, सफलता एवं उपलब्धि आदि किसी भी बात पर घमंड न करे। सब कुछ पाकर भी उसे सच्चा, शालीन, सभ्य, सुशील तथा विनम्र बना रहना चाहिए। अहंकार मनुष्य जीवन के लिए विषैला सर्प है। प्रश्रय पाते ही यह दंश करता है और फिर मनुष्य की कैसी दशा हो सकती है, इसके सैकड़ों उदाहरणों से संसार का इतिहास भरा पड़ा है? इसलिए इस जल-बुद्बुदों की तरह, क्षणभंगुर जीवन की परछाइयों की तरह बनने- बिगड़ने वाली विभूतियों पर न तो कभी अभिमान करिए और न बेहोश ही होइए!

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1970, पृष्ठ-40

दैवी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करें

मानव जीवन दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का एक मिला-जुला रूप है। जीवन में दोनों वृत्तियाँ सक्रिय रहने का प्रयत्न करती रहती हैं। मुक्ति आकांक्षी व्यक्ति को चाहिए कि वह अपना सारा सहयोग दैवी प्रवृत्तियों को बढ़ाने, प्रोत्साहित करने तथा पालने में लगाए। दैवी वृत्ति के लक्षण हैं—परिश्रम, पुरुषार्थ, त्याग, प्रसन्नता, उदारता, उत्साह, आशा तथा मर्यादा आदि जिनको ग्रहण करने से मनुष्य की आत्मा में हर्ष तथा आनंद का प्रकाश आता है और संसार-समर में एक साहसी योद्धा की तरह निरंतर संघर्ष करते रहने का बल प्राप्त होता है। आसुरी प्रवृत्तियों के लक्षण हैं—आलस्य, प्रमाद, स्वार्थ-लिप्सा, निरुत्साह, निराशा, आवेश, उत्तेजना अथवा अदक्षता आदि, जिनके दोष से मनुष्य अंधकार, ध्वंस तथा पतन की ओर अग्रसर होता है।

अस्तु, मनुष्य दैवी तथा आसुरी वृत्तियों का एक समन्वित रूप है, जिसकी बंधन अथवा मुक्ति दो ही गतियाँ हो सकती हैं। यद्यपि वह शुद्ध-बुद्ध और स्वभावतः मुक्त परमात्मा का अंश है, तथापि उसे मुक्ति के साथ बंधन की संभावनाएँ देकर संसार में इसलिए भेजा गया है कि वह अपने गुणों तथा देवत्व को विकसित करने के लिए प्रतिकूलताओं से संघर्ष करता हुआ पुरुषार्थ का परिचय दे और इस प्रकार इस संसार लीला को रोचक तथा सक्रिय बनाता हुआ अपने उस परम पिता परमात्मा का मनोरंजन करे जिसने अपना एकाकीपन बदलने के लिए इस वैचित्र्य पूर्ण संसार नाटक की रचना की है। हार-जीत के इस खेल में, बंधन-मुक्ति के इस संघर्ष में सफलता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तभी संभव है, जब मनुष्य जीवन में सामान्य अथवा असामान्य, भौतिक अथवा आध्यात्मिक गतिविधियों तथा क्रिया-प्रक्रियाओं को आधार बनाए, उनको सत्य, शिव और सुंदरतापूर्वक अपने परम लक्ष्य को ही लक्षित करके संपादित करता हुआ इस प्रकार चलता रहे, जिससे उसके मार्ग का अंधकार हटता और प्रकाश बढ़ता जाए!

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1970, पृष्ठ-13

अच्छाई अपनाएँ ताकि अच्छाई फैले

आत्मशोधन में निरत होना, संसार-शोधन में लगने का एक प्रकार है। एक व्यक्ति अपनी अच्छाई से केवल अपने आप ही लाभान्वित नहीं होता बल्कि अन्य लोगों की सुख-शांति बढ़ाने में भी सहायक होता है। जिस प्रकार एक बुरा आदमी अपनी बुराई का प्रभाव दूसरों तक पहुँचाता है और इस प्रकार उनके दु:खों में वृद्धि करता है, उसी प्रकार एक अच्छा आदमी भी अपनी अच्छाई का प्रभाव दूसरों पर डालता है और वे उसके व्यवहार से लाभान्वित ही नहीं, प्रेरित भी होते हैं। उनके शोक-संतापों की संख्या घटती और सुख-शांति की वृद्धि होती है। इसलिए विश्व-कल्याण का सबसे सरल और सही तरीका आत्मकल्याण ही मानना चाहिए।

आत्मसुधार अथवा आत्मकल्याण की भावना को किसी प्रकार भी स्वार्थ मानना भारी भूल होगी। अपने चरित्र को ऊपर उठाना अथवा आत्मा की उन्नति करना, स्वार्थ नहीं माना जा सकता, वह विशुद्ध परमार्थ है। परमार्थ के कार्यों से न केवल अपना ही मंगल होता है बल्कि सारे संसार, सारे मनुष्यों और सारे जीव, प्राणिमात्र को भी लाभ मिलता है।

संसार का सुधार करने के लिए हमें जीवन में आध्यात्मिक दृष्टिकोण को विकसित और आध्यात्मिक गतिविधि को अपनाकर चलना चाहिए। प्रत्येक अच्छी-बुरी परिस्थिति का उत्तरदायी हम स्वयं अपने को मानें। बाह्य प्रवृत्तियों का कारण अपने अंदर खोजें और उनका निवारण करें, अपने गुण-कर्म-स्वभाव को उन्नत एवं उदात्त बनाएँ, तब हमें संसार से कोई शिकायत न रहेगी और इस प्रकार सारा संसार ही सुधार की ओर चल पड़ेगा।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1970, पृष्ठ-27

अपने आप से लड़ना सीखें

अपनी असलियत हम जितनी अच्छी तरह जान सकते हैं, दूसरे उतनी नहीं। दोषों की निंदा और उनके उन्मूलन की चेष्टा हमें अपने आप से आरंभ करनी चाहिए, क्योंकि अपने निकटतम, समीपवर्ती हम स्वयं ही हैं। अपने ऊपर अपना जितना प्रभाव और दबाव है, उतना और किसी पर नहीं। इसलिए यदि सुधारने का काम आरंभ करना हो तो ऐसे व्यक्ति से आरंभ करना चाहिए जो अपने अधिकतम निकट और अधिकतम प्रभाव, दबाव में हो। ऐसे व्यक्ति हम स्वयं ही हो सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबसे बड़ा हिम्मत का काम है, अपनी वास्तविकता समझना और अपने दोषों तथा दुर्बलताओं को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लेना। इसी स्वीकृति के बाद लगेगा कि जिसे दुर्बलताओं से छुड़ाने और पापों से बचाने की जरूरत है, वह प्रथम व्यक्ति, हम स्वयं ही हैं। अपनी कुरूपता स्वीकार करने में जिसे डर नहीं लगता और अपनी असलियत को बिना छिपाए प्रकट करता है, असल में सबसे बहादुर शूरवीर उसे ही कहना चाहिए। योद्धा का काम लड़ना ही है। अनाचार ने हर योद्धा को चुनौती दी है कि वह लड़ने के लिए खम ठोंके और आगे आए। ऐसा धर्मयुद्ध आरंभ करने के लिए हमारा अपना मन और जीवन ही सबसे बड़ा कुरुक्षेत्र, युद्ध मोर्चा हो सकता है।

दोषों और दुर्बलताओं को छिपाने में हम जितना मनोयोग लगाते हैं, उससे आधा भी यदि उनके परिष्कार में लगा दें तो सरलतापूर्वक निर्मल और निष्पाप गतिविधियाँ अपनाने में सफलता मिल सकती है।

मित्रों में उन्हें सम्मिलित करना चाहिए जो हमारे दोष दरसा सकें और कुमार्ग से हटाने का साहस उत्पन्न कर सकें। आमतौर से होता यह है कि चापलूसी भाती है और दोषों की चर्चा करने वाला शत्रु लगता है। हम चोरी का धंधा करते हों और कोई चोर कह दे, बेईमानी करते हों और कोई बेईमान कह दे तो बहुत बुरा लगता है और उससे लड़ने-मरने को तैयार हो जाते हैं। इसे कायरता ही कहना चाहिए कि वस्तुस्थिति को बताने वाले दर्पण में अपनी कुरूपता देखना हमें सहन नहीं होता और अपने अपराध का दंड उस दर्पण को तोड़ने के रूप में देना चाहते हैं। कई बार ऐसे तर्क प्रस्तुत करके हम अपना बचाव करते हैं—हमीं अकेले तो नहीं हैं, दुनिया में और भी तो बहुत-से लोग यह कर रहे है, उन्हें क्यों नहीं रोकते?

अपने दोषों की समीक्षा के लिए हमें ही स्वयं आगे आना चाहिए ताकि किसी दूसरे को वैसा करने का कष्ट न करना पड़े। चर्चा या निंदा करना उतना आवश्यक नहीं जितना कि सुधार के लिए प्रयत्न करना। निंदा करने मात्र से पाप भाग नहीं जाएगा। भ्रष्टाचार का अंत करने के लिए मात्र चीख-पुकार काफी नहीं। उसके लिए कुछ ठोस कदम उठाने पड़ेंगे और उनमें सबसे पहला और सबसे प्रभावशाली काम यह हो सकता है कि हम अपने दोषों को साहसपूर्वक स्वीकार करें और साथ ही अपनी दुर्बलताओं को उखाड़ फेंकने के लिए वह पराक्रम-पुरुषार्थ दिखाएँ जो सच्चे बहादुर और सच्चे योद्धा ही दिखाया करते हैं। अपने आप से लड़ना और अपने को शुद्ध बना लेना, बाहर की दुनिया को निर्मल-निष्पाप बना सकने की सबसे बड़ी योग्यता और वीरता की सबसे बड़ी निशानी है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1972, पृष्ठ-38

दूरदर्शिता अपनाएँ, दुर्बुद्धि को निरस्त करें

हमें उथलेपन में नहीं भटकना चाहिए, गहराई में उतरना चाहिए। छिटपुट कठिनाइयाँ सामने देखकर उनका सामयिक समाधान ढूँढ़ने में ही व्यस्त नहीं हो जाना चाहिए, विषवृक्ष की उस जड़

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर कुठाराघात करना चाहिए, जिसके फल और काँटे पग-पग पर त्रास देते हैं। संकटग्रस्त की तात्कालिक सहायता कर देना अच्छी बात है, उससे हमारी दयालुता और उदारता को पोषण मिलता है, पर उससे स्थायी समाधान कुछ नहीं मिलता। भिक्षुक को एक रुपया दे देना सस्ती दयालुता है, पर सच्चा सहायक तो वह है, जो उसे परिश्रम करने के लिए रजामंद करे और उपार्जन के किसी उपयुक्त साधन में जुटा दे। सस्ती और उथली सेवा तो कितने ही भावुक लोग करते रहते हैं। हमें दूरदर्शियों की भूमिका निभानी चाहिए और व्यक्ति एवं समाज को निरंतर संत्रस्त करने वाली विपत्तियों की जड़ काटने की दूरदर्शिता अपनानी चाहिए। सुख-शांति की सुस्थिर आधारशिला रखनी चाहिए।

स्पष्ट है कि मानवी दुर्बुद्धि को निरस्त किए बिना, भावनात्मक उत्कृष्टता का जनमानस में बीजारोपण किए बिना, व्यक्ति और समाज की एक भी समस्या का हल नहीं निकलेगा। कोल्हू के बैल की तरह हम विविध प्रकार के हलके-फुलके प्रयासों में चक्कर भले ही काटते रहें। कार्य कठिन है। उसका प्रतिफल, प्रत्यारोपण चर्म-चक्षुओं से दीख नहीं पड़ता, इसलिए अदूरदर्शियों को उसका कुछ परिणाम प्रतीत न होने से उत्साह भी नहीं मिलता। इसलिए लोग ज्ञानयज्ञ जैसे सर्वोत्कृष्ट परमार्थ की उपयोगिता समझ नहीं पाते, उसके लिए साहस जुटा नहीं पाते। यही कारण है कि सेवा परमार्थ की बात सोचने वाले लोग अन्नदान, जलदान, वस्त्रदान, औषधिदान आदि की बात सोचने तक सीमित रह जाते हैं। बहुत हुआ तो उन कार्यों को हाथ में लेते हैं, जिनसे ख्याति और प्रशंसा मिलती हो। धर्मशाला, मंदिर आदि इमारतें विशुद्ध रूप से दाता की ख्याति के लिए ही बनती हैं। उपयोगिता की दृष्टि से उनका लाभ नगण्य है। कई बार तो उनसे मुफ्तखोरी की दुष्प्रवृत्ति का अभिवर्द्धन होने लगता है। ब्रह्मभोज जैसी दावतों के पीछे ऐसी ही उथली यशकामना काम करती है। हमें उस बाल-स्तर से अपने को आगे बढ़ाना चाहिए और दूरदर्शियों की तरह उन कार्यों को हाथ में लेना चाहिए, जिनसे मानवी समस्याओं का स्थिर एवं आत्यंतिक समाधान संभव हो सके।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1974, पृष्ठ-31, 32

कमाना ही नहीं, खरच करना भी सीखें

बुद्धिमत्ता कमाने में नहीं, खरच करने में है। भाग्य को भी धनी बना सकते हैं। चोर, उचक्के भी अनीति पर उतारू होकर बहुत कुछ कमा लेते हैं। धनी होना गौरव की बात नहीं। दूरदर्शी विवेकशीलता की परख इसमें है कि उपार्जन का उपभोग किस प्रकार किया गया? यदि उसे संग्रह भर किया जाता रहा और उससे लाभ लेने का अवसर मात्र थोड़े से वंशजों को ही दिया गया तो इसे जरूरतमंदों अथवा सत्कार्यों को उस लाभ से वंचित रखना ही कहा जाएगा।

हमारी योग्यता, क्षमता एवं उपार्जन की सफलता का श्रेय समस्त समाज को है जिसकी सहायता से हमारा व्यक्तित्व उभरा और सफलताएँ प्राप्त कर सकने का अवसर मिला। दूसरे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राणी तो एकाकी जीवन भी जी सकते हैं, पर मनुष्य के लिए तो उतना भी संभव नहीं। जन्म से लेकर मरण तक हर कार्य और हर क्षेत्र में उसे दूसरों की सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है। इस अनुदान का प्रतिदान चुकाए जाने का यही एकमात्र उपाय है कि हम अपनी नितांत आवश्यकताएँ पूरी करने के उपरांत जो कुछ बच जाए, उसे उस समाज के उत्कर्ष में खरच करें, जिसने हमें कमाने योग्य बनाने में अनवरत योगदान दिया है।

सराहनीय उसी का दृष्टिकोण है, जिसने उपार्जित संपदा का सदुपयोग किस प्रकार होना चाहिए, इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार किया और अपनी उपलब्धियों से संसार में श्रेष्ठ परंपराएँ स्थापित करने का प्रयोजन पूरा किया। जिसने मोहवश किसी व्यक्ति विशेष को लाभान्वित करने की बात सोचने की अपेक्षा यह सोचा कि किस प्रकार समाज की अधिक उन्नति के लिए अपने उपार्जन का सदुपयोग हो सकता है। हमें न तो खजूर का पेड़ बनना चाहिए, न सर्प, न शरीर-पोषण तक सीमित रहना चाहिए और न संतान को अमीर बनाने के ताने-बाने बुनने चाहिए। उचित कर्त्तव्यों का पालन करने के उपरांत जो कुछ भी श्रम, समय, ज्ञान, प्रभाव, धन-वैभव आदि बचता है उसे लोकमंगल के लिए वापस करना ही दूरदर्शितापूर्ण कार्य है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1975, पृष्ठ-44

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कल का किया कार्य आज का भाग्य

संपूर्ण समस्याओं का निराकरण अपने पास ही है। हम दूसरों से जिस सहायता की अपेक्षा करते हैं, उसकी पात्रता भी हमें अपने अंदर पैदा करनी चाहिए। आत्मनिर्भरता तथा आत्मावलंबन का मार्ग छोड़ देने पर ही मनुष्य के अंदर दीनता की भावना उत्पन्न होने लगती है और वह बड़े दीन-हीन वचन बोलने लगता है, "मैं क्या कर सकता हूँ? कोई मेरा साथ नहीं देता है"— ऐसी शिकायतें प्राय: वे लोग ही किया करते हैं, जिनको अपने ऊपर विश्वास नहीं है। देवता, भाग्य, ग्रह, नक्षत्र, समय, काल, युग आदि को वे व्यर्थ ही कोसते हुए सुने जाते हैं।

भाग्य की रेखाएँ तो कर्म के आधार पर बनती और मिटती रहती हैं। भाग्य लिखते समय विधाता को सोचना पड़ता है कि अमुक व्यक्ति के भाग्य में क्या लिखा जाए? अपनी शक्तियों के सदुपयोग और दुरुपयोग के आधार पर भाग्य का लेखा-जोखा तैयार होता है। यदि हमने अपने में सद्गुणों को अधिक मात्रा में जमा कर लिया है, तो भाग्य में भी उन्नति का लेख लिखा जाएगा और यदि दुर्गुणों को, मूर्खताओं को बढ़ावा दिया गया है तो भाग्य की लिपि भी बदल जाएगी। यदि हमारे अंदर उत्साह, लगन, साहस, दृढ़ता, धैर्य, परिश्रम, कर्मठता आदि गुण विद्यमान हैं, तो विश्वास मानिए कि हम अपने भाग्य की लिपि बदल डालेंगे। कल का किया गया कार्य ही तो आज का भाग्य बनता है। भाग्य पहले से लिखा हुआ नहीं होता है।

मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट रचना है। उसे इतनी क्षमता एवं योग्यता स्वभावत: ही प्राप्त है कि वह अपने लिए उपयोगी एवं अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण स्वयं कर ले। परमात्मा ने

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य को दूसरे जीवों की तरह पराश्रित, अयोग्य, बुद्धिहीन एवं निर्बल नहीं बनाया है कि वह दूसरों की कृपा पर जीवित रहे। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। अपने लिए भली और बुरी परिस्थिति उत्पन्न करने का एकमात्र अधिकार केवल उसी को है। अतः हमें भूत-प्रेत, देवी-देवता, ग्रह-नक्षत्र और भाग्य आदि का बहाना छोड़कर आत्मनिर्भरता का पाठ सीखना चाहिए और अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए, तभी हमारी आकांक्षाएँ पूर्ण हो सकेंगी।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1976, पृष्ठ-08

बुराइयाँ मिटेंगी, प्रबल पुरुषार्थ से

संसार में फैली हुई अवांछनीयताएँ हमारे शौर्य, साहस, पुरुषार्थ एवं कौशल को चुनौती देने के लिए हैं। रोग न रहे तो डॉक्टर की क्या उपयोगिता? पाप न हों तो धर्मप्रचारकों की क्या जरूरत? दरिद्र न हों तो दानी बनने का श्रेय किसे मिलेगा? संसार में फैली हुई बुराइयों को देखकर जिस-तिस पर दोषारोपण करने मात्र से काम न चलेगा। उन्हें हटाने, मिटाने के लिए प्रबल पुरुषार्थ करते हुए हमें अनुकरणीय परंपराओं की स्थापना करनी चाहिए। अनीति के, अनौचित्य के निराकरण में प्रचंड प्रयत्न करने पड़ते हैं, कष्ट और आघात सहने पड़ते हैं, शौर्य, साहस का परिचय देना पड़ता है। इस दृष्टि से उदात्त आत्माओं के लिए वे अवांछनीयताएँ भी भावनात्मक प्रगति का आधार बनती हैं। फैली हुई कुरूपता और अवांछनीयता से यदि हम डरने, घबराने न लगें और उन्हें निरस्त करने के लिए अपनी प्रखरता की कसौटी पर चढ़ा दें तो उसका भी लाभ उठाया जा सकता है। विष से भी अमृत बना लेना रासायनिक कुशलता है। संसार में फैली हुई अवांछनीयताओं को अपने लिए चुनौती माना जाए और लड़कर उन्हें परास्त करने का पुरुषार्थ जुटाया जाए तो उससे भी देव परंपराओं को यशस्वी होने का अवसर मिल सकता है और जनसाधारण में सृजनात्मक साहस बढ़ सकता है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1976, पृष्ठ-14, 15

व्यक्तित्व निर्माण का श्रीगणेश स्वयं से करें

जितना परिश्रम, मनोयोग बाह्य जीवन से संबंधित व्यवसायों, क्रिया-कलापों में लगाया जाता है, उससे सौवाँ हिस्सा भी यदि आत्मनिरीक्षण, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास के चतुर्विध आत्मोत्कर्ष की साधना में लगाया जाए तो अपने भीतर से ही एक ऐसे देवमानव का उद्‌भव हो सकता है जो सारे संपर्क-क्षेत्र को दैवी विभूतियों से भरा-पूरा बना दे। दुष्ट-दुर्जन जहाँ रहते हैं, वहाँ उत्पीड़न और आतंक का वातावरण उत्पन्न करते हैं। दीन, दुर्बल, अनाथ असहाय, मूर्च्छित, अर्द्धमृतक जहाँ रहते हैं, वहाँ घिनौनी सड़न से विकृतियों से दम घोंटने वाली गंदगी भरते हैं। इसके विपरीत देव-मानव अपने उत्कृष्ट दृष्टिकोण से, सुसंस्कृत व्यक्तित्व से, आदर्श

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रिया-कलाप से ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं जिन पर स्वर्ण निछावर किया जा सकता है। वस्तुत: गुण-कर्म-स्वभाव की संपत्ति ही असली वैभव है, उसी के सहारे आंतरिक विभूतियाँ और भौतिक संपत्तियाँ उत्पन्न होतीं, बढ़ती और उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचती हैं।

प्रगतिशीलता न तो लंबी-चौड़ी बकवास पर निर्भर करती है और न बड़े साधन जुटाने पर उसकी संभावना सुनिश्चित होती है। खरे व्यक्तित्व ही अपनी शालीनता, चरित्रनिष्ठा, सूझ-बूझ और सुव्यवस्था के आधार पर बड़े कामों का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठाते और उसे भली प्रकार पूरा करते हैं। दूसरे को अपनी मनमरजी पर चलाना कठिन है। कोई अपना कहना न माने तो उसे विवश कैसे किया जा सकता है। शरीर पर तो बंधन लगा भी सकते हैं पर किसी के मन पर तो दूसरे का प्रतिबंध नहीं चल सकता। इसलिए व्यक्तित्वों के निर्माण का प्रयोग अपने आप से आरंभ करना चाहिए। अपने शरीर और मन पर तो अपना नियंत्रण हो ही सकता है। कम से कम अपने को अवांछनीय मार्ग से विरत करना और सन्मार्ग पर चलाना संभव हो ही सकता है। अपने दुर्गुणों पर यदि कड़ी दृष्टि रखी जाए और कड़ाई बरती जाए तो वे पराये घर में घुसे हुए चोर की तरह देर तक नहीं ठहर सकते; उन्हें भागना ही पड़ेगा। दुर्गुण विजातीय तत्त्व हैं। मानवी अंत:करण उनका अपना घर नहीं है। यह तो आत्मा की परमात्मा की देवभूमि है। यहाँ तो दैवी सत्प्रवृत्तियों का ही निवास हो सकता है। दुष्प्रवृत्तियाँ तो हमारी असावधानी का लाभ उठाकर अवैध कब्जा जमा लेती हैं। उन्हें दुत्कार दिया जाए तो पंखा झलते ही उड़ती दीखने वाली मक्खियों की तरह उन्हें पलायन करते हुए देखा जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1976, पृष्ठ-51, 52

दुर्गुण और दुर्भाव का मुकाबला सत्कार्य और सत्प्रवृत्तियों से करें

थोड़ा त्याग करके बहुत यश लूटने की लिप्सा लोगों में देखी जाती है। अखबारों में नाम और फोटो छपाने के लोभ में कई लोग सत्कर्मों का बहाना करते रहते हैं। यश मिलने की शर्त पर ही थोड़ी उदारता दिखाने वाले लोग बहुत होते हैं। परंतु दया, करुणा, त्याग और परमार्थ की भावनाओं को चरितार्थ करने की महत्त्वाकांक्षाएँ ही सच्ची और श्रेयस्कर महत्त्वाकांक्षाएँ कही जा सकती हैं। देवी संपदाएँ, सत्प्रवृत्तियाँ ही वह आध्यात्मिक विभूतियाँ हैं, जिन्हें पाकर मनुष्य स्वयं भी आनंद और संतोष-लाभ प्राप्त करता है और अपने समीपवर्ती समाज को भी सुख-शांति का आनंद देता है। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं के पागलपन ने दुनिया का अनर्थ ही किया है, पाप और विनाश को ही बढ़ाया है, इन्हें त्यागा ही जाना चाहिए।

संसार में कोई किसी को उतना परेशान नहीं करता जितना कि मनुष्य के अपने दुर्गुण और दुर्भावनाएँ। सबसे दुर्गुणी व्यक्ति दुर्व्यसनी होता है। दुर्व्यसन मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के स्वास्थ्यों का शत्रु होता है। शराब, जुआ, व्यभिचार ही नहीं बल्कि आलस्य, प्रमाद, पशुता आदि भी भयानक दुर्व्यसन ही हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्गुणी व्यक्ति का सारा समाज आदर करता है। सहयोग, सौहार्द्र एवं सहानुभूति उसकी संपत्ति बन जाती हैं। वह सदैव स्वस्थ और सुखी रहता है।

मनुष्य कुसंस्कारों का गुलाम हो जाए, अपने स्वभाव में परिवर्तन न कर सके, यह बात ठीक नहीं जँचती। यह मनुष्य के संकल्पबल और विचारों के दृष्टिकोण को समझकर कार्य करने पर निर्भर है।

जब तक हम अपने गुण और दोष देखने में ईमानदारी और सच्चा दृष्टिकोण नहीं अपनाते, संस्कार परिवर्तन में तभी तक परेशानी रहती है। मनुष्य आत्मदुर्बल तभी तक रहता है, जब तक वह आत्मविवेचन का सच्चा स्वरूप ग्रहण नहीं करता।

अत: जब कभी दुर्गुण और दुर्भाव उठें, उन्हें उसी समय सद्कार्यों और सत्प्रवृत्तियों के मुकाबले तोलकर सद्कार्यों की ओर लग जाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1976, पृष्ठ-55

जीवन का आधार—आत्मविश्वास

आत्मविश्वास अपने आप में एक शक्ति है। शक्तिरूपी आत्मविश्वास हमें नर से नारायण की भूमिका में पहुँचा देता है। अपनी सत्ता—आत्मविश्वास की जानकारी कर उसके सदुपयोग करने की कला की परख होनी चाहिए। अंत:करण की सुषुप्त शक्तियों के जग पड़ने का नाम ही आत्मविश्वास है।

आत्मविश्वास आंतरिक शक्तियों को केंद्रित एवं नियंत्रित करता है। जब केंद्रित एवं संगठित शक्तियाँ एक दिशा की ओर चल पड़ती हैं तो सफलता ही सफलता मिलती जाती है। विश्वास की ज्योति जलाकर ही अंधकार को मिटाया जा सकता है।

जीवन के हर क्षेत्र में विश्वास की आवश्यकता है। विश्वास हमारा मार्गदर्शन करता है तथा सत्पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। जीवन रहस्य को समझने के लिए आत्मविश्वास का सहारा लेना ही पड़ेगा। जीवन-निर्माण में आत्मविश्वास का प्रधान हाथ रहता है।

जो व्यक्ति अपनी इस शक्ति का विकास नहीं कर पाए, उन्हें अभाव और दरिद्रता में पलते हुए जीवन को समाप्त करना पड़ा। अविश्वासी व्यक्ति न तो किसी के सहायक हो पाते हैं और न दूसरों की आत्मीयतापूर्ण सहानुभूति ही प्राप्त कर पाते हैं।

जीवन-निर्माण के लिए आत्मनिष्ठा पर आधारित आत्मविश्वास की अभिवृद्धि आवश्यक है। इसका सहज मार्ग अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्वों को ईमानदारी के साथ पूर्ण करते चलने में हैं। कार्यों के छोटे-बड़े की चिंता नहीं होनी चाहिए।

छोटे-छोटे कार्यों के संपादन करते चलने से मनोबल बढ़ता है और आगे का मार्ग प्रशस्त होता है। बड़े लोगों ने अपने जीवनकाल के प्रारंभ में छोटे काम ही हाथ में लिए थे। कोई भी कार्य छोटा और बड़ा नहीं होता। यह तो कार्य संपादन करने वालों की मनोभूमि पर आधारित होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का आधार आत्मविश्वास ही है, जिसने अपने को पहचाना और अपनी शक्तियों को विकसित किया, वे अवश्य ही जीवन-संग्राम में सफल हुए।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1976, पृष्ठ-27

सफलता के वटवृक्ष के मूल में एकाग्रता की गहराई

उपलब्धियों पर सुख-संतोष निर्भर है। उपलब्धियाँ साधना से मिलती हैं। साधना का ही दूसरा नाम एकाग्रता है। एकाग्रता के दो अविच्छिन्न पथ हैं—तन्मयता और तत्परता। सफलताओं के वटवृक्ष के मूल में एकाग्रता की जड़ें ही गहराई तक प्रवेश होती और सक्रिय रहती देखी जा सकती हैं। आलस्य पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए श्रम और समय का पूरी तत्परता के साथ अभीष्ट प्रयोजन में समावेश करना पड़ता है। कर्म के बिखराव को रोक देना और विचारों पर अंकुश रखना, इसी का नाम मनोनिग्रह है। अध्यात्म शास्त्र में इसी को 'आत्मजय' कहा गया है। प्रमाद का बिखराव ही मानसिक क्षमता को अस्त-व्यस्त करता है। अति संक्षेप और सारभूत शब्दों में यदि एकाग्रता की महान उपलब्धि के आधार का वर्णन किया जाए तो आलस्य और प्रमाद की अस्तव्यस्तता पर अंकुश कर लेने की सफलता के रूप में उसकी व्याख्या-विवेचना हो सकती है। इस दिशा में परिपक्व सफलता दैनिक जीवन की समस्त गतिविधियों को सुनियोजित करने की आत्मसाधना में चिरकाल तक निरत रहने से ही संभव होती है। एकाग्रता का कल्पवृक्ष प्राप्त करने के लिए हमें आलस्य और प्रमाद को मार भगाने की—अभीष्ट प्रयोजन में तन्मयता और तत्परता उत्पन्न करने की जीवन साधना अनवरत रूप से करनी चाहिए। आत्मिक और भौतिक प्रगति के उभयपक्षीय लाभ इस सत्प्रयत्न के साथ जुड़े हुए हैं। भौतिक ऋद्धियाँ और आत्मिक सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए हमें एकाग्रता का महत्त्व समझना चाहिए और उसे पूजाकाल की विशेषता नहीं समूचे जीवनक्रम को सारभूत एवं स्वर्णिम उपलब्धि मानकर परिपूर्ण श्रद्धा के साथ उसके उपार्जन में संलग्न रहना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1976, पृष्ठ-31

अदूरदर्शिता एक अभिशाप

सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत और समुन्नत जीवन जीने की आकांक्षा जिन्हें भी हो, उन्हें अपनी दूरदर्शिता को जगाना चाहिए, विवेकशीलता को उभारना चाहिए। आज की क्रिया का कल क्या परिणाम होगा? इसे स्थिर चित्त से समझ सकने की क्षमता को बुद्धिमानी कहते हैं। मूर्ख वे हैं जो उठती ललकों को ही सब कुछ समझ लेते हैं और उन्हीं के पीछे दौड़ना आरंभ कर देते हैं। एकांगी चिंतन की आदत से बढ़कर व्यक्ति के लिए दुःखद दुर्भाग्य दूसरा नहीं हो सकता। जो सोचा या चाहा जा रहा है, उसमें कितना औचित्य है? इस मार्ग पर चलने से कोई खतरा तो नहीं है? यह पगडंडी कहीं कँटीली झाड़ियों में तो नहीं भटका देगी? ऐसी आशंकाएँ मन में न उठें

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और जो भी भली-बुरी उचंग जी में उठे, उसी को चरितार्थ करने को मन मचलने लगे तो समझना चाहिए अनिष्ट की घटाएँ सिर पर घुमड़ रही हैं और विपत्ति के बादल बरसने ही वाले हैं। दुष्प्रवृत्तियाँ अनेक हैं और उनके दुष्परिणाम भी सर्वविदित हैं किंतु यह अनुभव नहीं किया जाता कि निर्दोष दीखने वाली अदूरदर्शिता से बढ़कर अन्य कोई अभिशाप मनुष्य के लिए हो सकता है। यह ऐसा दुर्भाग्य है जिसे अपने हाथों ही गढ़ा और अपने ही सिर पर पटका जाता है। अपने हाथों अपनी कुल्हाड़ी अपने पैरों में मारने वाली कहावत अदूरदर्शिता के संबंध में ही पूरी तरह चरितार्थ होती है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1977, पृष्ठ-25

हर कदम औचित्य की कसौटी पर कसें

हमारे चिंतन में विवेक को स्थान मिलना चाहिए। औचित्य की कसौटी पर कसने के पश्चात ही किसी इच्छा का समर्थन करें और उसे कार्यान्वित करने के लिए तभी कदम उठाएँ जब हर दृष्टि से ठोक-बजाकर यह देख लिया जाए कि जो किया जा रहा है, उसमें उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ पूरी तरह सन्निहित हैं। इसके लिए पक्ष और विपक्ष दोनों की ओर से सभी पहलू प्रस्तुत किए जाने चाहिए और बुद्धि को इतना अवसर देना चाहिए कि वह शांतचित्त से उपयुक्त निर्णय करने में समर्थ हो सके। न्यायालयों में यही नियम अपनाया जाता है। पक्ष और विपक्ष के दोनों वकील अपने-अपने समर्थन और दूसरे के विरोध में सभी प्रमाण और तर्क न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत करते हैं। इस बहस से यह लाभ है कि न्यायाधीश को दोनों पक्षों की बात सुनने, समझने और किसी उचित निष्कर्ष पर पहुँचने में सुविधा पड़ती है। यह बहस न होती तो संभव है न्यायाधीश का मानसिक प्रवाह अविज्ञात रूप से किसी पक्ष के विरोध या समर्थन में फँस जाता और ऐसी दशा में न्यायोचित निर्णय कर सकने में बाधा उत्पन्न होती। बहस से पक्ष-विपक्ष की जो काट-छाँट चली उस मंथन से उभयपक्षीय प्रतिपादन सामने आया और सही निर्णय पर पहुँचने का मार्ग खुला। यही तरीका अपनी जीवन-नीति बनाने और गतिविधियाँ अपनाने में भी अपनाया जाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1977, पृष्ठ-26

मनन-चिंतन दैनिक कृत्य बने

आत्मसमीक्षा, मनन, दैनिक कृत्य कर दिया जाना चाहिए। शरीर से दुष्कर्म, मन से अशुभ चिंतन और अंत:करण से दुर्भाव की अवांछनीयता तो नहीं बरती जा रही है; इसका निरंतर ध्यान रखा जाए। जब भी इन तीनों क्षेत्रों में जो गड़बड़ी हो रही हो उसे तत्काल अत्यंत कठोरतापूर्वक रोक दिया जाए। मन में संचित कुसंस्कार प्राय: उठते रहते हैं; विवेक खो जाता है और सिर पर चढ़ा कुसंस्कारों का भूत मनुष्य को कठपुतली की तरह नचाने लगता है। ऐसी स्थिति का सामना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के लिए पहले से ही तैयार रहना चाहिए। प्रातःकाल ही अनुमान लगाना चाहिए कि आज किस समय, किस प्रसंग में क्या अवांछनीयता सिर चढ़ सकती है? उसकी काट पहले से ही तैयार रखनी चाहिए। बचने और लड़ने के दोनों शस्त्र सँभालकर रखने चाहिए। यह सारा प्रसंग मनन प्रक्रिया के अंतर्गत आता है।

चिंतन वह पक्ष है जिसमें दुर्बलताएँ हटाने और विभूतियाँ बढ़ाने की क्रमबद्ध योजना बनती है और उत्कृष्टता को कार्यरूप में परिणत करने का ढाँचा खड़ा किया जाता है। दोष-दुर्गुणों को छोड़ देना तो फूटे बरतन के छेद बंद करने के बराबर है। इससे अपव्यय और अनर्थ रुकता है। किंतु आत्मोत्कर्ष के लिए जिन दिव्य विभूतियों की; गुण-कर्म-स्वभाव की; उत्कृष्टता की आवश्यकता पड़ती है उनका अभाव ही बना रहा तो छेद बंद करने से भी लक्ष्य पूर्ति के लिए आवश्यक क्षमता का संग्रह न हो सकेगा। अस्तु, चिंतन में अपने सुधार और कायाकल्प की योजनाएँ रहनी चाहिए। सुधार-परिवर्तन किस क्रम से लाया जाए और उसके लिए वर्तमान गतिविधियों में, रीति-नीतियों में, आदत-अभ्यासों में, रुचि-आकांक्षाओं में किस प्रकार हेर-फेर किया जाए? यह विचार योजनाबद्ध रीति से किया जाना चाहिए। महामानवों ने जिस स्तर का उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तृत्व अपनाया है उसी के अनुरूप अपने को ढाला जाए। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि श्रेष्ठ सज्जनों की प्रकृति में जिन सद्भावनाओं-सत्प्रवृत्तियों का समावेश होता आया है उसी के अनुरूप आकांक्षाओं को जगाया और आदतों को बढ़ाया जाए। चिंतन इसी योजना-प्रक्रिया का नाम है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1977, पृष्ठ-16, 26

विपत्ति का सामना बहादुरी से करें

निषेधात्मक चिंतन मनुष्य का निरंतर रक्त सुखाता है और उसकी शक्तियों को अकारण ही अनावश्यक रूप से नष्ट करता है। हमें इन मानसिक दुर्बलताओं से बचने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। अपने स्वभाव को शौर्य, साहस से भरा-पूरा बनाना चाहिए, निर्भयता अपनानी चाहिए और हिम्मत रखनी चाहिए। यदि कभी कोई विपत्ति आएगी तो अपने पराक्रम से उसका सामना करेंगे। सज्जनों की सद्भावना तथा ईश्वर की सहायता मिलेगी और बेड़ा पार हो जाएगा। इतने पर भी कुछ भुगतना पड़ा तो बहादुरों की तरह उसका हँसते-हँसाते सामना करेंगे। दूसरों से लड़ने-मरने वाली बहादुरी की तो कभी-कभी ही आवश्यकता पड़ती है, पर अपने को भीरुता से बचाने और साहसी बनाए रहने वाली वीरता की अपेक्षा तो हर मनुष्य को हर घड़ी रहती है। उसका संचय करना ही चाहिए।

निर्भय मनुष्य स्वयं बहादुरी के साथ शानदार जिंदगी जीता है और अपने साथियों की भी हिम्मत बढ़ाता रहता है। इसके विपरीत डरपोक अपनी कुकल्पनाओं से अपने को भयभीत रखता है और साथियों में भी ऐसी ही भीरुता, आशंकाभरी कुकल्पना उत्पन्न करता है। आलस्य, प्रमाद,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भय, संदेह, आशंका, निराशा, चिंता जैसी कितनी ही बुरी आदतें मनुष्य की स्वाभाविक शक्ति का बहुत बड़ा अंश नष्ट करके उसे दीन-दुर्बल बनाती चली जाती हैं। उन्हें अपने स्वभाव का अंश नहीं ही बनने देना चाहिए और यदि वे आदत में सम्मिलित हो गईं तो प्रयत्नपूर्वक उन्हें हटाकर साहसिकता, स्फूर्ति, आशा की सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने का अभ्यास करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1978, पृष्ठ-13

श्रम ही कल्पवृक्ष है

जो भी अपना कार्यक्रम बनाया हो, जो भी जीवनोद्देश्य बनाया हो, उसे पूरा करने में जी-जान से जुट जाना चाहिए। सोते-जागते उसी के संबंध में सोच-विचार करते रहें और आगे का रास्ता तलाश करते रहें। परिश्रम! परिश्रम!! घोर परिश्रम!!! आपकी आदत में शामिल होना चाहिए, मत सोचिए कि अधिक काम करने से आप थक जाएँगे, वास्तव में परिश्रम एक स्वयं चालक शक्ति है, जो अपनी बढ़ती हुई गति के अनुसार कार्यक्षमता उत्पन्न कर लेती है। उदासीन, आलसी और निकम्मा व्यक्ति दो घंटा काम करके, एक पर्वत पार कर लेने की थकान अनुभव करता है, किंतु उत्साही, उद्यमी और अपने काम में दिलचस्पी लेने वाले व्यक्ति सोने के समय को छोड़कर अन्य सारे समय लगे रहते हैं और जरा भी नहीं थकते। सच्ची लगन, दिलचस्पी, रुचि और झुकाव एक प्रकार का डाइनुमा है, जो काम करने के लिए क्षमता की विद्युत शक्ति हर घड़ी उत्पन्न करता रहता है।

उत्साह, स्फूर्ति, लगन, धुन, परिश्रमप्रियता, साहस, धैर्य, दृढ़ता और कठिनाई को देखकर विचलित न होना, यह तप के लक्षण हैं। जिसने तप द्वारा इन गुणों को पैदा किया, अपने मनोवांछित तत्त्व को पाने के लिए खून-पसीना बहाना सीखा, वह एक प्रकार का सिद्ध है। कल्पवृक्ष की सिद्धि उसके आगे हाथ बाँधे खड़ी रहती है। ऐसे आदमी जो चाहते हैं; कर गुजरते हैं। जो चाहते हैं प्राप्त कर लेते हैं। नेतृत्व, लोकसेवा, धन-उपार्जन, प्रतिष्ठा, ज्ञान, भोग आदि संपदाएँ पाने की जिनके मन में लालसाएँ उठतीं हों, उन्हें सबसे पहले अपने को तपस्वी बनाना चाहिए। आलस्य, प्रमाद, समय का अपव्यय, बकबास, ठलुआपंथी, निराशा, निरुत्साह, अस्थिरता आदि दुर्गुणों को हटाकर तपश्चर्या के सद्गुणों को अपने अंदर धारण करना चाहिए। तप ही कल्पवृक्ष है। जिस किसी ने इस दुनिया में कुछ पाया है, परिश्रम से पाया है। आप भी कुछ पाना चाहते हैं तो अदम्य उत्साह के साथ घोर परिश्रम करना अपना स्वभाव बनाइए। इस साधना के फलस्वरूप आपको कल्पवृक्ष जैसी प्रतिभा मिलेगी और उसके द्वारा आपकी सब प्रकार की इच्छा, आकांक्षाएँ आसानी से पूरी हो जाया करेंगी।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1979, पृष्ठ-10

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी अंदर की शक्ति को पहचानें

आत्महीनता की भावना कितने ही रोगों की, आधि-व्याधियों की जननी है। अत: उससे छुटकारा पाना ही श्रेयस्कर है। परिस्थितियों को बढ़ा-चढ़ाकर देखने की आदत और अपने आप को दूसरों के सामने छोटा, हेय, हीन समझने का स्वभाव ही आत्महीनता की व्याधि का प्रमुख लक्षण है। इस व्याधि को जड़मूल से मिटाने का उपचार सुझाते हुए मन:शास्त्री कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को उचित और अनुचित का अंतर करना आना चाहिए, ऐसे लोग अपने आप में इतना साहस सँजोएँ कि जो सही है उसी को अपनाएँ और जो गलत है उससे स्पष्ट इनकार कर सकें। सहमत होना और हाँ करना अच्छी बात है पर वह इतनी अच्छी बात नहीं है कि यदि कोई बात अनुचित लग रही है और अनुचित लगने के पर्याप्त कारण हैं तो भी हाँ किया ही जाए और सहमत हुआ ही जाए। स्पष्ट रूप से निस्संकोच भाव से अस्वीकार करने की हिम्मत भी रखनी चाहिए। सोच-विचार करने में यह बात भी सम्मिलित रखना चाहिए कि हर सही-गलत बात में हाँ-हाँ करते रहने से दूसरों की दृष्टि में अपने व्यक्तित्व का वजन घट जाता है और आत्मगौरव को ठेस पहुँचती है, वह तो अलग ही है।

विकसित और परिष्कृत व्यक्तित्व का अर्थ है—अपनी मान्यता को स्पष्ट किंतु नम्र और संतुलित शब्दों में व्यक्त कर पाना। जो ऐसा नहीं कर पाते वह अपना मूल्य आप ही गिराते हैं। अपने बारे में यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि मैं कुछ नहीं हूँ बल्कि यह मानना चाहिए कि मैं भी इस संसार का एक महत्त्वपूर्ण घटक हूँ। परमात्मा के इस उपवन का एक सुंदर और उपयोगी आवश्यक फूल हूँ जिसे असमय कुम्हलाने का कोई कारण नहीं है। दूसरों के प्रति और अपने प्रति तो विशेष रूप से अपने विचारों, मान्यताओं एवं भावनाओं का मूल्य है। विश्वभर में संव्याप्त असीम बुद्धि चेतना और प्रचंड शक्ति सामर्थ्य का उपयुक्त तथा आवश्यक अंश प्रत्येक प्राणी में, प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान है। अपने भीतर निहित इस शक्ति और सामर्थ्य को पहचानने की सामर्थ्य प्रत्येक व्यक्ति में होनी चाहिए और नहीं है तो उसका विकास करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1980, पृष्ठ-41

प्रायश्चित से वर्तमान और भविष्य को सुधारें

आज की अपनी दु:खद परिस्थितियों के लिए भूतकाल की भूलों पर दृष्टिपात किया जा सकता है। इसी प्रकार सुखी-समुन्नत होने के संबंध में भी पिछले प्रयासों को श्रेय दिया जा सकता है। इस पर्यवेक्षण का सीधा निष्कर्ष यही निकलता है कि अशुभ विगत को धैर्यपूर्वक सहन करें या फिर उसका प्रायश्चित करके परिशोधन की बात सोचें। शुभ पूर्वकृतों पर संतोष अनुभव करें और उस सत्प्रवृत्ति को आगे बढ़ाएँ। यह नीति-निर्धारण की बात हुई। अब देखना यह है कि यदि अधिक व्याधियों के रूप में अशुभ कर्मों की काली छाया सिर पर घिर गई है, तो उसके निवारण का कोई उपाय है क्या?

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो कर्मफल पर विश्वास न करते हों, उन्हें भी मानवी अंत:करण की संरचना पर ध्यान देना चाहिए और समझना चाहिए कि वहाँ किसी के साथ कोई पक्षपात नहीं। पूजा-प्रार्थना से भी दुष्कर्मों का प्रतिफल टलने वाला नहीं है। देव-दर्शन, तीर्थ-स्नान आदि से इतना ही हो सकता है कि भावनाएँ बदलें। भविष्य के दुष्कृतों की रोकथाम बन पड़े। अधिक बिगड़ने वाले भविष्य की संभावना रुके। पर जो किया जा चुका, उसका प्रतिफल सामने आना ही है। उसका उपचार शास्त्रीय परंपरा और मन:संस्थान की संरचना को देखते हुए खाई को पाटा जाए। प्रायश्चित के लिए भी वैसा ही साहस जुटाया जाए, जैसा कि दुष्कर्म करते समय मर्यादा उल्लंघन के लिए अपनाया गया था। यही एकमात्र उपचार है, जिससे दुष्कर्मों की उन दु:खद प्रतिक्रियाओं का समाधान हो सकता है, जो शारीरिक रोगों, मानसिक विक्षोभों, विग्रहों, विपत्तियों, प्रतिकूलताओं के रूप में सामने उपस्थित होकर जीवन को दूभर बनाए दे रही हैं। यह विषाक्तता लदी ही रही तो भविष्य के अंधकारमय होने की भी आशंका है। अस्तु, प्रायश्चित प्रक्रिया को अपनाकर वर्तमान और भविष्य को सुखद बनाना ही दूरदर्शिता है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1982, पृष्ठ-50

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

नशेबाज़ी की बुराइयों को समझें

बालबुद्धि की अदूरदर्शिता और समझदारी की दूरदर्शिता का अंतर समझा जाना चाहिए और जिनका मानसिक विकास उस स्तर का हो चुका है, उन्हें समझकर ही कदम उठाने चाहिए। छोटे बच्चे साँप को, बिच्छू को, आग को खिलौना समझकर पकड़ सकते हैं; कील, सिक्का या दूसरी चीज लुभावनी देखकर उसे निगल सकते हैं। उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता कि इस नासमझी का परिणाम उन्हें जान गँवाने जैसा भी भुगतना पड़ सकता है। चूहेदान में लगी रोटी का टुकड़ा देखकर वे नादान जीव भी आतुर होकर पिंजड़े में दौड़ पड़ते हैं और अंतत: उसका दुष्परिणाम ही भोगते हैं। नशेबाजी भी जान-बूझकर बुलाई गई प्राणघातक बीमारी है जो आदत में सम्मिलित हो जाती है, पर पीछे उससे पीछा छुड़ाना कदाचित ही किसी साहसी से संभव हो पाता है।

नशे जीवनीशक्ति को चूसते हैं। आयु को घटाते हैं। अभ्यस्त को दुर्बलता और रुग्णता का शिकार बनाते हैं। सर्वेक्षण से जाना गया है कि नशे मनुष्य की आधी आयु का हरण कर लेते हैं और व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक क्षमता को बुरी तरह बरबाद करते हैं। आर्थिक दृष्टि से, सामाजिक सम्मान की दृष्टि से भी वह बुरी तरह पिछड़ जाता है।

नशेबाजी की बुराइयों को समझते हुए भी उसकी ओर प्रवृत्ति का भावनात्मक कारण है—फुरती और मस्ती की अभिलाषा। इसकी पूर्ति उचित रीति से ही की जानी चाहिए। चूँकि आकांक्षा आध्यात्मिक है, उसकी पूर्ति भी उसी क्षेत्र में हो सकती है; नशे के सहारे नहीं। जीवन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में उन तत्त्वों का समावेश किया जाना चाहिए जिसके आधार पर स्थायी आनंद मिले और प्रगति की संभावना बढ़े।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1989, पृष्ठ-32

स्वार्थ को परमार्थ में बदला जाए

स्रष्टा की एक ही अपेक्षा है कि सुरदुर्लभ मानव तन तथा जीवन पाने वाला प्राणी उपलब्ध विभूतियों के सहारे स्रष्टा के विश्व उद्यान को हरा-भरा रखने के लिए वफादार माली की भूमिका निभाए तो कोई कारण नहीं कि उसे आत्मसंतोष, सभी का सम्मान, श्रेय, यश तथा स्वामी का समुचित अनुग्रह-अनुदान प्राप्त न हो। इस तथ्य की परीक्षा करनी हो तो संसार में जन्मे अब तक के महामानवों की जीवनचर्या को साक्षी देने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। पुण्य और परमार्थ को उस बीज की तरह विकसित होते देखा जा सकता है जो आरंभ में राई के बराबर होता है पर कुछ ही समय में विशालकाय बरगद के वृक्ष की तरह उत्कर्ष के उच्च शिखर तक जा पहुँचता है। ईश्वर का अजस्र अनुदान प्राप्त करने का एक ही तरीका है और रहेगा कि स्वार्थ को परमार्थ में बदल दिया जाए। धर्मधारणा और सेवा साधना को जीवनचर्या का अविच्छिन्न अंग बनाया जाए। भिखारी बनकर नहीं, उदारचेता दानवीर बनकर भगवान के दरवाजे पर पहुँचा जाए और अनुदान का प्रतिदान असंख्य गुनी मात्रा में वापस लौटाया जाए।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1990, पृष्ठ-15

व्यक्ति का चिंतन ही उपलब्धियों का आधार

राजा भर्तृहरि का चिंतन प्रारंभिक दिनों में हास-विलास की तरफ ही चलता था। उस कारण उनकी काव्य प्रतिभा उसी दिशा में लगी और *शृंगार शतक* लिखा गया। दूसरे चरण में राजनैतिक उत्तरदायित्वों पर उनका चिंतन चलने लगा, तो उसकी शक्ति उधर लगी। कुशल राजा और *नीति शतक* के रचयिता के रूप में उन्होंने ख्याति पाई। तीसरे चरण में चिंतन अध्यात्म की ओर घूम गया। गुरु गोरखनाथ का अनुग्रह पाया और *वैराग्य शतक* के रचयिता कहलाए। तीन तरह की उपलब्धियाँ एक ही व्यक्ति को उसके चिंतन, विचारशक्ति की दिशाधारा के आधार पर प्राप्त हुई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-5

व्यक्ति निर्माण एवं मानवता के गुण

आत्मबल का शस्त्र

आपके पास उत्तम इंद्रियाँ हैं, पर बल नहीं है तो शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श के उत्तमोत्तम साधन होने पर भी सब बेकार हैं। यदि शरीर में बल है तो साधारण साधन भी पर्याप्त आनंददायक होंगे। सद्ग्रंथों में गुह्य ज्ञान छिपा पड़ा है, पर यदि पढ़ने की योग्यता नहीं है तो वह हमें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता। घोड़े की सवारी बहुत अच्छी है, पर बीमार के लिए तो हाथ-पैर तोड़ देने का ही एक निमित्त है। लोग समझते हैं कि हमें अमुक वस्तु प्राप्त होती तो बहुत सुख होता, परंतु देखा गया है कि जिन दुर्बल आत्माओं के पास वे वस्तुएँ हैं; वे उनसे सुख नहीं, दुःख पाते हैं। कंजूस को उसका धन डकैती, कत्ल आदि का ही भय उपस्थित करता है। नपुंसक को सुंदर स्त्री कुढ़ाती ही है। इसका कारण और कुछ नहीं, निर्बलता है। जब आप बलवान हो जाएँगे तो पड़ोसी आपको अनुचित रीति से दबाना छोड़ देंगे और खुद दोस्ती के लिए हाथ बढ़ाएँगे। प्रार्थना करना, समझाना, न्याय की दुहाई देना, यह कहने-सुनने की चीज है, व्यवहार की नहीं। व्यवहार में बल ही एकमात्र उपाय है, जिससे हम सुखपूर्वक जीवनयापन कर सकते हैं। इसीलिए श्रुति ने बड़े उच्च शब्दों में आदेश किया है—'**बलमुपास्व**'।

निर्बलता पाप है। पाप का ही दूसरा नाम दुःख है। यदि आप कोई दुःख भोग रहे हों, तो समझिए कि उसके साथ निर्बलता अवश्य बँधी हुई होगी। शरीर की कमजोरी से रोग घेरते हैं, मानसिक कमजोरी से मानसिक वेदनाएँ होती हैं, इसी प्रकार आध्यात्मिक कमजोरी से नारकीय यंत्रणाएँ सहनी पड़ती हैं। निर्बल सदा पराश्रित रहेंगे और पराश्रितों को विपत्तियाँ ही सताएँगी। आप अपने जीवन को सुखी बनाना चाहते हैं, तो किसी दूसरे की सहायता की आशा मत कीजिए और न शेखचिल्ली की तरह अप्राप्य वस्तुओं में मन डुलाइए। आप तो अपनी योग्यता बढ़ाइए, शक्ति-संचय कीजिए, बलवान बनिए, तभी इष्ट उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

स्मरण रखिए पुरुषसिंहों के लिए श्रुति का एक ही महत्त्वपूर्ण आदेश है—'**बलमुपास्व**' अर्थात बल की उपासना करो।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1941, पृष्ठ-07

सफल और प्रभावशाली व्यक्तित्व

प्रभावशाली नेत्र, ओजस्वी वाणी और निर्मल चरित्र ये तीनों ही मानसिक स्थिरता के बाल-बच्चे हैं। स्वार्थांधता और अतृप्त तृष्णा ये दोनों ही दुष्ट ऐसे हैं, जो मन को विषाक्त बनाकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आंतरिक कोलाहल उत्पन्न कर देते हैं। कूड़े के ढेर में जब तक अग्नि पड़ी रहेगी, तब तक धुआँ उठता रहेगा। बाहरी उपचार से उस धुएँ को रोकना व्यर्थ है क्योंकि उसका उद्‌गम स्थान जब तक मौजूद है, तब तक निर्धूमता कैसी? मानसिक अशांति तब तक बनी रहेगी, जब तक कि हम स्वार्थ और लिप्सा के गुलाम बने रहेंगे। लेने के स्थान पर देना और भोगने के स्थान पर त्यागना जब तक न सीखा जाएगा, तब तक जीवन की पेचीदा गुत्थियाँ न सुलझेंगी और उस उधेड़-बुन की बेचैनी आत्मा को दुखी बनाए रहेगी। ऐसी अस्थिर अवस्था में प्रभावशाली जीवन के ये तीनों साधन प्राप्त करना कठिन है। नकल बनाई जा सकती है, पर उसकी हस्ती ही कितनी है? नकली सोना आखिर कितने दिन चमक सकेगा?

आप प्रपंचों में अधिक लिप्त मत होइए, छाया के पीछे अधिक मत दौड़िए। दृढ़ रहिए और कर्त्तव्य पथ पर शनैः शनैः एवं दृढ़ता के साथ कदम बढ़ाते चलिए। ईश्वर पर विश्वास रखिए, दूसरों को आत्मभाव से देखिए और लेने की अपेक्षा देना अधिक पसंद कीजिए। आपके अंदर आध्यात्मिक शांति का आविर्भाव होगा और यह शांति निर्मल चरित्र का निर्माण करेगी। निर्मल चरित्र सूक्ष्म रूप से दूसरों के मस्तिष्क में विश्वसनीयता का स्थान पैदा करता है। साथ ही नेत्र और वाणी को प्रभावशाली बनाने के अभ्यास, सोने में सुगंध का काम दे सकते हैं। इस प्रकार प्रभावशाली व्यक्तित्व प्राप्त करने में आप सफल हो सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1941, पृष्ठ-14, 15

विपत्तियों में धैर्य की परीक्षा

जब दुखदायी परिस्थितियाँ सामने आ खड़ी होती हैं, तो मनुष्य को विशेष रूप से चिंता सताने लगती है। व्यापार में घाटा है, मित्रों ने धोखा दिया है, धन का अभाव है, कोई आकस्मिक विपत्ति आ गई है, कुटुंबीजन कहना नहीं मानते, रोगों ने आ घेरा है, ऐसी स्थितियों में साधारण पुरुषों को बड़ा क्लेश होता है; किंतु जिनका ईश्वर पर भरोसा है, वे इन परिस्थितियों में भी न तो घबराते हैं और न दुखी होते हैं। वे परमात्मा पर भरोसा रखने के कारण समझते हैं कि यह विपत्ति भी शीघ्र टल जाएगी और एक कर्त्तव्यपरायण वीर पुरुष की भाँति उनके निवारण का साहसपूर्वक उपाय करते हैं। विपत्तियों को परीक्षा समझकर उस पर अपने को प्रसन्नतापूर्वक कसने देते हैं, ताकि उनका भविष्य बहुत ही उज्ज्वल और आनंदमय बन जाए। दुःख-सुख रोज आने वाली घटनाएँ हैं, फिर क्यों उनके कारण अपने को दुखी बनाया जाए?

भलाई और उपकार के विचार एवं कार्य दुःख में भी सुख उत्पन्न करते हैं। कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ बुराई कर रहा हो तो तुम सच्चे हृदय से उसकी भलाई चाहो। जिस समय दुःख का वातावरण पैदा हो रहा है, उस समय किसी दुखी व्यक्ति की सेवा-सहायता करने लगो या उपकार की महत्ता पर मन ही मन विचार करना आरंभ कर दो। भलाई के विचारों में एक ऐसी शक्ति है कि मन चाहे कितना ही भारी क्यों न हो रहा हो, उसमें तुरंत ही हलकापन आता है और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांति उपलब्ध होती है। पूजा-पाठ, दान-धर्म, उपदेश-सेवा यह सब भलाई की श्रेणी ही में गिने जाते हैं।

अपने आप को चिंता में से उबारने की शिक्षा दो। भुला देने का अभ्यास कर लेना बहुत बढ़िया उपाय है। क्रोध या चिंता के विचारों पर जितना ही अधिक ध्यान दिया जाता है, वे उतने ही अधिक भड़कते हैं और दु:ख को अधिकाधिक बढ़ाते जाते हैं। इसलिए जब कोई आवेश आ रहा हो या दिल टूट रहा हो तो उसे भुलाने का प्रयत्न करो। उन विचारों या कामों पर से अपने शरीर और चित्त को दूसरे किसी प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले काम पर लगा दो और उस दु:खद प्रसंग को बिलकुल भुला देने का प्रयत्न करो, मानों उस प्रकार की कोई बात हुई ही न थी। हँसी न आती हो तो भी हँसो, बनावटी हँसी हँसो। दर्पण में अपना हँसता हुआ चेहरा बार-बार देखो और मन ही मन प्रसन्नता प्राप्त करो।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1941, पृष्ठ-22

एक सफल प्रयोग

तुम्हारी रुचि जिसमें अधिक हो, ऐसे किसी उत्तम विषय की कोई ऐसी पुस्तक चुन लो जिसका लेखक कोई योग्य व्यक्ति हो और उसमें नवीन एवं गूढ़ विचार हों। इस पुस्तक का थोड़ा-सा अंश बहुत धीरे-धीरे एक-एक शब्द पर विचार करते हुए पढ़ो और फिर रुककर उस विषय पर खूब गंभीरता के साथ मनन करो। जितने समय में उतना पढ़ा था, कम-से-कम उससे दूना समय उसे समझने में लगाओ। इस गंभीरतापूर्वक मनन करने से केवल नवीन अध्ययन ही न होगा वरन बुद्धि को बढ़ाने वाला व्यायाम भी होगा, मन उचटे तो उसे रोककर उसी विषय पर लगाओ। परंतु यदि तुमने रुचिकर विषय चुना है, तो उस पर से मन को उचटने की कोई बात ही नहीं है। चूँकि यह अभ्यास कुछ धार्मिक दृष्टि से नहीं है, इसलिए यदि तुम्हारा मन धर्म में कम रस लेता हो, तो दूसरा कोई विषय खुशी-खुशी चुन सकते हो। हाँ कोई ऐसा विषय न हो जिसका मन पर कोई दुष्प्रभाव पड़े। इस प्रकार का अभ्यास आरंभ में पंद्रह मिनट और फिर बढ़ाकर आधा घंटा या एक घंटा तक किया जा सकता है। आरंभ में थोड़ा ही अभ्यास करना इसलिए उचित है कि अधिक थकान न आए।

इस अभ्यास में दोनों ही लाभ हैं, जिस विषय को विचार के लिए चुना गया है, मनन करने से उसमें बहुत-सी नवीन बातें मालूम होंगी और उसमें अपनी विशेष योग्यता हो जाएगी, दूसरे प्रकृति अपनी निष्पक्ष और उदार न्यायशीलता के अनुसार तुम्हारे परिश्रम का बदला बुद्धि-वृद्धि के रूप में दे देगी, जिसके अनुसार तुम किसी विषय पर अधिक सावधानी के साथ उपयोगी सोच-विचार कर सकोगे, उस समय तुम्हारी बुद्धि जो कुछ निर्णय करेगी, वह सच्चा और हितकर होगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य की आत्मा ज्ञानस्वरूप है। अज्ञान का कारण अपने मानसिक औजारों का ठीक प्रकार प्रयोग कर सकने में अयोग्य होना होता है, इसलिए औजारों को दोष देने की अपेक्षा उनको चलाने का अभ्यास करो। अपने को बुद्धि का गुलाम मत समझो, असल में बुद्धि तुम्हारी सेविका है। केवल ढील देने के कारण ही वह कुंठित हो जाती है। ''मैं ज्ञानस्वरूप सच्चिदानंद आत्मा हूँ। बुद्धि और ज्ञान का अविरल स्रोत मेरे अंदर बह रहा है। अब मैं विवेकपूर्वक उसका ठीक-ठीक प्रयोग करता हूँ''। इन मंत्रों को बार-बार भावना क्षेत्र में दृढ़ीभूत करते रहो। इन मंत्रों को जपने से ही कुछ लाभ नहीं होगा, जब तक तुम पूर्ण श्रद्धा के साथ इन पर विश्वास न करने लगो। बिना नागा अभ्यास करो। नियत समय का ध्यान रखो। प्रमाद और आलस्य को पास भी मत फटकने दो। यह छोटा-सा साधन बहुत अल्प समय में ही तुम्हारे सामने आश्चर्यजनक सफलता उपस्थित कर देगा।

—अखण्ड ज्योति मई 1941, पृष्ठ-10

बलवान बनें, आत्मशक्ति प्राप्त करें

ईश्वर ने हमें संपूर्ण शारीरिक और मानसिक साधन इस प्रकार के दिए हैं कि उनका भरपूर उपयोग करके अपने को अधिक-से-अधिक बलशाली बनाएँ। सड़क पर सोकर गुजर करने वाला भिखमंगा भला किस प्रकार एक राजा को अपने घर में ठहराकर उसका स्वागत-सत्कार करने का आनंद-लाभ प्राप्त कर सकेगा? ईश्वर को वही प्राप्त कर सकता है, जो बलवान है। आत्मशक्ति उसे प्राप्त हो सकती है जो सशक्त है। भौतिकविज्ञानी कहते हैं—''प्रकृति श्रेष्ठतम का चुनाव करती है और कमजोरों को नष्ट कर डालती है।'' आध्यात्मिक विज्ञानी कहते हैं—''निर्बलता आत्महत्या है, ऐसे पापियों को नरक की ज्वाला में जलना पड़ता है।'' बात दोनों की एक है। असंख्य जातियाँ और सभ्यताएँ निर्बलता के पाप के कारण अपना अस्तित्व खो चुकीं और भविष्य में भी जो व्यष्टि या समष्टि निर्बल होगी, वह अपने पाप का पूरा-पूरा फल भोगेगी। इसलिए जो जीवित रहना चाहते हैं, जो उन्नति करना चाहते हैं, जो ऐश्वर्य प्राप्त करने के इच्छुक हैं, उन्हें चाहिए कि बलवान बनें और आत्मशक्ति को प्राप्त करके सौभाग्यशाली कहलाएँ।

भौतिक विज्ञान ने तामसी बल का संपादन करने की सलाह दी है। पश्चिमी देशों ने पाशविक बल संग्रह किया है। हिंसा और छल में निपुणता प्राप्त करना बहुत निकृष्ट कोटि की बल-साधना है, इसका परिणाम कुछ क्षण के लिए सुखद भले ही प्रतीत हो, अंततः वह समूल नाश का कारण बन जाता है। उत्तम बल सात्विक बल है। हमें चाहिए कि सात्विक बल की आराधना करें। सत्य और अहिंसा के आधार पर जो आध्यात्मिक बल संपादन किया जाएगा, वह आसुरी बल की अपेक्षा अधिक दृढ़ और स्थायी होगा एवं उसी के द्वारा सुख-शांति का साम्राज्य स्थापित किया जा सकेगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यक है कि हम न केवल शरीर से वरन मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी बलवान बनें। कायरता और अकर्मण्यता को छोड़कर कर्त्तव्य क्षेत्र में अवतीर्ण हों। हीनता, दीनता और दासता के विचारों का परित्याग करके अपने वास्तविक '**सोऽहम्**' स्वरूप को जानें। जिन योग्यताओं को जीवनयापन के लिए आवश्यक समझें, उनका विकास करें और एक दिन पूर्ण परमात्म पद को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएँ। ऐसा पुरुषार्थ करने पर ही हम बलवान बन सकेंगे और आत्मा को प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

पाठको! निश्चय समझो कि बिना आत्मबल प्राप्त किए कल्याण नहीं किंतु '**नायमात्मा बलहीने लभ्यः**।' इसलिए उठो, बलवान बनो, अपने को सशक्त बनाओ।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1941, पृष्ठ-05

बलवान बनने में लग जाएँ

'कमजोरी' एक बड़ा भारी गुनाह है। यही असली ब्रह्म हत्या है। ब्रह्म हत्यारों को नाना प्रकार के नरकों में सड़ने के प्रमाण शास्त्रों में लिखे हुए हैं। आपको जो भी दंड मिल रहे हैं, जो भी दुःख प्राप्त हो रहे हैं, वह सब निर्बलता के कारण हैं। निर्बलताएँ जब तक हटाई न जाएँगी, तब तक किसी भी उपाय से कष्टों से निवृत्ति नहीं मिल सकती। कोई कृपापूर्वक उन कष्टों का निवारण भी कर दे, तो भी दूसरे क्षण दूसरे प्रकार का कष्ट आकर सताने लगेगा।

आप चाहते हैं कि हमारे साथ न्याय हो, दूसरों के साथ न्याय हो। सताया जाना, बेइनसाफी और जोर-जुल्म का बोलबाला न रहे; आपकी इच्छा पूरी हो सकती है, बशर्ते कि शक्ति के उपासक बन जाएँ, बलवान होने का प्रयत्न करें। निर्बलता जैसे-जैसे दूर होती जाएगी वैसे ही वैसे अन्याय का वातावरण अपने आप साफ होता जाएगा। फिनायल छिड़कते ही मक्खियों की भिनभिनाहट गायब हो जाती है; अपने में शक्ति का आविर्भाव होते ही दुष्टता पलायन करने लगेगी।

यदि आप शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कष्टों से पीड़ित हैं, तो इधर-उधर मत झाँकिए। कोई देवी-देवता, संत-महंत, ग्रह-नक्षत्र आपकी सहायता तब तक नहीं कर सकता, जब तक कि आप अपनी सहायता के लिए खुद ही अपने पाँवों पर न उठ खड़े हों। कष्टों का निवारण एक ही प्रकार से हो सकता है कि बलवान बनने में लग जाएँ। आप अपने शरीर को सुदृढ़ बनाइए, मन को बलवान कीजिए, अच्छी आदतों को संपत्ति की तरह इकट्ठी कीजिए, संगठन, एकता और मैत्री भाव बढ़ाइए। इस प्रकार दिनोंदिन बल बढ़ता जाएगा। मत सोचिए कि आप साधनहीन, अकेले और असहाय हैं, इसलिए सशक्त कैसे बन सकेंगे? आपके अंदर सर्वशक्तिमान आत्मा बैठा हुआ है। उसके अंतर्गत बल का अनंत प्रवाह छिपा हुआ है। उठिए, आत्मा को पहचानिए, शक्तिवान बनने की प्रतीक्षा कीजिए और बल की उपासना में लग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाइए। ईश्वर आपको सर्वतोमुखी उन्नति प्रदान करेगा और उसके तेज से अन्याय रूपी अंधकार दूर भाग जाएगा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1942, पृष्ठ-24

जीवन को सत्यमय बनाना है

पाठकों से हम विशेष रूप से अनुरोध करते हैं कि वे सच्चे धर्म को फैलाने में पूरी शक्ति के साथ प्रयत्न करें। सबसे पहला काम हममें से हर एक को यह करना चाहिए कि अपना आत्म शोधन करें। अपने अंदर जो स्वार्थ, असत्य, अन्याय की दुर्भावनाएँ घुसी बैठी हों, उन्हें बारीकी के साथ तलाश करें और जिस प्रकार मरे हुए कुत्ते की लाश को निकालकर घर से बाहर फेंक देते हैं, वैसे ही अपनी कुभावना, अनीति और स्वार्थपरता को दूर फेंक देने का यथासंभव उद्योग करें। अमुक मंत्र की माला जपने, अमुक पुस्तक का पाठ करने, अमुक देवता के भगत बनने, अमुक नदी-नाले में नहाने के महजबी कर्मकांडों को करने न करने के संबंध में हमें कुछ नहीं कहना, यह सब व्यक्तिगत रुचि और श्रद्धा की वस्तुएँ हैं, हमें तो जोरदार शब्दों में यह कहना है कि आप सत्य आचरण करने के लिए तत्पर हो जाइए, दूसरों से निस्स्वार्थ प्रेम कीजिए, अन्य लोगों की भलाई में अपनी भलाई समझिए। ज्ञान, बल, धन, वैभव प्राप्त कीजिए, किंतु उसको अपने भोगों का साधन मत बनाइए। अपनों से अल्पशक्ति रखने वालों की सहायता में आपकी संपूर्ण शक्तियों का अधिक से अधिक व्यय होना चाहिए।

मैं किसकी क्या भलाई कर सकता हूँ, यह सोचते रहा कीजिए और परोपकार के, सेवा-सहायता के अवसर आएँ उन्हें बिना चूके कर्त्तव्यपरायण हुआ कीजिए। आपका शारीरिक, मानसिक और भौतिक बल अधिक से अधिक मात्रा में लोक-कल्याण के निमित्त, सद्वृत्तियों की उन्नति के निमित्त, पाप कर्मों का नाश करने के निमित्त व्यय होना चाहिए। आपका जीवन कर्मयोग में परिपूर्ण यज्ञमय बन जाना चाहिए, जिसका प्रत्येक क्षण विशुद्ध कर्त्तव्यपालन में, धर्म और ईश्वर की उपासना में व्यय होने लगे। यह कार्य कठिन दिखाई पड़ता है, परंतु यदि आप प्रतिज्ञा कर लें कि मुझे अपना जीवन सत्यमय बनाना है तो विश्वास रखिए कि आज से ही आपके कदम उस दिशा में बढ़ने लगेंगे। कुछ ही दिनों में बड़ी भारी सफलता दृष्टिगोचर होने लगेगी।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1943, पृष्ठ-05

हँसता हुआ भविष्य, हमारे हाथ में

आप कम पढ़े हैं, विद्या पास नहीं है, बीमारी ने घेर रखा है, शरीर क्षीण होता जाता है, काम बिगड़ जाते हैं, सफलता नहीं मिलती, विघ्न उपस्थित हैं, वियोग सहना पड़ रहा है, कलह रहता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, ठगी और विश्वासघात का सामना करना पड़ता है, अत्याचार और उत्पीड़न के शिकार हैं या ऐसे ही किसी कारणवश आप खिन्न हो रहे हैं, चित्त उदास रहता है, चिंता सताती है, संसार त्यागने की इच्छा होती है, आँखों से आँसुओं की धारा बहती है। हम पूछते हैं कि क्या यही मार्ग इन दु:खद परिस्थितियों से बचने का है? क्या आप शोक-संताप में डूबे रहकर इन कष्टों को हटाना चाहते हैं? क्या खिन्न रहने से दु:खों का अंत हो जाएगा?

बीते कल की अप्रिय घटनाओं पर आँसू बहाना, आने वाले कल को ठीक वैसा ही बनाना है। भूतकालीन कठिनाईयों के त्रास से इस समय भी संतप्त रहना, इसका अर्थ तो यह है कि भविष्य में भी उन्हीं बातों की पुनरावृत्ति आप चाहते हैं। इसलिए उठिए, खिन्नता और उदासीनता को दूर भगा दीजिए। बीते पर रोना इससे क्या लाभ? चलिए! आने वाले कल का नए ढंग से निर्माण कीजिए। शोक, संताप, चिंता, निराशा और उदासीनता का परित्याग करके प्रसन्नता को ग्रहण कीजिए।

उठिए, खड़े होइए और एक कदम आगे बढ़ाइए। प्रभु ने आपको रोने के लिए नहीं प्रसन्न रहने के उद्देश्य से यहाँ भेजा है। रूखी रोटी खाकर हँसिए और कल चुपड़ी खाने का प्रयत्न कीजिए। आज की परिस्थिति पर संतुष्ट रहिए और कल के लिए नया आयोजन कीजिए। खिन्न मत होइए, क्योंकि हम आपको एक दु:ख हरण राम मंत्र की दीक्षा दे रहे हैं। सुनिए, विचारिए और गाँठ बाँध लीजिए कि "हँसता हुआ भविष्य, हँसते हुए चेहरे का पुत्र है।" जो प्रसन्न रहेगा उसे प्रसन्न रखने वाली परिस्थितियाँ भी मिलेंगी।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1943, पृष्ठ-16

अपना भाग्य अपने हाथ

संसार में सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा के साथ अपनी योग्यताओं में वृद्धि करना भी आरंभ कीजिए। आपका भाग्य किस प्रकार लिखा जाए? इसका निर्णय करते समय विधाता आपकी आंतरिक योग्यताओं की परख करता रहता है। उन्नति करने वाले गुणों को यदि अधिक मात्रा में जमा कर लिया गया है तो भाग्य में उन्नति का लेख लिखा जाएगा और यदि उन्नायक गुणों को अविकसित पड़ा रहने दिया गया है—दुर्गुणों को, मूर्खताओं को अंदर भर रखा गया है तो भाग्य की लिपि दूसरी होगी। विधाता लिख देगा कि "इसे तब तक दु:ख-दुर्भाग्यों में ही पड़ा रहना होगा, जब तक कि योग्यताओं का संपादन न करे।" अपने भाग्य को जैसा चाहें वैसा लिखाना अपने हाथ की बात है। यदि आप आत्मनिर्भर हो जाएँ, जैसा होना चाहते हैं, उसके अनुरूप अपनी योग्यताएँ बनाने में प्रवृत्त हो जाएँ तो विधाता को विवश होकर आपकी मनमरजी का भाग्य लिखना पड़ेगा।

अपने को जैसा चाहें वैसा बना लेने की योग्यता अपने में समझिए। अपने ऊपर विश्वास कीजिए। किसी और का आसरा मत तकिए। बिना आपके निजी प्रयत्न के, योग्यता संपादन के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाहरी सहायता प्राप्त न होगी, यदि होगी तो उसका लाभ बहुत थोड़े समय में समाप्त हो जाएगा और पुन: वही दशा आ उपस्थित होगी, जिसकी कि अपनी औकात है। उत्साह, लगन, दृढ़ता, साहस, धैर्य, परिश्रम इन छह गुणों को सफलता का अग्रदूत माना गया है। इन दूतों का निवास स्थान आत्मविश्वास में है। अपने ऊपर भरोसा करेंगे तो यह गुण भी उत्पन्न होंगे, अन्यथा किसी देव-दानव की कृपा से सट्टा, लाटरी फल जाने, बंभोला की भभूत से छप्पन करोड़ की चौथाई मिल जाने, वैद्यजी की दवा-दारू खाकर भीमसेन बन जाने, वशीकरण मंत्र से तरुणी स्त्रियाँ खिंची चली आने, गंगा मैया की कृपा से बेटा हो जाने, साईं जी के ताबीज से शादी हो जाने के स्वप्न देखते रहिए और उम्मीदों की दुनिया में तबीअत बहलाते रहिए। बेशऊरों का माल-मसखरे उड़ाते हैं, आप भी मसखरों के चंगुल में फँसकर ठगाते रहिए, समय बरबाद करते रहिए, पर प्रयोजन कुछ भी सिद्ध न होगा। ईश्वर के राज्य में ऐसी अंधी नहीं चल रही है कि पसीना बहाने वाले परिश्रमी टापते रहें और शेखचिल्लियों की बन आए।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1943, पृष्ठ-170,171

सदा प्रसन्न रहिए, ईश्वर को याद रखिए

आप संसार के कर्मनिष्ठ महापुरुषों से शिक्षा ग्रहण कीजिए; अपने को धैर्यवान बनाइए; काम को खेल की तरह करिए; कठिनाइयों को मनोरंजन का एक साधन बना लीजिए। अपने मन के स्वामी आप रहिए, अपने घर पर किसी दूसरे को मालिकी मत गाँठने दीजिए। चिंता, शोक आदि शत्रु आपके घर कब्जा जमाकर, मस्तिष्क पर अपना काबू करके आपको दीन-दरिद्र की भाँति दुखी करना चाहते हैं और शांति तथा स्वास्थ्य का हरण करके व्यथा-वेदनाओं की चक्की में पीसना चाहते हैं, इनसे सावधान रहिए। यदि शत्रुओं को आपके मस्तिष्क पर कब्जा कर लेने में सफलता मिल गई तो आप कहीं के न रहेंगे। भ्रम और अज्ञान के बंदीगृह में पड़े बुरी तरह सड़ते रहेंगे और स्वनिर्मित नरक में अपने आप सुलगाई हुई अग्नि से स्वयमेव जलते रहेंगे, यह बहुत ही भद्दी और दुखदायी स्थिति होगी।

जबकि संसार में अनेक लोग आपसे हजारों गुनी कठिनाइयों का सामना करते हैं, अनेक गुना अधिक परिश्रम करते हैं, अनेक गुने घात-प्रतिघातों को सहते हैं, फिर भी हँसते रहते हैं और स्वास्थ्य बढ़ाते रहते हैं, तो क्या कारण है कि आप जरा-सी घर-गृहस्थी की समस्या के कारण, थोड़े-से नुकसान के कारण, साधारण से कष्ट के कारण इतने घबराते हैं? आप अकेले ही इस दुनिया में कष्ट ग्रसित नहीं हैं, लाखों-करोड़ों मनुष्य ऐसी ही या इससे भी बड़ी कठिनाइयों का मुकाबला कर रहे हैं, फिर क्यों नहीं आप उनसे शिक्षा ग्रहण करते? क्यों नहीं अपने ऊपर काबू रखते? क्यों नहीं विवेक बुद्धि को जाग्रत करके हानिप्रद मानसिक कमजोरी को मारकर दूर भगा देते?

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुनिया में हर एक के सामने अप्रिय प्रसंग आते हैं। ऊँचे चढ़ने वालों के सामने तो वे और भी अधिक संख्या में आते हैं, उनसे घबराने या डरने से कर्मयोग की उपासना नहीं हो सकती। कर्त्तव्य का पथ संघर्षमय है, उसमें क्षण-क्षण पर बाधाएँ आती हैं और उन्हें हटाने के लिए निरंतर युद्ध करते रहना पड़ता है। आप एक बहादुर सिपाही की तरह विघ्न-बाधाओं को कुचलते हुए आगे बढ़ते चलिए, जीवन को खेल समझिए, परिस्थितियों के प्रभाव से मस्तिष्क को बेकाबू मत होने दीजिए, धैर्य रखिए, भली-बुरी परिस्थितियों में एक समान हँसते रहिए, मानसिक संतुलन नष्ट मत होने दीजिए, कर्मयोग का आनंददायक सूत्र यह है कि सदा प्रसन्न रहिए और ईश्वर को स्मरण रखिए।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1943, पृष्ठ-176,177

उन्नति की ओर बढ़िए

आप 'उन्नति करना' अपने जीवन का मूल मंत्र बना लीजिए, ज्ञान को अधिक बढ़ाइए, शरीर को स्वस्थ, बलवान और सुंदर बनाने की दिशा में अधिक प्रगति करते जाइए, प्रतिष्ठावान होइए, ऊँचे पद पर बढ़ने का उद्योग कीजिए, मित्र और स्नेहियों की संख्या बढ़ाइए, पुण्य संचय करिए, सद्गुणों से परिपूर्ण होइए, आत्मबल बढ़ाइए, बुद्धि को तीव्र करिए, अनुभव बढ़ाइए, विवेक को जाग्रत होने दीजिए। बढ़ना, आगे बढ़ना और आगे बढ़ना—यात्री का यही कार्यक्रम होना चाहिए।

अपने को असमर्थ, अशक्त एवं असहाय मत समझिए। ऐसे विचारों का परित्याग कर दीजिए कि साधनों के अभाव में हम किस प्रकार आगे बढ़ सकेंगे? स्मरण रखिए कि शक्ति का स्रोत साधनों में नहीं भावना में है। यदि आपकी आकांक्षाएँ आगे बढ़ने के लिए व्यग्र हो रही हैं; उन्नति करने की तीव्र इच्छाएँ बलवती हो रहीं हैं, तो विश्वास रखिए साधन आपको प्राप्त होकर रहेंगे। ईश्वर उन लोगों की पीठ पर अपना वरदहस्त रखता है, जो हिम्मत के साथ आगे कदम बढ़ाते हैं।

सावधान हूजिए, गफलत को त्याग दीजिए, कहीं ऐसा न हो कि आप शक्ति-संपादन की ओर से उपेक्षा करके 'चैन करने' में रस लेने लगें और प्रकृति के निष्ठुर नियम आपको निर्बल पाकर दबोच दें। कहीं ऐसी स्थिति में न पड़ जाएँ कि निर्बलता के दंडस्वरूप असह्य वेदनाओं की चक्की में पिसने को विवश होना पड़े। इसलिए पहले से ही सजग रहिए। आत्मरक्षा के लिए सावधान होइए, जीवन संग्राम में अपने को बरबाद होने से बचाने के लिए शक्ति का संपादन कीजिए, बलवान बनिए। सुदृढ़ आधारों पर अपने को खड़ा कीजिए।

अध्यात्मवाद कहता है कि ईश्वर की आज्ञापालन यह है कि आप आगे चलें, ऊँचे उठें। आत्मरक्षा के लिए दृढ़ता चाहिए, विपत्ति से बचने के लिए मजबूती चाहिए, भोग ऐश्वर्यों का सुख

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोगने के लिए शक्ति चाहिए, परमार्थप्राप्ति के लिए तेज चाहिए। दसों दिशाओं की एक ही पुकार है—आगे बढ़िए, अधिक इकट्ठा कीजिए। ईश्वर को प्राप्त करने की साधना को जारी रखिए। उस महान पथ को पूरा करने की योग्यता बनाए रखने के लिए सांसारिक उन्नतियों को एकत्रित कीजिए तथा प्रतिष्ठित, शक्तिशाली और वैभववान बनने की दिशा में सदैव प्रगति करते रहिए।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1943, पृष्ठ-178

अपने कार्य में रुचि पैदा करें

यह एक नियम है कि जिस वस्तु में आप जितनी दिलचस्पी लेते हैं, वह उतनी ही आनंददायक हो जाती है और जिसमें से अपनी रुचि हटा लेते हैं, वह उतनी ही नीरस हो जाती है। अपना कुरूप पुत्र प्यारा होता है, पर दूसरे के सुंदर लड़के की ओर कुछ ध्यान नहीं जाता। कारण यह है कि अपने पुत्र में दिलचस्पी है, दूसरे के पुत्र में नहीं। अँधेरी रात में वही वस्तु चमकती है, जिस पर दीपक का प्रकाश पड़ता है। इसी प्रकार संसार में भरी हुई अनेक वस्तुओं में से वही वस्तुएँ प्रिय दीखती हैं, जिन पर दिलचस्पी रूपी प्रकाश पड़ता है। यदि आप अपने परिवार के द्वारा प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हैं, अपने संबंधियों को अपने लिए आनंदमय बनाना चाहते हैं, तो उनकी ओर उपेक्षा, रूखापन, उदासीनता रखना छोड़ दीजिए और सच्ची दिलचस्पी के साथ आत्मीयता की भावनाएँ रखना आरंभ कर दीजिए। जो वस्तुएँ कल तक आपको बेकार, भार, चिढ़ाने वाली, तंग करने वाली दिखाई देती थीं, वे ही आज प्रिय एवं आनंदवर्द्धक दृष्टिगोचर होने लगेंगी।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1944, पृष्ठ-127,128

महापुरुष बनने का राजमार्ग

जो तुच्छ प्रलोभन हमें ललचाते हैं, जो-जो भय और संदेह हमें डराते हैं, वे महापुरुषों और महात्माओं को भी ऐसे ही ललचाते और डराते थे, परंतु उनने साहस से काम लिया और दृढ़ता को अपनाया। इन दोनों मानसिक शत्रुओं को उन्होंने घृणापूर्वक ललकारा और सदैव उनसे संघर्ष किया। जब भी लोभ और भय ने आक्रमण किया तभी उनने अपने को सँभाल लिया और सत्य के पथ पर अविचल भाव से मजबूती के साथ पैर रखते हुए आगे बढ़ते गए। आज वे महापुरुष हैं; संसार उनके चरणों पर अपना मस्तक झुकाए खड़ा है। कहने को वे मर गए परंतु वास्तव में वे अमर हैं, जब तक यह संसार कायम रहेगा, तब तक वे भी जीवित रहेंगे।

कर्त्तव्यपालन में इतना आंतरिक आनंद छिपा हुआ है, जिसकी तुलना संसार का कोई भी आनंद नहीं कर सकता। धर्म के साथ सांसारिक सुख भी लिपटा हुआ है। यदि किसी कारणवश कष्ट भी उठाना पड़े तो उससे डरने की कोई बात नहीं हैं क्योंकि यह कष्ट उस आनंद की तुलना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में न कुछ के बराबर है। महापुरुषों ने इस सचाई को भलीभाँति समझा है, इसलिए उन्होंने धर्म को अपनाया है और उसके लिए सब प्रकार के भय और प्रलोभनों के ऊपर विजय प्राप्त की है। अपने सिद्धांतों के लिए आत्मबलिदान किया है। यही महापुरुष बनने का, महानता प्राप्त करने का मार्ग है। यह देखने में जितना कठिन मालूम पड़ता है अनुभव में उतना ही सरल और सुख-दायक है। हम महापुरुष बन सकते हैं, बशर्ते कि लोभ और आशंकाओं से लड़ते हुए धर्मपालन के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ाएँ।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1944, पृष्ठ-174, 175

कठिनाइयाँ आएँगी—साहस से मुकाबला करें

कठिनाइयाँ हर मनुष्य के जीवन में आती हैं, उनका आना अनिवार्य और आवश्यक है। प्रारब्ध कर्मों के भोग के बोझ को उतारने के ही लिए नहीं वरन मनुष्य की मनोभूमि और अंतरात्मा को सुदृढ़, तीक्ष्ण, पवित्र, प्रगतिशील, अनुभवी और विकसित करने के लिए भी कष्टों एवं आपत्तियों की भारी आवश्यकता है। जैसे भगवान मनुष्य को दया करके नाना प्रकार के उपहार दिया करते हैं, वैसे ही वे दुःख और आपत्तियों का भी आयोजन करते हैं, जिससे मनुष्य का अज्ञान, अहंकार, आलस्य, अपवित्रता और व्यामोह नष्ट हो। किसी विद्वान का यह वचन पूर्णतया सत्य है—"एक आपत्ति दस गुरुओं से अधिक शिक्षा देती है।"

कठिनाइयाँ आने पर हतप्रभ, किंकर्त्तव्यविमूढ़ या कायर हो जाना और हाथ-पैर फुलाकर रोना-झींकना शुरू कर देना, अपने आप को या दूसरों को कोसना सर्वथा अनुचित है। यह तो भगवान की उस महान कृपा का तिरस्कार करना हुआ। इस प्रकार तो वह कठिनाई कुछ लाभ न दे सकेगी, वरन उलटे निराशा, कायरता, अवसाद, दीनता आदि का कारण बन जाएगी। कठिनाई देखकर डर जाना, प्रयत्न छोड़ बैठना, चिंता और शोक करना, किसी सच्चे मनुष्य को शोभा नहीं देता। आपत्ति एक प्रकार से हमारे पुरुषार्थ को ईश्वरीय चुनौती है, जिसे स्वीकार करके ही हम प्रभु के प्रिय बन सकते हैं। अखाड़े के उस्ताद पहलवान नौसिखिए पहलवानों को कुश्ती लड़ना सिखाते हैं तो उन्हें पटक मारकर दाव-पेच सिखाते हैं। नौसिखिए लोग पटक खाकर शोक-संतप्त नहीं हो जाते, वरन अपनी भूल को समझकर फिर उस्ताद से लड़ते हैं और धीरे-धीरे पूरे एवं पक्के पहलवान बन जाते हैं। ईश्वर ऐसा ही उस्ताद है, जो आपत्तियों की पटक मार-मारकर हमारी अनेक अपूर्णताएँ दूर करके, पूर्णता तक पहुँचाने की महान कृपा करता है।

कठिनाइयों से डरने या घबराने की कोई बात नहीं, वह तो इस सृष्टि का एक उपयोगी, आवश्यक एवं सार्वभौम विधान है। उससे न तो दुखी होने की जरूरत है, न घबराने की और न किसी पर दोषारोपण करने की। हाँ, हर आपत्ति के बाद नए साहस और नए उत्साह के बाद उस परिस्थिति से लड़ने की और प्रतिकूलता को हटाकर अनुकूलता उत्पन्न करने के लिए प्रयत्नशीलता की आवश्यकता है। यह प्रयत्न आत्मा का धर्म है, इस धर्म को छोड़ने का अर्थ अपने को अधर्मी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाना है। प्रयत्न की महिमा अपार है। आपत्ति द्वारा जो दुःख सहना पड़ता है, उसकी अपेक्षा उसे विशेष समय में विशेष रूप से प्रयत्न करने का जो स्वर्ण अवसर मिला, उसका महत्त्व अधिक है। प्रयत्नशीलता ही आत्मोन्नति का प्रधान साधन है, जिसे आपत्तियाँ तीव्र गति से बढ़ाती हैं।

प्रयत्न, परिश्रम एवं कर्त्तव्यपालन से मनुष्य के गौरव एवं वैभव का विकास होता है। जो आनंदमय जीवन का रसास्वादन करना चाहता है, उसे कठिनाइयों से निर्भय होकर अपने कर्त्तव्य-पथ पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ हो जाना चाहिए और हँसते हुए हर स्थिति का मुकाबला करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1952, पृष्ठ-05

मनुष्य शक्ति की साक्षात प्रतिमा

मनुष्य करना चाहे तो अत्यंत कठिन प्रतीत होने वाले कार्यों को भी कर सकता है। बड़े-बड़े बाँध, जहाज, रेल और कल-कारखाने सभी के निर्माण में दृढ़ इच्छाशक्ति का प्राबल्य रहा है। मनुष्य को अशक्त कहने वाले मूर्ख हैं, वह तो सचमुच ही शक्ति की साक्षात प्रतिमा है।

इच्छाशक्ति की सफलता में भी एक और दैवी शक्ति कार्य करती है, वह है संसार की विलक्षण निर्माण शक्ति। श्रेष्ठ कार्यों में उसके सहयोग से मनुष्य को अद्‌भुत सफलता मिलती है, परंतु यह शक्ति विध्वंस के कार्यों में सहयोग नहीं देती, उसके लिए संहार शक्ति का सहयोग प्राप्त करना होता है।

दृढ़ इच्छाशक्ति, सदुद्‌देश्य और परमात्मा के भरोसे पर मनुष्य के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। इसके बिना कोई भी अपने संकल्प में स्थायी सफलता प्राप्त नहीं करता। जो मनुष्य अपने जीवन में सफल होने की इच्छा करता है, वह अपनी इसी शक्ति को चैतन्य करने की चेष्टा करे और उसे सन्मार्ग में लगाए तो निस्संदेह अपने लक्ष्य में सिद्धि प्राप्त कर सकेगा।

जिन लोगों को अपने कार्यों में असफलता के चिह्न दिखाई पड़ते हैं, उनमें अन्य कारण चाहे कोई भी हों, परंतु एक कारण इच्छाशक्ति की निर्बलता भी है। परंतु यदि मनोयोगपूर्वक कार्य किया जाए तो वह निर्बलता शीघ्र ही दूर हो सकती है।

यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो इच्छाशक्ति को दृढ़ करिए। इसके दृढ़ होने पर कोई भी कार्य अधूरा नहीं रहेगा। कार्य में विघ्न आना तो स्वाभाविक हैं, उनसे घबराना नहीं चाहिए। मनुष्य का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ है और वे कठिनाइयाँ भी प्रयत्नपूर्वक ही दूर हो पाती हैं।

कुछ भाग्यवादी लोग भी अपने उद्‌देश्यों में सफल नहीं हो पाते। उनका विचार है कि सफलता भाग्य पर निर्भर है। यह दलील भ्रमपूर्ण ही है तथा मनुष्य को सदा के लिए बेकार कर देने वाली है। आपको भूख लगी है, भोजन सामने रखा है, परंतु हाथ न लगाएँगे तो मुख में किस प्रकार पहुँचेगा?

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1961, पृष्ठ-16, 17

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी

जिन लोगों ने बाधाओं को सहते हुए भी अपने जीवन में कुछ आदर्श उपस्थित किए हैं, उनका सार्वजनिक सम्मान होना चाहिए, उनकी प्रशंसा मुक्तकंठ से की जानी चाहिए और जो लोग निंदनीय मार्गों द्वारा उन्नति कर रहे हैं, उनकी प्रशंसा एवं सहायता किसी भी रूप में नहीं करनी चाहिए। अवांछनीय कार्यों में सम्मिलित होना भी एक प्रकार से उन्हें प्रोत्साहन देना ही है क्योंकि श्रेष्ठ पुरुषों की उपस्थिति मात्र से लोग उस कार्य में उनका समर्थन मान लेते हैं और फिर स्वयं भी उसका सहयोग करने लगते हैं। इस प्रकार अनुचित कार्यों में हमारा प्रत्यक्ष और परोक्ष समर्थन अंततः उन्हें बढ़ाने वाला ही सिद्ध होता है।

हमें मनुष्य का मूल्यांकन उसकी सफलताओं एवं विभूतियों से नहीं वरन उस नीति और गतिविधि के आधार पर करना चाहिए जिसके आधार वह सफलता प्राप्त की गई। बेईमानी से करोड़पति बना व्यक्ति भी हमारी दृष्टि में तिरस्कृत होना चाहिए और वह असफल और गरीब व्यक्ति जिसने विपन्न परिस्थितियों में भी जीवन के उच्च आदर्शों की रक्षा की उसे प्रशंसा, प्रतिष्ठा, श्रद्धा, सम्मान और सहयोग सभी कुछ प्रदान किया जाना चाहिए। यह याद रखने की बात है कि जब तक जनता का निंदा-प्रशंसा का, आदर-तिरस्कार का मापदंड न बदलेगा, तब तक गुंडे मूँछों पर ताब देकर अपनी सफलता पर गर्व करते हुए दिन-दिन अधिक उच्छृंखल होते चलेंगे और सदाचार के कारण सीमित सफलता या असफलता प्राप्त करने वाले खिन्न और निराश रहकर सत्पथ से विचलित होने लगेंगे।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1962, पृष्ठ-23, 24

ईमानदारी और परिश्रम की कमाई

संखिया का विष खाने से तुरंत मृत्यु हो जाती है और कुचला खाने से प्राण निकलने में कुछ देर लगती है। बेईमानी की कमाई और मुफ्त में मिली दौलत में इतना ही अंतर होता है, जितना संखिया और कुचला में। अखाद्य दोनों ही हैं और दोनों ही हानिकर भी। इसलिए हर आदमी को ध्यान रखना चाहिए कि वह ईमानदारी से कमाए और परिश्रमपूर्वक उपार्जन करे। इस प्रकार यदि थोड़ा भी कमाया जा सके तो उसी से काम चला लेना चाहिए। जितनी अक्ल गलत तरीके से कमाने में खरच की जाती है, उतनी यदि खरच घटाने, व्यवस्थित जीवन बनाने और श्रमशीलता एवं योग्यता बढ़ाने में खरच की जाय तो निश्चित ही अपनी आर्थिक समस्या को हर कोई बड़ी आसानी से हल कर सकता है। ईमानदारी की कमाई से जो आत्मसंतोष मिलता है, उससे स्वास्थ्य की सुरक्षा, ईश्वरीय प्रकोप से निश्चिंतता, हर दिशा में फलने-फूलने की संभावना बनी रहती है। हर भले आदमी की दृष्टि में अपना महत्त्व एवं गौरव बढ़ा-चढ़ा रहने से हर घड़ी आंतरिक प्रफुल्लता बनी रहती है। आत्मकल्याण और पारलौकिक सद्गति का भी यही मार्ग है। इस सन्मार्ग को अपनाना ही बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का चिह्न माना जाता है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1962, पृष्ठ-31

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चापलूसी नहीं, अच्छी सलाह दें

किसी की झूठी प्रशंसा करके उसका अहंकार बढ़ा देने की गलती हमें नहीं करनी चाहिए। इससे उस बिचारे को व्यर्थ ही अपने संबंध में बड़प्पन का भ्रम होता है और अहंकार बढ़ने से नाश का द्वार खुलता है। राजा-रईसों का नाश उनके चापलूस ही करते रहे हैं। हाँ में हाँ मिलाकर गलती को और अधिक बढ़ने देना शुभचिंतकों का काम नहीं है। सभी सलाह नम्रता, सज्जनता, मधुरता और आत्मीयता की भावना से ओत-प्रोत होकर, एकांत में ठीक प्रकार समझाते हुए दी जाए तो वज्र मूर्खों को छोड़कर समझदार लोग उस पर ध्यान देते भी हैं और सुधरने का प्रयत्न भी करते हैं। ऐसे प्रसंगों में बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि अपने अहंकार को जरा भी ठेस लगने से लोग आगबबूला होने लगते हैं और अपमान की गंध सूँघने लगते हैं, सो ऐसी सलाह देते समय भीगते बंदर द्वारा सीख देने वाली बया पक्षी का घोंसला नोंच डालने वाली कथा का भी स्मरण रखना चाहिए। पर अपने हितैषी के लिए तो यह जोखिम भी उठानी चाहिए और अवसर देखकर उचित सलाह देनी भी चाहिए। चुप बैठे रहने से बुराई घटती नहीं, बढ़ती ही रहती है। अपने को ही नहीं, अपने स्वजन संबंधियों को भी निरहंकारी बनने की सलाह देते रहना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1962, पृष्ठ-44

असफलता, धैर्य और साहस की परीक्षा है

लक्ष्य को सोच-विचारकर नियत करना चाहिए और फिर उस पर दृढ़तापूर्वक चलते रहना चाहिए। मनुष्य का धर्म, कर्त्तव्य कर्म करते रहना है। इसे न करने पर वह 'कर्त्तव्यघात' के पाप का भागी बनता है। इसलिए हर व्यक्ति को बिना एक क्षण भी गँवाए अपने जीवनोद्देश्य की प्राप्ति के लिए निर्धारित कर्त्तव्य-पथ पर चलते रहना चाहिए। यह मान्यता सर्वथा सत्य है कि सत्कर्म का सत्परिणाम ही मिलता है। साथ ही यह भी मानकर चलना चाहिए कि हमारा हर कदम सफलता और प्रगति के लिए ही नहीं होता। कितने ही कारण इस संसार में ऐसे मौजूद रहते हैं जो प्रगति को रोकते हैं और जितनी जल्दी हम चाहते हैं, उतनी जल्दी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। बाधाओं की मंजिलें पार करने में जो लोग अपने धैर्य और साहस का परिचय देते हैं, घबराते और असंतुलित नहीं होते, वे ही दृढ़ चरित्र और स्वस्थ मानस वाले कहला सकने के अधिकारी होते हैं। धैर्य और साहस ही तो मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है। असफलता इस विशेषता को परखने आया करती है और जो उसकी परीक्षा में उत्तीर्ण होता है, उसे इतना मनोबल देकर जाती है, जिसके आधार पर उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचा जा सके।

हमें सफलता के लिए शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए, पर असफलता के लिए भी जी में गुंजाइश रखनी चाहिए। प्रगति के पथ पर चलने वाले व्यक्ति को इस धूप-छाँह का सामना करना पड़ा है। हर कदम सफलता से ही भरा मिले, ऐसी आशा केवल बालबुद्धि वालों को शोभा देती

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, विवेकशीलों को नहीं। केवल सफलता की ही आशा करना और उसके न मिलने पर सिर धुनना अथवा निराश हो बैठना, ओछे, उथले और बचकाने स्वभाव का चिह्न है। जिंदगी जीने की विद्या का एक महत्त्वपूर्ण पाठ यह है कि हम न छोटी-मोटी सफलताओं से हर्षोन्मत्त हों और न असफलताओं को देखकर हिम्मत हारें। दिन और रात की भाँति सफलता-असफलता का चक्र भी चलते ही रहने वाला है। एक ही तरह की वस्तु सदा मिले यह असंभव आशा हमें आरंभ से ही नहीं करनी चाहिए और असफलता के लिए भी अपने कार्यक्रम में उचित गुंजाइश रखे रहना चाहिए और उसका भी वैसा ही स्वागत करना चाहिए जैसा सायंकालीन संध्या का करते हैं। प्रातःकाल की ऊषा भी उतनी ही सुंदर होती है, जितनी सायंकाल की संध्या। सफलताओं में सुख-सुविधाओं की जैसी आशा केंद्रित रहती है वैसी ही आत्मसुधार की, धीर-वीर बनाने की प्रेरणा असफलता में भी सन्निहित है। वस्तुतः ये दोनों आपस में सगी बहनें हैं, कुशल-क्षेम पूछने और परस्पर मिलने अकसर आया करती हैं। इनके प्रेमालाप में हम बाधक क्यों बनें? अपनी कर्त्तव्यपरायणता का आतिथ्य प्रस्तुत करते हुए, इन दोनों का ही उचित स्वागत क्यों न किया करें?

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1962, पृष्ठ-29, 30

सच्ची दौलत और अमीरी

धन को धन नहीं मानना चाहिए। वह तो आता और चला जाता है। परिस्थितियों के झटके बड़े-बड़े धनीमानियों को नीचा करवा देते हैं। गरीब के अमीर बनने में देर लग सकती है, पर लगातार के दो-चार थपेड़े लगने मात्र से अमीर की स्थिति गरीब से भी दयनीय हो जाती है। व्यापार में हानि, चोरी-डकैती, दुर्घटना, कुसमय मुकदमा, बीमारी, फूट आदि कितने ही ऐसे कारण हैं जो अच्छी आर्थिक स्थिति को उलट-पलट कर रख देते हैं। ऐसी दशा में गुणहीन व्यक्ति निर्धन हो जाने पर पुनः उठ खड़ा होने में असमर्थ ही रहता है। पर जिसके भीतर सद्गुणों की पूँजी भरी पड़ी है, वह पुनः अपना खोया हुआ वैभव प्राप्त कर लेता है। आत्मबल और आत्मविश्वास उसे दैवी सहायता की तरह सदा प्रगति का मार्ग दिखाते हैं। अपने मधुर स्वभाव के कारण वह जहाँ भी जाता है, वहीं अपना स्थान बना लेता है। अपनी विशेषताओं से वह सभी को प्रभावित करता और सभी की सहानुभूति पाता है। दूसरों को प्रभावित करने की और स्वयं उसकी सफलता का प्रधान कारण तो अपने सद्गुण ही होते हैं। जिसके पास यह विशेषता होगी, उसके लिए पराये अपने बन जाएँगे और शत्रुओं के मित्र बनने में देर न लगेगी।

जीवन के आधारस्तंभ सद्गुण हैं। अपने गुण-कर्म-स्वभाव को श्रेष्ठ बना लेना, अपनी आदतों को श्रेष्ठ सज्जनों की तरह ढाल लेना, वस्तुतः ऐसी बड़ी सफलता है, जिसकी तुलना किसी भी अन्य सांसारिक लाभ से नहीं की जा सकती। इसलिए सबसे अधिक ध्यान हमें इस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बात पर देना चाहिए कि हम गुणहीन ही न बने रहें, सद्गुणों की शक्ति और विशेषताओं से अपने को सुसज्जित करने का निरंतर प्रयत्न करें। दुर्गुणों को ढूँढ़-ढूँढ़कर खोजें और उन्हें खटमलों की तरह अपने संपर्क से दूर हटाने की सदैव चेष्टा करते रहें।

—अखण्ड ज्योति दिसबंर 1962, पृष्ठ-13

उपयोगी बीजांकुरों को खोजें और सींचे

अपने अंदर सद्गुणों के जितने बीजांकुर दिखाई पड़ें, जो अच्छाइयाँ और सत्प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ें, उन्हें खोजते रहना चाहिए। जो मिलें उन पर प्रसन्न होना चाहिए और उन्हें सींचने, बढ़ाने में लग जाना चाहिए। घास-पात के बीच यदि कोई अच्छा पेड़-पौधा उगा होता है, तो उसे देखकर चतुर किसान प्रसन्न होता है और उसकी सुरक्षा तथा अभिवृद्धि की व्यवस्था जुटाता है, ताकि इस छोटे पौधे के विशाल वृक्ष बन जाने से उपलब्ध होने वाले लाभों से वह लाभान्वित हो सके। हमें भी अपने सद्गुणों को इसी प्रकार खोजना चाहिए। जो अंकुर उगा हुआ है यदि उसकी आवश्यक देख-भाल की जाती रहे तो वह जरूर बढ़ेगा और एक दिन पुष्प-पल्लवों से हरा-भरा होकर चित्त में आह्लाद उत्पन्न करेगा।

सदा अपने दोष-दुर्गुण ही ढूँढ़ते रहना बहुत बुरी बात है। ठीक है कि अपनी त्रुटियों से बेखबर न रह, उन्हें खोजें और निकाल बाहर करें। निरंतर केवल उसी दिशा में मस्तिष्क को लगाए रहा जाएगा तो अगणित बुराइयाँ ही बुराइयाँ अपने अंदर सूझ पड़ती रहेंगी, तब चित्त में निराशा उपजेगी और अपने को दुष्ट, दुराचारी मान बैठने की भावना जड़ पकड़ेगी। जिस प्रकार अपने आप को **शिवोऽहम्, सच्चिदानन्दोऽहम्, सोऽहम्** आदि की उच्च ब्रह्मभावना करने से आत्मा स्व-संकेतों के आधार पर ब्राह्मी स्थिति में अवस्थित होकर अद्वैत लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है, उसी प्रकार अपने आप को निरंतर पापी, दुष्ट, दुराचारी, मानते रहने से उसी के प्रमाण खोज-खोजकर अपनी निकृष्टता की ओर दृष्टि करते रहने से आत्मिक स्तर गिरता है। जैसा हम सोचते हैं वैसे ही बनते और ढलते हैं। यदि अपनी बुराइयों को ही सोचते रहा जाएगा तो धीरे-धीरे अपना रूप वैसा ही बनता जाएगा।

—अखण्ड ज्योति दिसबंर 1962, पृष्ठ-14

बचत की आदत डालें

अपनी सौड़ जितनी लंबी हो, उतने ही पैर पसारने चाहिए। आमदनी से बाहर तभी खरच करना चाहिए, जब कोई आकस्मिक आपत्ति ही सिर पर आ जाए। ऐसे अवसरों के लिए भी हर विचारशील व्यक्ति को कुछ बचत करते चलना चाहिए जो अपनी या दूसरों की आवश्यकता के समय काम आ सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिंदगी जीने की कला का एक महत्त्वपूर्ण अंग है—आर्थिक संतुलन। अपने साधन और सद्गुण बढ़ाते हुए आर्थिक उन्नति करने के लिए प्रयत्न करना उचित है और आवश्यक भी। पर उससे भी अधिक आवश्यकता इस बात की है कि अपने खरचे आमदनी से अधिक बढ़े हुए न हों। किसी आदमी की बुद्धिमत्ता उसकी कमाई से नहीं, खरच करने की पद्धति से परखी जा सकती है। आमदनी तो अनायास भी हो सकती है। उत्तराधिकार में किसी को बड़ी संपत्ति भी मिल सकती है, पर खरच को उचित रीति से उचित मात्रा में कर सकना केवल बुद्धिमानों और दूरदर्शियों के लिए ही संभव हो सकता है। जो पैसा उड़ाता है, उसे मूर्ख ही कहेंगे। मितव्ययता और पैसे का श्रेष्ठतम सदुपयोग जिसे आता है, वस्तुत: वही अपना और अपने परिवार का जीवन सुख-शांतिपूर्वक बिता सकता है। समाज की सुस्थिरता भी मितव्ययता पर निर्भर रहती है। सरकारों और संस्थाओं के लिए भी यही मार्ग उचित है। सार्वजनिक कार्यों में तो इस प्रकार की सावधानी अधिकाधिक बरती जानी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1962, पृष्ठ-30

अभिनय करते हुए जीवन का आनंद लें

मन को संतुलित करने के लिए किया हुआ प्रयत्न जीवन के सारे स्वरूप को ही बदल देता है। नरक को स्वर्ग में परिवर्तित करने की कुंजी मनुष्य के हाथ में है। सोचने का तरीका यदि बदल डाले, खिलाड़ी की भावना रखकर जिंदगी का खेल खेले, नाटक के पात्रों की तरह अभिनय का आनंद लेते हुए दिन गुजारे, बुराई में से भलाई और निराशा में से आशा की किरणें ढूँढ़ने का अभ्यास करे तो कोई कारण नहीं कि रोता रहने वाला मनुष्य हँसते-खिलते गुलाब के रूप में परिणत होकर न केवल अपनी ही मानसिक समस्या हल कर ले, वरन पड़ोसियों और संबंधियों के लिए भी प्रसन्नता, आशा एवं प्रेरणा का केंद्र बन जाए।

हमें अपना उद्धार करना चाहिए, अपने को सुधारना और सँभालना चाहिए। आज की अपेक्षा कल अधिक निर्मल और अधिक उत्कृष्ट बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि इस मार्ग को अपना सकना हमारे लिए संभव हो सका तो न केवल अपना, वरन सारे समाज का, सारे विश्व का भी हितसाधन करने का श्रेय प्राप्त करेंगे। युग निर्माण का कार्य, व्यक्ति निर्माण से ही आरंभ होता है। संसार की सेवा करने का व्रत लेने वाले प्रत्येक परमार्थी को अपने आप की सेवा करने का व्रत लेकर विश्वमानव की उतने अंश में सेवा करने को तत्पर होना चाहिए, जितने का कि उत्तरदायित्व अपने ऊपर है। समस्त संसार की सेवा कर सकना कठिन है। अपनी सेवा तो आप कर ही सकते हैं। समस्त संसार को सुखी बनाना और सन्मार्ग पर चलाना यदि अपने लिए कठिन हो तो अपने को सुखी, संतुलित एवं सन्मार्गगामी तो बना ही सकते हैं। दूसरों का उद्धार कर सकना उसी के लिए संभव होता है, जो अपना उद्धार आप कर सकने में समर्थ होता है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1964, पृष्ठ-43, 44

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रम एक देवता है

हमें उन तत्त्वों की ओर ध्यान देना ही चाहिए जो जीवन विकास के मूल आधार हैं। उनका सदुपयोग ही लौकिक-पारलौकिक सफलता का एकमात्र उपाय है। ईश्वर ने हमें शरीर और मन जैसी अनमोल वस्तुएँ दी हैं। उनका लाभ वही उठा सकता है जो शरीर को सुव्यवस्थित श्रम में निरंतर लगाए रहता है और एक क्षण का समय भी बरबाद न होने देने के लिए सतर्क रहता है। मनोयोगपूर्वक दिलचस्पी के साथ जो भी कार्य किया जाएगा, उसकी चमक निराली ही होगी। बेगार भुगतने की तरह, भाररूप में किसी प्रकार पूरा किया हुआ काम और अपने सम्मान का प्रश्न बनाकर पूरी तन्मयता के साथ किया हुआ काम, जमीन-आसमान की तरह भिन्न दिखाई पड़ता है। जिस काम में सजीवता होगी, वह छोटा ही क्यों न हो, करने वाले के व्यक्तित्व एवं गौरव को बढ़ाने में भारी सहायक सिद्ध होगा। सफलता की ऊँची स्थिति प्राप्त करने के लिए प्रत्येक प्रगतिशील को इसी रास्ते अपनी यात्रा करनी पड़ी है। हम भी यदि सफल लोगों की जिंदगी जीना चाहें तो यही तरीका अपनाना पड़ेगा कि परिश्रमी बनें, घोर परिश्रम में आनंद अनुभव करें तथा समय का एक क्षण भी बरबाद न होने दें। अपने कामों में हमारी जितनी ही अधिक दिलचस्पी होगी, वे उतने ही अधिक सुंदर बन पड़ेंगे और उन कलाकृतियों के तिनकों द्वारा सफलता का वह घोंसला बुना जा सकेगा जिसमें बैठकर किसी चतुर पक्षी की तरह हम भी संतोष का जीवनयापन कर सकें।

उज्ज्वल भविष्य के सँजोए हुए स्वप्नों की सार्थकता-निरर्थकता इस बात पर निर्भर है कि हम कितने धैर्यपूर्वक, कितने अध्यवसाय के साथ निर्धारित लक्ष्य में संलग्न होते हैं? उसके लिए कितना मनोयोग लगाते और कितना पुरुषार्थ करते हैं? आलस्य और प्रमाद यह दो जहाँ रहेंगे, वहाँ पग-पग पर असफलता प्रस्तुत रहेगी। दैवी अनुग्रह भी पुरुषार्थियों का सहायक होता है। आलसी और प्रमादी धरती के भार माने जाते हैं, उन पर कृपा करके देवता भी अपनी उदारता का दुरुपयोग क्यों करें? एक बार कृपा कर भी दी जाए तो अपने दुर्गुणों के कारण अकर्मण्य को दूसरे दिन फिर दुर्भाग्य का ही सामना करना पड़ेगा। यह सोचकर दैवी कृपा भी उनसे दूर ही रहती है। हम प्रगतिशील और पुरुषार्थी बनें तो दैवी अनुग्रह भी सहज प्राप्त होने लगेगा।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1964, पृष्ठ-28

अपनी महानता जाग्रत करें

दूसरों की समृद्धि, श्री और सफलता पर ईर्ष्या करने की अपेक्षा अपने से भी गई-बीती स्थिति के लोगों से अपनी तुलना करने से आत्मसंतोष का भाव जाग्रत होता है। हमारी शक्ति, योग्यता और परिस्थितियों के अनुसार जो कुछ भी मिला है, उसे ही परमात्मा का प्रसाद मानने से अपनी छोटी-सी सफलता भी महान लगती है। उसी पर असीम आनंद की अनुभूति होने लगती

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। दरिद्र भिखारिन को किसी अमीर के सजे-सजाए लड़के के प्रति वह प्यार नहीं होता जो उसे अपने कुरूप और मैले-कुचैले बेटे से होता है। हमें जो कुछ भी मिलता है, उसे परमात्मा की इच्छा मानकर भोगने पर दुखी होने से सहज ही में बचा जा सकता है। दूसरों की समृद्धि से अपनी तुलना करने पर तो कुढ़न ही पैदा होती है।

आत्मत्याग ही ईर्ष्या से बचने का एक उपाय है। किंतु यह भावना इतनी उदात्त है कि बिरले व्यक्तियों, संतों तथा महात्माओं में ही इसे पूर्ण रूप से पाया जाना संभव है। सामान्य व्यक्तियों को आत्मत्याग के सरल रूप, आत्मीयता द्वारा ईर्ष्या के प्रकोप से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। सबको आंतरिक दृष्टि से देखने से समता का भाव उत्पन्न होता है। इस आत्मस्थिति से किसी के प्रति अन्याय, अत्याचार और द्वेष-दुर्भाव रखने की भावनाएँ नष्ट हो जाती हैं। इसलिए सभी को अपने समान ही मानना चाहिए। दूसरों की समृद्धि और सफलता देखकर प्रसन्नता अनुभव करना ज्यादा अच्छा होता है। इससे अपनी आत्मा भी विकसित होती है और ईर्ष्या-द्वेष की दुष्प्रवृत्ति से भी बच जाते हैं।

सुख और आनंद की प्राप्ति मनुष्य को बाह्य साधनों और परिस्थितियों के आधार पर नहीं होती। सुख का मूल हमारी आत्मा में है। हम जब तक अपनी इस विशालता को अनुभव नहीं करते, तभी तक ऊँच-नीच, बड़े-छोटे के ही विचारों में फँसे रहते हैं। इन विद्वेषपूर्ण भावनाओं से मानसिक थकावट उत्पन्न होती है, जिससे हमारी क्रियाशीलता पंगु हो जाती है; असामर्थ्य और असंतोष का भाव पैदा होता है जो जीवन विकास के प्रबल शत्रु समझे जाते हैं। इससे बचने को अपने 'अहं' से ऊपर उठकर सर्वात्मा में विचरण किया करें। आप तुच्छ नहीं, विशाल हैं। आपकी शक्तियाँ अनंत हैं। इसकी अनुभूति प्राप्त करने के लिए आप किसी के साथ ईर्ष्या न किया करें, तभी आपकी महानता जाग्रत होगी।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1964, पृष्ठ-39

शुभ सोचो, शुभ करो

देखा जाता है कि कमजोर से कमजोर बच्चे प्रोत्साहन और शुभ सूचनाएँ पाकर बड़े ही कुशाग्र बुद्धि और होनहार बन जाते हैं। प्रोत्साहन पाकर हारती हुई सेनाएँ जीत जाती हैं, साहस बँधाने से डूबते हुए व्यक्ति किनारे लग जाते हैं और आशा का संबल देने से मरणासन्न रोगी जी उठते हैं।

अभ्युदय, समुन्नति एवं आत्मकल्याण चाहने वाले को चाहिए कि वह अपने प्रति कभी कोई हीन भावना न बनाए, अपने को पस्तहिम्मत न करें। इस प्रकार कभी न सोचे कि वह तो कमजोर है, साधनहीन है, संसार में क्या कर सकता है। इसके विपरीत उसे इस प्रकार के महान और कल्याणकारी विचार रखने चाहिए कि वह सर्वशक्तिमान परमात्मा का अंश है, उसमें उस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा के सारे तत्त्व उसी प्रकार विद्यमान हैं, जिस प्रकार एक अंजलि जल में समुद्र के अनंत जल के संपूर्ण तत्त्व समाए रहते हैं। वह संसार के हर काम को करने की क्षमता रखता है। निराशा, पस्तहिम्मती उसके पास नहीं आते, उसकी आत्मा उसकी मित्र है और वह स्वयं अपनी आत्मा का मित्र है। संसार में वह महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए भेजा गया है, उसके लिए उसे आवश्यक शक्तियाँ भी दी गईं हैं। अपने अंदर की इन्हीं शक्तियों के आधार पर वह वे सारे कार्य संपादित कर दिखाएगा। वह अवश्य सफल होगा और शीघ्र ही अभ्युदय प्राप्त करेगा!

इस प्रकार के आशापूर्ण विचार रखने और तदनुसार उसकी सूचना आत्मा को देते रहने से, वह उसकी शक्ति इसी भावना के अनुसार गढ़ देगी और तब आत्मा का शक्ति-तत्त्व इसी के अनुसार महान और तेजस्वी बन जाएगा और फिर आपके अभ्युदय का मार्ग संसार का कोई भी अवरोध नहीं रोक पाएगा!

सदा शुभ सोचो, शुभ करो, शुभ की आकांक्षा करो। आपका संपूर्ण जीवन पवित्र और पुनीत बन जाएगा। आपको सत्य, शिव और सुंदर की प्राप्ति होगी।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1965, पृष्ठ-08

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

असफलता में भी निराश न हों

मनुष्य को किसी भी अवस्था, परिस्थिति में निराश नहीं होना चाहिए। सौ असफलताएँ मिलने पर भी जो एक सौ एकवें बार प्रयत्न करता है, वह अवश्य सफल होता है। सफलता-असफलता से निरपेक्ष रहकर निरंतर कार्यरत रहना ही निराशा से बचने का अमोघ उपाय है। जो व्यक्ति अपने पूरे तन-मन से काम में संलग्न रहता है, उसे निराश होने के लिए समय ही नहीं रहता।

निराशा एक भयानक रोग है, जिससे न केवल मानसिक शक्तियों का ही ह्रास होता है, अपितु शारीरिक स्वास्थ्य भी चौपट हो जाता है। निराश व्यक्ति हर समय चिंता और क्षोभ से जलता रहता है, जिससे उसे न तो भूख लगती है और न नींद आती है। इससे उसके शरीरसंस्थान पर भयानक प्रतिक्रिया होती है। पाचनक्रिया और रक्त संचार की प्रणाली बिगड़ जाती है, जिससे शरीर व्याधियों का घर बनकर "**शरीरम् व्याधि मन्दिरम्**" वाली उक्ति चरितार्थ कर देता है। वास्तव में यह उक्ति अवश्य ही किसी निराश हृदय से अपने सजातीय निराश बंधुओं पर ही चरितार्थ होने के लिए प्रकट हुई है।

जहाँ तक हो निराशा की भयंकर बीमारी को अपने पास न आने देना ही ठीक है और यदि वह किसी कारण से आक्रमण कर भी दे तो उसे अधिक देर तक टिकने नहीं देना चाहिए। इसका अनुभव होते ही हास-परिहास, व्यंग्य-विनोद और मनोरंजन द्वारा इसे तुरंत भगा देना चाहिए। निराशा को एक क्षण भी प्रश्रय देने का अर्थ है—'जीवन में विषाद के गहरे बीज बो लेना।'

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1965, पृष्ठ-20

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आनंदमय जीवन ही सफल और सार्थक

प्रसन्नता का वास्तविक अर्थ है—निर्मलता एवं निर्विकारिता। जो हृदय निर्मल है, निर्विकार है वही प्रसन्न है और जो प्रसन्न है, वही सदा सुखी है। अस्तु, जीवन में सुख-शांति के स्थायित्व के लिए मनुष्य को अपने हृदय को सदा निर्मल एवं निर्विकार ही रखना चाहिए।

ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट, काम-क्रोध आदि विकार ही मन के मल हैं। इनको दूर कर देने से मनुष्य का हृदय निर्मल हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों को दूर करने के लिए विचारबल का ही अवलंब लेना होगा। अपने विचारों को ऊँचा उठाइए, उनकी सहायता के लिए स्वाध्याय, सत्संग तथा सत्कर्मों को ग्रहण कीजिए। कुविचार उत्पन्न करने वाले वातावरण से दूर हटिए। लोभ आने पर त्याग कीजिए, दान दीजिए, क्रोध होने पर करुणाजनक प्रसंग पढ़िए, कामावेग के समय निर्वेद का सहारा लीजिए और मोह से बचने के लिए ईश्वर का चिंतन करिए। निरंतर इस प्रकार का कार्यक्रम चलाते रहने से कुछ ही समय में आपका हृदय निर्मल होने लगेगा। निर्मलता की प्रसन्नता का थोड़ा-सा आभास पाते ही फिर मन पुनः अपना परिमार्जन करने में तत्पर हो जाएगा।

परिस्थितियों को सुलझाने और प्रतिकूलताओं से लड़ने के लिए मनोबल की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। मनोबल का विकास केवल प्रसन्नता से ही हो सकता है। मानसिक प्रसन्नता को सिद्ध कीजिए और अपने चारों ओर के सुंदर संसार के बीच निर्द्वंद्व, निर्भय तथा सदा सुखी होकर जीवन को सफल एवं सार्थक बनाइए।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1966, पृष्ठ-10

अहंकार की शुद्धता-अशुद्धता

शरीर तथा संसार के प्रति अहंकार अशुद्ध है और वही अहंकार तब शुद्ध ही कहा जाएगा, जब यह आत्मा अथवा परमात्मा के प्रति हो। अपने को शरीर समझना और क्षणभंगुर सांसारिक भोगों का भोक्ता भर समझना अशुद्ध अहंकार है। अपने को शुद्ध-बुद्ध चेतना, आत्मा और परमात्मा का प्रतिनिधि मानकर सांसारिक भोगों के प्रति आसक्ति की भावना न रखकर कर्त्तव्यवान की भावना रखना, अहंकार की शुद्धता की द्योतक है।

इस प्रकार इन वृत्तियों की शुद्धता-अशुद्धता के लक्षण समझकर निर्णय कर लेना चाहिए कि अंतःकरण किस सीमा तक शुद्ध अथवा अशुद्ध है और फिर उसी अनुपात से चिंतन, मनन तथा सत्कर्मों के द्वारा उसे अधिकाधिक शुद्ध बनाने में लग जाना चाहिए। स्वार्थरहित सात्विक आहार-विहार तथा आचार-विचार का अभ्यास अपना लेने से मनुष्य की चारों वृत्तियाँ आपसे आप शुद्ध होने लगती हैं। मन को प्रसन्न रखिए, बुद्धि को विकृतियों से बचाइए, चित्त पर शिव संस्कारों की छाप डालिए और अहंकार को शरीर से आत्मा अथवा परमात्मा की ओर उन्मुख करिए। आपका

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंत:करण शुद्ध हो जाएगा। इस प्रकार का सकर्मक अभ्यास ही आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करने का प्रयास है, जिसे पाकर मनुष्य जीवन शाश्वत सुख का अधिकारी बनकर, सफल एवं सार्थक हो जाता है। यह आध्यात्मिक उपलब्धि संसार की सारी उपलब्धियों का मूल तथा सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसे हर संभव प्रयत्न करके प्राप्त कर मनुष्य को अपने नश्वर जीवन को अनश्वर बनाना ही चाहिए।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1966, पृष्ठ-09

अपने भाग्य का निर्माता स्वयं को मानें

स्वावलंबी व्यक्ति अपनी परिस्थितियों का उत्तरदायी स्वयं अपने को मानता है, इस कारण वह उनके निवारण के लिए अपने अंदर ही सुधार और विकास लाता है। अपनी इस रीति-नीति के कारण वह जल्दी ही अपनी अवांछित परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेता है और आगे की ओर बढ़ता चलता है। चूँकि परावलंबी अपनी प्रतिकूलताओं और कठिनाइयों का कारण दूसरों को मानता है, इसलिए वह उनके निवारण के लिए भी परमुखापेक्षी बना रहता है। सोचता है कि दूसरे सुधरें, अच्छे बनें और उसके साथ सहयोग करें तो उसकी कठिनाइयाँ दूर हों और वह आगे बढ़ सके। इस परावलंबन का फल यह होता है कि अपने को उत्तरदायी न समझने के कारण वह अपना सुधार नहीं करता और उन्हीं परिस्थितियों में उलझा पड़ा रहता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह भाग्य का निर्माता स्वयं अपने को माने। सौभाग्य के लिए सत्कर्म करे और कर्त्तव्य-पथ पर जो भी बाधाएँ तथा कठिनाइयाँ आएँ उन्हें स्वावलंबी भावना से दूर करता हुआ आगे बढ़ता जाए। संसार में अपने किए ही अपने काम पूरे होते हैं। अपने चले ही यात्रा पूरी होती है और अपना पसीना बहाने पर ही उन्नति तथा श्रेय का सौभाग्य मिलता है। यह कभी भी नहीं भूलना चाहिए। ईश्वर ने मनुष्य को सर्वयोग्य और सर्वसक्षम बनाया है। वह अपना विकास किसी भी सीमा तक कर सकता है और उन्नति के कितने ही उच्च शिखर पर पहुँच सकता है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1971, पृष्ठ-29

अपनी शक्तियों को जानें और आगे बढ़ें

ईश्वर ने अनेक दिव्यशक्तियाँ देकर आपको संसार में भेजा है, उनका दुरुपयोग न कीजिए। पेट और प्रजनन जैसे क्षुद्र कार्यों में उन्हें व्यर्थ न होने दीजिए। आप जो भी कार्य कर रहे हैं, उनसे हजारों गुना अधिक कार्य करने की सामर्थ्य आपके अंदर है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि अपना महत्त्व समझें, शक्तियों को पहचानें तथा समय का सदुपयोग करें। जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है, उसे व्यर्थ न जाने दें।

जो कार्य करने की इच्छा रखते हैं, उसे आज से ही प्रारंभ कर दीजिए। अपनी समस्त शक्तियाँ उसमें एकाकार कर दीजिए। वह क्षण आपके जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षण होगा,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब आपको यह अनुभव होगा कि संसार को आपकी आवश्यकता है। आपके अंदर एक और व्यक्तित्व समाहित है, जो आपके बाहरी व्यक्तित्व से कहीं अधिक महान है। जिस क्षण व्यक्ति अपनी महानता की झलक पा लेता है; वह मानवत्व से महामानवत्व की ओर अग्रसर हो जाता है।

हो सकता है कि किन्ही कठिनाइयों या बाधाओं के कारण आपका व्यक्तित्व पूरी तरह से विकसित न हो सका हो। परंतु आपत्तियाँ आने पर घबराइए मत, जिस प्रकार से अग्नि में तपकर सोना निखर जाता है और भी अधिक चमकने लगता है, उसी प्रकार बाधाएँ और कठिनाइयाँ मनुष्य को खरा कुंदन बना देती हैं। कई पादप ऐसे होते हैं, जब तक उन्हें मसला न जाए, सुगंधि नहीं देते। उसी प्रकार कुछ व्यक्ति भी ऐसे होते हैं, जब तक वे विपत्तियों से आक्रांत न किए जाएँ, उनकी योग्यताओं की सुगंधि फैल ही नहीं पाती। अतएव आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी योग्यताओं को पहचानिए। किसी भी प्रतिभा का अंकुर आपको अपने अंदर दिखाई पड़े, उसको पुष्पित-पल्लवित होने का अवसर दीजिए। कौन जाने एक दिन आप संसार के महान कलाकार बन जाएँ, विश्वप्रसिद्ध लेखक बन जाएँ, दर्शनिक या राजनीतिज्ञ बन जाएँ। आवश्यकता केवल इस बात की है कि शक्तियों को पहचानिए और सतत बढ़ते रहिए।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1972, पृष्ठ-32

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मौत और जिंदगी, जुड़वाँ बहनें

सत्कर्म और सदुद्देश्य लेकर ही जीना उचित है। इस राह पर चलते हुए यदि अभाव, अवरोध अथवा संकट का सामना करना पड़े और वह मृत्यु जैसा कष्ट लेकर सामने आ उपस्थित हो तो भी विचलित होने की आवश्यकता नहीं। मरना तो एक दिन निश्चित है। वह घड़ी कब आ पहुँचे, इसका भी ठिकाना नहीं। जब सामान्य रीति से कभी भी मरना हो सकता है तो सदुद्देश्य की रक्षा में मृत्यु आ उपस्थित होने पर ही क्यों भीरुता प्रकट की जाए। सामान्य मौत से मरने की अपेक्षा, सदुद्देश्य के लिए मरना आत्मसंतोष देता है, अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करता है और शूर, साहसी महामानवों की श्रेणी में अपने को बिठाता है। इतने लाभ जिस मृत्यु के साथ जुड़े हुए हैं वस्तुत: वह चारपाई पर मरने वालों की तुलना में कहीं अधिक श्रेयस्कर एवं सौभाग्यशाली हैं।

मौत-जिंदगी की सहचरी है। दोनों जुड़वाँ बहनें हैं। एक जहाँ रहेगी, वहाँ दूसरी देर-सवेर में आ ही पहुँचेगी। एक के बिना दूसरी अपूर्ण है। हमें इन दोनों का ही सम्मान करना चाहिए और दोनों का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए योजनाबद्ध जीवनपद्धति का निर्धारण करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1975, पृष्ठ-23

हर परिस्थिति के लिए तैयार रहें

बड़े उज्ज्वल भविष्य की बड़ी से बड़ी और अच्छी से अच्छी आशा करनी चाहिए किंतु बुरी से बुरी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। आवश्यक नहीं कि हमने

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस प्रकार की आशा लगा रखी है—घटनाक्रम उसी रीति से घटित होता चले। हमारी इच्छा और चेष्टा ही सब कुछ नहीं है। जो हम चाहें, वही होना चाहिए इसके लिए प्रकृति के नियम बँधे हुए नहीं हैं। परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव कई बार ऐसे अप्रत्याशित घटनाक्रम सामने कर देते हैं जिनसे आश्चर्यचकित रह जाना पड़े। कल क्या होने वाला है, इसे कोई नहीं जानता है। हम केवल आशा और चेष्टा कर सकते हैं। परिणाम के लिए घटनाचक्र पर निर्भर रहना पड़ता है। जो इस कड़ुआ-मीठा दोनों ही तरह का स्वाद चखने को तैयार रहते हैं, उनके लिए दिन की भी उपयोगिता होती है और रात्रि की भी। दोनों में से जो हमें प्रिय है, वही सदा बना रहे ऐसा कोई चाहेगा तो सफल मनोरथ न होगा। प्रिय प्रसंग ही सदा सामने आए, अप्रिय घटनाएँ घटित न हों, इस तरह सोचना बालबुद्धि का काम है। जो संसार को, जीवन को समझते नहीं, वे ही एकांगी चिंतन अपनाते हैं और एकपक्षीय दुराग्रह के लिए अड़े बैठे रहते हैं।

जिंदगी को करीने और सलीके से जीना चाहिए। जो मिला हुआ है, उसी का अधिकाधिक बुद्धिमत्तापूर्ण सदुपयोग करने की बात सोचनी चाहिए। अपने पास प्रस्तुत साधन भी इतने अधिक होते हैं कि उनका सही रीति से प्रयोग किया जा सके तो उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ एक-एक करके समीप आती चली जाती हैं। स्वच्छता और व्यवस्था यह दो बहुमूल्य विभूतियाँ जिनके स्वभाव में सम्मिलित हैं, वे स्वल्प साधनों में भी अपने व्यक्तित्व को प्रखर और प्रतिभावान बना सकते हैं। उनकी जागरूकता हर कार्य में टपकती है और हर संबद्ध पदार्थ स्वच्छता एवं व्यवस्था के साथ सँभाला-सँजोया गया होता है। फलतः संपन्न किंतु फूहड़ व्यक्तियों की तुलना में वे कहीं अधिक संपन्न, समुन्नत एवं सुसंस्कृत दृष्टिगोचर होते हैं।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1975, पृष्ठ-45, 46

अपनी अंतःस्थिति बदलें

परिस्थितियाँ जैसी होंगी वैसी भली-बुरी स्थिति हमें प्राप्त होगी, यह सोचना गलत है। सही यह है कि जैसी कुछ अपनी भीतरी स्थिति होगी, उसी के अनुरूप बाह्य स्थितियाँ बदलती चली जाएँगी। अपने आप को सुधारने का मतलब है, अपनी उलझी समस्याओं को सुधारना और अपनी सर्वतोमुखी प्रगति का पथ प्रशस्त करना। यह कठिन है कि बाहर के व्यक्तियों को अथवा घटनाओं को अपनी इच्छानुकूल ढाल लें। उसकी अपेक्षा यह सरल है कि अपनी अंतःस्थिति को बदलकर अभीष्ट वातावरण को, अपने आप ही बदल जाने का द्वार खोल दें, बुद्धिमत्ता की यही रीति है।

दूसरों की सही समीक्षा कर सकना कठिन है, पर अपने आप को आसानी से जाना जा सकता है। दूसरे को सुधारना कठिन है, पर अपने आप को तो आसानी से सुधारा जा सकता है। दूसरों की सहायता बड़ी मात्रा में करना संभवतः उतना न बन पड़े जितना कि अपनी सहायता आप की जा सकती है। हम अपने को समझें, अपने को सुधारें और अपनी सेवा करने के लिए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप तत्पर हों तो निश्चित रूप से दूसरों की सेवा के लिए किए जाने वाले पुण्य-परमार्थ का यह प्रथम किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

जो पाना चाहते हैं, उसके लिए बाहरी दौड़-धूप करने से पहले अपने भीतर उपयुक्त पात्रता उत्पन्न करें व्यक्तित्व को जितना ही प्रखर, परिपक्व और समर्थ बनाया जाएगा, उतना ही अभीष्ट उपलब्धियों को प्राप्त करना संभव ही नहीं, सरल भी होगा। अपनी विशेषताएँ ही बाहरी सहयोग को आकर्षित करती हैं। उपलब्धियों से लाभ उठा सकना भी उसी के लिए संभव है जो भीतर से मजबूत है, अपनी दुर्बलताओं की उपेक्षा करते रहेंगे तो बाहरी उपलब्धियाँ पकड़ की सीमा से बाहर ही बनी रहेंगी। इसलिए अपना चुंबकत्व प्रखर बनाने के लिए तत्पर होना चाहिए, अनेक सफलताएँ उसी के आधार पर खिंचती हुई चली आएँगी।

—अखण्ड ज्योति मई 1975, पृष्ठ-36

अगले जीवन की तैयारी अभी से करें

अंत:करण में जब उच्च विचार उत्पन्न होंगे तो हमारे कार्य भी उत्कृष्ट होंगे। उत्कृष्ट विचार मस्तिष्क रूपी गुफा में बंद कर नहीं रखे जा सकते हैं, वे तो सूर्य की किरणों के प्रकाश की तरह सारे अंतरिक्ष एवं वायुमंडल को आलोकित कर देंगे। विचारों की अभिव्यक्ति कर्म का रूप धारण करती है। कर्म की उत्कृष्टता या निकृष्टता विचारों की ही प्रतिक्रिया होती है। सत्कर्मों की प्रेरणा सद्भावनाओं से ही तो प्राप्त होती है। अत: जीवन सुखमय एवं सुंदर बनाने के लिए विचार और कर्म में एकरूपता होनी चाहिए। कर्मों को देखकर ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता आसानी से लगाया जा सकता है। सत्कर्मों की प्रेरणा सद्भावनाओं से प्राप्त होती है तथा कुकर्म, दुर्भावनाओं के बीच जन्म लेते हैं। यश-अपयश, पाप-पुण्य, अपकार-उपकार, दंड-पुरस्कार कर्मों के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ करते हैं। भावनाओं की उत्कृष्टता तथा कर्मों की सजीवता, ये दोनों मिलकर ही जीवन को सार्थक बनाते हैं।

क्रियमाण कर्म ही तो संस्कारों के जनक हैं और संस्कारों के आधार पर ही तो स्वर्ग, नरक एवं पुनर्जन्म की स्थिति का निर्माण होता है। हमारी भाग्यलिपि तो पूर्वजन्म में किए गए कर्मों की अमिट निशानी है। जन्म के साथ आने वाले संस्कार हमारे पूर्वजन्म में किए गए कर्म ही तो हैं। अगले जीवन की तैयारी भी हमें अभी से करना प्रारंभ कर देना चाहिए। जिन्हें नारकीय यातनाओं, राग-द्वेष, ईर्ष्या, कलह, मार-पीट, लूट-खसोट, रक्तपात आदि के भोगने में किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव न होता हो तो उन्हें कुकर्म करने की खुली छूट है तथा इसके विपरीत जिन्हें स्वर्गीय सुख-शांति प्राप्ति करने की उत्कृष्ट आकांक्षा हो, उनके लिए सत्कर्मों को जीवन में उतारना चाहिए। सद्भावनाओं एवं सत्कर्मों के समन्वय से मिलने वाला आनंद अवर्णनीय होता है और उसकी यदि उपलब्धि हो जाए तो समझना चाहिए कि हमारा जीवन सार्थक हो गया।

—अखण्ड ज्योति जून 1975, पृष्ठ-12

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेय की निरर्थकता और श्रेय की सार्थकता में विश्वास बढ़ाएँ

'प्रेय' की लिप्सा 'श्रेय' की आकांक्षा में बदली जानी चाहिए। पेट-प्रजनन भर के लिए जीने में संलग्न पशुस्तरीय प्रवृत्ति को बदलकर आत्मा को परमात्मा स्तर तक विकसित करने की देव स्तरीय प्रवृत्ति में प्रवेश करना चाहिए। आकांक्षाएँ बदल जाने से मन की विचारणा और शरीर की कार्यपद्धति में काया-कल्प प्रस्तुत हो जाएगा। प्रेय की निरर्थकता और श्रेय की सार्थकता में विश्वास बढ़ चले तो उसका प्रभाव कल्पना क्षेत्र तक सीमित न रहकर व्यावहारिक जीवन के हर क्षेत्र में प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने लगेगा।

जीवन का लक्ष्य समझा जाना चाहिए और प्रगति की दिशा अपनाई जानी चाहिए। निरुद्देश्य जीने से हवा के साथ-साथ उड़ते फिरने वाले पत्तों जैसी दुर्गति होती है। वे यत्र-तत्र-सर्वत्र भटकते भर हैं, पहुँचते कहीं नहीं—पाते कुछ नहीं। जीवन का सुनिश्चित लक्ष्य अपूर्णता को पूर्णता में विकसित करना, आत्मा को परमात्मा स्तर तक पहुँचाना ही है। उसे जितनी जल्दी समझा और अपनाया जा सके उतना ही उत्तम है। शरीर-रक्षा और परिवार-पोषण के लिए उपार्जन तथा व्यवस्था संबंधी कार्य भी किए जाने चाहिए, किंतु उतने भर में सीमित होकर न बैठा जाए। यह ध्यान पूरी गंभीरतापूर्वक रखा जाना चाहिए कि सुर-दुर्लभ मनुष्य शरीर किसी विशेष उद्देश्य के लिए मिला है और उसे पूरा करने में ही दूरदर्शी बुद्धिमत्ता है। अंत:करण में यह तथ्य निरंतर जाग्रत बना रहे तो समझना चाहिए कि उपयुक्त जीवन दिशा मिल गई और उसके प्रकाश में सद्भावनाएँ अपनाए रहने तथा सत्प्रवृत्तियों में संलग्न रहने की धारा बह चलेगी। एक दिशा, एक लक्ष्य, एक आकांक्षा और एक प्रेरणा यदि निश्चित हो जाए तो फिर शरीर और मन को उसी ओर चल पड़ने की बात बन जाती है और धीरे-धीरे चलते रहने पर भी देर-सबेर में मनुष्य वहाँ जा पहुँचता है, जहाँ पहुँचा देखकर उसके साथी चमत्कार हुआ या देवता का वरदान मिला मानने लगते हैं।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1976, पृष्ठ-30, 31

पात्रता के अनुरूप पाएँ

संसार में आदान-प्रदान का नियम तर्कसंगत, नैतिक और व्यावहारिक है। पात्रता के अनुरूप सफलताएँ और उपलब्धियाँ मिलने का शाश्वत नियम अनादिकाल से चलता आ रहा है, हमें उतने से ही संतुष्ट रहना चाहिए। किसी से कुछ पाना हो तो उसका मूल्य चुकाने के लिए तत्पर रहना चाहिए। सेवा के बदले में यश पाया जाए तो हर्ज नहीं। ऐसे ही धक्केशाही के बल पर नेता बन बैठना अनुचित है। अपनी योग्यता, कुशलता और श्रमशीलता का स्तर बढ़ाते हुए धनोपार्जन का औचित्य है, पर यदि जेबकटी का धंधा अपनाया जा रहा हो तो उसे उपार्जन नहीं कह सकते। इसी प्रकार व्यक्तित्व के परिष्कार एवं लोकमंगल में निरत रहने की ऋषि भूमिका

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निभाने वाले दैवी अनुग्रह के अधिकारी हो सकते हैं, पर मंत्र-तंत्र की तरकीबें भिड़ाकर जो दैवी शक्तियों की अनुकंपा चाहते हैं, वे यथार्थता को समझते नहीं और सस्ते जादुई लाभ का सपना देखते हैं। यही बात सिद्धपुरुषों का अनुग्रह, आशीर्वाद प्राप्त करने के संबंध में भी है। रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद को, समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को, चाणक्य ने चंद्रगुप्त को, गांधी ने जवाहरलाल को अपना सच्चा आशीर्वाद दिया था, पर देने से पहले उन्होंने यह विश्वास भली प्रकार कर लिया था कि उनके अनुदान का उपयोग किसी कुपात्र द्वारा व्यक्तिगत स्वार्थ-साधन के लिए तो नहीं किया जाएगा। कहना न होगा कि परिष्कृत व्यक्तित्व से कम कीमत पर कभी किसी समर्थसिद्ध पुरुष की वास्तविक अनुकंपा मिल ही नहीं सकती।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1976, पृष्ठ-08

असफलता से सीखें और आगे बढ़ें

श्रम और मनोयोग का समन्वय न रहने से हर काम घटिया रहता है और उससे भोंड़ापन टपकता है। अस्तु, हमें न केवल एक क्षण बरबाद होने देने वाली दिनचर्या बनानी चाहिए, वरन मन पर यह अनुशासन भी कायम करना चाहिए कि हाथ के नीचे आए काम में पूरी दिलचस्पी लें, उत्साह दिखाएँ और अधिक अच्छा बनाने के लिए क्या सोचा और क्या किया जा सकता है, इसका ताना-बाना बुनते रहें।

सफलता के लिए प्रयत्न तो पूरा करना चाहिए, पर साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि पूरा परिश्रम करते हुए भी यह गारंटी नहीं हो सकती कि इच्छित समय में, इच्छित मात्रा में अभीष्ट सफलता मिल ही जाएगी। मात्र मनुष्य का श्रम ही नहीं, परिस्थितियाँ भी सफलता में बहुत बड़ा कारण होती हैं। अस्तु, अपने सही प्रयत्न को ही संतोष का पूर्ण आधार मानकर चलना चाहिए। अमुक कार्य हमने पूरी जिम्मेदारी, मेहनत और ईमानदारी से किया, इतनी बात ही अपने हाथ में हैं, इसलिए इसी प्रयत्नशीलता पर संतोष एवं गर्व किया जाना चाहिए। जो व्यक्ति सफलता के लिए जितना अधिक आतुर होता है, उसका उत्साह छोटा-सा अवरोध आने मात्र से समाप्त हो जाता है। ऐसी ओछी प्रकृति के मनुष्य देर तक कठिनाइयों का सामना करते हुए, प्रगति के उच्च शिखर तक पहुँचने में समर्थ नहीं हो सकते। हर असफलता के बाद अधिक गहरा आत्मनिरीक्षण किया जाना चाहिए और अधिक दूरदर्शिता एवं अधिक तत्परतापूर्वक फिर उसी काम को आरंभ करना चाहिए। महत्त्वपूर्ण कार्य असाधारण श्रम मनोयोग एवं साधनों की अपेक्षा करते हैं। यदि उन्हें एक बार में नहीं जुटाया जा सका है तो कई किस्तों में, कई पड़ाव लेकर उसे पूरा करना चाहिए और हर असफलता के बाद पहले की अपेक्षा अधिक साहस भरा पुरुषार्थ करना चाहिए। जो लोग तुरत-फुरत मनोवांछा पूरी होने के लिए आतुर रहते हैं और एकबार असफलता मिलते ही सिर धुनने लगते हैं, ऐसे बालबुद्धि लोग कभी कोई महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित नहीं कर सकते। कर्मयोगी वे हैं जो अपने प्रयत्नों की प्रखरता पर संतोष करते हैं, हर पड़ाव के बाद नया उत्साह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रदर्शित करते हैं और सफलता मिलने में देर होती दीखने पर तनिक भी विचलित नहीं होते। कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति सदा इतना ही सोचते हैं कि काम को अधिक कुशलतापूर्वक करने में क्या सुधार किया जाना चाहिए? सफलता-असफलता को वे खिलाड़ियों के सामने आएदिन आने वाले उतार-चढ़ावों की तरह हलकी नजर से देखते हैं और उन्हें बहुत अधिक महत्त्व नहीं देते।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1976, पृष्ठ-28, 29

शिष्टाचार का पालन अवश्य करें

कर्मयोगी की एक दिशा ईमानदारी है। वह अपने हर काम को पूरी तत्परता, कुशलता और ईमानदारी के साथ करता है। अपने कामों का स्वरूप प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है तो कर्त्ता को हर घड़ी यह ध्यान रहता है कि अपनी कृतियों का स्तर गिरने न पाए। किए हुए कामों को देखकर कोई यह लांछन न लगा सके कि काम में बेईमानी या उपेक्षा बरती गई है। लाभ कम हो या अधिक अपनी प्रामाणिकता गिराकर कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए। जिसमें किसी के साथ छल या विश्वासघात हुआ हो ऐसा कार्य निकृष्ट ही माना जाएगा। नीति, मर्यादा, न्याय एवं औचित्य का उल्लंघन करके किए हुए काम भले ही आर्थिक लाभ देते हों या सुविधा उत्पन्न करते हों, निश्चित रूप से हेय हैं। कर्मयोगी को भी कर्म का प्रतिफल तो चाहिए, वह उसके लिए प्रयत्न भी करता है किंतु अनीति की कीमत पर खरीदे गए लाभ की अपेक्षा तो उसे हानि उठाना अधिक श्रेयस्कर लगता है।

शिष्टाचार का पालन और दूसरों के साथ सज्जनतापूर्ण सद्व्यवहार का ध्यान रखना कर्मयोग का आवश्यक अंग है। कटुव्यवहार, क्रोधावेश, दुर्वचन, तिरस्कार, अशिष्टता तो उनके साथ भी नहीं बरती जानी चाहिए, जिनसे हमारा मतभेद है या विरोध है। विरोधियों और प्रतिद्वंद्वियों के साथ किस तरह निपटा जाए? इसके लिए जो भी तरीका अपनाना हो उसमें कटुवचन बोलने और दुर्व्यवहार करने की गुंजाइश नहीं है। न्यायाधीश किसी अपराधी को फाँसी की सजा तो दे सकता है, पर उसका असम्मान नहीं कर सकता है। इससे तो अपराधी और न्यायाधीश दोनों एक ही स्तर के बन जाएँगे। सज्जनोचित शिष्टाचार का उल्लंघन किसी भी स्थिति में नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इसमें अपराधी से भी बढ़कर दोषी वह हो जाता है जो अशिष्टता बरतता है।

नागरिकता के कर्त्तव्यों का पालन प्रत्येक समझदार व्यक्ति को करना चाहिए। सड़क पर बाँई ओर चलना, लाइन लगाकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करना; सार्वजनिक स्थानों को गंदा करने या क्षति पहुँचाने का प्रयत्न न करना जैसे सार्वजनिक सुविधा के नियम हर किसी को पालन करने चाहिए। मिलने के, काम करके देने के समय का पूरी तरह ध्यान रखा जाना चाहिए। माँगी वस्तु का लौटाना या दिए वचन का पूरा करना मनुष्य की प्रामाणिकता का चिह्न है। मोल-भाव, नाप-तौल तथा वस्तु के स्तर में गड़बड़ी न की जाए। रिश्वत, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, कर चोरी जैसे आर्थिक भ्रष्टाचारों से स्वयं दूर रहा जाए और दूसरों को रोका जाए। चोरी, डकैती, छल,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हत्या जैसे नृशंस क्रूर-कर्मों की बात तो सोची ही नहीं जा सकती। प्रतिपक्षी से प्रतिशोध लेना हो तो उसका अंत:करण बदलने और चरित्र सुधारने की ही दृष्टि रखी जानी चाहिए। हिंसा-प्रतिहिंसा का, प्रतिशोध एवं प्रति-प्रतिशोध का कुचक्र तो उस अवांछनीयता को चक्रवृद्धि दर से बढ़ाता ही जाता है, जिसके निवारण के लिए आतंकवादी उपायों को अपनाया गया था।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1976, पृष्ठ-48

सफलता पुरुषार्थ के मूल्य पर मिलती है

यदि हम स्वास्थ्य, शिक्षा, संपन्नता, सम्मान, सफलता से वंचित रहते हैं तो इसके लिए दूसरों को दोष देना व्यर्थ है। गहराई से उन कारणों को तलाश करना चाहिए जिनके द्वारा विपन्नता विनिर्मित होती है। आलस्य, प्रमाद, उपेक्षा, उदासीनता, आवारागर्दी जैसे दुर्गुणों में लोग अपनी अधिकांश शक्तियाँ नष्ट करते रहते हैं, महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए उनका श्रम, समय, मनोयोग लगता ही नहीं, फिर वे सफलताएँ कैसे मिलें जो प्रगाढ़ पुरुषार्थ का मूल्य माँगती हैं। असफलताओं का दोष भाग्य, भगवान, ग्रहदशा अथवा संबंधित लोगों को देकर मात्र मन को बहलाने की आत्मप्रवंचना की जा सकती है, उसमें तथ्य तनिक भी नहीं है। संसार के प्राय: सभी सफल मनुष्य अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़े हैं, उन्होंने कठोर श्रम और तन्मय मनोयोग का महत्त्व समझा है। यही दो विशेषताएँ जादू की छड़ी जैसा काम करती हैं और घोर अभाव की, घोर विपन्नताओं की परिस्थितियों के बीच भी प्रगति का रास्ता बनाती हैं। सफल मनुष्यों में से प्रत्येक के जीवन पर गहरी दृष्टि डालने से यही तथ्य उभरता दिखाई पड़ेगा कि वे अपनी मानसिकता और श्रमशीलता के सहारे ही आगे बढ़े हैं। उठने वाले या गिरने वाले को उनकी दिशा में प्रोत्साहन देना संसार का काम है। बाहर की कोई शक्ति किसी को उठाती-गिराती नहीं। यह सब पूर्णतया अपनी स्थिति पर निर्भर है।

यह भ्रम जितनी जल्दी हटाया जा सके उतना ही अच्छा है कि कोई देव-दानव, मंत्र-तंत्र, गुरु, सिद्धपुरुष, मित्र, स्वजन, धनी, विद्वान हमारी कठिनाइयाँ हल कर देंगे या हमें संपन्न बना देंगे। इस परावलंबन से अपनी आत्मा कमजोर होती है और अंत:करण में छिपी प्रचंड आत्मशक्ति को विकसित होने में भारी अड़चन पड़ती है। अस्तु, परावलंबी मनोवृत्ति को जितनी जल्दी छोड़ा जा सके, आत्मनिर्भरता को जितनी दृढ़ता से अपनाया जा सके उतना ही कल्याण है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1976, पृष्ठ-37, 38

सफलता के लिए आत्मविश्वास आवश्यक

जीवन भार बनकर जीने के लिए नहीं है। उसे श्रेष्ठतापूर्ण ढंग से जीना चाहिए। यह तभी संभव है जब व्यक्ति पंगु विचारों को अपने मन में घर न करने दे क्योंकि इससे शक्ति का प्रवाह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बंद हो जाता है। भगवान ने मनुष्य को शक्तियाँ इसलिए प्रदान की हैं कि वह उनका सदुपयोग कर ऊँचा उठे और दूसरों को भी ऊँचा उठा सके इसी में मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

सफलता के बारे में हमारा विश्वास अधूरा नहीं होना चाहिए। उसमें कहीं दरार या छिद्र नहीं होने चाहिए। सफलता के बारे में तिल मात्र भी संदेह हो तो समझना चाहिए कि प्रयत्न में शिथिलता है, शिथिलता होने से सफलता दूर चली जाएगी। जब तक किसी कार्य में हम अपनी समस्त शक्तियाँ लगा नहीं पाते, मन एकाग्र नहीं करते, तब तक वह कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है। जितना कठिन कार्य है उसके लिए उतने ही दृढ़ विश्वास एवं निरंतर प्रयत्न की आवश्यकता होती है। ईश्वरीय सत्ता भी उन्हीं की सहायता करती है जो स्वयं प्रयत्नशील होते हैं।

सतत परिश्रम, आत्मविश्वास एवं दृढ़ निश्चय के आगे कुछ भी असंभव नहीं है। इन्हीं गुणों के प्रकाश में, संसार में प्राण फूँकने वाले कार्य संपन्न हुए। विद्वानों, शूरवीरों, महापुरुषों, धर्मप्रवर्तकों के ज्वलंत उदाहरण हैं कि उन्होंने आत्मविश्वास के आधार पर क्या नहीं कर दिखाया?

—अखण्ड ज्योति मार्च 1976, पृष्ठ-43, 44

सफलता का आधार आत्मविश्वास और विचारों की शक्ति

दृढ़ संकल्प में बड़ी अद्‌भुत शक्ति होती है जो मनुष्य के जीवन का काया पलट कर देती है। जिस व्यक्ति पर दृढ़ संकल्प का भूत सवार हो जाता है, वह उन्नति के लगभग सभी द्वार खोल लेता है। पैदा होने पर सब मनुष्य समान हैं। सभी के अंग लगभग समान ही हैं, फिर क्या कारण है कि एक तो राजा है, दूसरा भिखारी। एक गरीबी को पाल रहा है तो दूसरा हमेशा के लिए विदा कर रहा है।

एक व्यक्ति जिंदगी भर भार बनकर जीता है तो दूसरा करोड़ों का भार अपने सिर पर लेता है। इतना भारी अंतर मनुष्य-मनुष्य में क्यों होता है? इतनी बड़ी विषमता का कारण है—दृढ़ संकल्प की कमी, जिसके कारण साधन संपन्न होते हुए भी कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर पाते हैं। भावुकतावश कार्य प्रारंभ तो कर देते हैं परंतु जहाँ थोड़ी-सी कठिनाई आई कि कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं।

जीवन में सफलता पाने के लिए आत्मविश्वास उतना ही जरूरी है जितना जीने के लिए भोजन। कोई भी सफलता बिना आत्मविश्वास के मिलना असंभव है। आत्मविश्वास वह शक्ति है जो तूफानों को मोड़ सकती है, संघर्षों से जूझ सकती और पानी में भी अपना मार्ग खोज लेती है। जीवन के किसी भी पहलू को देखें तो आत्मविश्वास के बिना अधूरा ही दिखाई पड़ेगा। एक विद्यार्थी बड़ा अध्ययनशील है, अपने कर्त्तव्यों के प्रति हमेशा सजग रहता है परंतु परीक्षा हाल में प्रवेश करते ही अपना आत्मविश्वास खो बैठता है, परिणामस्वरूप वह परीक्षा में असफल हो जाता है। जबकि दूसरा विद्यार्थी कम अध्ययनशील होते हुए भी आत्मविश्वास के बल पर अच्छे नंबर ले आता है। कारण क्या था? जिसके परिणामस्वरूप पहला विद्यार्थी परीक्षा में फेल हो गया

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और दूसरा विद्यार्थी उत्तीर्ण हो गया। आत्मविश्वासी दुनिया का सबसे बड़ा व्यक्ति माना जाता है। जिसकी एक आवाज पर करोड़ों व्यक्ति साथ हो जाते हैं। दूसरा व्यक्ति आत्मविश्वास के अभाव में घर से बाहर निकलने में भी शंका पैदा कर लेता है।

जो व्यक्ति जो कुछ बनने की इच्छा अपने हृदय में सँजोए रहता है; बाहरी परिस्थितियाँ उसके चारों ओर उसी प्रकार की इकट्ठी होने लगती हैं। जिसने अपना उद्देश्य महान बनाया, वह महान बनेगा। जिसने उद्देश्य में शंका, अविश्वास किया उसके पैर लड़खड़ाएँगे, उसे सफलता मिलना असंभव है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1976, पृष्ठ-38

हम स्वामी नहीं, सेवक बनकर रहें

यह संसार ईश्वर का है। मालिकी उसी की है। हमें नियत कर्म करने के लिए माली की तरह नियुक्त किया गया है। उपलब्ध शरीर का, परिवार का, वैभव का, वास्तविक स्वामी परमेश्वर है। हम उसकी सुरक्षा एवं सुव्यवस्था भर के लिए उत्तरदायी हैं, ऐसा सोचने से जी हलका रहेगा और अनावश्यक चिंताओं, आशंकाओं की आग में न जलना पड़ेगा। खिलाड़ी की तरह, नाटक के पात्रों की तरह भूमिका पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी के साथ निभाई जाए। हम सामर्थ्य भर अपना कर्त्तव्यपालन सही रीति से कर रहे हैं। इतने भर से संतोष किया जा सकता है और हर घड़ी हर स्थिति में प्रसन्न रहा जा सकता है।

हम न भूतकाल की शिकायत करें और न भविष्य के लिए आतुरता व्यक्त करें। वर्तमान का पूरी जागरूकता एवं तत्परता के साथ सदुपयोग करें। न हानि में सिर पटकें और न लाभ में हर्षोन्मत्त बनें। विवेकवान, धैर्यवान, कर्मयोगी की भूमिका अपनाएँ। मालिक बनने का प्रयत्न न करें। जो बोझ कंधे पर है, उसे जिम्मेदारी के साथ निभाएँ और प्रसन्न रहें। कर्त्तव्य ही अपने हाथ में है—परिणाम तो परिस्थितियों पर निर्भर है। जो अपने हाथ की बात नहीं है उसके लिए विक्षुब्ध क्यों हों? ऐसा संतुलन बनाए रहने वाला व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी बन सकता है और हर परिस्थिति में प्रमुदित रह सकता है। नैतिक जीवन जी सकना और महान कार्य कर सकना कर्मयोगी के लिए संभव हो सकता है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1977, पृष्ठ-61, 62

बलों में बल—आत्मबल

परिस्थितियों का अपना कोई अस्तित्व नहीं, वे मन:स्थिति के अनुरूप बनती हैं। अप्रत्याशित कोई प्रतिकूलता सामने आ खड़ी हो तो भी वह देर तक ठहरती नहीं। रोग-कीटाणु अशुद्ध रक्त में ही अपना अड्डा जमा पाते हैं। शुद्ध रक्त तो उन्हें बात ही बात में खदेड़कर बाहर कर देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिकूल परिस्थितियाँ, मन:स्थिति के वृक्ष पर ही अमरबेल की तरह छाई और फलती-फूलती रहती हैं। महामानवों की जीवन गाथाओं पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि उनमें से कोई भी जन्मजात एवं परंपरागत अनुकूलता लेकर नहीं जन्मा। हर एक को अपना रास्ता आप बनाना पड़ा। लोगों ने उनको कंधे पर नहीं चढ़ाया, वरन वे स्वयं ही अपनी विशेषताओं के आधार पर हर किसी की आँखों के तारे बने और हृदयों में जा विराजे। अनुकूलताएँ बरसी नहीं वरन अपने हाथों उनने उन्हें गढ़ा। चलना अपने ही पैरों पड़ता है, दूसरों के कंधों पर लदकर चल सकना किसके लिए कब तक संभव हो सकता है?

आत्मबल की आवश्यकता हर क्षेत्र में है। आत्मबल उसकी प्रेरणा से उसी तरह उभरते हैं जैसे सौरमंडल के ग्रह-उपग्रह सूर्य की आभा से प्रकाशवान दीखते हैं। जीवन को जीवितों की तरह जीना हो, उसमें कुछ रस और आनंद लेना हो तो आत्मबल संपादित करने की उपेक्षा की नहीं जा सकती। बलिष्ठता की अनुगामिनी ही संपन्नता है। अस्तु, बलों में परमबल आत्मबल के उपार्जन को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए। हम 'वर्चस्' की उपासना करें—आत्मबल संपादित करने में जुट जाएँ, इसी में दूरदर्शिता है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1977, पृष्ठ-14

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वयं के लिए उपयोगी बनें, दूसरों के लिए भी

पेट-प्रजनन की पूर्ति ही मानव जीवन का लक्ष्य नहीं है। इतना तो कृमि-कीटक भी कुशलतापूर्वक कर लेते हैं। अंतराल की गहराई में घुसा जाए, परिष्कृत दृष्टिकोण के बरमे से उसे खोदा जाए तो पता चलेगा कि इसी भूमि में वह सब कुछ विद्यमान है जिसे जीवन संपदा का सारतत्त्व कहा जा सकता है और विश्व-वसुधा का सारभूत वैभव।

हम अपनी उपयोगिता बढ़ाएँ। अपने लिए उपयोगी बनें, साथ ही परमात्मा एवं विश्व की समष्टि आत्मा के लिए भी। अनुपयोगी किसी के लिए भी न रहें। जो अपने लिए उपयोगी होता है, वह दूसरों के लिए भी उपयोगी हो सकता है। दूसरों की सेवा, सहायता करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने लिए अपने आप को उपयोगी बनाएँ।

उपयोगिता को घटाने में सबसे बड़ी बाधा अपनी ही बुरी आदतों की है जो सोचने और करने के दोनों ही यंत्रों पर अपना आधिपत्य जमाए बैठी है। इन मलिनताओं को धो डालें तो अंतर की पवित्रता स्वत: निखर पड़ेगी। दूसरों का तिरस्कार करके अपना मान बढ़ाना, उस मृगतृष्णा की तरह हैं जो देखने में सच मालूम पड़ते हुए वस्तुत: नितांत मिथ्या होती है। भलाई और बुराई का ऐसा वर्गीकरण नहीं हो सकता जो अपने लिए एक तरह का और दूसरों के लिए दूसरी तरह का परिणाम उत्पन्न करे। आग औरों के लिए गरम और अपने लिए ठंढी सिद्ध हो ऐसा हो ही नहीं सकता। दूसरों के लिए अनुपयोगी सिद्ध होने वाला व्यक्ति अपने लिए भी घाटे का ही निमित्त

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनता है। अपने लिए लाभदायक केवल वे ही व्यक्ति सिद्ध होते हैं, जिन्हें दूसरों के लिए लाभदायक अनुभव किया जा सके। औरों को सुखी बनाए बिना कोई सुखी नहीं हो सकता।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1978, पृष्ठ-37

प्रसन्न रहेंगे तो सफलता और अनुकूलता मिलेगी

जो जीवित हैं वे चलते हैं—यह सोचने की अपेक्षा यह समझा जाना चाहिए कि जो चलता है सो जीवित रहता है। सफलताओं और अनुकूलताओं में प्रसन्नता होती है। इस मान्यता में परिवर्तन किया जाना चाहिए कि जो प्रसन्न रहता है, उसके समीप अनुकूलताएँ और सफलताएँ खिंचती चली आती हैं। हम वर्तमान को प्रसन्नता से भरें, इसलिए आवश्यक है जो सामने है उसका महत्त्व समझें और उपयोग ढूँढ़ें। बचपन का—यौवन का अपने ढंग का आनंद था। वृद्धावस्था में भी स्थिति के अनुरूप कितने ही ऐसे आधार हैं, जिनके लिए गर्व किया जा सकता है। रस लिया जा सकता है और अधिक अच्छा पाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। गुजारे की और परिवार की जिम्मेदारियों से निवृत्ति मिली तो खाली होने और सूनेपन की नीरसता क्यों अपनाई जाए? लोकमंगल का इतना विशाल क्षेत्र सामने पड़ा है कि उसमें व्यस्त रहकर कमाने की जिम्मेदारी पूरी करने से भी अधिक सक्रिय रहा जा सकता है। शरीर कम काम करता हो, इंद्रियाँ साथ न देती हों तो चिंता की कोई बात नहीं। परिपक्व व्यक्तित्व और परिष्कृत अनुभव की संपदा का उपयोग करके घटने वाली शरीर क्षमता की भरपाई आसानी से हो सकती है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1978, पृष्ठ-46

अपना मूल्यांकन स्वयं करें

इस संसार का यह विचित्र नियम है कि बाजार में वस्तुओं की कीमत दूसरे लोग निर्धारित करते हैं, पर मनुष्य अपना मूल्यांकन स्वयं करता है और वह अपना जितना मूल्यांकन करता है, उससे अधिक सफलता उसे कदापि नहीं मिल पाती है। प्रत्येक व्यक्ति को जो जीवन में सफलताएँ प्राप्त करना चाहते हैं तथा आगे बढ़ने की आकांक्षा रखते हैं उन्हें यह मानकर चलना चाहिए कि परमात्मा ने उसे मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर भेजते समय उसकी चेतना में समस्त संभावनाओं के बीज डाल दिए हैं। इतना ही नहीं उसके अस्तित्व में सभी संभावनाओं के बीज डालने के साथ-साथ उनके अंकुरित होने की क्षमताएँ भी भर दी हैं। लेकिन प्राय: देखने में यह आता है कि अधिकांश व्यक्ति अपने प्रति ही अविश्वास से भरे होते हैं तथा उन क्षमताओं और संभावनाओं के बीजों को विकसित तथा अंकुरित करने की चेष्टा तो दूर रही उनके संबंध में विचार तक नहीं करना चाहते।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1981, पृष्ठ-13

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितना चाहोगे, उतना मिलेगा

इसमें कोई संदेह नहीं कि कोई भी व्यक्ति केवल उतनी ही सफलताएँ प्राप्त कर सकता है या उतनी ही उपलब्धियाँ अर्जित कर सकता है, जितनी कि वह चाहता है। चाहने को तो लोग न जाने क्या-क्या चाहते, न जाने क्या-क्या आकांक्षाएँ और इच्छाएँ रखते हैं, पर वैसा चाहना और बात है तथा उसका फलित होना और बात। लोग चाहते हैं कि उनके पास खूब संपत्ति जमा हो, पर सौ में से दस प्रतिशत भी सच्चे मन से यह नहीं चाहते कि वे संपन्न बनें। उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि वे संपन्न भी बन सकते हैं। पानी में डूबते समय जैसे तीव्र आकांक्षा होती है कि बच जाया जाए और डूबने वाला व्यक्ति हाथ-पैर मारने लगता है, अपने शरीर के दबाव और पानी की उछाल शक्ति में संतुलन बिठाने के लिए हड़बड़ाहट में ही सही प्रयत्न करने लगता है और फलस्वरूप तैरने लगता है। यही तीव्र आकांक्षा का परिचय है। कोई व्यक्ति दरिद्रता से छुटकारा पाना चाहता है तो उसे दरिद्रता में वैसी ही घुटन अनुभव करना चाहिए जैसी कि डूबने वाला व्यक्ति पानी में डूबते समय करता है, पर वैसी घुटन कहाँ अनुभव होती है?

आत्मविश्वासी भाग्य को अपने पुरुषार्थ का दास समझता है तथा उसे अपना इच्छानुवर्ती बना लेता है। इसके लिए आवश्यकता केवल इस बात की है कि उचित मूल्यांकन किया जाए और आत्मविश्वास को सुदृढ़ बनाया जाए। यदि अपना उचित मूल्यांकन किया जाए तो वह निष्कर्ष अपनी प्रतिभा का स्पर्श पाते ही जीवंत हो उठता है तथा व्यक्ति बड़ी से बड़ी कठिनाइयों को लाँघ सकता है। नेपोलियन को अपने विजय अभियान में जब आल्पस पर्वत पार करने का अवसर आया तो लोगों ने उसे बहुत समझाया कि आज तक आल्पस पर्वत कोई भी पार नहीं कर सका है और इस तरह की चेष्टा करने वाले को मौत के मुँह में जाना पड़ा है। उन व्यक्तियों को नेपोलियन ने यही उत्तर दिया था कि मुझे मौत के मुँह में जाना मंजूर है, पर आल्पस से हार मानना नहीं और इस निश्चय के सामने आल्पस को झुकना ही पड़ा।

स्मरण रखा जाना चाहिए और विश्वास किया जाना चाहिए कि इस संसार में मनुष्य के लिए न तो कोई वस्तु या उपलब्धि अलभ्य है तथा न ही कोई व्यक्ति किसी प्रकार अयोग्य है। अयोग्यता एक ही है और वह है अपने आप के प्रति अविश्वास। यदि अपना उचित मूल्यांकन किया जाए तो कोई भी बाधा मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचने से नहीं रोक सकती।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1981, पृष्ठ-14

पात्रता की शर्त पर अनुदान

देवताओं को पूजा बटोरने और वरदान बाँटते रहने वाला अंधेर नगरी का बेबूझ राजा नहीं मान बैठना चाहिए और न उनसे पात्रता का अभाव रहने पर भी मनमाने अनुग्रह पाने की आशा ही करनी चाहिए। दैवी शक्तियाँ देती तो बहुत कुछ हैं पर देने से पूर्व हजार बार यह ठोंकती-बजाती

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं कि माँगने वाला आखिर किस स्तर का व्यक्ति है? अनुदानों का सदुपयोग करने की उसकी प्रामाणिकता क्या है? जो माँगा जा रहा है वह किस प्रयोजन के लिए है? इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर मिलने पर ही देवता किसी को अपना अनुग्रह अनुदान देते देखे गए हैं।

पेड़ों की आकर्षण शक्ति आकाश में उड़ने वाले बादलों को धरती पर उतरने और बरसने के लिए विवश करती है। साधक की चरित्रनिष्ठा और समाजनिष्ठा का समन्वय ही ऐसी आकर्षण शक्ति का उद्‌भव करता है जो दैवी अनुदानों को साधक पर बरसाने के लिए विवश कर सके। अस्तु, मनुहार-उपहार के लोभ-लालच में दैवी शक्तियों को बहेलियों की तरह फँसाने का विचार छोड़कर अपना प्रयास यह करना चाहिए कि अपनी पात्रता किस प्रकार इस स्तर तक विकसित की जाए कि दैवी शक्तियों को बादलों की तरह बरसने के लिए विवश होना पड़े। बरतन जितने बड़े होते हैं उतना ही पानी उनमें भरा जा सकता है। विपुल जलाशय भी बरतन की परिधि से अधिक पानी दे सकने में असमर्थ रहते हैं। दैवी शक्तियाँ भी ऐसे ही अनुबंधों में बँधी हुई हैं।

वरदान माँगने की अपेक्षा अपनी स्थिति ऐसी बनानी चाहिए कि दूसरों को वरदान दे सकना अपने लिए भी संभव हो सके। वस्तुतः आशीर्वाद देना उदारमना संतों का ही काम है। पिछड़ों को उठाने, अशक्तों की सहायता करने और विकासोन्मुखों को छात्रवृत्ति देने जैसे उदार प्रयोजन संतों को ही पूरे करने पड़ते हैं। भगवान तो एक व्यवस्था मात्र है। जो आग या बिजली की तरह मात्र सदुपयोग की शर्त पर ही अनुग्रह करता है। दुरुपयोग की कुमार्गगामिता का दंड देने में ईश्वर भी नहीं चूकता। इस संदर्भ में उसे भक्त-अभक्त में कोई अंतर करते नहीं पाया जाता। नौकरी पाने के लिए अरजी देनी पड़ती है और मंजूरी भी उसी पर मिलती है। पर यह ध्यान देने की बात है कि इस बीच आवेदनकर्त्ता को परीक्षा एवं प्रतियोगिता से होकर भी गुजरना पड़ता है, ईश्वर प्रार्थना से प्रभावित होकर तुरंत अनुकंपा नहीं करने लगता वरन यह भी देखता है कि प्रार्थना करने वाला अभीष्ट पात्रता एवं प्रामाणिकता अर्जित किए हुए है या नहीं?

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1982, पृष्ठ-04, 05

सफलता का मूल आधार—आत्मविश्वास

आत्मविश्वास, सतत परिश्रम एवं दृढ़ निश्चय के समक्ष कुछ भी असंभव नहीं है। इन्हीं गुणों के प्रकाश में ऐतिहासिक कार्य संसार में संपन्न हुए हैं। विद्वानों, महापुरुषों, धर्मप्रवर्त्तकों, योद्धाओं, सृजेताओं, शोधकर्त्ताओं के ज्वलंत उदाहरण इस बात के साक्षी हैं कि उन्होंने आत्मविश्वास के आधार पर क्या नहीं कर दिखाया?

छोटी-छोटी बैटरियों की शक्ति शीघ्र ही समाप्त हो जाती है किंतु जिन बत्तियों का संबंध पावर हाउस से होता है, वह निरंतर जलती रहती हैं। आत्मविश्वास वह संपर्क माध्यम है जिसके सहारे अटूट शक्ति के भंडार परमात्मा के साथ संबंध स्थापित किया जा सकता है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत करे। स्वार्थ से दूर रहकर अपनी दृष्टि

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का विकास करे। सद्गुणों को धारण कर इसी जीवन में गौरवान्वित एवं सम्मानास्पद बना जा सकता है।

श्रेष्ठ मार्ग पर नियोजित व्यक्तियों की शक्तियाँ श्रेयस्कर परिणाम उपस्थित करती हैं, जिसे लोग भाग्य चमत्कार समझते हैं। वास्तव में वे व्यक्ति की दृढ़ निष्ठा एवं आत्मविश्वास का परिणाम ही होती हैं। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकता है। यदि वह अपनी प्रसुप्त शक्तियों को प्रयत्नपूर्वक जगा सके। जिस दिन मनुष्य इस तथ्य को समझ लेगा, वह अनंत शक्ति का भंडार बन जाएगा। सुख एवं सफलता का मूल आधार एक ही है—उसका आत्मविश्वास।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1984, पृष्ठ-52

मनुष्य देवत्व की ओर बढ़े

आमतौर से जन-प्रवाह लोभ-मोह को सर्वस्व मानकर उसी में भटकता रहता है। उनका अनुकरण करने तथा परामर्श मानने से उन्हीं की तरह कीचड़ में धँसना पड़ेगा। अपना रास्ता आप बनाने तथा श्रेष्ठ मार्ग पर बढ़ चलने वालों को इतना साहस तो करना ही चाहिए कि लोग क्या कहते हैं तथा क्या करते हैं, उससे प्रभावित न हो। पतन के प्रवाह को चीरते हुए आदर्शवादिता की दिशा में चलने का साहस तथा अवरोधों और विरोधों को सहकर ही ईश्वर का पल्ला पकड़ा जा सकता है। एक साथ शैतान एवं भगवान को प्रसन्न नहीं किया जा सकता।

मनुष्य जीवन की सार्थकता देवत्व की ओर बढ़ने में है। नर से नारायण, पुरुष से पुरुषोत्तम, तुच्छ से महान, आत्मा से परमात्मा बनने में है। यदि अब तक उलटी दिशा में चला गया तो दूरदर्शिता इसमें है कि आदर्शवादी पराक्रम द्वारा अपनी दिशा को बदला जाए। आत्मसंतोष, आत्मकल्याण से लेकर विश्वमानव के प्रति अपने महान कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए कटिबद्ध होने से ही महानता का, देवत्व का पूर्णता की प्राप्ति का लाभ मिल सकता है।

—अखण्ड ज्योति मई 1984, पृष्ठ-08

औसत स्तर का जीवन जिएँ

हमें अतिवादी नहीं होना चाहिए। मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। बहुत ऊँची छलांग नहीं लगानी चाहिए। सूर्य को पकड़ना और चंद्रमा को छूने जैसी महत्त्वाकांक्षाएँ नहीं सँजोनी चाहिए। औसत नागरिक स्तर का जीवन शांतिपूर्वक जिया जा सके, इसी में संतोष करना चाहिए। सादा जीवन उच्च विचार की नीति निर्धारण को पर्याप्त मानना चाहिए। अतिवादी हारते, चिढ़ते और खीझते देखे गए हैं। आवश्यक नहीं है कि सामान्य जनों से बहुत ऊँची परिस्थितियाँ और सफलताएँ हमें मिलकर ही रहें। सबको पीछे छोड़कर बड़प्पन को हमीं समेटें, ऐसा होता भी कभी-कभी एवं कदाचित ही है। जिन्हें तृष्णाएँ बहुत सताती हैं, वे आमतौर से अनीति का मार्ग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनाते हैं। इतने पर भी यह आवश्यक नहीं कि हर महत्त्वाकांक्षी अपनी इच्छित ऐषणा को पूरी कर ही सके। बेतहाशा दौड़ने वाले प्राय: पैरों में ठोकर खाते और औंधे मुँह गिरते देखे गए हैं। इसलिए प्रसन्नचित्त रहने और रहने देने के लिए इतना ही पर्याप्त है कि संतोषपूर्वक जिया जाए। अमीरी बटोरने और ठाठ-बाट से जीने की अपेक्षा यह कहीं सरल और सुखद है कि अपने को आदर्शवादी बनाया जाए और भावना क्षेत्र में उत्कृष्टता को सँजोया जाए। जिनने अपना दृष्टिकोण परिष्कृत कर लिया है, वे सज्जनों की तरह सोचते और परमार्थ-पथ पर चलते हैं।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1987, पृष्ठ-24

हम प्राणवान बनें

हम सब चिंतन, चरित्र, व्यवहार को प्रखर प्रामाणिक बनाएँ। उस साँचे के सदृश सिद्ध हों जिसके संपर्क से महत्त्वपूर्ण पुरजे, सिक्के ढलते रह सकें। जलता दीपक ही दूसरे दीपक को जलाता है। व्यक्तित्व संपन्नों की ही प्रतिभा निखरी है। उन्हीं का प्रभाव दूसरे ग्रहण करते हैं। जिसे कुछ महत्त्वपूर्ण करना या कराना है उसे प्रामाणिकता पर आधारित प्रतिभा अर्जित करनी ही पड़ती है। हमको वही प्रधान शक्ति अर्जित करने को प्रमुखता देनी है।

प्रतिभा चार आधारों पर निखरती है (1) समझदारी (2) ईमानदारी (3) जिम्मेदारी (4) बहादुरी। इन्हें स्वभाव का अंग बनाने के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए। अपनी आदतों में श्रमशीलता, शिष्टता, मितव्ययता, सुव्यवस्था, सहकारिता को अधिकाधिक मात्रा में समाविष्ट करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। व्यक्तित्व इसी आधार पर निखरता है। प्रभावी, प्रतापी, मनस्वी एवं समर्थ-समुन्नत बनने के यही प्रमुख आधार हैं।

आत्मपरिष्कार की तरह ही लोकमंगल को भी अपनी जीवनचर्या का महत्त्वपूर्ण अंग, अविच्छिन्न अंग बनाना चाहिए। सद्ज्ञान संवर्द्धन की, लोक-कल्याण की प्रधान आवश्यकता अनुभव करनी चाहिए। इसके लिए नित्य अपने समय में से कुछ घंटे नियमित रूप से निकालना चाहिए। अपने उपार्जन का एक भाग इसी निमित्त अंशदान के रूप में नियोजित करते रहना चाहिए। इन्हीं दो साधनों के सहारे वह पुण्य-परमार्थ बन पड़ता है, जिसमें उच्चस्तरीय स्वार्थ एवं अजस्र लाभ का समावेश है।

औसत भारतीय स्तर का निर्वाह स्वीकारा जाए। परिवार छोटा रखा जाए। उसके सदस्यों को शिक्षित, स्वावलंबी, सुसंस्कारी बनाने का प्रयत्न भर पर्याप्त समझा जाए। संपत्ति संग्रह के लोभ, परिवार के लिए संपत्ति छोड़ मरने के मोह से मुँह मोड़ा जाए। अहंकार प्रेरित उद्धत प्रदर्शनों में मन न डुलाया जाए। सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांतों के ढाँचे में अपनी जीवनचर्या को ढाला जाए। स्वयं विनम्र रहा जाए और दूसरों को सम्मान दिया जाए।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1988, पृष्ठ-59, 60

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूल्यांकन का आधार—आंतरिक गुण

बाहरी सज-धज को जो मान-प्रतिष्ठा का आधार मानते हैं, वे वस्तुतः भ्रम में रहते हैं। विवेकवान पुरुष बाहरी वेश-विन्यास और वस्त्राभूषणों के आधार पर लोगों का मूल्यांकन नहीं करते, वरन वे इसके लिए आंतरिक गुणों को मापदंड मानते हैं। मनुष्य की शिष्टता और शालीनता उसकी सादगी में झाँकती है, न कि बाह्य दिखावे में। सदाचरण और सादगी का परस्पर धनिष्ठ संबंध होता है। जहाँ सादगी होगी, वहीं सत्कर्म होंगे। जहाँ सत्कर्म होंगे, वहाँ सुख और सुव्यवस्था भी होगी। मनुष्य के लिए यह स्थिति अभीष्ट भी है। अतः आडंबर की तुच्छ प्रवृत्ति में न पड़कर हर एक को सीधे-साधे ढंग से रहने में ही अपनी शान और बड़प्पन समझना चाहिए।

अपनी वास्तविक स्थिति में अंत तक बिना दिखावे के साथ बने रहना मनुष्य का नैतिक बल भी प्रदर्शित करता है। संभव है कि आज की परिस्थिति में मन में इसके लिए कुछ झिझक और संकोच उत्पन्न हो, किंतु एकसी स्थिति में सुखी और संतुष्ट जीवन बिताने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ मार्ग है कि अपनी स्थिति और स्तर का अतिक्रमण न किया जाए। गरीब होना पाप नहीं है, किंतु जब येन-केन-प्रकारेण गरीबी छिपाकर अमीरी का आवरण ओढ़ने का प्रयत्न किया जाता है, तो गरीबी तो ज्यों की त्यों बनी रहती है, अन्य अनेक मुसीबतें उठ खड़ी होती हैं। निर्धनता का उपहास कुछ दिन हो सकता है, मगर झूठा प्रदर्शन तो संपूर्ण जीवन को प्रभावित करता एवं वास्तविक स्थिति को और भी दयनीय बना देता है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1989, पृष्ठ-26

अंतर्मुखी होकर कमियाँ ढूँढ़ें

अध्यात्म प्रयोजनों में लोग अकसर बाहरी क्षेत्र में ढूँढ़-खोज करते हैं। ईश्वर का अनुग्रह पाना है, देवताओं से वरदान लेना है, समर्थ गुरु ढूँढ़ना है, किसी साधन संपन्न का सहयोग लेना है तो उसी की खुशामद की जाती है और काम नहीं बनता तो उन्हीं की निष्ठुरता बताई जाती है। अंतर्मुखी होकर यह नहीं देखा जाता कि इन सब उपलब्धियों के लिए जिस पात्रता की आवश्यकता थी, वह अपने भीतर है या नहीं है। यदि नहीं है तो फिर उसे ठीक किया जाए। यदि ईश्वर निष्ठुर होता, देवता स्वार्थी होते तो उनका व्यवहार सभी के साथ वैसा होना चाहिए था। जब दूसरों पर अनुकंपा होती है तो अपने उच्चस्तर के अनुरूप उन्हें हमारे ऊपर भी कृपा करनी चाहिए थी। यदि उनके व्यवहार में अंतर है तो देखा जाना चाहिए कि अपने व्यक्तित्व में ही ऐसे दोष-दुर्गुण तो नहीं घुसे हुए हैं, जो उन्हें पीछे हटने और असहयोग करने के लिए बाधित करते हों। यह आत्मनिरीक्षण तभी हो सकता है जब व्यक्ति अंतर्मुखी हो।

ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ किन्हीं देवी-देवताओं के पास है और वे किसी पूजा-पाठ से प्रसन्न होकर उँड़ेलते रहते हैं, इस प्रकार का बहिर्मुखी दृष्टिकोण हमें भटकाता ही रहेगा। वास्तविकता से

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोसों दूर रखेगा। जब अपना दृष्टिकोण बदलकर परिस्थितियों के लिए कमियों को खोजना और उन्हें पूरा करना आरंभ किया जाएगा तो विकट दीखने वाली समस्या नितांत सरल हो जाएगी।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1989, पृष्ठ-52

मन की शक्ति प्रतिकूलताओं से लड़ने में समर्थ

मन की उद्विग्नता ऐसी है जो प्रत्यक्ष रोग न दीखते हुए भी मानसिक, शारीरिक रोगों के रूप में प्रकट होती है। मानसिक रुग्णता शरीर को अस्वस्थ बनाती है, चिंतन को लड़खड़ाती है, भय से विचारों को भर देती है और भविष्य को इस रूप में दिखाती है मानों वह अंधकार से भर गया हो। उस पर पराजय के घुटन भरे बादल छा गए हों। ऐसी स्थिति देर तक बनी रहने पर मानसतंत्र की कोमलता अस्त-व्यस्त हुए बिना नहीं रहती। अशुद्ध चिंतन उन्माद बनकर उभरता है। पर्यवेक्षकों का कहना है कि शरीररोगियों की तुलना में मनोरोगी बढ़ रहे हैं। आधी अस्वस्थता तो मानसिक विक्षेपों द्वारा उत्पन्न की हुई होती है और उसका कारण होता है कि परिस्थिति के साथ मन:स्थिति का तालमेल न बिठा पाना। यहाँ यह समझ रखने की बात है कि परिस्थितियाँ इच्छानुरूप बना सकने की अपेक्षा यह ही सरल है कि मन को परिस्थितियों की प्रतिकूलता सह सकने योग्य बनाया जाए और सहनशक्ति को बढ़ाया जाए।

यह सोचना सही नहीं है कि यदि प्रतिकूलताएँ बनी रहीं तो संतुलन कैसे रखा जा सकेगा? यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि परिस्थितियाँ दूसरों के हाथ हैं। ऐसे हाथों में जिन्हें हम कदाचित ही तोड़-मरोड़ सकें। इसकी अपेक्षा यह कहीं सरल है कि मन को चट्टान की तरह मजबूत बनाए रखा जाए और परिस्थितियों के बारे में सोचा जाए कि वह हवा के झोकों की तरह आने-जाने वाली लहरें मात्र हैं। हवा चट्टान को नहीं डिगा सकती फिर प्रतिकूलताओं में से कौन ऐसी हो सकती है जो मनुष्य का धैर्य और साहस तोड़ दे। टूटता मनुष्य भीतर से है। समझता और कहता भर यह है कि उसे परिस्थितियों ने तोड़ा, हैरानियों ने झकझोरा पर इस प्रकार की कथनी से काम कुछ नहीं बनता। हल किसी समस्या का नहीं होता, उलटा मनुष्य अपना विवेक खो बैठता है। चिंतन में निषेधात्मक तत्त्व भर लेता है और आरंभ में सनकी बनता है। सनकें ही व्यक्तित्व को विखंडित कर देती हैं और उसे विक्षिप्तता के कटघरे में बंद कर देती हैं। मस्तिष्क को हम स्वयं ही बिगाड़ते हैं। चाहें तो स्वयं ही बिगड़े को बना सकते हैं। यह अपनी संकल्प शक्ति के ऊपर निर्भर है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1989, पृष्ठ-54

विवेक को मान्यता दें, औचित्य को अपनाएँ

परमात्मा का सबसे बहुमूल्य उपहार मनुष्य जन्म प्राप्त करने के सौभाग्य के उपरांत दूसरा सौभाग्य एक ही है उसका सदुपयोग। यह कार्य मनुष्य की बुद्धिमत्ता पर छोड़ा गया है। वह प्रगति,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अवगति या स्थिरता में से कोई मार्ग चुन ले और उस चुनाव एवं प्रयास के कड़ुए-मीठे फल भोगे। हम सब इस चक्र पर घूम रहे हैं कि कृतत्व अपना किंतु उसका दोष या श्रेय दूसरों को देकर अपना मन बहलाने की आत्मप्रवंचना करते रहते हैं।

मनुष्य जन्म धारण करने के उपरांत स्वयं करने योग्य काम इतना ही रह जाता है कि अपने सौभाग्य से परिचित हो, सामर्थ्यों को पहचानें और आंतरिक दुर्बलताओं से लड़ पड़ें। गीता में अर्जुन को इसी महाभारत में लड़ने के लिए भगवान ने कहा था। विवेक को मान्यता दें, औचित्य को अपनाएँ और इसकी परवाह न करें कि दूसरे लोग क्या कहते और क्या करते हैं? मार्ग निर्धारण करने की बुद्धिमत्ता और लक्ष्य की दिशा में चल पड़ने की साहसिकता अपनाने के उपरांत आधी मंजिल पार हो जाती है। कुसंस्कारों से जूझने के लिए साधनाओं का उपक्रम और भटकाव की वेला में किसी समर्थ का मार्गदर्शन अभीष्ट है। ये दोनों ही कार्य सरल हैं, उतने नहीं जितने कि समझे जाते हैं।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1990, पृष्ठ-34

सिर्फ वर्तमान अपने हाथ में है

अपने आप के प्रति की गई भूल का प्रायश्चित यह है कि वैसा कुछ दोबारा न करने के लिए पक्का मन बना लिया जाए। यदि यह उलट-पलट न बन पड़े तो उस भूल की चर्चा करके अपना मन हलका किया जा सकता है। यदि किसी के साथ नेकी की गई है तो उसकी चर्चा करने पर अपना अहंकार प्रकट होता है और दूसरा अपना अपमान समझता है। ऐसी दशा में उसे भूल जाना ही उचित है। उदारता हर इनसान का फर्ज है। इसलिए किसी के साथ किए गए उदार व्यवहार को मात्र कर्त्तव्यपालन के और कुछ नहीं समझना चाहिए। बार-बार तो ऐसे ही प्रसंगों का जिक्र किया जा सकता है, जिनमें दूसरों ने अपने साथ कोई असाधारण भलाई की हो।

जिनसे मात्र घटनाओं का ही स्मरण हो, उन्हें भूलने का ही प्रयत्न करना चाहिए। स्वप्नों को याद करते रहना निरर्थक है। उनसे किन्हीं भावनाओं का उत्तेजन भर हो सकता है। समय बेकार जाता है। इसलिए पिछले दिन बन पड़ी निरर्थक घटनाओं को स्मरण करते रहना निरर्थक ही सिद्ध होता है।

वृद्ध व्यक्ति प्राय: पिछली घटनाओं को ही याद करते रहते हैं, क्योंकि वही उनकी संचित संपदा है। यद्यपि उनसे निरर्थक भावनाओं को उत्तेजित करने के अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं मिलता।

भविष्य की कल्पनाओं-भूतकाल की घटनाओं को याद रखना निरुद्देश्य है, निरर्थक है। अपने हाथ में केवल वर्तमान है। इसी का श्रेष्ठतम सदुपयोग करना बुद्धिमानी है। खाली मस्तिष्क जब कभी हो, तब भूत या भविष्य की कल्पनाएँ करते रहने की अपेक्षा यही अच्छा है कि वर्तमान के श्रेष्ठतम उपयोग की बात सोची जाए और संभव हो तो वैसा ही किया जाए। किसी ने सही

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा है कि बीता हुआ कल कैंसिल्ड चैक है, आने वाला कल प्रॉमिसरी नोट है किंतु वर्तमान तो पूरा नकद (रेडीकैश) है। प्रगति-पथ पर निश्चिंत हो बढ़ा जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1990, पृष्ठ-39

मनुष्य परमात्मा का वरिष्ठ राजकुमार

आप्तजनों ने सच ही कहा है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। उसकी एक मुट्ठी में स्वर्ग और दूसरी में नरक सँजोया हुआ है। उत्थान और पतन में से किसी का भी चयन कर लेना उसकी अपनी मरजी की बात है। खेद इस बात का है कि हित को अनहित और अनहित को हित समझकर वह किया जाने लगता है, जिसे उलटी दिशा में उलटे पैरों चलने का बौनापन ही कहा जा सकता है।

बुद्धिमत्ता यथार्थता समझने और दूरदर्शी विवेकशीलता से जुड़ी हुई होनी चाहिए। जहाँ वह वस्तुतः होगी, वहाँ सद्विचारों को अपनाया जाना, सदाचार पर आरूढ़ होने और सद्व्यवहार के रूप में सेवा साधना के पथ पर अग्रसर होने का प्रमाण मिलना चाहिए। धर्मधारणा का एक ही प्रमाण-परिचय है कि मनुष्य स्वयं को अपने प्रति कठोर और दूसरों के प्रति उदार बनाए। अपने को तपाए-गलाए और देवमानवों के अनुरूप दृष्टिकोण एवं क्रिया-कलाप का उपक्रम बनाए। यदि वैसा कुछ न बन पड़े, तो समझना चाहिए कि लोभ, मोह के भवबंधनों की हथकड़ी-बेड़ी जानबूझकर पहन ली गई है।

परमेश्वर का वरिष्ठ राजकुमार अपने पिता के आदर्शों, अनुशासनों का निर्वाह करते हुए दीख पड़ना चाहिए। उसे सूर्य, चंद्र की तरह असंख्यों को प्रकाश-प्रेरणा देते रहने में सतत संलग्न रहना चाहिए। उसकी आभा और ऊर्जा से सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने में योगदान मिलना चाहिए। इसी भावना, मान्यता, विचारणा और क्रियापद्धति अपनाने में उसका आत्मगौरव है। उसकी ओर से मुँह मोड़ने पर तो यही कहा जाएगा कि सिंहशावक ने भेड़ों के झुंड को अपना सदस्य मान लिया है और उन्हीं की तरह मिमियाना सीख लिया है। जब आत्मस्वरूप का बोध हो और दिशाधारा में कायाकल्प जैसा परिवर्तन प्रस्तुत हो, तभी समझना चाहिए कि मनुष्य को बुद्धिमान समझे जाने की बात अपने सही स्वरूप में उभर रही है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1990, पृष्ठ-02

शहीदों के साथ विश्वासघात न हो

राजनीतिक स्वाधीनता के लिए आत्माहुति देने वाले पिछली पीढ़ी के शहीद अपनी जलाई हुई मशाल हमारे हाथों में थमाकर गए हैं। जिनने अपने प्राण, परिवार, शरीर, धन आदि का मोह छोड़कर भारत माता को पराधीनता के पाश से मुक्त करने के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया, उनकी आत्माएँ भारतीय राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आशा लेकर इस संसार से विदा हुईं हैं। उन्हें विश्वास था कि अगली पीढ़ी हमारे छोड़े हुए काम को पूरा करेगी। नैतिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति और सामाजिक क्रांति की अभी तीन मंजिलें पार करनी है। राजनीतिक क्रांति की अभी एक ही मंजिल तो पार हुई है। तीन चौथाई काम करना बाकी पड़ा है। यदि वैयक्तिक स्वार्थपरता तक सीमित रहकर हम उन सार्वजनिक उत्तरदायित्वों को उठाने से इनकार करेंगे, बहाने बनाएँगे तो निश्चय ही यह उन स्वर्गीय शहीदों के प्रति विश्वासघात होगा। इतिहासकार हमारे इस ओछेपन को सहन न करेंगे। भावी पीढ़ियाँ इस अकर्मण्यता को घृणा भरी दृष्टि से देखती रहेंगी।

—अखण्ड ज्योति जून 1965, पृष्ठ-46, 47

परिवार निर्माण

परिवार में प्रेम की साधना प्रारंभ करें

घर के जिन लोगों की मनोभूमि में जो त्रुटि देखें, वह दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहें। त्याग-वृत्ति से उन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न करें, पर कैंची से काट-छाँट कर इन पेड़ों को सुरम्य बनाने का प्रयत्न करने में भी न चूकें, अन्यथा यदि उनकी कुभावनाओं को सिंचन मिलता रहा, तो वे एक दिन बड़े विकृत और कँटीले झाड़ बन सकते हैं। प्रेम के दो अंगों को पूरी तरह हृदयंगम कीजिए—त्याग और सेवा, दान और सुधार। खेती को पानी की जरूरत है, पर नराई की भी कम आवश्यकता नहीं है। दोनों काम एकदूसरे से कुछ विपरीत जान पड़ते हैं, सहायता और सुधार का एक साथ मेल मिलता नहीं दीखता, यह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत होता है, इसीलिए तो प्रेम करना तलवार की धार पर चलना कहा गया है। प्रेमी को तलवार की धार पर चलना पड़ता है।

नट अपने घर के आँगन में कला खेलना सीखता है। आप अपने परिवार में प्रेम की साधना आरंभ कीजिए। शिक्षा और दीक्षा से अपने प्रियजनों के अंत:करणों में ज्ञान की ज्योति जलाइए, उन्हें सत्-असत् का विवेक प्राप्त करने में सहायता दीजिए, परंतु सावधान! यह कार्य गुरु की तरह आरंभ न किया जाए, अहंकार का इसमें एक कण भी न हो, वरन सेवा का दूध अंहकार की खटाई से फट जाएगा। अहंकारपूर्वक उपदेश करेंगे, तो तिरस्कार और उपहास ही हाथ लगेगा। इसलिए जिसमें जो सुधार करना हो वह विनयपूर्वक उसे सलाह देते हुए कहिए या करिए। ''धीरे-धीरे, बार-बार और सद्भावना से'' ढाक को चंदन और कौए को हंस बनाया जा सकता है। ''अपने लिए कम और दूसरे को ज्यादा'' इस नीति से भेड़ियों को कुत्ता और गधों को गाय बनाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति मई 1942, पृष्ठ-19

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार में सुसंस्कारों की प्रतिष्ठा करें

दुनिया में सारे झगड़ों की जड़ यह है कि हम देते कम हैं और माँगते ज्यादा हैं। हमें चाहिए कि दें बहुत और बदला बिलकुल न माँगे या बहुत कम पाने की आशा रखें। इस नीति को ग्रहण करते ही हमारे आस-पास के सारे झगड़े मिट जाते हैं। आत्मीयता की महान साधना में प्रवृत्त होने वाले को अपना दृष्टिकोण देने का, त्याग और सेवा का बनाना पड़ता है। आप प्रेम की उदार भावनाओं से अंत:करण को परिपूर्ण कर लीजिए और सगे-संबंधियों के साथ त्याग एवं सेवा का व्यवहार करना आरंभ कर दीजिए। कुछ ही क्षणों के उपरांत एक चमत्कार हुआ दिखाई देने लगेगा। अपना छोटा-सा परिवार जो शायद बहुत दिनों से कलह और क्लेशों का घर बना हुआ है, सुख-शांति का स्वर्ग दीखने लगेगा। अपनी आत्मीयता की प्रेम भावनाएँ परिवार के, आस-पास के लोगों से टकराकर अपने पास वापस लौट आती हैं और वे आनंद की भीनी-भीनी सुगंधित फुहार से छिड़ककर मुरझाए हुए अंत:करण को हरा कर देती हैं।

माली अपने ऊपर जिस बगीची की जिम्मेदारी लेता है, उसे हरा-भरा बनाने, सर-सब्ज रखने का जी-जान से प्रयत्न करना है। यही दृष्टिकोण एक सद्गृहस्थ का होना चाहिए। उसे अनुभव करना चाहिए कि परमात्मा ने इन थोड़े-से पेड़ों को सींचने, खाद देने, सँभालने और रखवाली करने का भार विशेष रूप से मुझे दिया है। यों तो समस्त समाज और समस्त जगत के प्रति हमारे बहुत से कर्त्तव्य हैं, परंतु इस छोटी बगीची का भार तो विशेषरूप से अपने ऊपर रखा हुआ है। अपने परिवार के हर एक व्यक्ति को स्वस्थ रखने, शिक्षित बनाने, सद्गुणी, सदाचारी और चतुर बनाने की पूरी-पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर समझते हुए, इसे ईश्वर की आज्ञा का पालन मानते हुए, अपना उत्तरदायित्व पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए। अपने परिवार के सदस्य भी ईश्वर की प्रतिमूर्तियाँ ही हैं, उनकी सेवा करना भी परमार्थ, पुण्य, लोकसेवा, ईश्वर पूजा से किसी प्रकार कम नहीं हैं।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1944, पृष्ठ-230, 231

परिवार में सरसता लाएँ

सहृदय बनिए। सहृदयता का अभिप्राय कोमलता, मधुरता, आर्द्रता है। सहृदय व्यक्ति सबके दु:ख में हिस्सा बँटाता है। प्रेम तथा उत्साह देकर नीरस हृदय सींचता है। जिसमें ये गुण नहीं है, उन्हें हृदय होते हुए 'हृदयहीन' कहा जाता है। हृदयहीन का अर्थ है 'जड़ पशुओं से भी नीचा'। नीरस गृहस्वामी पूरे परिवार को दुखी बना देता है।

जिसने अपनी विचारधारा और भावनाओं को शुष्क, नीरस और कठोर बना रखा है, उसने अपने आनंद, प्रफुल्लता और प्रसन्नता के भंडार को बंद कर रखा है। वह जीवन का सच्चा रस प्राप्त करने से वंचित रहेगा। आनंद-स्रोत सरसता की अनुभूतियों में है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा को आनंदमय निर्देश किया गया है, क्यों? क्योंकि वह कठोर और नियंत्रणप्रिय होते हुए भी सरस और प्रेममय है। श्रुति कहती है—"**रसो वै सः**" अर्थात परमात्मा रसमय है। परिवार में उसे प्रतिष्ठित करने के लिए वैसे ही लचीली, कोमल, स्निग्ध और सरस भावनाएँ विकसित करनी पड़ती हैं।

जब हम आपसे सरसता को विकसित करने का आग्रह करते हैं, तो हमारा अभिप्राय यह नहीं है कि आप नियंत्रण को भी टूट जाने दें। हम नियंत्रण के पक्षपाती हैं। नियंत्रण से आप नियमबद्ध, संयमी, अनुशासनबद्ध, आज्ञाकारी परिवार की उत्पत्ति करते हैं। परिवार के नियंत्रण में आप दृढ़ रहें, गलतियों पर डाटें, फटकारें, सजाएँ दें और पथभ्रष्ट को सन्मार्ग पर प्रतिष्ठित करें। परिवार की उन्नति के लिए आप कड़ा कदम उठा सकते हैं।

पर एक बात कदापि विस्मृत न कीजिए, आप अंततः हृदय को कोमल, द्रवित होने वाला, दयालु, प्रेमी और सरस ही रखिए। संसार में जो सरसता का, सौंदर्य का अपार भंडार भरा हुआ है उसे प्राप्त करना सीखिए। अपनी भावनाओं को जब आप कोमल बना लेते हैं, तो आपके चारों ओर आने वाले हृदयों में अमृत-सा झरता हुआ प्रतीत होता है। भोले-भाले, मीठी-मीठी बातें करते हुए बालक, प्रेम की प्रतिमाएँ—माता, भगिनी, पत्नी, अनुभव, ज्ञान और शुभ कामनाओं के प्रतीक वृद्धजन, ये सब ईश्वर की ऐसी आनंदमय विभूतियाँ है, जिन्हें देखकर परिवार में मनुष्य का हृदय कमल के पुष्प के समान खिल जाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1951, पृष्ठ-48

बेटियाँ इस देश की गौरव

हमारे धर्मग्रंथों और विज्ञजनों का यह कथन पूर्णतया सत्य है कि गृहस्थ जीवन का और इस दृष्टि से मनुष्य समाज का सुचारु रूप से संचालन, सद्गुणी पत्नियों पर ही आधारित होता है, इसलिए स्त्रियों को सुयोग्य गृहिणी का पद प्राप्त करने की सदैव चेष्टा करनी चाहिए। बालकों के निर्माण और इस दृष्टि से संपूर्ण राष्ट्र के निर्माण का उत्तरदायित्व स्त्रियों पर आता है। यह जिम्मेदारी सचमुच बहुत बड़ी है, इसका निर्वाह पूर्ण समझदारी के साथ ही किया जा सकता है।

आज संपूर्ण नारी जाति का कर्त्तव्य है कि निंदनीय वातावरण छोड़कर आगे बढ़ें और समाज-सुधार, नैतिक-उत्थान तथा धार्मिक- पुनर्जागरण का संदेश मानवता को दें। उन्हें इस ढंग से कार्य करना होगा कि पुरुषों को बल मिले, उनकी खोई हुई शक्तियाँ जागें। इसके लिए उन्हें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना होगा। अपने कार्यक्षेत्र का सफलतापूर्वक निर्वाह किए बिना विकास की गति को स्त्रियाँ प्रवाहमान नहीं रख सकतीं। उन्हें सारे उत्तरदायित्व समझदारी से निभाने पड़ेंगे।

यह शिक्षा हमारी बच्चियों को प्रारंभ से ही मिलनी चाहिए। सुशील, सुंदर आचरणयुक्त एवं मधुरभाषिणी स्त्रियाँ जहाँ भी जाती हैं, वहीं स्वर्ग उतर आता है। विपरीत परिस्थितियों, गरीबी और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभाव में भी विनम्र पत्नियाँ घरेलू वातावरण को खुशहाल तथा उल्लासमय बना सकती हैं। हमारी बेटियाँ सत्य, शिव और सुंदर गुणों को धारण करें तो हमारा देश पुनः वही प्राचीन गौरव प्राप्त कर सकता है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1965, पृष्ठ-42

सुखी परिवार के पंचशील

सत्यनिष्ठा, सद्गुणों के प्रति रुचि, श्रमशीलता और स्वच्छता, सफाई के चार बहुमूल्य हीरे परिवार को देने के पश्चात उन्हें अनुशासन में रहने का ढंग और सिखा दीजिए। परिवार में एक बच्चे से लेकर बूढ़े तक सबको अनुशासन का, नियमबद्धता का जीवन जीना चाहिए। ऐसा कोई भी कार्य उन्हें न करना चाहिए, जिससे परिवार की प्रतिष्ठा को धक्का लगता हो। शिष्टाचार, सद्भाव और परस्पर एकदूसरे की अवस्था के अनुसार सम्मान होना चाहिए। परिवार में अभिवादन करने और बड़ों की आज्ञा मानने की भी प्रथा अनिवार्य रूप से चलती रहनी चाहिए। यह सब अनुशासन के अंतर्गत आती है, इनका पालन भी कड़ाई के साथ ही होना चाहिए।

ये पाँच नियम ऐसे हैं, जिनसे परिवार के सदस्य उसी तरह व्यवस्थित और सबंद्ध बने रहते हैं जैसे कोई लकड़ियों का बोझ भली प्रकार बाँधकर सुविधापूर्वक कोसों तक लेता चला जाता है। इन नियमों में बँधे हुए परिवार विशृंखलित न होकर बहुत काल तक सुसंगठित बने रहते और सुख का जीवन जीते रहते हैं।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1965, पृष्ठ-42

परिवार को स्वर्ग बनाएँ

सद्गृहस्थ को चाहिए कि वह अपने परिवार को एक वाटिका तथा अपने को उसका उत्तरदायी माली समझे। जिस प्रकार एक माली अपने बाग को सींचता, उसमें खाद देता और एक-एक फूल-पत्ती की देख-भाल एवं साज-सँभाल करता हुआ इस बात का ध्यान रखता है कि उसके पौधों में कोई कीड़ा तो नहीं लग रहा है, उसके बाग में निरर्थक झाड़-झंखाड़ तो नहीं उगे आ रहे हैं और यदि वह इसके लक्षण देखता है तो तुरंत ही सावधान होकर उनको दूर करने के उपाय करता है। इसी प्रकार सद्गृहस्थ को चाहिए कि वह अपने परिवार का पालन करे, उसे भोजन-वस्त्र दे; शिक्षा-दीक्षा दिलवाए किंतु इ.. पर भी पूरा ध्यान रखे कि उसके परिवार का कोई व्यक्ति व्यसनी, स्वार्थी अथवा संकीर्ण तो नहीं हो रहा है, उसके घर में कलह-क्लेश तथा टूट-फूट के कारण तो नहीं उभर रहे हैं। यदि उसे ऐसे कोई संकेत मिलें तो तुरंत सुधार में तत्पर हो जाए। स्नेह, सख्ती, शासन-अनुशासन जिस उपाय से बने समाहित होती हुई विकृतियों को दूर करे! परिवार में पनपती हुई विकृतियों की उपेक्षा करना अथवा उन्हें दूर करने में प्रमाद करना,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार को नरक बनाने की असावधानी होगी। किंतु कोई भी सद्गृहस्थ अपने परिवार को सुख-सौरभपूर्ण हरी-भरी वाटिका का रूप देने में तभी सफल हो सकता है, जब वह अपना जीवन आदर्श बनाकर परिजनों के सम्मुख उदाहरण के रूप में रखे। सदाचारी सद्गृहस्थ का परिवार सुख-शांति का घर बन सकता है। आज ही से सदाचारी सद्गृहस्थ बन जाइए, कल ही आपका परिवार नरक कुंड से बदलकर स्वर्ग-सुख का आवास बन जाएगा।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1966, पृष्ठ-29

परिजनों का पोषण ही नहीं व्यक्तित्व भी निखारें

परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी आमतौर से समझी और निभाई जाती है। इसमें एक कड़ी प्रज्ञा-परिजनों को और भी जोड़नी चाहिए कि परिजनों के शरीरों को ही पोसाने, सँजाने, संपन्न एवं प्रसन्न बनाने तक ही अपनी जिम्मेदारी सीमित न रखी जाए वरन इस समूची व्यवस्था से भी कहीं अधिक भारी उत्तरदायित्व उनके व्यक्तित्व निखारने का समझा जाना चाहिए। यदि इस संबंध में उपेक्षा बरती गई तो समझना चाहिए कि व्यक्तित्व अनगढ़ कुसंस्कारी बने रहने पर संपन्नता, शिक्षा-बलिष्ठता मात्र से उनका भला न हो सकेगा। दुर्गुणी व्यक्ति उपलब्धियों का दुरुपयोग करते हैं। फलतः अपनी तथा साथियों की दुर्गति ही बनाते रहते हैं। वैभव आवश्यक तो है, पर स्मरण रखने योग्य तथ्य यह भी है कि शालीनता के अभाव में उससे दुष्प्रवृत्तियों का ही परिपोषण होता है और साँप को दूध पिलाने की तरह उलटा दुष्परिणाम ही उत्पन्न होता है। लाड़-चाव में जो अपने परिवार को दुर्गुणी बना लेते हैं उनका अविवेक भरा प्यार अत्याचार से भी भारी पड़ता है।

परिवार संस्था को सद्गुणों की प्रयोगशाला, पाठशाला, फेक्टरी, नर्सरी मानकर चला जाए और इसके लिए "एक आँख प्यार की दूसरी सुधार की" रखने वाली नीति अपनाई जाए तो आत्मीय जनों के उस छोटे समुदाय की सच्ची सेवा कहा जाएगा। इस दिशा में आरंभ से ही ध्यान रखा जा सके तो बहुत ही उत्तम अन्यथा गिनती भूल जाने पर उसे नये सिरे से गिनना चाहिए। देर से समझ आए तो भी उसे समझदारी ही कहा जाएगा। प्रज्ञा-परिजनों की दृष्टि अपने संबद्ध परिजनों को सुसंस्कारी बनाने की रहनी चाहिए। संपन्नता की कमी रह जाने पर भी सज्जनता के सहारे काम चल सकता है, किंतु सज्जनता रहित संपन्नता अंततः दुःखद दुष्परिणाम ही प्रस्तुत करती है।

—अखण्ड ज्योति जून 1982, पृष्ठ-29

परिवार को सुसंस्कारी बनाएँ

प्रज्ञा-परिजनों को अपने घर-परिवार में पंचशील के प्रति ऐसा सम्मानास्पद वातावरण बनाना चाहिए जैसा कि धार्मिक लोग पाँच देवताओं के प्रति अपनाते और संसारी लोग पाँच रत्नों के रूप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में धन, लक्ष्मी को पूजते हैं। सभी बलिष्ठता, सुंदरता, विद्वत्ता, ख्याति, संपन्नता चाहते हैं। यदि आकांक्षाओं में शालीनता के पक्षधर पंचशीलों का भी समावेश किया जा सके तो समझना चाहिए कि सुरुचि जागी और पाने योग्य उपलब्धियों की महत्ता समझाने वाली विवेक-बुद्धि उभरी। यह जागरण ऐसा ही है जैसा कि रात्रि को मृतक, मूर्च्छितों, जैसी घोर निद्रा का परित्याग कर लोग प्रभातकाल में जगते, निवृत्त होते और श्रेयष्कर क्रियाशीलता में संलग्न होते हैं।

घर से आलस्य-प्रमाद को विदा करना चाहिए और वातावरण ऐसा बनाना चाहिए कि हर सदस्य को हर समय उपयोगी कार्यों में व्यस्त रहने का अवसर मिले। निठल्ले न स्वयं बैठें और न आत्मीय जनों को बैठने दें। विश्राम की भी आवश्यकता है किंतु आलस्य-प्रमाद को विश्राम या बड़प्पन का चिन्ह नहीं माना जाना चाहिए। जीवन का स्वरूप है—समय। समय का सदुपयोग श्रम-पराक्रम के साथ ही किया जा सकता है। घर में ऐसे क्रिया-कलापों का प्रचलन करना चाहिए जिसमें हर समर्थ सदस्य को अपने-अपने ढंग से व्यस्त रहना पड़े। उनसे उनका आरोग्य, बुद्धिबल, कौशल बढ़ेगा, साथ ही व्यक्तित्व निखरेगा। घर को सुव्यवस्थित, सुसज्जित रखने तथा गृह उद्योग स्तर के शाकवाटिका, टूट-फूट मरम्मत, कपड़े धोना, सीना जैसे हलके-भारी ऐसे अनेक छोटे-बड़े काम खड़े किए जा सकते हैं जो श्रम-सामर्थ्य को अस्त-व्यस्त होने से बच रह सकें; जो सृजनात्मक प्रवृत्ति का परिपोषण करते रह सकें।

—अखण्ड ज्योति जून 1982, पृष्ठ-30, 31

परिवार निर्माण में हमारे सुझाव

परिवार को अपनी विशिष्टताओं को उभारने, अभ्यास करने एवं परिपुष्ट बनाने की प्रयोगशाला-पाठशाला समझें। इस उद्यान में सत्प्रवृत्तियों के पौधे लगाएँ। हर सदस्य को स्वावलंबी, सुसंस्कारी एवं समाजनिष्ठ बनाने का भरसक प्रयत्न करें। इसके लिए सर्वप्रथम ढालने वाले साँचे की तरह स्वयं आदर्शवान बनें ताकि कथनी और करनी की एकता का प्रभाव पड़े। स्मरण रहे साँचे के अनुसार ही खिलौने ढलते हैं। पारिवारिक उत्तरदायित्व में सर्वप्रथम है—संचालक का आदर्शवादी ढाँचे में ढलना, दूसरा है माली की तरह हर पौधे को शालीनता के क्षेत्र में विकसित करना।

परिवार की संख्या न बढ़ाएँ। अधिक बच्चे उत्पन्न न करें। इसमें जननी का स्वास्थ्य, संतान का भविष्य, गृहपति का अर्थ-संतुलन बिगड़ता है एवं समाज में दारिद्रय असंतोष बढ़ता है। दूसरों के बच्चों को अपना मानकर उनके परिपालन से वात्सल्य कहीं अधिक अच्छी तरह निभ सकता है। लड़की-लड़कों में भेद न करें। पिछली पीढ़ी और वर्तमान के साथियों के प्रति कर्त्तव्यपालन तभी हो सकता है, जब नए प्रजनन को रोकें अन्यथा प्यार और धन प्रस्तुत परिजनों का ऋण चुकाने में लगने की अपेक्षा उनके लिए बहने लगेगा जिनका अभी अस्तित्व तक नहीं है। आज

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के समय में बच्चों की संख्या-वृद्धि हर दृष्टि से अवांछनीय है। इसलिए उस संभावना में संयम बरतें और कड़ाई रखें। थोड़े लोगों का परिवार ही सुसंस्कारी बन सकता है। स्वावलंबी सदस्यों को अलग होने की अपेक्षा छोटों की सहायता और बड़ों की सेवा करने की प्रेरणा देनी चाहिए।

संयम और सज्जनता एक तथ्य के दो नाम हैं। परिवार में ऐसी परंपराएँ प्रचलित करें जिसमें इंद्रियसंयम, समयसंयम, अर्थसंयम और विचारसंयम का अभ्यास आरंभ से ही करते रहने का अवसर मिले। घर में चटोरेपन का माहौल न बनाया जाए। भोजन सात्विक बने और नियत समय पर सीमित मात्रा में खाने का ही अभ्यास बने। कामुकता को उत्तेजना न मिले। सभी की दिनचर्या निर्धारित रहे। समय के साथ काम और मनोयोग जुड़ा रहे। किसी को आलस्य-प्रमाद की आदत न पड़ने दी जाए और न कोई आवारागर्दी अपनाए व कुसंग में फिरे। फैशन और जेवर को बचकाना उपहासास्पद माना जाए, केश-विन्यास और अश्लील उत्तेजक पोशाक कोई न पहने और न जेवर-आभूषणों से लदे। नाक, कान छेदने और उनके चित्र-विचित्र लटकन लटकाने का पिछड़ेपन का प्रतीक फैशन कोई महिला न अपनाए। विचारसंयम के लिए कुविचारों का आक्रमण घर में न हो उसके लिए सद्विचारों का स्वाध्याय और कथा-कहानी परस्पर विचार-विनिमय का नियमित कार्यक्रम चलता रहे। गृहपति स्वयं चतुर्विध संयम पालें और घर के अन्य सदस्यों को भी इस शालीनता की निशानी संयमशीलता का अधिकाधिक अभ्यास कराएँ।

पारिवारिक पंचशीलों में श्रमशीलता, मितव्ययता, सुव्यवस्था, शालीन शिष्टता और उदार सहकारिता की गणना की गई है। इन पाँच गुणों को हर सदस्य के स्वभाव में कैसे सम्मिलित किया जाए? इसके लिए उपदेश देने से काम नहीं चलता, वरन ऐसे व्यावहारिक कार्यक्रम बनाने पड़ते हैं जिन्हें करते रहने से वे सिद्धांत व्यवहार में उतरें। इसलिए घर के लोगों को साथ लेकर परिवार प्रमुखों को कुछ कर्त्तव्य करने होते हैं तभी अन्यों को उनको आरंभ करने से भविष्य में अपनाए रहने की आदत पड़ती है। यह क्रिया द्वारा शिक्षा देने की विधि ही आदतें डालने या सुधारने में काम आती है।

उत्तराधिकार का लालच किसी के मस्तिष्क में नहीं जमने देना चाहिए, वरन हर सदस्य के मन में यह सिद्धांत जमना चाहिए कि परिवार की संयुक्त संपदा में उसका भरण-पोषण, शिक्षण एवं स्वावलंबन संभव हुआ है। इस ऋण को चुकाने में ही ईमानदारी है। बड़ों की सेवा और छोटों की सेवा के रूप में यह ऋण हर वयस्क स्वावलंबी को चुकाना चाहिए। कमाऊ होते ही आमदनी जेब में रखना और पत्नी को लेकर मनमाना खरच करने के लिए अलग हो जाना प्रत्यक्ष बेईमानी है। उत्तराधिकार का कानून मात्र कमाने में असमर्थों के लिए लागू होना चाहिए न कि स्वावलंबियों की मुफ्त की कमाई लूट लेने के लिए। अध्यात्मवाद और साम्यवाद दोनों ही इस मत के हैं कि पूर्वजों की छोड़ी कमाई को असमर्थ आश्रित ही तब तक उपयोग करें, जब तक कि वे स्वावलंबी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं बन जाते। परिवार में उत्तराधिकार का प्रचलन इसी आधार पर करने की पहल पहले अपने घरों से करना चाहिए। इसके लिए, वाजिश्रवा, मैत्रेयी और महर्षि कर्वे का उदाहरण हम सबके मस्तिष्कों में घूमता रहना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1982, पृष्ठ-43, 44

कुटुंब प्रथा ही सही जीवन पद्धति

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे दूसरों के साथ-साथ रहना स्वभावत: पसंद है। जेलखाने में जाकर भी कुछ अपराध करने वालों को कुछ समय 'एकांतवास' की सजा दी जाती है। अकेला रहने पर कैदी बड़ा कष्ट अनुभव करता है और उस कष्ट के डर से फिर वैसा नहीं करता। हम देखते हैं कि मेले-ठेले, उत्सव, समारोह देखने के लिए स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, सभी उत्सुक रहते हैं। हम देखते हैं कि देहाती लोग देहात छोड़-छोड़कर शहर में बसते जा रहे हैं। इन सब बातों से पता चलता है कि अधिक लोगों के समूह के साथ रहना मनुष्य को स्वभावत: प्रिय है। सामूहिक प्रार्थना, संकीर्तन, संगीत, सेना, बरात, जुलूस, उत्सव, प्रीतिभोज आदि अधिक व्यक्तियों के सम्मिलित कार्य में साथ रहने की इच्छा लोगों के मन में स्वयमेव उठा करती है। इस जन्मजात प्रकृति से प्रेरित होकर ही मानव जाति सामूहिक रूप से रहने के लिए तैयार हुई। दूर-दूर झौंपड़े बनाने के बजाय पास-पास घर बनाकर ग्राम या नगर बसाने की प्रणाली को इसीलिए स्वीकार किया गया है। पास-पास रहने, साथ-साथ रहने का सिद्धांत मानव प्रकृति के सर्वथा अनुकूल है।

इसी प्रकृति-प्रेरणा से प्रेरित होकर सम्मिलित कुटुंब प्रथा का प्रचलन हुआ है। एक साथ मिल-जुलकर रहने से कुटुंब के हर एक सदस्य का व्यक्तिगत लाभ भी है और सामूहिक लाभ भी। आर्थिक दृष्टि से, शारीरिक दृष्टि से, मानसिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से, धार्मिक दृष्टि से, आध्यात्मिक दृष्टि से सम्मिलित कुटुंब प्रथा लाभदायक ही है।

कुटुंब को परमात्मा का सौंपा हुआ एक बगीचा मानकर उसकी रखवाली, उन्नति तथा समृद्धि के लिए जो व्यक्ति एक ईमानदार माली की तरह अपना कर्त्तव्यपालन करते हैं; वे एक प्रकार की योग साधना ही करते हैं और योग के फल को प्राप्त करते हैं।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1947, पृष्ठ-22-24

सुसंस्कृत परिवार का निर्माण कैसे हो ?

सभी अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चे और उनके परिजन श्रेष्ठ बनें, आपस में प्रेमपूर्वक मिल-जुलकर रहें। उसके लिए वे सभी को समझाते और ऊँच-नीच सुझाते हैं। झगड़ने वाले सदस्यों को वे प्रेम का महत्त्व बतलाते, मिल-जुलकर रहने के लाभों से अवगत कराते और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर अवसर पर कुछ न कुछ उपदेश देते रहते हैं। किंतु उसका कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता। एक-आध दिन के लिए सदस्य शांतिपूर्वक रहते हैं और फिर लड़ने-झगड़ने लगते हैं। इस प्रभावहीनता के दो कारण हैं। एक तो यह कि यह उपदेश क्रम केवल उस समय चलता है, जब कोई सदस्य आपस में लड़-झगड़ रहे होते हैं। उसके बाद बंद हो जाता है। यदि यही उपदेश झगड़ा हो अथवा न हो, प्रतिदिन नियमित रूप से चलता रहे तो उनके संस्कार बनते रह सकते हैं और धीरे-धीरे सुधार हो सकता है। दूसरा कारण यह रहता है कि अभिभावक उपदेश तो देते रहते हैं किंतु वैसा आचरण नहीं करते। आचरण के अभाव में उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दीपक, दीपक से जलता जरूर है किंतु जलते हुए दीपक से, बुझे हुए से नहीं। जो स्वयं गुणवान हैं वही दूसरों को गुणवान बना सकता है, जो स्वच्छ है वही दूसरों को स्वच्छ बना सकता है। सच्चा उपदेश आचरण का प्रभाव है। जो उपदेश दिया जा रहा है, यदि वह उपदेशक के आचरण में चरितार्थ नहीं है तो उसका रंच प्रभाव भी किसी पर नहीं पड़ेगा।

दुर्गुणी परिजन उतना ही दु:ख देते हैं जितना शरीर में लगा हुआ कोई रोग। पारिवारिक सुख-शांति के लिए परिजनों का सुधार करना उसी प्रकार आवश्यक है, जिस प्रकार शरीर को सुखी रखने के लिए रोग का उपचार। रोग, आग और दुर्गुण बड़ी जल्दी बढ़ जाने वाले होते हैं। रोग की यह समझकर उपेक्षा कर दी जाए कि जरा-सी सरदी-जुकाम है, इसकी क्या परवाह की जाए, तो यही छोटा-सा रोग बढ़कर भयंकर रूप धारण कर लेता है और तब उसका उपचार दुस्साध्य हो जाता है। चिनगारी समझकर आग की उपेक्षा कर दी जाए तो वह धीरे-धीरे बढ़कर दावानल का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार दुर्गुण के प्रवेश करते ही यदि सुधार का प्रयत्न न किया जाएगा तो जल्दी ही वह स्वभाव का अंग बन जाएगा और तब उससे छुटकारा पा सकना सरल न रहेगा। इसलिए आवश्यक है कि अभी कोई विशेष बिगाड़ नहीं हुआ है कोई खास देर नहीं हुई है, इसलिए परिजनों के सुधार में आज से ही तुरंत लग जाना चाहिए। ज्यों-ज्यों विलंब होता जाएगा बच्चों तथा परिजनों के दुर्गुण स्वभाव का अंग बनते जाएँगे और तब उनके सुधार के लिए बहुत प्रयत्न करना होगा और सफलता की आशा ज्यादा न रहेगी।

व्यक्तिगत आचरण के अभाव में परिवार-सुधार की आकांक्षा और उसके लिए दिए जाने वाले उपदेश निराशाजनक ही रहेंगे। यदि किसी को अपनी इस आकांक्षा को मूर्तिमान देखना है कि उसके बच्चे भले, भोले, आज्ञाकारी और कुशाग्र बुद्धि बनें, समाज की सेवा और संसार में उन्नति करें, उनका शील-स्वभाव समुज्ज्वल बनकर न केवल उन्हें बल्कि अभिभावकों को भी प्रशंसनीय बना दें, सारे परिजन परस्पर प्रेमभाव, त्याग-भावना और उदारतापूर्वक रहें तो उसे स्वयं अपने चरित्र में इन गुणों का विकास करना होगा। अन्यथा उनकी यह आकांक्षा उसी प्रकार अतृप्त रह जाएगी जिस प्रकार अकर्मण्य निर्धन व्यक्ति किसी भी सुख-सुविधा के लिए तरसकर रह जाते हैं।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1968, पृष्ठ-22-23

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार निर्माण का आधार—सहनशक्ति और विवेक

पारिवारिक जीवन को सफल बनाने के लिए त्याग, सहन शक्ति, मानसिक प्रौढ़ तत्त्व और समझदारी की जरूरत है। पुरुष और स्त्री एकदूसरे के पूरक हैं। इस नैसर्गिक संबंध को बनाए रखने के लिए समाज ने विवाह-प्रणाली को स्वीकार किया है। पर इस संबंध को केवल लोकापवाद के डर से निभाना असंभव है। दांपत्य जीवन की सफलता शारीरिक आकर्षण की अपेक्षा पति-पत्नी की मानसिक और आत्मिक एकरूपता पर अधिक निर्भर है।

यदि आप में मानवोचित गुण हैं तो आप जिसे अपनाते हैं उससे प्रेम करना भी सीख जाते हैं। प्रेम का दीपक लगन के साथ जलाया जाता है, उसे वासनारहित जल से सींचा जाता है और स्वार्थ, असहनशीलता, अविवेक आदि के रोगों से, उसे बड़ी साधना से, बड़े यत्नों से बचाया जाता है; तब कहीं जाकर वह गृहस्थाश्रम और पारिवारिक जीवन को प्रकाशपूर्ण और आनंदमय बना पाता है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1963, पृष्ठ-39, 40

समाज निर्माण

परोपकार में तुम्हारा ही कल्याण

शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य जीवन में परोपकार ही सार है, हमें सदैव परोपकार में रत रहना चाहिए; किंतु वह अभिमान, दंभ या कीर्ति के लिए नहीं, आत्मकल्याण के लिए होना चाहिए। मेरे कारण दूसरों का यह भला हुआ, यह सोचना मूर्खता है। हमारे बिना संसार का कोई कार्य अटका नहीं रहेगा। हमारे पैदा होने से पहले संसार का सब काम ठीक-ठीक चल रहा था और हमारे बाद भी वैसा ही चलता रहेगा। परमात्मा इतना गरीब नहीं है कि हमारी मदद के बिना सृष्टि का काम न चला सके। किसी भिखारी को हमारे ही देने की कोई बड़ी भारी आवश्यकता नहीं, वह हमारी एक रोटी के बिना भूखा न मर जाएगा।

सच पूछो तो जिसने हमें उपकार करने का अवसर दिया है, उसका कृतज्ञ होना चाहिए। हमारी उपकार बुद्धि जाग्रत करके वह हमें ऋणी कर देता है। इससे जो मानसिक उन्नति होती है और आत्मा को जो शक्ति प्राप्त होती है, वह दान लेने वाले को नहीं वरन देने वाले को प्राप्त होती है। दूसरों का उपकार करना मानो एक प्रकार से अपने ही कल्याण का प्रयत्न करना है। किसी को एक पैसा देकर हम उसका कितना भला कर सकते हैं? किंतु उसकी अपेक्षा अपना भला हजारों गुना कर लेते हैं। हमारी उदारता का विकास न होने से संसार का रत्ती भर भी हर्ज न होगा किंतु हमारा ही आनंद-स्रोत नष्ट हो जाएगा।

मनुष्यो! परोपकार को अपना जीवनलक्ष्य बनाओ। जितनी हो सके दूसरों की भलाई करो। इसमें तुम्हारा ही भला है, तुम्हारा ही लाभ है, तुम्हारा ही कल्याण है।

—अखण्ड ज्योति जून 1941, पृष्ठ-01

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा एक नकद धर्म

संसार को ईश्वर की प्रतिमा के रूप में देखिए। हर प्राणी के ऊपर अपने प्रेम का अमृत छिड़किए। दुष्ट और दुराचारियों को दया का पात्र समझकर उनके पापों को मिटाने का प्रयत्न एक प्रेमी डॉक्टर की तरह कीजिए। पीड़ितों और असहायों के स्वर में ईश्वर का आह्वान सुनिए और जो कुछ आप संसार की भलाई के लिए कर सकते हैं, कीजिए। प्रेम और सेवा धर्म को अपने जीवन का अंग बना लीजिए। ध्यान रखिए कि ईश्वर के साथ दंभ और दुर्भावनाओं के साथ व्यवहार न हो। जैसे भावुक भक्त राधेश्याम और सीताराम का स्मरण करते हैं, आप उसी तरह प्रेम-सेवा की रट लगाइए।

यह प्रत्यक्ष धर्म है। नकद सौदा है। जितना करते चलिए, उतनी ही मजूरी दूसरे हाथ से लेते चलिए। इसमें अंधविश्वास और बहकावे की भी कोई बात नहीं है। अविश्वास, अवैज्ञानिकता या पछतावे जैसी कोई चीज भी यहाँ नहीं है। जरा शांत चित्त से एकांत स्थान में आँखें बंद करके कुछ देर प्रेम और सेवा का स्मरण तो कीजिए। आपके सूखे हुए मानस में एक हरियाली की छटा दिखाई देगी। प्रेमी बनिए, पाप आप से हजारों कोस दूर भाग जाएँगे; सेवक बनिए, वासनाएँ आप से योजनों दूर हट जाएँगी। प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शनों से आप कृतकृत्य हो जाएँगे।

पाठको! अपनी आध्यात्मिक साधनाओं में इन दो साधनाओं का समावेश करना मत भूलना। हृदय-पटल पर इन शब्दों को अंकित कर लो—प्रेम और सेवा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1941, पृष्ठ-06

मुझे नहीं चाहिए, आप लीजिए

अब 'मैं लूँगा' की नीतिरूपी निशा समाप्त होकर 'आप लीजिए' की सुनहरी प्रभात होने वाली है। प्रभु ने मनुष्य को इसलिए इस पृथ्वी पर नहीं भेजा है कि वे एकदूसरे को लूट खाएँ और आपस में रक्त की होली खेलें। बालकों को यह सत्यानाशी खेल खेलते हुए पिता अधिक देर तक नहीं देख सकता। वह अब उनका हाथ रोकेगा और बताएगा कि मूर्खो! तुम्हारा काम यह नहीं है जो कर रहे हो। अब उलटी चाल को छोड़ो और सीधी चलो। सीधी चाल यह है कि हर व्यक्ति 'मुझे नहीं चाहिए, आप लीजिए।' की नीति ग्रहण करे। इस नीति के आधार पर विश्व की वे पेचीदा गुत्थियाँ जिन्हें सुलझाने में आज बड़े ऊँचे दिमाग असमर्थ हैं, बात की बात में सुलझ जाएँगी और शांति सुव्यवस्था का मार्ग जो इस समय बहुत ही कंटकाकीर्ण प्रतीत होता है, बहुत आसानी से पार हो जाएगा। सतयुग हमें यही एक मंत्र देता है। इस मंत्र का अनुष्ठान करके हम सतयुग को बुला सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1942, पृष्ठ-05

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जियो और जीने दो

मनुष्यो! जिओ और जीने योग्य जीवन जिओ, ऐसी जिंदगी बनाओ जिसे आदर्श और अनुकरणीय कहा जा सके। विश्व में अपने ऐसे पदचिन्ह छोड़ जाओ जिन्हें देखकर आगामी संतति अपना मार्ग ढूँढ़ सके। आपका जीवन सत्य से, प्रेम से, न्याय से भरा हुआ होना चाहिए। दया, सहानुभूति, आत्मनिष्ठा, संयम, दृढ़ता, उदारता, आपके जीवन के अंग होने चाहिए। 'शारीरिक और मानसिक बल का संचय और उसका सदुपयोग' यह प्रथम कर्त्तव्य है, जिसकी ओर हर घड़ी दत्तचित्त रहना चाहिए। बिना इसके जीवन 'जीवन' नहीं हो सकता।

न केवल उच्च जीवन स्वयं जियो, वरन दूसरों को भी वैसा ही जीवन जीने दो। परमात्मा का आत्मा के प्रति आदेश है ''जियो और जीने दो''। अपनी निर्बलता, वासना, स्वार्थपरता एवं कुभावनाओं को हटाकर गौरवपूर्ण पद प्राप्त करो और सिर ऊँचा उठाकर जीने योग्य जिंदगी जिओ तथा उस सात्विक शक्ति का प्रयोग दूसरे निर्बलों को जीवन की शक्ति प्रदान करने में करो। यह प्रक्रिया अत्यंत ही नीच श्रेणी की होगी कि तुम स्वयं तो ऊँचे उठो पर दूसरों को नीचे दबाओ। स्वयं स्वतंत्रता की इच्छा करो और दूसरों को बंधनों में जकड़ो। यह तो अपने बल का दुरुपयोग करना होगा। दूसरों की छाती पर खड़े होकर ऊपर बढ़ने की भावना इतनी सत्यानाशी और नारकीय है कि इसके द्वारा विश्व का बहुत भारी अहित हुआ है। बलवान व्यक्ति जब जालिम का रूप धारण करता है, तो वह प्रभु की इस सुरम्य वाटिका में निर्दय कुल्हाड़ी का काम करता है। ऐसा क्रूर जीवन पिशाच ही बना सकता है, मनुष्य के लिए वैसा संभव नहीं है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1942, पृष्ठ-11

बुद्धिभ्रम से बचें

आत्मा किसी की दुष्ट नहीं है, वह तो सत्य, शिव और सुंदर है, सच्चिदानंद स्वरूप है। दुष्टता तो अज्ञान के कारण उत्पन्न होती है, यह अज्ञान एक प्रकार की बीमारी ही तो है। अज्ञानरूपी बीमारी को मिटाने के लिए हर उपाय काम में लाना चाहिए, परंतु किसी से व्यक्तिगत द्वेष न मानना चाहिए। व्यक्तिगत द्वेष-भाव जब मन में घर कर लेता है तो हमारी निरीक्षण बुद्धि कुंठित हो जाती है। वह नहीं पहचान सकती कि शत्रु में क्या बुराई और क्या अच्छाई है? पीला चश्मा पहन लेने पर सभी वस्तुएँ पीली दिखाई पड़ने लगती हैं। इसी प्रकार स्वार्थपूर्ण द्वेष जिस मनुष्य के लिए घर कर लेता है, उसके भले काम भी बुरे प्रतीत होते हैं।

आप दुष्ट और दुष्टता के बीच अंतर करना सीखिए। हर व्यक्ति को अपनी ही तरह पवित्र आत्मा समझिए और उससे आंतरिक प्रेम कीजिए। कोई भी प्राणी नीच, पतित या पापी नहीं है, तत्त्वतः वह पवित्र ही है। भ्रम, अज्ञान और बीमारी के कारण वह कुछ का कुछ समझने लगता है। इस बुद्धिभ्रम का ही इलाज करना है। बीमारी को मारना है और बीमार को बचाना है। इसलिए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुष्ट और दुष्टता के बीच में फरक करना सीखना चाहिए। मनुष्यों से द्वेष मत रखिए, चाहे उनमें कितनी ही बुराइयाँ क्यों न हों! आप तो दुष्टता से लड़ने को तैयार रहिए, फिर वह चाहे दूसरों में हो, चाहे अपनों में हो, चाहे खुद अपने अंदर हो।

पाप एक प्रकार का अँधेरा है, जो ज्ञान का प्रकाश होते ही मिट सकता है। पाप को मिटाने के लिए कड़ुए से कड़ुआ प्रयत्न करना पड़े तो आप प्रसन्नतापूर्वक कीजिए, क्योंकि वह एक ईमानदार डॉक्टर की तरह विवेकपूर्ण इलाज होगा। इस इलाज में लोक-कल्याण के लिए मृत्युदंड तक की गुंजाइश है, किंतु द्वेष-भाव से किसी को बुरा समझना या उसकी भलाइयों को भी बुराई कहना अनुचित है। जैसे एक विचारवान डॉक्टर रोगी की सच्चे हृदय से मंगल कामना करता है और नीरोग बनाने के लिए स्वयं कष्ट सहता हुआ जीतोड़ परिश्रम करता है, वैसे ही आप पापी व्यक्तियों को निष्पाप करने के लिए साम, दाम, दंड, भेद चारों उपायों का प्रयोग कीजिए, पर उन पापियों से किसी प्रकार का निजी राग-द्वेष मत रखिए।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1942, पृष्ठ-31

दूसरों को भी धर्म मार्ग पर चलाएँ

जिन लोगों तक आपकी पहुँच हो सकती है, उनको धर्म मार्ग पर चलने के लिए, सत्य का आचरण करने के लिए प्रेरित करते रहा करें। जो लोग आपके संपर्क में आएँ, जिनसे बात करने का अवसर मिले, जिनसे पत्र व्यवहार हो, उन्हें सदुपदेश दिया कीजिए, सत्य के, प्रेम के, न्याय के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया कीजिए। अपने मुख को एक प्रकार का जीवित धर्मशास्त्र बना डालिए, जिसमें से सदैव धर्म शिक्षा का प्रसार होता रहे। अपने कुटुंबियों, मित्रों, सहयोगियों, संबंधियों, परिचितों, अपरिचितों को सचाई और ईमानदारी के साँचे में ढालने का उद्योग किया कीजिए, जिससे उनकी जीवन दिशा सुधरे और आपका अपना आत्मसुधार का अभ्यास मजबूत होता रहे। यह बेल बढ़ेगी। मान लीजिए आप दस आदमियों को धर्ममय विचारों का बना देते हैं। वे दस और दस-दस को सुधारते हैं, तो सौ हो गए। ऐसा ही सौ करें तो दस हजार हो जाएँगे, यही बेल आगे बढ़े तो दसवें व्यक्ति पर जाकर यह संख्या इतनी हो सकती है, जितने मनुष्य इस सारी पृथ्वी पर नहीं हैं। यदि सौ दृढ़ प्रतिज्ञ सुयोग्य व्यक्ति धर्म भावनाओं का प्रचार करने के लिए सच्चे हृदय से तत्पर हो जाएँ, तो संसार की कायापलट कर सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1943, पृष्ठ-05,06

ब्रह्म कर्मों के लिए दान दें

दान मनुष्य का अत्यंत आवश्यक और अनिवार्य कर्त्तव्य है। जिसको जो कुछ देना संभव हो अपनी स्थिति के अनुसार ज्ञान, समय, बल, सेवा, विद्या, पैसा, अन्न आदि का दान करना चाहिए, नित्य करना चाहिए और अवश्य करना चाहिए। इसके बिना न तो आत्मोन्नति हो सकती है और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न लोक-परलोक में सुख मिल सकता है। पुण्य-कर्मों में दान का प्रमुख स्थान है, यह दान विवेकपूर्वक होना चाहिए। ब्राह्मणों को दान देना चाहिए, ब्रह्मकर्मों के लिए दान देना चाहिए, जिससे समाज में ज्ञान की, विद्या की, सदाचार की, सद्विचारों की उन्नति हो। यह भली प्रकार छान-बीन करनी चाहिए कि जिस व्यक्ति को दान दिया गया है, वह सच्चा 'ब्राह्मण' है या नहीं, जिस कार्य में दान किया गया है, उस कार्य का कोई अच्छा फल समाज को मिलेगा या नहीं। यदि आप देखें कि यह दान संसार में सात्विकता की वृद्धि करेगा, मनुष्य जाति की उन्नति में सहायक होगा, तो समझिए कि वह दान सार्थक है और उसका फल स्वर्ग के समान सुखदायक प्राप्त होगा। यदि आप ऐसा देखें कि यह दान अमुक निठल्ले व्यक्ति की उदर दरी को कुछ समय तक भरे रहने मात्र का साधन सिद्ध होगा या दान पाया हुआ व्यक्ति अपनी अकर्मण्यता एवं धूर्तता के लिए अधिक प्रोत्साहित होगा, तो समझिए कि आपका दान निरर्थक गया और उसका परिणाम नरक के समान दुखदायी होगा। असमर्थों, पीड़ितों, विपत्तिग्रस्तों की अधिक-से-अधिक सहायता करनी चाहिए। एक पैसा फेंककर कर्त्तव्य की इतिश्री न करनी चाहिए वरन उनके अभाव को अधिक मात्रा में, अधिक समय के लिए दूर करने का अधिक प्रयत्न करना चाहिए। बेगार भुगतकर पाई-पैसा फेंक देने से दया सार्थक नहीं होती वरन किसी व्यक्ति को यदि वास्तविक कष्ट है तो उस कष्ट को मिटाने के लिए भरपूर सहायता करने का उद्योग करना चाहिए, जिससे सच्चा आत्मसंतोष प्राप्त हो सके, सच्चे रूप में दया सार्थक हो सके।

स्मरण रखिए 'दान' मनुष्य का आवश्यक कर्त्तव्य है पर वह सार्थक, पुण्य रूप, सुखदायक तभी हो सकता है, जब विवेकपूर्वक परिणाम पर विचार करके श्रद्धापूर्वक दिया जाए। अन्य प्रकार के दान अधर्म की वृद्धि में सहायक होते हैं, इसलिए उनका परिणाम दुखदायी ही होता है।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1943, पृष्ठ-204, 205

मैं नहीं, हम सब

हमारा देश गरीब है, दुखी है, पीड़ित है, इसका सर्वोपरि कारण हम लोगों की संकुचित स्वार्थवृत्ति है। 'अपने मतलब से मतलब' की मनोवृत्ति ने हमें मिट्टी में मिला दिया। जब तक यह घृणास्पद, नारकीय और पाशविक मनोवृत्ति हमारी बनी रहेगी, तब तक चंद आदमी व्यक्तिगत रूप से कुछ बड़े, भले बन जाएँ, पर सामूहिक रूप से हम लोग पीड़ित और पतित ही रहेंगे। सामूहिक उन्नति तभी होगी जब मनुष्य 'मैं—अकेला' की मर्यादा में सोचना छोड़कर 'हम-सब' की मर्यादा में सोचना और काम करना आरंभ करेंगे। 'सबकी उन्नति में अपनी उन्नति' की मनोवृत्ति में वह जादू है, जिसके द्वारा समाज की भी उन्नति होती है और व्यक्ति की भी।

पाठको, विचार करो! विवेक को जाग्रत करके सोचो! अध्यात्म शक्ति के इस एकमात्र सूर्य से प्रकाशवान—ध्रुव से अटल सिद्धांत को समझो। सबकी उन्नति में आपकी उन्नति है, इसलिए केवल व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से ही काम न करो वरन यह भी सोचो कि कार्य का परिणाम हम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबके लिए क्या होगा? 'मैं अकेला' से बढ़कर 'हम सब' की ओर आपकी जितनी प्रगति होगी, उतनी ही आपकी आत्मोन्नति गिनी जाएगी। याद रखो, जिस देश की जितनी आत्मोन्नति होगी, वह उतना ही सुखी और समृद्ध होगा। देश के सुख में ही व्यक्ति का सुख भी निहित है। दुखी पड़ोसियों के बीच रहकर कोई बड़ा आदमी भी शांतिपूर्वक सुख नहीं भोग सकता। इसलिए हे सुख-शांति के इच्छुको! हे अध्यात्म विद्या के जिज्ञासुओ! उठो, घर-घर में, मनुष्य-मनुष्य में यह भाव भर दो कि वह खुदगर्जी के बंधनों को तोड़कर परमार्थरूपी मुक्ति की ओर बढ़े, आत्मा का दायरा बढ़ाकर उसे परमात्मा बनाए। 'मैं-अकेला' की निकृष्ट नारकीय वृत्ति को छोड़कर 'हम-सब' की दिव्य भावनाओं को अपनाए। इसी मंत्र में हमारा और हमारे समाज का उत्थान निहित है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1944, पृष्ठ-144

तरो और तारो

पाठको! आनंदमय स्वर्गीय जीवन बनाने का प्रयत्न करो। इसका एकमात्र उपाय यह है कि शक्ति का संपादन करो, बलवान बनो, तभी दुःखों की वैतरिणी को पार कर सकोगे। लेकिन स्मरण रखो यह तरना एकांगी नहीं होना चाहिए। आप समाज के अंग हैं, समाज की उन्नति में आपकी उन्नति है, अकेले आप बलवान हो गए और पड़ोसी लोग निर्बल बने रहे तो आप सच्चा आनंद प्राप्त न कर सकेंगे। भुखमरी से पीड़ित एक-एक दाने से बिलबिलाते हुए लोगों के बीच में बैठकर आप अकेले मधुर मिष्टान्न खाएँ तो हर ग्रास के साथ उन क्षुधा-पीड़ितों की ईर्ष्या और नाराजगी आपके गले से नीचे उतरेगी और वह पेट में जाकर लाभ के स्थान पर हानिकारक सिद्ध होगी। सुस्वादु भोजन का मजा तब है, जब समान मित्रों के बीच में बैठकर साथ-साथ खाया जाए। हैजा, प्लेग, मलेरिया, तपेदिक और उपदंश के रोगियों के बीच रहकर स्वस्थ पुरुष का भी स्वस्थ रहना कठिन है, इसी प्रकार निर्बल, पतित और दुखी लोगों के बीच बलवान व्यक्ति का बल भी उसे संतोष और शांति प्रदान नहीं कर सकता।

इसलिए हे आनंद के इच्छुको! 'तरो और तारो।' खुद भी बलवान बनो और दूसरों को बलवान बनाओ। जिओ और जिलाओ, उठो और उठाओ, हँसो और हँसाओ। 'सेवा और शक्ति' आपके जीवन के दो उद्देश्य होने चाहिए; दो कार्यक्रम होने चाहिए। 'योग' दो वस्तुओं के जोड़ को कहते हैं। हे योगसाधको! बल और सेवा को जोड़ो, स्वार्थ और परमार्थ को जोड़ो, सुख और संतोष को जोड़ो तभी तुम्हारी योग साधना सफल होगी। शरीर का सुख चाहिए, आत्मा को संतोष चाहिए। शरीर के लिए बल की जरूरत है, आत्मा को सेवा की जरूरत है। शरीर को आकांक्षा स्वार्थ की रहती है और आत्मा को परमार्थ की। इन दोनों का योग करो, जोड़ो, मिलाओ, एकत्रित करो, तभी जीवनोद्देश्य प्राप्त होगा, तभी सच्चे सुख की उपलब्धि होगी। गाड़ी में दो पहिये होते हैं, शरीर की गाड़ी दो पैरों से चलती है, ताली दो हाथों से बजती है, स्त्री और पुरुष मिलकर एक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूर्ण मनुष्य बनता है, दिन और रात्रि के सम्मिश्रण से एक वार होता है, जीवन का आनंद रथ भी दो पहियों वाला है, दो घोड़ों वाला है—एक है 'बल' दूसरा 'सेवा।' बल इकट्ठा करो और उसे सेवा में लगाओ। नेगेटिव और पोजेटिव तारों को मिलाते ही बिजली की शक्तिशाली धारा बहने लगती है। शक्ति-संचय और जन-सेवा इन दोनों तारों के मिलते ही जीवन में आनंद की अमृत वर्षा होने लगती है। प्रसन्नता, प्रफुल्लता और सरसता से अंत:करण को स्वर्गीय तृप्ति अनुभव होने लगती है।

अपने को ईश्वर की 'तरण तारिणी सेना' का सैनिक समझो। परमात्मा के आपके लिए दो आदेश हैं। 'तरो और तारो' इन आदेशों का पालन करना ही ईश्वर की सच्ची भक्ति करना है। ऐसी भक्ति से ही प्रभु प्रसन्न होते हैं और ऐसे ही भक्तों के योग-क्षेम को भगवान अपने कंधे पर उठाते हैं।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1944, पृष्ठ-216, 217

कुपात्रों को दान देकर नरक के भागी न बनें

भिक्षावृत्ति का सदुपयोग हो। सच्चे भिक्षुओं का हक चोर-लुटेरे न लूटने पाएँ, इसके लिए भिक्षा देने वालों की जिम्मेदारी अब बहुत बढ़ गई है। उन्हें देखना चाहिए कि माँगने वाला यज्ञार्थाय या विपद् निवारणाय ही माँगता है न? यदि इन दोनों में से कोई प्रयोजन न हो और वह मुफ्त का माल पाने की वृत्ति से माँग रहा हो, तो उसे एक तिनका भी देने से मना कर देना चाहिए। अविवेकपूर्वक, कुपात्रों को दिया हुआ दान, उन दानदाताओं को नरक में ले जाता है, क्योंकि उस निठल्ले भिक्षु के द्वारा फैलने वाली अनैतिकता का उत्तरदायित्व उन अविवेकी दानदाताओं पर पड़ता है। यदि उन्हें भिक्षा न मिले तो सीधे रास्ते पर आने के लिए स्वयं ही मजबूर होंगे, परंतु यदि अविवेकी दाता उनका घड़ा भरते रहेंगे तो उनके सुधरने की, सीधे रास्ते पर आने की कोई आशा नहीं करनी चाहिए।

दान में विवेक आवश्यक है। जो दान के अधिकारी हैं, उन्हें जी खोलकर मुक्तहस्त होकर देना चाहिए। संसार में सात्विकता, सद्भावना, ज्ञान, विवेक तथा सुख-शांति बढ़ाने के लिए, विपत्तिग्रस्तों को संकट से बचाने के लिए हर समय सहायता दी जानी चाहिए। शरीर से, बुद्धि से, पैसे से, यहाँ तक कि प्राण देकर भी विश्व के कष्ट मिटाने और सुख बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। सच्चे ब्राह्मणों को, सच्चे साधुओं को, सच्चे ब्रह्मसाधकों को, सच्ची संस्था को ढूँढ़कर उन्हें भिक्षा देनी चाहिए, उनके पुष्ट होने से धर्म की, वैभव की, सुख-शांति की पुष्टि होती है। विपद्ग्रस्तों को उठाकर छाती से लगाना चाहिए, उनके लिए हर संभव एवं उचित सहायता पहुँचानी चाहिए। परंतु सावधान! गौ का ग्रास शृगाल न छीनने पाए, भिक्षा का हवन शाकल्य यज्ञकुंड में पड़ने की जगह अपवित्र नाली में न बह जाए। यज्ञार्थाय और विपद्निवारणाय प्रयुक्त न होकर, कहीं आपका दान कुपात्रों द्वारा न लूट लिया जाए।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1948, पृष्ठ-05

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भजन के साथ लोकसेवा भी आवश्यक

वह अवसर अब आ गया जबकि राष्ट्र के नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए हमें कटिबद्ध होना है। हमें स्वाध्याय में अभिरुचि है, अखण्ड ज्योति पढ़ते हैं—सो ठीक है। दैनिक भजन, गायत्री उपासना करते हैं—सो भी ठीक है। साधु-सज्जनों का मान-सम्मान करते हैं—सो भी उत्तम है। तीर्थ, व्रत, पूजन-कीर्तन दान-पुण्य करते हैं—सो भी सराहनीय है। पर इतने तक ही सीमित हो जाने से काम चलने वाला नहीं है। ये साधन हैं—लक्ष्य नहीं। लक्ष्य तो आत्मकल्याण है। ये सभी उपचार, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, सद्गुण एवं सत्प्रवृत्तियों के विकसित करने के लिए हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम नियमित रूप से आत्मचिंतन करें, अपने दोषों को ढूँढ़ निकालें और उनके स्थान पर स्वभाव में सात्विक तत्त्वों का समुचित मात्रा में समावेश करें। यह कार्य केवल विचारते रहने या पुस्तकें पढ़ते रहने से ही न हो सकेगा। कुछ सक्रिय कार्य करना पड़ेगा। सक्रिय कार्यों के करने में ही मन:भूमि पर गहरी छाप पड़ती है और उसका संस्कार बनता है। क्रिया के अभाव में सद्भावना भी केवल एक कल्पना या आकांक्षा ही रह जाती है, उसकी न तो भीतर कोई छाप पड़ती है और न संस्कार बनता है।

आत्मकल्याण चाहने वालों के लिए जहाँ कथा, कीर्तन, तीर्थ व्रत, जप, हवन आवश्यक हैं, वहाँ सक्रिय समाजसेवा भी आवश्यक है। लोकसेवा से मुँह मोड़कर केवल भजन ही करते रहना न तो युक्तियुक्त है और न उससे लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। प्राचीनकाल के एक-एक ऋषि-मुनियों का जीवन इस बात का साक्षी है कि उनने जितना समय भजन-साधना में लगाया, उससे कहीं अधिक श्रमदान जनकल्याण के लिए धर्मप्रचार एवं रचनात्मक सेवा-कार्यों में किया है। यही परंपरा हमारे लिए भी अनुकरणीय हो सकती है।

—अखण्ड ज्योति मई 1959, पृष्ठ-33, 34

प्रतिरोध न करना पाप का समर्थन

हमें स्मरण रखना चाहिए कि स्वयं अपराध न करना ही हमारी निर्दोषता का प्रमाण नहीं है। अपराधों और बुराइयों को रोकना भी प्रत्येक सभ्य एवं प्रबुद्ध नागरिक का कर्त्तव्य है। यदि किसी की आँखों के आगे हत्या, लूट, चोरी, बलात्कार आदि नृशंस कृत्य होते रहें और वह मौन पत्थर की तरह चुपचाप खड़े देखता रहे, कोई प्रतिरोध न करे तो यह निष्क्रियता एवं अकर्मण्यता भी कानूनन अपराध मानी जाएगी और न्यायाधीश इस जड़ता के लिए भी दंड देगा। इसे कायरता और मानवीय कर्त्तव्यों की उपेक्षा माना जाएगा। गाँवों में जिनके पास बंदूकें रहती हैं, उनका यह कर्त्तव्य भी हो जाता है कि यदि गाँव में दूसरों के यहाँ डकैती पड़े तो डाकुओं से मुकाबला करने के लिए उन बंदूकों का उपयोग करें। यदि वे बंदूक वाले डर के मारे अपने घरों में चुपचाप जान बचाए बैठे रहें और डकैती बिना प्रतिरोध पड़ती रहे, तो इस कांड में डकैतों की तरह उन डरपोक बंदूकधारियों को भी अपराधी माना जाएगा और सरकार उनकी बंदूकें जब्त कर लेगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाजशास्त्र के अनुसार प्रत्येक सभ्य नागरिक का यह पवित्र कर्त्तव्य है कि बुराइयों से वह स्वयं बचे और दूसरों को बचाए। अपराध न तो स्वयं करे और न करने दे। जो स्वयं तो पाप नहीं करता, पर पापियों का प्रतिरोध नहीं करता, वह एक प्रकार से पाप का पोषण ही करता है, क्योंकि जब कोई बाधा देने वाला ही न होगा तो पाप और भी तीव्रगति से बढ़ेगा। हम सब एक नाव में बैठे हैं, यदि इन बैठने वालों में से कोई नाव के पेंदे में छेद करे या उछल-कूद मचाकर नाव को डगमगाए तो बाकी बैठने वालों का कर्त्तव्य है कि उसे ऐसा करने से रोके। यदि न रोका जाएगा तो नाव का डूबना और सब लोगों का संकट में पड़ना संभव है। यदि उस उपद्रवी व्यक्ति को अन्य लोग नहीं रोकते हैं तो उन्हें यह कहने का अधिकार नहीं है कि क्या करें, हमारा क्या कसूर है, हमने नाव में छेद थोड़े ही किया था। छेद करने वाले को न रोकना भी स्वयं छेद करने के समान ही घातक है। मनुष्य समाज परस्पर इतनी घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है कि अपना स्वयं का पाप ही नहीं, दूसरों का पाप भी दूसरों को भुगतना पड़ता है। जयचंद और मीरजाफर की गद्दारी से सारे भारत की जनता को कितने लंबे समय की गुलामी की यातनाएँ सहनी पड़ीं।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1962, पृष्ठ-30, 31

सबके हित में अपना हित समझें

अपने सीमित वर्ग के स्वार्थ की बात सोचना अध्यात्मवादी आदर्शों के विपरीत है। हमें सबके हित में अपना हित सोचना चाहिए। शरीर का एक अंग बहुत बड़ा हो जाए तो वह बेडौल लगेगा। कुछ लोग धनी, समृद्ध, संपन्न, विद्वान, धर्मात्मा, ज्ञानी, बलवान बन जाएँ तो इतने मात्र से किसी बड़े उद्देश्य की पूर्ति होने वाली नहीं। हम सब सुखी रहेंगे, संपन्न बनेंगे, स्वस्थ रहेंगे, सच्चरित्र बनेंगे तो ही प्रत्येक की सुख-शांति सुरक्षित रह सकेगी। चोर, व्यभिचारी और हत्यारों के बीच में निवास करने वाला कोई सज्जन व्यक्ति भी अपनी शांति सुरक्षित नहीं रख सकता। फिर सामाजिक अव्यवस्था के बीच व्यक्तिगत स्वार्थ-साधन की बात सोचते रहने पर भी हम कहाँ कुछ लाभ कमा सकेंगे? और यदि कमा भी लिया तो उसे कहाँ सुरक्षित रख सकेंगे? कहाँ उसका उपभोग कर सकेंगे?

व्यक्तिगत स्वार्थ को सामूहिक स्वार्थ के लिए उत्सर्ग कर देने का नाम ही पुण्य-परमार्थ है। इसी को देशभक्ति, त्याग, बलिदान, महानता आदि नामों से पुकारते हैं। इसी नीति को अपनाकर मनुष्य महापुरुष बनता है, लोकहित की भूमिका संपादित करता है, अपने आदर्श से अनेकों को प्रेरणा देता है और अपने देश-समाज का मुख उज्ज्वल करता है। मुक्ति और स्वर्ग का रास्ता भी यही है। भगवान को प्राप्त करने की मंजिल भी यही है। आत्मा की शांति और सद्गति भी उसी पर निर्भर है।

सबके स्वार्थ में अपने स्वार्थ का समर्पण करके, व्यक्तिगत स्वार्थ से सामूहिक स्वार्थ का अधिक ध्यान रखने का आदर्श, युग निर्माण संकल्प में इसीलिए सन्निहित रखा गया है कि हमारा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वांगीण विकास संभव हो सके। सब लोग परस्पर मिल-जुलकर एकदूसरे को आगे बढ़ाने, ऊँचा उठाने, सुखी बनाने में सहयोग करेंगे तो वह युग समीप ही दिखाई देगा, जिसकी पुन: स्थापना के लिए हम कटिबद्ध हुए हैं।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1962, पृष्ठ-15

समझौते का मार्ग खोलें

अपने से भिन्न विचारों को भी हमें सहन करना चाहिए। दूसरों के स्वार्थ और अपने स्वार्थ जहाँ टकराते हों, वहाँ बीच का, समझौते का मार्ग खोजना चाहिए। 'सब कुछ या कुछ नहीं' की नीति गलत है। जितना मिले उतना लो, शेष के लिए कोशिश करो, यही नीति उचित है। जिस हद तक हम दूसरों से मतैक्य का आधार ढूँढ़ सकते हों, ढूँढ़ें और प्रयत्न यह करें कि जो मतैक्य के आधार हैं, उन पर जोर दें, उनकी चर्चा करें और उस क्षेत्र को विस्तृत करें। मतभेद के प्रसंगों की चर्चा तभी करें, जब दोनों ओर की मनोभूमि उसे सुनने, समझने और सुधारने की स्थिति में हो। समय-कुसमय मतभेदों की ही चर्चा करते रहना, उसी का रोना रोते रहना, द्वेष-दुर्भाव बढ़ाने में ही सहायता करता है।

दूसरे को बदनीयत मान बैठना, उनके हर कार्य में द्वेष, दुर्भाव की गंध सूँघना, अपनी तुच्छता का प्रतीक है। सद्भावना से भी कोई व्यक्ति अपने से असहमत हो सकता है और अपनी आशाओं के प्रतिकूल उत्तर दे सकता है। इतने मात्र से हमें क्रुद्ध क्यों होना चाहिए। एकदूसरे के प्रति जो गलतफहमी की गाँठें मन में बन जाती हैं, उनके निवारण का उपाय एक ही है कि उससे एकांत में जी खोलकर बात की जाए और वास्तविकता तथा गलतफहमी का सही रूप से निरूपण कर लिया जाए। इस दुनिया में तीन चौथाई झगड़े गलतफहमी के आधार पर होते हैं। यदि परस्पर जी खोलकर शुद्ध मन से अपने प्रतिपक्षी के साथ बातचीत करते रहने की नीति अपनाई जाए तो द्वेष का सबसे जबरदस्त किला सहज ही ढह सकता है।

हमें द्वेषी नहीं, प्रेमी बनना चाहिए। दूसरों के प्रति दुर्भावना या घृणा लेकर नहीं, सद्भाव एवं स्नेह लेकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। हमारा अपना निज का लाभ, सुख और कल्याण इसी में है।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1962, पृष्ठ-36, 37

दुष्कृत्यों का विरोध सत्कर्मों का सहयोग

समाज में हो रही बुराइयों को रोकने के लिए ईश्वर ने सामूहिक जिम्मेदारी हर व्यक्ति को सोंपी है। उसका कर्त्तव्य है कि अनीति जहाँ कहीं भी हो रही है, उसे रोके, घटाने का प्रयत्न करे, विरोध करे, असहयोग बरते। जो भी तरीका उसको अनुकूल जँचे उसे अपनाए, पर कम से कम इतना तो होना ही चाहिए कि उस बुराई में अपना सहयोग प्रत्यक्ष और परोक्ष किसी भी रूप से न

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो। बुरे कामों की प्रशंसा तो कदापि न की जाए, उनके प्रति भर्त्सना, घृणा और विरोध की भावना तो अवश्य ही रखी जाए।

इसी प्रकार सत्कार्यों के समर्थन, सज्जनों के सम्मान एवं प्रोत्साहन के लिए हममें से हर व्यक्ति को कुछ न कुछ करना चाहिए। ऐसे लोकोपयोगी कार्यों में यथासंभव योगदान देना चाहिए। कम से कम उनकी प्रशंसा करना और सद्भाव रखना तो नितांत आवश्यक ही है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1963, पृष्ठ-16

सभ्य समाज का स्वरूप

सभ्य समाज वह है जिसमें हर नागरिक को अपना व्यक्तित्व विकसित करने एवं प्रगति-पथ पर बढ़ने के लिए समान रूप से अवसर मिले। इस मार्ग में जितनी भी बाधाएँ हों, उन्हें हटाया जाना चाहिए। लिंगभेद के कारण स्त्रियों को, जातिभेद के कारण शूद्रों को, आर्थिक असमानता के कारण गरीबों को मन मारकर आगे बढ़ने की क्षमता होते हुए भी विवश होकर रुक जाना पड़ता है। हमें सामाजिक न्याय का ऐसा प्रबंध करना होगा कि हर व्यक्ति निर्बाध गति से प्रगति का समान अवसर प्राप्त कर सके। धन का वितरण इस प्रकार होना चाहिए कि किसी को न तो मुफ्तखोरी या आलस्य में पड़े-पड़े गुलछर्रे उड़ाने की सुविधा मिले और न कोई श्रम की चक्की में पिस जाने पर भी भोजन-वस्त्र से वंचित रह जाया करे। शोषक और शोषित वर्ग का वर्गभेद मिटाना चाहिए और हर व्यक्ति को अपने श्रम का उचित लाभ मिलने की सुविधा रहनी चाहिए। ऐसा समाज ही सभ्य समाज कहलाने का अधिकारी बन सकता है।

हमारी सामाजिक क्रांति का अर्थ, हिंदू जाति में प्रचलित कुछ कुरीतियों को हटा देने मात्र तक सीमित नहीं रहना चाहिए वरन एक सभ्य, सुविकसित एवं सुसंस्कृत समाज की रचना होनी चाहिए। यदि अनैतिक दुष्प्रवृत्तियाँ प्रचलित रहीं तो अन्य प्रकार की अन्य तरीके की बुराइयाँ फिर उठ खड़ी होंगी किंतु यदि सज्जनता को जनमानस का सहज स्वभाव बनाया जा सका तो आज की भयंकर दिखाई देने वाली कुरीतियाँ अनायास ही नष्ट हो जाएँगी।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1964, पृष्ठ-29

प्रथाओं का समर्थन-विरोध, विवेक के आधार पर

प्रगतिशीलता की प्राप्ति अपने में स्वतंत्र चिंतन विकसित किए बिना नहीं हो सकती। परंपराओं, प्रथाओं एवं चली आ रही पुरानी रीति-नीतियों एवं अंध-परंपराओं से प्रेरित होकर चलना छोड़कर किसी रीति-नीति को अपने स्वतंत्र चिंतन से औचित्य के तराजू पर तोलकर अपनाना ही प्रगतिशीलता है। कोई परंपरा अथवा प्रथा केवल इसलिए अपनाए रहना कि वह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राचीनकाल से चली आ रही है अथवा किसी रीति-नीति को केवल इसलिए अपना लेना कि वह आधुनिक है, अप्रगतिशीलता है। प्रगतिशीलता तो इसमें है कि हम किसी भी रीति-नीति को प्राचीनता अथवा अर्वाचीनता के आधार पर न अपनाकर उसकी उपयोगिता के आधार पर अपनाएँ। अनुपयोगी प्राचीन परंपरा को छोड़ने और उपयोगी आधुनिकता को अपनाने का साहस रखने वाले ही प्रगतिशील कहे जा सकते हैं।

आज यदि भारतीय समाज को उन्नति करना है, एक सबल एवं सशक्त राष्ट्र बनकर, दूसरों के प्रभाव एवं निर्भरता से मुक्त होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त करना है, संसार के अन्य उन्नत राष्ट्रों के समकक्ष अपना सम्मानपूर्ण स्थान बनाना है, तो उसे प्रगतिशील बनकर अपनी सारी अंध-परंपराओं को निकाल फेंकना होगा, अनुपयोगी एवं हानिकारक प्रथाओं को त्यागना होगा और तिलांजलि देनी ही होगी उन कुरीतियों को जो प्रगति-पथ पर चट्टान की तरह अड़ी हुई मार्ग रोके हुए हैं।

आज केवल अतीत के गौरव के नशे में झूमते रहने से काम नहीं चलेगा। आज संसार की परिस्थितियों को खुली आँखों से देखना होगा और वस्तुस्थिति को स्वतंत्र बुद्धि से समझना ही होगा, तभी हममें वह चेतना जाग्रत हो सकेगी, जिसके प्रकाश में अपने कर्त्तव्य को ठीक-ठीक देख सकेंगे। यदि अतीत की समीपता हमें वांछनीय है तो फिर हमको निकट अतीत तक ही नहीं, अपने देश के आदिम अतीत तक की यात्रा करनी होगी और अपने समाज की नवरचना के लिए उन वैदिक युगीन परंपराओं एवं रीतियों-नीतियों को लाना होगा, जो आज के समय की आवश्यकता पूरी कर सकें और एक उज्ज्वल सामाजिक भविष्य के लिए उपयोगी हो सकें।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1966, पृष्ठ-14

समाज का कर्ज भी चुकाएँ

शरीर और मन का ही नहीं, आत्मिक स्तर का विकास भी किया जाना चाहिए। इसके लिए परमार्थ प्रयोजनों के कुछ कार्य अवश्य करने चाहिए। दान-पुण्य के नाम पर धन की बरबादी करने वाले बहुत हैं। हमें विवेकपूर्ण परमार्थ करना चाहिए। जिससे विश्व में सत्प्रवृत्तियों को, सदाचरण को और सद्भावनाओं को प्रोत्साहन मिले, वे ही कार्य परमार्थ हैं। ऐसे परमार्थ कार्यों में अपने समय, श्रम, बुद्धि, मनोयोग, धन एवं व्यक्तित्व का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहना चाहिए। हमें अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी जीना चाहिए। इस संसार से हमने बहुत कुछ पाया है। आहार, वस्त्र, विद्या, व्यवहार, धन, मनोरंजन आदि सब कुछ समाज का ही दिया हुआ है; इसके बदले हमें भी कुछ ऐसे प्रयत्न निरंतर करते रहने चाहिए, जिनसे इस संसार की उत्कृष्टता में अभिवृद्धि होती चले।

आत्मबल वृद्धि के लिए उपासना, आत्मशोधन और परमार्थ तीनों का ही समावेश आवश्यक है। भगवान का नित्य स्मरण करें। अपने दोष-दुर्गुणों से नित्य संघर्ष करें और उन्हें हटाएँ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्गुणों और योग्यताओं को बढ़ाने के लिए नित्य पुरुषार्थ करें। निजी पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरी-पूरी ईमानदारी और तत्परतापूर्वक निभाएँ। जीवन अपने और अपने घर वालों के लाभ में ही न जी डालें वरन देश, धर्म, समाज और संस्कृति को ऊँचा उठाने के लिए भी समुचित ध्यान दें, प्रयत्न करें और जितना संभव हो अधिक-से-अधिक त्याग भी करें। उसी रीति-नीति पर सुसंचालित जीवनक्रम 'साधना' कहलाता है। हमें ईश्वर की उपासना और जीवन की साधना, उत्कृष्ट भावनाओं के साथ करनी चाहिए, तभी जीवनोद्देश्य की प्राप्ति संभव हो सकेगी।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1968, पृष्ठ-41

व्यापारी और कारखानेदार पूरी ईमानदारी बरतें

जीवननिर्माता 'धर्म' का आधार है—सत्य और ईमानदारी। मनुष्य जो कुछ कहे, करे और सोचे उसका आधार सत्य ही होना चाहिए। जिसने आत्मनिर्माण के लिए धनाढ्यता को आदर्श बनाया है, उसे चाहिए कि उसने धन के लिए जिस व्यवसाय को अपनाया है उसमें पूरी तरह ईमानदार रहे। यदि दुकानदारी करता है तो पूरा तोले, उचित मूल्य ले, खरा माल दे, ठीक पैसे बतलाए। वस्तु, मूल्य तथा उसके गुण बतलाते समय सच बोले। जिस कीमत में किसी एक ग्राहक को वस्तु दे, उसी कीमत में दूसरे को भी दे। मुनाफा कमाने के लिए वस्तुएँ छिपाकर न रखे। होते हुए किसी से इनकार न करे। बाल-वृद्ध सभी के साथ उसकी इसी प्रकार की एक जैसी ही नीति रहनी चाहिए। किसी अनजान, अबोध अथवा निर्बल से चीज होते हुए भी इनकार कर देना अथवा ज्यादा दाम लेकर देना और किसी जानकार, बुद्धिमान अथवा बलवान व्यक्ति को अलभ्य वस्तुएँ भी ठीक दामों पर दे देना, व्यापार जैसे पवित्र काम में एक बड़ा कलंक है।

व्यापारियों और कारखानेदारों को चाहिए कि वे खरा माल बेचें, बनाएँ; नकली अथवा निकृष्ट माल बाजार में न भेजें, अधिक मुनाफाखोरी से बचें। लागत के अनुसार कीमत लें। मजदूरों तथा कर्मचारियों को उचित पारिश्रमिक दें। शोषण, मुनाफाखोरी और कालाबाजारी की नीति से बचें। इन सब आदर्शों के साथ धनाढ्यता का लक्ष्य पाने वाले ही उस दिशा में आत्मनिर्माता माने जाएँगे।

जिसका लक्ष्य एक अच्छा श्रमिक बनना हो, वह किसी भी काम को पूरे तन-मन के साथ पूरे समय भर करे। पारिश्रमिक की मात्रा के अनुसार अपने श्रम की मात्रा घटाने-बढ़ाने के बजाय हर स्थिति में पूरी ईमानदारी बरतें अर्थात पारिश्रमिक भले ही कम हो लेकिन अपने श्रमदान की मात्रा पूरी रखें। कर्मचारियों को चाहिए कि वे अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का निर्वाह पूरी ईमानदारी के साथ करें। उनके काम पर आने का जो नियत समय हो, अकारण ही उसमें देर न करें। पूरे समय एकनिष्ठ भाव से काम करें। समय पूरा होने से पहले काम न छोड़ें। कामचोरी,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहस्योद्घाटन, चुगली आदि से बचे रहें। इस प्रकार अपने साधारण कामों में भी पूरी ईमानदारी और सत्य का निर्वाह करके, आत्मनिर्माण किया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1970, पृष्ठ-16

नर और नारी एकदूसरे के पूरक

सर्वसाधारण को यह समझाया जाना चाहिए कि नारी न भोग्या है, न रमणी और न कामिनी। यह भी मनुष्य ही है, अगणित विभूतियों की धनी है। नर की पूरक है। दोनों हिल-मिलकर सहयोगी-सहचर की तरह रहें यही स्वाभाविक, उचित और न्यायसंगत है। प्रतिबंधों के पीछे जिस व्यभिचार पर नियंत्रण की बात सोची जाती है, वह सर्वथा निरर्थक है। व्यभिचार मात्र क्रिया नहीं है, वस्तुतः वह दूषित दृष्टि ही है, जिसमें दृष्टि दोष भरा पड़ा है, वह अविवाहित भी व्यभिचार का दंड भुगतेगा और जिसकी भावनाएँ पवित्र हैं, वह विवाहित रहते हुए भी ब्रह्मचारी है। हमें इसी प्रवृत्ति का विकास करना चाहिए और रमणी, कामिनी की भाषा में सोचना बंद कर देना चाहिए। कला के नाम पर जिन दुष्ट-दुरात्माओं ने नारी को वेश्या का स्थान देने की ठान ठानी है, उन्हें अपराधियों की पंक्ति में खड़ा करना चाहिए। नारी भी नर की भाँति मात्र मनुष्य है और मनुष्य को मनुष्य से सहयोग-संपर्क रखने की छूट होनी ही चाहिए। यह मानवीय और सामाजिक न्याय की माँग है जिसे अधिक दिन तक बेरहमी के साथ दबाया नहीं जाना चाहिए। परस्पर पूरक रहकर सहयोग और सद्भाव की, नेह और सौजन्य की, भावनाओं का विकास करते हुए ही हम वांछनीय एवं स्वाभाविक स्थिति का समाज विनिर्मित कर सकते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से तो यह नितांत आवश्यक है। प्राण और रयि की समीपता के बिना आंतरिक उल्लास का उद्भव ही न हो सकेगा। माना कि पत्नी के बिना सरसता, बहन के बिना सौहार्द्र, पुत्री के बिना स्नेह की धाराएँ सूखी ही पड़ी रहेंगी और नारी को अछूत मानने वाला नर मरघट में रहने वाले प्रेत-पिशाच की तरह एकाकीपन की आग में जलता रहेगा। इसी प्रकार प्रतिबंधित नारी भी मणिविहीन सर्प की तरह खोई-खोई भूली-भटकी-सी अशांत, उद्विग्न और अविकसित बनी रहेगी।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1971, पृष्ठ-47, 48

समाज ने हमें दिया हम भी समाज को कुछ दें

हमें समूह का एक अंग होकर रहना चाहिए। अपने को समाज का एक घटक अनुभव करना चाहिए। प्रगति एकाकी नहीं हो सकती। सुविधाओं का उपभोग एकाकी किया जाए तो उससे अगणित विकृतियाँ उत्पन्न होंगी। बाहर ईर्ष्या-द्वेष बढ़ेगा, आक्रमणकारी बढ़ेंगे और व्यसनों की भरमार आ धमकेगी। अंतर को चोर जैसी आत्मग्लानि खाने लगेगी, परिवार में आपा-धापी पैदा होगी। व्यक्तिगत बड़प्पन के प्रयत्नों को ही तो 'स्वार्थ' कहा जाता है। स्वार्थी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्मान नहीं, तिरस्कार प्राप्त करता है। उस मार्ग पर चलते हुए उत्थान नहीं, पतन ही हाथ लगता है। संकीर्णता की परिधि में आबद्ध पोखर का जल सड़ेगा और सूखेगा ही। स्वच्छता और सजीवता तो प्रवाह के साथ जुड़ी हुई है। बहता हुआ जल ही सराहा जाता रहा है।

हम पृथकतावादी न बनें। व्यक्तिगत बड़प्पन के फेर में न पड़ें। अपनी अलग से प्रतिभा चमकाने का झंझट मोल न लें। समूह के अंग बनकर रहें। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति देखें और सबके सुख में अपना सुख खोजें। यह मानकर चलें कि उपलब्ध प्रतिभा, संपदा एवं गरिमा समाज का अनुदान है और उसका श्रेष्ठतम उपयोग समाज को सज्जनतापूर्वक लौटा देने में ही है।

समुद्र बादलों को देता है। बादल जमीन को देता है। जमीन नदियों के द्वारा उस जल को पुनः समुद्र में पहुँचा देती हैं। यही क्रम विश्व की स्थिरता और हरीतिमा, शांति और शीतलता का आधार है। हम अपने को विस्तृत करें। सबको अपने में और अपने को सबमें देखें। आत्माओं में चमकती हुई परमात्मा की सत्ता को समझें। यदि ऐसा कर सके तो हमें व्यक्तिवाद की तुच्छता छोड़कर समूहवाद की महानता ही वरण करनी पड़ेगी।

—अखण्ड ज्योति जून 1972, पृष्ठ-50

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वयं महान बनें, दूसरों को भी महान बनाएँ

हम अपने जीवन को अनुकरणीय बनाएँ। सत्य और प्रेम हमारी सांस-सांस में रमे हों। दया, सौजन्य, संयम, सेवा और सहानुभूति हमारे प्रत्येक आचार-विचार में पल्लवित-पुष्पित हों, तभी सच्चे अर्थों में हम मानव कहलाने के योग्य हो सकते हैं।

हम शांतिपूर्वक जिएँ और दूसरों को भी जीने दें। जो भूले- भटके हैं, उन्हें जीवन का सही रास्ता दिखाएँ। उन्नति-पथ पर जो चल रहे हैं, उन्हें आगे बढ़ने में सहयोग दें। स्वयं तो हम महान बनें ही, दूसरों को भी महान बनाएँ।

यह समस्त विश्व परमात्मा का ही प्रतिरूप है। वही समस्त प्राणियों में समाया है। मैं-तू, अपना-पराया, यह जो वैयक्तिक सत्ता की प्रतीति है, भ्रम मात्र है। जीवन का वास्तविक लक्ष्य है—वैयक्तिक सत्ता का समष्टि, ईश सत्ता में मिल जाना। इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए विषयवस्तु को ग्रहण करना है। संसार में असंख्य प्राणी हैं और सबको ही अपनी आवश्यकताएँ पूर्ण करनी हैं। अतएव हमें भी अधिक का लोभ न करते हुए अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही ग्रहण करना चाहिए। उससे अधिक लेना तो पाप है, अनधिकार चेष्टा है।

वस्तुतः लेने और देने, पाने और त्याग करने के विश्व नियम के अनुकरण में ही प्राणिमात्र का कल्याण सन्निहित है। त्याग ही प्राप्ति का आधार है। जो त्याग नहीं कर सकता, उसे प्राप्ति का भी अधिकार नहीं। संसार की इस यज्ञशाला में त्याग की आहुति देकर हमें भी ईश्वरीय प्रयोजन में सहयोग देना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1972, पृष्ठ-12

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग परिवर्तन के देवता को परिवार का अंग समझें

समाज-निर्माण के लिए हमें सृजनसेना का सैनिक बनकर संगठनात्मक, प्रचारात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक मोरचे सँभालने चाहिए। इसके लिए अपने समय और साधनों का अधिकाधिक अनुदान विश्वमानव के चरणों पर समर्पित करना चाहिए। साधारणतया आठ घंटे आजीविका उपार्जन के लिए, सात घंटा शयन-विश्राम के लिए, पाँच घंटा घरेलू और शारीरिक कामों के लिए, कुल मिलाकर 20 घंटे निजी कामों में खरच करने चाहिए और 4 घंटे समाज-निर्माण की उपरोक्त चार क्रिया-प्रक्रियाओं में लगाने चाहिए। एक घंटा समय और एक रुपया प्रतिदिन विचारक्रांति के लिए लगाना तो आरंभिक सदस्यता शर्त है। कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को इस न्यूनतम अनुदान तक सीमित न रहकर बढ़े-चढ़े त्याग-बलिदान का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। महीने में एक दिन की आजीविका समाज-निर्माण के लिए हर उदार व्यक्ति आसानी से खरच कर सकता है। यों यदि हृदय में विशालता हो तो घर-परिवार के एक सदस्य के रूप में युग परिवर्तन के देवता महाकाल को गिना जा सकता है। समझा जा सकता है कि यदि एक संतान और होती तो उसका भी किसी प्रकार भरण-पोषण करना ही पड़ता। वैसा मानकर चला जाए तो निर्धन व्यक्ति भी इस महान प्रयोजन के लिए अपना अनुकरणीय अनुदान आर्थिक स्तर पर भी प्रस्तुत कर सकता है। समय, श्रम, प्रभाव, मनोयोग एवं धन जैसे समस्त साधनों की बढ़ी-चढ़ी मात्रा हमें युगदेवता के सम्मुख प्रस्तुत करनी चाहिए। पेट और प्रजनन के लिए, लोभ और मोह के लिए ही सारी शक्तियाँ लगी रहें तो यह किसी आदर्शवादी और विचारशील व्यक्ति के लिए लज्जा की बात ही समझी जा सकती है।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1973, पृष्ठ-64

संगठन की शक्ति से असुरता का विनाश

हमें घर-गृहस्थी तथा जीविकोपार्जन के दायित्व के साथ ही सामाजिक कार्यों में भी हाथ बँटाना चाहिए। उनकी उपेक्षा का परिणाम सबको कभी-न-कभी भुगतना ही पड़ता है। अड़ोस-पड़ोस में चोर-बदमाश रहता है, अनैतिक कार्यों का अड्डा चलता है, समाज-विरोधी एवं देश के दुश्मन अपनी गतिविधियों का संचालन करते हैं, पर बहुत कम लोग इनकी सूचना अधिकारियों तक पहुँचाते हैं। सच तो यह है कि इनके विरुद्ध आवाज उठाना अपनी जिम्मेदारी नहीं मानते। हम जान-बूझकर सब कुछ देखते और सहते रहते हैं।

इस प्रकार अपराधी निडर होकर बुरे काम करता है। दूसरे भी देखा-देखी इसी दिशा में अग्रसर होते हैं। निहित स्वार्थी, अवांछनीय तत्त्वों को सहारा ही नहीं देते, अपितु उनका बचाव भी करते हैं। इनका भंडाफोड़ करना हमारा फर्ज है।

चरित्रभ्रष्टताजनित दोषों को दूर करने के लिए प्रतिरोध से उत्पन्न संकट का मुकाबला करना अनिवार्य है। घातक घाव का आपरेशन कराना बुद्धिमानी है। विकार बढ़ जाने पर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीमार के मरने का भय रहता है। मानवता को दानवता से बचना है तो समय रहते तैयारी करनी ही पड़ेगी।

इसके लिए जहाँ संकल्प और प्रयास अकेले करें, वहीं समाज को भी संगठित करें। हमें जानना चाहिए कि अकेले कोई बच नहीं सकता। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। संघ की शक्ति में अपनी शक्ति को शामिल करने में उसे कम खतरा प्रतीत होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सामूहिक आंदोलन में जनता सहज ही सहयोग करने लगती है। एक को संघर्ष हेतु प्रस्तुत देखकर दूसरों की आत्मा भी सन्मार्ग पर अभियान के निमित्त आंदोलित हो पड़ती है।

इस प्रकार सामूहिक चिंतन एवं क्रांति-अभियान के फलस्वरूप अंतत: अपराधी मनोवृत्ति घटने लगती है। छिटपुट, छिपते-भागते देवों पर दानव सदैव हावी रहे, पर उन्हीं देवों की संगठित शक्ति असुरता के विनाश में समर्थ हो गई। पलायनवादी मानव स्वार्थपरायणता की भौतिक चिंतन धारा में मोड़ लाकर अपने आचरण सुधारें।

भारत की अध्यात्मवादी घोषणा स्पष्ट है, **''संघे शक्ति कलियुगे।''** तदनुसार सामूहिक संघर्षों को भ्रष्टाचारिता के विरुद्ध हर जगह चालू करें। सामाजिक उत्तरदायित्व खतरे उठाकर भी पूरा करना होता है।

अंत में अपने कार्यों व सामूहिक आंदोलनों का विश्लेषण नीति, न्याय और धर्म की कसौटी पर करके परख लिया करें। इस प्रकार से आज भी हम सामाजिक दायित्व-बोध युक्त समाज की संगठित शक्ति द्वारा चरित्रभ्रष्टताजनित विकारों का उपचार कर सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1975, पृष्ठ-51, 52

समाज के कल्याण में व्यक्ति का कल्याण

संकुचित और स्वार्थी व्यक्ति समाज का शोषण एवं अहित करते हैं। इस तरह के व्यक्ति समाज के घातक शत्रु होते हैं जो सदैव समाज में असहयोग की भावना फैलाते हैं और उसमें अनेक अव्यवस्थाएँ उत्पन्न करते हैं।

ऐसे व्यक्ति समाज को पतन के गर्त में ले जाते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति अविश्वस्त, छली, संदेहास्पद, भ्रष्ट, लूट-खसोट करने वाले एवं झगड़ालू होते हैं और ये स्वार्थी एवं व्यक्तिवादी विचारधारा के कारण समाज में पैदा होते और पनपते हैं।

स्वार्थपरता को समस्त पापों की जननी समझना चाहिए। अत: सुखी और संपन्न समाज तभी निर्मित हो सकता है, जब मानव व्यष्टिवादी विचारधारा छोड़कर समष्टिवादी बने। इसी में समाज का कल्याण है और व्यक्ति का भी हित है। समाज में पारस्परिक हमदर्दी, आपसी मदद, प्रेमभावना, उदारता, सेवा एवं संगठन की भावनाएँ अत्यंत आवश्यक हैं, तभी समाज का विकास और समृद्धि संभव है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज में व्यक्ति का सबसे महान दायित्व समाज-कल्याण एवं परमार्थ है। समाज के दीन-हीन, अपंग, वृद्ध, जर्जर एवं निराश्रित व्यक्तियों की सेवा-शुश्रूषा एवं पालन करना व्यक्ति का एक महान दायित्व है।

दूसरों के प्रति प्रेम, सहयोग, सहायता, त्याग और सहानुभूति की भावना के अभाव में जो व्यक्ति समाज के लिए हितकारी सिद्ध नहीं हो सकता है, ऐसा व्यक्ति समाज के लिए कलंक है। वह स्वयं ही अपने विकास को रोक देता है, इससे समाज का विकास स्वत: ही रुक जाता है। अत: समाज की समृद्धि एवं विकास के लिए व्यक्ति को दूसरों का कल्याण करना एवं परमार्थी बनना अत्यावश्यक है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1975, पृष्ठ-20

परमार्थ से स्वर्ग, यश और संतोष

मनुष्य को अन्य प्राणियों की तुलना में बोलने, सोचने, लिखने, पढ़ने, कृषि, उद्योग, चिकित्सा, शासन आदि की सुविधाएँ प्राप्त हैं, वह असंख्य मनुष्यों द्वारा उपार्जित क्रमिक विकास से एकदूसरे के लाभान्वित होते चलने का ही प्रतिफल है। यदि अनुदान की इस शृंखला का लाभ हमें न मिला होता तो निश्चय ही सघन वन प्रदेश में रहने वाले पशु स्तर के मनुष्यों में ही हमारी भी गणना हुई होती। हमें आज जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वे सभी असंख्य लोगों के श्रम, सहयोग से ही बनती और मिलती हैं। हमें जो लाभ दूसरों से मिलता है, वह दूसरों को हमें भी देना चाहिए और आदान-प्रदान की शृंखला को सजीव बनाए रहना चाहिए। एकाकी सुख-सुविधा और प्रगति की बात सोचना एक असंभव कल्पना है। मनुष्य समाज का विकास सामूहिकता के आधार पर हुआ है, प्रगति के इस मूलभूत आधार को बनाए रहना और बढ़ाते चलना हर मनुष्य का सामाजिक प्राणी होने के नाते परम पवित्र कर्त्तव्य है। स्वार्थ की निंदा और परमार्थ की प्रशंसा इसीलिए की गई है कि स्वार्थी व्यक्ति समाजसेवा के, लोकमंगल के प्रसंगों में कृपणता बरतता है और व्यक्तिगत सुविधाएँ संग्रह करने में मरता-खपता रहता है। परमार्थ को स्वर्ग, यश और संतोष देने वाला पुण्य माना गया है; क्योंकि उस नीति को अपनाकर मनुष्य अधिक उदार, दूरदर्शी एवं लोकोपयोगी बनता है। यही आत्मकल्याण का मार्ग है और उसी पर चलते हुए समाज-कल्याण का महान प्रयोजन पूरा होता है। जिस प्रकार हमें व्यक्तिगत और पारिवारिक सुविधाओं का ध्यान रहता है, उसी प्रकार सामाजिक प्रगति एवं सुव्यवस्था का ध्यान रखना चाहिए। इसलिए जितनी अधिक मात्रा में लोकोपयोगी कार्य बन पड़ें, उनमें अपनी शक्ति, सामर्थ्य का नियोजन हो सके उतना ही अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

समाज में अव्यवस्था उत्पन्न करने वाले, भ्रष्ट परंपराएँ प्रचलित करने वाले अनाचार, अपराधों से दूर रहना चाहिए और दूसरों को भी वैसा करने से रोकना चाहिए। सामाजिक सुव्यवस्था एक सार्वजनिक संपत्ति है, उसे सुरक्षित रखने में मनुष्य समाज के हर सदस्य को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राणपण से प्रयत्न करना चाहिए। अपने को उच्छृंखल आचरण नहीं करने देना चाहिए और न दूसरों को वैसा करने की छूट देनी चाहिए। प्रयास यही होना चाहिए कि उदार सहयोग की परंपराओं में प्रोत्साहन देने वाले लोकोपयोगी कार्य स्वयं करें और दूसरों को वैसा ही करने के लिए प्रोत्साहित करें। यह हमारे सामाजिक कर्त्तव्य हैं जिन्हें पालन करने के लिए सजगता, तत्परता बनाए रहनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1976, पृष्ठ-50

समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी समझें

मनुष्य एक सामाजिक मछली है जिसे सब कुछ पानी रूपी समाज से ही मिला है। उसी में उसका जीवन है। पानी विषैला हो जाए तो मछली न सुखी रह सकेगी और न जीवित। समाज का वातावरण भ्रष्टता और दुष्टता से विषाक्त हो जाए तो किसी सज्जन व्यक्ति की भी शांति सुरक्षित नहीं रह सकती। अस्त-व्यस्त समाज में हर किसी की प्रगति रुकी पड़ी रहेगी और शांति सुरक्षित न रहेगी। यदि नागरिक अपना ध्यान सामाजिक उत्तरदायित्वों की ओर से हटा लें तो फिर उसमें विकृतियाँ ही भरेंगी, जन-जीवन संकटग्रस्त ही होगा।

सामाजिक कर्त्तव्य भी इतने आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हैं, जितने शारीरिक और पारिवारिक उत्तरदायित्व। हमें सीमित और संकीर्ण नहीं होना चाहिए। शरीर और परिवार का ध्यान रखते हुए उतनी ही छोटी परिधि में सीमित, अवरुद्ध नहीं होना चाहिए। आत्मविकास की दिशा में बढ़ते चलने का विशाल दृष्टिकोण रखकर ही उदात्त जीवन जिया जा सकता है।

हम विशाल दृष्टिकोण अपनाएँ। शरीर और परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए समाज के प्रति, आत्मा के प्रति भी अपने उत्तरदायित्व समझें, इसी में दूरदर्शिता है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1979, पृष्ठ-14

सुख बाँटें, दुःख बटाएँ

अपने काम ही अपनी प्रसन्नता के आधार हो सकते हैं। अपने लोगों के साथ रहकर भी प्रफुल्ल रहा जा सकता है। अपनी परिस्थितियों को सँभालने और सुधारने का कार्यक्षेत्र भी इतना है, जिसमें कौशल व्यक्त करते हुए किसी के लिए भी प्रसन्न रखने का आधार बना रह सकता है। नई वस्तुओं में, नई परिस्थितियों में, नए व्यक्तियों में प्रसन्नता खोजते-फिरने की अपेक्षा यही अच्छा है कि जो कार्यक्षेत्र एवं परिकर उपलब्ध है उसी का स्तर उठाने में अपना कौशल प्रदर्शित किया जाए और उसी पुरुषार्थ के आधार पर प्रसन्न रहने का अपना स्वरूप बना लिया जाए।

अविश्वास और आशंका की हलकी-सी किरणें बनाए रहने पर खतरों से बचा और जागरूक रहा जा सकता है। किंतु उसकी अति में हानि ही हानि है। हर किसी को अविश्वास की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टि से देखा जाए, हर किसी पर संदेह किया जाए तो फिर इस संसार में कुरूपता और कुढ़न के अतिरिक्त और कुछ शेष ही न रहेगा। भविष्य की आशंका में निमग्न रहा जाए तो अपनी कुकल्पनाएँ ही चित्त को उद्विग्न बनाए रहने के लिए निमित्त कारण बन जाएँगीं, भले ही वस्तुतः वैसा कुछ होने वाला न हो ।

एकाकी व्यक्ति अपने आप को असहाय अनुभव करता है। जो व्यक्ति अपने को आत्मीयों और सज्जनों से घिरा हुआ अनुभव करते हैं, उन्हें मानवी सज्जनता और सहकारिता पर विश्वास रहता है। जो दूसरों का दुःख बँटाते और अपना सुख बाँटते रहते हैं, उन्हें हलकी-फुलकी, हंसती-हंसाती जिंदगी जीने का अवसर मिलता है। ऐसे लोग हर परिस्थिति में, हर स्थान में, हर प्रकार के व्यक्तियों के साथ रहते हुए भी अपनी प्रसन्नता को अक्षुण्ण बनाए रहते हैं।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1983, पृष्ठ-08

समस्त समस्याओं का समाधान—अध्यात्म

'सादा जीवन—उच्च विचार' का सिद्धांत अपनाते ही प्रस्तुत असंख्य समस्याओं में से एक के भी पैर न टिक सकेंगे। अपराधों की भरमार भी तब क्यों होगी जब हर व्यक्ति ईमानदारी, समझदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी की नीति अपनाकर श्रमशीलता, सभ्यता और सुसंस्कारिता को व्यावहारिक जीवन में स्थान देने लगेगा। गुजारे के लायक इतने साधन इस संसार में मौजूद हैं कि हर पेट को रोटी, हर तन को कपड़ा, हर सिर को छाया और हर हाथ को काम मिल सके, तब गरीबी-अमीरी की विषमता भी क्यों रहेगी? जाति-लिंग के नाम पर पनपने वाली विषमता का अनीतिमूलक और दुःखदायी प्रचलन भी क्यों रहेगा?

मनुष्य स्नेह और सहयोगपूर्वक रहने के लिए पैदा हुआ है। लड़ने, मरने और त्रास देने के लिए नहीं। यदि आपा-धापी न मचे तो फिर एकता और समता में बाधा उत्पन्न करने वाली असंख्य कठिनाइयों में से एक का भी कहीं अस्तित्व दृष्टिगोचर न हो। शुद्ध व्यवसाय की बलिवेदी पर जो प्रचुर साधन, प्रबंध, श्रम-कौशल का हनन करना पड़ता है, उसकी फिर क्या आवश्यकता रहे?

समाज के सामने असंख्य विकृतियों और व्यक्ति के सामने असंख्य समस्याओं के अंबार खड़े हैं। उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग समस्या मानकर उनके पृथक-पृथक समाधान खोजने में, यद्यपि विश्व की मूर्द्धन्य प्रतिभाएँ अपने-अपने ढंग से समाधान खोजने और उपचार खड़े करने के लिए भारी माथा-पच्ची कर रही हैं, पर उनसे कुछ बन नहीं पा रहा है। न अस्पतालों, चिकित्सकों द्वारा भारी धनराशि खरच कर रोग काबू में आ रहे हैं और न पुलिस, कानून, कचहरी आदि अपराधों को काबू में कर सकने में समर्थ हो रहे हैं। आत्मघाती दुर्व्यसनों के रहते बैंकों से भारी कर्ज व अनुदान बँटने पर भी गरीबी नहीं मिट सकेगी। इसके लिए समस्याओं के मूल में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाना होगा एवं यह सोचना होगा कि यदि जीवनक्रम अब भी न बदला गया तो सामूहिक आत्मघात सुनिश्चित है। अध्यात्म ही समस्त समस्याओं का एकमात्र समाधान सुझा सकता है। उसके पास ही सारे तालों की वह कुंजी है जो द्वार खोलकर प्रगति का पथ प्रशस्त कर सके।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1990, पृष्ठ-24

'जिओ और जीने दो' का राजमार्ग

समझदारों को नीतिनिष्ठा अपनाने के सत्परिणामों को ध्यान में रखना चाहिए। संसार में जितने भी अनुकरणीय, अभिनंदनीय व्यक्तित्व वाले सज्जन प्रकाश में आए हैं, उन सभी को अनिवार्य रूप से अपने को 'सादा जीवन उच्च विचार' की रीति-नीति अपनानी पड़ी है। प्रामाणिकता और प्रखरता की दुहरी कसौटियों पर खरा उतरना पड़ा है। सोने को तपाए जाने और काले पत्थर पर घिसे जाने के उपरांत ही मूल्यवान होने की मान्यता मिलती है। खोटे सिक्के तो जहाँ-कहीं पहुँचते हैं, वहीं दुत्कारे जाते हैं।

अच्छा हो, हम औसत नागरिक स्तर का निर्वाह अपनाएँ। मिल-बाँटकर खाएँ और हँसती-हँसाती जिंदगी बिताएँ। "जिओ और जीने दो" का यही राजमार्ग है। मनुष्य की मौलिक आवश्यकताएँ इतनी अधिक नहीं हैं कि उनकी पूर्ति मेहनत और ईमानदारी की कमाई से सरलतापूर्वक संभव न हो सके। इंद्र जैसा वैभव और कुबेर जितनी संपत्ति-साधन बटोरने के लिए ही उन्मत हुआ व्यक्ति कुकर्मों पर उतारू होता है और नीति-अनीति का विचार किए बिना कुछ भी करने पर उतारू होता है। यदि इस उन्माद पर अंकुश किया जा सके, तो विलासिता, तृष्णा, संचय एवं अपव्यय की वह ललक भी काबू में आ सकती है, जिसके कारण दुष्टचिंतन और भ्रष्ट आचरण अपनाए बिना काम नहीं चलता।

जिनका उपार्जन अधिक है, उनके लिए भलमनसाहत का एक ही मार्ग है कि बचत को लोकमंगल के लिए, सत्प्रयोजनों के लिए नियोजित करने की योजना हाथोंहाथ बनती रहे। अपव्यय की होली जलाने की अपेक्षा उसे गिरों को उठाने और उठों को उछालने के निमित्त खरच करते रहने की बुद्धिमत्ता अपनाएँ। शांति से रहने और प्रगति का वातावरण बनाने के लिए यही उचित और यही आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1990, पृष्ठ-36

सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नहीं, अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-6

मानव धर्म

बढ़ो और बढ़ाओ—उठो और उठाओ

हर एक दृष्टि से, हर एक क्षेत्र में हमने एक ही बात पाई है कि जो शारीरिक दृष्टि से बलवान है, उसको शारीरिक सुख है, जो मानसिक दृष्टि से बलवान है, उसको सांसारिक सुख है, जो आत्मिक दृष्टि से बलवान है, उसको आंतरिक सुख है। सुख और बल एक ही वस्तु के दो पहलू हैं; दोनों एकदूसरे के साथ अनन्य रूप से जुड़े हुए हैं। जो बलवान हैं वे सुखी रहेंगे, स्वर्ग भोगेंगे जो निर्बल हैं, उनके लिए दु:ख और नरक ही निश्चित है। प्रकृति का—परमात्मा का यह बड़ा कठोर नियम है। यह दया और निर्दयता के साथ ही न्याय से परिपूर्ण है। जो भी है, पर है। सत्य, अटल, प्रत्यक्ष और सर्वत्र दिखाई देने वाले इस नियम को, ईश्वरीय आदेश को, हमें ठीक प्रकार अनुभव करना है और तद्नुसार आचरण के लिए तत्पर होना है।

पाठको! फिर हमारे 32 वर्ष के अनुभव, ज्ञान और अध्ययन के सारांश को ध्यानपूर्वक सुनें और उचित जँचे तो उसे गाँठ बाँध लें। शक्तिसंचय के लिए, आत्मोन्नति के लिए, भीतरी और बाहरी योग्यताएँ बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्न करना आपका सबसे पहला काम होना चाहिए। इसके बाद दूसरा काम यह है कि अपनी उपार्जित शक्तियों को भोग और अंहकार की पूर्ति में नहीं, वरन मनुष्य जाति को ऊँचा उठाने में, सत् की ओर ले जाने में खरच करो। बढ़ो और बढ़ाओ, उठो और उठाओ, तरो और तारो, यही हमारा अपनी बत्तीसवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में संदेश है।

—अखण्ड ज्योति दिसंबर 1944, पृष्ठ-240

अधिकार की माँग के साथ कर्त्तव्य न भूलें

आजकल जितनी विषमताएँ चल रही हैं, उनमें कर्त्तव्यहीनता ही मुख्य कारण है। मजदूरों से सात या आठ घंटे काम लेना अधिकार है, लेकिन उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखना कर्त्तव्य। हम कर्त्तव्य को जब भूल जाते हैं, तब मजदूरों में विद्रोह की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक रहता है। इसी प्रकार हमारी पत्नी ऐसा करे, वैसा करे, उससे ऐसा कराना, वैसा कराना हमारा अधिकार है, यह तो स्मरण रहे, लेकिन उसे संतुष्ट करना, उसे योग्य बनाना, उसको उचित संरक्षण देना जो हमारा कर्त्तव्य है, उसे हम भूल जाएँ तो क्या हमारा दांपत्य जीवन सुखी रह सकता है? जिस प्रकार कर्त्तव्य भूलकर हम कलह की सृष्टि करते हैं और अपने तथा दूसरे के लिए अशांति का बीज बोते हैं, उसी प्रकार समाज, देश तथा विश्व के प्रति अपने अधिकार की माँग रखकर और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके प्रति अपने कर्त्तव्य को भूलकर हम सामूहिक अशांति की स्थापना करते हैं। परिवार के साथ हमारा नित्य का संबंध है और उस पर किए गए कार्यों का प्रभाव तत्काल हम पर पड़ता है, उसी प्रकार समाज, राष्ट्र एवं विश्व के साथ हमारे व्यावहारिक जीवन का नित्य का संबंध रहते हुए भी हम पर उसके साथ किए गए कार्य का तुरंत प्रभाव नहीं पड़ता। धीरे-धीरे जब उनका सामूहिक रूप बन जाता है, तब वह ऐसा प्रभावशाली हो जाता है कि हमारी सत्ता स्थापित रहने में भी बाधक लगने लगता है। आज की समस्त विषमताएँ, अशांतियाँ, युद्ध, हिंसा ये सबके सब मानव के प्रति मानव का जो कर्त्तव्य है, उसकी उपेक्षा करने का ही परिणाम है। प्रत्येक व्यक्ति उसका जिम्मेदार है और आज या कल किसी-न-किसी रूप में प्रत्येक मानव पर उसका प्रभाव पड़ रहा है। इसीलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य को अपनी सुख-शांति की रक्षा के लिए भी तात्कालिक अधिकार के प्रलोभन में न फँसकर स्थायी सुख-शांति के लिए कर्त्तव्य को विस्मरण नहीं करना चाहिए। कर्त्तव्य का एकमात्र यही आदेश है कि हम दूसरे से जो लेना चाहते हैं, उसे अपने पास से देने की गुंजाइश प्रत्येक मानव को रखना चाहिए और जब तक यह गुंजाइश उसमें न प्रकट हो, तब तक अपनी माँग को जोरदार नहीं बनाना चाहिए। इससे भी अधिक श्रेयस्कर यह है कि कर्त्तव्य की बात स्मरण रखना चाहिए, कर्त्तव्य-बुद्धि से प्रेरित होकर कार्य करना चाहिए, लेकिन उसके मूल में प्रतिदान की भावना नहीं रखनी चाहिए। यह निश्चित है कि यदि हम अच्छा करेंगे, तो प्रतिफलस्वरूप हमें अपने आप ही अच्छा मिलेगा।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1948, पृष्ठ-15, 16

मानवता का गौरव बढ़ाएँ

मानवता का ही दूसरा नाम भारतीय धर्म, भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति है। हमारे पूर्वज मनुष्यता के उपासक रहे हैं, उन्होंने साध्य की प्राप्ति के लिए साधन की पवित्रता की कभी भी उपेक्षा नहीं की है, वरन इस बात पर जोर दिया है कि हमारी आवश्यकता तथा इच्छाएँ भले ही अपूर्ण रह जाएँ, परंतु उनकी प्राप्ति का मार्ग न्यायोचित एवं धर्मानुकूल ही होना चाहिए। अधर्म एवं अन्याय से प्राप्त होने वाले सुख एवं वैभव की यहाँ सदा निंदा ही की जाती रही है।

हमारी संस्कृति का एक ही संदेश है कि सच्चे अर्थों में मनुष्य बनें और जीवन के सभी क्षेत्रों को मानवता से ओत-प्रोत करें और संसार में से पशुता के अंधकार को हटाकर उस दिव्य आचार-विचार की ज्योति प्रकाशित करें, जिसके प्रकाश में मानव प्राणी अपने आप को सच्चा इनसान अनुभव कर सकें, स्वयं शांति से रह सकें और दूसरों को शांतिपूर्वक रहने दें। आइए, इस महान अनुष्ठान में हम सब लोग संलग्न हों। स्वयं मनुष्य बनें, अपने आचरणों और विचारों को मानवता से परिपूर्ण करते हुए ऐसा आदर्श उपस्थित करें कि दूसरे भी हमारा अनुकरण करते हुए मानवता का गौरव बढ़ाएँ।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1953, पृष्ठ-44

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी को कष्ट न पहुँचाएँ

मनुष्य के समान ही पशु-पक्षी आदि को पीड़ित करना भी अधर्म है। जब हमें कोई शक्तिशाली व्यक्ति पीड़ित करे तो हमें स्वयं तो कष्ट होता ही है, साथ ही हमारा मन उस पीड़क को कोसता भी है, उसी प्रकार आप जिस निर्बल को सताएँगे तो वह भी आपको शाप देगा। आपके द्वारा किए गए अन्याय की प्रतिक्रिया स्वरूप उसका प्रतिफल भी आपको ही भोगना पड़ेगा।

आज अत्याचारी अपने अन्याय पर भले ही मुस्करा ले, परंतु जब अंत समय आएगा और अट्टहास करती हुई मृत्यु अपना भयंकर पंजा तेजी से जकड़ने का यत्न करेगी उस समय अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप करने के सिवाय और कुछ भी न बन पड़ेगा।

परमात्मा द्वारा रची गई सृष्टि में सभी जड़-चेतन प्राणी अपनी-अपनी सामर्थ्यानुसार एकदूसरे का उपकार करते हैं। वे एकदूसरे का विनाश नहीं, उत्कर्ष चाहते हैं। जब पशु-पक्षियों तक में उपकार की भावना भरी है तो हम मनुष्य होकर भी दूसरों का उपकार क्यों न करें!

हमें परोपकारी बनना चाहिए। दूसरों को कष्ट में पड़ा देखकर उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करें तो इसमें परमात्मा भी प्रसन्न होते हैं। पड़ोसियों से सद्व्यवहार करना भी हमारे धर्म में सम्मिलित है। इसलिए हमें ऐसी चेष्टा करनी चाहिए, जिससे हमारे द्वारा किसी को कोई कष्ट न होने पाए।

हमारे ऋषियों ने मानव धर्म की जो व्याख्या की है उसका सार यही है कि मनुष्य यदि ईश्वर को मानता है और उसका धर्म में विश्वास है तो उसे सदाचारी, सत्यनिष्ठ और सत्यवक्ता होना चाहिए। दया, प्रेम, क्षमा आदि गुण जिस मनुष्य में हैं, वह सभी का प्रीतिभाजन बन सकता है। अत: अपना कल्याण चाहते हो तो धर्म-मार्ग का अवलंबन करो। इसी में सब प्राणियों का परम हित है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1964, पृष्ठ-06

मनुष्यता ही वास्तविक धर्म है

चाहे किसी भी धर्म को न मानना परंतु मनुष्य बनकर रहना बहुत अच्छा है। मूढ़ धर्म को मानना अच्छा नहीं है। मूढ़ धर्म का अर्थ है—धर्म का सत्य, सुंदर और शिवरूप नष्ट करके अथवा धर्म में से मनुष्यता निकालकर उसे मिथ्याचार, पशुता और क्रूरता से जोड़ देना। आजकल वास्तविक धर्म का स्थान इसी मूढ़ धर्म ने ले लिया है और निस्संदेह यह घृणा करने के योग्य है।

ऐसे धर्म में मनुष्यता नहीं रहती। जहाँ मनुष्यता है, वहाँ चाहे धर्म का नाम हो या न हो, 'धर्म' वहाँ अवश्य रहता है। धर्म और मनुष्यता पृथक नहीं किए जा सकते। मनुष्य बनने के लिए धर्म है। यदि धर्म न होता, तो आज मनुष्य भी न होता, मनुष्य का इतिहास भी न होता, संस्कृति सभ्यता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का विकास भी न होता और हमारा जीवन, जीवन के रस से शून्य जड़ के समान अथवा ज्ञानहीन पशु के जीवन से महत्त्वपूर्ण न होता।

यह धर्म ही है, जिसने दया, प्रेम, सेवा, सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य का संदेश दिया। वह धर्म ही है जिसने शिक्षा, कला-कौशल, संपूर्ण ज्ञान और विज्ञान को सुरक्षित रखा। धर्म मनुष्य की आत्मा है, वह देखने में नहीं आता। यदि दीख गया, तो वह धर्म नहीं रहता। अंदर रहकर धर्म जीवन में प्राण भरता है और उसे ज्योतिर्मय करता है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1947, पृष्ठ-05

मानव धर्म की स्थापना से मिटेगा भेदभाव

आगामी युग में जो सबसे बड़ा परिवर्तन होगा, वह मनुष्य-मनुष्य के बीच में आत्मभाव की स्थापना होगी। वैसे तो यह बात बड़ी कठिन जान पड़ती है, पर यदि समाज और सरकार इसका निश्चय कर लें और बालकों को आरंभ से वैसी ही शिक्षा दी जाए तो ज्ञानपूर्वक नहीं तो स्वभाववश एकदूसरे से आत्मीयता की भाँति व्यवहार करने लगेंगे। जो नियम परंपरागत रीति-रिवाजों में मिल जाते हैं तो लोग चाहे उनका पूरा मर्म न समझ सकें पर पालन करने लग जाते हैं।

अध्यात्म भावना के प्रसार का परिणाम यह होगा कि मनुष्यों का दृष्टिकोण विशाल बनेगा और वे विश्वमानव की भावना को ग्रहण करने लगेंगे। आजकल विभिन्न देशों के निवासियों में जो वेशभूषा, भाषा, शिष्टाचार के नियम सामाजिक रीति-रिवाज के अंतर पाए जाते हैं, उस समय पारस्परिक सद्भावना, सहयोग और मिलते-जुलते रहने से दिन पर दिन घटते जाएँगे। इससे विभिन्न जातियों और नस्लों के व्यक्तियों के बीच भेदभावना मिटने में बड़ी सहायता मिलेगी और सौ-दो सौ वर्ष बाद ऐसा समय आ जाएगा, जबकि एक परम पिता के पुत्र होने के नाते समस्त मनुष्य अपने को एक ही मानव जाति का सदस्य समझने लगेंगे।

संसार में इस प्रकार के मानव धर्म का विकास होने से वर्तमान समय में जो विभिन्न मजहब वालों में बहुत अधिक घृणा की भावना पाई जाती है, वह प्रेमभाव में बदल जाएगी। लोग समझने लगेंगे कि अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाना और उसे परसेवा, परोपकार में लगाना ही सच्चा धर्म है। शेष बातें कर्मकांड मात्र है, जिनको अपनी इच्छानुसार किया जा सकता है। यदि मूल ठीक दशा में रहेगा तो फूल और फल अपने आप ठीक हो जाएँगे। इस पर आजन्म चलते रहने से लौकिक लाभों के साथ अंत में मोक्ष का सुख मिलना स्वाभाविक ही है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1967, पृष्ठ-49

हर व्यक्ति मानवता की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो

मानवता की रक्षा, विकास एवं सेवा के लिए हममें से प्रत्येक मनुष्य को सतत जागरूक होना चाहिए। स्वयं कोई भी विनाशात्मक कार्य न कर रक्षात्मक एवं रचनात्मक कार्य करने के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए पूरी शक्ति जुटाए रखिए। यदि हममें से प्रत्येक व्यक्ति मानवता की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाए, तो निश्चय ही हमारे परिवार, मुहल्ले, प्रांत, देश से पशुता, बर्बरता और भ्रष्टाचार का अंत हो सकता है। प्रत्येक मुहल्ले में सेवा सभाएँ, मानव-गोष्ठियाँ, समितियाँ, छोटे-छोटे क्लब बनें, जो ऊँच-नीच, गरीब-अमीर का झूठा कृत्रिम भेदभाव भूलकर मानव मात्र के कल्याण के लिए भ्रातृभाव, प्रेम, सौहार्द्र, समता, सहकारिता, सहानुभूति, सहायता, संगठन का वातावरण पैदा करें। एकदूसरे की सहायता करे, मंदिर तथा धर्म स्थानों पर मानव सेवा दलों के संगठन और शिक्षा के केंद्र बनें। प्रत्येक मानव को शांति, सहनशीलता, क्षमा के साथ अनीति और अत्याचार को दूर करने के लिए निर्भयता, वीरता और साहस का संचय करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1953, पृष्ठ-39, 40

समाजसेवी संगठन

दान की सार्थकता आवश्यक

दीन, दुखी, पीड़ित, परेशान, भूखे, रोगी, अपंग स्थिति में पड़े हुए व्यक्तियों को दान देना आवश्यक है। यह उदारता और दयालुता की माँग है कि कष्ट में पड़े हुए लोगों को सुविधा देने के लिए जहाँ तक संभव हो, दूसरे लोग सहायता करें। यह सहायता भी ऐसी होनी चाहिए जो उन्हें आलसी या परावलंबी न बना दे। मनुष्य में एक दोष यह रहता है कि जब उसे बिना परिश्रम किए सुविधाएँ मिलने लगती हैं तो वह उत्तरदायित्व एवं पुरुषार्थ के झंझट से बचने का अभ्यस्त बनने लगता है। दान को व्यवसाय बना लेने वाले और उसे अपना अधिकार मानने वाले लाखों व्यक्ति हमारे देश में मौजूद हैं, यह एक दुर्भाग्य की ही बात मानी जा सकती है।

जो सर्वथा अपंग, असमर्थ हैं, उनको जीवित रखने के लिए निर्वाह की आवश्यक व्यवस्था की जानी चाहिए। यह व्यवस्था नियमित और क्रमबद्ध होनी चाहिए ताकि कभी अधिक कभी कम की विपन्नता उन्हें न सहनी पड़े, हर घड़ी चिंतित या व्यग्र न रहना पड़े। ऐसी संस्थाएँ बनानी चाहिए जो अधिकारी अपंग लोगों के भरण-पोषण का दायित्व अपने सिर पर लें। भिक्षुकों के निरंतर माँगते रहने की आदत से उनका अधिक पतन होता है। कई भिक्षुक अनुपयुक्त कार्यों में भी उस पैसे का दुरुपयोग करते हैं; कई तो भिक्षा से ही जोड़-जोड़कर धन जमा कर लेते हैं जो पीछे निरर्थक चला जाता है। इसके विपरीत दुर्बल, संकोची या अधिक असमर्थ अपंगों को अभावग्रस्त स्थिति में जीवन समाप्त करना पड़ता है। इस दुविधा से अपंगों को बचाने के लिए ऐसी सामाजिक संस्थाओं को विकसित होना चाहिए जो असमर्थों का उचित उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठाती हुई, मानवता की एक सुव्यवस्थित सेवा कर सकें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके अतिरिक्त जो लोग बेकारी या मानसिक दीनता के कारण भिक्षा माँगते हैं, उन्हें किसी उद्योग में लगाने की सुविधा मात्र देकर उन्हें उपार्जन कार्य में लगाना चाहिए। छोटी-मोटी शारीरिक या मानसिक कमी के रहते हुए भी यदि उसे सुविधा प्राप्त हो तो अपने गुजारे के लिए स्वयं उपार्जन कर सकता है। इससे उसमें स्वावलंबन एवं स्वाभिमान बना रहेगा और साथ ही किसी के दान का दुरुपयोग भी न होगा। कुछ संगठन ऐसे भी होने चाहिए जो अर्द्ध असमर्थों को काम में लगाने के लिए गठित हों और दान न देकर उन्हें सुविधापूर्वक श्रम प्रदान करें। अनाथों, विधवाओं, वृद्धों या अन्य प्रकार के अभावग्रस्त लोगों के लिए यदि उपार्जन साधनों का कोई प्रबंध हो सके तो वह छिटपुट दान की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

ऐसे संगठित प्रयत्न जब तक विकसित न हों, तब तक व्यक्तिगत रूप से भी उन्हीं बातों का ध्यान रखते हुए अपंग-असमर्थों की सहायता करनी चाहिए। दान की मात्रा अधिकाधिक हो, यह प्रसन्नता की ही बात होगी। बात केवल इतनी-सी ही विचारणीय है कि उसका सदुपयोग हुआ या नहीं। सदुपयोग पर ही तो दान की सार्थकता निर्भर रहती है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1964, पृष्ठ-23, 24

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धर्म का असली मर्म

धर्म और अधर्म की व्याख्या करते हुए पंचाध्यायी में एक बहुत महत्त्वपूर्ण श्लोक कहा गया है—

शक्तिः पुण्यं पुण्य फलं सम्पच्च सम्पदः सुखम्। अताहि चयनं शक्तेर्यतो धर्मः सुखावहः॥

शक्ति पुण्य है, पुण्य का फल वैभव है और वैभव से सुख प्राप्त होता है। इसलिए निश्चय ही शक्ति का संचय सुखकारक धर्म माना गया है।

उपरोक्त श्लोक में सच्चे धर्म का असली मर्म खोलकर रख दिया गया है। जिससे अपनी-अपने समाज की शक्ति बढ़ती है वह धर्म है। विद्या, स्वास्थ्य, धन, प्रतिष्ठा, पवित्रता, संगठन, सच्चरित्रता ये सात महाबल माने गए हैं, जिन कार्यों से इन सात मार्गों में अपनी या अपने समाज की उन्नति होती हो धर्म साधना के निमित्त उन्हीं कार्यों को करना तथा अपनाना चाहिए। स्वयं इन सातों बलों को अपने पास एकत्रित करना धर्म कर्त्तव्य समझकर सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए और महा संपत्तियाँ दूसरों को भी प्राप्त हों इसके लिए परोपकार की भावना के साथ उद्योग करना चाहिए। ऐसी सभा-संस्थाओं का स्थापन, संचालन और सहयोग करना चाहिए जो स्वास्थ्य की उन्नति करती हों, जिनके द्वारा ज्ञान की वृद्धि होती हो, आर्थिक दशा सुधरती हो, गंदगी, मलिनता, कुरुचि हटती हो, मेल, ऐक्य-भ्रातृभाव बढ़ता हो, सद्गुणों, सदाचार तथा न्याय में उन्नति होती हो। बलों की वृद्धि करना ही धर्म साधना का प्रधान कार्य है। रक्षा करने का एकमात्र हथियार 'घात' है। धर्म का गुण रक्षा करना माना गया है। इसलिए वे ही कार्य धर्म ठहराए जा सकते हैं जिनके द्वारा हमारा व्यक्तिगत और सामूहिक बल बढ़ता हो, उन्नति होती हो, सुख बढ़ता हो और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मरक्षा की क्षमता प्राप्त होती हो। जो व्यक्ति उपरोक्त प्रकार के कामों में जितने परिश्रम और लगन के साथ जुटे हुए हों उन्हें उतना ही बड़ा धर्मात्मा मानना चाहिए।

हमें सच्चे धर्म को पहचानने की और उसी की रक्षा करने की आवश्यकता है जिससे हमारी भी रक्षा हो। अज्ञान और आडंबर के परदे को हटाकर हमें भगवान सत्य के दर्शन करने चाहिए। सत्य का अवलंबन करने में ही धर्म है और धर्म के ऊपर ही हमारी वैयक्तिक एवं सामूहिक उन्नति तथा रक्षा निर्भर है। अपनी पंचमाश शक्ति का जिस दिन हम सच्चे धर्म के लिए उपयोग करने लगेंगे उसी दिन से हमारे सौभाग्य सूर्य का उदय होना आरंभ हो जाएगा।

—अखण्ड ज्योति जून 1944, पृष्ठ-5-6

धर्म का मूल—भावनाओं का विकास

भावना क्षेत्र का विकास किए बिना, जनता के मन में सेवा, उदारता, लोकहित, सांप्रदायिकता, सहिष्णुता, नैतिकता आदि मानवता की प्रवृत्तियों को सुविकसित किए बिना उन्नति के सारे प्रयत्न दिखावा मात्र रह जाएँगे। जो आर्थिक या सामाजिक उन्नति होगी, वह गलत दिशा में प्रयुक्त होने पर लाभदायक सिद्ध होने की बजाय उलटे हानिकर परिणाम उपस्थित करेंगी। इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि जनता में शुभ संकल्प और सद्भाव उत्पन्न करने के लिए भी वैसे ही प्रयत्न किए जाएँ जैसे अन्य क्षेत्रों के विकास कार्य में किए जा रहे हैं।

यह परम पुनीत कार्य सरकारों का नहीं, धर्म संस्थाओं का है। दुर्भाग्य से भारत की धर्म संस्थाएँ अपनी सांप्रदायिक मान्यताओं के प्रदर्शन और परिपोषण के लिए तो बहुत शक्ति व्यय करती हैं, पर धर्म के मूल तत्त्वों की ओर कुछ भी ध्यान नहीं देती। ऐसी धर्म संस्थाओं की भारी कमी है जो विभिन्न संप्रदायों के बीच सहिष्णुता, समन्वय और एकता स्थापित करने के साथ-साथ जन साधारण में मानवीय सद्गुणों एवं शुभ संकल्पों का विकास करें। इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ विशेष प्रयत्न किए जाने आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1958, पृष्ठ-39

प्रजातंत्र की रक्षा

मतदाता अपना दायित्व समझें

मतदाता को हजार बार यह सोचना चाहिए कि राष्ट्र के विकास और विनाश का उत्तरदायित्व प्रजातंत्र ने उसके कंधे पर सौंपा है। उसे यह अद्भुत अधिकार मिला हुआ है कि चाहे तो देश को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने में योगदान करे अथवा उसे टाँग पकड़कर पीछे घसीटने एवं उसे पतन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के गहरे गर्त में धकेल देने की प्रक्रिया पूरी करे। इस अधिकार को वह कई वर्ष बाद चुनाव के समय पर एक बार ही उपयोग में ला सकता है। चैक पर दस्तखत पाँच सेकंड में हो जाते हैं, उतने से ही जिंदगी भर की कमाई का जमा पैसा बैंक से निकाला जा सकता है। किसी को अपनी जायदाद बेच देने के लिए रजिस्ट्रार के दफ्तर में पाँच मिनट खड़े होना और दस्तखत कर देना काफी होता है। बाप-दादों की कमाई उतने भर से ही पराई हो जाती है। ठीक चैक पर दस्तखत करने और रजिस्ट्रार ऑफिस में स्वीकृति देने जैसी क्रिया भी यह मतदान की है। यह चंद घंटे जो मतदान में लगते हैं; इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि उसे खिलवाड़ नहीं समझा जाना चाहिए। उसमें अपने और अपने देश के भाग्य को बेच देने जैसी प्रक्रिया संपन्न होती है।

नशा पिला देने भर से प्रसन्न होकर जो जायदाद का बैनामा कर दे, उसे क्या कहा जाए? जो थोड़ी चापलूसी से बहककर चैक पर दस्तखत कर दे, उसे समझदार कैसे कहा जाएगा? लड़की की शादी करते हैं, तब लड़के तथा उसके खानदान की पूरी-पूरी जाँच करते हैं। राष्ट्रमाता की गरिमा लड़की से भी बड़ी है, उसे किसी के हाथ जब सौंपना हो तब क्या कुछ भी देख-भाल नहीं की जानी चाहिए। धर्मभीरु लोग गाय को कसाई के हाथों नहीं बेचते। चाहे किसी भलेमानस के हाथों कम पैसे में अथवा मुफ्त ही क्यों न देनी पड़े! भावनाशील लोग गौ माता के सुख-दुःख का भी ध्यान रखते हैं और उसका रस्सा किसी के हाथों थमा देने से पहले हजार बार विचार करते हैं कि उसे किसके हाथ में सौंपा जाना ठीक होगा? भारत माता की महिमा गौ माता से भी बड़ी है। उसे किसी को सोंपने की प्रक्रिया का नाम ही मतदान है। इस धर्मकृत्य को एक प्रकार का यज्ञ समझा जाना चाहिए और उस पुण्य-प्रक्रिया को करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि देव भाग को कहीं श्वान, शृगाल न खा जाएँ। भारत माता जैसी महान गौ का दान करते समय प्रतिनिधि की पात्रता का ध्यान रखा ही जाना चाहिए। गलत कदम उठ जाने से ही सारे समाज का अहित होगा और उस दावानल की चपेट से बचेगा अपना भी घर नहीं। लोगों के बहकावे में आकर कोई अपने छप्पर में आग नहीं लगा लेगा। समझदार बच्चे किसी ठग द्वारा लैंमनचूस की गोली देकर कोट उतरवा लेने की चालाकी को समझते हैं और बहकावे में नहीं आते। चिड़ियाँ तक बहेलिये के जाल और दाने का भेद समझती हैं और उनमें से जो होशियार होती हैं, पकड़ में नहीं आती। चालाक चोर रखवाली वाले कुत्ते को रोटी के टुकड़े देकर भोंकने से बंद रहने का प्रलोभन देते हैं कि वह चुप रहे और चोरी की घात लग जाए, पर समझदार कुत्ते उस भुलावे में नहीं आते। वोट माँगने और झपटने के समय ऐसी ही लाख चतुराई बरती जाती है, जिसमें भोले मतदाता को वस्तुस्थिति का पता ही न चले और छोटे प्रलोभनों और झूठे आश्वासनों के फेर में पड़कर उससे वह काम करा लिया जाए जो उसे नहीं करना चाहिए। अब मतदाता की बुद्धिमानी रह जाती है कि वह वस्तुस्थिति को समझे और निष्पक्ष न्यायाधीश की तरह अपना फैसला उसी के पक्ष में प्रस्तुत करे जो न्यायानुसार उसका अधिकारी है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1971, पृष्ठ-41, 42

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वोट पात्र को ही दें

छूटा हुआ तीर वापस नहीं आ सकता, दिया हुआ वोट लौटाया नहीं जा सकता, इसलिए जब तक उसका प्रयोग नहीं हुआ है, उससे पहले ही हजार बार सोचना चाहिए कि इस राष्ट्र की अमानत और समाज की पवित्र धरोहर की श्रद्धांजलि को कहाँ अर्पित किया जाए? यह देवता के चरणों में चढ़ाने योग्य है या असुर को सौंपा जाए। वोट किसे दिया जाए, किसे न दिया जाए, इसके संबंध में देश के हित और समाज के भविष्य का ध्यान रखते हुए उपयुक्त पात्र की तलाश की जाए तभी यह संभव है कि देश के सुदिन आएँ और उसका सौभाग्य सूर्य उदय हो।

राष्ट्र को पतन या उत्थान की ओर ले चलने को वोट के रूप में मिले हुए अधिकार और अवसर का दूरदर्शिता के साथ उपयोग किया जाना चाहिए। यह तथ्य हमें अपने देश के मालिकों को तत्परतापूर्वक समझाना ही चाहिए और उन्हें पूरे मनोयोग एवं गंभीरता के साथ इसे समझना चाहिए। प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह नितांत आवश्यक है कि मतदाता दूरदर्शी एवं जिम्मेदार बनकर अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य को समझें और उसे दृढ़ता के साथ निभाएँ। वोट केवल उन्हें मिले जो उसके हकदार हैं। चुनाव में वे जीतें जिनके हाथ में न्याय और लोकहित सुरक्षित है। ऐसे लोग कथनी से नहीं करनी से परखे जाने चाहिए और उनके अब तक के क्रिया-कलाप को सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखा जाना चाहिए कि इनके रक्त में अनैतिकता के विष-बीजाणु तो नहीं हैं। जिस प्रकार किसी घातक रोग के रोगी से हम अपनी कन्या का विवाह करने से स्पष्ट इनकार कर देते हैं, उसी साहस और विवेक को अपनाकर हमें उन लोगों को वोट देने से स्पष्ट इनकार कर देना चाहिए जो नीति, सदाचार और आदर्शों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1971, पृष्ठ-44

उत्कृष्ट नागरिक ही सच्ची राष्ट्रीय संपदा

जिन शासकों ने, जिन नेताओं ने अनैतिक आचरण अपनाकर अपने वर्ग को लाभान्वित करने का, अपने समाज या राष्ट्र को समुन्नत बनाने का प्रयास किया, वे क्षणिक उछाल लेकर सदा के लिए पतन के गर्त में विलीन हो गए। इसी प्रकार जो समाज नैतिक मर्यादाओं में उपेक्षा एवं अनास्था व्यक्त करने लगा, वह विलासी भर बनकर रह गया। अनैतिक और उच्छृंखल आचरण अपनाकर वह सुखी नहीं बन सका। अव्यवस्थित और अस्त-व्यस्त होकर दुर्बल ही बनता चला गया। नीति सदाचार की मर्यादाएँ शिथिल होते ही अपराधी प्रवृत्तियाँ अराजक हो उठती हैं और उस आंतरिक विद्रोह में कोई राष्ट्र बाह्य आक्रमण से भी अधिक जर्जर हो जाता है।

सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति के अनेक पक्ष हैं और वे सभी कार्यान्वित किए जाने चाहिए, पर यह भूल नहीं जाना चाहिए कि मूलभूत राष्ट्रीय संपदा उस देश के नागरिकों की भावनात्मक एवं कर्मात्मक उत्कृष्टता ही है। इसके रहते कोई निर्धन समाज भी अपनी गौरव-गरिमा बनाए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रह सकता है। अपनी स्वतंत्रता सुरक्षित रख सकता है। यदि इस संपदा में कमी आई हो तो विशाल क्षेत्रफल, विशाल जनसंख्या, विशाल सेना और विशाल साधनों वाले देश को भी अंतर्द्वंदों से जर्जरित दीन-दुर्बल एवं परमुखापेक्षी होकर रहना पड़ेगा।

—अखण्ड ज्योति मई 1972, पृष्ठ-26

राष्ट्रीय प्रगति का अंग—वैयक्तिक चरित्र

शासनतंत्र ही सब कुछ नहीं है। धन की अभिवृद्धि ही सुख-शांति का आधार नहीं है। शिक्षा ही सदाचरण का मूल नहीं है। हमें गहराई तक विचार करना होगा कि जिन तथाकथित समुन्नत देशों में विज्ञान, शिक्षा, धन और साधनों का बाहुल्य है, वहाँ के प्रजाजन क्यों दुष्प्रवृत्तियों में अधिकाधिक ग्रसित होकर सर्वनाश की ओर जा रहे हैं? क्यों अपना और अपने राष्ट्र का भविष्य अंधकारमय बना रहे हैं? खोज हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचाएगी कि वैयक्तिक चरित्र को राष्ट्रीय प्रगति का अंग न मानकर भारी भूल की गई। व्यक्तिगत जीवन में कुछ भी करने की छूट सामाजिक हस्तक्षेप से निजी जीवन को पृथक रखने का नारा हिप्पीवाद को जन्म दे रहा है। उस नैतिक अराजकता को जन्म दे रहा है जो समाज-व्यवस्था का सर्वनाश करके रहेगी।

—अखण्ड ज्योति मई 1972, पृष्ठ-27

देशभक्त आत्मिक प्रगति की बात सोचें

राष्ट्र या समाज को सुस्थिर, सुदृढ़ और समुन्नत रखने के इच्छुकों को भौतिक उन्नति की ही रट नहीं लगाए रहना चाहिए वरन यह भी देखना चाहिए कि वैयक्तिक उत्कृष्टता को पोषण देने वाले आधार विकसित हो रहे हैं या नहीं। यदि उस ओर उपेक्षा बरती जा रही है तो समझना चाहिए कि प्रगति थोथी, खोटी और उथली है। उस प्रवंचना से मिथ्या मन बहलाव भले ही किया जाता रहे, राष्ट्रीय उत्कर्ष का ठोस आधार न बनेगा। विचारशील समाजसेवियों, दूरदर्शी देशभक्तों और मानवता प्रेमी विश्वनागरिकों का कर्त्तव्य है कि वे आत्मिक प्रगति की बात सोचें। चरित्र निर्माण के आधार स्थापित करें और पत्ते धोने की अपेक्षा जड़ सींचने की बात को महत्त्व दें।

—अखण्ड ज्योति मई 1972, पृष्ठ-27, 28

समाज निर्माण के लिए जनमानस की उत्कृष्टता आवश्यक

भ्रष्ट साधनों से लोकमानस को दूषित करने में संलग्न दुष्प्रवृत्तियों से झगड़ना ही काफी नहीं वरन उनकी तुलना में हर क्षेत्र में उत्कृष्टता विकसित करने वाले साधन खड़े करने होंगे। निकृष्टता की निंदा करना ही काफी नहीं वरन उसका सही विधायक तरीका यह है कि उत्कृष्ट आधारों को विकसित करने में सृजनात्मक शक्तियाँ इस प्रकार जुट जाएँ कि जनता भले-बुरे का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतर पहचानने—दोनों में से किसी एक का वरण करने का अवसर मिल सके। जब तक भ्रष्टता ही स्वच्छंद विचरण करती है, जनमानस को प्रभावित करने की सारी क्षमता उसी के हाथ में है, तब तक अपकर्ष ही जीतता रहेगा। उत्कर्ष को असफल, असहाय ही रहना पड़ेगा।

समाज निर्माण के लिए, राष्ट्रीय उत्कर्ष के लिए आवश्यक है कि जनमानस उत्कृष्टता के आरोपण और पोषण के समुचित साधन जुटाने में दत्तचित्त हो। भौतिक प्रगति की सार्थकता इसके बिना संदिग्ध ही रहेगी।

—अखण्ड ज्योति मई 1972, पृष्ठ-28

मतदाता चतुरों के बहकावे में न आएँ

प्रजातंत्र संसार की सर्वोत्तम शासन पद्धति है। इसमें अपने भाग्य का निर्माण प्रजा के अपने हाथ में रहता है, अपनी मरजी की व्यवस्था उसके हाथ में रहती है। बोलने, लिखने, करने की वहाँ तक आजादी रहती है, जहाँ तक कि सार्वजनिक सुविधा और राष्ट्र व्यवस्था में व्यतिरेक उत्पन्न न हो। इन गुणों के रहते हुए भी उसमें कमी इतनी ही है कि यदि मतदाता शिक्षित और सतर्क न हो तो चतुर लोग उन्हें बहकाकर वोट तो झपट ही लेते हैं, बल्कि लाभ भी वही लोग उठाते हैं, प्रजाजनों का हित उपेक्षित पड़ा रहता है। प्रजातंत्र का लाभ उठाने और उसका प्राण बनाए रहने के लिए मतदाता को दूरदर्शी, देशभक्त और उपयुक्त निर्णय कर सकने में समर्थ होना ही चाहिए अन्यथा यह शासनपद्धति स्वार्थी के निहित स्वार्थ पूरे करते रहने का साधन मात्र रह जाती है। प्रजाजन कष्ट-पीड़ित एवं पिछड़े ही बने पड़े रहते हैं।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1971, पृष्ठ-41

राष्ट्रधर्म

एक सरल और सत्य युगधर्म

सद्ज्ञान का प्रचार करने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि हर मनुष्य बड़ा भारी विद्वान, वक्ता या लेखक ही हो। संसार में अब तक अनेक महापुरुष हो चुके हैं, जिन्होंने युग-युगांतरों की तपस्या से जो आत्मशक्ति प्राप्त की थी, उसके फलस्वरूप उत्पन्न हुए ज्ञान को जनता के समक्ष रखा था। इस ज्ञान को, उनके वचनों को, उनकी पुस्तकों को, उनके मंतव्यों को हम जन साधारण में फैलाते रहकर एक श्रेष्ठ कर्त्तव्य करते रह सकते हैं। प्राचीन ऋषियों से लेकर अवतारों और महात्माओं ने जो उपदेश दिए हैं, उनको भी हम जनता तक पहुँचाते रहें तो यह बीज कहीं-न-कहीं जमेगा ही। हिंदू धर्म गंगा जी में जौ बोने का उपदेश करता है, क्योंकि वह जौ पानी की लहरों के सहारे कहीं-न-कहीं उपजेंगे ही और जहाँ उपजेंगे वहाँ किसी-न-किसी का भला होगा ही।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उतावले लड़कों की तरह यह न देखना चाहिए कि कल जिसे उपदेश दिया गया था; आज महात्मा बना या नहीं? विश्वास रखिए, यदि आपने सच्चे हृदय से संदेश पहुँचाया है, तो उन महात्माओं की दिव्य वाणी मनुष्य के हृदय में संस्कार जमाएगी ही और उसका कभी-न-कभी फल मिलेगा ही। अपने विचारों एवं वचनों से अथवा महापुरुषों की दिव्य वाणियों द्वारा संसार में ज्ञान मार्ग का प्रचार करना—यह एक ऐसा कर्म है, जो विचारों को पवित्र करता है; दूसरा जन्म विद्वान परिवार में प्रदान करता है, आत्मकल्याण का मार्ग खोलता है और एक दिन प्रभु के साक्षात दर्शन करा देता है। यह सरल और सत्य धर्म इस युग की आवश्यकता को देखते हुए बहुत उत्तम कहा जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1941, पृष्ठ-05

आध्यात्मिक हथियार बनाए जाएँ

इस समय हमें क्या करना चाहिए? आध्यात्मिक व्यक्तियों को वही करना चाहिए जो भौतिक जगत में अमेरिका कर रहा है। अमेरिका का विश्वास है कि अधिक अस्त्र-शस्त्र उत्पन्न करने से शत्रु को हराया जा सकेगा। आध्यात्मिक व्यक्तियों का विश्वास होना चाहिए कि सत्य, प्रेम और न्याय की पवित्र भावनाओं का प्रसार करके सूक्ष्म लोकों की गंदगी को दूर किया जा सकता है। हम न्याय के टैंक, प्रेम के वायुयान और सत्य के बम अपने मस्तिष्कों के कारखानों में तैयार करें, जिनकी मार से शत्रु शैतान का सारा बल चूर-चूर हो जाए। अन्य देश अपने देश की आमदनी का बहुत बड़ा अंश युद्ध-सामग्री तैयार करने में खरच कर रहे हैं, हमें अपनी शक्तियों का अधिक-से-अधिक अंश आध्यात्मिक हथियार बनाने में लगाना चाहिए। इसके लिए न तो किसी सामान की जरूरत है और न तैयारी की। आज से ही आप अपने मन में पवित्रता, त्याग, उदारता, ईमानदारी, सचाई और इनसाफ पसंदगी को भरने की कोशिश शुरू कर दीजिए। अपने जीवन को नेक बनाइए और दूसरों को नेकी के मार्ग में जुटाने का भगीरथ प्रयत्न कीजिए। इस प्रकार आप संसार में ऐसी दैवी कुमुक भर देंगे जो आसुरी प्रकृतियों को मारकर दूर भगा देगी। यदि आप सत्य को अपना धर्म मान लेते हैं और ईमानदारी के साथ उस पर आचरण करना आरंभ कर देते हैं तो अपने को, अपनी जाति को, अपने देश को और अपने संसार को इस महानतम विपत्ति में से बचाने का सबसे कामयाब तरीका अख्तियार करते हैं। यह नहीं समझना चाहिए कि युद्ध के दैत्यकार अस्त्र-शस्त्रों के सामने यह छोटा-सा उपाय क्या काम दे सकता है। हम कहते हैं कि सत्य का आश्रय लेना सबसे बड़ी सुरक्षा है। ईश्वर की शरण में जाना सबसे बड़ी गारंटी है। भले ही इससे हमारा शरीर न बच सके, लेकिन संसार का सर्वनाश बच सकता है। हमारा शत्रु पाप है और उस पाप का अंत करने के लिए सत्यमय विचारधाराओं की युद्ध-सामग्री का निर्माण प्रारंभ करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1942, पृष्ठ-05

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वमानव रूप परमात्मा ही पूजनीय है

अपनी आत्मा को सबमें और सबकी आत्मा को अपने में समाई हुई देखो। अपना वही लाभ स्वीकार करो जो समाज के लाभ का एक भाग है। अपने जिस कार्य से औरों की हानि होती है, बहुसंख्यक नागरिकों पर जिसका बुरा प्रभाव पड़ता है, ऐसा लाभ सर्वथा त्याज्य है। इसलिए दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझना चाहिए। जिस व्यवहार को हम अपने लिए उचित नहीं समझते, उसे दूसरों के लिए नहीं करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि मेरे साथ दूसरे लोग दुर्व्यवहार न करें; चोरी, ठगी, विश्वासघात, छल, उद्दंडता, निष्ठुरता, बेईमानी, अनुदारता का व्यवहार उसके साथ न हो; वरन मधुरता, नम्रता, उदारता, सचाई एवं सहायता की नीति बरती जाए।

स्मरण रखना चाहिए कि जब हम दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करेंगे तो हमें भी ऐसा प्रतिफल मिलेगा। जो बोएँगे वही काटेंगे। यदि वैसा ही व्यवहार हमारे साथ दूसरे न भी करें तो भी विश्वव्यापी आत्मा को हमारे सद्व्यवहार से जो सुख मिलेगा, वह आंशिक और अप्रत्यक्ष रूप से अपने को ही तो मिला, क्योंकि अंतत: सभी आत्माएँ एकदूसरे से संबंधित हैं।

किसी को छोटा या नीच समझना अनात्मवाद है। गीता में पंडित की परिभाषा करते हुए कहा है— ''विद्या-विनय संपन्न ब्राह्मण, गौ, हाथी, कुत्ता, चांडाल आदि सब छोटे-बड़े, नीच-ऊँच को जो समता की दृष्टि से देखता है, वही पंडित है।'' किसी को जाति, वंश, कुल, देश, वर्ण, लिंग की दृष्टि से ऊँचा या नीचा गिनना अपंडितपन है। परमात्मा के सभी पुत्र एक मानव जाति के हैं, चाहे वे स्त्री हों या पुरुष, चाहे शूद्र हों या ब्राह्मण। सबका अधिकार, पद, कर्त्तव्य और गौरव समान है। अपनी योग्यता, विद्या, पुरुषार्थ, पुण्य, सेवा आदि गुणों के बल पर लोग ऊँचे उठते हैं, महात्मा, महापुरुष, ब्राह्मण पूजनीय बनते हैं और अपने ही दोष-दुर्गुणों के कारण नीच बनते हैं। यह गुण-कर्म-स्वभाव ही नीचता और महानता के आधार हैं अन्यथा प्राणिमात्र में प्रकाशवान ईश्वरीय ज्योति-आत्मा एक ही जाति की है। किसी को स्त्री या पुरुष होने के कारण, शुद्र या ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के कारण छोटा या बड़ा मानना, अधिकार को न्यूनाधिक मानना अज्ञानमूलक है।

गायत्री का **भू:** शब्द बराबर हमारे लिए आदेश करता है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं। इसलिए आत्मकल्याण के लिए, आत्मोन्नति के लिए, आत्मगौरव के लिए प्रयत्नशील रहें और समाजसेवा द्वारा विराट पुरुष, विश्वमानव, परमात्मा की पूजा करें।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1951, पृष्ठ-06, 07

इस चुनौती को स्वीकार करें

खतरा बढ़ रहा है। संकट की घड़ी दूर नहीं है। मानव सभ्यता की दीवारें गिरना ही चाहती हैं। यदि यह क्रम चलता रहा तो नैतिकता के आदर्श नष्ट हो जाएँगे और मनुष्य एकदूसरे को फाड़ खाने वाले भेड़िये मात्र रह जाएँगे। जिन्हें देवत्व के प्रति, मानवीय सभ्यता के प्रति कुछ आस्था,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रद्धा और ममता है, उनके लिए अब परीक्षा की निर्णायक घड़ी आ पहुँची है। वे निरपेक्ष दर्शक की तरह एक किनारे पर खड़े दैवी संस्कृति का अधोपतन और आसुरी संस्कृति का विजयघोष देख-सुन न सकेंगे। उन्हें कुछ करना होगा। ईश्वर ने उपयुक्त अवसरों पर उपयोग करने के लिए हमें जो बल, साहस, विवेक और पुरुषार्थ दिया है, उसका सर्वोत्तम उपयोग करने का यही समय है। राजा की दी हुई बंदूक को जो सिपाही ठीक अवसर पर नहीं चलाता, वह कर्त्तव्यघात का अपराधी होता है। नैतिक पुनरुत्थान की नींव को मजबूत करने के लिए, मानवता के आदर्शों की हिलती हुई दीवारों को पुन: जमा देने के लिए हममें से अनेकों को ईंट-चूना बनना पड़ेगा। ऋषियों की आत्माएँ स्वर्गलोक से निहार रही हैं और देख रही हैं कि उनकी लाखों वर्षों की कमाई की रक्षा करने के लिए उनकी संतानों में कुछ दम रह गया है या नहीं। सत्यानाशी आसुरी संस्कृति को रोकने के लिए चट्टान की तरह हम अड़ जाएँ, मुरझाती हुई दैवी संस्कृति को सींचने के लिए हम अपना पसीना ही नहीं रस-रक्त भी निचोड़ दें। यह समय की, सभ्यता की पुकार है—आइए इस चुनौती को स्वीकार करें।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1955, पृष्ठ-22

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

युग की प्रखर चुनौती

सामाजिक असभ्यता हमारे लिए राजनीतिक गुलामी से अधिक त्रासदायक स्थिति में हमारे सामने मौजूद है। स्वाधीनता संग्राम के बलिदानी सेनानी स्वर्ग से हमें पूछते हैं कि हमारा कारवाँ एक ही मंजिल पर पड़ाव डालकर क्यों पड़ा रहा? आगे का पड़ाव सामाजिक असभ्यता के उन्मूलन का था, अगला मोर्चा वहाँ जमना था—पर सैनिकों ने हथियार खोलकर क्यों रख दिए? युग की आत्मा इन प्रश्नों का उत्तर चाहती है। हमें इसका उत्तर देना होगा। यदि हम सामाजिक असभ्यता के उन्मूलन के लिए कुछ नहीं करना चाहते, कुछ नहीं कर सकते तो जहाँ भावी इतिहासकार जिस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को श्रद्धा से मस्तक झुकाते रहेंगे, वहाँ हमें धिक्कारने में भी कसर न रहने देंगे।

आध्यात्मिक लक्ष्य की पूर्ति के लिए अग्रसर हुए हम धर्मप्रेमी ईश्वरभक्त लोगों के कंधों पर लौकिक कर्त्तव्यों की पूर्ति का भी एक बड़ा उत्तरदायित्व है। ईश्वर को हम पूजें और उसकी प्रजा से प्रेम करें; भगवान का अर्चन करें और उसकी वाटिका को, दुनिया को सुरम्य बनाएँ तभी हम उसके सच्चे भक्त कहला सकेंगे; तभी उसका सच्चा प्रेम प्राप्त करने के अधिकारी हो सकेंगे। हमारे आध्यात्मिक लक्ष्य की पूर्ति का प्रथम सोपान सुव्यवस्थित जीवन है। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, सभ्य समाज उसके तीन आधार हैं। इन आधारों को संतुलित करने के लिए, सबल और समर्थ बनाने के लिए हमें कुछ करना ही पड़ेगा, कटिबद्ध होना ही पड़ेगा। युग निर्माण का महान कार्य हमारे इस कर्तृत्व पर ही निर्भर है। इसकी न तो अब उपेक्षा की जा सकती है और न आँखें

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चुराई जा सकती हैं। भगवान यही हमसे कराना चाहते हैं। यही हमें करना भी होगा।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1962, पृष्ठ-35

कर्त्तव्य से पीछे न हटें

हमारा परिवार स्वार्थी, कायर एवं संकीर्ण लोगों में अपनी गणना नहीं करा सकता। उसके सामने एक उद्देश्य एवं लक्ष्य है। वह है—बुराइयों के उन्मूलन एवं अच्छाइयों के अभिवर्द्धन का सत्प्रयत्न। हममें से प्रत्येक को इस समुद्र मंथन के समय देवपक्ष को सबल बनाने के लिए भागीदार होना पड़ेगा। युग परिवर्तन की इस वेला में हममें से प्रत्येक का कुछ कर्त्तव्य हैं और उस कर्त्तव्य की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। पाप की लंका का दहन और पुण्य का राज्य स्थापित करने के लिए जो राम-रावण युद्ध हुआ था, उसमें निहत्थे रीछ-बंदरों ने भी अपनी सामर्थ्य भर काम किया था। और तो और एक गिलहरी रेत में लोटकर अपने बालों में धूल भर लाती थी और उस धूल को समुद्र में झाड़ देती थी। उसकी इस भाग-दौड़ का कारण जब दर्शकों ने पूछा तो गिलहरी ने कहा—'धर्म और अधर्म' के इस महायुद्ध को मैं दर्शक बनकर देखती नहीं रह सकती, मुझे भी कुछ करना है। मेरी सामर्थ्य थोड़ी भले ही हो पर जो कुछ है उसे नगण्य होने के संकोचवश रोक नहीं सकती। जो रेत मेरे बालों में भर आता है, उसे समुद्र में झाड़-झाड़कर उसे कुछ न कुछ उथला तो करूँगी ही, चाहे उससे समुद्र की गहराई में रत्ती भर ही कमी क्यों न हो, पर कुछ तो होगी ही और उससे राम की सेना को समुद्र पार करने में कुछ तो सहायता मिलेगी ही। यदि आज की विषम परिस्थितियों में भी हम अपनी दृष्टि को विशाल नहीं बनाते, दूर की नहीं सोचते और बिगाड़ को रोकने और बनाव को सँभालने के लिए कुछ नहीं करते तो आगामी पीढ़ियाँ हमारी इस निष्क्रियता को क्षमा न करेंगी। इस महाभारत के मध्य में खड़ा हुआ कोई अर्जुन कमजोरी की कोई बात न कर सकेगा; उसे गांडीव उठाना ही होगा और युग परिवर्तन के लिए, अधर्म के संहार और धर्म की स्थापना के लिए जूझना ही होगा। आइए, हम सब मिलकर अपने-अपने शंख तुमुल-ध्वनि से बजाएँ और शर संधानें।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1962, पृष्ठ-59

आत्मनिर्माण में समाया युग निर्माण

हम अपने जीवन को आध्यात्मिक आदर्शों के अनुकूल ढालने का प्रयत्न करें। हमारे विचारों और कार्यों में एक सुव्यवस्थित हेर-फेर होना चाहिए, तभी तो अध्यात्म का सत्परिणाम सामने प्रस्तुत होगा। अपने को सुधारने और बनाने का कार्य हम जितनी तत्परता से करेंगे, उसी के अनुकूल निकटवर्ती वातावरण में सुधार एवं निर्माण का कार्य आरंभ हो जाएगा। प्रवचनों और लेखों की सीमित शक्ति से युग निर्माण का कार्य संपन्न हो सकना संभव नहीं। यह तो तभी होगा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब हम अपना निज का जीवन एक विशेष ढाँचे में ढालकर लोगों को दिखाएँगे। प्राचीनकाल के सभी धर्मोपदेशकों ने यही किया था। उनने अपने तप और त्याग का अनुपम आदर्श उपस्थित करके लाखों-करोड़ों अंत:करणों को झकझोर डाला था और लोगों को अपने पीछे-पीछे अनेक कष्ट उठाते हुए भी चले आने के लिए तत्पर कर लिया था। बुद्ध, महावीर, दयानंद, गांधी, ईसा, सुकरात, अरस्तू आदि महापुरुषों के प्रवचन नहीं, उनके कार्य महत्त्वपूर्ण थे। जनता ने प्रकाश उनकी वाणी से नहीं, कृतियों से ग्रहण किया था।

अपने सुधार में सबका सुधार समाया है। आत्मनिर्माण ही युग निर्माण है। संसार को बनाने का कार्य अपने को बनाने से आरंभ करना होगा। जमाना तब बदलेगा, जब हम स्वयं बदलेंगे। युग निर्माण योजना का आरंभ दूसरों को उपदेश देने से नहीं, वरन अपने मन को समझाने से शुरू होगा। यदि हमारा अपना मन, हमारी बात मानने को तैयार नहीं हो सकता तो दूसरा कौन सुनेगा? कौन मानेगा? जीभ की नोंक से निकले हुए लच्छेदार प्रवचन दूसरों के कानों को प्रिय लग सकते हैं, वे उसकी प्रशंसा भी कर सकते हैं, पर प्रभाव तो आत्मा का आत्मा पर पड़ता है। यदि हमारी आत्मा खोखली है तो उसका कोई प्रभाव किसी पर न पड़ेगा। इसलिए आत्मकल्याण की दृष्टि से भी और युग निर्माण की दृष्टि से भी हमें एक ही कार्य करना है—आत्मसुधार, आत्मनिर्माण, आत्मविकास। इस कार्यक्रम को पूर्ण करने में ही उन सेवा-कार्यों का भी स्वत: समावेश हो जाएगा जिनके द्वारा जमाने को पलट देना, युग को बदल डालना संभव है। इसी में स्वार्थ और परमार्थ का समन्वय भी है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1962, पृष्ठ-10

जनमानस की प्रसुप्त भावनाओं को जगाएँ

प्रगति-पथ की सबसे बड़ी बाधा बेईमानी, अनैतिकता, स्वार्थपरता एवं संकीर्णता ही है। शारीरिक दुर्बलता, आंतरिक अशांति, सामाजिक विद्वेष, आर्थिक कठिनाई की जड़ अनैतिकता है। अपराध, पतन, पाप, संघर्ष एवं संकट की बाढ़ का कारण केवल दुष्प्रवृत्तियाँ ही हैं। अगणित समस्याएँ केवल इस एक ही विकृति के कारण उत्पन्न होती हैं और उनका समाधान भी इस एक समाधान के द्वारा ही हो जाता है। उत्कर्ष के लिए क्रांतियाँ आवश्यक मानी जाती हैं। सबसे बड़ी, सब क्रांतियों की जननी बौद्धिक एवं नैतिक क्रांति ही है। भावनाओं में परिवर्तन होते ही, सब कुछ बदल जाता है।

हमारे सामने राष्ट्र की सुरक्षा का प्रश्न खड़ा हुआ है। उसे हल करने के लिए प्रगति और शक्ति चाहिए। इन दोनों का आधार है—भावनाओं का जागरण। साधन-सामग्री भी बढ़नी चाहिए, पर इसका सदुपयोग तो भावनाओं पर ही निर्भर है। सबल राष्ट्र की रचना के लिए उसके नागरिकों का सबल होना आवश्यक है। स्वास्थ्य, धन, विद्या, संगठन, शस्त्र आदि के माध्यम से राष्ट्र बलवान बनते हैं, पर इनकी उपलब्धि के लिए प्रखर मनोबल अनिवार्य है। हम इस मूलभूत तथ्य की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपेक्षा न करें। जनमानस की प्रसुप्त, उत्कृष्ट भावनाओं को जगाने का प्रयत्न करें तो उसके आधार पर जाग्रत हुई शक्ति हमारी ही नहीं, सारी मनुष्य जाति की अगणित समस्याओं को हल कर सकती है। सुरक्षा की समस्या को हल करना तो उस जन-जाग्रति के लिए नितांत सरल और सहज है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1963, पृष्ठ-41

आपत्तियाँ संसार में सहज संभाव्य

ईश्वर की यह महती कृपा ही है कि वह अपने विश्वासी की निरुपाय स्थिति में सहायता करता है। वह किसी का बंधक नहीं होता, किसी का उस पर कोई ऐहसान नहीं होता। यदि वह सहायता न करे तो इसका कोई उलाहना नहीं। लेकिन नहीं, वह अपने उस प्रियजन की सहायता बिना माँगे ही करता रहता है, क्योंकि वह करुणा का सागर है, दया का आगार है। परमात्मा की इस कृपा के प्रति हम सबको कृतज्ञ ही रहना चाहिए।

अनेक लोग जरा-सा संकट आते ही बुरी तरह घबरा जाते हैं। हाय-हाय करने लगते हैं, उसे ईश्वर का प्रकोप मानकर भला-बुरा कहने लगते हैं। निराश और हतोत्साहित होकर ईश्वर के प्रति अनास्थावान होने लगते हैं। यह ठीक नहीं, आपत्तियाँ संसार में सहज संभाव्य हैं, किसी समय भी आ सकती हैं, किंतु उनसे घबराना नहीं चाहिए। उन्हें ईश्वर का अपने बच्चों के साथ एक खेल समझना चाहिए। जैसे कोई कागज का भयावह चेहरा लगाकर कभी-कभी बच्चों को डराने का विनोद किया करता है, उसी प्रकार ईश्वर भी संकट की स्थिति लाकर अपने बच्चों के साथ खेल किया करता है। उसका आशय यही होता है कि बच्चे भयावह स्थितियों के अभ्यस्त हो जाएँ और डरने की उनकी आदत छूट जाए। वे संसार में हर संकट का सामना करने के योग्य बन जाएँ। आपत्तियों को ईश्वर का खिलवाड़ समझकर डरना नहीं चाहिए। उसमें उस खिलाड़ी का साथ देकर खेलते ही रहना चाहिए। आपत्तियाँ उन्हीं के लिए भय का कारण बनती हैं, जो ईश्वरविश्वासी नहीं होते। उनमें ईश्वर के मंगल-मंतव्य का आभास नहीं देखते, अन्यथा संसार की किसी भी परिस्थिति से डरने का कोई कारण नहीं।

—अखण्ड ज्योति मई 1968, पृष्ठ-02

वीरभोग्या वसुंधरा

धरती वीरों के भोग के लिए बनी है। परमात्मा किसी को न कुछ दे सकता है और न किसी से कुछ लेता ही है। वह द्रष्टा मात्र है, उसकी सृष्टि का आनंद वीर लोग उठाते हैं। यह कहना चाहिए कि वह स्वयं ही वीरता के रूप में सांसारिक सुख-ऐश्वर्यों का भोग करता है।

यह जीवन संग्राम है, इसमें जो युद्ध जैसी तत्परता व्यक्त नहीं करता, वह हार जाता है, पर जो प्रयत्न और पुरुषार्थ का गांडीव उठाकर रणोद्यत हो जाता है, वही अंत में विजय पाता है।

इंद्रियों को मारना पड़े तो मारना चाहिए। भीतर से यह अपने सगी-संबंधी जैसी लगती हैं,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर हैं पक्की शत्रु। इनका दमन करना चाहिए। भय, निराशा, निर्बलता, अस्वस्थता, क्षणिक सुखों की आसक्ति, आलस्य, अनुत्साह, असफलता का भय, ये दुर्बलताएँ ही मनुष्य की शत्रु हैं; इनसे डरना नहीं, लड़ना चाहिए। लड़ने वाला ही अंतत: विजेता होता है।

समान गुणों से प्रेम, इस संसार का अटल नियम है। चोर की दोस्ती चोर से होती है; जुआरी, जुआरी के पास बैठता है। खिलाड़ी को खिलाड़ी और पंडितों की मित्रता पंडितों से होती है। परमात्मा का भी नियम ऐसा ही है, वह स्वयं वीर है, बलयुक्त, शक्तिमान है। इसलिए वह अपने पुत्र, मनुष्य को भी इन गुणों से संयुक्त देखना चाहता है। जिस मनुष्य में इतनी हिम्मत होती है कि वह संसार की उथल-पुथल, तूफानों की भड़क और बिजली की तड़क में भी घबराए नहीं। जो घमासान जीवन संग्राम में एक योद्धा की तरह तटस्थ होकर लड़ता है, वही उसका अनुग्रह प्राप्त करता है; उसी को यश और सम्मान भी इस संसार में मिलता है। भौतिक सफलताएँ तो उनकी चरणदासी होती हैं, उनकी कौन परवाह करता है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1971, पृष्ठ-15

देहात में बसने की सोचें

सरकारी स्तर पर—जन स्तर पर कोलाहल के समाधान के लिए प्रयत्न होने ही चाहिए। साथ ही व्यक्तिगत रूप से भी इस संदर्भ में ध्यान दिया जाना चाहिए। हमें यह समझकर चलना चाहिए कि औद्योगिक प्रगति के नाम पर अंधाधुंध बढ़ते चले जा रहे कल-कारखानों की आगे वृद्धि ही होगी। संपन्नता के साथ-साथ मोटरें, रेलें भी बढ़ेंगी। छोटी मोटर बनते ही मोटरों की संख्या में भारी वृद्धि हो रही है। सिनेमा, लाउड स्पीकर अपनी गतिविधियाँ कब कम करने वाले हैं। जनसंख्या की वृद्धि रुक नहीं रही है फलत: कारखाने यातायात के साथ यह भाग-दौड़ का बढ़ना भी स्वाभाविक है। अब उसका परिणाम कोलाहलों की अधिकाधिक वृद्धि के रूप में ही सामने आएगा और आज के बड़े नगर कल सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए संकट बनकर उभरेंगे।

परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए शहरों से पीछे हटकर देहातों में बसने की बात सोचनी चाहिए। अधिक कमाई, अधिक चमकीले चकाचौंध के आकर्षण में अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य गँवा बैठना न बुद्धिमानी है और न दूरदर्शिता।

प्राचीनकाल में इस संकट को भलीभाँति समझा गया था इसलिए उस जमाने में शिक्षण संस्थाएँ, शोध संस्थान, चिकित्सा केंद्र, साधना स्थल, सुदूर देहातों में एकांत एवं वन्य प्रदेशों में बनाए गए थे, जिससे कोलाहल रहित वातावरण में शांत, संतुलित, स्वस्थ, सुखी और सुंदर जीवन जिया जा सके। हमारे लिए भी उसी राह को अपनाना श्रेयस्कर होगा।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1972, पृष्ठ-41

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विरोध नहीं तो असहयोग तो करें

प्रज्ञा-परिजनों की व्यस्तता को देखते हुए उनसे यह आशा तो नहीं की जा सकती कि चक्रव्यूह तोड़ने वाले अभिमन्यु की भूमिका निभाएँ, पर इतनी आशा तो की ही जा सकती है कि वे अपने निजी जीवन में, परिवार के क्षेत्र में जो मूढ़ मान्यताएँ, कुरीतियाँ, अवांछनीयताएँ पनपती देखें, उन्हें समय रहते उखाड़ने का प्रयत्न करें। कम से कम इतना तो हो ही सकता है कि उनका समर्थन न करें, उनकी प्रशंसा भी न करें। विरोध बन पड़े तो करे, पर यदि वैसा साहस न हो तो कम से कम असहमति और असहयोग की स्थिति तो बनाए ही रहें। यह भी गांधीजी का बताया हुआ व्यक्तिगत सत्याग्रह का एक छोटा रूप है। उसे तो अपनाया ही जा सकता है।

निजी जीवनक्रम और परिवार क्षेत्र हर व्यक्ति का अपना है। उस पर प्रभाव का रहना भी असंदिग्ध है। एक क्षेत्र में दुष्प्रवृत्तियों को पनपने से रोका जा सकता है और उन्हें उखाड़ने में सफल भी रहा जा सकता है। यदि सत्यनिष्ठा, उमगे, औचित्य के प्रति श्रद्धा जगे तो उसे साहस भरे संघर्ष के रूप में परिणत करना चाहिए और जितना संभव हो उतना विरोध अथवा असहयोग जारी रखना चाहिए। इतनी प्रखरता यदि जीवंत रखी जा सके तो उतने से भी अनौचित्य के असुर का मनोबल टूटेगा और देवत्व पनपेगा।

—अखण्ड ज्योति जून 1982, पृष्ठ-36

युगधर्म में भागीदारी निभाएँ

निदान के उपरांत ही उपचार बन पड़ता है। प्रस्तुत समस्याओं, विग्रहों, संकटों और विभीषिकाओं का एक ही कारण है—जनमानस में निष्कृष्टता की भरमार। लोक-व्यवहार में अवांछनीयताओं के बढ़ते जाने से उसकी प्रतिक्रिया चित्र-विचित्र प्रकार की कठिनाइयाँ आगे खड़ी करती रहती हैं। जड़ न काटने पर विषवृक्ष के पत्ते तोड़ते, कोपल पोछते रहने से कुछ बनने वाला है नहीं। तथ्य को जितनी जल्दी समझा जा सके उतना अपना और सबका भला है। आज का सर्वोपरि परमार्थ है—आलोक वितरण। आलोक वितरण अर्थात वह प्रयास जिसे प्रज्ञा अभियान के मंच से विचार-क्रांति आंदोलन, सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन, लोकमानस का परिशोधन आदि नामों से प्रतिपादित एवं प्रस्तुत किया जाता है।

प्रज्ञा-परिजनों को इस पुण्य-परमार्थ में, युगधर्म में किसी न किसी रूप में भागीदार बनना ही चाहिए। हाथ बढ़ाना ही चाहिए। कृतज्ञता, ऋणमुक्ति, प्रत्युपकार, जीवनलक्ष्य, ईश्वर की अपेक्षा, समय की पुकार जैसे अनेक कारण मिलकर इन दिनों प्रत्येक जाग्रत आत्मा से कुछ विशेष आशा-अपेक्षा रखी जाती हैं, वह है आलोक वितरण में योगदान। विनाश को विकास में परिवर्तित कर सकने में समर्थ युगांतरीय चेतना का इन दिनों जो दौर चल रहा है उसमें प्रत्येक दूरदर्शी विवेकवान को किसी न किसी रूप में महाकाल का हाथ बँटाना ही चाहिए। जो समय को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहचानेंगे वे इस सुयोग सौभाग्य को हाथ से जाने नहीं देंगे। हनुमान, अंगद जैसा न सही—शबरी, गिलहरी जितना योगदान तो तथाकथित व्यस्तों, चिंताग्रस्तों के लिए भी संभव हो सकता है। इच्छा जगेगी तो मार्ग मिलेगा ही। उपेक्षा रहने पर अवसर न मिलने की विवशता ही व्यक्त की जाती रहेगी। उस बहानेबाजी का अंत तो प्रलय के दिन तक पूर्ण हो सकने की आशा करना व्यर्थ है। आकांक्षा उभरे तो चट्टानों को तोड़कर गिरते-उठते दुर्गम रास्तों को चीरते हुए आगे बढ़ते हैं।

—अखण्ड ज्योति जून 1982, पृष्ठ-43, 44

राष्ट्र निर्माण में हमारा परामर्श

शासन की शक्ति असाधारण है। वह चाहे तो अपने तंत्र का इस प्रकार उपयोग कर सकता है जिससे आदर्शवादी चिंतन और उच्च चरित्र के निर्माण में कारगर साहसिकता मिल सके। इसके लिए उसे अपने स्वरूप, कार्यक्रम एवं निर्धारण में अपेक्षाकृत अधिक बड़े और तेज कदम उठाने चाहिए। अपने भारतीय शासन से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि वह गांधीजी की परंपरा को जीवंत एवं अग्रगामी बनाने के लिए उससे भी अधिक प्रयत्न करे, जैसे कि किए जा रहे हैं।

जिन कर्मचारियों के द्वारा शासनतंत्र चलता है उन्हें न केवल क्रिया-कुशल वरन चिंतन और चरित्र की दृष्टि से भी ऐसा होना चाहिए जिससे उन्हें जन-साधारण का विश्वास, समर्थन और सहयोग मिल सके। उनकी नियुक्ति मात्र शिक्षा पर आधारित नहीं वरन पिछले अनुभवों और प्रयत्नों को भी वरिष्ठता माना जाए। छोटी आयु के लड़के उच्च पदों पर आसीन न किए जाएँ। इसके लिए कार्यपद्धति इतनी सरल बनाई जाए कि बिना पेचीदगियों में उलझे पारस्परिक सहयोग पर निर्भर बिना समय गँवाए और खीझ उत्पन्न किए कार्य सरलतापूर्वक संपन्न होते रहें। कार्यपद्धति में प्रस्तुत पेचीदगियों को सरल किया जाना चाहिए ताकि वे लंबी अवधि न गँवाकर काम को जल्दी निपटा दिया करें। अधिकारियों के हाथ में हैरान करने की क्षमता न रहे तो रिश्वतखोरी के कारण अपंग बने शासनतंत्र को नवजीवन प्राप्त हो सकता है और उपयोगी योजनाओं में जनता का सहयोग मिल सकता है। यों यह कार्य दोनों पक्षों का है। अधिकारी और नागरिक दोनों ही अपने-अपने पथ के कर्त्तव्य निभाने के लिए उत्तरदायी हैं।

चुनाव में सही और श्रेष्ठ प्रतिनिधि चुने जा सकें इसलिए वोट का अधिकार सर्वजनीन न रहकर समझदारी एवं ईमानदारी की कुछ शर्तें पूरी करने वालों को ही दिया जाए। इसी प्रकार प्रतिनिधित्व के लिए हर किसी को खड़ा होने का अधिकार न हो। इसकी वरिष्ठता इससे पूर्व ही प्रमाणित होनी चाहिए। जनता को यह अधिकार रहे कि गुटबंदी के कारण, भ्रांत प्रचार के कारण तो नहीं, पर यदि भ्रष्टाचाररत पाया जाए तो उन्हें वापस भी बुला सके। चुनाव में इन दिनों जैसा दुष्प्रचार चलता है, जितना धन व्यय होता है, उस पर कड़ा अंकुश लगे।

जनता को भी मौलिक अधिकारों की तो छूट रहे पर उस बहाने स्वेच्छाचार बरतने की गुंजाइश न रहने दी जाए। कर्त्तव्यपालन के लिए हर किसी को बाध्य किया जाए। मात्र अधिकार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सुविधा की ही रट न लगती रहे। उच्छृंखलता और अवरोधों का आरंभ ही न हो सके ऐसा वातावरण बने। गुंडागर्दी का आचरण भी अपराधों में गिन लिया जाए और उसकी रोकथाम के लिए किसी के द्वारा मुकदमा चलाए जाने की प्रतीक्षा न करके सरकारी हस्तक्षेप का ही विषय बने। अपराधियों को सुधारा तो जाए पर साथ ही दंड की कठोरता में कमी न की जाए। इस क्षेत्र में बरती गई सरलता से अपराध घटते नहीं बढ़ते हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक जीवन में अनैतिक आचरण की रोकथाम करने के लिए पुरानी सामाजिक पंचायतों की परंपरा को पुनर्जाग्रत किया जाए। अवज्ञा करने वालों को वे पंचायतें सरकारी प्रताड़ना भी दिला सकें।

शिक्षा स्वावलंबी बनाई जाए। मैट्रिक स्तर का जीवनोपयोगी सामान्य ज्ञान सबको सरलतापूर्वक उपलब्ध हो। आगे की शिक्षा व्यवस्था में फूँक-फूँककर कदम उठे; नौकरी उद्देश्य न रहे। स्वावलंबन के लिए उद्योगों का शिक्षा के साथ समावेश रहे। सरकारी नौकरियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उतने ही छात्र भरती किए जाएँ जो न केवल स्तरीय हों वरन खप भी सकें। उपयोगी विषयों के विशेषज्ञ बनने की इच्छा वालों को ज्ञानार्जन की अतिरिक्त सुविधा रहे। पाठ्यक्रम बहुत बोझिल न हो। साथ ही उनमें चरित्रनिष्ठा और समाजनिष्ठा के आदर्शों को हृदयंगम कराने वाली प्रेरणा भरी रहें।

उद्योगों का विकेंद्रीकरण हो। वे छोटी इकाइयों में बँटे और सुदूर देहातों तक फैले हों। सहकारिता के आधार पर चलें। बड़े मिलों को कुटीर उद्योगों के प्रति स्पर्द्धा न करने दी जाए। टूटू-फूट की मरम्मत एवं पुराने को नया बनाने की व्यवस्था को अतिरिक्त प्रोत्साहन दिया जाए। कसबों को विकसित किया जाए ताकि वे समीपवर्ती छोटे देहातों की प्रगति एवं सुविधा में सहायक सिद्ध हो सकें। विलासिता के साधनों का उत्पादन घटाना और दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ सर्वत्र सुलभ हों, औद्योगिक नीति का आधार ऐसा ही बने।

सहकारिता का हर क्षेत्र में प्रवेश हो। संयुक्त परिवार की आवश्यकता पूरी करने वाले सुनियोजित कम्यून चलें। विवाहों पर सामाजिक नियंत्रण हो और वे पंजीकृत हों। जाति-लिंग तथा आर्थिक आधार पर पनपने वाली विषमता को देर तक सहन न किया जाए। कुरीतियों पर होने वाले अपव्यय निषिद्ध रहें। विद्यालयों की तरह पुस्तकालयों की भी स्थापना हो। साहित्य और कला को उच्छृंखल न बनने देने के लिए उनके निर्माताओं को सुरुचिपूर्ण सृजन की शर्त पालन करनी पड़े। मौलिक अधिकारों के नाम पर किसी को भी ऐसे काम करने की छूट न मिले, जिसमें वह सार्वजनिक हित के विरोध में काम करे। नशा उत्पादन जैसे कार्यों की रोकथाम अंकुश कड़े करने से ही हो सकती है। अर्थसंग्रह की सीमा हो। उसी प्रकार निजी खरच पर भी अंकुश रहे। इसके बिना दुर्व्यसनों और कुप्रचलनों की रोकथाम न हो सकेगी।

वस्तुत: यह कार्य राजनीतिज्ञों और उस क्षेत्र की पेचीदगियाँ, बारीकियाँ समझने वालों का है। सुधार और दबाव का कार्य उन्हीं के हाथ छोड़ देना चाहिए। प्रज्ञा अभियान की नीति लोकमंगल के सभी कार्यों में सरकारी प्रयत्नों में सहयोग देने और भाग लेने की है। शिक्षा प्रसार, वृक्षारोपण,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य-संवर्द्धन, समाज-कल्याण, परिवार नियोजन, बचत आंदोलन, सहकारिता, कुटीर उद्योग, नशा निषेध, अपराध नियमन जैसे लोकमंगल से संबंधित सभी सरकारी कार्यों में भरपूर सहयोग देने की है। इसके बदले न श्रेय लेना है और न पारिश्रमिक। श्रेय अफसरों को मिले। पुरस्कार अन्य उपयोगी कामों में लगे। इसी में धर्मतंत्र की गरिमा है। न आश्रित रहा जाए और न असहयोग किया जाए; बिना टकराए जितना सहयोग संभव हो अपनी ओर से करते रहा जाए। साथ ही धर्मक्षेत्र की विकृतियों को देखते हुए किसी अतिरिक्त सहयोग अनुदान की भी आशा न रखी जाए। जब सरकार जनता से वांछित सहायता अर्जित कर सकती है, तब कोई कारण नहीं कि अपनी वरिष्ठता और उपयोगिता सिद्ध करके उसी जनता से भावभरा स्वेच्छा सहयोग अर्जित न किया जा सके, जिसकी सहायता से सरकार अपना खरचीला तंत्र चलाती है। प्रज्ञा अभियान का तथ्य सृजन है, उसमें सहयोग और सद्भावना की ही प्रधान भूमिका हो सकती है। यही अपनी सुस्पष्ट नीति है। जन-साधारण की तरह शासनतंत्र के साथ भी अपनी ओर से इसी आधार पर मधुर संबंध रखने की है, विग्रह की नहीं। अच्छा है शासन भी धर्म के प्रति ऐसा ही सहकारी सद्भाव बरते।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1982, पृष्ठ-41, 42

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

युगप्रहरी युगधर्म निभाएँ

व्यक्ति और समाज को जिन अवांछनीयताओं ने इन दिनों बेतरह आच्छादित किया हुआ है, उनके मूल में अदूरदर्शिता से उत्पन्न विषाक्तता काम करती देखी जाती है। इसे हटाया-मिटाया न जा सके, तो घटाने के लिए तो तत्पर होना ही चाहिए, अन्यथा बुद्धिमानों से लदी हुई यह नाव एक साथ डूबेगी और सूखे के साथ गीला भी जलेगा। विपन्नता बढ़ती जा रही है। अवसर हाथ से निकलता जा रहा है। प्रस्तुत विभीषिकाओं से निपटना और विनाश को विकास में बदलना तभी संभव हो सकता है, जब अदूरदर्शिता के विरुद्ध मुहिम खड़ी की जाए और महामारी से भी बढ़कर इस बढ़ती हुई विपत्ति की रोकथाम पर समूचा ध्यान केंद्रित किया जाए। इस विपत्ति को बाढ़, भूकंप, दुर्भिक्ष, दुर्घटना स्तर की समझकर समय रहते राहत कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

प्रज्ञा अभियान इसी प्रक्रिया का नाम है, उसका संघर्ष पक्ष अदूरदर्शिता के भ्रष्ट चिंतन एवं दुष्ट आचरण के विरुद्ध मोर्चाबंदी करता है, उसका सृजन पक्ष लोकमानस के परिष्कार एवं सत्प्रवृत्तियाँ-संवर्द्धन में निरत है। इसे धुलाई-रँगाई की, गलाई-ढलाई की समन्वित प्रक्रिया कह सकते हैं। इस प्रयत्न-प्रवाह की सफलता-असफलता पर ही भविष्य का अंधकारमय होना या समुज्ज्वल बनना पूरी तरह निर्भर है। इस तथ्य को गंभीरतापूर्वक समझा और विश्वासपूर्वक अपनाया जाना चाहिए। इन दिनों करने को असंख्यों काम सामने हैं, पर आपत्तिधर्म की तरह जिसे प्रमुखता मिलनी चाहिए, वह एक ही है कि प्रज्ञा अभियान को व्यापक एवं सफल बनाने के लिए प्राणपण से प्रयत्न किया जाए। उपेक्षा को आड़े न आने दिया जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह उत्तरदायित्व प्रज्ञा-परिजनों के कंधों पर आया है कि जन-जन के मन में दूरदर्शी विवेकशीलता का बीजारोपण करें और उसे सींचते रहकर लहलहाती फसल के स्तर तक पहुँचाएँ। स्मरण रहे कि परिस्थिति मन:स्थिति की परिणति मात्र होती है। परिस्थिति बदलनी हो, तो जनमानस की आस्थाओं और प्रचलन में समाविष्ट आदतों को बदलना पड़ेगा। उलटे को उलटा कर सीधा करने का एक ही मार्ग है कि प्रज्ञा अभियान को गति प्रदान करें, उसे चिनगारी से जाज्वल्यमान बनाने में अपने श्रम, सहयोग एवं अनुदान की भावभरी श्रद्धांजलियाँ प्रस्तुत करने में कुछ उठा न रखें। युगधर्म यही है। जागरूक युग प्रहरियों को समय की इस पुकार को सुनना ही चाहिए। प्रस्तुत चुनौती को स्वीकार करना ही चाहिए।

—अखण्ड ज्योति जून 1983, पृष्ठ-50

अनाचार के विरुद्ध तनकर खड़े हों

साहसिकता का चिरस्थायी स्वरूप श्रमशीलता और तत्परता है। उसमें अस्तव्यस्तता को निरस्त करना पड़ता है और आलस्य-प्रमाद पर अंकुश लगाना होता है। यही है वह समन्वय जिसे खाद-पानी कहा जा सकता है। उपलब्धियों की खेती करने वालों को अच्छी फसल प्राप्त करने का लाभ तभी मिलता है, जब वे अकर्मण्यता से बचें और कर्मनिष्ठ पराक्रमियों की तरह विवेक बुद्धि द्वारा निर्धारित किए गए क्रिया-कलाप में परिपूर्ण रस लें और कटिबद्ध होकर जुट पड़ें।

इस संसार में हर कोई भला नहीं है। बुरों की भी यहाँ कमी नहीं। उनसे सतर्क रहने और निपटने के लिए न केवल जागरूकता की आवश्यकता है, वरन विरोध करने और जूझने की भी क्षमता चाहिए। इसके बिना आत्मरक्षा तक न बन पड़ेगी। भीरुता का नाम सज्जनता नहीं है। कायरों से उसका निर्वाह नहीं बन पड़ता। ऐसी दशा में दुष्ट, दुराचारियों की बन पड़ती है। वे बिना झंझट वाले शिकार पर सर्वप्रथम आक्रमण करते हैं। सज्जनों को अकसर यह शिकायत करते सुना गया है कि दुर्जन उन्हें बहुत सताते हैं। उसका कारण सज्जनता की गरिमा का दुर्बल होना नहीं, वरन यह है कि साहसिकता की महत्ता एवं अनिवार्यता नहीं समझी गई। प्रगति के लिए ही नहीं सुरक्षा के लिए साहसिकता की आवश्यकता है। अनाचार के सामने हथियार डाल देने वाले असज्जन ही कहे जाएँगे।

किसी का बुरा न करना और सबके प्रति शुभ कामना रखना अच्छी बात है। अमृत का भी दुरुपयोग होने से वह विष का काम करता है। दुष्ट-दुराचारियों के प्रति उदारता बरतने या उनके कुकृत्यों के प्रति आँखें बंद किए रहने पर सज्जनता निभती नहीं। नीतिवान न्याय और औचित्य का समर्थन करते हैं। इस प्रयास में अनाचार से जूझना भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। नम्रता और उदारता ही नहीं शालीनता का एक पक्ष अनाचार के विरुद्ध तनकर खड़ा हो जाना भी है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1984, पृष्ठ-56

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगली क्रांति कैसी होगी ?

अगली क्रांति महाविनाश की दीखती भर है, पर वह होगी नहीं। उसका स्थान समझदारी ग्रहण करेगी और नवसृजन की हवा चलेगी। यह सृजन कृत्य धीमी चाल से चल सकता है पर सर्वतोमुखी एवं सफल होकर रहेगा। यह समता का युग होगा। संपन्नता और प्रभुता का उन्माद समय रहते उतर जाएगा और प्रयास वे चलेंगे; जिसमें विषमता ही नहीं विलगता भी अपना अस्तित्व गवाँ दे।

औसत आदमी सोचने लगा है कि अब समता और एकता की ओर बढ़ने से ही काम चलेगा। विषमता और विलगता से टकराव ही उत्पन्न होते रहेंगे और उनमें शक्ति का अपव्यय करने के अतिरिक्त और किसी प्रकार की उपलब्धि किसी के हाथ नहीं लगेगी।

यह चिंतन हवा के साथ उड़ रहा है और वास्तविकता से जन-जन को अवगत करा रहा है। वह समय बहुत पीछे रह गया जब लोकचिंतन का कोई महत्त्व न था; जब समर्थों की मनमानी चलती थी। अब लोकमानस अपने आप में एक शक्ति बनकर उभरा है और अपनी सामर्थ्य को इस सीमा तक विकसित परिपुष्ट कर रहा है कि आज के सामर्थ्यवानों को कल अपना सिर नीचे झुकाना पड़ेगा। दुनिया में इतने साधन मौजूद हैं कि वर्तमान जनसमुदाय का उससे भलीभाँति निर्वाह हो सके और सभी सुखपूर्वक जी सकें। महत्त्वाकांक्षाएँ अगले दिनों आपा-धापी में नहीं लगेंगी, वरन उनकी दिशाधारा होगी—न्याय और विवेक का कार्यान्वयन। प्रकारांतर में यही आदर्शवादिता है, इसी के साथ मानवी गरिमा भी जुड़ी हुई है।

पुरुषार्थ भरे चिंतन और प्रयास का ही परिणाम है कि आदिम युग से अब तक कछुए की चाल चलता हुआ वन्य मनुष्यों जैसा जीवन जिया जा रहा था, धरती पर थोड़े से साधन थे और थोड़े से मनुष्य, परंतु अब इन शताब्दियों में यह वैभव विस्तार इतना बढ़ गया है, मानो आसमान से उतरा हो। क्या यह प्रगतिक्रम भविष्य में रुक जाएगा। क्या इस प्रगतिक्रम की परिणति दुर्भाग्यपूर्ण होगी ? क्या रुदन ही मनुष्य के भाग्य में बदा है ?

प्रकृति के अंतराल में से आश्वासन उभरता है कि आशंकाएँ और संभावनाएँ कुछ भी क्यों न हों। अंतत: मनुष्य की समझदारी और दूरदर्शिता जीतेगी। साथ ही न्यायनिष्ठा भी जीवित रहेगी। अगली क्रांति सर्वनाश की विभीषिकाओं से भरी-पूरी दीखती भर है, पर यह बंदर घुड़की मात्र है। हमें उज्ज्वल भविष्य की संभावना का स्वप्न देखना चाहिए और नवसृजन का ताना-बाना बुनना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1986, पृष्ठ-48

युगसृजन में मूर्द्धन्यों की भूमिका

साहित्यकार, प्रकाशक, मुद्रक, बुकसेलर एक संयुक्त वर्ग है। यह मिल-जुलकर ऐसे साहित्य का सृजन, प्रकाशन और वितरण करें जो युगधर्म के अनुरूप हो तो उसका प्रभाव भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षित वर्ग पर कम न पड़ेगा। अब तक इस वर्ग में से अधिकांश ने ऐसा मसाला प्रस्तुत किया है जो पाठकों को अंधविश्वासों और दुश्चिंतनों की ओर धकेलता रहा है। उस प्रभाव से अगणित प्रभावित हुए हैं और बड़ा-सा लोकमानस उसी ढाँचे में ढला है। अब जब साँचा बदलेगा तो उसमें ढलने वाले पुरजे दूसरे रंग-ढंग के होंगे। सत्साहित्य कितना प्रेरक होता है। इसके साक्षी ईसाइयों, कम्युनिस्टों और क्रांतियाँ प्रस्तुत करते रहने वालों से पूछकर कारगर निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है।

गायकों, वादकों, अभिनेताओं, फिल्म निर्माताओं ने मिल-जुलकर जो माहौल रचा है उस पर अगणित लोग झूमने लगे हैं। फिल्म दर्शकों की संख्या अखबार पाठकों से भी अधिक है। रिकार्डों को सुनने वाली संख्या भी कम नहीं है, उन्हें तो जहाँ-तहाँ मुफ्त में ही सुना जाता है। साँप बीन पर लहराते हैं और सुनने वाले गीतों का रसास्वादन करते हैं। सभा-सम्मेलनों, समारोहों में गीत, वाद्य सुनने को मिलते हैं। फिल्म देखने तो लोग पैसा देकर जाते हैं और लौटते समय उसी रंग में रँगे हुए होते हैं जो दिखाया-सुनाया गया है। मस्तिष्क को बदलने में गायन, वादन, अभिनय का बड़ा हाथ है। वह अपना लक्ष्य बदले तो सुनने वालों का मन:क्षेत्र बदले बिना रह नहीं सकेगा।

वक्ताओं ने बड़ी-बड़ी क्रांतियाँ की हैं। उन्होंने लोकशिक्षण दिया और जनमानस को उठाकर खड़ा किया है। प्रभावित लोगों ने वह किया है, जिसे करने में आम आदमी चकराता है। कृष्ण की गीता ने अर्जुन में नवजीवन भरा था। शुकदेव की कथा से परीक्षित का उद्धार हुआ है। सूत-सौनक के कथानकों ने सामयिक समस्याओं का उपयोगी समाधान किया था। लेनिन की वाणी ने रूस को हिलाकर रख दिया था। बुद्ध, गांधी आदि की वाणी समय को उलटने में समर्थ हुई। मनीषियों के उद्बोधन व्यक्ति को नए सिरे से सोचने और नई दिशा अपनाने के लिए बाधित कर सकते हैं।

जो वैज्ञानिक अणुबम जैसे मारक अस्त्र बना सकते हैं, वे चाहें तो सुविधा-संवर्द्धन से लेकर ब्रेन वाशिंग तक की अनेक क्रिया-प्रक्रियाएँ संपन्न कर सकते हैं। मारकों को निरस्त करने वाला विष-विरोधी अमृत भी खोज सकते हैं।

धन की नश्वरता को उसे कमाने में बरती जाने वाली निष्ठुरता को देखते हुए उसका नंबर पिछली पंक्ति में आता है, पर आज तो वही प्रथम पंक्ति में है। पैसे की कीमत पर सब कुछ खरीदा जा सकता है; सम्मान भी और धर्म समुदाय भी। उसी पूँजी के बल पर अनेक भले-बुरे व्यवसाय चलते हैं। धन मनुष्य को बुद्धिमान और चतुर भी बना देता है। मूर्ख के पास तो पैसा ठहरता ही नहीं।

धनवान चाहे तो कुटीर उद्योगों का ताना-बाना बुनकर लाखों- करोड़ों को काम दे सकता है। वे शिक्षा संस्थान चला सकते हैं। प्रकाशन हाथ में लेकर वातावरण को बदल सकते हैं। लोकसेवियों को प्रश्रय दे सकते हैं। धनवानों से कहा जाए कि जिस चतुरता से उन्होंने उपार्जन किया है, उसी प्रकार दूरदर्शिता का आश्रय लेकर ऐसी सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाएँ जिनसे नई हवा चल सके, नया वातावरण बन सके और नया युग बन सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन दिनों विपत्तियों के बरसने की वेला है। उनसे पीड़ितों को सहायता की आवश्यकता पड़ेगी। धनवानों की थैलियाँ उस प्रयोजन के लिए भी काम आ सकती हैं।

विश्वामित्र नवयुग का सृजन करना चाहते थे। नई दुनिया बनाने का उनका मन था। राजा हरिश्चंद्र ने उस महान प्रयोजन के लिए न केवल अपना सारा राजपाट दे दिया वरन अपने पूरे परिवार को बेचकर उस आवश्यकता में कमी न पड़ने दी। सम्राट अशोक ने बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन में अपने विशाल साम्राज्य को खपा दिया था। तक्षशिला विश्वविद्यालय के लिए हर्षवर्द्धन ने और नालंदा के पुनर्निर्माण में चंद्रगुप्त ने विपुल धन लगाया था। राणा प्रताप को स्वतंत्रता संग्राम जारी रखने के लिए भामाशाह ने अपना समस्त कोश उड़ेल दिया था। अन्य अनेक लोभ, मोह त्यागकर पुण्य-प्रयोजनों के लिए अपने समय और श्रम का सार धन के रूप में लगाते रहे हैं।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1987, पृष्ठ-46, 47

प्रतिभाएँ युगधर्म निभाएँ

इन दिनों मनुष्य की निजी आदतों से लेकर समाज, शासन, व्यवसाय आदि में अवांछनीयता के ऐसे तत्त्वों का असाधारण रूप से समावेश हो गया है जिन्हें नहीं ही पनपना चाहिए था। आवश्यकता इसी सफाई की है। इसके लिए प्रतिभाशाली हर व्यक्तित्व को अपनी क्षमता के अनुरूप योगदान देना पड़ेगा। मनीषियों की लेखनी और वाणी को सशक्त अस्त्र-शस्त्रों की भूमिका निभानी चाहिए। वक्ता की वाणी इतनी मुखर होनी चाहिए कि उसकी यथार्थता मिश्रित ओजस्विता हर सुनने वाले को ध्यान देने और अनौचित्य से विरत होने के लिए बाधित कर सके। युगगायक सरसता की ऐसी स्वरलहरी निर्धारित कर सकता है जिससे उसके ऊपर लगा कामुकता भड़काने का कलंक धुल सके। धनिकों के लिए प्रायश्चित का ठीक यही समय है। व्यक्तिगत संपदा को शासकों से लेकर ईर्ष्यालुओं तक कोई भी सहन न करेगा। उसकी प्रधान प्रकृति भी दुर्व्यसनों, अपव्ययों, विपत्तियों, विग्रहों के साथ विदा होने की है। अगले दिनों की उथल-पुथल पर यह बिजली सबसे संचित संपदा पर ही गिरेगी क्योंकि अनेकानेक समस्याओं, संकटों और विडंबनाओं का प्रमुख कारण उसी लोभ, लिप्सा को माना जाता रहा है। अच्छा हो जिनके पास अनावश्यक संग्रह है, वे उसे युगधर्म की पुकार को सुनने-समझने के उपरांत उसी हेतु विसर्जित कर दें।

जनमानस प्रभावित करने वाले और भी अनेक तंत्र है। इसमें प्रेस ने अपना मजबूत स्थान बना लिया है। अभिनय भी बल-कौशल का प्रतीक-प्रतिनिधि बनकर रह रहा है। जिनमें नेतृत्व कर सकने की प्रतिभा हो, वे उन्हें अपनी विशिष्टता सिद्ध करने के लिए यश-लोलुपता में खरच न करें, वरन लोकमानस के साथ गुँथकर ऐसा प्रबल-प्रयत्न करें कि बुद्ध, गांधी, शंकर, दयानंद, विवेकानंद, विनोबा की तरह सही मार्गदर्शन की आवश्यकता पूरी कर सकें। इस संबंध में किसी को भी अपनी क्षमता कम करके नहीं आँकनी चाहिए। टिटहरी का समुद्र सुखाने का संकल्प

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगस्त्य की सहायता से पूरा होकर रहा था। कार्ल मार्क्स, लेनिन, रूसो जैसे विचारक किसी युनीवर्सिटी के प्राध्यापक नहीं थे। कबीर और रैदास जैसों ने यथार्थता के प्रतिपादन में इतना साहस दिखाया कि जमाने के सामने अकेले ही अड़ जाने की उनकी प्रतिज्ञा अंत तक निभी रही। हजारी किसान ने नितांत अनपढ़ होते हुए भी अपने संपर्क-क्षेत्र में हजार आम्र उद्यान लगाने में सफलता पाई थी। धुन के धनी इतने शक्ति संपन्न होते हैं कि साधनों और सहयोगियों की परवाह न करते हुए भी वे अपनी नाव चलाते और उसमें बिठाकर अनेक को पार करते हैं।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1989, पृष्ठ-47

युग परिवर्तन की वेला आई

यह युग परितर्वन की वेला है। स्त्रष्टा को अपना अभीष्ट प्रयोजन पूरा करना है। नवयुग अवतरण की प्रतिज्ञा से वचनबद्ध सत्ता उज्ज्वल भविष्य की संरचना करने जा रही है। इससे पूर्व का प्रस्तुत समय युगसंधि के नाम से जाना जाता है। इन दिनों दैवी प्रयोजन में सहयोग कर सकने वालों की आवश्यकता पड़ रही है। कारण कि भगवान निराकार होने के कारण प्राय: मनुष्य शरीरधारियों से अपने प्रयोजन पूरे कराते हैं। जो उसके लिए कटिबद्ध रहते हैं, वे हनुमान और अर्जुन की तरह धन्य बन जाते हैं। समय निकल जाने पर उसके लिए बहुत पीछे जगने वालों को उस लाभ से वंचित ही रहना पड़ता है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उच्च पद और उपहार उपलब्ध कर सके। अब समय निकलने पर कोई जेल जाने का प्रस्ताव करे, तो वह लाभ नहीं मिल सकता, जो समय पर जग पड़ने वाले पा सके।

ईश्वर को जो देना था, वह मनुष्य जन्म के रूप में दे चुका, अब उसी का सदुपयोग करके अभीष्ट साधन और वैभव उपलब्ध करना ही सीधा मार्ग है। इस उपलब्धि के बाद अनेकानेक मनोवांछाओं को पूरा करने के लिए गिड़गिड़ाना अपनी ही दीनता और हीनता का परिचय देना है। इससे आगे तो जो पाया था, उसका ब्याजसमेत ऋण चुकाना ही शेष रह जाता है। यही धर्म है, यही कर्म और यही औचित्य।

अब आगे दिशाधारा मोड़ने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। भक्त मंडली स्वर्ग, मुक्ति और ऋद्धि-सिद्धि की दुनिया में उड़ानें भरती है। पूजा भर से मनोवांछाएँ पूरी कराने वाले सनकियों की अपनी दुनिया है। लोकमानस परिष्कार, चरित्रनिष्ठा और समाज की अभिनव संरचना पर किसी का ध्यान नहीं। होना यह चाहिए कि भावना, श्रम, साधनों का उपयोग ऐसे केंद्रबिंदु पर एकत्र किया जाए, जिससे समाजसेवियों की संख्या और सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन प्रक्रिया को प्राचीनकाल की तरह अब फिर नया श्रेय-सम्मान मिल सके। यही है धर्मधारणा और ईश्वरी प्रेरणा की अभिनव दिशाधारा।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1990, पृष्ठ-12

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूरदर्शिता अपनाएँ, घाटे में नहीं रहेंगे

दूरदर्शी, विवेकशीलता का एक ही चिह्न है कि हम छाया की ओर से मुँह मोड़कर प्रकाश की ओर चलना आरंभ करें। छाया के पीछे नहीं दौड़ना पड़ेगा, वह अपने पीछे मनुहार करती हुई चलेगी। सौभाग्यशीलता का एक ही चिह्न है कि हम निकृष्टता से, सस्ती हेय महत्त्वांकांक्षाओं से विरत हों और उस नाविक जैसा साहस जुटाएँ, जो स्वयं पार होता है और अनेकों को पार करता है। खतरे से भरे-पूरे नौकायन व्यवसाय को जब अनेक आत्मविश्वासी अपनाते और भूखे पेट भी नहीं सोते तो हमीं क्यों ऐसे असमंजस में पड़ें कि परमार्थ-पथ अपनाने से घाटा सहेंगे और मूर्ख कहलाएँगे।

जिनके चरणों पर शत-शत अभिनंदन होते हैं, जिनके पद्चिह्नों का अनुगमन करने में असंख्यों को कृतकृत्य होने का अवसर मिलता है उसका परित्याग करने के लिए कौन-सा दुर्भाग्य हमारे आड़े आता है, इसे देखें। महामानवों की कृतियों की गौरव-गरिमा इतिहास के पृष्ठों पर तलाश करें तो पाते हैं कि शरीर न रहने पर भी उनकी आत्मा जीवितों से बढ़कर अपनी सत्ता बनाए हुए है और अनेक निष्प्राणों में प्राण भरती है। हो सकता है कि वे अमीर न बन पाए हों, संभव है तृष्णा, विलासिता और अहंता की मृगतृष्णा में उन्हें न भटकना पड़ा हो। संत-सज्जनों की तरह सामान्य जीवन जी सके हों, पर इतना निश्चित है कि जिस भी स्थिति में वे रहे होंगे, अपने सत्प्रयासों के कारण पुलकित और प्रमुदित रहे होंगे। अब जबकि उनका शरीर नहीं है, तो भी पिछला स्मरण करके संतोष की सांस लेते होंगे और कहते होंगे कि मनुष्य जीवन ने हमें धन्य किया और उस जीवन को गौरवान्वित करने में हमने कमी न रहने दी।

जब कभी जिस किसी के जीवन में मार्ग निर्धारण की उमंग उठे और उस वेला में उत्कृष्टता के अवलंबन की स्फुरणा उठे, समझना चाहिए वह स्वयं धन्य हुआ और देवताओं ने अपने निवास के लिए जिस चोले का चुनाव किया था वह चुनाव भी बुद्धिमत्तापूर्ण सिद्ध हुआ।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1990, पृष्ठ-35

संत इमर्सन से एक मित्र ने पूछा—"आपसे कभी स्वर्ग जाने को कहा जाए, तो आप क्या तैयारी करेंगे ?" इमर्सन बोले—"सबसे पहले अपनी पुस्तकें बाँध लेंगे ताकि स्वर्ग में समय बेकार न जाए।"

लोकमान्य तिलक से एक मित्र ने पूछा—"आपको नरक जाना पड़े तो क्या करेंगे ?" वे बोले—"अपने साथ पुस्तकें लेता जाऊँगा ताकि स्वाध्याय द्वारा नरक को स्वर्ग में बदलने वाले विचार इकट्ठा कर सकूँ।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-7

विश्वशांति

विश्वशांति विश्वराष्ट्र के निर्माण से संभव

हमें संगठन तत्त्व की महत्ता समझते हुए एकता की ओर बढ़ना चाहिए। एक राष्ट्र, एक भाषा, एक संस्कृति, एक धर्म की आवश्यकता को स्वीकार करना चाहिए और गले उतारना चाहिए। छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटे हुए देश अपने-अपने स्थानीय स्वार्थों का राग अलापते रहेंगे और उनके लिए दुराग्रही नीति अपनाते रहेंगे तो बारूद में कभी भी चिनगारी पड़ जाएगी और विश्व-विनाश का संकट सामने आ जाएगा। पिछले दिनों मध्य पूर्व के देशों में जिन क्षेत्रीय स्वार्थों को लेकर संघर्ष हुआ उसमें विश्वशांति को भारी आघात लगा है। यदि यह सभी देश एक ही महादेश के, विश्वराष्ट्र के प्रांत भर रहे होते और विश्व पंचायत का निर्णय मानने के लिए विवश किए गए होते तो वह स्थिति सामने न आती जो आज सामने खड़ी है। मध्य पूर्व का उल्लेख तो एक उदाहरण मात्र है। ऐसी ही बारूद दुनिया के कोने-कोने में बिछी हुई है। ऐसे विस्फोट पिछले दिनों अनेकों हुए हैं और आगे भी उनके भड़कने की गुंजाइश मौजूद है। इनके समाधान कूटनीतिक दाव-पेचों अथवा शस्त्र-संघर्ष से संभव न होंगे। ऊपर की लीपा-पोती से भीतर ही भीतर सुलगने वाला विद्रोह रुकेगा नहीं, वह कभी भी, कहीं से भी फूटकर बाहर निकलेगा।

संसार के समस्त राजनीतिक संकटों का हल एक ही है कि समस्त भूमंडल का एक राज्य बने। देशों का विभाजन भौगोलिक आधार पर किया जाए और उनका दर्जा एक प्रांत या जिले जैसा ही माना जाए। समस्त विश्व-संपदा को समस्त मानव जाति की घोषित किया जाए। स्थानीय लोग—स्थानीय संपदा को अपने कब्जे में रखने का दुस्साहस न करें। जनसंख्या और भूमि विस्तार का संतुलन बनाया जाए। एशिया की आबादी बहुत बढ़ गई है जबकि अफ्रीका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि के विशाल भूखंडों में अभी करोड़ों लोगों के बसने और सुखपूर्वक रहने की पूरी गुंजाइश है। चंद लोग इतने बड़े भूखंडों को अपने कब्जे में दबाए बैठे रहेंगे और शेष लोगों को दम घोंटने वाली घिच-पिच में सड़ना, मरना पड़ेगा, तो आज न सही कल विद्रोह फूटेगा और विश्वयुद्ध छिड़ेगा। दो युद्धों का विनाश हम देख चुके। यह शृंखला तभी समाप्त होगी जब या तो संसार में न्याय की स्थापना हो जाए अथवा समस्त विश्व का सर्वनाश हो जाए। वर्ग स्वार्थ की वर्तमान रीति के रहते युद्ध और विनाश की घटाएँ घुमड़ती ही रहेंगी। इसका समाधान एक ही है—विश्व राष्ट्र की स्थापना। मनुष्य को विश्व नागरिक माने जाने की घोषणा। भूमंडल की समस्त संपदा पर समस्त मानवों का समान रूप से अधिकार माना जाए और उसके समुचित वितरण को संभव बनाने के लिए विश्व शासन की स्थापना की जाए। विश्व न्यायालय द्वारा मानवमात्र के हित को ध्यान में रखकर बड़ी समस्याओं का निष्पक्ष निराकरण प्रस्तुत किया जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस समाधान के अतिरिक्त विश्वशांति का और कोई विकल्प नहीं है। विघटन से हमें संगठन की ओर ही बढ़ना होगा।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1975, पृष्ठ-11, 12

जीवन का उपयोग आत्मकल्याण और विश्व-कल्याण में

ईश्वर ने न केवल सुर-दुर्लभ मनुष्य जीवन ही दिया है, वरन उसके साथ-साथ सफलताएँ प्राप्त कर सकने के निमित्त अंतरंग और बहिरंग वैभव इतने प्रचुर परिमाण में प्रदान किए हैं जिन्हें पाकर कोई भी विचारशील अपने सौभाग्य सुअवसर की सराहना करते-करते निहाल गदगद् हो सकता है।

मनुष्य जीवन इसीलिए अपने इस लोक की सर्वोपरि कही जाने वाली संपदा है। इसके दो ही उपयोग हैं—आत्मकल्याण और विश्व-कल्याण। आत्मकल्याण यह कि वह सदुद्देश्य में निरत रहकर आत्मसंतोष, लोकसम्मान, दैवी अनुग्रह प्राप्त करते हुए पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करे। विश्व-कल्याण यह कि ईश्वर की इच्छा पूरी करे। सृष्टि में सद्भावनाएँ और सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने में प्रयत्नशील रहे। चिंतन की उत्कृष्टता और व्यवहार की आदर्शवादिता ही वे तत्त्व हैं जिनके सहारे इस धरती की सुख-शांति, प्रगति और समृद्धि फलती-फूलती है। यदि उन्हें निरस्त कर दिया जाए तो फिर पदार्थ-वैभव कितना ही प्रचुर क्यों न हो मात्र विनाशकारी दुष्परिणाम ही उत्पन्न करेगा। मूल्य वैभव का नहीं उसके उपयोग का है। दुरुपयोग से तो अमृत भी विष बन जाता है। वस्तुओं का सदुपयोग, सामर्थ्यों का नियोजन और पारस्परिक स्नेह, सहयोग मात्र आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ हैं। यह जिसमें जितनी होंगी वह उसी अनुपात में आत्मकल्याण का स्वार्थ और विश्व-कल्याण का परमार्थ संपादित कर सकेगा। कहना न होगा कि जीवन की सरसता और सार्थकता इन्हीं दो तथ्यों पर टिकी हुई है। ईश्वर द्वारा यह सुर-दुर्लभ उपहार दिया जाना भी इन्हीं दो प्रयोजनों के सहारे सार्थक सिद्ध होता है।

हर मनुष्य के पास ऐसा अवसर मौजूद है कि वह चाहे तो जीवन को सार्थक बनाने वाले सन्मार्ग पर सरलातापूर्वक चल सके और अभीष्ट लक्ष्य को बिना किसी कठिनाई के प्राप्त कर सके।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1980, पृष्ठ-12, 13

भारतीय संस्कृति

सांस्कृतिक पुनरुत्थान को आगे आएँ

भारतीय तत्त्वज्ञान की वास्तविक आधारशिला का मूल रूप यदि साधारण जनता की समझ में आ जाए तो निश्चित ही हर बुद्धिमान आदमी यह अनुभव कर सकता कि यह तत्त्वज्ञान,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आधुनिक सभी तत्त्वज्ञानों से ऊँचा है। कम्युनिज्म आदि जो दर्शन अपने आप को वर्तमान समय के लिए सर्वोपयोगी एवं व्यावहारिक सिद्ध करते हैं, उनसे भारतीय तत्त्वज्ञान किसी भी प्रकार पीछे नहीं है। हमारी प्राचीन विचारधाराएँ और परंपराएँ यदि ठीक रूप से समझी जाएँ तो वे मनुष्य की समस्त समस्याओं को सुलझाने में अधिक आधुनिक और अधिक व्यावहारिक रूप से समर्थ हो सकती हैं। हमारा दर्शन, पूर्ण रूप से मनोविज्ञान, पदार्थ विज्ञान, तर्क, प्रमाण, अनुभव आदि के ठोस आधारों पर आधारित है। इसी प्रकार रीति-रिवाजों, त्योहारों, व्रत, उत्सवों, संस्कार, भाषा, वेश, भाव, आचार, व्यवहार आदि का महत्त्व समझ में आ जाए और समय के कुप्रभाव से आई विकृतियों का संशोधन तथा समय की प्रगति की पूर्ति के लिए आवश्यक परिवर्तन कर दिया जाए तो हमारी सांस्कृतिक महानता और उपयोगिता हर किसी की समझ में आ सकती है। तब उसकी उपेक्षा, अवहेलना और निंदा करना उचित प्रतीत न होगा।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए हमें सबसे बड़ा और सबसे आरंभिक कार्य यह करना है कि उसके विशुद्ध रूप की, जो आज तमसाच्छन्न हो रहा है, लोगों के सम्मुख परिष्कृत रूप में उपस्थित करें और यह बताएँ कि इस महानता को अपनाना हमारे लिए सभी दृष्टियों से कितना अधिक लाभदायक हो सकता है। संस्कृति सेवा का, पुनरुत्थान का सर्वप्रथम कार्य यही हो सकता है कि हम जनता के सामने, सर्वसाधारण के सामने अपना दर्शनशास्त्र, तत्त्वज्ञान तथा आचार-विचार का व्यावहारिक रूप उपस्थित करें, जिससे उसकी उपेक्षा करने वालों को पुनः विचार करने का और थोड़ी आस्था रखने वालों को प्रोत्साहन का अवसर मिले। आइए हम लोग बड़े पैमाने पर सुसंगठित रूप से इस निर्माण-कार्य में संलग्न हों।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1955, पृष्ठ-25

आस्तिकता मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता

केवल राजदंड और राज-नियमों के आधार पर समाज में स्थायी सुख-शांति की आशा कभी पूरी नहीं हो सकती। यदि ऐसा संभव होता, तो संसार के सारे देशों में राज-नियम लागू हैं और राजदंड की भी व्यवस्था है, तब भी संसार का एक भी ऐसा देश नहीं है, जिसमें पूर्ण शांति के लक्षण दिखाई दें। सभी देशों और सभी समाजों में अपराध और पाप होते हैं, जिनके कारण लोग अशांत और दुखी रहते हैं।

पाप-प्रवृत्ति का दमन बाह्य प्रतिबंधों अथवा भयों से नहीं हो सकता। उसका दमन तो मनुष्य की स्वयं की अंतःप्रेरणा से ही संभव है। इस अंतःप्रेरणा का आधार पूर्ण आस्तिकता ही हो सकती है। जब मनुष्य को यह निश्चय हो जाएगा कि ईश्वर सर्वव्यापक है, न्यायशील तथा सर्वशक्तिमान है, सबके प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष, अच्छे-बुरे कामों का साक्षी है, देखने और जानने वाला है, तो वह चोरी से भी पाप-कर्म करते डरेगा। उसे विश्वास रहेगा कि वह जो कुछ करेगा, उसको ईश्वर अवश्य देखेगा और उसके अनुसार पूरा-पूरा दंड देगा। ईश्वर के अस्तित्व, उसकी सर्वव्यापकता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और न्यायशीलता में विश्वास किए बिना मनुष्य के लिए सहज संभव नहीं कि वह अज्ञानवश सुंदर, सुखकर तथा लाभकर दिखलाई देने वाले पापों के आकर्षण से बचा रह सके। पापों में बड़ा भयानक प्रलोभन होता है। जो मनुष्य को हठात अपनी ओर खींच ही लेता है। इसकी रक्षा का एकमात्र उपाय सच्ची और संपूर्ण आस्तिकता ही है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता और निष्पक्ष न्यायशीलता का निश्चय हुए बिना अनैतिक विचारों को नहीं रोका जा सकता। कुविचारों पर अंकुश रखना तभी संभव होगा, जब कर्मफल, स्वर्ग-नरक, लोक-परलोक, पुनर्जन्म और अधम योनियों में विश्वास पैदा हो। इन सत्यों का विश्वासी निश्चय ही कुमार्ग पर पैर रखते डरेगा। उसका यह विश्वास तुरंत ही पाप-पथ की ओर बढ़ते हुए उसके पैरों में जंजीर डाल देगा। इस प्रकार का कल्याणकारी भय किसी आस्तिकता के हृदय में ही उत्पन्न हो सकता है, नास्तिक के हृदय में नहीं।

मनुष्यों की मनोभूमि का सुधार, जिससे कि उसमें न तो कुविचार ही आएँ और न अनैतिक भावना का जन्म हो। मनुष्य की अंत:प्रेरणा सत्कर्मों की ओर अग्रसर हो। इस पावन स्थिति को चरितार्थ करने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्यों में अधिक-से-अधिक आस्तिकता का विकास किया जाए। उसकी शिथिल होती हुई आस्थाओं को बल प्रदान किया जाए। जिस दिन मनुष्य में वास्तविक आस्तिकता का विकास हो जाएगा—उनकी अंत:प्रेरणा सदोन्मुखी हो चलेगी। ज्यों-ज्यों इस दिशा में प्रगति होती जाएगी, त्यों-त्यों समाज में अशांति एवं असुख की परिस्थितियाँ कम होती जाएँगी। जिस प्रकार नास्तिकता सारे अनैतिक कर्मों की जड़ है, उसी प्रकार आस्तिकता सत्कर्मों की मूल आधार है। अस्तु, हम सबको स्वयं को आस्तिक बनना ही चाहिए, साथ ही इस परमात्म-भाव की आस्था अन्य लोगों में भी उत्पन्न करते रहना चाहिए। इस मार्ग से समाज और संसार में स्थायी सुख-शांति की स्थापना संभव हो सकती है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1968, पृष्ठ-02-04

समन्वयवादी भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति की जो सबसे बड़ी महत्ता और अंतरराष्ट्रीय श्रद्धा तथा सद्भावना का आधार है, वह है इसकी समन्वय की क्षमता। दूसरों को अपने आप में समा लेने की गंभीरता। यह ऐसे सार्वभौम सत्यों पर खड़ी है कि किसी भी संस्कृति के साथ इसका टकराव हो ही नहीं सकता वरन विभिन्न धाराएँ जैसे समुद्र-गर्भ में समा जाती हैं उसी तरह संसार की समस्त संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृति में अंतर्भूत हो जाती हैं। इसका एक कारण यह भी है कि यह सभी विश्व संस्कृतियों की आदिस्रोत रही है। इतिहास साक्षी है कि रोम, मिस्र, सिंधु आदि की संस्कृतियाँ खोज, संग्रहालय, पुरातत्त्व विभाग की सामग्री रह गई हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति आज भी नाना आक्रमणों, अवरोधों, कठिनाइयों के बावजूद जैसी की तैसी स्थिर है उसका लोहा अब भी समस्त विश्व मानता है। निस्संदेह भारतीय संस्कृति समन्वयवादिनी रही है। विश्व में जहाँ अन्य संस्कृतियाँ परस्पर टकराव, संघर्ष, युद्धों का कारण रही है, आपस में रक्त की नदियाँ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिन्होंने बहाई हैं; वहाँ भारतीय संस्कृति ने प्रेम, स्नेह, अहिंसा, मैत्री, करुणा का पाठ पढ़ाया है संसार को। आचार्या महादेवी वर्मा ने लिखा है—"इस विशाल देश के पास ऐसी विराट संस्कृति है जिसमें ज्ञान-विज्ञान, विभिन्न विचारों का, विविध अनुभूतियों का और अनेक कर्त्तव्यों का समन्वयात्मक संघात है। सचमुच हमारी संस्कृति समन्वयवादिनी रही है।"

भारतीय संस्कृति की एक बहुत बड़ी प्रेरणा है—इसकी 'त्याग' प्रधानता। पाश्चात्य तथा अन्य कई संस्कृतियाँ जहाँ भोगप्रधान हैं, वहाँ हमारी संस्कृति त्याग प्रधान रही है। वस्तु पदार्थ सामग्रियों को अपने सुख-आराम, मौज-मजे के लिए एकत्र न करके उसे परमार्थ में लगा देना हमारी संस्कृति की महानता है। त्याग का प्रतीक 'यज्ञ' भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। 'यज्ञ' का मूल-दर्शन त्याग की भावना पर ही आधारित है।

हम भारतीय संस्कृति को समझें, उसका अध्ययन करें, उसके आधार स्तंभों का अनुशीलन करें। इससे बड़ी आवश्यक बात यह है कि हम इन सांस्कृतिक आदर्शों को जीवन में ढालें। उन्हें अपनाएँ और हममें से प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह भारतीय नागरिक के नाते भारतीय संस्कृति का मूर्तिमान सजीव स्वरूप ग्रहण करें।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1965, पृष्ठ-08

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भारतीय संस्कृति ने गढ़े देवपुरुष

भारतीय संस्कृति एक ऐसी विश्व-संस्कृति है जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने की क्षमता से ओत-प्रोत है। वह उच्चस्तरीय विचारणा जिससे व्यक्ति अपने आप में संतोष और उल्लास भरी अंत:स्थिति पाकर सुख और शांति से भरा-पूरा जीवन जी सके, भारतीय तत्त्वज्ञान में कूट-कूटकर भरी है। वह आदर्शवादी क्रियापद्धति जो सामूहिक जीवन में आत्मीयता, उदारता, सेवा, स्नेह-भावना, सहिष्णुता और सहकारिता का वातावरण उत्पन्न करती है, भारतीय संस्कृति के शिक्षण की मूल धारा है। इस महान तत्त्वज्ञान का अवगाहन भारतीय प्रजा चिरकाल तक करती रही और उसके फलितार्थ इस रूप में सामने आए कि यहाँ के नागरिकों को समस्त संसार में देवपुरुष कहा गया और जिस भूमि में ऐसे महामानव उत्पन्न होते हैं उसे स्वर्ग के नाम से संबोधित किया गया।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1972, पृष्ठ-45

भारतीय संस्कृति ही दैवी संस्कृति

भारतीय संस्कृति की अपनी अनोखी विशेषताएँ हैं। सच तो यह है कि 'संस्कृति' शब्द के साथ जुड़ी हुई विशेषताओं को पूरा कर सकने में, समस्त कसौटियों पर कसे जाने पर खरी सिद्ध होने में एक भारतीय संस्कृति ही समर्थ है। अन्य संस्कृतियाँ तो मात्र 'सभ्यता' है। सभ्यता किसी देश, काल एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विनिर्मित की जाती हैं और उसकी सीमा उतने ही दायरे में सीमित रहती है। हर परिस्थिति और देश काल के लिए समान रूप से उसका उपयोग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें सैद्धांतिक कम और व्यावहारिक तथ्य अधिक होते हैं। व्यवहार तो ऋतुओं के परिवर्तन के साथ ही बदल जाता है; आयु का हेर-फेर भी व्यवहार बदलने को विवश कर देता है। ऐसी दशा में व्यवहार व्यवस्थाओं की प्रधानता के आधार पर बनी हुई 'सभ्यताएँ' सार्वदेशिक अथवा सर्वकालीन हो ही कैसे सकती हैं। अंगरेजी सभ्यता भारत के लिए उपयुक्त बैठ सकती है, इस में पूरा संदेह है।

भारतीय संस्कृति महान ही नहीं वरन वह बेजोड़ भी है। उसके आचरण-व्यवहारों के विशुद्ध रूप को देखें—मध्यकालीन विकृतियों की घुसपैठ को उसमें से हटा दें तो निस्संदेह वह व्यवहार-व्यवस्था भी उतनी उच्चकोटि की सिद्ध होगी कि वैयक्तिक व्यवहार और सामाजिक संगठन की परिष्कृत शैली सामने आ जाए और हम उन जंजालों से बच जाएँ जो व्यष्टि और समष्टि को उद्विग्न, उन्मत्त बनाकर विनाश की ओर धकेलती चली जा रही है। संस्कृति की उत्कृष्टता का तो कहना ही क्या, उसे मानवीय ही नहीं दैवी संस्कृति कह सकते हैं। नर-पशु को नर-नारायण के रूप में विकसित कर सकने की सारी संभावनाएँ इस दार्शनिक ढाँचे के अंतर्गत विद्यमान हैं जिन्हें किसी समय भारतीय संस्कृति के नाम से पुकारा जाता था और अब यदि वह शब्द किसी को अरुचिकर हो तो उसका नाम 'विश्व-संस्कृति' भी दिया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1972, पृष्ठ-47

भारतीय संस्कृति में संप्रदायवाद को स्थान नहीं

हमारे धर्म में स्वार्थ भावना को प्रश्रय नहीं दिया गया। हमारी संस्कृति हिंदुस्तान का ही नहीं, बल्कि अखिल विश्व की कल्याण-कामना करती है। वह मनुष्यों को ही नहीं, सभी प्राणियों को सुखी देखना चाहती है। उसने मानव जाति को प्रेम, विश्वास और उदारता का संदेश दिया है।

हमारे प्रेमभाव का ही यह प्रभाव है कि यहाँ मुसलिम शासन काल में ही मुसलमान कवियों ने राम और कृष्ण से संबंधित कविताएँ रचीं, मुसलिम भक्तों ने भी कृष्ण की उपासना की। यहाँ राम और रहीम में कुछ भी अंतर नहीं माना जाता और अंत में गांधीजी ने 'ईश्वर अल्ला एक ही नाम' वाला मंत्र देकर संसार की आँखें खोल दीं कि भारतीय संस्कृति में संप्रदायवाद को किंचित भी स्थान नहीं है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1963, पृष्ठ-11

हमें पश्चिम से आगे जाना है

भारतीय संस्कृति महान है, भारत का इतिहास महान है, यहाँ का आदर्श एवं दर्शन इतना महान है कि उसकी तुलना नहीं हो सकती, पर व्यावहारिक जीवन में मानवीय सद्गुणों को समावेश करने में पश्चिमी लोग निस्संदेह आज हमसे बाजी मार गए हैं और अपनी सफलता पर गर्व करते हुए हमें चिढ़ाते हैं—"आप इतने महान ज्ञान के अधिपति होते हुए भी उसे व्यवहार में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उतारने में असफल रहे और पिछड़ गए। एक हम हैं जिनने भारत के प्रतिपादित मानवीय आदर्शों को एक छोटी सीमा तक अपनाया और उसका प्रत्यक्ष लाभ उठाते हुए अपना गौरव बढ़ाया।''

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1964, पृष्ठ-29

भारतीय संस्कृति अमर है

हमारा निश्चित विश्वास है कि भारतीय संस्कृति, ऋषिप्रणीत, रीति-नीति अपना करके ही मनुष्यता का उत्कर्ष हो सकता है, अन्यथा वर्तमान गतिविधि उसे सब प्रकार नष्ट करके ही छोड़ेगी। सत्य अमर है, श्रद्धा अमर है, धर्म अमर है, प्रेम अमर है, न्याय अमर है, ये कभी मंद भले ही हो जाएँ, पर मर नहीं सकते। भारतीय संस्कृति भी अमर है, वह आज तमसाच्छन हो रही है, पर कल अवश्य ही निर्मल होगी। हमारी अंतरात्मा कहती है कि वह पुन: सजीव होगी और उसकी विजयदुंदुभि फिर एक बार विश्व में बजेगी।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1958, पृष्ठ-8

www.awgp.org

भारतीय संस्कृति-सनातन और सर्वहितकारिणी

भारतीयों की आस्था, श्रद्धा, विश्वास एवं निष्ठा के कारण ही भारतीय संस्कृति अनेकों बाह्य परिवर्तनों के बीच बहती हुई भी अपनी अखंडता-अजस्रता-निरंतरता संरक्षित रखे रही, साथ ही सदा समय-समय पर आवश्यक परिमार्जन होते रहने के कारण कोई कालिमा-कलंक और काई इसमें नहीं लगने पाई और न आज भी उस में कोई धूलकण और धूमिलता का लवलेश वहाँ टिकने पाया है। भले ही यह कहा जा सकता है कि आज उसके लक्ष्य के अनुसार आचरण करने वालों की संख्या में भारी कमी आ गई है, पर व्यक्तिगत रूप से ही नहीं, सामाजिक रूप से भी उसका स्वरूप अव्याहत और अक्षुण्ण रहा है। इसीलिए इस संस्कृति और धर्म को सनातन कहा जाता है।

भारत की आध्यात्मिकता में ही भारतीय संस्कृति का निवास है। यही भारतीयता है, इसीलिए भारतीय संस्कृति एकमात्र आध्यात्मिक, अति मानसिक, अति बौद्धिक संस्कृति है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि के सभी प्राणियों के कल्याण का विधान करता हुआ सृष्टि, रक्षा और संहार करता है, उसी भाँति भारतीय संस्कृति भी सदा सद्गुणों की सृष्टि, उनका संरक्षण एवं कल्याण विरोधी दुष्ट तत्त्वों के विनाश की व्यवस्था करती है। वस्तुत: यह मानवीय, विश्वव्यापी एवं सर्वलोक हितकारिणी संस्कृति है। जो इसका अपनी अज्ञानता के कारण विरोध करता है, उसका भी कल्याण करने की ही यह संस्कृति सोचती और मार्ग बताती है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1959, पृष्ठ-35

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति राष्ट्रीयता को मजबूत बनाती है

भारतीय संस्कृति का उद्देश्य मनुष्य की आंतरिक आस्थाओं और व्यक्तिगत तथा सामाजिक गतिविधियों को उच्च नैतिक आधारों पर विनिर्मित करना है। यह निर्माण कार्य मानव जीवन में इतना महत्त्वपूर्ण है जितना और कोई कार्य नहीं हो सकता।

संस्कृति का प्रधान उद्देश्य जहाँ नैतिकता का निर्माण है, वहाँ राष्ट्रीयता को मजबूत बनाना भी है। एक समान आचार-विचार वाले व्यक्ति स्वभावत: आपस में अधिक प्रेम कर सकते हैं और अधिक घनिष्ठ एवं संगठित हो सकते हैं।

भारतीय संस्कृति ने प्राचीन काल में इस देश के कोने-कोने में आदर्शवाद का शुभ्र प्रकाश फैलाया था, नर-रत्न पैदा किए थे और सुख-शांति की स्वर्गीय परिस्थितियों का इस भूमि पर अवतरण किया था। प्रयत्न करने पर अब फिर भी वैसा हो सकता है। सांस्कृतिक पुनरुत्थान आज की एक महान आवश्यकता है। उसकी उपेक्षा करने से प्रगति-पथ पर हम आगे बढ़ नहीं सकते।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1956, पृष्ठ-11-14

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भारतीय संस्कृति का भविष्य उज्ज्वल

मानवता के सिद्धांत पर स्थित होने के कारण भारतीय संस्कृति इतनी पुरानी होते हुए आज भी वर्तमान है। चाहे समय के प्रभाव से उसका स्वरूप कुछ विकृत भले ही हो गया हो, पर आज भी उसमें वह अग्नि है जिसको यदि देदीप्यमान किया जाए तो उसके प्रचार से समस्त विश्व पुन: जगमगा उठेगा। इसी जीवनीशक्ति के कारण उसने कितने ही आघातों को सहन किया और अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखा है। आरंभिक समय में तो यह संस्कृति इतनी शक्तिशाली और जीवन युक्त थी कि संसार के दूर-दूर तक के भागों पर उसका प्रभाव पड़ा था और वहाँ के निवासियों ने इससे बहुत अधिक प्रेरणा प्राप्त की थी।

भारतीय जाग उठे, वे अपने स्वरूप को समझने लगे और अपने खोये हुए रत्नों को पुन: पहचानने लगे। इस प्रकार सांस्कृतिक नवजाग्रति के युग का आगमन हुआ। अंत में महात्मा गांधी ने उसे वह बल प्रदान किया जिससे न केवल भारत में वरन फिर से समस्त संसार में उसका महत्त्व स्थापित हो गया है। वे विश्व के संघर्षशील राष्ट्रों को यह संदेश दे गए हैं कि मानवता के सिद्धांतों पर आश्रित भारतीय संस्कृति के द्वारा ही सच्ची शांति प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार एक बार फिर भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल भविष्य दृष्टिगोचर होने लगा है।

—अखण्ड ज्योति जून 1957, पृष्ठ-9, 10

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वधर्म समन्वय

परमार्थ की भावना ही सच्चा धर्म

नाना प्रकार के मत-मतांतरों, संप्रदायों के उलझन भरे कर्मकांडों के जंजाल में भटकते रहने से धर्मतत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। जो धर्म को प्राप्त करना चाहते हैं, सच्चे अर्थों में धर्मात्मा बनना चाहते हैं उन्हें चाहिए कि अपनी इच्छा, रुचि और आदतों की कड़ी समालोचना करके देखें कि इनमें कितने अंश ऐसे हैं जो दूसरों के उचित अधिकारों से टकराते हैं। अपनी स्वार्थपरता, अनुदारता, संग्रहशीलता एवं भोगेच्छा को घटाना चाहिए और दया, उदारता, परमार्थ, प्रेम, सेवा, सहायता, त्याग, सात्त्विकी प्रवृत्तियों को बढ़ाना चाहिए। स्वार्थ की मात्रा जितनी घटती जाती है और परमार्थ की मात्रा जितनी बढ़ती जाती है, उतना मनुष्य धर्मात्मा, पुण्यात्मा बनता जाता है। इसी मार्ग पर चलता हुआ पुरुष स्वर्ग या मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

संसार के सारे दुःखों, क्लेशों, संघर्षों का एकमात्र कारण यह है कि लोग अपने लिए जो बातें चाहते हैं, वह दूसरों के लिए व्यवहार नहीं करते। खरीदने के बाँट और रखना चाहते हैं तथा बेचने के और। यह घातक नीति ही अशांति की जड़ है। स्वार्थ का निकृष्ट इच्छा से अंधे होकर जब हम अपने लिए बहुत अच्छा बरताव चाहते हैं और दूसरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं, तो उसका निश्चत परिणाम कलह होता है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1944, पृष्ठ-63

धार्मिक कट्टरता का अंत शरणागत धर्म से

धर्म-अधर्म के बड़े पेचीदे जंजाल में कभी-कभी मनुष्य बड़ी बुरी तरह उलझ जाता है। धर्म का मर्म न समझने वाला व्यक्ति उसके ऊपरी आवरण पर ही मुग्ध होता रहता है और आटे को खोकर-भूसी पल्ले बाँध लेता है। ऐसी अवस्था में धार्मिक व्यक्ति करीब-करीब पागल या पिशाच बन जाता है। पागल तब बनता है जब सांप्रदायिक कट्टरता पर लट्टू होकर केवल अपने को ही धर्मात्मा मानता हुआ अन्य मतावलंबियों को अधर्मी ठहरा देता है। अपने महजब की बुरी बातों को भी अच्छी मानता है और दूसरों की अच्छी बातों को भी बुरा समझता है। कट्टर सांप्रदायिकता उसकी बुद्धि को कुंठित कर देती है, निर्धारित कर्मकांड या रीति-रिवाजों को ही धर्म का संपूर्ण स्वरूप समझता हुआ उनका अनन्य भक्त बन बैठता है, कट्टरता के किवाड़ बंद करके अंतर में निष्पक्षता का ईश्वरीय प्रकाश आना रोक देता है।

विभिन्न मजहबों और संप्रदायों की ऐसी उलझन भरी स्थिति में से मनुष्य जाति को बचाने के लिए और मजहबी मतभेदों का एकीकरण करने के लिए भगवान की ओर से एक दिन दिव्य संदेश प्राप्त होता है—

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।''

—गीता 18/66

सब धर्मों को त्यागकर अकेले मेरी शरण में आ, मैं तुझे पापों से छुड़ाकर मुक्ति प्रदान करूँगा। सोच मत कर।

धर्म का वह अंश जो संपूर्ण मानव जाति पर लागू होता है वास्तविक और स्थायी है और जो अंश अमुक कर्मकांडों का आदेश मात्र करता है तथा अमुक जाति एवं वर्ग को विशेष सुविधाएँ प्रदान करता है, वह अस्थायी और समयानुसार परिवर्तन होने वाला है।

सच्चा धर्म मनुष्यमात्र की समान स्वाधीनता को स्वीकार करता है इसलिए किसी के स्वाभाविक अधिकारों में हस्तक्षेप नहीं करता। सत्य, प्रेम, न्याय में उसे धर्म की प्रतिमा दृष्टिगोचर होती है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति अपने और दूसरों के कल्याण करने के मार्ग में कदम बढ़ाता है और उन्हीं में आनंद प्राप्त करता है, व्यर्थ की सड़ी-गली प्रथाओं में उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती। असल में सच्चा धार्मिक वही है जो अपने और पराये उत्थान एवं विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है और आत्मा को परमात्मा की शरण में सौंपता है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1944, पृष्ठ-66-67

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सब धर्मों का लक्ष्य समान है

बहुत से लोग दर्शनशास्त्रों की ओर स्वर्ग-नरक आदि की दुहाई देकर धर्मों की आलोचना करने लगते हैं। यह धर्म तो ईश्वर नहीं मानता था, ऐसा मानता है, वैसा मानता है आदि। मैं कहता हूँ कि वे फजूल के झगड़े हैं। धर्मशास्त्र का काम नीति, सदाचार, प्रेम और मनुष्यता का पाठ पढ़ाना है, इसलिए धर्म को या धर्मशास्त्र को हम इसी नजर से देखें। दर्शन, इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, प्राणिशास्त्र आदि का विचार स्वतंत्र रूप से करें। इनसे संबंध रखें, सहयोग स्थापित करें। इन शास्त्रों की बातों के विरोध को धर्म का विरोध न समझें।

धर्मशास्त्र को धर्मशास्त्र रहने दीजिए, दुनिया भर के शास्त्र और उनके झगड़े धर्मशास्त्र पर न लादिए। अगर आप धर्म का पालन करना चाहते हैं, धर्मात्मा बनना चाहते हैं तो प्रेम का, सेवा का, ईमानदारी का और त्याग का व्रत लीजिए, दुनिया की भलाई में अपनी भलाई समझिए। दर्शन आदि की चर्चा को इस झगड़े में न लाइए, जैसा आपको जंच जाय वैसा मान लीजिए, पर उसका उपयोग नीति और सदाचार को बढ़ाने में कीजिए। हमारा पहला और मुख्य काम सुखी बनना और जगत को सुखी करना है। सब बातें और सब धर्म इसी के लिए हैं।

मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कि ईश्वर, परलोक आदि आपको जिस प्रकार मानना हो मानिए, पर उसके किसी एक रूप के मानने न मानने से धर्म-अधर्म का रिश्ता न जोड़िए।

दूसरी बात यह है कि ईश्वर और परलोक आदि के मानने की बात मुँह से न कहिए। जीवन से न कहकर मुँह से कहना अपने को और दुनिया को धोखा देना है। इसमें से अधिकांश ऐसे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धोखेबाज ही हैं। इसीलिए मैं कहा करता हूँ कि हजार में नौ-सौ-निन्यानवे व्यक्ति ईश्वर को नहीं मानते। मानते होते तो जगत में पाप दिखाई न देता।

अगर हम ईश्वर को मानते तो क्या अँधेरे में पाप करते? समाज या सरकार की आँखों में धूल झोंकते समय क्या यह न मानते कि ईश्वर की आँखों में धूल नहीं झोंकी गई? हममें से कितने आदमी ऐसे हैं जो दूसरों को धोखा देते समय यह याद रखते हों कि ईश्वर की आँखें सब देख रही हैं। अगर हमारे जीवन में यह बात नहीं है, तो ईश्वर की दुहाई देकर दूसरों से झगड़ना हमें शोभा नहीं देता।

कहने का मतलब यह है कि हम इन बातों को जीवन में उतारने की कोशिश करें, ईश्वरवादी हो या कर्मवादी या अद्वैतवादी, अगर हम अपने वादों को जीवन में उतारने की कोशिश करेंगे, तो धर्म की राह में सब अपने को एक ही जगह पाएँगे, झगड़ने का कोई कारण न रह जाएगा। सब धर्म हमें एक ही जगह ले जाने वाले मालूम होंगे।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1948, पृष्ठ-6-7

झगड़े का कारण धर्म नहीं सांप्रदायिकता

धर्म का पालन किए बिना न व्यक्ति की, न समाज की, किसी की भी शांति और सुव्यवस्था स्थिर नहीं रह सकती, इसलिए धर्म की धारणा उतनी ही आवश्यक मानी गई है जितनी कि जल, वायु और अन्न का सेवन। लोगों को धार्मिक बनाने के लिए प्राय: सभी विचारवान व्यक्ति अपने प्रयत्न जारी रखते हैं। यही प्रयत्न सामूहिक रूप से भी विविध प्रक्रियाओं द्वारा किए जाते हैं। सदाचारी, कर्त्तव्यपरायण, सच्चे नागरिक, देशभक्त, लोकसेवक, धर्मवान एवं ईश्वरभक्त का एक ही अर्थ है।

हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाइयत, बौद्ध धर्म आदि अनेकों धर्म समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अवतीर्ण हुए हैं। देश-काल-पात्र की आवश्यकता और स्थिति का ध्यान रखते हुए समाज धर्मों का प्रचलन किया अथवा पुराने प्रचलनों में आवश्यक सुधार किया। इन सभी 'समाज धर्मों' ने एक ही मूल धर्मतत्त्व से प्रकाश ग्रहण किया है। उसी के आधार पर उन्होंने अपना बाह्य रूप विनिर्मित किया है। सभी समाज धर्म—सदाचार, कर्त्तव्यपरायणता, संयम, लोकसेवा, उदारता आदि उच्च मानवीय गुणों की मानव हृदय में स्थापना को अपना एकमात्र उद्देश्य मानते हैं। कार्य प्रणाली पृथक-पृथक होते हुए भी सब धर्मों में समानता है। तरीके, विश्वास विधान अलग-अलग होते हुए भी वे सब मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का प्रयत्न करते हैं।

सब धर्मों में इतनी अंतरंग एकता होते हुए भी आज हम देखते हैं कि धर्म के नाम पर भारी विद्वेष और रक्तपात फैल रहा है। इसे देखकर स्थूल दृष्टि वाले लोग ऐसा सोचने को विवश होते

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं कि 'सारे झगड़ों की जड़ यह धर्म ही है। जब तक इसे जरामूल से नष्ट कर दिया जाएगा, तब तक दुनिया चैन से न बैठ सकेगी।' परंतु यह विचार बहुत ही उथला है, वह एक तर्क मालूम पड़ता है, पर वस्तुतः तर्काभास मात्र है।

धर्म के लिए, धर्म के कारण, कभी-कोई झगड़ा नहीं होता। झगड़ों का कारण है 'सांप्रदायिकता'। सांप्रदायिकता का अर्थ है—संकीर्णता, अनुदारता, आपबीती, स्वार्थपरता, अहंकारिता। यह सांप्रदायिकता जिस क्षेत्र में भी घुस बैठती है; वहीं भारी विद्वेष, घृणा, शोषण, उत्पीड़न, क्रूरता तथा अनाचार का बोलबाला कर देती है।

धर्म मानव प्राणी की आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों में सुख-शांति की स्थापना करता है, जबकि सांप्रदायिकता द्वेष और हिंसा का बीजारोपण करती है। हमें धर्म और सांप्रदायिकता के बीच रहने वाले भारी अंतर को पहचानना चाहिए और धर्म की महत्ता और सांप्रदायिकता की तुच्छता को भली प्रकार समझना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1948, पृष्ठ-5-7

विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

धर्म और विज्ञान का समन्वय वैदिक सिद्धांत में

साइंस और आस्तिकवाद की शत्रुता बहुत पुरानी नहीं है। प्राचीन आस्तिकवादी सृष्टि के नियमों का अवलोकन करके ही ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते थे। कुछ दिनों पश्चात साइंस और आस्तिकवाद में झगड़ा हो गया। आस्तिकवादी समझने लगे कि ईश्वर का सृष्टि-रचना से क्या संबंध? उन्होंने मनमाने गुण ईश्वर में आरोपित करने शुरू कर दिए। ज्ञानमार्ग का अंत हुआ और भक्तिमार्ग चला। भक्तिमार्ग ने अंधविश्वास को बढ़ाया, इसी के साथ साइंसवाद का ह्रास हुआ। इसके बाद साइंस का पुनरुत्थान पश्चिम में हुआ। उस समय वहाँ आस्तिकवाद तो न था, परंतु उसी के नाम पर अंधविश्वास अवश्य फैला था। प्राचीन भारतवासी तो ज्ञान को ईश्वरप्राप्ति तथा मोक्ष का साधन मानते थे। नवीन काल में साइंस या विज्ञान को अनीश्वरता का एक चिह्न समझने लगे।

साइंस की वर्तमान उन्नति ने साइंस वालों को भी इस बात का निश्चय करा दिया है कि चाहे विशेष प्रकार का आस्तिकवाद झूठा और निर्मूल हो, तथापि साइंस के नियमों के लिए किसी न किसी नियंता की आवश्यकता है। वस्तुतः विचार किया जाए तो साइंस और आस्तिकवाद एकदूसरे से विरुद्ध नहीं हैं।

समस्त साइंस का मूल आधार सिद्धांत यह है कि संसार की सारी घटनाएँ असंबद्ध नहीं किंतु नियमबद्ध हैं। यह सिद्धांत उस समय भी था, जब साइंस छोटा-सा बच्चा थी। अब भी है

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जबकि साइंस इतनी उन्नति कर गई है। आगे भी रहेगा। साइंस केवल इतना ही नहीं मानती कि संसार की घटनाएँ नियमबद्ध हैं। किंतु वह इससे आगे चलकर यह मानती है कि यह नियम भी स्वयं एक और सूक्ष्म नियम सूक्ष्मतर नियमों के साथ बँधे हुए हैं। जब साइंस ने इतना मान लिया तो फिर उन नियमों के लिए चेतना अर्थात ज्ञान और इच्छाशक्ति की आवश्यकता न समझना, साइंसवेत्ताओं को शोभा नहीं देता। इसीलिए बड़े साइंसवेत्ता आगे किसी चेतनशक्ति पर विश्वास करते हैं या केवल यह कहकर संतुष्ट हो जाते हैं कि हमारी गति केवल इन्हीं नियमों तक है। अभौतिक संसार इसकी सीमा से बाहर है। उनका यह उत्तर भी यह प्रकट करता है कि वे नास्तिक नहीं हैं। केवल आस्तिकवाद के सिद्धांतों से अनभिज्ञ हैं।

वैदिक सिद्धांत साइंस (विज्ञान) और धर्म दोनों को स्थान देता है। साइंस भौतिक जगत का निरीक्षण करता है और धर्म अभौतिक सत्ता का परिज्ञान कराता है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1945, पृष्ठ-86-87

वेद के दो अंग—ज्ञान और विज्ञान

वेद के दो अंग हैं—(1) ज्ञान (2) विज्ञान। ज्ञान-आत्मज्ञान को कहते हैं जिसके द्वारा मनुष्य के अंतर्जगत का, विवेक का, दृष्टिकोण का निर्माण होता है। उसी के आधार पर उसकी इच्छा, आकांक्षा, रुचि एवं क्रिया का विकास होता है। विज्ञान लौकिक एवं भौतिक जानकारी को कहते हैं, जिससे लोकजीवन को सुविधापूर्वक जिया जा सके। भाषा, लिपि, साहित्य, गणित, संगीत, रसायन, शिल्प आदि अनेक शिक्षाएँ विज्ञान के अंतर्गत आती हैं। इन ज्ञान और विज्ञान दोनों के द्वारा मनुष्य का व्यक्तित्व विकसित होता है।

विज्ञान से शरीरयात्रा के सुसंचालन में सुविधा होती है, पर ज्ञान के द्वारा अंतर्जगत की आधारशिला रखी जाती है, इस शिला पर ही मनुष्य की महानता और प्रयत्नशीलता निर्भर रहती है, जिसके बिना कि विज्ञान को भी भली प्रकार ग्रहण नहीं किया जा सकता। इसलिए विज्ञान से ज्ञान का दर्जा बहुत ऊँचा है। विज्ञान के शिक्षक जगह-जगह मौजूद हैं, नीच कोटि के लोगों द्वारा भी सिखाया और सीखा जा सकता है। ज्ञान का स्थान ऊँचा है, उसे ऊँची आत्माएँ सिखाती हैं और मस्तिष्क से नहीं हृदय द्वारा उसे सीखा जाता है। यही धर्म शिक्षा है।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1947, पृष्ठ-14

विज्ञान और अध्यात्म—एकदूसरे के पूरक

अध्यात्म—अंतरंग जीवन की शोध, आत्मसाधना द्वारा उसके साक्षात्कार तथा आत्मिक प्रगति के आयामों को खोजने का प्रयास करता है। विज्ञान पदार्थ जगत की—दृश्य प्रकृति—ब्रह्मांडीय जगत की शोध करता है। विज्ञान के पास दृश्य आयामों को जानने के लिए भिन्न-भिन्न साधन हैं, बहुमूल्य प्रयोगशालाएँ हैं। जबकि अध्यात्म साधना प्रक्रिया के माध्यम से मानवी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कायारूपी प्रयोगशाला में ब्राह्मी चेतना तथा अंतर्जगत के रहस्यों को जानने का प्रयास करता है। परमसत्ता की विधि-व्यवस्था को दृश्य आयामों द्वारा समझा भी तो नहीं जा सकता। दोनों के नजरिए अलग-अलग हैं—लक्ष्य एक ही है। दोनों को ही एक स्थिति तक स्थूल साधन प्रयुक्त करने पड़ सकते हैं। एक स्थिति ऐसी आती है, जहाँ कुछ सिद्धांत मानकर चला जाता है एवं यात्रा पूरी करने हेतु तर्कों, तथ्यों का आश्रय लेना पड़ता है। यह भी पूर्णत: विज्ञानसम्मत तकनीक है जिसे हम वैज्ञानिक मानसिकता का विज्ञान व अध्यात्म पर आरोपण कह सकते हैं।

यदि अध्यात्म और विज्ञान दोनों ही इस दुराग्रह पर अड़ जाएँ कि उनके अपने ही सिद्धांत सही हैं, उन्हें किसी वैसाखी की आवश्यकता नहीं, तो प्रगति-पथ ही अवरुद्ध हो जाएगा। इसे रूढ़िवादी मनोवृत्ति कहेंगे, जहाँ पूर्वाग्रहों से चिपके रहने की मौलिक भूल होती है। चाहे वह विज्ञान का दर्शन हो अथवा अध्यात्म का तत्त्वदर्शन, उसे मूल्य निर्धारण करना ही पड़ेगा। जो क्वालिटी कंट्रोल (मूल्य नियंत्रण—गुणवत्ता—मूल्यांकन) की प्रक्रिया अन्यान्य क्षेत्रों पर लागू की जाती है, लगभग वैसी ही विज्ञान एवं अध्यात्म के क्षेत्रों पर यदि नहीं की गई तो मानव जाति दोनों से ही अर्जित हो सकने वाले महत्त्वपूर्ण अनुदानों से वंचित हो जाएगी।

वास्तविकता तो यह है कि दोनों ही विधाएँ अपने-अपने क्षेत्र में प्रगति तो कर रही हैं किंतु पारस्परिक 'लिंक' का अभाव है। अध्यात्म को जब संप्रदायवादी संकीर्ण धार्मिकता से जोड़कर देखा जाता है तो वह एक त्रुटिपूर्ण आकलन माना जाना चाहिए। इसी प्रकार विज्ञान को जब विध्वंसात्मक अनुसंधानों, कट्टर मान्यताओं से जोड़ दिया जाता है तो वह भी एक विकृत दृष्टिकोण से देखा गया पक्ष कहा जाना चाहिए। यदि विशुद्ध मनोवृति का सहारा लिया जा सके तो दोनों ही गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। औदार्यपूर्ण दृष्टिकोण अपनाकर दोनों ही महाशक्तियों की परस्पर 'सिन्थेसिस' का सुयोग यदि बिठाया जा सके तो इसे अपने युग का प्रचंडतम एवं सर्वोपयोगी पुरुषार्थ माना जाना चाहिए। किसी समय वैज्ञानिक द्रष्टा आइन्स्टीन ने कहा था, "केवल विज्ञान के क्षेत्र में गंभीरता से लगे कार्यकर्त्ता पूर्णरूपेण आध्यात्मिक माने जाने चाहिए।" इसी प्रकार युगपुरुष विवेकानंद की उक्ति थी—"आधुनिक विज्ञान वस्तुत: अध्यात्म भावना की ही अभिव्यक्ति है क्योंकि इसमें ईमानदारी के साथ सत्य को समझने का प्रयास किया जाता है।" क्या यह संभव नहीं कि वर्तमान परिस्थितियों में समस्याओं के निवारण एवं उज्ज्वल भविष्य को लाने के लिए अध्यात्म और विज्ञान को नई मानसिकता के परिप्रेक्ष्य में परस्पर मिलाने का पुन: प्रयास किया जाए?

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1984, पृष्ठ-25-26

विज्ञान और अध्यात्म एकदूसरे के सहयोगी

अन्योन्याश्रित संबंधों में एक युग्म अध्यात्म और विज्ञान का है। पदार्थ विज्ञान में बुद्धि और पदार्थ का संयोग काम करता है। आत्मिकी में बुद्धि का स्थूल रूप नहीं अपितु सुपरिष्कृत रूप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसे ऋतंभरा प्रज्ञा कहते हैं-काम करता है। तत्त्व चिंतन के ब्रह्म विद्या प्रकरण में इसी की चर्चा की गई है। इस तरह पारस्परिक तालमेल की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। यदि ये दोनों परस्पर लड़ने-झगड़ने लगें, एक दूसरे के अस्तित्व को नकारने लगें, अनावश्यक और अप्रामाणिक बताने लगें तब तो यही मानना होगा कि दुःख और दुर्भाग्य ही राहु-केतु के सदृश हमारे चिंतन क्षेत्र पर ग्रहण की तरह लग गए हैं।

जीवन के समग्र व परिपूर्ण विकास के लिए दोनों का अपना महत्त्व है। यदि ये दोनों आपस में ही टकराने लगें तो इनकी टकराहट उसी तरह होगी जैसे अपना दायां हाथ अनन्यतम सहयोगी बाएं हाथ को काटने के लिए जुट जाए। यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि वैज्ञानिकता के बिना धर्म अंधविश्वास बन जाएगा, इसी तरह आत्मिकी के बगैर विज्ञान अनैतिक और उच्छृंखल। आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, इन दोनों में तालमेल हो। पारस्परिक सहयोग का स्नेह-बंधन हो। असहयोग होने पर तो हानि के सिवा और कुछ न होगा। इनका पारस्परिक विग्रह संसार की प्रगति और संस्कृति को नष्ट करने वाला ही सिद्ध होगा।

—अखण्ड ज्योति जून 1988, पृष्ठ-9

www.awgp.org

विज्ञान और अध्यात्म एकदूसरे के पूरक

यह सुनिश्चित तथ्य व सार्वभौमिक शाश्वत सत्य है कि विज्ञान और अध्यात्म एक सिक्के के दो पहलू हैं अथवा दो ऐसे ज्ञान के प्रवाह वाले निर्झर हैं, जिनका उद्‌गम स्थल एक ही पर्वत है। क्षेत्र की भिन्नता के कारण उनका स्वरूप भले ही भिन्न दिखाई पड़े, पर वे एक ही महाप्रयोजन की पूर्ति करते हैं।

अध्यात्म और विज्ञान एक ही परम सत्य को दो विभिन्न दिशाओं में खोज करने में संलग्न होते हैं। जैसे-जैसे प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं वैसे-वैसे एकदूसरे के अधिकाधिक निकट पहुँचते जाते हैं। विज्ञान जड़ जगत की संरचना व क्रियापद्धति का निर्धारण, विवेचन करता है साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि उसका अधिक से अधिक सदुपयोग कैसे और किस तरह किया जाए? धर्मचेतना जगत के आवरण खोलता है और रहस्यों को उद्‌घाटित करता है और बताता है कि विश्व-ब्रह्मांड की इस अद्‌भुत शक्ति का व्यक्ति और समाज के उन्नयन में श्रेष्ठतम उपयोग क्या है? जड़ और चेतन के द्विविध रहस्यों का अनावरण व सदुपयोग की विधा जानने व सीखने के लिए हमें अध्यात्म व विज्ञान का समन्वय-संतुलन बिठाकर ही आगे बढ़ना होगा।

—अखण्ड ज्योति जून 1988, पृष्ठ-10

विज्ञान और अध्यात्म परस्पर सहयोगी

अध्यात्म अंतर्ज्ञान, भावसंवेदना व विवेक पर अवलंबित है। विज्ञान का अवलंबन बौद्धिक शक्ति पर है। प्रयोग की आवश्यकता दोनों में है। आध्यात्मिक सिद्धांतों उपनिषदों के श्लोकों को यदि रटते रहा जाए तो कुछ भी बात नहीं बनेगी। बस एक तोते की भूमिका ही निभाई जा सकेगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयोग में जुट पड़ने, इसके लिए समर्पित होने से सत्य का बोध पाकर सामान्य मानव से अतिमानव हुआ जा सकता है। विज्ञान का काम भी मात्र परिकल्पनाओं के आधार पर नहीं चलता। यथार्थता की शोध के लिए प्रायोगिक स्तर पर आना ही पड़ता है। इस प्रकार के किए जाने वाले प्रयोगों में यह अंतर अवश्य है कि एक के प्रयोग का क्षेत्र पदार्थ है, दूसरे का चेतना। एक के प्रयोग में बहिरंग जगत की प्रधानता होती है, दूसरे में अंतरंग की। फिर एक साम्य भी है। प्रयोग के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले उपादानों में दोनों को ही इन दोनों क्षेत्रों का सहारा लेना पड़ता है। वैज्ञानिक बहिरंग जगत में कितनी ही बड़ी प्रयोगशाला क्यों न बना लें! कितने ही उपकरण क्यों न जुटा लें, पर बुद्धि, मन, मस्तिष्क जो अंतरंग क्षेत्र के हैं इनका समुचित उपयोग किए बिना किसी तरह का प्रयोग परीक्षण संभव नहीं। इसी तरह आध्यात्मिक प्रयोगों में चेतना अर्थात अंतरंग की प्रधानता रहती है, फिर भी बहिरंग साधन शरीर की महत्ता है। इसी कारण तत्त्वविदों ने **'शरीर माध्यं खलु धर्म साधनम्'** भी कहा है। शरीर को स्वस्थ-सबल, सक्षम बनाने में वैज्ञानिक साधन भी प्रयुक्त होते हैं। इस तरह यह स्पष्ट होता है कि पारस्परिक विग्रह जैसी कोई बात नहीं। इन दोनों का अस्तित्व परस्पर पूरक सहयोगी बने रहने में ही है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1988, पृष्ठ-10

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तीर्थ परंपरा का जागरण

तीर्थयात्राएँ धर्मप्रचार का माध्यम बनें

सात लाख गाँव और उनके 20 लाख नगले-मजरो में से अधिकांश को तीर्थ के रूप में परिणत किया जाए। जिस देश का कभी प्रत्येक देवालय तीर्थ था। उनकी परिक्रमाओं के अपने-अपने क्षेत्र थे। उन परिक्रमाओं के आधार पर एक स्थान के लोग दूसरे स्थानों में संपर्क साधते थे। धर्मचर्चा करते थे और जहाँ जो त्रुटि दिखाई पड़ती थी, वहाँ उसे दूर करने की व्यवस्था बनाते थे। अब फिर वही क्रम चलना चाहिए। भव्य नगरों में बड़ी-बड़ी इमारतों वाले तीर्थों को ही नहीं छोटे-छोटे क्षेत्रों के देवालयों को भी तीर्थ माना जाए और उनके मार्ग में पड़ने वाले ग्रामों को धर्म प्रचार का एक क्षेत्र माना जाए। उनमें से जो केंद्रीय स्थान हो जहाँ जलाशय की अच्छी व्यवस्था हो वहाँ धार्मिक मेले भरने, सभा-समारोह होने के भी ऐसे दिन निर्धारित किए जाएँ जो एकदूसरे से टकराएँ नहीं। अलग-अलग महीनों या तिथियों में अलग-अलग मेले हों और उनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन न होकर धर्म सम्मेलन हो तो उस क्षेत्र से अंध परंपराओं और रूढ़ियों का उन्मूलन हो सकता है। सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन के लिए नया उत्साह जग सकता है। सामूहिक विवाह-शादियों के संस्कारों के आयोजन भी हो सकते हैं। पर्वों को मनाने की प्रथा जो सिमटकर घर में देवता के नाम पर पकवान बनाने खाने तक सीमित रह गई है। उसके पीछे छिपे हुए उद्देश्यों को जानने एवं क्रियान्वित करने का अवसर मिल सकता है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1986, पृष्ठ-57, 58

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म का सच्चा स्वरूप

आत्मीयता भरा व्यवहार ही धर्म

अखंड आत्मीयता प्रेम की ही सीढ़ी है। संसार में विभिन्न आकृति के प्राणी दृष्टिगोचर होते हैं, फिर भी उनकी आत्मीयता अखंड है। पराया इस दुनिया में कुछ नहीं, सब अपना है या अपना कुछ नहीं सब पराया है, चाहे जैसे कहिए भाव एक ही है। परिवार का सबसे बड़ा और उत्तरदायी वृद्ध पुरुष सारे परिवार को सुव्यवस्थित रखने की अपनी जिम्मेदारी को समझता है। इसलिए उसे अपना ध्यान बहुत ही कम रहता है और कुटुंब वालों की समस्याएँ सुलझाने में सारी शक्ति खरच करता है। जो बीमार है, उसे दवा चाहिए। इसे स्कूल जाना है, फीस चाहिए। उसका विवाह है, कपड़े चाहिए आदि सब किसी का ध्यान रखता है और यथावत सारी व्यवस्था करता है। इस प्रकार सारी सृष्टि के साथ आत्मीयता जोड़ लेने से दूसरों का सुख-दुःख अपना सुख-दुःख बन जाता है। वह जानता है कि सारे जीव एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं। जब तक संसार में पाप बढ़े हुए हैं, तब तक मेरा भी छुटकारा नहीं हो सकता। हममें से हर एक इस उत्तरदायित्व से बँधा हुआ है कि पड़ोसियों की शांति और सुव्यवस्था में अधिक-से-अधिक सहयोग दें। जो अपने इस कर्त्तव्य को भूलकर दूसरों को पाप-पंक में फँसने देता है, स्वयं ही उसके लिए उत्तरदायी बनता है और उसका फल भोगता है। किसी के पड़ोस में आग लगे और वह खड़ा-खड़ा तमाशा देखता रहे तो कुछ देर बाद वही अग्नि उसके घर की तरफ भी बढ़ेगी और पड़ोसी के समान उसे भी वैसे ही जला देगी। दैवी दुर्घटनाएँ ऐसे ही सार्वभौम पापों का परिणाम होती हैं। जब संसार में पाप अधिक बढ़ते हैं तो उनकी दुर्गंध से अखिल आकाश भर जाता है, फिर उसकी प्रतिक्रिया से जब दुर्भिक्ष, भूकंप, महामारी, युद्ध आदि दैवी दुर्घटनाएँ होती हैं तो उसका फल सभी को भोगना पड़ता है। बहुत से निर्दोष व्यक्ति भी इस चक्र में पिस जाते हैं। वास्तव में वे निर्दोष नहीं हैं, क्योंकि एक के पापों का फल दूसरों को भी भोगना पड़ता है। पिता का कर्ज जब पुत्र से वसूल कर लिया जाता है तो भाई के अपराध का दंड भाई को भी दिया जा सकता है। प्रभु ने हमें अपना राजकुमार बनाकर इस सृष्टि में सुव्यवस्था रखने के लिए भेजा है। यदि हम अपना कर्त्तव्य भुला दें और पाप-तापों को बढ़ने दें तो पिता के दरबार में हमें वैसे ही दोषी ठहराया जाएगा, जैसे भागी हुई सेना के सेनापति को अपमानित किया जाता है। जिसके बगीचे में पेड़ों की दुरवस्था हो रही हो, अच्छे पेड़ सूख रहे हों और कटीले झाड़-झंखाड़ बढ़ रहे हों, उस माली को उसका मालिक कभी अच्छी दृष्टि से नहीं देखता। परमात्मा को प्रसन्न करने का यही तरीका है कि हम उसकी फुलवारी को हरी-भरी रखें और अधिक-से-अधिक सुंदर बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा दें। दूसरों को अपना समझकर हम उन्हें एक प्रकार से खरीद लेते हैं। जिसे हम अपना समझते हैं, वह अवश्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही हमें अपना समझेगा। इस प्रकार जितना ही हम प्रेम संबंध अधिक बढ़ाते हैं, उतना ही खुदगर्जी को दूर करके अपनी महत्ता का अभ्यास बढ़ाते हैं। परमात्मा से प्रेम करने का यही तरीका है कि उसकी चलती-फिरती प्रतिमाओं से प्रेम करें। जो चैतन्य नर-नारायणों की सेवा करना छोड़कर, जड़ पदार्थों के टुकड़ों पर सिर पटकता फिरता है, उसकी बुद्धि को जड़ ही कहा जाएगा। दूसरों को अपना समझना और उनके साथ आत्मीयता का व्यवहार करना, इसमें धर्म का सारा मर्म छिपा हुआ है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1942, पृष्ठ-08, 09

धार्मिक लोग धर्म का सच्चा स्वरूप समझें

यदि भारत को सच्चे मानों में निराशा, निरुत्साह, पतन, अशांति तथा अवहेलना के आसुरी आघातों से मुक्त होना है तो उसे अपने जीवन में प्राचीन पुनीत धर्म की प्रतिस्थापना करनी ही होगी। अपने चरित्र को निष्कलंक एवं निस्स्वार्थ बनाना ही होगा। भोगवाद से योगवाद तथा नास्तिकता से आस्तिकता की ओर आना ही होगा।

लौकिक उन्नति में धर्म को बाधक मानने वाले भारतीयों को विश्वास करना ही होगा कि सुख स्वार्थपरता से नहीं निस्स्वार्थ धर्मभावना से ओत-प्रोत सदाचार से ही मिल सकता है। जिस दिन भारतीय अपने जीवन में पुनः अपने पावन धर्म की अवधारणा कर लेगें और पूर्ववत उसका संदेश संसार को देने का अपना कर्त्तव्य पालन करने लगेंगे, तो भारत से ही नहीं सारे संसार से दुःख एवं अशांति का वातावरण दूर हो जाएगा। आज की त्रस्त जनता रोग, शोक से मुक्त होकर अपनी-अपनी धारणा के अनुसार रामराज्य का आनंद पाने लगेगी।

सामाजिक भावना का तिरोधान हो जाने का एकमात्र कारण यही है कि समाज से सच्ची धर्मभावना निकल गई। आज भोगवाद के वातावरण में धर्मभावना डूब गई है। भगवान के प्रति लोगों की भक्ति तथा भय नष्ट हो गया है। कोई नैतिक अंकुश न रहने से पूरा समाज गलत दिशा में दौड़ा चला जा रहा है। उसे अपने कार्यों में कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ध्यान ही नहीं आता।

भौतिकता की परिणति भोगवाद में होना स्वाभाविक है, सो वह हो भी रही है। आज धर्मभावना एवं धर्म-कर्म की आधुनिकता के रंग में रँगे युवक पुरानी बातें तथा कार्य निरर्थक मानने लगे हैं। सबेरे से शाम तक भौतिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने अथवा उनके विषय में बात करने में ही उनका सारा समय चला जा रहा है।

नास्तिकता एवं अधार्मिकता के कारण देश निराधार एवं निरंकुश होकर बुरी तरह अविवेकता की ओर झुक गया है। समाज के इस अयुक्त झुकाव को तत्काल रोकने की आवश्यकता है। इसके रोकने का एक ही उपाय है कि लोगों की प्रसुप्त धर्मभावना को उत्तेजित किया जाए। उन्हें

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तिगत तथा सामूहिक धर्म योजनाओं को कार्यान्वित करने की प्रेरणा दी जानी चाहिए। धार्मिक प्रवृत्ति के लोग धर्म के सच्चे स्वरूप को समझें, उसे ही धारण करें और अपने उदाहरण तथा प्रेरणा से अपने पास-पड़ोस तथा परिचितों में धर्मभावना जाग्रत करने का प्रयत्न करें।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1966, पृष्ठ-15

पूजा-उपासना का मूल प्रयोजन समझें

परमार्थ प्रवृत्तियों का शोषण करने वाली इस विडंबना से हम में से हर एक को बाहर निकल आना चाहिए कि ईश्वर एक व्यक्ति है और वह कुछ पदार्थ अथवा प्रशंसा का भूखा है, उसे रिश्वत या खुशामद का प्रलोभन देकर उल्लू बनाया जा सकता है और मनोकामना तथा स्वर्ग-मुक्ति की आकांक्षाएँ पूरी करने के लिए लुभाया जा सकता है। इस अज्ञान में भटकता हुआ जनसमाज अपनी बहुमूल्य शक्तियों को निरर्थक विडंबनाओं में बरबाद करता रहता है। वस्तुत: ईश्वर एक शक्ति है जो अंतश्चेतना के रूप में सद्गुणों और सत्प्रवृत्तियों के रूप में हमारे अंतरंग में विकसित होती है। ईश्वर भक्ति का रूप पूजा-पत्री की टंट-घंट नहीं, विश्वमानव को भावनात्मक दृष्टि से समुन्नत बनाने का प्रबल पुरुषार्थ ही हो सकता है। देवताओं की प्रतिमाएँ तो ध्यान के मनोवैज्ञानिक व्यायाम की आवश्यकता पूर्ति करने की धारणा मात्र हैं। वस्तुत: जैसे देवी-देवता मूर्तियों और चित्रों में अंकित किए गए हैं, उनका अस्तित्व कहीं भी नहीं है। उच्च भावनाओं का आलंकारिक रूप ही ईश्वर के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है।

ऋतंभरा प्रज्ञा को ही सरस्वती कहते हैं। मन को सधाने के लिए ही उसकी आलंकारिक छवि विनिर्मित की गई है। वस्तुत: अंतरंग में समुत्पन्न सद्ज्ञान ही सरस्वती है। इस तथ्य को समझे बिना अध्यात्म भी कोई जाल-जंजाल ही सिद्ध होगा और मनुष्य को आत्मप्रवंचना में भटकाकर उसकी उन शक्तियों को बरबाद कर देगा जो लोकमंगल की दिशा में प्रयुक्त होने पर व्यक्ति और समाज का भारी हितसाधन कर सकती थीं।

हमारा परामर्श है कि परिजन कल्पित ईश्वर की खुशामद में बहुत सिर न फोड़े। अपने अंतरंग को और विश्वमानव को समुन्नत करने के प्रयत्नों में जुट जाएँ और उस त्याग-बलिदान को वास्तविक ईश्वर-भक्ति तथा तपश्चर्या समझें। इस प्रक्रिया को अपनाकर वे ईश्वरीय अनुग्रह जल्दी प्राप्त कर सकेंगे। पूजा-उपासना का मूल प्रयोजन अंतरंग पर चढ़े हुए मल आवरण विक्षेपों पर साबुन लगाकर अपने ज्ञान और कर्म को अधिकाधिक परिष्कृत करना भर है। ईश्वर को न किसी की खुशामद पसंद है और न धूप-दीप बिना उसका कोई काम रुका पड़ा है। व्यक्तित्व को परिष्कृत और उदार बनाकर ही हम ईश्वरीय अनुग्रह के अधिकारी बन सकते हैं। इस तथ्य को हमारा हर परिजन हृदयंगम करले तो वह मंत्र-तंत्र में उलझा रहने की अपेक्षा उस दिशा में बहुत दूर तक चल सकता है, जिससे कि विश्व-कल्याण और ईश्वरीय प्रसन्नता के दोनों आधार अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

—अखण्ड ज्योति जून 1971, पृष्ठ-57, 58

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म को अंत:करण में प्रतिष्ठित करें

जिस समाज में हम पैदा हुए हैं, उसके पिछड़ेपन की ओर अपना ध्यान जाना ही चाहिए। उसे दूर करने के लिए कुछ प्रयत्न करना ही चाहिए। अपना शरीर रुग्ण हो, अपना बच्चा बीमार हो तो क्या हम उपेक्षा बरतते हुए हाथ पर हाथ रखे बैठे रहेंगे। ऐसा कोई निष्ठुर ही कर सकता है। हमें अपने आपे का विस्तार शरीर और घर-परिवार तक सीमित न रखकर अधिक व्यापक बनाना चाहिए और उस व्यापक क्षेत्र में जो व्यथा, विकृतियाँ फैली हैं, उन्हें सुधारने में अपना उत्तरदायित्व अनुभव करना चाहिए। वह भी क्या जीवन जो पेट के लिए जिया जाए, वह भी क्या आदमी जो अपने वैभव, विलास के ही साधन जुटाता रहे। वह भी क्या धर्मात्मा जिसे अपने नैतिक कर्त्तव्यों की प्रेरणा न मिले। वह भी कैसा ईश्वर भक्त जो दरिद्र नारायण के रूप में खड़े हुए भगवान की सहायता करने से इनकार कर दे।

धर्म का आवरण ओढ़ने से काम न चलेगा, उसे अंत:करण में प्रतिष्ठापित किया जाना चाहिए। ईश्वर-ईश्वर कहने से काम न चलेगा, उसके सर्वव्यापी स्वरूप को अधिक सुंदर और सुगंधित बनाने के लिए, लोकमंगल के लिए बढ़-चढ़कर अनुदान प्रस्तुत करना चाहिए। आत्मा को परमात्मा से मिलाने की यही राह है कि हम अपनी संकीर्णता को विशालता में और निष्ठुरता को उदारता में परिणत कर दें। संवेदना और सहानुभूति के साथ आत्मिक प्रगति का 'अन्योन्याश्रय' संबंध है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1972, पृष्ठ-45

हम ईश्वर के होकर रहें

आस्तिकता का अर्थ केवल ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करना ही नहीं वरन यह भी है कि उसके निर्देशों का पालन यथावत किया जाए, उपासना का अर्थ समृद्धि और सुविधा के लिए गिड़गिड़ाना ही नहीं वरन यह है कि हमारा वह शौर्य सजग हो, जिसमें अंधकार में भटकते लोगों का अनुसरण छोड़कर ईश्वर के पीछे एकाकी चल सकें।

अच्छा हो हम ईश्वर के लिए जिएँ, उसके बनकर रहें और उसकी प्रेरणाओं का अनुसरण करें। उपासना का अर्थ है—पास बैठना; पास बैठें और बिठाएँ। जीवन के उद्देश्य और सदुपयोग का मार्ग पूछें और उस पर चलने की अपनी तत्परता बनाएँ। बैठने की दूरी क्रमश: घटनी चाहिए और निकटता इतनी बढ़नी चाहिए कि अपना आपा, परेमश्वर में तल्लीन हो जाए और उस परम ज्योति से अपना कण-कण जगमगाने लगे।

अपनी आकांक्षाओं में ईश्वरीय आकांक्षा घुली रहे। हम वही चाहना करें, वही सोचें जो ईश्वरीय प्रेरणा-प्रवाह के अनुकूल हो। हम वही करें जो ईश्वर को अपेक्षित है। मन का शासन अस्वीकार करके, ईश्वर के हाथों अपने को सोंप दें और उसी के संकेतों पर अपने चिंतन और कर्तृत्व की दिशा का निर्धारण करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने लिए नहीं हम ईश्वर के लिए जिएँ। यह घाटे का नहीं सबसे अधिक लाभ का कदम है। यह निश्चित है कि जो ईश्वर का होकर रहता है, ईश्वर भी उसी का हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1972, पृष्ठ-28

आत्मदेव रूपी कल्पवृक्ष को सींचें

जिन्हें आत्मकल्याण, ईश्वर अनुग्रह, ब्रह्मतेजस्, जीवनलक्ष्य जैसे महान प्रयोजनों का सचमुच ध्यान हो और उन्हें प्राप्त करने की वस्तुत: आकांक्षा हो, उन्हें अपने दृष्टिकोण और क्रिया-कलाप में आमूल-चूल परिवर्तन करना चाहिए। कायकलेवर से ऊँचे उठकर आत्मानुभूति के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए। इंद्रिय सुखों के लिए, तृष्णा और लिप्सा के लिए जीने से इनकार करना चाहिए। लोभ और मोह, पेट और प्रजनन ही कहीं जीवनोद्देश्य तो नहीं बने हुए हैं, इनका विश्लेषण करना चाहिए। पूजा-अर्चना की सार्थकता तभी है, जब उनका प्रभाव चिंतन में उत्कृष्टता और कर्तृत्व में आदर्शवादिता के समावेश जैसा दिखाई पड़े। इस कसौटी पर आत्मवादी को अपनी अंतरंग स्थिति की निरंतर परख करते रहना चाहिए।

स्मरण रखा जाए कि उपासना का अर्थ याचना नहीं है। भूलना नहीं चाहिए कि जो कुछ आत्मिक विभूतियाँ मिलने वाली हैं, उनका उद्गम अपना ही अंतरंग है। भीतर की महानता ही बाहर सिद्धियों, समृद्धियों और विभूतियों के रूप में पल्लवित होती हैं। स्वर्ग और मुक्ति से लेकर देव अनुग्रह के विविध अनुदान-वरदान केवल अपनी पात्रता के ही प्रतिफल हैं। आत्मचिंतन, आत्मशोधन, आत्मनिर्माण और आत्मविकास के उपक्रम ही तप साधना के, उपासना के, अर्चना के मूल मर्म हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के अमरफल आत्मदेव रूपी कल्पवृक्ष को सींचने, सँजोने से ही प्राप्त किए जा सकते हैं। जिसने ब्रह्मविद्या के इस मर्म को समझ लिया, उसी के हाथ आत्मिक विभूतियाँ लगने की आशा की जानी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1973, पृष्ठ-05

अध्यात्म धर्म का पुनरुत्थान

इन विषम और विपन्न परिस्थितियों में विश्वमानव के सम्मुख एक ही प्रश्न प्रस्तुत है कि विगत शताब्दियों से प्रगति की दिशा में आतुर आकांक्षा के साथ बढ़ते हुए, विनाश के जिस सर्प को गले लपेट लिया गया है, उसे छुड़ाया कैसे जाए? सुख, शांति और संतोष की भूतकालीन परिस्थितियों की ओर पीछे कैसे लौटा जाए? सुविधा-साधनों की प्रचुर अभिवृद्धि होने पर भी सर्वनाश के गर्त में गिरने की विडंबना को कैसे निरस्त किया जाए? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि मनुष्य के चिंतन में उत्कृष्टता और कर्तृत्व में आदर्शवादिता का समुचित समावेश कर सकने वाले अध्यात्म धर्म को पुनर्जीवित किया जाए? जनमानस के भावनात्मक परिष्कार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का प्रबल प्रयत्न किया जाए? विविध आकार-प्रकार की प्रस्तुत अगणित समस्याओं का एक ही समाधान है—भावनात्मक उत्कर्ष। दूसरे शब्दों में इसे उस अध्यात्म धर्म का पुनरुत्थान भी कह सकते हैं जिसे इस देश के नागरिकों ने कभी अपने अंत:करण के गहन मर्मस्थलों में कूट-कूट कर भरा था, जिसे अपनी गौरव-गरिमा का आधार बनाया और जिसे संसार भर में बिखेरकर मानव जाति को अजस्र सुख-शांति का अनुदान प्रदान किया था।

न केवल भारत के वरन समस्त विश्व के, समस्त मानव जाति के हित में इस नितांत महत्त्वपूर्ण तथ्य को समझा जाना चाहिए कि हम जीवन और मरण के चौराहे पर खड़े हैं। परिस्थितियाँ इतनी तेजी से गतिशील हैं कि फैसला इधर या उधर किसी पक्ष में तुरंत होना है। ठहरो और देखो की मंदगति से चलने की, समय आने और प्रतीक्षा करने की गुंजाइश अब है नहीं। जो कुछ चल रहा है उसे यथावत चलने देना हो तो आंशिक क्षति के लिए, सर्वभक्षी महाविनाश की तैयारियाँ करनी चाहिए और इसी दृष्टि से सोचना चाहिए कि अब सर्वनाश बिलकुल निकट आ गया है।

इन परिस्थितियों में प्रकाश की एक ही किरण शेष रह जाती है कि उस विषवृक्ष की जड़ें काटी जाएँ, जिनने सड़ी दुर्गंध पैदा करके रख दी है। दुर्बुद्धि, दुर्भावना, दुरभिसंधियाँ और दुष्प्रवृत्तियाँ ही वे जड़ें हैं जिन्होंने मनुष्य जैसी दैवी विभूतियों से संपन्न, समुन्नत प्राणी को इस दयनीय दुर्दशा में उलझाया है। जिस कुल्हाड़ी से यह जड़ें कटेंगी उसे अध्यात्म धर्म कहा जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1975, पृष्ठ-46, 47

परमात्मा दयालु है, न्यायी भी

संसार भर में प्रचलित समस्त साधनात्मक विधियों का मूल गंतव्य एक ही है—वह है जीवन की रीति-नीति ऐसी बनाना जो परमात्मा के अंश मनुष्य के अनुरूप हो। परिष्कृत जीवन ही परमात्मा का कृपापात्र बनता है एवं ईश्वरीय अनुग्रह की अजस्र धारा विभिन्न प्रकार की सफलताओं के रूप में बरसती रहती है। ईश्वर परम संतोष एवं आनंद रूप में उपासक को अपना मंगलमय सान्निध्य का अनुग्रह करता है। परमात्मा के सच्चे भक्तों को संसार में किसी भी प्रकार की सुख-शांति की कमी नहीं रहती।

परमात्मा की कृपालुता एवं दयालुता असंदिग्ध है, किंतु उसकी एक व्यवस्था मर्यादा है। इसका उल्लंघन करने वालों के लिए उसका एक और भी स्वरूप है—वह है न्यायी तथा व्यवस्थापक होना। जहाँ उसकी प्रसन्नता, मर्यादा व्यवस्था के अनुरूप जीवन नीति-रीति अपनाने वालों पर अनिर्वचनीय उपहारों की झड़ी लगा देती है, वहाँ उसकी अप्रसन्नता प्रतिकूल आचरण करने वालों को कठोर दंड भी देती है। संसार में कदाचित ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो परमात्मा की न्याय-परिधि में आकर दंड की, दु:ख की कामना करे, नहीं तो प्रत्येक जीव उसकी प्रसन्नता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं अनुग्रह का ही आकांक्षी रहता है। उपासना परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करने का ही एक उपाय है, किंतु यह प्रसन्नता केवल पूजा-पाठ, भजन, कीर्तन अथवा स्मरण जाप से ही नहीं प्राप्त की जा सकती है।

परमात्मा का अनुग्रह और उसके फलस्वरूप शांति, प्रसन्नता की प्राप्ति एवं सफलता का शाश्वत उपहार पाने के लिए मनुष्य को उपासना के साथ जीवन साधना को अपनाना होगा। उसकी दयालुता के साथ ही रुद्ररूप को भी याद रखे तथा सत्पथ पर शुद्ध एवं सात्विक भावना से चलकर उसे अप्रसन्न होने का अवसर न दे, मनुष्य का कल्याण इसी में है। यही परमात्मा के अंश मनुष्य के लिए योग्य एवं शोभनीय है।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1979, पृष्ठ-08

ईश्वर के प्रति कृतज्ञता एवं धन्यवाद ही सच्ची प्रार्थना

जब मन दुर्बल हो रहा हो, मनोविकार बढ़ रहे हों और लगता हो कि पैर अब फिसला, तब फिसला तो सच्चे मन से परमात्मा को पुकारना चाहिए। गज को ग्राह के चंगुल से छुड़ाने वाले भगवान, पतन से परित्राण पाने के लिए व्याकुल आर्त भक्त की पुकार अनसुनी नहीं करते हैं और उस मनोबल के रूप में अंत:करण में उतरते हैं जिसे गरुड़ कहा जा सकता है तथा जो पतनोन्मुख दुष्प्रवृत्तियों के सर्पों को उदरस्थ करने का अभ्यासी भी है। परमात्मा से यही माँगा भी जाना चाहिए। समझदारी इसी में है। भिखारी बनकर राजा के पास पाँच-दस पैसे माँगने पहुँचा जाए तो उसे मूर्ख ही कहा जाएगा। फिर ईश्वर तो राजाओं का भी राजा, सम्राटों का भी सम्राट और अधिपतियों का भी महाधिपति है, उससे लौकिक याचनाएँ पूरी करने के लिए कहना भिखारी जैसी मूर्खता करने जैसा है। भगवान से वही माँगना चाहिए जिन्हें देने में वह भी संतुष्ट होता है और प्राप्त होने पर स्वयं को भी गौरव की अनुभूति होती है। वह माँगने योग्य वस्तु आत्मबल, मनोबल, आत्मबोध, अंत:प्रकाश अथवा समर्पण ही है।

भगवान को अपने में और अपने को भगवान में समाया होने की अनुभूति जब इतनी प्रबलता के साथ अनुभूत होने लगे कि उसे कार्यरूप में परिणत किए बिना रहा ही न जा सके तो यही समर्पण भाव की परिपक्वता है। ऐसी शरणागति व्यक्ति को द्रुतगति से देवत्व की ओर अग्रसर करती है तथा यह गतिशीलता इतनी प्रभावकारी होती है कि भगवान को अपनी समस्त दिव्यता सहित भक्त के व्यक्तित्व में उतरना पड़ता है।

आरंभ अपने पापों के पश्चात्ताप, निर्मल जीवन जीने के संकल्प और सफलताओं के लिए विनम्रतापूर्वक ईश्वर को धन्यवाद देने से करना चाहिए। निस्संदेह सफलताएँ अपने ही परिश्रम-पुरुषार्थ का प्रतिफल होती हैं, पर यह नहीं भूलना चाहिए कि उस परिश्रम-पुरुषार्थ की प्रेरणा देने वाला परमात्मा अपने अंत:करण में ही विद्यमान है। यदि इस तथ्य को नकारकर अपने क्षुद्र अस्तित्व का अभिमान किया जाता है तो मदोन्मत्त हाथी की तरह न केवल अपनी शक्तियों का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विध्वंसकारी दुरुपयोगी होने की संभावना बनती है, वरन उनके भी नष्ट होने का संकट खड़ा रहता है। अस्तु, जो कुछ प्राप्त है, उसके लिए परमात्मा के प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद के बोध से भरकर परमात्मा से आत्मबल, मनोबल, आत्मबोध के ही दिव्य वरदान की माँग की जाए। सर्वतोभावेन परमात्मा के प्रति समर्पित भक्त का योगक्षेम वहन करने की प्रतिज्ञा भगवान ने स्वयं की है, पर उस शर्त को भी तो पूरा किया जाना चाहिए जो पात्रता विकसित करने, हृदय को वासनाओं और तृष्णाओं से रिक्त करने के रूप में जुड़ी हुई है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1979, पृष्ठ-07

शालीनता की सीता की खोज करें

अपने समय में जिस सीता का अपहरण हुआ है उसका नाम शालीनता है—शालीनता अर्थात शराफत, सादगी, सज्जनता, भलमनसाहत, नेकी, उदारता आदि। आज हर क्षेत्र में आडंबरों के अंबार खड़े हैं, पर उन्हें खोजने, टटोलने पर ढोल की पोल के अतिरिक्त और कुछ पल्ले नहीं पड़ता। स्वार्थांधों और व्यामोहग्रस्तों की बात जाने दें तो भी जो परमार्थ का दावेदार धर्मक्षेत्र बच रहता है उसके मूर्द्धन्यों तथा क्रिया-कलापों की जाँच-पड़ताल करने पर, शालीनता खोजने पर निराशा ही हाथ लगती है। यश और पद के भूखे लोगों से लोकसेवा का क्षेत्र इस बुरी तरह भर गया है कि भाव-संवेदना खोज निकालना असंभव जैसा लगता है। देवताओं की हजामत बनाने वाले पुजारियों के पाखंड देखते ही बनते हैं। धर्माडंबरों के बहाने अपनी कीर्ति-ध्वजा फहराने वालों में जो प्रतिस्पर्द्धा चल रही है उससे प्रतीत होता है कि इससे पूर्व ऐसा धर्मयुग कदाचित ही कभी रहा हो। अखंड कीर्तनों और रात्रि जागरणों का कुहराम सुनकर लगता है कि अब क्षीरसागर में सोने वाले भगवान को इच्छा या अनिच्छा से बिस्तर समेटना ही पड़ेगा। तीर्थयात्रा और दान-पुण्य में हर साल बढ़ोतरी ही हो रही है, इतने पर भी उस शालीनता का कुछ अता-पता ही नहीं चल रहा है, जिसके सहारे व्यक्ति को न्यूनतम निर्वाह अपनाने के उपरांत जो समर्थता बच रहती है उसे सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन के लिए नियोजित किया जा सके। यदि शालीनता का अस्तित्व रहा होता तो यह क्षेत्र इतना सुनसान न रहता कि युगसृजन के लिए जरा-जरा से श्रम, सहयोग के लिए बुरी तरह भटकना और खिन्नतापूर्वक निराश रहना पड़े।

भारतीय संस्कृति देव संस्कृति है। देव अर्थात संयमी और सेवाभावी। देवसत्ता का प्रत्यक्ष दर्शन उदार शालीनता की गतिविधियों में ही किया जा सकता है। इस खोज के लिए निकलने वाले अँधेरे में भटकते ही दीख पड़ते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि जाग्रत आत्माओं में से प्रत्येक के मन में यह दरद उठे कि वे शालीनता की सीता की खोज करके ही रहेंगे। उसका अता-पता जो भी मिलेगा उसी से पूछेंगे और प्राणपण से इस निमित्त प्रयत्नरत रहेंगे कि शालीनता को असुरता के चंगुल से छुड़ाया जा सके।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1980, पृष्ठ-18

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समस्त सिद्धियों का राजमार्ग

मनुष्य जीवन, सृष्टि के समस्त जीवधारियों की तुलना में सर्वोच्च पद है। प्राणी के लिए इससे बड़ा न कोई पद है और न गौरव। उसे ईश्वरप्रदत्त सर्वोपरि उपहार और उपलब्धकर्त्ता का अभूतपूर्व सौभाग्य कहा जा सकता है। ऐसे बड़े पद का कार्यभार सफलतापूर्ण चलाने के लिए किस रीति-नीति का, किस दिशाधारा का अपनाया जाना आवश्यक है, इसके लिए कुछ ऐसा सोचना, मानना और अपनाना पड़ता है, जो भूतकाल की तुलना में सर्वथा भिन्न ही कहा जा सकता है। इस प्रक्रिया को आत्मिकी कहते हैं। उपयोगिता की दृष्टि से इसे भौतिकी की तुलना में कम नहीं वरन अधिक महत्त्व ही दिया जा सकता है। भौतिकी की उपलब्धियाँ मात्र शरीर को सुविधा एवं मन को गुदगुदी भर प्रदान करती है किंतु आत्मिकी के आधार पर जिस तरह समूचे व्यक्तित्व की गलाई-ढलाई होती है, उसे एक प्रकार से कायाकल्प ही कहना चाहिए।

यह कायाकल्प द्विजत्व नाम से भी पुकारा जाता है। साधना की प्रक्रिया नर-पशु को नर-नारायण में किस प्रकार बदलती है, इसे जानने के लिए जिज्ञासु मनीषियों को आत्मिकी विद्या के गूढ़ तत्त्वदर्शन को भलीभाँति जानना चाहिए। उच्चस्तरीय साधना सोपानों को तुरंत पाने का प्रयास करने वालों को इस एक तथ्य को समझ लेना बहुत अनिवार्य है कि अंत:करण का परिष्कार, वृत्तियों का शोधन ही समस्त सिद्धियों का राजमार्ग है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1982, पृष्ठ-04

अध्यात्म जादूगरी नहीं

परित्राण पाने के लिए दूसरों की ओर तकना व्यर्थ है। हम मुँह से भोजन करते और पेट से पचाते हैं। नित्य ही नहाते, मल-मूत्र त्यागते, सोते, पढ़ते, व्यवसायरत होते और बच्चे जनते हैं। यह कार्य औरों से नहीं कराए जा सकते। अपना उद्धार आप करने का गीता का परामर्श नितांत सही सार्थक है। यदि कोई आत्मनिरीक्षण, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण, आत्मपरिष्कार के लिए सच्चे मन से सहमत हो, उसकी आवश्यकता अनुभव करे और उस परिवर्तन के लिए साहस सँजोए तो कोई कारण नहीं कि भौतिक विज्ञान की तरह ही आत्मविज्ञान के चमत्कार भी हाथोंहाथ न देखे जा सकें। खोया स्वास्थ्य वापस लौटाने की, अर्थसकंट से उबरने की, शत्रुता को मित्रता में बदलने की और निराशा के वातावरण में उज्ज्वल भविष्य की आशा-किरणें देखने की पूरी-पूरी गुंजाइश है। जहाँ इतना आत्मपरिशोधन, आत्मपरिष्कार का क्रम चलेगा, वहाँ यह भी बने नहीं बिना रहेगा कि जिस परिवार में सर्वत्र कुसंस्कारिता, आपा-धापी, खींचतान, अशिष्टता और असहकारिता भरी दीखती है उसमें आमूल-चूल परिवर्तन के दृश्य न दीखने लगें।

स्मरण रखने योग्य तथ्य एक ही है कि अध्यात्म जादूगरी नहीं है। उसके द्वारा किसी देवी-देवता का अनुदान, सिद्धपुरुष का वरदान या मंत्र-तंत्र का चमत्कार बरसने की दुराशा में जहाँ-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तहाँ नहीं भटकते फिरना चाहिए। यह विशुद्ध आत्मनिर्माण की विद्या है। इसके कुछ सिद्धांत और निर्धारण हैं। जो उन्हें अपनाते हैं, वे उबरते हैं और अपने साथ-साथ संबंधियों समेत समूचे मानव समुदाय को उबारते हैं।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1983, पृष्ठ-49

धर्म की सच्ची भावना

धर्म का बड़ा व्यापक अर्थ है। धर्म का अस्तित्व उन सभी परिस्थितियों में विद्यमान रहता है, जिनमें शाश्वत की झाँकी होती हो। मन के द्वारा सौंदर्य, शिवत्व और सत्य की खोज धर्म है। बच्चा माता के स्तनों का दूध पीता हुआ चपलता से कभी इधर, कभी उधर देखता है, कभी अधिकारपूर्वक किसी अंग को पकड़ता, झकझोरता है, उसमें जो पवित्रता और निष्कलुषता होती है, वह धर्म है। जंगल में बैठा हुआ अशिक्षित व्यक्ति आकाश की ओर देखता है और प्रयोगशाला में बैठा हुआ वैज्ञानिक एक तत्त्व का ध्यानमग्न परीक्षण करता है। एक अज्ञान से, दूसरा ज्ञान से परमात्मा की सृष्टि के प्रति आश्चर्यचकित होता है। स्थिति और अवस्था में भेद होते हुए भी दोनों ही धर्ममय स्थिति में हैं। जहाँ शाश्वत की खोज, जहाँ निष्कलुष आनंद की सृष्टि, जहाँ उद्दात जीवन की निष्ठा है, वहाँ धर्म मूर्तिमान है। यह धर्म ही मनुष्य को ऊँचा उठाता है और समाज-संसार में शांति का सृजन करता है।

मनुष्य में जो विशेषता है, वह प्राणिमात्र में आत्मीयता, प्रेम और विश्वास का आदान-प्रदान है। इसी का नाम धर्म है। यदि मनुष्य उससे वंचित है तो वह मनुष्य नहीं। मनुष्यता का गौरव केवल धार्मिकता है।

मनुष्य दूसरों की आवश्यकताओं को पहचानने और प्राथमिकता देने में संकोच न करे, उसे अपने हित से बड़ा मानें। धर्म के बाह्याडंबर की आवश्यकता नहीं है। संत, पैगंबर और सिद्ध महापुरुष बनने की आवश्यकता नहीं। यदि मनुष्य हृदय की निर्मल भावनाओं को ही परिष्कृत और प्रसारित कर लेता है, तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसी का नाम धर्म है। इसी का नाम धारण करना, जीवनलक्ष्य को प्राप्त करना, सत्य में समाहित होना आदि-आदि है। धर्म कोई वर्ग, संप्रदाय, कुल, जाति अथवा गोत्र की उच्चता, निम्नता का मापदंड नहीं, वह अंतरात्मा के परिष्कार का माध्यम और सुखी समाज का साधन है, जिसमें किसी का अहित न हो।

सच्चे अर्थों में धार्मिक व्यक्ति का धर्म बिलकुल सीधा-सादा होता है। जिसमें धर्म-विश्वासों, धर्म-सिद्धांतों के मनोभावों या आधिदैविक तत्त्वों की बेड़ियाँ नहीं होतीं। यह उस आत्मा की वास्तविकता का प्रतिपादन करता है, जो काल और देश से ऊपर व्याप्त है। वह मानवमात्र को प्रेम, एकता, आत्मीयता से रहने, व्यवहार करने, बढ़ने और फलने-फूलने का समान अवसर प्रदान करता है। अपनी व्यावहारिक अभिव्यक्ति के लिए धर्म की सूक्ति है "जो भी भला करता है, वह भगवान का है" न्यायपूर्वक आचरण करना, सौंदर्य से प्रेम करना और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य की भावना के साथ विनम्रतापूर्वक चलना यही सबसे ऊँचा और वास्तविक धर्म है। यह अनुभव किसी एक जाति या एक प्रदेश तक सीमित नहीं है।

एकदूसरे के साथ न्याय के आधार पर काम करना, औरों की सहायता करना, सब पर दयादृष्टि रखना, शाश्वत सत्य की उपासना करना, सर्वमैत्री, सबसे प्रेम की भावना रखना ये बातें सबके लिए संतोषदायक, हितकर और आनंदमयी हैं। इन्हें स्वीकार करने में कभी किसी भी मनुष्य को आपत्ति नहीं हो सकती। इन्हीं का नाम है—धर्म जीवन। जब ऐसे मानव जीवन का प्रवर्तन होगा, तभी सच्ची सुख-शांति के दर्शन उपलब्ध होंगे।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1968, पृष्ठ-11-12

धर्म का उद्देश्य है—सदाचार एवं कर्त्तव्यपालन

मनुष्य जीवन में सुख-शांति की उपलब्धि के लिए जो सबसे अधिक आवश्यक एवं उपयोगी तत्त्व है उसे लोग धर्म के नाम से जानते हैं। सदाचार एवं कर्त्तव्यपालन की प्रेरणा, 'जिओ और जीने दो' का संदेश धर्म की आत्मा के पर्याय हैं। धर्म का अर्थ किसी वस्तु अथवा व्यक्ति की प्रकृति, गुण, कर्म एवं स्वभाव है। कवींद्र रवींद्र ने इसकी शाश्वत अनुभूति कर अभिव्यक्त किया है—"धर्म अंत: प्रकृति है, वही समस्त वस्तुओं का ध्रुव सत्य है, धर्म ही चरम लक्ष्य है जो हमारे अंदर कार्य करता है।" अतएव यह कहा जा सकता है कि जिस पथ पर चलकर अपने अभीष्ट की उपलब्धि संभव हो उसे ही धर्म कहते हैं क्योंकि धर्म का उद्देश्य मानव जीवन को पथभ्रष्ट होने से बचाना है। इसलिए धर्म को जीवन का प्राण ही कहना चाहिए।

समादरणीय व्यक्ति अथवा सम्मान के अधिकारी व्यक्ति वही हैं जो धर्म कर्त्तव्य से विमुख नहीं हैं। शास्त्रोक्ति है—"जो धर्म का पालन करता है उसकी धर्म ही रक्षा करता है, पर जो उसे नष्ट कर देता है उसका नष्ट किया हुआ धर्म ही नाश कर देता है।"

मनुष्य के उत्थान एवं पतन का कारण उसकी भावना होती है। अतएव भावना स्तर को मानवीय आदर्शों के अनुरूप बनाए रहने में धर्म के समस्त क्रिया-कलाप सहायक होते हैं। इसी कारण भावना को प्रधानता मिली हुई है। आदर्श जीवन एवं उत्कृष्ट विचार ही सजीव धर्म की शाश्वत साधना है।

मानवीय अंत:करण में सन्निहित श्रेष्ठता को विकसित करने मात्र से ही सुधार, निर्माण एवं प्रगति का पथ प्रशस्त हो सकता है। इस पुनीत कार्य में हम जितना सफल हो सकेंगे उसी अनुपात में बहिरंग जीवन की, समस्त संसार की असंख्य समस्याओं का हल अपने आप होता चलेगा। साथ ही विकास के अगणित साधना सूत्र सरलतापूर्वक उपलब्ध होते चलेंगे।

धर्म परस्पर प्रेम, दया, करुणा, सेवा, उदारता, संयम, सद्भावना एवं सहयोग को बढ़ाता है। एतदर्थ धर्म का सच्चा स्वरूप सदाचार एक कर्त्तव्यनिष्ठा में निहित है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1977, पृष्ठ-07-08

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुखी जीवन का आधार—धर्म

सुख-शांति की परिस्थितियों का जनक भी धर्म है। कहना न होगा कि जिस दिन इस जगत से धर्म की समाप्ति हो जाएगी उस दिन सर्वनाश को कोई न रोक सकेगा। पाश्चात्य मनीषी यामसन अपनी समष्टि दृष्टि से धर्म को परिभाषित करते हुए कहते हैं—''संपूर्ण विश्व मेरा देश, संपूर्ण मानवता मेरा बंधु है और संपूर्ण भलाई ही मेरा धर्म है।''

वर्तमान युग में धर्म के प्रति लोगों की अनास्था बढ़ रही है, जिसका परिणाम यह हो रहा है कि नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों, मान्यताओं में भी अवमूल्यन निरंतर होता जा रहा है। अधर्माचरण के कारण मनुष्य की सुख-शांति भंग होती जा रही है, सर्वत्र असंतोष का वातावरण व्याप्त है।

वास्तविक धर्म में व्यक्ति जिन तत्त्वों की साधना करता है, वह है परोपकार, दूसरों की सेवा, सत्य, संयम और कर्त्तव्यपालन आदि। 'धर्मचर' का अभिप्राय भी तो यही है कि सदाचरण, धर्माचरण, सत्याचरण आदि मानव जीवन में व्यावहारिक रूप पा सकें।

जो व्यक्ति धर्म का पालक-पोषक होता है, वही सच्चा धर्मात्मा कहलाने का अधिकारी है। धर्मनिष्ठ व्यक्ति के अंत:करण में वह शक्ति होती है जो असंख्य विघ्न-बाधाओं, प्रतिगामी शक्तियों को पराजित कर देती है। धार्मिक मनुष्य के जीवन में एक विशेष प्रकार का विलक्षण आह्लाद भरा रहता है, वह सर्वत्र सौरभ बिखेरता चलता हैं, उसकी उमंग एवं उल्लास से आस-पास का वातावरण भी प्रभावित होता है। धर्म की प्राणवत्ता निर्जीव को भी सजीव बनाने में समर्थ होती है। 'जीवट' सच्चे धर्म का प्रधान लक्षण होता है। वस्तुत: धर्म मनुष्य का वह अग्नि तेज है जो प्रकाश उत्पन्न करता है उसमें क्रियाशीलता एवं जिजीविषा जाग्रत रखता है। धर्मशील व्यक्ति विभिन्न विपदाओं, विघ्न-बाधाओं में भी हिमालय के समान अटल एवं समुद्र के सदृश धीर-गंभीर रहता है। संक्षेप में कहा जाए तो धर्म जीवन का प्राण और मानवीय गरिमा का पर्याय है उससे ही मानव जाति की सुख-शांति और व्यवस्था अक्षुण्ण रह सकती है।

—अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1977, पृष्ठ-02

धर्म का आधुनिक विस्तृत स्वरूप

समाज व्यक्ति को प्रभावित करता है और व्यक्ति समाज को। दोनों के बीच जितना अधिक सामंजस्य सौमनस्य होगा उतना ही उपयुक्त वातावरण बनेगा। आदान-प्रदान का नीतियुक्त सिलसिला चलेगा। समाज में अनेक कुरीतियाँ, मूढ़ मान्यताएँ, अनीतियाँ प्रचलित पाई जाती हैं। इसका कारण भी विवेक बुद्धि की, दूरदर्शिता की, न्यायनिष्ठा की कमी ही है। समाज में इस स्तर के दुष्कृत्यों को हटाया जाना ही उचित है। यह कार्य भी शासन क्षेत्र की परिधि में एक सीमा तक ही आता है। परमार्थपरायणता, न्यायनिष्ठा, सेवा- सहायता की सत्प्रवृत्तियाँ जब पनपती हैं, तब

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामाजिक सुव्यवस्था के अक्षुण्ण रहने की स्थिति बनती है। इस आस्था को जगाने में धर्म की ही प्रधान भूमिका होती है, हो सकती है। परस्पर किस प्रकार हँसते-हँसाते, मिल-बाँटकर खाते हुए जीवन जिया जाना चाहिए, यही सामाजिक धर्म शिक्षा है। उसमें समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी का ऐसा पाठ पढ़ाया जाता है, जिससे मनुष्य में देवत्व उभर सके और इसी धरती पर स्वर्ग का वातावरण बन सके।

कभी धर्मपूजा, उपासना और परलोक की चर्चा में ही निरत रहता था, पर अब उसकी परिधि में वे सभी आधार सम्मिलित किए जा रहे हैं जो मनुष्य के चिंतन, चरित्र और व्यवहार को परिष्कृत, सुव्यवस्थित करते हैं। इस दृष्टि से धर्मोपदेशक ही नहीं वरन वे साहित्यकार, कलाकार, लोकसेवी भी पुरोहित कहे जा सकते हैं जो आदर्शवादी आस्थाओं को उभारने में अपने-अपने ढंग से योगदान देते हैं।

बहुत समय से धर्म निहित स्वार्थों के चंगुल में फँसा रहा है। पुरोहित देवताओं के एजेंट बन भावुकजनों को किन्हीं प्रपंचों के सहारे लूटते खाते रहे हैं, पर अब विज्ञवर्ग ने समझा है कि धर्मधारणा एक उच्चस्तरीय प्रेरणा है जिससे मनुष्य स्वयं महान बनता और अपने समीपवर्ती वातावरण में महानता का बीजारोपण करता है।

पेड़ जड़ों की गहराई, मजबूती और खाद-पानी सोखने की शक्ति के सहारे सुदृढ़ होता और फलता-फूलता है। मनुष्य की जड़ें उसकी आस्था, भूमि-अंतरात्मा में है। क्षुद्रता और महानता, अवगति और प्रगति वहीं सन्निहित रहती है। इसे सींचना-सँजोना धर्म का दायित्व है। भौतिक क्षेत्र की संपदाओं का कितना ही महत्त्व क्यों न हो, वह अंत:करण की विभूतिवान उत्कृष्टता से बढ़कर नहीं हो सकता। जो इस स्तर पर सुसंपन्न है, वही वस्तुत: प्रगतिशील है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1977, पृष्ठ-53, 55

धर्म का मूल प्रयोजन—सत्य की शोध

धर्म की मूल आत्मा न्याय, कर्त्तव्य एवं औचित्य का समर्थन करती है। प्रथा-परंपराएँ तो धर्म के आवरण मात्र है। जिन्हें समय-समय पर बदले जाने की आवश्यकता पड़ती है।

देशभक्ति ही सब कुछ नहीं है। विश्वभक्ति उससे भी ऊपर है। समाज का कितना ही महत्त्व क्यों न हो, बहुमत की मान्यताओं के समर्थ में कुछ भी क्यों न कहा जाता रहे; अंतत: विवेक ही सबसे ऊपर है, उसे देशभक्ति से भी ऊँचा स्थान मिलना चाहिए। बहुजन हिताय—बहुजन सुखाय के आधार पर विधान कुछ भी क्यों न बनते रहें, उच्च आदर्शों का स्थान सबसे ऊँचा है; भले ही उनके समर्थन में नीतिनिष्ठ व्यक्तियों की थोड़ी-सी ही संख्या क्यों न हो!

धर्म दुधारी तलवार है। यदि वह अपरिपक्व दर्शन और संकीर्ण सांप्रदायिकता का समर्थन भर करता है तो वह हानिकारक है। यदि उसमें नीतिनिष्ठा का समुचित समावेश है तो उसके द्वारा मनुष्य और समाज का हितसाधन ही होगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विज्ञान और धर्म के शोध विषय पृथक हैं। एक पदार्थ की गहराई को खोजता है, दूसरा चेतना के मर्मस्थल को। इतने पर भी दोनों का मूल प्रयोजन एक है—सत्य की शोध। इसके लिए आवश्यक है कि मस्तिष्क को किन्हीं पूर्वाग्रहों से जकड़कर न रखा जाए। पिछले लोग क्या सोचते, क्या कहते और क्या करते रहे हैं? इसकी जानकारी उत्तम है। उसके सहारे तथ्यों तक पहुँचना सरल पड़ता है, पर यह मानकर नहीं चला जा सकता कि जो जाना या माना गया है उसमें संशोधन या सुधार की गुंजाइश नहीं है। तथ्यों को स्वीकार करने की शोध दृष्टि में यह साहस रहता है कि यदि प्रचलित स्वीकृतियों से भिन्न प्रकार के तथ्य सामने आते हैं तो उनके स्वीकार करने में इसलिए असमंजस न करना पड़ेगा कि अब तक के चिंतन को झुठलाना पड़ेगा।

तर्कहीन मन:स्थिति का नाम धार्मिकता नहीं है। आँखें बंद करके किसी के भी वचन को गले नहीं उतारना चाहिए। अपने लोग कहते हैं या पराये, बात संस्कृत या अरबी भाषा में कही गई है अथवा बोलचाल की भाषा में, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। स्वीकार करने योग्य वही है, जिसमें तथ्य जुड़े हुए हों और जिसे विवेक की कसौटी पर खरा सिद्ध किया जा सके। बिना खोज-परख के जो धर्म के नाम पर किसी भी मान्यता या प्रथा को स्वीकार कर ले, वह स्वस्थ दृष्टि नहीं है। धार्मिक मन सत्य का उपासक होता है। उसे औचित्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिए। भले ही इसके लिए उन्हें पूर्वजों की अथवा उपदेशकों, ग्रंथों अथवा साथियों की ही अवहेलना क्यों न करनी पड़े!

—अखण्ड ज्योति मार्च 1987, पृष्ठ-08

धर्म के तत्त्वदर्शन को ठीक से समझें

मानव जीवन में धर्म एवं सदाचार ही वह तथ्य है, जिस पर चलते हुए सुख-शांति के साथ स्वयं जीने और दूसरों को जीने देने की प्रक्रिया संपन्न हो सकती है। शास्त्रों का वचन है कि जो धर्म का पालन करता है उसकी धर्म ही रक्षा करता है, पर जो उसे नष्ट कर देता है उसे नष्ट किया हुआ धर्म ही नाश कर देता है। यह सिद्धांत सर्वथा सत्य है। जिसने धर्म त्यागा उसे सभी विभूतियाँ त्यागकर चली जाती हैं। उसे दु:ख-दुर्भाग्य ही सदा घेरे रहते हैं। ऐसे लोग आग में जलते रहने जैसी बेचैनी और नरक जैसी यंत्रणाग्रस्त मनोभूमि लेकर जिंदगी के दिन ज्यों-त्यों करके पूरे करते हैं।

धर्म का प्रधान चिह्न है सदाचार एवं कर्त्तव्यपालन। मनुष्य अपने इस आदर्श एवं उत्तरदायित्व को ठीक तरह अपनाए रहें, इसी उद्देश्य के लिए समस्त धर्मतंत्र की विशालकाय रचना हुई है। आस्तिकता, उपासना, शास्त्र-श्रवण, पाठ-पूजा, कथा-कीर्तन, सत्संग-प्रवचन, व्रत-उपवास, तीर्थयात्रा, व्रत, नियम-संयम, त्योहार, संस्कार आदि समस्त प्रक्रियाएँ इसी उद्देश्य को लेकर विनिर्मित हुई हैं कि मनुष्य वासना और तृष्णा के आकर्षणों एवं प्रलोभनों का मुकाबला करता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ अपने कर्त्तव्य-पथ पर अडिग बना रहे। यदि यह उद्देश्य पूरा न होता हो तो सारा धार्मिक कर्मकांड एक प्रकार से निष्प्राण एवं निरुद्देश्य ही सिद्ध होता है।

ईश्वरीय सत्ता के प्रति आस्था रखने; उसका चिंतन, मनन, ध्यान और भजन करने का उद्देश्य यही तो है कि मनुष्य अपने चारों ओर, अंदर और बाहर उस निष्पक्ष न्यायकारी और सुनिश्चित कर्मफल देने वाली शक्ति को उपस्थित समझें। पाप-कर्मों के दंड से डरें और मर्यादाओं का उल्लंघन करने पर उसके कठोर प्रतिफल का ध्यान रखते हुए अनीति न करें। यदि उपासक में ईश्वरीय न्याय और कर्मफल की सुनिश्चितता पर आस्था न हो तो वह भक्तिभावना निरर्थक ही सिद्ध होगी। उस निरर्थक उपासना से ईश्वर की प्रसन्नता एवं कृपा किसी को भी प्राप्त न हो सकेगी। धर्म-कर्मों से जिस स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि, वरदान, दैव कृपा, सुख-शांति, समृद्धि, साक्षात्कार आदि लाभों की प्रगति होती है, वह केवल उन्हीं के लिए संभव है जिनने धर्म के मूलस्वरूप को समझा है, उसे अपने जीवन में धारण किया है और चरित्र को उज्ज्वल बनाया है। लौकिक और पारलौकिक जीवन की समस्त विभूतियाँ सदाचार के ही फलस्वरूप प्राप्त होती हैं और धर्म को सदाचार का प्रेरक एवं उत्पादक माना गया है। इसीलिए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि धर्म से विभूति एवं सुख-शांति प्राप्त होती है। कोई व्यक्ति धर्म की बाह्य प्रक्रियाओं को तो पूरा करे, पर सदाचार के प्रति आस्था न रखें, कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों और मर्यादाओं का उल्लंघन करे तो यही कहा जाएगा कि इसने धर्म का आधार ही तोड़ दिया। जड़ कट जाने पर किसी पेड़ में लगने वाले फूलों और फलों की आशा नहीं रखी जा सकती, इसी प्रकार कुकर्मी 'धर्मात्मा' को उन समस्त लाभों से वंचित रहना पड़ता है जो धर्म-मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलने वाले को अनायास ही मिलते रहते हैं।

पिछले अंधकार युग में एक बहुत ही अनुपयुक्त अदूरदर्शितापूर्ण एवं असत्य भ्रांति यह फैली कि अमुक धार्मिक कर्मकांड करने मात्र से समस्त पाप-कर्म नष्ट हो जाते हैं। ईश्वर की प्रसन्नता एवं कृपा प्राप्त करने के लिए अमुक विधि-विधान का पूरा कर लेना पर्याप्त है। ऐसी मान्यताएँ फैलाने के कारणों में पुरोहित वर्ग का निहित स्वार्थ छिपा प्रतीत होता है, जो दान-दक्षिणा या पूजा-प्रतिष्ठा प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने यजमानों को सस्ते में ही वह लाभ दिलाने का प्रलोभन देते थे, जो दृढ़ सदाचार से ही संभव है। तीर्थयात्रा, पर्व-स्नान, पूजा-पाठ, कथा-कीर्तन, व्रत-उपवास, दान-पुण्य सभी आवश्यक हैं। इन सबका महत्त्व अत्यधिक है, पर शर्त इतनी ही है कि उसके फलस्वरूप व्यक्ति या समाज के सदाचार में अभिवृद्धि होनी चाहिए। इस तथ्य की उपेक्षा करके जो कुछ किया गया होगा, वह एक रूढ़ि एवं प्रदर्शन मात्र बनकर रह जाएगा।

आज धर्म के नाम पर जिस आडंबर का घटाटोप जमा हुआ है, वह उन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं करता जिसके लिए इस महान तत्त्वज्ञान का आविर्भाव हुआ था। दान-पुण्य बहुत होता है, पर उस दिए हुए पैसे का उपयोग सदाचार एवं सद्भावनाओं के प्रसार में हुआ या नहीं, इसका किसी को ध्यान नहीं। निठल्ले, हट्टे-कट्टे आदमी, ढोंगी और दुराचारी मनुष्य अपने को धर्माधिकारी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाकर भोले-भाले लोगों का धन अपहरण करते रहते हैं और उन बेचारों को यह आश्वासन देते रहते हैं कि उनका अपहृत धन 'पुण्य' की श्रेणी में गिना जाएगा। इसी भ्रम में असंख्यों व्यक्ति अपनी गाढ़ी कमाई का पैसा पेट काटकर उन धर्मध्वजी लोगों को सौंपते रहते हैं। इससे आलस्य, धूर्तता और अनाचार को पोषण मिलता है। भिक्षुकों और धर्मध्वजी लोगों की संख्या 56 लाख तक पहुँच जाना इस बात का चिह्न है कि जन-भावना में धर्म के मूल उद्देश्य को न समझकर आडंबर एवं भ्रांत मान्यताओं के प्रति आस्था जमी हुई है। अन्यथा 56 लाख व्यक्तियों की धर्मसेना जिस देश में मौजूद हो उसे अत्यंत उच्च चरित्र का, श्रेष्ठ तथा सामाजिक परंपराओं से संपन्न एवं सभी मानवीय सद्गुणों से संपन्न होना चाहिए था। पर देखा इससे विपरीत जाता है। जो लोग स्वयं धर्म सिद्धांतों को तुच्छ, उपहासास्पद एवं उल्लंघनीय समझते हैं, कर्मकांड एवं बाह्य चिह्नों को ही सब कुछ समझते हैं उनसे आशा भी कैसे की जाए कि किसी को उपयुक्त मार्गदर्शन करा सकेंगे।

किसी समय धर्मशास्त्रों और कथा-पुराणों का प्रवचन करने वाले हजारों साधु-ब्राह्मण अपने आदर्श चरित्र और शास्त्रों के उच्च आदर्शों के सम्मिलित स्वरूप ही अंत:करण की गहराई तक पहुँच पाते थे और उसी से आंतरिक परिवर्तन संभव होता है। स्वाध्याय और सत्संग का जोड़ा इसीलिए आवश्यक माना गया है। नाम और यश की चाहना से दूर रहने वाले, प्रतिष्ठा, पद और ख्याति से बचने वाले सच्चे लोकसेवक सचमुच ही इस धरती के देवदूत कहलाते हैं। धर्मक्षेत्र में साधु-ब्राह्मणों की बड़ी संख्या इसीलिए आवश्यक मानी जाती थी और उनका बढ़ना मानव जाति का सौभाग्य समझा जाता था। त्यागी, तपस्वी, निस्पृह, आत्मबलसंपन्न, आस्तिक और उज्ज्वल चरित्र धर्मात्माओं के सत्प्रयत्नों का बढ़ना इस बात का चिह्न है कि संसार में तेजी से सुख-शांति की संभावना बढ़ेगी। इन आदर्श परंपराओं पर चल सकने वाले यदि थोड़े से भी साधु-ब्राह्मण हमारे देश में रहे होते तो कितना अच्छा होता।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1963, पृष्ठ-27-30

आत्मवत् सर्वभूतेषु ही सच्चा अध्यात्म

अध्यात्म का अर्थ है—संसार में एक ही आत्मतत्त्व व्याप्त होने की अनुभूति और तदनुसार प्रत्येक मनुष्य को, प्राणी को अपने ही समान समझना, उसके सुख-दु:ख का भी अपने सुख-दु:ख की तरह ख्याल रखना। भविष्य के मनुष्य इसी धर्म के मानने वाले होंगे। चाहे वे घंटों तक मंदिर में बैठकर मूर्तियों की पूजा-आरती न करें और मजहब के नाम पर दूसरे संप्रदायों की निंदा करने, मरने-मारने को उद्यत न हों, पर वे सबको अपने समान एक ही विराट आत्मा का अंश मानकर सबके साथ प्रेम, सहानुभूति, उदारता का व्यवहार करेंगे। आजकल अलग-अलग मजहब वाले ईश्वर और धर्म के नाम पर जो झगड़े करते रहते हैं और अन्य धर्म वालों की हत्या करने को भी पुण्य-कार्य समझते हैं, वैसी मूढ़ता भविष्य में दिखाई न देगी। वरन उस समय ईश्वरोपासना का सबसे श्रेष्ठ रूप यही होगा कि अन्य सभी मनुष्यों की सहायता और सेवा की जाए और घृणा तथा कलह का नाम-निशान भी न रहे।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1967, पृष्ठ-41

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्याय-8

स्वाध्याय

स्वाध्याय-सत्संग सतत करें

अच्छे व्यक्तियों की संगति करने के लिए कुछ अन्य कार्य हर्ज करने पड़ें, पैसा खरच करना पड़े तो करना चाहिए क्योंकि यह हानि बीज रूप है, जो अंत में हजार गुनी होकर लौटती है। जो अपने जीवन को उच्च बनाना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि स्वाध्याय के लिए कुछ समय नित्य निकालें, श्रेष्ठ पुरुषों की उत्तम रचनाएँ जो ऊँचा उठाने वाली हों, नित्य पढ़ें। स्वाध्याय करना, घर बैठे सत्संग करना है। इसके अतिरिक्त उत्तम विचारवान, श्रेष्ठ पुरुषों के पास बैठने, उनसे प्रश्न पूछने, उनके आदर्शों और स्वभावों का अनुकरण करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। लोहे को सोना बना देने की शक्ति पारस पत्थर में होती है और पशु को मनुष्य बना देने की क्षमता सत्संग में पाई जाती है। पारस पत्थर अप्राप्य है, पर सत्संग की इच्छा करें तो उसे अपने समीप ही प्राप्त कर सकते हैं।

ध्यान रखना चाहिए कि हमारे आस-पास बुरा प्रभाव डालने वाला वातावरण तो नहीं है, यदि हो तो उससे सावधान रहने और बचते रहना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए कि जीवन को ऊँचा उठाने की शक्ति सत्संग में है। अतएव इसके लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। विद्वान वेकन का कथन ठीक है कि मनुष्य कोरे कागज के समान है। पतन और उन्नति बहुत कर निकटस्थ प्रभाव के ऊपर निर्भर है। इसलिए अपने को बुरे भावों से बचाने और अच्छे प्रभावों की छाया में लाने का सदैव प्रयत्न करते रहिए।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1944, पृष्ठ-56

घर में देवमंदिर और ज्ञानमंदिर अवश्य बनें

सामाजिक जीवन में आध्यात्मिकता एव धर्मभावना को प्रवेश करने के लिए जिस प्रकार सार्वजनिक देवमंदिरों की आवश्यकता है, उसी प्रकार पारिवारिक जीवन में सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों को सुरक्षित रखने तथा बढ़ाने के लिए पारिवारिक देवमंदिरों की आवश्यकता होती है। भारतीय संस्कृति से प्रेम रखने वाले सद्गृहस्थों के घरों में अभी भी जहाँ-तहाँ छोटी देवपूजा की स्थापना दिखाई देती है। जिन घरों में नियमित पूजा, उपासना होती है, इसके लिए नियत कक्ष बने होते हैं, वहाँ अपेक्षाकृत बुराइयाँ घटती और अच्छाइयाँ बढ़ती जाती हैं। पाप, द्वेष, दुराचार, रोग-शोक, दुःख-दारिद्रय घटते हैं और श्री, समृद्धि, उन्नति, सफलता एवं प्रसन्नता के कारण बढ़ते हैं। उपासना से उत्पन्न होने वाले शक्ति-कंपनों से ऐसा परिणाम होना सहज एवं स्वाभाविक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिवारिक देवमंदिरों की नितांत आवश्यकता है। यह तो सभी परिवारों में होने चाहिए। गायत्रीउपासक कहलाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के घर में तो ऐसे देवालय अवश्य ही रहे। जिन घरों की एक स्वच्छ, हवादार कोठरी गायत्री मंदिर स्थापना के लिए स्वतंत्र रूप से मिल सके, वहाँ उसे बहुत ही नयनाभिराम ढंग से बनाकर उपासनागृह बनाना चाहिए। दीवारों पर आदर्श वाक्य एवं महापुरुषों के चित्र लगे हों। चौकी पर गायत्री माता एवं यज्ञ पिता के चित्र शीशे में मढ़े हुए रखे हों। स्थापना की चौकी पीले वस्त्र से ढकी हो, उस पर पूजा उपकरण-शंख, पंचपात्र, आरती, धूपदानी, गंगाजली आदि सजी हुई हो। कुशाओं के आसन बिछे हों। घर के सभी लोग एक साथ या बारी-बारी से अपनी उपासना किया करें। प्रातः-सायं दोनों समय आरती हुआ करे, जहाँ अलग स्वतंत्र कोठरी की व्यवस्था न हो, वहाँ ऐसे कमरे की अलमारी में या कोने में उपासना चौकी स्थापित करनी चाहिए, जिनमें बहुत सामान न भरा हुआ हो और जहाँ अधिक आवागमन या कोलाहल न होता हो।

उपासनागृहों में स्वाध्याय की व्यवस्था अनिवार्य है। गायत्री सद्बुद्धि की देवी है। सद्बुद्धि का प्रधान मार्ग स्वाध्याय है। जप, ध्यान, पूजा, वंदन के अतिरिक्त हर धर्मप्रेमी को नियमित रूप से स्वाध्याय भी करना चाहिए। बुद्धि की दैवी रोली, अक्षत, धूप, दीप से प्रसन्न नहीं हो सकती, उसे प्रसन्न करने के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक उपासनागृह के साथ सत्साहित्य की एक अलमारी अवश्य रहनी चाहिए। स्वाध्याय के लिए विचारोत्तेजक एवं जीवन की, समाज की गुत्थियों पर प्रकाश डालने वाला साहित्य होना चाहिए। बुद्धि-विकास के लिए यह व्यवस्था आवश्यक है। अमुक महापुरुष, अवतार या देवता के चरित्रों को रोज-रोज पढ़ते रहना ही आजकल स्वाध्याय माना जाता है, पर वस्तुतः सच्चा स्वाध्याय वही माना जाएगा जो हमारी व्यक्तिगत एवं सामूहिक गुत्थियों के सुलझाने में सहायक हो सके। इस कसौटी पर खरी उतरने वाली चुनी हुई पुस्तकें ही इन ज्ञानमंदिरों में रहें, जिनसे बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सभी उन्नति एवं कठिनाई निवारण में व्यावहारिक सफलता प्राप्त कर सकें।

—अखण्ड ज्योति अप्रैल 1958, पृष्ठ-35, 36

मन की शुद्धि की रामबाण दवा—स्वाध्याय

कुविचारों और दुर्भावनाओं से मन गंदा, मलिन और पतित होता है और अपनी सभी विशेषताओं और श्रेष्ठताओं को खो देता है। इस स्थिति से सतर्क रहने और बचने की आवश्यकता को अनुभव करना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है। मन को सही दिशा देते रहने के लिए स्वाध्याय की वैसी ही आवश्यकता है, जैसे शरीर को भोजन देने की। आत्मनिर्माण करने वाली जीवन की समस्याओं को सही ढंग से सुलझाने वाली उत्कृष्ट विचारधारा की पुस्तकें पूरे ध्यान, मनन और चिंतन के साथ पढ़ते रहना ही स्वाध्याय है। यदि सुलझे हुए विचारों के जीवनविद्या के ज्ञाता, कोई संभ्रांत सज्जन उपलब्ध हो सकते हों, तो उनका सत्संग भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यों धर्म और अध्यात्म के नाम पर आलस, कर्त्तव्य-त्याग, निराशा, भाग्यवाद, परावलंबन आदि भ्रांतियों

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को बढ़ाने वाले प्रवचनकर्त्ता गली-कूँचों में मक्खी-मच्छरों की तरह सत्संग की दुकानें लगाए बैठे हैं, उनमें जाने की अपेक्षा न जाना ही अधिक उत्तम है। इसी प्रकार स्वाध्याय के नाम पर जीवन-निर्माण की ज्वलंत समस्याओं को सुलझाने में कोई सहायता न देने वाली, किन्हीं देवी-देवताओं के गुणानुवाद गाने वाली पुस्तकों का पाठ करते रहने से कोई वास्तविक प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

कुविचारों और दुर्भावनाओं के समाधान के लिए स्वाध्याय, सत्संग, मनन और चिंतन ये चार ही उपाय हैं। मानव जीवन की महत्ता को हम समझें, इस स्वर्ण अवसर के सदुपयोग की बात सोचें, अपनी गुत्थियों में से अधिकांश की जिम्मेदारी अपनी समझें और उन्हें सुलझाने के लिए अपने गुण-कर्म-स्वभाव में आवश्यक हेर-फेर करने के लिए सदा कटिबद्ध रहें। इस प्रकार की विचारशैली आत्मनिर्माण की प्रेरणा देने वाले सत्साहित्य से, प्रबुद्ध मस्तिष्क के सत्पुरुषों से एवं आत्मनिरीक्षण तथा आत्मचिंतन करने से किसी भी व्यक्ति को सहज ही उपलब्ध हो सकती है। दृष्टिकोण बदलते ही परिस्थितियाँ भी निश्चित रूप से बदल सकती हैं।

लोहा, लोहे से कटता है। गरम लोहे को ठंढे लोहे की छैनी काटती है। चुभे हुए काँटे को निकालने के लिए काँटे का ही प्रयोग करना पड़ता है। विष को विष मारता है। हथियार से हथियार का मुकाबला किया जाता है। कुविचारों के समाधान का एक ही उपाय है, उसके स्थान पर सद्विचारों को भर देना। किसी गिलास में भरी हुई हवा को हटाना हो तो उसमें पानी भर देना चाहिए। पानी का प्रवेश होने से हवा अपने आप निकल जाएगी। बिल्ली पाल लेने से चूहे घर में कहाँ ठहरते हैं? कुविचारों को मार भगाने का एक ही तरीका है कि उनके स्थान पर सद्विचारों की स्थापना की जाए। मन में जब सद्विचार भरे रहेंगे, तो उस भीड़ से भरी धर्मशाला को देखकर अपने आप लौट जाने वाले मुसाफिरों की तरह कुविचार भी कोई दूसरा रास्ता टटोलेंगे। स्वाध्याय और सत्संग में जितना अधिक समय लगाया जाता है, उतनी ही कुविचारों से सुरक्षा बन पड़ती है। जीवन को सब प्रकार दुःख-दारिद्रय से भर देने वाले कुकर्मों को अपनाने से ही मनुष्य का पतन होता है और यह कुकर्म, कुविचारों के प्रतिफल मात्र ही है। शांति और प्रगति के लिए हमें सद्विचारों की शरण में जाना पड़ता है, इसी प्रक्रिया का नाम स्वाध्याय और सत्संग है। रोटी और पानी जिस प्रकार शरीर की सुरक्षा और परिपुष्टि के लिए आवश्यक हैं, उसी प्रकार आत्मिक स्थिरता और प्रगति के लिए सद्विचारों की प्रचुर मात्रा हमें उपलब्ध होनी ही चाहिए। इस आवश्यकता की पूर्ति स्वाध्याय और सत्संग से, मनन और चिंतन से पूरी होती है। युग निर्माण के लिए, आत्मनिर्माण के लिए यह प्रधान साधन है। संकल्प की, मन की शुद्धि के लिए इसे ही रामबाण दवा माना गया है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1962, पृष्ठ-11, 12

विचारों से विचारों की काट

विचारों को विचारों से काटने की कला जिसने सीख ली, समझना चाहिए कि मानसिक अस्वस्थता पर उसने विजय प्राप्त कर ली। ईर्ष्या, द्वेष, शंका, संदेह, भय, आवेश, क्रोध,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कामुकता, लालच आदि दुष्प्रवृत्तियाँ समय-समय पर विभिन्न परिस्थितियों की घटनाओं के माध्यम से मन में उठती रहती हैं। इनके विरोध में उस विचारधारा को मन में सँजोए रहना चाहिए, जो इन कुविचारों की काट कर सके। विचारों से विचार काटने की कला जिसने सीख ली; समझना चाहिए कि उसने मानसिक उलझनों को सुलझाने का रहस्य सीख लिया। हर रोज प्रात:काल आत्मचिंतन के समय यह देखना चाहिए कि अपने मन:क्षेत्र में आजकल किन अनुपयुक्त विचारों का घेरा है। उन विचारों को काटने के लिए विवेकशीलता एवं दूरदर्शिता के आधार पर ऐसा प्रतिरोधी विचार-प्रवाह विनिर्मित करना चाहिए जो उन कुविचारों को काटकर निरस्त कर सके।

हर रात को सोते समय फिर प्रात:काल की तरह आत्मचिंतन करना चाहिए। देखना चाहिए कि सबेरे जो योजना बनाई गई थी, वह कार्यान्वित हुई या नहीं? त्रुटि हुई तो कितनी और क्यों? उसमें अपना कितना हाथ रहा और परिस्थितियों का कितना? जो कुछ अनुचित बन पड़ा हो, उसके लिए सताए हुए व्यक्ति की तरह आत्मा से तथा परमात्मा से हार्दिक क्षमा याचना करनी चाहिए और अगले दिन अधिक सतर्कतापूर्वक उस तरह के दोषों को न होने देने का संकल्प दुहराना चाहिए। तदुपरांत भगवान का स्मरण करते हुए शांतिपूर्वक निद्रा देवी की गोद में चले जाना चाहिए।

इस प्रकार आत्मनिरीक्षण, आत्मशोधन, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण एवं आत्मविकास का आयोजन उपरोक्त प्रात:-सायं की आत्मचिंतन साधना के आधार पर करते रहना चाहिए। शरीर के लिए कितनी शक्ति खरच की और आत्मा के लिए कितना प्रयत्न किया? यह प्रश्न बार-बार अपने से पूछना चाहिए और ऐसी गतिविधि निर्धारित करनी चाहिए जिससे अंतरात्मा को संतोषजनक उत्तर एवं आधार मिल सके।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1967, पृष्ठ-14, 15

हमारा शरीर भगवान का मंदिर

हमारा शरीर तभी सार्थक हो सकता है जबकि हम इसे ईश्वर का मंदिर मानेंगे एवं उसी की आराधना के लिए इसे अर्पित कर देंगे। यह रक्त, मांस और हड्डियों के अलावा और कुछ भी नहीं है और इससे जो मलमूत्र निकलता है, सिवाय विष के और कुछ नहीं है। जो गंदगी हमारे शरीर से निकलती है, उसे छूना तो दूर रहा, हम उसे ध्यान में भी नहीं लाते। इस शरीर का पालन करने के लिए हम झूठ बोलते हैं, विश्वासघात करते हैं एवं इससे भी अधिक बुरे कर्म करते हैं। यह कैसी लज्जा की बात है कि हम इन कुकर्मों को करके इस नश्वर शरीर की रक्षा करते हैं।

हम लोगों के शरीर में अंतरात्मा (पुण्य) और कुवृत्ति (पाप) में सदैव संघर्ष हुआ करता है। इधर अंतरात्मा शरीर पर अपना अधिकार जमाना चाहती है उधर पाप रूपी शैतान उसे अपने वश में करना चाहता है। यदि अंतरात्मा की विजय हुई, तब तो यह शरीर दिव्य होकर रत्नों की एक खान बन जाता है और यदि शैतान की विजय हुई तो यह महापापों का घर बन जाता है। ऐसा शरीर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साक्षात नरक के समान है, उसमें सड़ने-गलने वाले पदार्थ भर जाते हैं, जिससे दुर्गंध पैदा होती है। उसके हाथ-पाँव बुरे कर्मों को करते हैं; जिह्वा ऐसे पदार्थों का स्वाद चाहती है जिसे नहीं खाना चाहिए और ऐसी वाणी बोलती है जिसे नहीं बोलना चाहिए। उसकी आँखें न देखने योग्य वस्तुओं को देखना चाहती है, कान न सुनने योग्य शब्दों को सुनना चाहते हैं। ऐसा शरीर साक्षात नरक ही है। ऐसे शरीर का रहना और न रहना, स्वस्थ या रोगी रहना एक समान है।

स्वस्थ हम तभी हो सकते हैं जबकि अपनी जिह्वा को वश में रखें। स्वादेंद्रिय पर काबू रखने से अन्य इंद्रियाँ अपने आप वश में हो जाती हैं। जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया उसने वास्तव में सारे संसार को वश में कर लिया और ईश्वर का सच्चा अंश हो गया। रामायण पढ़ने से राम, गीता पढ़ने से कृष्ण, कुरान से खुदा और बाइबिल से ईसा मसीह प्राप्त नहीं हो सकते; वे तो तभी मिलेंगे जब हम अपने आचरणों को पवित्र बनाएँ।

सच्चरित्रता, सत्कर्मों पर अवलंबित है और सत्कर्म सत्य विश्वासों पर निर्भर है। सत्यता ही सबका मूल है। यही सफलता की कुँजी और सुंदर स्वास्थ्य प्राप्त करने की आधारशिला है।

—अखण्ड ज्योति मई 1944, पृष्ठ-94

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वाध्याय के दो अर्थ

स्वाध्याय क्या है ? इस शब्द के दो अर्थ किए जाते हैं—

(1) **स्वयम् अध्ययनम्** अर्थात अपने आप, बिना किसी दूसरे की सहायता के अध्ययन करना। विचार, चिंतन, मनन द्वारा सामने उपस्थित सर्वतोमुखी समस्याओं को समझना और उनके सुलझाने का मार्ग तलाश करना।

(2) **स्वस्यात्मनो अध्ययनम्** अर्थात अपने आप को अध्ययन करना। आत्मचिंतन द्वारा अपने अंदर काम करने वाली दैवी और आसुरी वृत्तियों को देखते रहना तथा आसुरी वृत्तियों को घटाने एवं दैवी वृत्तियों को बढ़ाते रहने का पथ प्रशस्त करना।

उपरोक्त दोनों ही प्रकार के स्वाध्याय आवश्यक हैं। दोनों के मिलने में ही एक पूर्ण स्वाध्याय बनता है। अपनी आध्यात्मिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी समस्याओं पर एकांत में अपने आप विचार तथा चिंतन करना और वास्तविकता का पता लगाकर उपयोगी मार्ग अवलंबन करना, यही स्वाध्याय का तात्पर्य है।

केवल मात्र किसी धर्म पुस्तक के थोड़ी देर पन्ने पलट लेना स्वाध्याय नहीं है। ऐसे स्वाध्याय में कोई ऐसा ऊँचा लाभ नहीं मिल सकता जिसका संकेत उपरोक्त शास्त्रवचनों में किया गया है। स्वाध्याय का भावार्थ अपनी विचारकता को सजीव करना, हर एक बाह्य और आंतरिक समस्या को सूक्ष्म दृष्टि से देखना और उसे निष्पक्ष और अपनी स्वतंत्र प्रतिभा द्वारा सुलझाना है। दूसरों के पथ प्रदर्शन से मनुष्य सत्य तक नहीं पहुँच सकता, क्योंकि परस्पर विरोधी विचार वाले शास्त्र और महापुरुष विभिन्न बातों को कहते हैं, एक दूसरे के मत का खंडन करते हैं। ऐसी दशा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में यदि मनुष्य के अंदर विचारकता न हो, उचित-अनुचित को निर्णय करने योग्य बुद्धिबल न हो तो केवल अंधश्रद्धा के कारण मनुष्य अंधकार में गिर सकता है। उचित पथ प्रदर्शन करने की क्षमता अंत:करण में बैठे हुए सच्चे गुरु में ही है। इस गुरु की वाणी स्पष्ट सुन सकें, उसके संकेतों को ठीक तरह समझ सकें, इसके लिए अपनी विचारकता को जाग्रत करने की आवश्यकता है।

पुस्तकों की सहायता से या व्यक्तियों की सहायता से यह विचारकता जाग्रत की जा सकती है, वह अध्ययन है। स्वाध्याय वह है कि स्वयं किसी समस्या पर गंभीरतापूर्वक विचार करके निष्पक्ष निर्णय करके अपने विश्वास का मजबूती से निर्माण करें। ऐसा स्वाध्याय बुद्धि का भोजन है। आत्मोन्नति का मार्ग है। अवश्य ही प्रतिदिन मनुष्य को सच्चा स्वाध्याय करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1945, पृष्ठ-236-237

सद्ग्रंथों का स्वाध्याय—एक योग साधना

मानव जीवन में सुख की वृद्धि करने के उपायों में स्वाध्याय एक प्रमुख उपाय है। स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है। मन में महानता, आचरण में पवित्रता तथा आत्मा में प्रकाश आता है।

स्वाध्याय के अभाव में पड़ी हुई विद्या भी विस्मृत हो जाती है, तब नूतन ज्ञान प्राप्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता! कहीं भी और कभी भी देखा जा सकता है कि कक्षा पास कर लेने और उपाधि पा लेने के बाद जो विद्यार्थी, वकील अथवा डाक्टर आदि अपना स्वाध्याय बंद कर देते हैं, वे आगे चलकर सफल नहीं हो पाते। संसार की विचारधारा को मोड़ देने वाले लेखक अथवा पत्रकार प्रतिदिन घंटों स्वाध्याय में लगाते हैं। जो स्वाध्यायशील रहता है उसका ज्ञान आधुनिक और विद्या जाग्रत रहती है। प्रतिदिन कुछ-न-कुछ पढ़ते रहने वाले अपने ज्ञानकोश में बूँद-बूँद इकट्ठा करके उसे अक्षय बना लिया करते हैं।

जीवन को सफल, उच्च एवं पवित्र बनाने के लिए स्वाध्याय की बड़ी आवश्यकता है। किसी भी ऐसे व्यक्ति का जीवन क्यों न देख लिया जाए, जिसने उच्चता के सोपानों पर चरण रखा है, उसके जीवन में स्वाध्याय को विशेष स्थान मिला होगा। स्वाध्याय के अभाव में कोई भी व्यक्ति महान अथवा ज्ञानवान नहीं बन सकता। प्रतिदिन नियमपूर्वक सद्ग्रंथों का अध्ययन करते रहने से बुद्धि तीव्र होती है, विवेक बढ़ता है और अंत:करण की शुद्धि होती है। इसका स्वस्थ एवं व्यावहारिक कारण है—वह यह कि सद्ग्रंथों के अध्ययन करते समय मन उनमें रमा रहता है और ग्रंथ के सद्वाक्य उस पर संस्कार डालते रहते हैं।

स्वाध्याय द्वारा अंत:करण के निर्मल हो जाने पर मनुष्य के बाह्य अंतर पट खुल जाते हैं, जिससे वह आत्मा द्वारा परमात्मा को पहचानने के लिए जिज्ञासु हो उठता है। मनुष्य की यह जिज्ञासा भी स्वाध्याय से निरंतर बढ़ती एवं बलवती होती रहती है और एक दिन ऐसा आता है कि वह उसका साक्षात्कार करने का प्रयास करता है और कर भी लेता है। परमात्मा के इस पावन साक्षात्कार का उपाय तथा मार्ग का भी स्वाध्याय से ही पता चलता है। इस प्रकार नित्यप्रति का स्वाध्याय मनुष्य को उसके चरम लक्ष्य तक पहुँचा देने में बड़ी सहायता करता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाध्यायशील व्यक्ति का जीवन अपेक्षाकृत अधिक पवित्र हो जाता है। ग्रंथों में सन्निहित सद्वाणी तो अपना प्रभाव एवं संस्कार डालती ही है, साथ ही अध्ययन में रुचिवान होने से व्यक्ति अपना शेष समय पढ़ने में ही लगाता है। जब मनुष्य निरर्थकों की संगति में न जाकर जीवनोपयोगी सत्साहित्य के अध्ययन में ही संलग्न रहेगा तो उसका आचरण आप ही शुद्ध हो जाएगा।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1966, पृष्ठ-22

मन की सफाई के लिए स्वाध्याय आवश्यक

नित्य स्वाध्याय की नियमित व्यवस्था रखनी चाहिए। स्वाध्याय का विषय केवल एक होना चाहिए—आत्मनिरीक्षण एवं आत्मपरिशोधन का मार्गदर्शन। जो पुस्तकें इस प्रयोजन को पूरा करती हैं; आंतरिक समस्याओं के समाधान में योगदान करती हैं, केवल उन्हें ही इस प्रयोजन के लिए चुनना चाहिए। कथा-पुराणों का उपयोग इस प्रसंग में निरर्थक है। पुस्तक पढ़ने की चिह्नपूजा से कुछ काम नहीं चलेगा। आज की गुत्थियों को आज की परिस्थितियों में आज के ढंग से किस तरह सुलझाया जा सकता है, जो उसका दूरदर्शितापूर्ण हल प्रस्तुत करें, वही उपयुक्त स्वाध्याय साहित्य है। ऐसी पुस्तकों को हमें छाँटना और चुनना पड़ेगा। उन्हें नित्य-नियमित रूप से गंभीरता और एकाग्रतापूर्वक पढ़ने के लिए समय नियत करना पड़ेगा। अंत:करण की भूख बुझाने के लिए यह स्वाध्याय साधना नितांत आवश्यक है।

स्वाध्याय के बाद आता है मनन-चिंतन। जो पढ़ा है उस पर बार-बार कई दृष्टिकोणों से विचार करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि उस प्रकाश को जीवन में धारण करने के लिए क्या किया जाना चाहिए? यदि वे सत्प्रवृत्तियाँ अपने में नहीं हैं या कम हैं तो उन्हें बढ़ाने का क्या उपाय है? आदर्शों को अपने व्यक्तित्व में घुलाने के प्रसंग पर ऊहापोह करना, मनन और चिंतन का मुख्य उद्देश्य है। कमरे में नित्य झाड़ू लगाते हैं, स्नान रोज करते हैं, दाँत रोज साफ किए जाते हैं, बरतन रोज साफ करने पड़ते हैं। मन को मलिनता की आदत से विरत करने के लिए उसे स्वाध्याय और मनन-चिंतन के बंधन में नित्य बाँधना चाहिए। रास्ते पर चलने के लिए वह तभी सहमत हो सकेगा।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1973, पृष्ठ-44

ज्ञानयज्ञ

ज्ञानयज्ञ में आहुतियाँ समर्पित करें

पीड़ितों को कुछ तात्कालिक सहायता की भी आवश्यकता होती है, पर उसका अंतत: निवारण ज्ञान के द्वारा ही होगा। आप किसी की उतनी सहायता रुपया-पैसा देकर नहीं कर सकते,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितनी कि उसे इस विषम स्थिति में से निकलने का पथ-प्रदर्शन करके कर सकते हैं। मनुष्य के पास किसी वस्तु की कमी नहीं है। परमात्मा ने उसे अनंत शक्तियों का खजाना सौंपकर इस लोक में भेजा है। उसके अंदर ऐसी-ऐसी योग्यताएँ छिपी पड़ी हैं कि जिनके एक-एक कण का उपयोग करके वह सम्राटों का सम्राट बन सकता है। 'मैं उसे अमुक वस्तु दूँगा' ऐसा सोचते समय आप अपनी आत्मा का तिरस्कार करते हैं। राजा को एक पैसा देकर, आत्मा को भौतिक वस्तुओं के टुकड़े देकर आप उसे क्या देते हैं? उन्हें इन टुकड़ों की जरूरत नहीं है। जरूरत केवल एक है और वह यह कि मानव जाति के अंतस्तल में सोई हुई महान शक्ति को जगाया जाए।

समुद्र लाँघते समय हनुमान जी अपनी अशक्ति अनुभव करते हुए बड़े दीन हो रहे थे। जामवंत ने उन्हें प्रोत्साहित किया कि—हे पवन पुत्र! आप ऐसे दीन बचन क्यों बोलते हैं? आपके अंदर तो अकूत बल भरा हुआ है। हनुमान जी का सोया हुआ बल जाग पड़ा और वे एक ही छलांग में समुद्र पार कर गए।

आज कोटि-कोटि हनुमान अपनी अशक्ति प्रकट करते हुए दीन वचन बोलते हैं और असफलता के तट पर बैठे हाथ मलते हैं। इस समय ऐसे जामवंतों की जरूरत है, जो इन्हें इनके आत्मबल का उद्‌बोधन कराके आपत्तियों का समुद्र लाँघने के लिए तत्पर कर दें। मैं जामवंत का कार्य करूँगा; संसार में ज्ञान प्रचार का महत्तम अश्वमेध यज्ञ करूँगा, जिससे स्वर्ग के देवता भी प्रसन्न हो जाएँ। इसी यज्ञ से वह अमृत वर्षा हो सकती है, जो जलते तवे के समान झुलसते हुए भूलोक में सुख-शांति की हरियाली पैदा कर दे।

मैं प्रेमी हूँ। विश्व-प्रेम मेरे रोम-रोम से छलका पड़ रहा है। विश्व के पीड़ित बंधुओं को क्लेश मुक्त करने की मेरी आंतरिक इच्छा है। यह कार्य ज्ञान-प्रसार द्वारा होना ही संभव है। मैं जीवन का प्रत्येक क्षण ज्ञानयज्ञ की आहुति में समर्पित करूँगा, निरंतर सद्‌ज्ञान फैलाता रहूँगा और इस कार्य में अपने जैसे विचार रखने वाले अन्य सुहृदयों को आमंत्रित करूँगा।

—अखण्ड ज्योति मई 1942, पृष्ठ-27

ईश्वर का संदेश विश्व के कोने-कोने में पहुँचाएँ

आप अपनी आत्मा के गौरव को स्मरण कीजिए, अपनी महानता का अनुभव कीजिए और केवल उन्हीं कार्यों में हाथ डालिए जो आपके पद के अनुकूल हों। सम्राटों के सम्राट परमात्मा का उत्तराधिकारी राजकुमार मनुष्य वस्तुतः महान है। महानता का गौरव इसी में है कि अपनी मर्यादा पर स्थिर रहा जाए। पपीहा प्यासा मर जाता है पर स्वाति बूँद के अभाव में गंदे नाले का पानी नहीं पीता; हंस अपनी मर्यादा की रक्षा करता है; मछली अपनी मर्यादा की रक्षा करती है; हंस मोती न मिलने पर भूखों मर जाता है और मछली जल के अभाव में जीवित नहीं रहती। आप भी अपने गौरव मर्यादा से नीचे मत गिरिए। धर्ममय उत्तमोत्तम कार्यों को करने के लिए आपका अवतार इस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पृथ्वी पर हुआ है। परमात्मा का राजकुमार आत्मा अपने पिता की राजसत्ता को सुव्यवस्थित करने आया है। सरकारी हाकिम देहातों में दौरा करने के लिए भेजे जाते हैं, ताकि वे सम्राट का शासन सुव्यवस्थित रखने में सहायता करें। आपको इसलिए यहाँ भेजा गया है कि ईश्वर की इच्छा और आज्ञाओं का संदेश विश्व के कोने-कोने में गुंजित करें और अधर्म को हटाकर धर्म की स्थापना करें। आप अपने पद और जिम्मेदारी का स्मरण कीजिए और इसी की मर्यादा की रक्षा के निमित्त कार्य करना आरंभ कर दीजिए, आपके लिए नेकी और भलाई का यह बहुत ही उत्तम मार्ग हो सकता है।

अच्छी तरह इस बात को हृदयंगम कर लीजिए, जीवन का सच्चा लाभ इसी में है कि आप आत्मकल्याण के, नेकी और भलाई के मार्ग पर चलें। अपने आचरणों को सचाई और धर्मनिष्ठा से परिपूर्ण रखें एवं अंत:करण के किवाड़ों को सद्भाव एवं सद्विचारों के लिए खोल दें। कल्याणकारी पिता के हे कल्याणकारी पुत्र! उठो, परमात्मा का अवलंबन ग्रहण करो और नेकी के मार्ग पर अग्रसर हो जाओ। आपकी भलाई इसी में हैं।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1944, पृष्ठ-171

हमारे आंदोलन की पृष्ठभूमि—ज्ञानयज्ञ

युग निर्माण के लिए हमें ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करना है। जिन दुर्बलताओं और बुराइयों ने जनमानस पर आधिपत्य जमा रखा है, उनकी बुराइयों और हानियों को यदि मनुष्य भली प्रकार समझ ले तो उन्हें छोड़ने के लिए अवश्य उत्सुक होगा। यदि प्रगति और शांति का सच्चा मार्ग उसे विश्वासपूर्वक उपलब्ध हो जाए तो अनैतिक, अपराधपूर्ण खतरे से भरे हुए दुखदायी रास्ते पर वह क्यों चलेगा? संसार में जितनी भी क्रांतियाँ हुई हैं, उनमें सर्वप्रथम विचार-विस्तार ही हुआ है। ज्ञान ही क्रिया का पूर्व रूप है। कोई कार्य तभी दृश्य रूप में आता है, जब पहले वैसे विचार मन में गहराई तक अपनी जड़ जमा लेते हैं।

हमें अपना व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन श्रेष्ठ सुव्यवस्थित एवं प्रगतिशील बनाना है, तो उसके लिए आवश्यक ज्ञान का व्यापक प्रसार करना होगा। सद्ज्ञान ही आत्मा की भूख है, उस भूख को पूर्ण करने के लिए हमें अपनी परमार्थ-वृत्ति को प्रबुद्ध करना पड़ेगा। ज्ञानदान सबसे बड़ा है। इसे ब्रह्म कर्म कहा गया है। आपत्ति से उबारने वाले साधनों में ज्ञान ही प्रधान है। व्यक्ति में सुधार और परिवर्तन इसी माध्यम से संभव हो सकता है। अखण्ड ज्योति परिवार के साथ अब हम युग निर्माण के लिए ज्ञानयज्ञ आरंभ करते हैं। विभिन्न प्रयोजनों की पूर्ति के लिए विभिन्न यज्ञों के आयोजन होते रहे हैं। गायत्री का अग्निहोत्र यज्ञ प्रथम अध्याय के रूप में अब अपने नियत लक्ष्य तक आ पहुँचा। यज्ञ की महत्ता से अपरिचित जनता ने उसका महत्त्व समझा भी और उसे अपनाया भी। अब ऊँची कक्षा में पंचकोश साधना के साथ-साथ ज्ञानयज्ञ का महा अभियान आरंभ किया जा रहा है। युग निर्माण की पृष्ठभूमि यही है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1962, पृष्ठ-39

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञानयज्ञ ही हमारा अभियान

युग का अवसान सद्विचारों और सत्प्रवृत्तियों के घट जाने से होता है, उसका निर्माण कार्य इन दोनों की अभिवृद्धि से ही संभव है। बाह्य जगत में कोई चीज तभी आती है, जब वह मनोभूमि में गहराई तक जड़ जमा लेती है। हमारी मनोभूमि में दूषित प्रकार के विचार और विश्वास गहराई तक जम गए हैं। यदि इनका उन्मूलन हो सके और इनके स्थान पर सद्विचारों एवं उच्च आदर्शों की प्रतिष्ठापना की जा सके तो युग परिवर्तन का कार्य कुछ भी कठिन न रहेगा। भावना और विचारधाराएँ जब आदर्शवाद से परिपूर्ण होंगी तो फिर अपना प्रत्येक कार्य भी उत्कृष्ट प्रकार का होगा और जहाँ उत्तम कार्य-कलाप पनपता है; श्रेष्ठ गतिविधियाँ बढ़ती हैं, वहाँ स्वर्ग का राज्य पृथ्वी पर उतर आता है। सुख-शांति के सभी साधन वहाँ स्वयमेव प्रस्तुत हो जाते हैं।

हमें यही करना है। ज्ञानयज्ञ ही अब हमारा अभियान है। लोकशिक्षण के लिए हम सब कटिबद्ध होंगे। 'अखण्ड ज्योति' का बड़ा परिवार है। हममें से प्रत्येक दीपक जलाने को तत्पर होगा तो इस अँधेरी रात में दीपावली का पुण्य पर्व झिलमिलाने लगेगा। जिन कुविचारों ने हमारे शरीरों को चौपट कर रखा है, हमारे मनों को मलिन बना रखा है, हमारे समाज को विसंगठित एवं पतनोन्मुख बना रखा है, उन्हें बुहारकर बाहर फेंक देने के लिए हमें स्वच्छता सैनिकों की तरह अपनी झाड़ू सँभालनी पड़ेगी। अपनी गंदगी हमें आप बटोरनी पड़ेगी, अपने दांत हमें आप माँजने पड़ेंगे, अपना कमरा हमें आप झाड़ना पड़ेगा। किसी दूसरे का आसरा क्यों तकें? अँगरेजों को हमारी फूट ने बुलाया था, हमारे संगठन ने उन्हें भगा दिया। दुर्भावनाएँ और दुष्प्रवृत्तियाँ हमारी लापरवाही से पनपती रही हैं, जब उनके उन्मूलन का व्रत धारण कर लिया जाएगा और इसके लिए एक प्राण, एक मन होकर जुट जाया जाएगा तो वे कब तक ठहरेंगी? कहाँ तक ठहरेंगी?

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1962, पृष्ठ-40, 41

सर्वोत्तम दान—ब्रह्मदान

सत्प्रवृत्तियों को मनुष्य के हृदय में उतार देने से बढ़कर और कोई महत्त्वपूर्ण कार्य इस संसार में नहीं हो सकता। वस्तुओं की सहायता भी आवश्यकता के समय उपयोगी सिद्ध हो सकती है, पर उसका स्थायी महत्त्व नहीं है। हर आदमी स्थायी रूप से अपनी समस्या अपने पुरुषार्थ और विवेक से ही हल कर सकता है। दूसरों की सहायता पर जीवित रहना न तो किसी मनुष्य के गौरव के अनुकूल है और न उससे स्थायी हल ही निकलता है। जितनी भी कठिनाइयाँ व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में दिखाई पड़ती हैं, उनका एकमात्र कारण कुबुद्धि है। यदि मनुष्य अपनी आदतों को सुधार ले, स्वभाव को ठीक बना ले और विचारों तथा कार्यों का ठीक तारतम्य बिठा ले, तो बाहर से उत्पन्न होती दीखने वाली सभी कठिनाइयाँ बात की बात में हल हो सकती हैं। व्यक्ति और समाज का कल्याण इसी में है कि सत्प्रवृत्तियों को अधिकाधिक पनपने

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का अवसर मिले। इसी प्रयास में प्राचीन काल में कुछ लोग अपने जीवन उत्सर्ग करते थे। उन्हें बड़ा माना जाता था और ब्राह्मण के सम्मानसूचक पद पर प्रतिष्ठित किया जाता था। चूँकि सत्प्रवृत्तियों को पनपाना संसार का सबसे महत्त्वपूर्ण धर्म-कार्य है, इसलिए उसमें लगे हुए व्यक्तियों को सम्मान का शीर्ष स्थान भी मिलना ही चाहिए। दानों में सर्वोत्तम दान ब्रह्मदान कहा जाता है। ब्रह्मदान का अर्थ है— ज्ञानदान। ज्ञान का अर्थ है वह भावना और निष्ठा जो मनुष्य के नैतिक स्तर को सुस्थिर बनाए रहती है। युग निर्माण संकल्प में जिन सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार की प्रेरणा दी गई है, वह यही ब्रह्मदान है। इस अमृत जल से सींचा जाने पर मुरझाया हुआ युग मानस पुनः हरा-भरा, पुष्प-पल्लवों से परिपूर्ण बन सकता है। इसी महान कार्य को वह परमार्थ कहा जा सकता है, जिसको पूरा करने के लिए परमात्मा ने मनुष्य को विशेष क्षमता, सत्ता और महत्ता प्रदान की है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1962, पृष्ठ-27

ज्ञानदान ही ब्रह्मदान

राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए अनेक माध्यम, साधनों और उपकरणों की आवश्यकता है, उसके प्रकार और कार्यक्रम भी कितने ही हैं, पर वह सब कुछ जिस आधार पर निर्भर है वह है—भावना। भावना के अभाव में प्रगति की सारी प्रक्रियाएँ निर्जीव और प्रदर्शन मात्र बनी रहती हैं। हमें जनमानस में कर्त्तव्यपालन की, नीति, धर्म और सदाचार की, आस्तिकता और परमार्थ की प्रचंड भावनाएँ उत्पन्न करनी चाहिए। ज्ञान से कर्म और कर्म से समृद्धि की उपलब्धि होती है। जैसे विचार मन में उठेंगे, शरीर से वैसे ही कर्म बन पड़ेंगे और जैसे कर्म होंगे, वैसा ही प्रतिफल सम्मुख उपस्थित होगा। इसलिए हमें ज्ञान का, भावना का महत्त्व समझना चाहिए और उसके विकास का समुचित प्रयत्न करना चाहिए।

ज्ञानदान को सबसे बड़ा दान माना गया है, उसे ही ब्रह्मदान कहते हैं। ब्राह्मण को इसलिए 'भूसुर' पृथ्वी का देवता मानते हैं कि उनके द्वारा जन-साधारण को सद्ज्ञान की प्राप्ति होती है। विचारों की शक्ति प्रचंड है। यदि उत्तम विचारों को मनःक्षेत्र में समुचित स्थान मिल जाए तो साधारण स्थिति का मनुष्य, महापुरुष, ऋषि, देवता और अवतार बन सकता है। संसार में जब कभी भले या बुरे परिवर्तन हुए हैं, उनके मूल में विचार परिवर्तन की प्रक्रिया का ही प्रधान श्रेय रहा है। कार्लमार्क्स की साम्यवादी विचारधारा ने आज लगभग आधी दुनिया को उस विचारधारा से प्रभावित कर दिया है। 'टाम काका की कुटिया' पुस्तक की लेखिका ने अमेरिका में दास-प्रथा के प्रश्न को लेकर गृहयुद्ध करा दिया और अंत में उस घृणित प्रथा का अंत ही होकर रहा। बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, गांधी, दयानंद की प्रखर विचारधाराओं का जब विस्तार हुआ तो उससे कितने लोग प्रभावित हुए? विचारधाराएँ तूफान की तरह होती हैं, मनुष्य उनके प्रवाह में सूखे पत्तों की तरह इधर-उधर उड़ते रहते हैं, हमें मनुष्य को मनुष्य बनाने की विचारधारा को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनमानस में गहराई तक प्रवेश करने का कार्य अपने हाथ में लेकर युग परिवर्तन की महान प्रक्रिया को सफल बनाना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1963, पृष्ठ-43

स्वाध्याय ही सर्वोत्तम सत्संग

जीवनोत्कर्ष के लिए जिस सद्ज्ञान की आवश्यकता है, वह सत्संग से प्राप्त होता है और उपयुक्त सत्संग के लिए आज सबसे सरल और सबसे प्रभावशाली उपाय यह है कि स्वाध्याय के माध्यम से सत्पुरुषों का सान्निध्य निरंतर प्राप्त करते रहा जाए। यह कार्य श्रेष्ठ साहित्य द्वारा ही संभव हो सकता है। सद्ग्रंथों में महापुरुषों के जीवन चरित्र खुले पृष्ठों की तरह सर्वसाधारण के लिए उपलब्ध हैं। बहुत पूछताछ करने पर जो बातें जानी जा सकती हैं, वे उन जीवन-चरित्रों में सहज ही लिखी मिल जाती हैं। फिर जिन महापुरुषों के प्रवचन जिस विषय पर सुनने हों, जिस शंका का समाधान उनसे प्राप्त करना हो, उसके लिए उनका साहित्य पढ़ लेना चाहिए। इस रीति से हर घड़ी हर विषय पर हर महापुरुष का सत्संग लाभ घर बैठे हो सकता है।

व्यक्तिगत सत्संग में एक खतरा यह रहता है कि उसकी अनुपयुक्त विचारधारा एवं कार्यपद्धति भी अपने को प्रभावित करके दिग्भ्रांत कर सकती है। सत्साहित्य के माध्यम में व्यक्तित्व का दबाव न रहने से उस पर अधिक विचार कर सकने और जो अपने उपयुक्त हो उसे ही स्वीकार करने की सुविधा रहती है। अपने आदर्श एवं लक्ष्य के अनुरूप ऐसे अनेक महापुरुष सत्साहित्य के माध्यम से ढूँढ़े जा सकते हैं, जिनने उसी मार्ग पर चलकर सफलता प्राप्त की हो। समीपवर्ती क्षेत्र में तो जो भी विकसित व्यक्तित्व मिलेगा, उसकी समीपता ही संभव होगी और यदि उसका चरित्र एवं व्यक्तित्व उत्तम होते हुए भी, मार्ग अनुपयुक्त है तो उससे अवांछनीय गतिविधियों की प्रेरणा ही अपने को मिल सकती है। इस दृष्टि से व्यक्तिगत सत्संग की अपेक्षा, कई बार तो सत्साहित्य के द्वारा प्राप्त किया गया सत्संग अधिक निर्दोष एवं अधिक उपयुक्त सिद्ध होता है।

कई साधु बाबा त्याग, वैराग्य, तितिक्षा, उच्च शिक्षा आदि की दृष्टि से प्रशंसनीय होते हैं, पर उनमें आलस्य, प्रमाद, कटुवचन, नशेबाजी, भाग्यवाद, कर्त्तव्य-त्याग, अंधविश्वास आदि अनेक दोष भी होते हैं। ऐसे लोग अपने गुणों से लोगों को आकर्षित करके उन्हें अपने दोषों का भी शिकार बना लेते हैं। व्यक्तिगत संपर्क सत्संग में इस तथ्य का बहुत अधिक ध्यान रखा जाता है कि प्रत्येक सज्जन में कुछ दोष भी रहते हैं, उसके विचारों में कहीं-न-कहीं भ्रांति भी रहती है। इसलिए विवेक को प्रधानता देते हुए जिसके पास जितना उपयोगी हो, उससे उतना ही ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार श्रेष्ठ समझे जाने वाले व्यक्तियों से केवल उतना ही सीखा जाए, जो जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक एवं उपयुक्त हो।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा सत्साहित्य मानव जीवन के विकास का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हो सकता है, जो उसे जिंदगी जीने की कला सिखा सके। गुण-कर्म-स्वभाव का परिष्कार करते हुए सुविकसित एवं सुसंस्कृत बनाने की प्रेरणा को संजीवनी बूटी कह सकते हैं। यही अमरता प्रदान करने वाला अमृत है, उसी को कायाकल्प करने वाला पारस कह सकते हैं और उसी में सच्ची तृप्ति तथा शाश्वत शांति प्राप्त होने के कारण, उसे कल्पवृक्ष भी कहा जा सकता है। जिसकी सत्साहित्य में अभिरुचि उत्पन्न हो गई और जो जीवन-निर्माण के सद्ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने लगा, उसका कल्याण अति निकट है, यही समझना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1964, पृष्ठ-22

पुस्तकें जाग्रत देवता है

जीवन में अन्य सामग्री की तरह हमें उत्तम पुस्तकों का संग्रह भी करना चाहिए। जीवन के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालने वाले, विविध विषयों के उत्तम ग्रंथ खरीदने के लिए, खरच के बजट में सुविधानुसार आवश्यक राशि रखनी चाहिए। कपड़े, भोजन, मकान की तरह ही हमें पुस्तकों के लिए भी आवश्यक खरचे की तरह ध्यान रखना चाहिए। स्मरण रखिए उत्तम पुस्तकों के लिए खरच किया जाने वाला पैसा उसी प्रकार व्यर्थ नहीं जाता, जिस तरह अँधेरे बियावान जंगल में प्रकाश के लिए खरच किए जाने वाला धन।

एक बात और ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह कि पुस्तकें कमरे को सजाने के लिए अथवा प्रदर्शिनी लगाने के लिए न खरीदी जाएँ, वरन उनका नियमित अध्ययन जीवन के अन्य कार्यक्रमों की तरह ही आवश्यक अंग बना लेना चाहिए। उनसे अधिकाधिक लोगों को ज्ञान मिले, इसके लिए अध्ययन की प्रेरणा, सुविधा जुटाते रहना चाहिए। पुस्तकों की उपयोगिता अध्ययन से ही है, अन्यथा वे कीड़ों का भोजन बनने के सिवाय कुछ नहीं रहतीं। नई पुस्तकें खरीदना, उनका अध्ययन करना, उनको अधिकाधिक उपयोग में लाना ही पुस्तकों की सच्ची कद्र करना है।

स्मरण रखिए कि पुस्तकें जाग्रत देवता हैं। उनके अध्ययन, मनन, चिंतन के द्वारा पूजा करने पर तत्काल ही वरदान पाया जा सकता है। हमें नियमित रूप से सद्ग्रंथों का अवलोकन करना चाहिए। उत्तम पुस्तकों का स्वाध्याय, जीवन का आवश्यक कर्त्तव्य बना लेना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति नवंबर 1964, पृष्ठ-26

सर्वोच्च दान, ज्ञानदान

इस युग में ज्ञान की बड़ी आवश्यकता है। स्थूल दान का महत्त्व अब इसलिए कम हो गया है कि उसमें पात्र-कुपात्र का अंदाज नहीं होता, पर ज्ञान की आवश्यकता अच्छे-बुरे हर व्यक्ति के लिए है। उससे किसी का अहित नहीं हो सकता और न ही उस दान का दुरुपयोग किया जा सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास का साधन है। समाज में ज्ञानवान व्यक्ति अधिक सुखी और संतुष्ट समझे जाते हैं। समाज का एक वर्ग इस तरह का हो और दूसरा मूढ़ताग्रस्त हो तो वह समाज दुखी समाज होगा। ज्ञान का उद्देश्य मानवमात्र को एक स्तर पर लाना है। यह कार्य निस्संदेह कुछ कठिन है, पर इसका महत्त्व अत्यधिक है। आज की स्थिति में सर्वोच्च दान 'ज्ञान' को मानें तो वह सर्वथा उपयुक्त ही होगा।

मनुष्यों पर ऋषियों का भी एक ऋण है। ऋषि का अर्थ है वेद। वेद अर्थात ज्ञान। आज तक हमारा जो विकास हुआ है, उसका श्रेय ज्ञान को है, ऋषियों को है। जिस तरह हम यह ज्ञान दूसरों से ग्रहण कर विकसित हुए हैं, उसी तरह अपने ज्ञान का लाभ औरों को भी देना चाहिए। यह हर विचारशील व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह समाज के विकास में अपने ज्ञान का जितना अंशदान कर सकता हो, वह अवश्य करना चाहिए।

ज्ञानदान मनुष्य को सन्मार्ग की ओर ले जाने के लिए किया जाता है, इसलिए यह अन्य दानों की अपेक्षा अधिक सार्थक होता है।

जो प्रत्यक्ष या परोक्ष विचार, वाणी या सत्साहित्य पढ़ाकर दूसरों को ऊँचे उठाने का प्रयत्न करते हैं, वे सच्चे अर्थों में ब्राह्मण हैं, उन्हीं के दान को सर्वश्रेष्ठ दान कहेंगे। आज इसी दान की विश्व को आवश्यकता है।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1966, पृष्ठ-20

ज्ञानदान सर्वश्रेष्ठ उपकार

ज्ञानदान से मनुष्य का सर्वांगीण, अक्षय और स्थायी लाभ होता है। ऋषियों के दिए उस मूलभूत ज्ञान को ही आधार बनाकर, मनुष्यता तब से अब तक विकास करती चली आ रही है। यदि उन पूर्वपुरुषों ने यह उपकार न किया होता और केवल अर्थ की साधना ही सिखाई होती, केवल वही साधन खोजकर दिए होते जिनसे शारीरिक भोगों की ही सुविधा हो सकी होती तो शायद मनुष्य अब तक मानव पशु की अवस्था में ही होता। न तो उसे आत्मा का ज्ञान हो पाता और न ईश्वर का परिचय। शरीर ही उसकी आत्मा होती और शरीर ही परमात्मा, जिसकी तृप्ति करते रहना ही उसकी पूजा होती। वह आज की तरह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को क्रम से प्राप्त कर सकने का मार्ग न पा पाता। आज की सुंदर सभ्यता, आनंदमयी संस्कृति और कल्याणकारी धर्म जिसके कारण हम मनुष्य संसार के सर्वश्रेष्ठ प्राणी बने हैं, उन ऋषि-मुनियों का वह उपकार ही है जिसको उन्होंने ज्ञानदान के रूप में हम पर किया है। ज्ञानदान संसार का सर्वश्रेष्ठ उपकार है।

गुण अथवा चरित्र विकास भी प्रथम श्रेणी के उपकार माने गए हैं। यह भी ज्ञानदान के अंतर्गत ही आते हैं। जो दिया हुआ ज्ञान मनुष्य को गुणी अथवा चरित्रवान नहीं बना सकता, वह या तो ज्ञान नहीं है अथवा उसका देने वाला स्वयं चरित्रवान नहीं, अन्यथा गुण एवं चरित्र तो ज्ञान के अनिवार्य अनुबंध है। ज्ञान के साथ उनका आ जाना अपरिहार्य होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार का सर्वश्रेष्ठ उपकार करने के लिए मनुष्य को स्वयं ज्ञानी, गुणी तथा चरित्रवान बनना चाहिए और इन विशेषताओं को बिना किसी स्वार्थ अथवा लोभ के समाज में वितरित करना चाहिए। किंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि जो सर्वश्रेष्ठ उपकार कर सकने की परिस्थिति में नहीं है, वह उपकार के कार्यों की ओर से विमुख अथवा उदासीन हो जाए। जो प्रथम श्रेणी का उपकार नहीं कर सकता उसको द्वितीय अथवा तृतीय श्रेणी का ही उपकार करते रहना चाहिए। समाज के जीवन और संसार के विकास के लिए परोपकार की प्रवृत्तियाँ बहुत आवश्यक हैं, वह चलती ही रहनी चाहिए। इससे लोकहित भी होगा और आत्मकल्याण भी।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1968, पृष्ठ-22

अनुभव से सीखें

ज्ञानप्राप्ति का एक उपाय अनुभव भी है। सांसारिक चेष्टाओं को ध्यानपूर्वक देखा और समझा जाए। दूसरे व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव का परिचय पाकर उनके व्यवहार का परिणाम देखा-समझा और उससे शिक्षा प्राप्त की जाए। बुरे काम करने वाले किसी व्यक्ति को यदि हम पतन और परिताप के गड्ढे में गिरते देखें तो विश्वास कर लेना चाहिए कि वह मार्ग जिस पर अमुक व्यक्ति चल रहा था, चलने योग्य नहीं है। इसी प्रकार जब सत्कर्म करने वालों को सुख-शांति, संतोष और सम्मान का अधिकारी बनते देखें तो मान लेना चाहिए कि यह मार्ग हमारे चलने योग्य है।

इसी प्रकार मनुष्य अपने रहन-सहन, आचार-व्यवहार और गुण-कर्मों के परिणाम को देखकर भी शिक्षा ले सकता है। अपना सुधार कर अपने को ठीक मार्ग पर चलाकर ठीक लक्ष्य पर पहुँच सकता है। तात्पर्य यह है कि सत्संग, स्वाध्याय, चिंतन-मनन और अनुभव के आधार पर व्यक्ति को सद्ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करते ही रहना चाहिए।

बिना ज्ञान के न तो जीवन सफल होता है और न सार्थक। अज्ञानावस्था में भौतिक और आत्मिक दोनों जीवनों का नाश हो जाता है। इसलिए इस अंधकार से निकलकर ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर बढ़ते ही रहना चाहिए। इसमें प्रमाद अथवा आलस्य करने का अर्थ है—अपने सुर-दुर्लभ मानव जीवन को नष्ट कर देना, जिसमें भौतिक उन्नति तो की ही जा सकती है लेकिन आत्मप्रकाश भी पाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1968, पृष्ठ-22

विचारों की छटनी करते रहें

जीवन में सफलता पाने के लिए मनुष्य का चिंतक और विचारशील होना नितांत आवश्यक है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि चाहे जिस तरह के विचार आ जाएँ, उनका ही चिंतन-मनन करते रहा जाए। अपने मन और मस्तिष्क में आने वाले विचारों को संपादित करते रहना चाहिए। मनुष्य के मस्तिष्क में नित्य ही हजारों विचार आते-जाते रहते हैं, किंतु वे सबके सब ही उपयोगी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सार्थक हों, यह आवश्यक नहीं। मस्तिष्क में प्रतिक्षण आने वाले विचारों को देखते-परखते रहना चाहिए और जो विचार अपने उद्देश्य और प्रयोजन के लिए आवश्यक और उपयोगी दीखें, उन्हें तो रहने दिया जाए और बाकी के सारे बेकार विचारों को निकालकर फेंक देना चाहिए।

यद्यपि विचारों को रोकने और निकाल फेंकने में थोड़ी कठिनाई जरूर होती है, तथापि थोड़े-से अभ्यास द्वारा यह सरल बनाया जा सकता है। कुछ समय सावधान तथा सक्रिय रहने के बाद मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बन जाएगा कि उसकी चिंतनधारा में अनावश्यक विचार प्रवेश ही न करने पाएँगे। इस प्रकार जब मन में शुद्ध तथा सुंदर विचार दृढ़ होने लगेंगे तो वे स्वयं भी अपने से विरोधी विचारों को अपने क्षेत्र में नहीं ठहरने देंगे। विचार, विचारों को स्वयं भी बुलाते और भगाते रहते हैं।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1968, पृष्ठ-12

ज्ञान को क्रिया में उतारना है

ज्ञानयज्ञ से प्रभावित लोगों को सिर हिलाकर सहमति प्रकट कर देने या विचारों की सराहना कर देने मात्र से छुटकारा नहीं मिल जाएगा, वरन इस बात के लिए प्रेरित किया जाएगा कि यदि उन्हें नवनिर्माण की विचारधारा पसंद आई है तो इस दिशा में चलने के लिए भी कुछ कदम उठाएँ। केवल मौखिक सहानुभूति से ही तो कुछ बनने वाला नहीं है। प्रयोजन तो क्रिया से सिद्ध होता है। उत्कृष्ट विचारणा का संयोग जब तक आदर्श कर्तृत्वों के साथ न हो, तब तक उसे नपुंसक और निरर्थक ही कहा जाता रहेगा। ऐसा अनुत्पादक समर्थन यदि हम संग्रह भी करते रहे तो उससे कुछ बात बनेगी नहीं। ज्ञानयज्ञ की सार्थकता इस बात में है कि वह प्रखर कर्मठता को जन्म दे सके।

लोगों के पास साधनों की कमी नहीं, पैसा इन दिनों फैला-फैला फिर रहा है, शिक्षा बहुत बढ़ गई, चतुरता और कुशलता में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। कमी एक ही है कि यह संपत्ति और बुद्धि की दोनों विभूतियाँ असुरता के हाथों पड़ गई हैं। उनका उपयोग वासना, तृष्णा और अहंकारिता की पूर्ति के लिए हो रहा है। संग्रह की, अभिवर्द्धन की अंधी दौड़ लग रही है। इसका सदुपयोग क्या हो सकता है, यह किसी के ध्यान में नहीं।

लोगों को कहा जाएगा कि संपत्ति का संग्रह ही बुद्धिमानी नहीं है, प्रतिभा का होना ही सराहनीय नहीं है। मूल बात यह है कि इन उपलब्धियों को किसने, किस प्रयोजन के लिए खरच किया? इसी स्थान पर बुद्धिमान लोग मूर्ख बनते हैं। जिससे विकास हो सकता था, उसे विनाश में प्रयुक्त करते हैं। हम उपार्जन, अभिवर्द्धन की विधि न बता सकें तो हर्ज नहीं, उसे दूसरे असंख्य लोग बता रहे हैं। हमें सदुपयोग की आवश्यकता समझने की दिशा में उद्बोधन करना है और जहाँ संभव हो सके, वहाँ उसके लिए साहस भी जुटाना है।

लोगों के पास फालतू समय की कमी नहीं, वह उसे ऐसे ही गप-शप और आलस्य-प्रमाद में गुजारता है। इस समय का एक छोटा-सा अंश भी श्रमदान के माध्यम से लोकमंगल के लिए जुटाया जा सके तो थोड़े-से व्यक्ति भी कमाल करके दिखा सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति जनवरी 1974, पृष्ठ-52

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनमानस में घुसा अज्ञान असुर

अपने युग का सबसे बड़ा संकट है—व्यापक अज्ञान। चिंतन के क्षेत्र में इतनी भ्रांतियाँ इन दिनों घुस पड़ी हैं कि उनने ईश्वर के राजकुमार मनुष्य को नरक-कीट जैसी दयनीय स्थिति में पटक दिया है। परिष्कृत चिंतन के अभाव में अवांछनीय मान्यताएँ हर क्षेत्र में घुस पड़ी हैं और उन्होंने ऐसी अगणित विपत्तियाँ तथा समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं जो न टाले टलती हैं और न सुलझाए सुलझती हैं। चिंतन की भ्रष्टता ने मनुष्य को अंधा, अविवेकी, बहरा, अहंकारी, गूँगा, कुंठाग्रस्त, मृतक, पराश्रित, दूसरों के लिए भारभूत बनाकर रख दिया है।

प्राचीनकाल में रावण, कंस, हिरण्यकशिपु आदि असुरों ने एक सीमित क्षेत्र में, सीमित संख्या के लोगों को सताया था; पर इस अज्ञान असुर ने व्यापक क्षेत्र में अधिकांश जनसंख्या को अपने चंगुल में कस लिया है। स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रवेश करके अज्ञान के असुर ने मनुष्य को असंयमी और रोगी बना दिया है। चरित्र क्षेत्र में अपराधी-पापी, मन:क्षेत्र में अशांत-उद्विग्न, दांपत्य जीवन में घृणा- द्वेष, संतान क्षेत्र में विषवृक्ष जैसे उत्पादन की संभावनाएँ विकसित कर दी हैं। पैसा व्यसन और अपव्यय में नष्ट हो रहा है। विद्यावृद्धि के साथ छल-प्रपंच की और धनवृद्धि के साथ तृष्णा-उद्धतता की प्रवृत्ति बढ़ रही है। साधु-ब्राह्मण प्रतिगामिता का पोषण करने में लगे हुए हैं। भक्ति जैसी पवित्र साधना उन्माद बनकर रह गई है। यहाँ तक कि ईश्वर भी चापलूसी और रिश्वत उपहार के आधार पर कृपा करता बता दिया गया। पाप से डरने की और परमार्थ करने की अब तनिक भी आवश्यकता नहीं रही क्योंकि तनिक-तनिक से कर्मकांड पाप नाश करने और अक्षय पुण्य पाने के लिए पर्याप्त बता दिए गए हैं। जीवन का मूल्य और उद्देश्य न समझ पाने के कारण लोग पशु और पिशाच का जीवन जी रहे हैं। यह सब जनमानस में घुसे हुए अज्ञान असुर का ही प्रभाव है।

अपने युग के अगणित संकटों का और अंधकार से आच्छादित भविष्य का एकमात्र कारण यह व्यापक अज्ञान ही है। हमें रीछ, वानरों की तरह इसी से जूझना है और मानवी आदर्शों की सीता को वापस लाना है। छिटपुट पुण्य-परमार्थ में ध्यान बटाने की अपेक्षा इस आपत्तिकाल में हमें अपनी समूची शक्ति इसी असुरता के उन्मूलन पर केंद्रित करनी चाहिए। जनमानस के परिष्कार को सर्वोपरि युगधर्म मानना चाहिए। विचारक्रांति के लिए आयोजित ज्ञानयज्ञ में हमें बढ़-चढ़कर अपनी आहुति देनी चाहिए। इन दिनों इससे बढ़कर और कोई पुण्य-परमार्थ हो नहीं सकता। अपने युग की यही सबसे बड़ी लोक साधना है। इस पुण्य-प्रयोजन के लिए आत्मसाधना की बात सोचने वाले प्रत्येक व्यक्ति को दो घंटे नित्य समय देने की योजना बनानी ही चाहिए।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1976, पृष्ठ-18

अशांति का कारण—चिंतन की विकृतियाँ

जो ईश्वर ने दिया है, वह भी कम नहीं है। पशु-पक्षियों और दु:खी-दरिद्रों की, रुग्ण-अपंगों की तुलना में अभी भी अपनी स्थिति कहीं अच्छी है, इस पर मोद मनाया जा सकता है और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक प्राप्त करने के लिए उत्साह एवं आशा भरी मन:स्थिति में प्रयत्न जारी रखा जा सकता है। हमारा अधिकांश मानसिक बोझ अवास्तविक और निराधार होता है। चिंतन की विकृतियाँ ही हमें अशांत बनाए रहती हैं। संतान न होने पर कितने ही व्यक्ति दुखी रहते हैं जबकि उत्तरदायित्वों का बोझ हलका होने के कारण उन्हें संतान का भार वहन करने में बेतरह पिसते हुए लोगों की तुलना में अधिक प्रसन्न होना चाहिए था। इसी प्रकार अनेक अनावश्यक महत्त्वाकांक्षाएँ दुखी बनाए रहती हैं, जिनके बिना जीवनक्रम का सामान्य निर्वाहक्रम रुकता नहीं। ऐसी अनावश्यक महत्त्वाकांक्षाओं का, तृष्णाओं का बोझ आसानी से हलका किया जा सकता है और सादगीपूर्ण सौम्य जीवन का आनंद लिया जा सकता है। प्रस्तुत कठिनाइयों से लड़ा-जूझा जाए, उन्हें हटाने के लिए पूरा कौशल प्रयुक्त किया जाए, फिर भी यदि वे न हटें तो प्रारब्ध निपट जाने की बात सोची जा सकती है। अधिक सतर्कता बरतने, अधिक क्षमता जुटाने एवं अनुभव संपादित करने का अवसर भी उसे माना जा सकता है। दृढ़ता, साहसिकता, संतुलन आदि सद्गुणों की परीक्षा का अवसर भी उसे माना जा सकता है। अधिक विपत्तिग्रस्तों की तुलना में अपने को अधिक भाग्यशाली माना जा सकता है। कठिन समय में भी चिंतन का परिष्कृत स्तर मन का भार हलका करने में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। खोज करने पर प्रतीत होगा कि दुखी मन:स्थिति का बहुत बड़ा कारण सही ढंग से सोच सकने में त्रुटि रहना ही था। उसे सुधार लेने पर अधिकांश समस्याओं का हल मिल जाता है। फिर भी जो रह जाए उसे हर किसी को कुछ-न-कुछ कमी, कठिनाई रहने के सामान्य क्रम को ऐसे ही हँसते-खेलते सहन किया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1976, पृष्ठ-29

ज्ञानयज्ञ द्रव्ययज्ञ से श्रेष्ठ क्यों ?

भगवान ने गीता में कहा है—

''श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतपः।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते॥''

—गीता-4/33

''हे परंतप! द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है क्योंकि जितने भी कर्म हैं, वे सब ज्ञान में ही समाप्त होते हैं। ज्ञानदान सर्वोपरि पुण्य है, शुभ कार्य है।''

अपने उपरोक्त कथन में भगवान ने द्रव्ययज्ञ और ज्ञानयज्ञ की तुलना में ज्ञानयज्ञ को द्रव्ययज्ञ से श्रेष्ठ बतलाया है। ऐसा क्यों है—इस पर विचार करने से पूर्व यह समझ लेना आवश्यक है कि द्रव्ययज्ञ और ज्ञानयज्ञ है क्या? द्रव्ययज्ञ का एक अर्थ अथवा आशय सामग्री द्वारा अग्नि में मंत्रोच्चार के साथ हवन करना है। दूसरा तात्पर्य यह है कि द्रव्य अर्थात भौतिक विभूतियों का धर्मोक्त व्यवहार करना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यज्ञ का सूक्ष्म अर्थ पदार्थ एवं क्रिया के यापन की उस विधि की ओर संकेत करता है जिसके अंतर्गत परमार्थ का कोई न कोई भाव चल रहा हो। जो मनुष्य शुभ उपायों द्वारा द्रव्य उपार्जन करता है, उसके उपार्जन में समाज की आर्थिक उन्नति की भावना रखता है, अपने धनाभाव को दूर करना नैतिक कर्त्तव्य समझता है, प्राप्त धन में आत्मभाव न रखकर उसको समाज की संपत्ति मानता है और उसी भाव से आगे क्रियाशील रहने के लिए अपने पर जरूरत भर खरच करता है। वह इस ढंग से कि उसका पूरी तरह तन, मन और बुद्धि की शक्ति का विकास करने में उपयोग हो। शेष का उचित भाग समाज के कल्याण के लिए दान द्वारा, सहायता द्वारा अथवा संस्थापना द्वारा खरच करता है, परमार्थ परोपकार और पुण्य-कार्यों में लगाता है, वह निश्चय ही द्रव्ययज्ञ करता है, जिसका फल किसी प्रकार भी अग्निहोत्र से कम नहीं होता।

जिस प्रकार इस द्रव्ययज्ञ का कर्मयोग से संबंध है, उसी प्रकार ज्ञानयज्ञ का संबंध ज्ञानयोग से है। द्रव्य की भाँति ही ज्ञान का उपार्जन करना, उसका संचय तथा अभिवर्द्धन करना, शारीरिक, सांसारिक संकटों के काटने और आत्मा के बंधन दूर करने के साथ संसार में विद्या का प्रकाश फैलाने, अविद्या को मिटाने, माया-मोह को नष्ट करने में उसका यापन और वितरण करना, ज्ञानयज्ञ ही कहा जाएगा।

विधिभाव से करने और सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करने पर विदित होगा कि इन दोनों यज्ञों का परम परिणाम एक ही है तथापि भगवान ने द्रव्ययज्ञ की अपेक्षा ज्ञानयज्ञ को श्रेष्ठ बतलाया है। वह किन कारणों से? उनमें से एक कारण तो भगवान ने स्वयं ही प्रकट कर दिया है। वह यह कि जितने भी कर्म हैं उनकी परिसमाप्ति ज्ञान में ही होती है। निश्चय ही इन कर्मों की परिसमाप्ति का आध्यात्मिक अर्थ तो यही है कि ज्ञान प्राप्त हो जाने पर किए हुए कर्मों के सारे अच्छे-बुरे फल नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य पुण्य-पाप दोनों के बंधनों से छूटकर सर्वथा मुक्त हो जाता है, अपनी मूल परिस्थिति को प्राप्त कर लेता है। इसी तात्पर्य को इन शब्दों में भी कहा जा सकता है कि ज्ञानी को कर्मों का बंधन नहीं लगता, वह सर्वथा उससे मुक्त रहता है। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि ज्ञानी जो कुछ करता है करने योग्य कर्त्तव्यों को परमात्मा के लिए ही, उसकी आज्ञा अनुभव करता हुआ ही करता है। वह जो कुछ करता है उसका फल भी उसी को समर्पित कर देता है। ऐसे त्यागी तथा निर्लिप्त ज्ञानी पुरुष को कर्मों का फल बोध भी किस प्रकार रह सकता है।

भगवानोवाचित इस कारण के अतिरिक्त ज्ञानयज्ञ की श्रेष्ठता के अन्य कारण भी हैं। जैसे— द्रव्ययज्ञ का आयोजन करने में बहुत से उपादान एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है, जबकि ज्ञानयज्ञ के लिए किन्हीं विशेष साधनों की जरूरत नहीं होती। द्रव्ययज्ञ का संपादन करने के लिए द्रव्य की जरूरत है, पर ज्ञानयज्ञ में इसकी आवश्यकता नहीं है। ज्ञानयज्ञ के लिए जिज्ञासा और बुद्धि दो साधनों की जरूरत है, वह मनुष्य को निसर्ग रूप से ही मिले रहते हैं। विचार कृषि के लिए स्वाध्याय और स्वाध्याय के लिए पुस्तकों की जो आवश्यकता है, वह किसी भी योग्य पुस्तकालय से पूरी हो सकती है। पुस्तकें माँगकर भी काम चलाया जा सकता है। इसके

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिरिक्त वह स्वाध्याय सत्संग के माध्यम से भी किया जा सकता है। इसमें तो किसी प्रकार के व्यय की आवश्यकता है ही नहीं।

बिना धन के द्रव्ययज्ञ कठिन है। इसलिए उसकी आराधना के लिए आर्थिक पुरुषार्थ करना ही होगा। आज की दुनिया में यदि आर्थिक पुरुषार्थ की प्रकृति सर्वथा पवित्र एवं निष्कलंक बनाए रखना असंभव नहीं तो कम से कम कठिन तो है ही, किंतु ज्ञानयज्ञ की साधना में ऐसी कोई कठिनाई नहीं है। थोड़ा सजग रहकर ज्ञान का उपार्जन पवित्रतापूर्वक किया जा सकता है। अनैतिक एवं अनुचित विचार-संस्कार से थोड़ा सतर्क रहकर विशुद्ध एवं कल्याणकारी ज्ञान का अर्जन किया ही जा सकता है।

द्रव्ययज्ञ के विस्तार के लिए जो दान अथवा परोपकार का आयोजन चलाना होगा, उसमें प्रदत्त धन के किसी अपात्र के पास पहुँच जाने की आशंका हो सकती है। वह अपात्र उसका दुरुपयोग कर हित में अहित की संभावना उपस्थित कर सकता है, किंतु ज्ञानयज्ञ में यह आशंका नहीं रहती। उसके लिए पात्र-अपात्र का बंधन नहीं होता। बल्कि ज्ञान का दान उनके लिए तो और भी उपादेय है जो पथ भूले हुए हैं और अविद्या के अंधकार में भटक रहे हैं। यदि सच कहा जाए तो ज्ञानदान के अधिक अधिकारी वही है, जिनका मार्ग ठीक नहीं है जिनके संस्कार विकृत हो गए हैं।

द्रव्य क्षरणशील उपादान है। वह आज है तो यह निश्चय नहीं कि कल भी रह सकता है। ऐसी स्थिति में किसी भी द्रव्य याज्ञिक को किसी समय भी अधनता का सामना करना पड़ सकता है और तब उसके उस कार्यक्रम में व्यवधान पड़ सकता है, किंतु ज्ञानयज्ञ में उसकी संभावना नहीं रहती। ज्ञान ही एक ऐसा तत्त्व है जो क्षरणशीलता से सर्वथा मुक्त रहता है। ज्ञान बढ़ता है घटता तो कदापि नहीं और नाश तो उसका कभी होता ही नहीं। द्रव्ययज्ञ का द्रव्य तो साथ जाता ही नहीं उसका पुण्य ही साथ जाता है जबकि ज्ञान-पुण्य भी मनुष्य के साथ जाता है जिससे पुण्यबल पर या तो परिपाक में वह बंधन-मुक्त हो जाता है अथवा परिपक्वता के लिए उसे मनुष्य योनि ही प्राप्त होती है जिसमें होश आते ही पूर्वजन्मीय ज्ञान प्रतिबिंबित हो उठता है।

द्रव्ययज्ञ से परमार्थ-पथ में किसी की द्रव्य द्वारा एक छोटी सीमा तक ही सहायता संभव हो सकती है और वह भी कुछेक पात्रों को ही, किंतु ज्ञानयज्ञ में एक पुस्तक, एक प्रवचन द्वारा सैकड़ों-हजारों की मुक्ति होने तक सहायता की जा सकती है। द्रव्यदान पाकर कोई बहुत कम समय तक ही अपनी कठिनाई दूर रख सकता है किंतु जिसको ज्ञानदान कर दिया जाता है उसके लिए एक तो कठिनाइयाँ महत्त्वहीन हो जाती हैं दूसरे वह उस ज्ञान द्वारा हर देश-काल में अनुकूलताएँ अर्जित कर सकता है। जहाँ धन उसे कुछ समय तक ही सहायक तथा लाभकर होगा, वहाँ ज्ञान उसे आजीवन ही नहीं जीवनोपरांत भी साथ देता रहता है। इन्हीं सब सुविधा-व्यवस्था के कारण ही ज्ञानयज्ञ को द्रव्ययज्ञ से श्रेष्ठ बताया और माना गया है।

—अखण्ड ज्योति फरवरी 1968, पृष्ठ-24-25

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधनों का नियोजन ज्ञानयज्ञ में करें

पुण्य-परमार्थ की अंतश्चेतना यदि मन में जागे तो उसे सस्ती वाहवाही लूटने की मानसिक दुर्बलता से टकराकर चूर-चूर न हो जाने दिया जाए। आमतौर से लोगों की ओछी प्रवृत्ति नामवरी लूटने का ही दूसरा नाम पुण्य मान बैठती है और ऐसे काम करती है, जिनकी वास्तविक उपयोगिता भले ही नगण्य हो पर उनका विज्ञापन अधिक हो जाए। मंदिर, धर्मशाला बनाने आदि के प्रयत्नों को हम इसी श्रेणी का मानते हैं। वे दिन लद गए जबकि मंदिर जन-जाग्रति के केंद्र रहा करते थे। वे परिस्थितियाँ चली गईं जब धर्मप्रचारकों और पैदल यात्रा करने वाले पथिकों के लिए विश्रामगृहों की आवश्यकता पड़ती थी। अब व्यापारिक या शादी-ब्याह संबंधी स्वार्थपरक कामों के लिए लोगों को किराया देकर ठहरना या ठहराना ही उचित है। मुफ्त की सुविधा वे क्यों ले और क्यों दें?

कहने का तात्पर्य यह है कि इस तरह के विडंबनात्मक कामों से शक्ति का अपव्यय बचाया जाना चाहिए और उसे जनमानस के परिष्कार कर सकने वाले कार्यों की एक ही दिशा में लगाया जाना चाहिए। हमें नोट कर लेना चाहिए कि आज की समस्त उलझनों और विपत्तियों का मात्र एक ही कारण है—मनुष्य की विचार-विकृति। दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों ने ही शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, राजनीतिक संकट खड़े किए हैं। बाह्य उपचारों से पत्ते सींचने से कुछ बन नहीं पड़ेगा, हमें मूल तक जाना चाहिए और जहाँ से संकट उत्पन्न होते हैं, उस छेद को बंद करना चाहिए। कहना न होगा कि विचारों और भावनाओं का स्तर गिर जाना ही समस्त संकटों का केंद्रबिंदु है। हमें इसी मर्मस्थल पर तीर चलाने चाहिए। हमें ज्ञानयज्ञ और विचारक्रांति को ही इस युग की सर्वोपरि आवश्यकता एवं समस्त विकृतियों की एकमात्र चिकित्सा मानकर चलना चाहिए और उन उपायों को अपनाना चाहिए जिससे मानवी विचारणा एवं आकांक्षा को निकृष्टता से विरत कर उत्कृष्टता का स्तर उन्मुख किया जा सके। ज्ञानयज्ञ की सारी योजना इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर बनाई गई है। हमें अर्जुन को लक्ष्य भेदते समय मछली की आँख देखने की तरह केवल युग की आवश्यकता विचारक्रांति पर ही ध्यान एकत्रित करना चाहिए और केवल उन्हीं परमार्थ-प्रयोजनों को हाथ में लेना चाहिए जो ज्ञानयज्ञ के पुण्य-प्रयोजन पूरा कर सकें। अन्यान्य कार्यक्रमों से हमें अपना मन बिलकुल हटा लेना चाहिए। शक्ति बखेर देने से कोई काम पूरा नहीं हो सकता। हमारा परामर्श परिजनों को यही है कि वे परमार्थ भावना से सचमुच कुछ करना चाहते हों तो उस कार्य को हजार बार इस कसौटी पर कस लें कि इस प्रयोग से आज की मानवीय दुर्बुद्धि को उलटने के लिए अभीष्ट प्रबल पुरुषार्थ की पूर्ति इससे होती है या नहीं।

शारीरिक सुख-सुविधाएँ पहुँचाने वाले धर्म-पुण्यों को अभी कुछ समय रोका जा सकता है, वे पीछे भी हो सकते हैं, पर आज की तात्कालिक आवश्यकता तो विचारक्रांति एवं भावनात्मक नवनिर्माण ही है सो उसी को आपत्ति धर्म युगधर्म मानकर सर्वतोभावेन हमें उसी प्रयोजन में निरत हो जाना चाहिए। ज्ञानयज्ञ के कार्य इमारतों की तरह प्रत्यक्ष नहीं दीखते और स्मारक की तरह वाहवाही

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का प्रयोजन पूरा नहीं करते तो भी उपयोगिता की दृष्टि से ईंट-चूने की इमारतें बनाने की अपेक्षा इन भावनात्मक परमार्थों का परिणाम लाख-करोड़ गुना अधिक है। हमें वाहवाही लूटने की तुच्छता से आगे बढ़कर वे कार्य हाथ में लेने चाहिए जिनके ऊपर मानव जाति का भाग्य और भविष्य निर्भर है। यह प्रक्रिया ज्ञानयज्ञ का होता-अध्वर्यु बने बिना और किसी तरह पूरी नहीं होती।

—अखण्ड ज्योति जून 1971, पृष्ठ-58, 59

एक ही लक्ष्य रहे—जनमानस का परिष्कार

विकृत चिंतन का निवारण व जनमानस में परिष्कृत दृष्टिकोण का प्रतिष्ठापन-यही है हमारा विचारक्रांति अभियान, यही है इस युग का सर्वोपरि महत्त्वपूर्ण धर्मानुष्ठान—ज्ञानयज्ञ। युग निर्माण योजना इन्हीं प्रयत्नों में प्राणपण से संलग्न है। उसने अपने प्रभावक्षेत्र में एक ही बात गले उतारने का प्रयत्न किया है कि पुण्य-परमार्थ की बात यदि किसी के मन में तनिक भी हो तो उसे अस्त-व्यस्त दिशाओं में बखेरें नहीं, लोकसेवा के नाम पर चल रहे उन उपहासास्पद कामों से दूर रहें जो मात्र आत्मविज्ञापन के लिए किए जाते हैं।

लोग अपनी नामवरी के लिए छिटपुट खेल-खिलौने बनाने और उनसे खेलने में उलझे रहते हैं। तरह-तरह की चित्र-विचित्र परमार्थ प्रवृत्तियों में हमारी सद्भावना अस्त-व्यस्त होती रहती है और वह मूल प्रयोजन भूख-प्यास से मूर्च्छित पड़ा रहता है जिसके ऊपर सुख-शांति का, समृद्धि और प्रगति का ही नहीं, समूची मानवी सत्ता का भविष्य निर्भर है। हमने अनेक बार अनुरोध किया है कि इस आपत्ति काल में अपने प्रयत्नों को बखेरें नहीं, केवल एक ही तथ्य को ध्यान में रखें, केवल युगधर्म को ही प्राथमिकता दें और जनमानस के परिष्कार प्रयत्नों में, विचारक्रांति अभियान में अपना, अपने परिवार का और समस्त मानवजाति का हितसाधन देखें और इस विषम वेला में ध्यान योगी की तरह इसी एक लक्ष्य पर केंद्रीभूत रखें।

—अखण्ड ज्योति जुलाई 1975, पृष्ठ-61

ज्ञानयज्ञ की लपटें आकाश छूएँगी

हमें अपना विचार-क्षेत्र बढ़ाना है। अब तक केवल अखण्ड ज्योति और युग निर्माण योजना पत्रिका से ही अपना संपर्कक्षेत्र विनिर्मित करते रहे हैं। जो इन्हें पढ़ते हैं, उन्हीं तक अपने विचार पहुँचते हैं। इस छोटे वर्ग से ही समस्त विश्व को परिवर्तित करने का स्वप्न साकार नहीं हो सकता। हमें प्रसार के लिए बड़े कदम उठाने होंगे। झोला पुस्तकालय प्रक्रिया इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए है। हर परिजन से इसमें आवश्यक रस लेने और उत्साहपूर्वक प्रयत्न करने का अनुरोध किया गया है। समय के साथ अपनी गाढ़ी कमाई का एक छोटा अंश लोकमंगल के इस छोटे दीखने वाले, किंतु अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए खरच करने को कहा गया है। व्यक्ति को अपने लिए ही नहीं कमाते रहना चाहिए। उसकी कमाई में समाज का भी अधिकार है। इस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिकार को संतुलित बनाने के लिए दान को एक अनिवार्य धर्म-कर्त्तव्य माना गया है। जो दान नहीं करता, अपनी कमाई आप ही खाता रहता है, उसे मनीषियों और शास्त्रों ने चोर माना है। हमारा कोई परिजन चोर न कहलाएगा, उसे दानी ही बनना चाहिए और दान की सार्थकता तभी है, जब उसके पीछे उपयोगिता और विवेक का पुट हो। सद्ज्ञान प्रसार करके जनमानस को बदलने से बढ़कर दान की और कहीं सार्थकता हो नहीं सकती। यह ब्रह्मदान सबसे बड़ा परमार्थ है। इसलिए परिजनों को यथाशक्ति अंशदान के लिए, महीने में एक दिन की आमदनी खरच करते रहने के लिए कहा गया है। यदि यह बात समझ में आ सके और थोड़ा समय एवं थोड़ा पैसा सभी लोग नियमित रूप से खरच करने लगें तो अपने ज्ञानयज्ञ की लपटें आकाश को छूने लगेंगी और पाताल तक को प्रभावित करने लगेंगी। बहुत जोर देकर यह कहा जा रहा है कि यह पंक्तियाँ पढ़कर ही पुस्तक उठाकर एक कोने में न रख दी जाए वरन कुछ करने के लिए आवश्यक साहस और उत्साह पैदा किया जाए। विश्वास यही किया जाना चाहिए कि अपने अति आवश्यक अनुरोध कभी उपेक्षित नहीं किए गए हैं और इस बार भी ज्ञानयज्ञ की हमारी संकलित प्रक्रिया को अधूरी न रहने दिया जाएगा। उसके लिए भी स्वजनों में आवश्यक उत्साह पैदा होगा और नवनिर्माण की विचारधारा विश्वव्यापी होकर रहेगी। यह विचारधारा और जनमानस को प्रबुद्धता की दिशा में घसीट ले जाने की प्रक्रिया अखण्ड ज्योति परिवार, गायत्री परिवार अथवा युग निर्माण योजना के कुछ लाख सदस्यों तक सीमित नहीं रहने दी जा सकती। इसे देशव्यापी, विश्वव्यापी बनाना है। इसके लिए एक भाषा की सीमाबद्धता भी पर्याप्त नहीं। अब तक अपने पास केवल हिंदी माध्यम रहा है। अब भारत की सभी भाषाओं और बोलियों में अपना कर्मक्षेत्र बढ़ाना पड़ेगा। इतना ही नहीं, संसार की प्रमुख भाषाओं का भी सहारा लेना पड़ेगा ताकि अपना संदेश भारतवर्ष तक ही सीमित न रहकर विश्वव्यापी बन सके। सभी प्रचार साहित्य अब हमें इन सभी भाषाओं में प्रकाशित-प्रचारित करना है। इसके लिए पूँजी की जरूरत पड़ेगी। जिनमें सामर्थ्य और उदारता हो इस महत् प्रयोजन के लिए कुछ अनुदान देने का साहस कर सकते हैं। ज्ञानयज्ञ से बढ़कर दानशीलता को चरितार्थ करने का और कोई माध्यम शायद ही इस संसार में दूसरा होता है।

—अखण्ड ज्योति सितंबर 1969, पृष्ठ-64

यदि दुनिया तुम्हारे कार्यों की प्रशंसा करती है, तो इसमें कुछ भी बुरा नहीं। खतरा तब है, जब तुम प्रशंसा पाने के लिए किसी काम को करते हो।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org